Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

Advance Accounting

Institute of **Open** and **Distance Education**

Faculty of Commerce

Advance Accounting

2MCOM2

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur
A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

2MCOM2

एडवांस अकाउंटिंग

2MCOM2, Advance Accounting

Edition: March 2024

Compiled, reviewed and edited by Subject Expert team of University

1. Dr. Vivek Bajpai

(Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Preeti Shukla

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Anshul Shrivastava

(Assistant Professor , Dr. C. V. Raman University)

Warning:

All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by:

Dr. C.V. Raman University

Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.),

Ph. +07753-253801, 07753-253872

E-mail: info@cvru.ac.in

Website: www.cvru.ac.in

याय पृष्ठ क्रमांक

समायोजन सहित अन्तिम खाते 01
(Final Accounts with Adjustment)

बैंक समाधान एवं विवरण 62
(Bank Reconcilation Statement)

3. अशुद्धियों का सुधार 78
(Rectification of Errors)

4. अलाभकारी संस्थाओं के लेखे 100
(Accounting for Nonprofit Organisation)

5. अपूर्ण अभिलेखों संबंधी लेखे 142
(Accounts Related with Incomplete Records)

6. बीमा दावे के लेखे 191
(Accounting for Insurance Claim)

7. विनियोग लेखे 224
(Investment Accounts)

8. जहाजी यात्रा लेखे 265
(Voyage Accounts)

9. दिवालिया लेखे 283
(Insolvency Accounts)

10. साझेदारी फर्म का विघटन, दिवालिया सहित 347
(Dissolution of Partnership Firm with Insolvency)

11. फर्म का एकीकरण 399
(Amalgamation of Firm)

●●●

अध्याय–1 समायोजन सहित अंतिम खाते
(FINAL ACCOUNTS WITH ADJUSTMENT)

NOTES

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 प्रमुख समायोजन

 1.2.1 अन्तिम स्कन्ध

 1.2.2 अदत्त व्यय

 1.2.3 पूर्वदत्त व्यय

 1.2.4 उपार्जित आय

 1.2.5 अनुपार्जित आय

 1.2.6 मूल्य ह्रास

1.3 अशोध्य ऋण तथा अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान

1.4 देनदारों तथा लेनदारों पर बट्टे के लिये प्रावधान

1.5 पूँजी एवं आहरण पर ब्याज

1.6 ऋण पर ब्याज

1.7 विनियोगों पर ब्याज

1.8 अशुद्धियों के सुधार हेतु समायोजन

1.9 आकस्मिक हानियाँ

1.10 प्रबन्धक को देय कमीशन

1.11 प्रावधान और संचितियाँ

1.12 क्रियात्मक प्रश्न

1.13 सारांश प्रश्न

1.14 शब्दावली

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे -

1. समायोजन से आशयक एवं आवश्यकता को समझा सकेंगे।
2. समायोजनों को करते हुए अन्तिम खाते तैयार कर सकेंगे।
3. लेखांकन की अशुद्धियों को अंतिम खाते तैयार करते समय सुधार सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

लेखांकन कार्य में समुचित सावधानी के उपरान्त भी अन्तिम खाते बनाते समय यह पता चलता है कि कुछ व्यवहार लिखने से या तो रह गये है अथवा इनका लेखा त्रुटिपूर्ण अथवा अपूर्ण किया गया है। 'लागत एवं

आय के मिलान की अवधारणा' को दृष्टिगत रखते हुए अदत्त, पूर्वदत्त, उपार्जित अथवा अनुपार्जित व्यवहारों के संबंध में भी समायोजन करना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न सम्पत्तियाँ एवं दायित्व सही मूल्य पर दिखाये जायें, इस हेतु ह्रास तथा अन्य प्रावधान करने होते हैं। इन सब क्रियाओं को करने के लिए अन्तिम खाते बनाने से पूर्व समायोजन करने आवश्यक हो जाते है, ताकि किसी अवधि की आय का सही निर्धारण किया जा सके तथा चिट्ठा व्यवसाय की स्थिति का सही एवं उचित चित्र प्रस्तुत करे।

NOTES

1.2 प्रमुख समायोजन (Important Adjustments)

हम अन्तिम खाते तैयार करने की विधि का अध्ययन कर चुके है। अब हम प्रमुख समायोजन तथा समायोजनों को करते हुए अन्तिम खाते तैयार करने की विधि का अध्ययन करेंगे :

(1) अन्तिम स्कन्ध (Closing Stock)

वर्ष के अन्त में जो माल बिना बिका शेष रह जाता है, अन्तिम स्कन्ध कहलाता है। अन्तिम स्कन्ध का मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोनों में जो भी कम हो, पर किया जाता है। तत्पश्चात् अन्तिम स्कन्ध को पुस्तकों में लिखने के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है :

Stock a/c	Dr.	स्कन्ध खाता	डे
To Trading a/c		व्यापार खाता से	
(Closing Stock recorded into books)		(अन्तिम स्कन्ध पुस्तकों में सम्मिलित किया गया)	

अन्तिम खाते बनाते समय अन्तिम स्कन्ध व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

(2) अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)

ऐसे व्यय जो देय तो हो गये है किन्तु जिनका अभी भुगतान नहीं किया गया है, अदत्त व्यय कहलाते है। ये वे व्यय होते हैं जो वर्तमान लेखांकन अवधि से संबंधित होते हैं, जिनके बदले मिलने वाली सेवा प्राप्त हो चुकी होती है, जिनका भुगतान देय तो हो गया होता है किन्तु अभी किया नही गया होता। मान लीजिए, एक व्यापारी अपने कर्मचारियों को प्रति माह 2,000 रु. वेतन देता है तथा प्रत्येक माह के वेतन का भुगतान अगले माह के प्रथम सप्ताह में किया जाता है। 31 दिसम्बर को जब वह खाते बन्द करेगा तो खातो मे जनवरी से नवम्बर अर्थात् 11 माह के वेतन का लेखा तो कर लिया गया होगा क्योंकि उसका भुगतान वास्तव मे हो गया है। दिसम्बर माह का वेतन देय तो हो गया है किन्तु उसका भुगतान चूँकि 31 दिसम्बर तक नहीं किया गया है (भुगतान अगले वर्ष जनवरी में किया जायेगा) अतः उसका लेखा पुस्तकों मे नहीं किया गया होगा।

समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry) - इन व्ययो का समायोजन करने हेतु सबंधित व्यय खाते को डेबिट तथा अदत्त खाते क्रेडिट कर देते है। उपर्युक्त उदाहरण मे प्रविष्टि निम्नानुसार होगी

			रुपये	रुपये	
31 दिसम्बर	वेतन खाता	डे	2,000		व्यय मे वृद्धि, अतः डेबिट
	अदत्त वेतन खाते से			2,000	देयता मे वृद्धि, अतः क्रेडिट
	(अदत्त वेतन का समायोजन)				

प्रभाव - अदत्त व्ययो के समायोजन का प्रभाव यह होता है कि सबंधित व्यय की राशि में वृद्धि होकर लाभ घट जाता है तथा देयता में वृद्धि हो जाती है। अदत्त व्यय खाता एक **व्यक्तिगत खाता** होता है क्योंकि यह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसे व्यय का भुगतान किया जाना होता है।

विलोप प्रविष्टि - अगले वर्ष के प्रथम दिन पूर्व वर्ष में की गई समायोजन प्रविष्टि की विलोम प्रविष्टि कर दी जायेगी, अर्थात

NOTES

		रुपये	रुपये
1 जनवरी	अदत्त वेतन खाता ......डे. वेतन खाते से (अदत्त वेतन को वेतन खाते में हस्तांतरित किया गया)	2,000	2,000

विलोम प्रविष्टि इसलिए की जाती है क्योंकि गत वर्ष यद्यपि वेतन चुकाया नहीं गया था फिर भी हमने ा खाता डेबिट कर दिया था। जनवरी में जब यह वेतन चुकाया जायेगा, वेतन खाता पुनः डेबिट होगा। इस म प्रविष्टि के माध्यम से वेतन खाता क्रेडिट हो जाता है। अतः चुकाये जाने पर वेतन खाता डेबिट करने प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त विलोम प्रविष्टि से अदत्त वेतन खाता भी बन्द हो जाता है, क्योंकि ता समाप्त हो जाती है।

) पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses)

ये व्यय ऐसे व्यय होते है जिनका भुगतान तो कर दिया गया होता है किन्तु जो अभी देय नहीं हुए होते है अर्थात् उनके बदले जो लाभ या सेवाएँ प्राप्त होनी होती है वे या तो अभी प्राप्त नहीं हुई है अथवा उनकी अवधि वर्तमान लेखा-अवधि की समाप्ति तक पूर्णतः समाप्त नही हुई है। ऐसे व्यय पूर्वदत्त (Pre-paid) या असमाप्त (Unexpired expenses) कहलाते है।

उदाहरण - मान लीजिए हमने 1 जनवरी, 2006 को एक भवन 1,000 रु. मासिक किराये पर लिया। मकान मालिक ने हमसे दो वर्ष का किराया 1 जनवरी को अग्रिम ले लिया। इस उदाहरण में हमने 1 जनवरी को 24,000 रु. किराया दिया अर्थात् किराया खाता 24,000 रु. से डेबिट किया गया। चूँकि इसमें एक वर्ष का किराया 2007 वर्ष का है अतः यह 12,000 रु. अग्रिम किराया है।

समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry) - इस समायोजन को करने का उद्देश्य एक ओर चुकाये गये व्यय को उस सीमा तक कम करना होता है जिस सीमा तक वह आगामी लेखा अवधि से संबंधित है तथा दूसरी र चूँकि आगामी अवधि में व्यय के बदले लाभ या सेवा प्राप्त करना है, अतः एक देनदारी उत्पन्न करना होता उपर्युक्त उदाहरण में समायोजन प्रविष्टि अग्रवत् की जायेगी।

		रुपये	रुपये	
दिसम्बर	पूर्वदत्त किराया खाता ......डे. किराया खाता से (पूर्वदत्त किराये का समायोजन)	12,000	12,000	देनदारी में वृद्धि, अतः डेबिट व्यय में वृद्धि, अतः क्रेडिट

पूर्वदत्त व्यय खाता एक **व्यक्तिगत खाता** होता है क्योंकि यह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है ससे हमें लाभ या सेवा प्राप्त करनी होती है।

प्रभाव - उपर्युक्त समायोजन के परिणामस्वरूप लाभ/हानि खाते में डेबिट किराया कम हो जाएगा, अतः भ बढ़ जायेगा, तथा चिट्ठे में परिसम्पत्ति में वृद्धि होगी।

विलोम प्रविष्टि - अगली लेखा अवधि के प्रारम्भ में विलोम प्रविष्टि निम्नानुसार की जायेगी -

		रुपये	रुपये
1 जनवरी	किराया खाता डे. पूर्वदत्त किराया खाते से (पूर्वदत्त किराया किराये खाते में हस्तांतरित किया गया	12,000	12,000

प्रभाव - इस प्रविष्टि से पूर्वदत्त किराया खाता बन्द हो जायेगा तथा किराये की राशि वर्तमान वर्ष से संबंधित होने के कारण किराये खाते को डेबिट हो जायेगा।

NOTES

(4) उपार्जित आय (Accrued Income)

यह वह आय होती है जो हमने अर्जित तो कर ली है (अर्थात् इस आय के बदले सेवाएँ दी जा चुकी हैं) किन्तु जो अभी प्राप्त नहीं हुई है।

यह आय चूँकि अभी प्राप्त नही हुई है अतः इसका कोई लेखा पुस्तकों में नहीं किया गया होगा किन्तु चूँकि इस आय का संबंध वर्तमान लेखा-अवधि से है अतः इसे वर्तमान वर्ष की आय में जोड़ा जाना चाहिए। चूँकि यह आय अभी प्राप्त होनी है, अतः चिट्ठे में इसे परिसम्पत्ति के रूप में लिया जाना चाहिए।

उदाहरण - मान लीजिए 'क' के पास जे. सी. मिल्स के 10,000 रु. के 10 प्रतिशत ऋण-पत्र है जिन पर ब्याज प्रतिवर्ष 30 जून तथा 31 दिसम्बर को देय होता है। किन्तु उसका भुगतान अगले माह के प्रथम सप्ताह में किया जाना है। इस स्थिति में 30 जून को देय 6 माह का ब्याज 500 रु. तो जुलाई के प्रथम सप्ताह में प्राप्त हो गया होगा, किन्तु 31 दिसम्बर को स्थिति यह होगी कि 6 माह का ब्याज अर्जित तो कर लिया होगा किन्तु उसका भुगतान अगले वर्ष प्राप्त होगा। अर्थात् 31 दिसम्बर को जब 'क' के खाते बन्द होंगे तो 500 रु. उपार्जित ब्याज होगा।

समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry)

समायोजन करने के दो उद्देश्य होते है - (i) चूँकि आय अर्जित कर ली गई है अतः इस वर्ष की आय में वृद्धि करना, तथा (ii) चूँकि आय अगले वर्ष प्राप्त होगी, अतः देनदारी उत्पन्न करना। अतः उपर्युक्त उदाहरण में समायोजन प्रविष्टि निम्नानुसार की जावेगी :

		रुपये	रुपये	
31 दिसम्बर	उपार्जित ब्याज खाता ......डे.	500		देनदारी में वृद्धि, अतः डेबिट
	ब्याज खाता से		500	आय में वृद्धि, अतः क्रेडिट
	(उपार्जित ब्याज का समायोजन)			

इस प्रकार उपार्जित आय के संबंध में समायोजन करने के लिए उपार्जित आय खाता डेबिट तथा संबंधित आय खाता क्रेडिट किया जाता है। उपार्जित आय खाता व्यक्तिगत खाता होता है क्योंकि यह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिससे हमें आय प्राप्त करनी होती है।

प्रभाव - उपर्युक्त समायोजन से आय बढ़ जाने से लाभ बढ़ेगा तथा सम्पत्तियों में भी वृद्धि हो जायेगी।

विलोम प्रविष्टि - अगली लेखा-अवधि के प्रारम्भ में निम्नलिखित विलोम प्रविष्टि की जायेगी

		रुपये	रुपये
1 जनवरी	ब्याज खाता ......डे.	500	
	उपार्जित ब्याज खाते से		500
	(उपार्जित ब्याज को ब्याज खाते मे सम्मिलित किया गया)		

(5) अनुपार्जित आय (Unearned Income)

अनुपार्जित या अग्रिम प्राप्त आय वह आय होती है जो अभी अर्जित नही की गई है किन्तु जो प्राप्त हो गई है। चूंकि ये आय वर्तमान लेखा-अवधि से संबंधित नही होती, अतः इन्हे वर्तमान वर्ष की आय मे सम्मिलित नही किया जाना चाहिए।

उदाहरण - मान लीजिए 'क' ने अपना मकान 1 जुलाई को 1,000 रु. मासिक किराए पर उठाया। मकान किराए पर देते समय उसने 1 वर्ष का किराया प्राप्त कर लिया। इस उदाहरण मे 31 दिसम्बर को जब 'क' अपनी पुस्तके बन्द करेगा तो स्थिति यह होगी कि उसकी पुस्तकों मे किराया खाता (1,000 × 12) = 12,000 रु. मे क्रेडिट होगा। वस्तु-स्थिति यह है कि जुलाई से 31 दिसम्बर तक 6 माह का (1,000 × 6) = 6,000 रु. किराया ही उसकी इस वर्ष की आय होनी चाहिए तथा शेष 6,000 रु. अगली लेखा-अवधि से संबंधित आय है, जो वर्तमान लेखा-अवधि में अग्रिम प्राप्त हो गई है।

समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry)

अनुपार्जित आय के लिए समायोजन करने के दो उद्देश्य होते है - (i) चूंकि आय अगले वर्ष से संबंधित

है अतः प्राप्त आय कम करना, (2) चूँकि अग्रिम प्राप्त आय के बदले सेवाएं दी जानी होती है, अतः देयता उत्पन्न करना। उपर्युक्त उदाहरण में समायोजन प्रविष्टि निम्नानुसार होगी :

		रुपये	रुपये	
31 दिसम्बर	किराया खाता ......डे.	6,000		आय में कमी, अतः डेबिट
	अनुपार्जित किराया खाता से		6,000	लेनदारी में वृद्धि, अतः क्रेडिट
	(अनुपार्जित किराए का समायोजन)			

इस प्रकार अनुपार्जित आय का समायोजन करने हेतु **संबंधित आय खाता डेबिट तथा अनुपार्जित आय खाता क्रेडिट किया जाता है।**

उल्लेखनीय है कि अनुपार्जित किराया खाता एक **व्यक्तिगत खाता** है, क्योंकि यह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसे हमसे अग्रिम भुगतान के बदले सेवाएँ प्राप्त करनी हैं अर्थात् वह हमारा लेनदार होता है। अनुपार्जित किराया लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाए गए किराये में घटाया जाकर चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा।

प्रभाव - उपर्युक्त समायोजन में आय कम हो जाने से लाभ कम हो जायेगा तथा देयता में वृद्धि हो जाएगी।

विलोम प्रविष्टि - अगली लेखा-अवधि के प्रारम्भ में अग्रलिखित विलोम प्रविष्टि की जाएगी।

		रुपये	रुपये
1 जनवरी	अनुपार्जित किराया खाता ...डे.	6,000	
	किराया खाते से		6,000
	(अनुपार्जित किराया, किराया खाते में हस्तांतरित)		

इस प्रविष्टि से अनुपार्जित किराया खाता बन्द हो जाएगा तथा चूँकि यह प्राप्ति वर्तमान लेखा-अवधि संबंधित है, अतः किराया खाता क्रेडिट हो जाएगा।

(6) मूल्य ह्रास (Depreciation)

प्रयोग के कारण अथवा समय व्यतीत हो जाने के कारण किसी सम्पत्ति के मूल्य में होने वाली कमी ह्रास या अवक्षयण कहलाती है। इस हानि को लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाता है। चिट्ठे में ह्रास की राशि संबंधित सम्पत्ति के मूल्य में घटायी जाती है। सम्पत्तियों पर ह्रास की गणना एक निश्चित वार्षिक दर से की जाती है। जो सम्पत्तियाँ गत वर्ष से प्राप्त हुई हैं उन पर सम्पूर्ण वर्ष का तथा जो बीच मे प्राप्त की गई हों उन पर उतने समय का ह्रास लगाया जाना चाहिए जितने समय वे उस वर्ष प्रयोग में लायी गयी है। यदि कोई सम्पत्ति लेखा-अवधि के बीच मे ही बेच दी जाती है तो उस पर भी उतनी ही अवधि का ह्रास लगाया जाता है जितने समय वह प्रयोग में लायी गई। उल्लेखनीय है कि किसी सम्पत्ति के बेचने पर होने वाला लाभ या हानि भी लाभ-हानि खाते में सम्मिलित की जाती है। कभी-कभी ह्रास की दर न देकर लेखा-अवधि के प्रारम्भ तथा अंत में सम्पत्ति का मूल्य दे दिया जाता है, इनका अन्तर ह्रास होता है। जैसे 1 जनवरी को मशीन का मूल्य 10,000 रु. तथा 31 दिसम्बर को उसका मूल्य 9,500 रु. हो तो ह्रास 500 रु. होगा।

प्रविष्टि - ह्रास के संबंध में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है

31 दिसम्बर	ह्रास खाता ...डे.	ह्रास हानि है, अतः डेबिट
	सम्पत्ति खाते से	सम्पत्ति के मूल्य में कमी, अतः क्रेडिट
	(ह्रास ... दर से अपलिखित किया गया)	

Illustration 1

श्री राकेश के निम्नलिखित तलपट से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष का व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा उक्त तिथि को उसका चिट्ठा बनाइए

NOTES

	डेबिट (रुपये)	क्रेडिट (रुपये)
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	800	-------
बैंकस्थ	1,200	-------
मजदूरी (Wages)	2,000	-------
विक्रय (Sales)	-------	50,000
भवन (Buildings)	21,200	--------
प्राप्य बिल (B/R)	4,000	-------
प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock)	8,400	-------
लेनदार (Creditors)	--------	4,000
क्रय (Purchases)	33,000	-------
विक्रय (Sales Return)	600	------
वेतन (Salaries)	3,200	------
देनदार (Debtors)	8,600	------
टैक्स तथा बीमा (Taxes and Insurance)	2,200	------
अशोध्य ऋण (Bad Debts)	600	-------
क्रय पर भाड़ा (Freight on Purchases)	480	--------
पूंजी (Capital)	----------	32,000
कमीशन (Commission)	--------	280
	86,280	86,280

निम्नलिखित समायोजन भी कीजिए - अन्तिम रहतिया (Closing Stock) 9,000 रु., वेतन के 320 रु. तथा मजदूरी के 200 रु. देना बाकी (Outstanding) है, बीमा के 90 रु. पूर्वदत्त (Prepaid) है तथा कमीशन के 129 रु. शेष (Accrued) है, तथा भवन पर 4 % वार्षिक मूल्य ह्रास (Depreciation) लगाइये। समायोजनों की जर्नल प्रविष्टियाँ भी दीजिए।

Solution : भवन पर ह्रास $\left(\frac{21,200 \times 4}{100}\right)$ = Rs.848

Journal Entries

		Rs.	Rs.
31-12-07	Stock a/c To Trading a/c (Closing stock recorded)"	Dr.	9,000 9,000
"	Salary a/c Wages a/c To Outstanding Salary a/c To Outstanding Wages a/c (Adjustments for outstanding Salary and Wages)	Dr Dr	320 200 320 200
"	Prepaid Insurance a/c To Insurance a/c (Adjustment for prepaid Insurance)	Dr	90 90
"	Accrued Commission a/c To Commission a/c (Adjustments for accrued Commission)	Dr.	120 120
"	Depreciation a/c To Building a/c (Depreciation charged on Building)	Dr.	848 848

Trading and Profit and Loss Account
For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		8,400	By Sales	50,000	
To Purchases		33,000	Less : Returns	600	49,400
To Carriage		480			
To Wages	2,000		By Closing Stock		9,000
Add : Outstanding	200	2,200			
To Gross Profit c/d		14,320			
		58,400			58,400
To Sarlaries	3,200		By Gross Profit b/d		14,320
Add : Outstanding	320	3,520	By Commission	280	
			Add : Accrued	120	400
To Taxes and Insurance	2,200				
Less : Prepaid	90	2,110			
To Bad Debts		600			
To Depreciation on Building		848			
To Net Profit transferred to Capital a/c		7,642			
		14,720			14,720

Balance Sheet
As On 31 December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Sundry Creditors		4,000	Cash in Hand		800
Outstanding Salary		320	Cash at Bank		1,000
Outstanding Wages		200	Bills Receivables		4,000
Capital	32,000		Debtors		8,600
Add : Net Profit	7,642	39,642	Building	21,200	
			Less : Depreciation	848	20,352
			Prepaid Insurance		90
			Accrued Commission		120
			Closing Stock		9000
		44,162			44,162

NOTES

1.3 अशोध्य ऋण तथा अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान (Bad Debts and Provision for Bad and Doubtful Debts)

अशोध्य ऋण (Bad Debts) –

जिन देनदारों से भुगतान देने की सम्भावना नहीं रहती, अर्थात् जो ऋण वसूली योग्य नहीं होते, उन्हें हम अप्राप्य, अशोध्य या डूबत ऋण (Bad Debts) कहते हैं। अशोध्य ऋण व्यापार के लिए हानि है। अतः अन्तिम खाते बनाते समय यह आवश्यक होता है कि - (i) इस हानि को लाभ-हानि खाते में अपलिखित कर दिया जाए, तथा (ii) इन्हें चिट्ठे में देनदारों में से घटा दिया जाय। इस हेतु निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है :

31 दिसम्बर	अशोध्य ऋण खाता देनदारों के खाते से (अशोध्य ऋण अपलिखित किए गए)	डे	हानि है, अतः डेबिट देनदारों में कमी, अतः क्रेडिट

NOTES

अशोध्य ऋण लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाए जाएँगे तथा चिट्ठे में देनदार अप्राप्य ऋण घटा कर दिखाए जायेंगे।

अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान (Provision for Bad and Doubtful Debts)— प्रत्येक व्यापारी यह जानता है कि उसके सभी देनदार देय-राशि का पूरा भुगतान नहीं कर सकेंगे, कुछ न कुछ राशि अवश्य अशोध्य हो जायेगी। इस प्रकार अशोध्य या डूबत ऋण व्यापार के लिए एक संभावित हानि होती है। लेखांकन का यह सिद्धान्त है कि **किसी लेखा-अवधि की आय निर्धारित करने से पूर्व समस्त सम्भावित हानियों की व्यवस्था कर ली जानी चाहिए।** अत : अन्तिम खाते बनाते समय व्यापारी अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए भी प्रावधान कर लेता है।

अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनाने से संबंधित लेखांकन प्रक्रिया का अध्ययन हम निम्नलिखित स्थितियों में करेंगे:

(1) जब पहले से कोई प्रावधान न हो।

(2) जब अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान मौजूद हो :

(3) जब पहले से उपलब्ध प्रावधान वर्ष के अन्त में रखे जाने वाले प्रावधान से अधिक हों।

(1) **जब पहले से कोई प्रावधान न हो** - यदि व्यापारी ने पहले से अशोध्य ऋणों के लिए कोई प्रावधान नहीं कर रखा है (अर्थात् उसके तलपट में अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान शीर्षक के अन्तर्गत कोई शेष नहीं है) तो वह निम्नानुसार प्रावधान बनाएगा:

वह अपने पिछले अनुभव के आधार पर यह अनुमान लगा लेगा कि सामान्यत: उसके कितने प्रतिशत देनदार अशोध्य हो जाते हैं, तथा वर्ष के अन्त में उसके कितने देनदार हों उन पर उस प्रतिशत के बराबर प्रावधान कर लेगा। मान लीजिए, व्यापारी का अनुमान है कि उसके 5 प्रतिशत देनदार अशोध्य हो जाते हैं तथा वर्ष के अंत में उसके देनदार 10,000 रु. के हैं तो उसे $\left(\frac{10,000 \times 5}{100}\right) = 500$ रु. का प्रावधान बनाना चाहिए। इस हेतु समायोजन प्रविष्टि निम्नानुसार होगी :

लाभ-हानि खाता	डे.	हानि है, अत: डेबिट
अशोध्य एवं संदिग्ध ऋण प्रावधान से		देयता में वृद्धि, अत: क्रेडिट

(2) **जब अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान पहले से मौजूद हों** - इस स्थिति में अग्रलिखित तथ्य महत्वपूर्ण है :

(i) जब अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान किया गया होता है, अर्थात् जब तलपट के क्रेडिट पक्ष में अशोध्य ऋण प्रावधान खाते का शेष दिखाया गया होता है तो अशोध्य ऋण (Bad Debts) की हानि लाभ-हानि खाते में चार्ज न की जाकर प्रावधान से चार्ज की जाती है। इस हेतु प्रविष्टियाँ निम्नानुसार की जाती हैं :

अशोध्य ऋण खाता	डे.	हानि है, अत: डेबिट
देनदार खाते से		देनदारों (परिसम्पत्ति) में कमी, अत: क्रेडिट
(अशोध्य ऋण अपलिखित किया गया)		
अशोध्य ऋण प्रावधान खाता	डे.	प्रावधान (देयता) में कमी, अत: डेबिट
अशोध्य ऋण खाते से		अशोध्य ऋण, प्रावधान से चार्ज किया गया, अत: क्रेडिट
(अशोध्य ऋण की हानि प्रावधान से चार्ज की गई)		

(ii) जब प्रश्न में यह कहा जाता है कि अशोध्य ऋण प्रावधान एक निर्दिष्ट राशि के बराबर होना चाहिए, तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि उतनी राशि संबंधित वर्ष के लाभ-हानि खाते में डेबिट की जाए वरन् इसका अर्थ यह होता है कि वर्ष के अंत में प्रावधान खाते का शेष उक्त राशि के बराबर होना चाहिए।

उदाहरण - मान लीजिए तलपट के क्रेडिट पक्ष में 1,000 रु. का अशोध्य ऋण प्रावधान (अर्थात् वर्तमान वर्ष के प्रारम्भ में प्रावधान खाते का शेष) तथा डेबिट पक्ष में 200 रु. के अशोध्य ऋण तथा 12,000 रु. के

देनदार दिखाए गये हैं, समायोजन के अन्तर्गत यह कहा गया है कि अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए देनदारों पर 10 प्रतिशत प्रावधान कीजिए। इसका अर्थ यह है कि वर्ष के अंत में अशोध्य ऋण प्रावधान खाते में $\left(\frac{12,000 \times 10}{100}\right) = 1,200$ रु. का शेष होना चाहिए।

(iii) वर्ष के अंत मे प्रावधान खाते मे निर्दिष्ट शेष लाने के लिए कितनी राशि लाभ-हानि खाते में चार्ज की जाए, इसका निर्धारण निम्नानुसार किया जाता है :

(क) प्रावधान खाते के आरम्भिक शेष में से वर्ष में हुए अशोध्य ऋणों को अपलिखित कर यह ज्ञात कर लीजिए कि प्रावधान खाते में अब कितना शेष बचता है। उपर्युक्त उदाहरण में प्रावधान खाते के आरम्भिक शेष 1,000 रु. में से 200 रु. के अशोध्य ऋण अपलिखित करके 800 रु. शेष बचता है।

(ख) यदि प्रावधान की शेष राशि वर्ष के अंत में रखे जाने वाले प्रावधान से कम है तो अन्तर की राशि इस वर्ष के लाभ-हानि खाते से चार्ज कर ली जाएगी। उपर्युक्त उदाहरण में वर्ष के अंत में हम 1,200 रु. का प्रावधान रखना चाहते है जबकि हमारे पास उपलब्ध शेष 800 रु. है, अतः 400 रु. इस वर्ष लाभ-हानि खाते से चार्ज करने होंगे।

(ग) यदि प्रश्न में यह दिया गया हो कि एक निर्दिष्ट राशि या देनदारों पर एक निर्दिष्ट प्रतिशत के बराबर राशि अशोध्य ऋण प्रावधान में वृद्धि करो तो इसका अर्थ यह होता है कि उक्त राशि इस वर्ष के लाभ-हानि खाते से चार्ज करके प्रावधान में ले जाना है।

		रु.
उदाहरण -	1-1-07 को अशोध्य ऋण प्रावधान	1,000
	अशोध्य ऋण	200
	31-12-07 को देनदार	10,000

समायोजन - देनदारों पर 5 प्रतिशत के बराबर राशि अशोध्य ऋण प्रावधान में ले जाइए।

इस उदाहरण में $\left(\frac{10,000 \times 5}{100}\right) = 500$ रु. लाभ-हानि खाते को डेबिट कर प्रावधान खाते में ले जाये जाएँगे। 31-12-07 को प्रावधान निम्नानुसार होगा

	रु
1-1-07 को प्रावधान	1,000
(–) अशोध्य ऋण	200
	800
(+) 2007 वर्ष में प्रावधान में वृद्धि	500
31-12-07 को अशोध्य ऋण प्रावधान	1,300

(iv) उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि अशोध्य ऋण तथा वर्ष के अंत में वांछित प्रावधान की राशि के योग में से प्रावधान खाते के प्रारम्भिक शेष को घटाकर लाभ-हानि खाते को चार्ज की जाने वाली राशि ज्ञात की जा सकती है, अर्थात्

लाभ-हानि खाते में डेबिट को जाने वाली राशि

	रु
अशोध्य ऋण	.
(+) वर्ष के अंत में वांछित प्रावधान	..
(–) वर्ष के प्रारम्भ में उपलब्ध प्रावधान	
इस वर्ष के लाभ-हानि खाते को डेबिट की जाने वाली राशि	

NOTES

(3) **जब प्रावधान खाते में उपलब्ध शेष, वर्ष के अन्त में वांछित प्रावधान से अधिक हो -** यह संभव हो सकता है कि किसी वर्ष के आरम्भिक अशोध्य ऋण प्रावधान में से उस वर्ष के अशोध्य ऋणों की राशि अपलिखित करने के बाद शेष राशि, वर्ष के अन्त में रखे जाने वाले प्रावधान से अधिक हो। इस स्थिति में इस वर्ष कोई राशि लाभ-हानि खाते से चार्ज करने का प्रश्न ही नहीं उठेगा। इसके विपरीत, हमें उपलब्ध प्रावधान और कम करना होगा जिसके लिए प्रविष्टि निम्नानुसार की जाएगी :

अशोध्य ऋण प्रावधान खाता	डे.	प्रावधान कम किया - देयता में कमी, अतः डेबिट
लाभ-हानि खाते से		प्रावधान कम करना लाभ है, अतः लाभ-हानि खाता क्रेडिट
(अशोध्य ऋण प्रावधान कम किया गया)		

अशोध्य ऋणों की वसूली - यह हो सकता है कि किसी ऋण को अशोध्य मानकर अपलिखित कर दिया गया हो किन्तु बाद में वह ऋण वसूल हो जाये। इस स्थिति में प्राप्त राशि से अशोध्य ऋण प्रावधान खाता क्रेडिट किया जाता है। प्रविष्टि निम्नानुसार की जाती है :

रोकड़ खाता	डे.	रोकड़ आई, परिसम्पत्ति मे वृद्धि, अतः डेबिट
अशोध्य ऋण प्रावधान खाता से		प्रावधान (देयता) में वृद्धि, अतः क्रेडिट
(अशोध्य ऋण वसूल हुआ)		

यदि अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान न हो तो अशोध्य ऋणों की वसूली लाभ-हानि खाते में निम्नानुसार क्रेडिट की जाती है :

रोकड़ खाता	डे.	उल्लेखनीय है कि अशोध्य ऋण प्राप्त होने पर
अशोध्य ऋण वसूली खाता से (अशोध्य ऋण वसूल हुआ)		देनदार का खाता क्रेडिट नहीं होता, क्योंकि देनदार का खाता अशोध्य ऋण अपलिखित करते समय बन्द किया जा चुका होता है।
अशोध्य ऋण वसूली खाता	डे.	अशोध्य ऋणों की वसूली लाभ है, अतः इसे लाभ-हानि खाते में
लाभ-हानि खाता से		क्रेडिट करते हैं।
(अशोध्य ऋणों की वसूली लाभ-हानि खाते में ले जाई गई)		

खाते तैयार करना (Preparation of Accounts)

अशोध्य ऋण प्रावधान से संबंधित खाते निम्नानुसार तैयार किये जाते है :

(i) अशोध्य ऋण प्रावधान खाते का आरम्भिक शेष प्रावधान खाते के क्रेडिट पक्ष मे दिखाया जाता है।

(ii) वर्ष में अपलिखित किये गये अशोध्य ऋण, अशोध्य ऋण खाते में डेबिट किए जाते है।

(iii) अशोध्य ऋणों को प्रावधान खाते में निम्नानुसार प्रविष्टि कर चार्ज किया जाता है :

		रुपये	रुपये
अशोध्य ऋण प्रावधान खाता	डे.		
अशोध्य ऋण खाते से			
(अशोध्य ऋण प्रावधान में हस्तांतरित)			

(iv) जितनी राशि लाभ-हानि खाते को इस वर्ष चार्ज करना हो उसके लिए निम्नानुसार प्रविष्टि की जाती है :

		रुपये	रुपये
लाभ-हानि खाता	डे.		
अशोध्य ऋण प्रावधान खाते से			
(अशोध्य ऋणों के लिये प्रावधान किया गया)			

(v) अब अशोध्य ऋण प्रावधान खाते का शेष निकाल लिया जाता है। इस खाते में उतना अन्तिम शेष होगा जितना प्रावधान हम वर्ष के अन्त में रखना चाहते हैं। इस राशि को चिट्ठे में देनदारों में से घटाया जाएगा।

Illustration 2 :

31 दिसम्बर, 2007 को मनमोहन के देनदार 2,000 रु. के थे। वर्ष के प्रारम्भ में उसके अशोध्य ऋण संचिति में 400 रु. का क्रेडिट शेष था तथा वर्ष में 200 रु. अशोध्य ऋण अपलिखित किए गए। यह तय किया गया कि अशोध्य ऋण संचिति में इस वर्ष 300 रु. की वृद्धि करना है।

अशोध्य ऋण संचिति खाता बनाइए तथा उक्त समायोजनों को लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठे में दिखाइए।

Solution :

टिप्पणी : वर्ष के प्रारम्भ में अशोध्य ऋण संचिति 400 रु. की थी, 200 रु. अशोध्य ऋण अपलिखित करने पर 200 रु. शेष बचते है। इस वर्ष 300 रु. वृद्धि करने पर वर्ष के अंत में 500 रु. संचिति होगी।

अशोध्य ऋण संचिति

		रुपये			रुपये
31-12-07	अशोध्य ऋण	200	1-1-07	शेष आ./ला.	400
31-12-07	शेष आ./ले	500	31-12-07	लाभ-हानि खाता	300
		700			700
			1-1-08	शेष आ./ला.	500

लाभ-हानि खाता

		रुपये		रुपये
अशोध्य ऋण संचिति				
अशोध्य ऋण	200			
(+) 31-12-07की संचिति	500			
	700			
(-) 1-1-07 को संचिति	400	300		

चिट्ठा

31-12-2007 को

	रुपये			रुपये
		देनदार	2,000	
		(-) अशोध्य ऋण संचिति	500	1,500

Illustration 3 :

एक व्यापारी के तलपट में 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए निम्नलिखित शेष थे :

	रुपये
देनदार	2,000
अशोध्य ऋण संचिति (1-1-07)	1,000
अशोध्य ऋण	400

व्यापारी चाहता है कि अंतिम खाते बनाते समय देनदारों पर 10% अशोध्य ऋण संचिति रखी जाये। अशोध्य ऋण संचिति खाता बनाइये तथा लाभ-हानि खाते एवं चिट्ठे में उक्त व्यवहारों को दर्शाइये।

NOTES

Solution

अशोध्य ऋण संचिति खाता

		रुपये			रुपये
31-12-07	अशोध्य ऋण	400	1-1-07	शेष आ./ला.	1,000
31-12-07	लाभ-हानि खाता	400			
31-12-07	शेष आ./ले.	200			
		1,000			1,000
			1-1-08	शेष आ./ ला.	200

लाभ-हानि खाता

	रुपये			रुपये
		अशोध्य ऋण संचिति		
		1-1-07 को संचिति	1,000	
		(–) अशोध्य ऋण	400	
			600	
		(–) 31-12-07 को संचिति	200	400

चिट्ठा

31-12-2007 को

	रुपये			रुपये
		देनदार	2,000	
		(–) अशोध्य ऋण	200	
		संचिति @ 10%		1,800

1.4 देनदारों तथा लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान (Provision for Discount on Debtors and Creditors)

देनदारों पर बट्टा (Discount on Debtors)

जो देनदार निर्धारित समय से पूर्व भुगतान कर देते है, उन्हें बट्टा, उपहार या कटौती (Discount) दी जाती है। दिया गया बट्टा हानि होती है, अतः इसे लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाता है।

समायोजन प्रविष्टियाँ (Adjustment Entries) – इस संबंध में निम्नानुसार प्रविष्टियाँ की जाती है :

रोकड़ खाता	डे.	प्राप्त राशि		रोकड़ आई, अतः डेबिट
बट्टा खाता	डे.	दिया गया बट्टा		बट्टा हानि है, अतः डेबिट
देनदार खाता से (..... से भुगतान मिला ... रु बट्टा दिया)			देनदार से प्राप्य कुल राशि	देनदार से भुगतान मिला, देनदारी (परिसम्पत्ति) में कमी, अतः क्रेडिट
लाभ-हानि खाता	डे	बट्टा की राशि		हानि है, अतः लाभ-हानि खाता डेबिट, बट्टा खाता का डेबिट
बट्टा खाता से (बट्टा लाभ-हानि खाते में ले जाया गया)			बट्टे की राशि	शेष लाभ-हानि खाते में ले जाया गया।

बट्टा लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जायेगा तथा चिट्ठे में देनदारों की राशि में से सकल राशि (प्राप्त भुगतान + बट्टा) घटाकर दिखाई जायेगी।

देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान (Provision for Discount on Debtors)

किसी वर्ष के देनदारों को अगले वर्ष दी जाने वाली कटौती या बट्टे का भार उसी वर्ष के लाभ-हानि खाते पर पड़े, न कि उस वर्ष पर जिस वर्ष बट्टा दिया जाता है। इस हेतु उस वर्ष के अंतिम खाते बनाते समय देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान किया जा सकता है। यह प्रावधान ठीक वैसे ही बनाया जाता है जैसे अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनाया जाता है।

इस संबंध में प्रक्रिया निम्नानुसार है -

(i) प्रत्येक वर्ष के (Good) देनदारों अर्थात् देनदारों में से अशोध्य ऋण तथा अशोध्य ऋणों के लिए किये गए प्रावधान को घटाने के बाद शेष बचने वाले देनदारों पर एक निश्चित प्रतिशत से बट्टे के लिए प्रावधान किया जाता है। ये राशियाँ इसलिए घटाई जाती हैं क्योंकि बट्टा केवल उन्हीं देनदारों को दिया जायेगा जो अच्छे है अर्थात् जो भुगतान करेंगे। अशोध्य तथा संदिग्ध देनदारों से भुगतान प्राप्त नहीं होगा, अतः इन्हे बट्टा देने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(ii) दिया गया बट्टा अब लाभ-हानि खाते को डेबिट न करते हुए, बट्टे के लिए प्रावधान खाते मे डेबिट होगा।

(iii) किसी वर्ष लाभ-हानि खाते से कितनी राशि चार्ज करके इस प्रावधान में ले जाई जाए, इसका निर्धारण निम्नानुसार किया जाएगा :

	रुपये
दिया गया बट्टा (Discount Allowed)	....
(+) वर्ष के अंत मे वांछित बट्टा प्रावधान	....
	....
(-) वर्ष के प्रारम्भ मे उपलब्ध बट्टा प्रावधान	....
लाभ-हानि खाते को डेबिट राशि (Amount Debited to Profit & Loss A/c)	....

समायोजन प्रविष्टियाँ - देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान के संबंध मे निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टियाँ की जाती है :

दिया गया बट्टा प्रावधान से चार्ज करने के लिए	देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाता डे. बट्टा खाते से (देनदारों को दिया गया बट्टा प्रावधान से चार्ज किया गया)	प्रावधान कम हुआ, देयता मे कमी अतः डेबिट बट्टा की राशि प्रावधान मे ले जाई गई, अतः क्रेडिट
प्रावधान बनाने के लिए	लाभ-हानि खाता डे देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाते मे (प्रावधान की राशि लाभ-हानि खाते से चार्ज की गई)	बट्टे के लिए प्रावधान हानि है, अतः लाभ-हानि खाते को डेबिट प्रावधान बढा, देयता मे वृद्धि, अतः क्रेडिट
यदि प्रावधान कम करना हो	देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाता डे लाभ-हानि खाते से (बट्टे के लिए प्रावधान कम किया गया)	प्रावधान मे कमी (देयता मे कमी) अतः डेबिट बट्टे के लिए प्रावधान कम करना लाभ है, अतः लाभ-हानि खाता क्रेडिट

NOTES

लेनदारों पर बट्टा (Discount on Creditors)

जैसे हम अपने देनदारों को बट्टा देते हैं वैसे ही हमारे लेनदार हमें बट्टा दे सकते हैं। जब हम अपने लेनदारों से भुगतान करते समय बट्टा प्राप्त करते हैं तो यह हमारे लिए लाभ होता है जिसे हम लाभ-हानि खाते में क्रेडिट करते हैं। इस संबंध में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं :

लेनदार खाता डे. रोकड़ खाता से प्राप्य बट्टा खाता से (लेनदारों को भुगतान किया ..... रु. बट्टा मिला)	लेनदार की कुल राशि	दी गई रोकड़ प्राप्त बट्टा	देयता में कमी, अतः डेबिट रोकड़ गई, अतः क्रेडिट बट्टा मिला, अतः क्रेडिट
प्राप्त बट्टा खाता डे. लाभ-हानि खाता से (बट्टा लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित)	बट्टे की राशि	बट्टे की राशि	बट्टा लाभ है, अतः लाभ-हानि खाते में क्रेडिट

लेनदारों पर बट्टे के लिये प्रावधान (Provision for Discount on Creditors)

प्राप्त बट्टा उस वर्ष की आय में सम्मिलित हो जिस वर्ष के लेनदार हैं, न कि उस वर्ष जिस वर्ष वह बट्टा वास्तव में मिला है, इस हेतु लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान निम्नानुसार बनाया जा सकता है :

(i) लेनदारों पर निर्दिष्ट दर से प्रावधान बनाया जाता है। इस हेतु प्रावधान खाता डेबिट तथा लाभ-हानि खाता क्रेडिट किया जाता है।

(ii) प्राप्त बट्टा लाभ-हानि खाते में क्रेडिट न करते हुए, लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाते में क्रेडिट किया जाता है।

समायोजन प्रविष्टियाँ (Adjustment Entries) - लेनदारों पर प्राप्त बट्टे से संबंधित प्रविष्टियाँ निम्नानुसार की जाती हैं:

प्राप्त बट्टा प्रावधान में ले जाने के लिए गया	प्राप्त बट्टा खाता डे. लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाते से (प्राप्त बट्टा प्रावधान में ले जाया गया)	प्राप्त बट्टा खाते का क्रे. शेष प्रावधान में ले जाया गया अतः डेबिट किया प्रावधान (परिसम्पत्ति) में कमी, अतः क्रेडिट
प्रावधान बनाने के लिए	लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान खाता डे. लाभ-हानि खाते से (लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान कम किया गया)	प्रावधान (परिसम्पत्ति) में वृद्धि, अतः डेबिट प्राप्त बट्टा लाभ है अतः इस हेतु लाभ-हानि खाते में क्रेडिट
यदि प्रावधान कम करना हो	लाभ-हानि खाता डे लेनदारों पर बट्टा प्रावधान खाते से (लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान कम किया गया)	प्राप्त बट्टे में कमी हानि, अतः डेबिट प्रावधान (परिसम्पत्ति) में कमी अतः क्रेडिट

Illustration : 4 एक व्यापारी के 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के तलपट के कुछ शेष निम्नानुसार है

	रुपये
देनदार	5,100
लेनदार	2,000
अशोध्य ऋण संचिति (1-1-07)	1,000
अशोध्य ऋण	800

अन्तिम खाते बनाते समय व्यापारी निम्नलिखित समायोजन करना चाहता है :

(क) 100 रु. अशोध्य ऋण और अपलिखित किये जाएँ।

(ख) देनदारों पर 5% अशोध्य ऋण संचिति तथा 2% बट्टे के लिए कटौती संचिति की जाए।

(ग) लेनदारों पर 3% कटौती के लिए संचिति बनाई जाए।

इन समायोजनों के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठे में संबंधित मदो को दिखाइये तथा अशोध्य ऋण संचिति खाता बनाइए।

Solution :

रोजनामचा प्रविष्टियाँ

		रुपये	रुपये
अशोध्य ऋण खाता डे. देनदारो के खाते से (अशोध्य ऋण अपलिखित किए गए)	Bad Debts a/c Dr. To Debtors a/c (Bad Debts written off)	100	100
अशोध्य ऋण संचिति डे. अशोध्य ऋण खाते से (अशोध्य ऋणों की राशि संचिति को हस्तांतरित)	Bad Debts Reserve a/c Dr. To Bad Debts a/c (Bad Debts transferred to Reserve for Bad Debts a/c)	900	900
लाभ-हानि खाता डे. अशोध्य ऋण संचिति से (संचय बनाया गया)	Profit & Loss a/c Dr. To Bad Debts Reserve a/c (Reserve created)	150	150
लाभ-हानि खाता डे. देनदारों पर कटौती सचय से On Discount a/c (देनदारों पर 2% कटौती के लिए संचय किया गया)	Profit & Loss a/c Dr. To Reserve for Discount (Reserve for Discount on Debtors @ 2% created)	95 95	
लेनदारों पर कटौती सचय डे. लाभ-हानि खाता से (लेनदारों पर 3% कटौती के लिए संचय किया गया)	Reserve for Discount on Creditors a/c Dr. To Proft & loss a/c (Reserve for Discount on Creditors @ 3% created)	60	60

लाभ-हानि खाता

		रुपये		रुपये
अशोध्य ऋण संचिति			लेनदारों पर कटौती संचिति	60
अशोध्य ऋण	900			
(+) 31-12-07 को संचिति	250			
	1,150			
(−) 1-1-07 को संचिति	1,000	150		
देनदारों पर कटौती संचिति		95		

NOTES

चिट्ठा

		रुपये			रुपये
लेनदार	2,000		देनदार	5,100	
(–) कटौती संचिति @ 3%	60	1,940	(–) अशोध्य ऋण	100	
				5,000	
			(–) अशोध्य ऋण संचिति @ 5%	250	
					4,750
			(–) कटौती संचिति @ 2%	95	4,655

अशोध्य ऋण संचिति खाता

		रुपये			रुपये
31-1-07	अशोध्य ऋण	900	1-1-07	शेष आ./ला.	1,000
31-12-07	शेष आ./ले.	250	31-12-07	लाभ-हानि खाता	150
		1,150			1,150
				शेष आ./ला.	250

1.5 पूँजी पर ब्याज (Interest on Capitals)

व्यापार के स्वामी द्वारा लगाई गई पूँजी पर ब्याज दिया जा सकता है। यह ब्याज पूँजी के उपयोग का मूल्य होता है अतः यह एक आगम व्यय है जिसे लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाता है। चूँकि यह ब्याज स्वामी को देय होता है, अतः चिट्ठे में इसे पूँजी खाते मे जोड़ देते हैं।

ब्याज की गणना पूँजी खाते के आरम्भिक शेष पर निर्दिष्ट प्रतिशत से की जाती है। यदि वर्ष के बीच में अतिरिक्त पूँजी लगाई गई हो तो उस पर केवल शेष अवधि का ही ब्याज लगाया जाता है।

समायोजन प्रविष्टियाँ (Adjustment Entries)

पूँजी पर ब्याज खाता पूँजी खाते से (पूँजी पर ... प्रतिशत दर से ब्याज दिया गया)	डे.	आगम व्यय, अतः डेबिट ब्याज स्वामी को देना है, देयता में वृद्धि, अतः क्रेडिट
लाभ-हानि खाता पूँजी पर ब्याज खाते से (पूँजी पर ब्याज लाभ-हानि खाते में ले जाया गया)	डे.	ब्याज व्यय है, अतः लाभ-हानि खाता डेबिट ब्याज खाता का डेबिट शेष लाभ-हानि खाते में ले जाया गया, अतः क्रेडिट

आहरण पर ब्याज (Interest on Drawings)

व्यापारी द्वारा व्यापार में किए जाने वाले आहरणों पर ब्याज चार्ज किया जाता है जो व्यापार के लिए आय होती है जिसे लाभ-हानि खाते में क्रेडिट करते है इस राशि को चिट्ठे में आहरण में जोड़ कर पूँजी में से घटाते है।

समायोजन प्रविष्टियाँ (Adjustment Entries)

आहरण खाता आहरण पर ब्याज खाता से (आहरण पर ... प्रतिशत ब्याज लगाया गया)	डे.	स्वामी देनदार है, अतः डेबिट ब्याज आय है, अतः क्रेडिट

आहरण पर ब्याज खाता लाभ-हानि खाता से (आहरण पर ब्याज लाभ-हानि खाते में ले जाया गया)	डे.	आहरण पर ब्याज खाते का शेष लाभ-हानि खाते में क्रेडिट किया गया

1.6 ऋण पर ब्याज (Interest on Loan)

कभी-कभी तलपट के क्रेडिट पक्ष में ऋण खाते का शेष दिया गया होता है। यदि ऋण के साथ ब्याज का प्रतिशत भी दिया गया हो, जैसे "10 प्रतिशत ऋण 5,000 रु." तो यह देख लेना चाहिए कि इस ऋण पर सम्पूर्ण लेखा अवधि का ब्याज चुका दिया गया है या नहीं। जैसे इस उदाहरण में 5,000 रु. के ऋण पर 10 प्रतिशत की दर से एक वर्ष का ब्याज 500 रु. चुकाया गया होना चाहिए। यदि तलपट में 500 रु. ब्याज दिया गया है तो इसका अर्थ यह है कि ब्याज चुका दिया गया है। इस स्थिति में ब्याज के संबंध में किसी समायोजन की आवश्यकता नहीं है। ब्याज लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाएगा तथा ऋण चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाएगा। किन्तु यदि मान लीजिए, तलपट में 375 रु. ब्याज दिखाया गया है तो इसका अर्थ है कि यह ब्याज केवल 9 माह का है, अर्थात् (500 – 375) = 125 रु. 3 माह का ब्याज अभी अदत्त है।

इस अदत्त ब्याज हेतु समायोजन किया जाना चाहिए, भले ही ऐसा करने हेतु प्रश्न में निर्देशित किया गया हो या नहीं।

अदत्त व्ययों हेतु समायोजन प्रविष्टियाँ पूर्व में समझाई जा चुकी हैं। लाभ-हानि खाते में अदत्त ब्याज दिये गये ब्याज में जोड़कर तथा चिट्ठे के दायित्व पक्ष में देयता के रूप में दिखाया जायेगा।

विनियोगों पर ब्याज (Interest on Investments)

विनियोग व्यापारी की सम्पत्ति होती है तथा इन पर ब्याज आय होती है जिसे लाभ-हानि खाते में क्रेडिट करते हैं। यदि विनियोगों के साथ ब्याज का प्रतिशत दिया गया हो (जैसे 8 प्रतिशत टाटा ऋण-पत्र) तो यह देख लेना चाहिए कि सम्पूर्ण लेखा-अवधि का ब्याज प्राप्त कर लिया गया है अथवा नहीं। यदि तलपट में ब्याज प्राप्त हुआ न दिखाया गया हो अथवा ब्याज सम्पूर्ण अवधि का न हो तो शेष राशि को उपार्जित ब्याज (Accrued Interest) मानकर पूर्व वर्णित रीति से उपार्जित ब्याज हेतु समायोजन किया जाना चाहिए। उपार्जित ब्याज लाभ-हानि खाते में प्राप्त ब्याज में जोड़कर, चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाना चाहिए।

Illustration 5 :

जैन ट्रेडर्स की पुस्तकों से 31 दिसम्बर, 2007 को निम्न तलपट तैयार किया गया

	डेबिट (रुपये)	क्रेडिट (रुपये)
फर्नीचर (Furniture)	640	
मोटर-कार (Motor Car)	6,000	
भवन (Buildings)	7,500	
पूँजी (Capital)		12,500
अशोध्य ऋण (Bad and Doubtful Debts)	175	300
देनदार तथा लेनदार (Debtors & Creditors)	4,000	2,400
स्कन्ध (Stock) 1-1-07	3,460	....
क्रय तथा विक्रय (Purchase and Sales)	5,475	15,450
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)		2,850
वापसी (Returns)	200	125
विज्ञापन (Advertisement)	450	
ब्याज (Interest)	118	
कमीशन (Commission)		375
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	650	
कर एवं बीमा (Tax & Insurance)	350	
मोटर-कार व्यय (Motor Car Expenses)	900	

सामान्य व्यय (General Exp.)	782	
वेतन (Salaries)	3,300	
	34,000	34,000

NOTES

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार एवं लाभालाभ खाता तथा उस तिथि को चिट्ठा निम्नलिखित समायोजनों को दृष्टिगत रखते हुए बनाइये :

(i) वेतन 11 माह का चुकाया गया है।

(ii) 100 रु. बीमा का पूर्वदत्त है।

(iii) भवन पर 5 % तथा मोटर-कार पर 10 % ह्रास काटना है।

(iv) अशोध्य ऋण 100 रु. और लिखिए तथा संदिग्ध ऋण संचिति को देनदारों के 5% से बढ़ाइए।

(v) 31 दिसम्बर, 2007 को स्कन्ध का मूल्य 3,250 रु. आँका गया।

Solution : टिप्पणियाँ

(1) 3,300 रु 11 माह का वेतन है, अतः 1 माह का अदत्त वेतन $\left(\frac{3,300}{11}\right) = 300$ रु.।

(2) 4,000 रु के देनदारों से 100 रु. अशोध्य ऋण अपलिखित करके शेष 3,900 रु. के देनदारों की 5% राशि अर्थात् $\left(\frac{3,900 \times 5}{100}\right) = 195$ रु. इस वर्ष के लाभ-हानि खाते मे डेबिट करके संचिति में ले जाना है।

31-12-07 को संचिति :	रु.
1-1-07 को संचिति	300
(–) अशोध्य ऋण (175 + 100)	275
	25
(+) संचिति में 2007 वर्ष मे क्रेडिट	195
31-12-07 को संचिति	220

(3) अशोध्य ऋण लाभ-हानि खाते में डेबिट न किये जाकर संचिति में डेबिट होगे।

Trading and Profit & Loss Account

For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		3,460	By Sales	15,450	
To Purchase	5,475		Less : Returns	200	15,250
Less : Returns	125	5,350	By Closing Stock		3,250
To Gross Profit		9,690			
		18,500			18,500
To Advertisement		450	By Gross Profit		9,690
To Interest		118	By Commission		375
To Taxes & Insurance	350				
Less : Prepaid	100	250			
To General Expenses		782			
To Motor Car Expenses		900			
To Salaries	3,300				
Add : Outstanding	300	3,600			

To Provision for Doubtful Debts	195		
To Depreciation :			
Building	375		
Motor Car	600		
To Net Profit	2,795		
	10,065		10,065

Balance Sheet

As on 31st December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Creditors		2,400	Furniture		640
Bank Overdraft		2,850	Motor-Car	6,000	
Outstanding Salary		300	Less : Depreciation	600	5,400
Capital	12,500				
Add : Net Profit	2,795	15,295	Building	7,500	
			Less : Depreciation	375	7,125
			Debtors	4,000	
			Less : Bad Debts	100	
				3,900	
			Less : Provision for		
			Doubtful Debts	220	3,680
			Cash in Hand		650
			Prepaid Insurance		100
			Closing Stock		3,250
		20,845			20,845

NOTES

1.8 अशुद्धियों के सुधार हेतु समायोजन (Adjustments of Rectification of Errors)

लेखाकन कार्य में यदि कोई अशुद्धियाँ या त्रुटियाँ हो गई हो, तो उनका सुधार भी अंतिम खाते तैयार करते समय किया जा सकता है।

इस प्रकार की कुछ प्रमुख त्रुटियों के समायोजन की विधि का अब हम अध्ययन करेंगे

(1) **किसी व्यवहार का लेखा न किया जाना** (Not recording certain transactions) - यदि किसी व्यवहार का लेखा करने से रह गया हो, तो उसका लेखा जैसे किया जाना चाहिए था, अब समायोजन के अन्तर्गत कर उसकी प्रविष्टि लाभ-हानि खाते तथा चिट्ठे मे कर देना चाहिए। कुछ उदाहरण निम्नानुसार है

(क) ग्राहक द्वारा लौटाया गया माल स्टॉक में ले लिया गया किन्तु उसका लेखा नहीं किया गया (Goods returned by Customer included in Stock but not recorded) - इस स्थिति मे विक्रय वापसी की प्रविष्टि की जानी चाहिए, अर्थात्

	विक्रय वापसी खाता डे देनदार खाते से (विक्रय-वापसी का लेखा किया गया)	माल वापस आया, अत: डेबिट देनदारो मे कमी, अत: क्रेडिट कमी, अत: क्रेडिट

व्यापार खाते (Trading a/c) में इसे विक्रय-वापसी में सम्मिलित कर विक्रय में से घटा दिया जायेगा तथा चिट्ठे में देनदार कम कर दिए जावेंगे।

NOTES

(ख) विक्रय या वापसी (Sale or Return) **के आधार पर ग्राहक को भेजा गया माल** - कभी-कभी ग्राहक को माल इस शर्त पर भेजा जाता है कि यदि ग्राहक माल पसन्द करे तो रख ले, यदि उसे पसन्द न हो तो एक निर्धारित समयावधि में वापस लौटा दे। इसे " Goods Sent on Approval " भी कहते हैं। स्वीकृति पर भेजे गए माल का लेखा सामान्य बिक्री की भाँति ही किया जाता है, अर्थात् ग्राहक का खाता डेबिट कर विक्रय खाता क्रेडिट करते हैं। **यदि ग्राहक की स्वीकृति आ जाती है तो किसी समायोजन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि माल बिक गया जिसका लेखा पहले ही किया जा चुका है।**

स्वीकृति पर भेजा गया माल यदि वापस कर दिया जाता है तो विक्रय-वापसी का लेखा कर दिया जाता है, अर्थात्:

	विक्रय-वापसी खाता	डे.	स्टॉक में वृद्धि, अतः डेबिट
	देनदार खाते से		देनदारों में कमी, अतः क्रेडिट
	(स्वीकृति पर भेजा गया माल वापस आया)		

किन्तु यह हो सकता है कि ग्राहक ने न तो अपनी स्वीकृति ही भेजी हो और न ही माल वापस लौटाया हो तथा माल वापस लौटाने की अवधि अभी समाप्त न हुई हो। इस स्थिति में निम्नानुसार समायोजन आवश्यक होंगे :

(i) चूँकि स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है अतः इसे न तो बिक्री में सम्मिलित किया जाना चाहिए तथा न ही क्रेता को देनदारों में। अतः निम्नानुसार प्रविष्टि की जानी चाहिए :

	विक्रय खाता	डे.	विक्रय में कमी, अतः डेबिट
	देनदार खाते से		देनदारों में कमी, अतः क्रेडिट
	(स्वीकृति पर भेजे माल का समायोजन)		

(ii) चूँकि यह माल व्यापारी की सम्पत्ति है जो ग्राहक के पास है अतः इसे माल के लागत मूल्य (अर्थात् विक्रय मूल्य में से लाभ घटा कर) पर निम्नानुसार प्रविष्टि की जाएगी :

	ग्राहक के पास स्टॉक खाता	डे.	स्टॉक (परिसम्पत्ति) में वृद्धि, अतः डेबिट
	व्यापार खाते से		स्टॉक व्यापार खाते में, अतः क्रेडिट
	(ग्राहक के पास माल का समायोजन)		

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि :

(i) स्वीकृति पर भेजे गए माल के बीजक मूल्य से **व्यापार खाते में बिक्री** तथा चिट्ठे में **देनदार कम** कर दिए जावेंगे।

(ii) माल को **लागत मूल्य** पर ग्राहक के पास स्टॉक मान कर **व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में** तथा **चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष** में दिखाया जायेगा।

(ग) व्यापारी द्वारा निजी उपयोग के लिए निकाला गया माल (Goods taken away for personal use), **दान में दिया गया माल** (Goods given away as Charity) **अथवा मुफ्त नमूनों के रूप में बाँटा गया माल** (Goods distributted as free samples) - चूँकि यह माल बेचा नहीं गया है अतः इसे 'बेचे गए माल की लागत' में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। इस हेतु समायोजन निम्नानुसार किये जाने चाहिए

(i) निजी उपयोग में लाए गए माल को, व्यापार खाते में क्रय में से घटा कर, चिट्ठे में आहरण के रूप में दिखाकर पूँजी में से घटाइए।

(ii) दान में दिया गया माल क्रय में से घटा कर, लाभ-हानि खाते में दान खाते में सम्मिलित कर डेबिट कीजिए।

(iii) मुफ्त नमूनों के रूप में बाँटा गया माल, **क्रय में से घटा कर**, लाभ-हानि खाते में विज्ञापन के रूप में डेबिट करें।

(घ) क्रय जिसका लेखा नहीं किया गया (Purchases not recorded) - मान लीजिए 5,000 रु. का माल क्रय किया गया। माल प्राप्त करके स्टॉक में ले लिया गया। किन्तु उसका लेखा नहीं किया गया। इस स्थिति में माल क्रय करने की जो प्रविष्टि होनी चाहिए थी वह अब कर दी जाएगी, अर्थात् :

		रुपये	रुपये	
	क्रय खाता डे.	5,000		माल आया परिसम्पत्ति में वृद्धि, अतः डेबिट
	लेनदार खाते से		5,000	दायित्व में वृद्धि, अतः क्रेडिट
	(क्रय का लेखा किया गया)			

इस समायोजन के अन्तर्गत **व्यापारिक खाते में क्रय** तथा **चिट्ठे में लेनदार बढ़ा दिये जायेंगे।**

(ङ) बट्टे पर भुनाए गए बिल के अनादरण का लेखा न होना (Dishonour of discounted Bill not recorded)- बट्टे पर भुनाए गए बिल के दातव्य तिथि पर अनादृत कर दिए जाने पर जो प्रविष्टि की जानी चाहिए वह कर दी जाएगी, अर्थात् :

	स्वीकर्ता (देनदार) खाता डे.	स्वीकर्ता देनदार है, अतः डेबिट
	बैंक खाते से	बैंक जिससे बिल भुनाया गया था, लेनदार है,
	(बट्टे पर भुनाया गया बिल अनादृत हुआ)	अतः क्रेडिट

उक्त समायोजन से अस्वीकृत बिल की राशि से देनदार बढ़ जायेंगे तथा बैंक खाते का शेष कम हो जायेगा।

(2) **गत वर्ष अंतिम स्कन्ध का मूल्यांकन गलत किया गया** (Wrong Valuation of last year's Closing Stock)- यदि अंतिम खाते बनाते समय यह विदित हो कि गत वर्ष अंतिम स्कन्ध का मूल्यांकन कम या अधिक किया गया था तो इसका सुधार निम्नानुसार किया जाना चाहिए:

(i) चूँकि गत वर्ष का अंतिम स्टॉक इस वर्ष का आरम्भिक स्कन्ध होता है अतः इस वर्ष के आरम्भिक स्कन्ध में आवश्यक सुधार कर दें अर्थात् यदि स्कन्ध का मूल्यांकन कम हुआ हो तो बढ़ा दें अथवा यदि अधिक हुआ हो तो कम कर दें।

(ii) गत वर्ष अंतिम स्कन्ध के गलत मूल्यांकन ने गत वर्ष के लाभ-हानि को प्रभावित किया होगा। चूँकि लाभ-हानि पूँजी खाते में जोड़ी-घटाई जाती है अतः इसका समायोजन पूँजी खाते में निम्नानुसार करें।

(क) यदि स्कन्ध का मूल्यांकन अधिक हुआ हो तो लाभ बढ़ा होगा, अतः पूँजी कम कर दें।

(ख) यदि मूल्यांकन कम हुआ हो तो लाभ कम हुआ होगा, अतः पूँजी बढ़ा दें।

(3) **सैद्धान्तिक त्रुटियाँ** (Errors of Principle) - इस प्रकार के समायोजनों के कुछ उदाहरण निम्नानुसार है

(क) पूँजीगत व्यय को आगम व्यय मान लेना (Treating Capital Expenses as Revenue Expenses) - मान लीजिए एक नई मशीन की प्रतिस्थापना पर 500 रु. मजदूरी के व्यय किए गए जिसे मजदूरी खाते में डेबिट कर दिया गया। त्रुटि यह है कि ये व्यय मशीनरी खाते को डेबिट होने चाहिए थे, न कि मजदूरी खाते को। समायोजन प्रविष्टि निम्नानुसार होगी

		रुपये	रुपये	
	मशीनरी खाता डे	500		सम्पत्ति में वृद्धि, अतः डेबिट
	मजदूरी खाते से		500	मजदूरी खाता गलत डेबिट हो गया था, अतः क्रेडिट
	(मशीन लगाने की मजदूरी को मजदूरी खाते में डेबिट करने की त्रुटि का सुधार)			

इस समायोजन के अन्तर्गत व्यापारिक खाते में मजदूरी कम कर दी जाएगी तथा चिट्ठे में मशीनरी का मूल्य बढ़ा दिया जाएगा।

NOTES

(ख) आगम व्यय को पूँजीगत मान लेना (Treating Revenue Expenses as Capital Expenses) - मान लीजिए, फर्नीचर की सामान्य मरम्मत कर व्यय 200 रु. जो मरम्मत खाते को डेबिट होने चाहिए थे, गलती से फर्नीचर खाते को डेबिट कर दिए गए। समायोजन प्रविष्टि निम्नानुसार की जायेगी :

		रुपये	रुपये	
	मरम्मत खाता डे. फर्नीचर खाते से (मरम्मत की राशि फर्नीचर खाते में डेबिट करने की त्रुटि का सुधार)	1,000	 1,000	मरम्मत व्यय है, अतः डेबिट फर्नीचर खाता गलत डेबिट हो गया था, अतः क्रेडिट

उक्त समायोजन से **लाभ-हानि खाते में मरम्मत की राशि बढ़ जाएगी तथा चिट्ठे में फर्नीचर कम हो जायेगा।**

(ग) व्यक्तिगत व्ययों को व्यापारिक व्यय मान लेना (Treating Personal Expenses as Business Expenses)- व्यक्तिगत व्यय 'आहरण खाते' को डेबिट किये जाने चाहिए, न कि व्यापारिक लाभ-हानि खाते को। मान लीजिए, व्यापार की मोटर का उपयोग व्यापारी अपने निजी कार्यों के लिए भी करता है। वर्ष में मोटर पर कुल व्यय 3,000 रु. हुए जिसका 1/3 भाग उसके निजी उपयोग से संबंधित है। इस स्थिति में समस्त मोटर व्यय (3,000 रु.) जो लाभ-हानि खाते को डेबिट किए गये हैं, में से 1,000 रु. आहरण खाते में ले जाए जाना चाहिए। प्रविष्टि निम्नानुसार होगी:

		रुपये	रुपये	
	आहरण खाता डे. मोटर व्यय खाता से (निजी उपयोग के मोटर व्यय आहरण में सम्मिलित किए गए)	1,000 1,000		व्यापारी देनदार है, अतः डेबिट मोटर व्यय खाता अधिक डेबिट हो गया था, अतः क्रेडिट

उक्त समायोजन से **लाभ-हानि खाते में मोटर व्यय कम हो जायेगे** तथा **चिट्ठे में आहरण की राशि बढ़ जायेगी।**

(घ) व्यापारिक व्यय को व्यक्तिगत व्यय मान लेना (Treating Business Expenses as Personal Expenses) - मान लीजिए, व्यापारी ने व्यापार के बिजली बिलों का भुगतान करने के लिए 200 रु. निकाले जिसे भूल से उसके व्यक्तिगत खाते में लिख दिया गया। समायोजन निम्नानुसार किया जाएगा:

		रुपये	रुपये	
	बिजली व्यय खाता डे. आहरण खाते से (बिजली व्यय व्यक्तिगत खाते में लिख देने की त्रुटि का सुधार)	200	 200	व्यय है, अतः डेबिट आहरण खाता गलत डेबिट हो गया था, अतः क्रेडिट

उक्त समायोजन के अन्तर्गत **बिजली व्यय लाभ-हानि खाते में डेबिट** कर दिये जायेंगे तथा **चिट्ठे में आहरण कम कर दिया जाएगा।**

Illustration : 6 31 दिसम्बर, 2007 को अग्रलिखित शेष रामेन्द्र की पुस्तकों से लिए गए हैं-

	रुपये	रुपये
आहरण (Drawings)	3,000	.....
देनदार (Debtors)	20,100	.....
ऋण पर ब्याज (Interest on Loan)	300	....
रोकड़ (Cash)	2,050	......
स्टॉक (Stock) (1-1-07)	6,839	.....
मोटर गाड़ी (Motor)	10,000	....
बैंक (Bank)	3,555	......
भूमि व भवन (Land & Building)	12,000	......
अशोध्य ऋण (Bad Debts)	525	....
क्रय (Purchases)	66,458	....
विक्रय-वापसी (Sales Return)	7,821	..
क्रय पर भाड़ा (Freight on Purchases)	2,929	......
विक्रय पर भाड़ा (Freight on Sales)	2,404	....
स्थापना व्यय (Establishment Expenses)	9,097	......
कर तथा बीमा (Taxes & Insurance)	2,891	....
विज्ञापन व्यय (Advertisement)	3,264	.....
सामान्य व्यय (General Charges)	3,489	....
प्राप्य बिल (B/R)	6,882	....
पूँजी खाता (Capital)	....	28,000
लेनदार (Creditors)	....	10,401
बन्धक पर ऋण (Loan on Mortage)	......	9,500
अशोध्य ऋण संचिति (Bad Debts Reserve)	....	710
विक्रय (Sales)	......	1,10,243
प्राप्त बट्टा (Discount received)	.	540
देयबिल (B/P)	.....	2,614
प्राप्त किराया (Rent received)	......	250
क्रय वापसी (Purchase Returns)	....	1,346
	1,63,604	1,63,604

निम्नलिखित समायोजनों के पश्चात् 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा उक्त तिथि को चिट्ठा बनाइए -

(i) भूमि एवं भवन पर 2½ % व मोटर गाड़ियों पर 20 % ह्रास लगाइए। (ii) ऋण पर 6% वार्षिक दर से 6 माह का ब्याज नहीं दिया गया है। (iii) 500 रु. लागत का माल 30 सितम्बर, 2007 को एक ग्राहक को विक्रय या वापसी शर्त पर 600 रु. कीमत पर भेजा गया और उसका लेखा वास्तविक बिक्री के रूप में कर दिया गया। (iv) 750 रु. वेतन तथा 350 रु. स्थानीय कर अदत्त है। (v) बीमा 150 रु. पूर्वदत्त है (vi) विविध देनदारों पर 5 % डूबत ऋण आयोजन करना है। (vii) 31 दिसम्बर, 2007 को रहतिया 6,250 रु. का है।

Solution :

टिप्पणियाँ - (i) ऋण पर 6 माह का अदत्त ब्याज $\left(\frac{9,500 \times 6 \times 6}{100 \times 12}\right) = 285$ रु.।

(ii) 600 रु. मूल्य का माल विक्रय या वापसी शर्त पर भेजा गया। माल अभी बिका नहीं है, अतः इसे बिक्री तथा देनदारों में से घटाएं। देनदार अब 19,500 रु. के रह जाएँगे। 500 रु. लागत का माल स्टॉक के रूप में व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाएगा।

NOTES

NOTES

Trading and Profit & Loss Account
For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		6,839	By Sales	1,10,243	
To Purchase	66,458		Less : Returns	7,821	
Less : Returns	1,346	65,112		1,02,422	
To Carriage		2,929	Less : Sale on Approval	600	1,01,822
To Gross Profit a/c		33,692			
			By Stock with Customer		500
			By Closing Stock		6,250
		1,08,572			1,08,572
To Taxes & Insurance	2,891		By Gross Profit b/d		33,692
Add : Outstanding Tax	350		By Discount Received		540
	3,241		By Rent Received		250
Less : Prepaid Insurance	150	3,091			
To General Expenses		3,489			
To Establishment	9,097				
Expenses :					
Add : Outstanding	750	9,847			
To Carriage on Sales		2,404			
To Depreciation :					
Land & Bldg.		300			
Motor Lorry		2,000			
To Interest on Loan	300				
Add : Outstanding	285	585			
To Advertisement		3,264			
To Porvision for Bad Debts :					
Bad Debts	525				
Add : Provision on 31-12-07	975				
	1,500				
Less : Provision on 1-1-07	710	790			
To Net Profit		8,712			
		34,482			34,482

Balance Sheet
As on 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
Sundry Creditors		10,401	Cash		2,050
Loan on Mortgage		9,500	Motor Lorry	10,000	
Interest due to Loan		285	Less : Depreciation	2,000	8,000
Bills Payable		2,614			
Outstanding Expenses			Bank		3,555
Salary		750	Land & Building	12,000	
Taxes		350	Less : Depreciation	300	11,700
Capital	28,000				
Less : Drawings	3,000		Bills Receivable		6,882

			Debtors	20,100	
	25,000		Less : Goods on Approval	600	
Add : Net Profit	8,712	33,712		19,500	
			Less : Provision for		
			Bad Debts	975	18,525
			Closing Stock		6,250
			Stock with Customer		500
			Prepaid Insurance		150
		57,612			57,612

NOTES

Illustration : 7

31 दिसम्बर, 2007 को श्री सुरेन्द्र का तलपट निम्नानुसार था -

	डेबिट (रुपये)	**क्रेडिट (रुपये)**
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	1,080	
बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	5,260	
क्रय (Purchases)	81,350	
विक्रय (Sales)		1,97,560
आन्तरिक वापसी (Returns Inward)	1,360	
बाह्य वापसी (Returns Outward)		1,000
मजदूरी (Wages)	20,960	
ईंधन एवं शक्ति (Fuel and Power)	9,460	
विक्रय पर भाड़ा (Carriage on Sales)	6,400	
क्रय पर भाड़ा (Carriage on Purchases)	4,080	
स्कन्ध (Stock) 1-1-07	11,520	
भवन (Buildings)	60,000	
भूमि (Land)	20,000	
मशीनरी (Machinery)	40,000	
वेतन (Salaries)	30,000	
पेटेण्ट (Patents)	15,000	
सामान्य व्यय (General Expenses)	6,000	
बीमा (Insurance)	1,200	
पूँजी (Capital)		1,42,000
आहरण (Drawing)	10,490	
देनदार (Debtors)	29,000	
लेनदार (Creditors)		12,600
	3,53,160	3,53,160

निम्नलिखित समायोजनों (Adjustments) को दृष्टिगत रखते हुए व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिए -

(i) 31 दिसम्बर, 2007 को स्कन्ध (Stock) 13,600 रु. का था।

(ii) मशीनरी (Machinery) पर 10% तथा पेटेण्ट (Patents) पर 20% ह्रास (Depreciation) काटना है।

(iii) दिसम्बर, 2007 माह का वेतन (Salary) 3,000 रु. अदत्त है।

(iv) बीमा (Insurance) में 170 रु. 2008 वर्ष की प्रीमियम सम्मिलित है।

(v) मजदूरी (Wages) में कर्मचारियों तथा ग्राहकों के लिए निर्मित साइकिल-शेड (Cycle-shed) पर व्यय 4,000 रु. सम्मिलित है।

(vi) देनदारों (Debtors) पर 5% अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान (Provision for Bad and Doubtful Debts) कीजिए।

NOTES

टिप्पणियाँ -

(i) ह्रास : मशीनरी $\left(\frac{40,000 \times 10}{100}\right) = 4,000$ रु., पेटेन्ट $\left(\frac{15,000 \times 20}{100}\right) = 3,000$ रु.।

(ii) साइकिल शेड के निर्माण पर व्यय मजदूरी पूँजीगत व्यय है, अतः इसे मजदूरी में से घटा कर चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में दिखायेंगे।

(iii) देनदारों पर प्रावधान $\left(\frac{29,000 \times 5}{100}\right) = 1,450$ रु.।

Trading and Profit & Loss Account

For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		11,520	By Sales	1,97,560	
To Purchases	81,350		(-) Returns	1,360	1,96,200
(-) Returns	1,000	80,350			
			By Closing Stock		13,600
To Wages	20,960				
(-) On Cycle shed	4,000	16,960			
To Carriage on Purchases		4,080			
To Fuel and Power		9,460			
To Gross Profit c/d		87,430			
		2,09,800			2,09,800
To Salaries	30,000		By Gross Profit b/d		87,430
(+) Outstanding	3,000	33,000			
To Carriage on Sales		6,400			
To General Expenses		6,000			
To Insurance	1,200				
(-) Prepaid	170	1,030			
To Depreciation					
Machinery		4,000			
Patents		3,000			
To Provision for Bad Debts		1,450			
To Net Profit		32,550			
		87,430			87,430

Balance Sheet

As on 31st December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Capital	1,42,000		Cash in Hand		1,080
(+) Net Profit	32,550		Cash at Bank		5,260
			Buildings	60,000	

	1,74,550		(+) Cycle Shed	4,000	64,000
(-) Drawings	10,490	1,64,060			
			Land		20,000
Creditors				12,000	
			Machinery	40,000	
Outstanding Salary		3,000	(-) Depreciation	4,000	36,000
			Petents	15,000	
			(-) Depreciation	3,000	12,000
			Debtors	29,000	
			(-) Provision for Bad Debts	1450	27,550
			Prepaid Insurance		170
			Closing Stock		13,600
		1,79,660			1,79,660

NOTES

1.9 आकस्मिक हानियाँ (Accidental Losses)

किसी दुर्घटना जैसे भूकम्प, बाढ़ या आग लग जाने से माल या अन्य किसी सम्पत्ति की हानि हो सकती है। नष्ट हुए माल या सम्पत्ति का मूल्य ज्ञात कर (अर्थात् माल या सम्पत्ति के मूल्य मे बचा लिए गये माल या सम्पत्ति का कबाड़ मूल्य घटा कर शेष बचने वाला मूल्य) इसे दुर्घटना से हानि खाते में डेबिट कर देते हैं। यदि कोई सम्पत्ति नष्ट हुई है तो संबंधित सम्पत्ति खाता तथा यदि माल नष्ट हुआ है तो व्यापारिक खाता (Trading Account) क्रेडिट कर देते है। प्रविष्टियाँ निम्नानुसार होती हैं -

माल की हानि	सम्पत्ति की हानि
दुर्घटना से हानि खाता डे. व्यापार खाते से (दुर्घटना से माल नष्ट हुआ)	दुर्घटना से हानि खाता डे सम्पत्ति (जैसे मशीनरी) खाता से दुर्घटना से .... (सम्पत्ति) नष्ट हुई

यदि माल या सम्पत्ति का बीमा न हो तो यह सम्पूर्ण हानि लाभ-हानि खाते में डेबिट कर दी जाती है, अर्थात्

लाभ-हानि खाता डे. दुर्घटना से हानि खाते से (दुर्घटना से माल नष्ट होने की हानि लाभ-हानि खाते को चार्ज की)	लाभ-हानि खाता डे. दुर्घटना से हानि खाते से (हानि लाभ-हानि खाते को चार्ज की गई)

यदि माल या सम्पत्ति का बीमा हो तो बीमा कम्पनी द्वारा स्वीकृत दावे (Claim) की राशि को नष्ट माल या सम्पत्ति के मूल्य मे घटा कर शुद्ध हानि की राशि ज्ञात कर ली जाती है जिसे लाभ-हानि खाते में ले जाते हैं। **बीमा कम्पनी से प्राप्य राशि चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाई जाती है, क्योंकि बीमा कम्पनी देनदार होती है।** मान लीजिए, दुर्घटना में 1,000 रु. के मूल्य का माल या सम्पत्ति नष्ट हुई तथा बीमा कम्पनी ने 800 रु. का दावा स्वीकार कर लिया तो हानि केवल 200 रु. होगी। निम्नानुसार प्रविष्टि की जायेगी.

		रुपये	रुपये
बीमा कम्पनी	डे	800	
लाभ-हानि खाता	डे	200	
दुर्घटना से हानि खाते से			1,000
(बीमा कम्पनी ने 800 रु. का दावा स्वीकार किया, शेष हानि लाभ-हानि खाते को चार्ज की गई)			

NOTES

1.10 प्रबन्धक को देय कमीशन (Manager's Commission)

व्यवसाय के प्रबन्धक को वेतन के अतिरिक्त प्रोत्साहन स्वरूप लाभ पर आधारित कमीशन भी दिया जा सकता है। लाभ-हानि खाता बनाते समय इस कमीशन को अदत्त मानकर इसका समायोजन निम्नानुसार कर लिया जाता है :

प्रबन्धक को कमीशन खाता	डे.	व्यय है, अतः डेबिट
अदत्त कमीशन खाते से		अदत्त कमीशन देयता है, अतः क्रेडिट
(प्रबन्धक को देय कमीशन का लेखा)		

कमीशन **लाभ-हानि खाते में डेबिट करके** चिट्ठे के **दायित्व पक्ष में अदत्त कमीशन के रूप में दिखाया जाता है।**

कमीशन की गणना करना - कमीशन की गणना तीन प्रकार से की जा सकती है :

(i) **सकल लाभ पर आधारित** (Based on Gross Profits) - यदि कमीशन सकल लाभ पर आधारित हो तो इसकी गणना आसानी से की जा सकती है क्योंकि शुद्ध लाभ का निर्धारण करने से पूर्व सकल लाभ की गणना की जा चुकी होती है। उस सकल लाभ पर निर्दिष्ट प्रतिशत से कमीशन निकाल कर लाभ-हानि खाते को डेबिट कर देते हैं। **उदाहरण** - मान लीजिए सकल लाभ 10,000 रु. है तथा कमीशन 5% देना है तो प्रबन्धक का कमीशन 500 रु. होगा जिसे लाभ-हानि खाते में डेबिट करके चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे।

(ii) **कमीशन चार्ज करने से पूर्व शुद्ध लाभ पर आधारित** (Based on Net Profit before charging Commission) - इस स्थिति में कमीशन की गणना करने से पूर्व अन्य समस्त समायोजन करके कमीशन चार्ज करने से पूर्व शुद्ध लाभ ज्ञात कर लेने है तथा उस निर्दिष्ट दर से कमीशन की गणना कर लेते हैं।

उदाहरण - मान लीजिए, लाभ-हानि खाता निम्नानुसार है तथा कमीशन उस लाभ पर 2 % देना है जो कमीशन चार्ज करने से पूर्व आता है :

लाभ-हानि खाता

		रुपये		रुपये
वेतन	1,900		सकल लाभ	10,000
(+) अदत्त वेतन	100	2,000		
अन्य व्यय		1,000		
ह्रास :				
मशीनरी		600		
भवन		300		
पूँजी पर ब्याज		1,000		
प्रबन्धक का कमीशन		102		
शुद्ध लाभ		4,998		
		10,000		10,000

उपर्युक्त उदाहरण में कमीशन चार्ज करने से पूर्व का शुद्ध लाभ (2,000 + 1,000 - 600 + 300 - 1,000) 10,000 = 5,100 रु. जिस पर 2% कमीशन 102 रु. होगा।

(iii) **कमीशन चार्ज करने के पश्चात् शुद्ध लाभ पर आधारित कमीशन** (Commission based on Net Profit after charging such Commission) - जैसा कि हम अभी देख चुके है, शुद्ध लाभ लाभ-हानि खाते में कमीशन डेबिट करने के पश्चात् ज्ञात होता है किन्तु कभी-कभी प्रश्न में यह कहा जाता है कि कमीशन उस शुद्ध लाभ पर एक निर्दिष्ट प्रतिशत (मान लीजिए 2%) देना है जो ऐसा कमीशन चार्ज करने के पश्चात् आए। यहाँ कठिनाई यह आती है कि कमीशन की गणना इसलिए नहीं की जा सकती क्योंकि शुद्ध लाभ ज्ञात नहीं है

तथा शुद्ध लाभ इसलिए ज्ञात नहीं किया जा सकता क्यों कमीशन ज्ञात नहीं है। इस स्थिति में कमीशन चार्ज करके आने वाले शुद्ध लाभ पर प्रतिशत को कमीशन चार्ज करने से पूर्व शुद्ध लाभ पर आधारित प्रतिशत में निम्नानुसार बदल लेते हैं :

मान लीजिए कमीशन चार्ज करने के पश्चात् शुद्ध लाभ 100 रु. है तो इस पर 2% कमीशन 2 रु. होगा अर्थात् कमीशन चार्ज करने से पूर्व लाभ (100 + 2) = 102 रु. होगा। इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

	रुपये
कमीशन चार्ज करने से पूर्व शुद्ध लाभ	102
(–) कमीशन	2
कमीशन चार्ज करने के पश्चात् शुद्ध लाभ	100

अर्थात् यो कहा जा सकता है कि कमीशन चार्ज करने से पूर्व लाभ यदि 102 रु. हो तो प्रबन्धक का कमीशन 2 रु. होगा।

चूँकि कमीशन चार्ज करने से पूर्व का लाभ ज्ञात होता है अतः उपर्युक्त प्रकार से कमीशन की गणना की जा सकती है।

उदाहरण - पूर्व-उदाहरण में कमीशन की गणना निम्नानुसार की जाएगी :

$$= \left(\frac{5{,}100 \times 2}{102}\right) = 100 \text{ रु.}$$

लाभ-हानि खाता

	रुपये		रुपये
वेतन	2,000	सकल लाभ	10,000
अन्य व्यय	1,000		
ह्रास	900		
पूँजी पर ब्याज	1,000		
प्रबन्धक का कमीशन	100		
शुद्ध लाभ	5,000		
	10,000		10,000

टिप्पणी - कमीशन 1000 रु. है जो शुद्ध लाभ 5,000 रु. का 2% है।

Illustration 8 :

निम्नलिखित तलपट श्री बालकृष्ण की पुस्तकों से 31 दिसम्बर, 2007 को तैयार किया गया है :

डेबिट (Debit)	**रुपये**	**क्रेडिट** (Credit)	**रुपये**
प्लाण्ट एवं मशीनरी (Plant and Machinery)	20,000	पूँजी (Capital)	80,000
निर्माणक मजदूरी (Manufacturing Wages)	34,000	विविध लेनदार (Creditors)	44,560
		बैंक ऋण (Bank Loan)	15,000
वेतन (Salaries)	15,850	क्रय वापसी (Purchase Returns)	1,740
फर्नीचर (Furniture)	10,000	विक्रय (Sales)	2,50,850
आवक गाड़ी भाड़ा (Carriage on Purchases)	1,860	डूबत ऋण के लिए प्रावधान (Provision of Bad Debts)	2,000
जावक गाड़ी भाड़ा (Carriage on Sales)	2,140		
भवन (Building)	24,000		
निर्माणी व्यय (Manufacturing Expenses)	9,500		
बीमा एवं कर (Insurance and Tax)	4,250		

NOTES

ख्याति (Goodwill)	25,000
सामान्य व्यय (General Expenses)	8,200
कारखाना, शक्ति एवं ईधन	
(Factory, Fuel and Power)	1,280
देनदार (Debtors)	78,200
कारखाना प्रकाश (Factory Lighting)	950
आरम्भिक स्कन्ध (Opening Stock)	34,200
मोटर-कार (Motor Car)	12,000
क्रय (Purchases)	1,02,000
विक्रय वापसी (Sales Return)	3,100
ब्याज एवं बैंक व्यय	
(Interest and Bank Charges)	400
डूबत ऋण (Bad Debts)	1,400
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	1,120
बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	4,200
	3,94,150	3,94,150

निम्नलिखित समायोजनों को दृष्टि रखते हुए व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता तैयार कीजिए -

(1) 31 दिसम्बर, 2007 को स्कन्ध 30,500 रु.।

(2) ह्रास : प्लान्ट एवं मशीनरी 10%, फर्नीचर 5% तथा मोटर-कार 1,000 रु.।

(3) डूबत ऋणों के लिए प्रावधान देनदारों पर 4% के बराबर लगाइये।

(4) कारखाना प्रबन्धक को सकल लाभ पर 1% कमीशन देना है।

(5) जनरल मैनेजर को उस लाभ पर 2% कमीशन देना है जो कारखाना प्रबन्धक को कमीशन देने के बने।

Solution : टिप्पणियाँ -

ह्रास : प्लाण्ट $\left(\frac{20,000 \times 10}{100}\right) = 2,000$ रु. फर्नीचर $\left(\frac{10,000 \times 5}{100}\right) = 500$ रु.।

(ii) 31-12-07 को डूबत ऋणों के लिए प्रावधान : $\left(\frac{78,200 \times 5}{100}\right) = 3,910$ रु.।

(iii) कारखाना प्रबन्धक का कमीशन : $\left(\frac{95,700 \times 1}{100}\right) = 957$ रु.।

(iv) जनरल मैनेजर का कमीशन $\left(\frac{57,093 \times 2}{100}\right) = 1,141.86$ अथवा 1,142 रु.

[कमीशन काटने से पूर्व लाभ (95,700 − 38,607) = 57,093 रु.।

Trading and Profit & Loss Account

For the year ending 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Stock (1-1-07)		34,200	By Sales	2,50,850	
To Purchases	1,02,000		(−) Returns	3,100	2,47,750
(−) Returns	1,740	1,00,260	By Stock (31-12-07)		30,500
To Mfg. Wages		34,500			

To Carriage on Purchases		1,860		
To Mfg. Expenses		9,500		
To Fuel and Power		1,280		
To Factory Lighting		950		
To Gross Profit c/d		95,700		
		2,78,250		2,78,250
To Salaries		15,850	By Gross Profit b/d	5,700
To Carriage on Sales		2,140		
To Insurance and Taxes		4,250		
To General Expenses		8,200		
To Interest and Bank Charges		400		
To Depreciation :				
Plant and Machinery		2,000		
Furniture		500		
Motor-Car		1,000		
To Provision for Bad Debts :				
Bad Debts	1,400			
(+) Provision on 31-12-07	3,910			
	5,310			
(–) Provision on 1-1-07	2,000	3,310		
To Work Manager's Commission		957		
		38,607		
To Gen. Manager's Commission		1,142		
To Net Profit		55,951		
		95,700		95,700

Balance Sheet

As on 31st December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Creditors		44,560	Cash in Hand		1,120
Bank Loan		15,000	Cash at Bank		4,200
Outstanding Commission			Debtors	78,200	
Work's Manager		957	(–) Provision for		
General Manager		1,142	Bad Debts	3,910	74,290
Capital	80,000				
(+) Net Profit	55,951	1,35,951	Closing Stock	30,500	
			Plant and Machinery	20,000	
			(–) Depreciation	2,000	18,000
			Furniture	10,000	
			(–) Depreciation	500	9,500
			Motor Car	12,000	
			(–) Depreciation	1,000	11,000
			Building		24,000
			Goodwill		25,000
		1,97,610			1,97,610

NOTES

NOTES

1.11 प्रावधान एवं संचितियाँ (Provisions and Reserves)

'प्रावधान' से हमारा तात्पर्य निम्नलिखित दो उद्देश्यों के लिए की गई व्यवस्था से होता है :

(i) किसी सम्पत्ति के ह्रास (Depreciation), नवीनीकरण (Renewal) अथवा मूल्य में कमी (Diminution in Value) को अपलिखित करने के लिए निकालकर रखी गई राशियाँ, जैसे - 'ह्रास के लिए प्रावधान, अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान', देनदारों अथवा लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान' आदि।

(ii) किसी ज्ञात दायित्व (Known liability) जिसकी राशि का निर्धारण पूर्ण शुद्धता के साथ नहीं किया जा सकता, के लिए निकालकर रखी गई राशि, जैसे, 'श्रमिकों की दुर्घटना पर देय क्षतिपूर्ति की व्यवस्था', 'धर्मादा प्रावधान' आदि।

उल्लेखनीय है कि प्रावधान की व्यवस्था करने के लिए लाभ-हानि को डेबिट कर संबंधित प्रावधान को चिट्ठे में दिखाया जाता है।

संचितियाँ - उपर्युक्त वर्णित दो उद्देश्यों के अतिरिक्त अन्य जो भी राशियाँ निकालकर रखी जाती है। संचितियाँ कहलाती है। संचितियों के उदाहरण है - 'सामान्य संचिति' (General Reserve), 'लाभांश समानीकरण संचिति' (Dividend Equalisation Reserve), पूँजीगत संचिति (Capital Reserve), स्थायी सम्पत्तियों के पुर्न-मूल्यांकन संचिति (Fixed Assets Revaluation Reserve) 'विनियोग ह्रास संचिति' (Investment Depreciation Reserve), 'आकसमिकताओं के लिए संचिति' (Reserve for Contingencies) आदि।

उल्लेखनीय है कि संचितियों का निर्माण लाभों में से किया जाता है अर्थात् इन्हें लाभ-हानि खाते में डेबिट न करके लाभ-हानि विनियोजन खाते (Profit and Loss Appropriation Account) में डेबिट किया जाता है : समस्त प्रावधान एवं संचितियाँ चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाई जाती है।

महत्वपूर्ण समायोजन - एक दृष्टि में

(1) अदत्त व्यय	(क) व्यापार खाते अथवा लाभ-हानि खाते में संबंधित व्यय में जोड़िये। (ख) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाइए।
(2) पूर्वदत्त व्यय	(क) व्यापार खाते अथवा लाभ-हानि खाते मे संबंधित व्यय में से घटाइए। (ख) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाइए।
(3) उपार्जित आय	(क) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष मे संबधित आय मे जोडिए। (ख) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाइए।
(4) अनुपार्जित आय	(क) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में संबधित आय मे से घटाइए। (ख) चिट्ठे के दायित्व पक्ष मे दिखाइए।
(5) ह्रास	(क) लाभ-हानि खाते में डेबिट करिए। (ख) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष मे सम्पत्ति ह्रास घटाकर दिखाइए।
(6) पूँजी पर ब्याज	(क) लाभ-हानि खाते में डेबिट करिए। (ख) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में पूँजी में जोड़िए।
(7) अशोध्य ऋण प्रावधान	(क) अशोध्य एवं संदिग्ध ऋण प्रावधान में ले जाई जाने वाली राशि लाभ-हानि खाते में डेबिट करिए। (ख) चिट्ठे में देनदारों में से अशोध्य ऋण प्रावधान घटाकर दिखाइए। (ग) लाभ-हानि खाते में प्रावधान खाते में ले जाई जाने वाली राशि का निर्धारण निम्नानुसार करें : अशोध्य ऋण (+) वर्ष के अंत में वांछित प्रावधान (–) वर्ष के प्रारम्भ में प्रावधान लाभ-हानि खाते में डेबिट

	(घ) यदि वर्ष के प्रारम्भ में उपलब्ध प्रावधान अधिक हो तो आधिक्य की राशि लाभ-हानि खाते में क्रेडिट करिए। (ङ) चिट्ठे में देनदारों में से वर्ष के अंत में वांछित प्रावधान घटाया जायगा।
(8) पूँजीगत व्यय को आयगत मानने की त्रुटि	(क) व्यापार खाता या लाभ-हानि खाते में संबंधित व्यय में से घटाइए। (ख) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में सम्पत्ति में जोड़िए।
(9) व्यक्तिगत उपयोग हेतु माल का आहरण	(क) व्यापार खाते में क्रय में से घटाइए। (ख) चिट्ठे में आहरण में जोड़कर पूँजी में से घटाइए।
(10) मुफ्त नमूने के रूप मे बाँटा गया माल	(क) व्यापार खाते में क्रय मे से घटाइए। (ख) लाभ-हानि खाते में विज्ञापन शीर्षक के अन्तर्गत डेबिट करिए।
(11) ग्राहक से वापस प्राप्त माल जिसे स्टाक में ले लिया गया किन्तु लेखा नही किया गया	(क) व्यापार खाते में विक्रय-वापसी के रूप मे बिक्री में से घटाइए। (ख) चिट्ठे में देनदारों में से घटाइए।
(12) क्रय किए गए माल जिसका लेखा नहीं किया गया	(क) व्यापार खाते में क्रय में जोड़िए। (ख) चिट्ठे में लेनदारों में जोड़िए।
(13) 'विक्रय या वापसी' शर्त पर भेजा गया माल जिसके सबंध में ग्राहक की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई	(क) माल का बीजक मूल्य व्यापार खाते में बिक्री में से घटाइए तथा चिट्ठे में देनदारों में से घटाइए। (ख) माल लागत मूल्य पर 'ग्राहक के पास स्टॉक' के रूप में व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाइए।
(14) क्षतिग्रस्त माल की हानि	**जब माल का बीमा न हो** (क) व्यापार खाते में क्रय मे से घटाइए। (ख) हानि लाभ-हानि खाते में डेबिट करिए। **जब माल का बीमा हो** (क) जितने मूल्य का माल नष्ट हुआ उतनी राशि व्यापार खाते में क्रय में से घटाइए। (ख) बीमा कम्पनी द्वारा स्वीकृत दावे की राशि से बीमा कम्पनी देनदार के रूप में चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाइए तथा (क) में से (ख) घटाकर शेष राशिहानि के रूप में लाभ-हानि खाते मे डेबिट करिए।
(15) गतवर्ष के स्टॉक का मूल्यांकन अधिक होना (Over- Valuation)	(क) स्टॉक का मूल्यांकन जितना अधिक हुआ हो उतनी राशि से व्यापार खाते मे आरम्भिक स्टॉक घटाइये। (ख) उक्त राशि को पूँजी में से घटाइये। (यदि गत वर्ष मे मूल्यांकन कम हुआ हो तो अन्तर की राशि आरम्भिक स्कन्ध तथा पूँजी मे जोड़िए।)

महत्वपूर्ण बिन्दु
(Important Points)

(1) यदि समायोजन संबंधी कोई व्यवहार तलपट में दिया गया है तो इसका अर्थ यह है कि उसके संबंध में समायोजन प्रविष्टियाँ हो चुकी है, अत: उनकी द्वि-प्रविष्टि नहीं होगी। मान लीजिए, एक तलपट में निम्नलिखित शेष दिखाए गये है:

	डेबिट	क्रेडिट
अशोध्य ऋण	100	
देनदार	1,000	
अदत्त वेतन		100

NOTES

वेतन	500	
उपार्जित ब्याज	50	
ब्याज		150
मशीन पर ह्रास	100	
मशीनरी	1,000	
अन्तिम स्कन्ध	5,000	

तलपट के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि -

(i) अशोध्य ऋण अपलिखित किए जा चुके हैं, इन्हें केवल लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जायेगा, देनदारों में से घटाया नहीं जायेगा।

(ii) अदत्त वेतन का समायोजन हो चुका है, इसे चिट्ठे के दायित्व पक्ष में ही दिखाया जायेगा, वेतन में जोड़ा नहीं जायेगा।

(iii) उपार्जित ब्याज चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जायेगा, ब्याज में जोड़ा नहीं जायेगा।

(iv) मशीन पर ह्रास काटा जा चुका है, इसे लाभ-हानि खाते में डेबिट करेंगे, मशीन में से घटायेंगे नहीं।

(v) अन्तिम स्कन्ध तलपट में दिखाया गया है अर्थात् व्यापारिक खाते में इसका समायोजन हो चुका है। अतः केवल चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जायेगा।

(2) किन्तु जो व्यवहार समायोजन के अन्तर्गत दिये गये हैं उनका लेखा अभी नहीं हुआ होता है अतः उनकी द्वि-प्रविष्टि होगी। उदाहरण, यदि तलपट के बाहर दिए गए समायोजनों में कहा जाए कि 100 रु. के अशोध्य ऋण अपलिखित कीजिए तो उसे लाभ-हानि खाते (अथवा अशोध्य ऋण प्रावधान खाते) में डेबिट करने के साथ-साथ देनदारों में से भी घटाना होगा।

(3) यदि किसी उद्देश्य से प्रावधान कर लिया गया है तो उस उद्देश्य पर व्यय राशि प्रावधान खाते को चार्ज की जाएगी, न कि लाभ-हानि खाते को। लाभ-हानि को तो केवल वह राशि चार्ज की जाएगी जो इस वर्ष प्रावधान में ले जाना है।

उदाहरण - यदि "मरम्मत एवं नवीनीकरण प्रावधान" (Provision for Repairs & Renewals) तलपट में दिखाया गया है तो मरम्मत पर व्यय लाभ-हानि खाते को डेबिट न करके मरम्मत एवं नवीनीकरण प्रावधान खाते को डेबिट होगा।

(4) किसी सम्पत्ति पर ह्रास की व्यवस्था करने से पूर्व उस सम्पत्ति से संबंधित अन्य समायोजनों को कर लीजिए। जैसे किसी सम्पत्ति के क्रय का लेखा न होने, अथवा सम्पत्ति के विक्रय को विक्रय खाते में लिख देने की त्रुटि अथवा सम्पत्ति की स्थापना पर व्यय मजदूरी को मजदूरी में डेबिट कर देने की त्रुटि आदि का समायोजन उस सम्पत्ति पर ह्रास की व्यवस्था करने से पूर्व कर लेना चाहिए।

(5) इसी प्रकार देनदारों अथवा लेनदारों पर प्रावधान (जैसे अशोध्य ऋण प्रावधान, बट्टे के लिए प्रावधान आदि) करने से पूर्व देनदारों एवं लेनदारों को प्रभावित करने वाले अन्य समायोजनों को कर लीजिए। ऐसे समायोजनों के कुछ उदाहरण हैं, नए अशोध्य ऋण अपलिखित करना, क्रय-विक्रय या क्रय-विक्रय वापसियों का लेखा न होना या त्रुटिपूर्ण होना, बिल अनादृत होना, आदि।

(6) देनदारों पर कटौती हेतु प्रावधान देनदारों में से अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करने के पश्चात् शेष बचने वाली राशि पर किया जाना चाहिए।

हल किए हुए प्रश्न
(Solved Problems)

उदाहरण 1. श्री राकेश की पुस्तकों से 31 दिसम्बर 2007 को प्राप्त निम्नलिखित शेषों से व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये।

	रु.	रु.
पूँजी (Capital)		24,500

आहरण (Drawings)	2,000	
सामान्य व्यय (General Expenses)	2,500	....
भवन (Buildings)	11,000	....
मशीनरी (Machinery)	9,340	....
आरम्भिक स्कन्ध (Opening Stock)	16,200	....
कोयला एवं शक्ति (Coal and Power)	2,240	....
मजदूरी (Wages)	7,200	....
देनदार (Debtors)	6,280	....
लेनदार (Creditors)	....	2,500
बट्टा (Discount)	550	....
ऋण (Loan)	....	7,880
बिक्री (Sales)	65,360	
क्रय (Purchases)	47,000	....
मोटर कार (Motor Car)	2,000	....
अशोध्य ऋण संचिति (Bad Debts Reserve)	....	900
कर व बीमा (Taxes and Insurance)	1,315	
कमीशन (Commission)	....	1,320
कार-व्यय (Car Expenses)	1,800	....
देय बिल (Bills Payable)	....	3,850
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	80	....
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	....	3,300
दान (Donations)	105	......

समायोजन

(1) 31 दिसम्बर, 2007 को स्कन्ध 23,500 रु. है।

(2) 160 रु. अशोध्य ऋण और अपलिखित कीजिए तथा देनदारों पर 5% अशोध्य ऋण संचय कीजिए।

(3) मशीनरी पर 10% तथा मोटर कार पर 12% ह्रास लगाइये।

(4) मोटर-कार का उपयोग अंशतः व्यापार के लिए तथा अंशतः व्यापार के स्वामी के व्यक्तिगत प्रयोग के लिए होता है। अतः ह्रास को सम्मिलित करते हुए कार के व्ययों का $\frac{1}{2}$ भाग स्वामी से चार्ज करना है।

(5) ऋण तथा अधिविकर्ष पर 750 रु. ब्याज के अदत्त हैं।

(6) 250 रु. प्रतिवर्ष अन्तरित करके एक दान कोष बनाना है।

(7) एक देनदार से 1,500 रु. का प्राप्य बिल प्राप्त हुआ जिसकी कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

Solution : टिप्पणियाँ

(1) 31-12-2007 को अशोध्य ऋण संचय

देनदार	6,280
(–) अशोध्य ऋण	160
	6,120
(–) प्राप्त विपत्र	1,500
31-12-07 को देनदार	4,620

NOTES

NOTES

संचय : $\left(\frac{4,620 \times 5}{100}\right) = 231$ रु.

(2) **ह्रास :** मशीनरी $\left(\frac{9,340 \times 10}{100}\right) = 934$ रु., मोटर-कार $\left(\frac{2,000 \times 12}{100}\right) = 240$ रु.

(3) मोटर कार व्यय 1,800 रु. + ह्रास 240 रु. = 2040 रु. का 1/3 अर्थात् 680 रु. आहरण (व्यक्तिगत व्यय)

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

		रु.			रु.
आरम्भिक स्कन्ध		16,200	विक्रय		65,360
क्रय		47,000	अंतिम स्कन्ध		23,500
मजदूरी		7,200			
कोयला एवं शक्ति		2,240			
सकल लाभ नी./ले		16,220			
		88,860			88,860
सामान्य व्यय		2,500	**सकल लाभ** नी./ला.		16,220
बट्टा		550	कमीशन		1,320
कर व बीमा		1,315	अशोध्य ऋण संचिति		
कार-व्यय			1-1-07 को संचिति	900	
व्यय	1,800		(–) अशोध्य ऋण	160	
ह्रास	240			740	
	2,040		(–) 31-2-07 को	231	509
(–) आहरण	680	1,360	संचिति		
दान		105			
मशीन पर ह्रास		934			
अदत्त ब्याज		750			
दान-कोष		250			
शुद्ध लाभ		10,285			
		18,049			18,049

चिट्ठा

31 दिसम्बर, 2007 को

	रु.			रु.
लेनदार	2,500	भवन		11,000
ऋण	7,880	मशीनरी		9,340
देय-बिल	3,850	(–) ह्रास	934	8,406
बैंक अधिविकर्ष	3,300			
दान-कोष	250	देनदार	6,280	
अदत्त ब्याज	750	(–) अशोध्य ऋण	160	

पूँजी	24,500				
(–) आहरण				6,120	
(2,000 + 680) =	2680		(–) प्राप्य-विपत्र	1,500	
	21,820			4,620	
(+) शुद्ध लाभ	10,285	32,105	(–) संदिग्ध ऋण		
			संचय	231	4,389
			मोटर कार	2,000	
			(–) ह्रास	240	1,760
			प्राप्य बिल		1,500
			हस्तस्थ रोकड़		80
			अन्तिम स्कन्ध		23,500
		50,635			50,635

NOTES

उदाहरण 2. निम्नलिखित शेष श्री सुरेश चन्द्र की पुस्तकों से 30 जून, 2007 को प्राप्त हुए हैं -

	रु.		रु.
पूँजी	28,000	ख्याति	6,000
उत्पादन व्यय	5,000	अशोध्य ऋण	200
सामान्य व्यय	3,600	प्राप्त बट्टा	200
मजदूरी	8,000	कर एवं बीमा	700
यन्त्र	6,400	भवन	18,000
रोकड़	1,800	बैंक अधिविकर्ष	10,400
प्राप्य विपत्र	6,000	आरम्भिक स्कन्ध	4,800
क्रय-वापसी	600	क्रय-भाड़ा	300
लेनदार	24,000	देनदार	18,800
क्रय	36,000	विक्रय	52,000
विक्रय-भाड़ा	600	देय-विपत्र	2,400
अशोध्य ऋण संचय	600	विक्रय-वापसी	2,000

निम्नलिखित समायोजन करते हुए श्री सुरेश चन्द्र के अन्तिम खाते बनाइए-

(1) अन्तिम स्कन्ध 12,700 रु.।

(2) ह्रास ख्याति तथा भवन पर 5 % एवं यंत्र 10 %।

(3) 1 अप्रैल, 2007 को एक यंत्र 1,200 रु. में क्रय किया गया किन्तु न तो उसका भुगतान ही हुआ एवं न ही उसकी कोई प्रविष्टि की गई।

(4) 300 रु. अशोध्य ऋण अपलिखित कीजिए तथा देनदारों पर अशोध्य ऋण प्रावधान 5 % करना है।

(5) मजदूरी के 200 रु. अदत्त तथा बीमे के 150 रु. पूर्वदत्त है।

(6) सामान्य व्यय में श्री सुरेश चन्द्र के घरेलू नौकर का वेतन 300 रु. सम्मिलित है।

(7) वर्ष में 800 रु. का माल निजी उपयोग में लाया गया तथा 200 रु. का माल दान में दे दिया गया।

Solution : **टिप्पणियाँ** -

(1) **ह्रास** - ख्याति $\left(\frac{6,000 \times 5}{100}\right) = 300$ रु., भवन $\left(\frac{18,000 \times 5}{100}\right) = 900$ रु.

यन्त्र $\left(\frac{6,400 \times 10}{100}\right) = 640$ रु. $+ \left(\frac{1,200 \times 10}{100} \times \frac{3}{12}\right) = 30$ रु. = कुल ह्रास 670 रु.

NOTES

(2) अशोध्य ऋण संचय - देनदार 18,800

(–) अशोध्य ऋण 300

18,500

$$18{,}500 \times \frac{5}{100} = 925 \text{ रु.}$$

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

			रु.			रु
आरम्भिक स्कन्ध			4,800	विक्रय		52,000
क्रय		36,000		(–) वापसी	2,000	50,000
(–) वापसी	600			अंतिम स्कन्ध		12,700
आहरण	800					
दान	200	1,600	34,400			
मजदूरी		8,000				
(+) अदत्त		200	8,200			
उत्पादन व्यय			5,000			
क्रय-भाड़ा			300			
सकल लाभ नी./ले			10,000			
			62,700			62,700
सामान्य व्यय		3,600		**सकल लाभ** नी./ला.		10,000
(–) निजी व्यय		300	3,300	प्राप्त बट्टा		200
विक्रय भाड़ा			600			
कर व बीमा		700				
(–) पूर्व-दत्त		150	550			
ह्रास : ख्याति			300			
भवन			900			
यन्त्र			670			
अशोध्य ऋण संचय						
अशोध्य ऋण		500				
(+) 31-12-07 को प्रावधान		925				
		1,425				
(–) 1-12-07 का प्रावधान		600	825			
दान (माल)			200			
शुद्ध लाभ			2,855			
			10,200			10,200

चिट्ठा

31 दिसम्बर, 2007 को

	रु			रु
लेनदार	24,000	यन्त्र	6,400	
बैंक अधिविकर्ष	10,400	(–) ह्रास	1,200	
देय-विपत्र	2,400			

पूँजी	28,000			7,600	
(–) आहरण (300 + 800)	1,100		(–) ह्रास	670	6,930
	26,900		रोकड़		1,800
(+) शुद्ध लाभ	2,855	29,755	प्राप्य-विपत्र		6,000
			ख्याति	6,000	
अदत्त मजदूरी	200		(–) ह्रास	300	5,700
अदत्त लेनदार (यन्त्र)	1,200		भवन	18,000	
			(–) ह्रास	900	17,100
			देनदार	18,800	
			(–) अशोध्य ऋण	300	
				18,500	
			(–) प्रावधान	925	17,575
			अन्तिम स्कन्ध		12,700
			पूर्व-दत्त बीमा		150
		67,955			67,955

NOTES

उदाहरण 3. अनिल जैन के निम्नलिखित तलपट से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के अन्तिम खाते बनाइये:

	डेबिट रु.	क्रेडिट रु.
पूँजी	....	55,310
क्रय एवं विक्रय	70,007	82,500
रोकड़	8,708	....
देनदार एवं लेनदार	21,300	20625
अशोध्य ऋण	300	....
ह्रास	1,800	...
फर्नीचर	4,500	.
सामान्य व्यय	700	....
अदत्त-वेतन	....	785
संयंत्र	25,000	.....
संदिग्ध ऋण संचिति	.....	1,200
विक्रय-वापसी	505	....
वेतन	3,000	
आरम्भिक स्कन्ध	24,600	.....
	1,60,420	1,60,420

निम्नलिखित समायोजन करने है

(1) अन्तिम स्कन्ध का मूल्यांकन 21,499 रु. किया गया। मूल्यांकन के पश्चात् 2,000 रु. का स्कन्ध अग्नि में नष्ट हो गया जिसका बीमा नहीं कराया गया।

(2) 4,200 का माल उधार क्रय किया गया जिसका लेखा क्रय बही में करने से रह गया।

(3) देनदारों में से 300 रु. अपलिखित कीजिए तथा संदिग्ध ऋणों के लिए 1,000 रु. का आयोजन कीजिए।

(4) वेतन 65 रु. पूर्वदत्त है:

(5) 25-3-07 को एक देनदार से 1,500 रु. का प्राप्य-विपत्र प्राप्त हुआ था जिस की कोई प्रविष्टि नहीं की गई थी।

(6) 1 जनवरी को 2,000 रु. का फर्नीचर खरीदा गया था जिसका लेखा भूल से क्रय खाते में कर दिया गया था।

NOTES

Solution :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

		रु.			रु.
आरम्भिक स्कन्ध		24,600	विक्रय	82,500	
क्रय	70,007		(–) वापसी	505	81,995
(+) उधार क्रय	4,200				
	74,207				
(–) फर्नीचर	2,000	72,207	अंतिम स्कन्ध	21,499	
			(–) नष्ट स्कन्ध	2,000	19,499
सकल लाभ नी./ले		4,687			
		1,01,494			1,01,494
ह्रास		1,800	**सकल लाभ** नी./ला.		4,687
सामान्य व्यय		700	**शुद्ध हानि**		1,148
वेतन	3,000				
(–) पूर्वदत्त	65	2,935			
अशोध्य ऋण संचय					
अशोध्य ऋण	300				
(+) अशोध्य ऋण	300				
	600				
(+) 31-12-07 को संचय	1,000				
	1,600				
(–) 1-12-07 को संचय	1,200	400			
		5,835			5,835

चिट्ठा

31-12-2007 को

		रु			रु
लेनदार	20,625		रोकड़		8,708
(+) क्रय	4,200	24,825	फर्नीचर	4,500	
			(+) क्रय	2,000	6,500
अदत्त वेतन		785	सयन्त्र		25,000
पूँजी	55,310		देनदार		21,300
(–) शुद्ध हानि	1,148	54,162	(–) अशोध्य ऋण	300	
				21,000	
			(–) विपत्र प्राप्त	1,500	
				19,500	

		(–) प्रावधान	1,000	18,500
		प्राप्य-विपत्र		1,500
		पूर्व-दत्त वेतन		65
		अंतिम स्कन्ध	21,499	
		(–) नष्ट स्कन्ध	2,000	19,499
	79,772			79,772

उदाहरण 4. एक व्यापारी के 31-12-2007 को तैयार किये गये तलपट में सम्मिलित कुछ शेष निम्नानुसार है -

	डेबिट रुपये	क्रेडिट रुपये
अशोध्य ऋण प्रावधान	....	300
अशोध्य ऋण	100	....
देनदार	2,000	....
लेनदार	....	1,000
बट्टा	100	60
देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान	....	120
लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान	70	....

समायोजन - (i) 50 रु. के अशोध्य ऋण और अपलिखित कीजिए।

(ii) गत वर्ष अपलिखित किये गये 20 रु. अशोध्य ऋण वसूल हो गये है।

(iii) देनदारों पर 10% अशोध्य ऋण के लिए तथा 2% बट्टा के लिए प्रावधान कीजिए।

(iv) लेनदारों पर बट्टे के लिए 2% प्रावधान करना है।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए, विभिन्न खाते बनाइये तथा चिट्ठे म इन व्यवहारों को दिखाइए।

Solution :

टिप्पणियाँ - (i) 50 रु. अशोध्य ऋण और अपलिखित करने पर अशोध्य ऋण (100 + 50) = 150 रु. तथा देनदार (2,000–50) = 1,950 रु. के हो जायेंगे।

(ii) **अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान :**

	रुपये
31-12-07 को वांछित प्रावधान $\left(\frac{1,950 \times 10}{100}\right)$	195
(+) अशोध्य ऋण	150
	345
(–) 1-1-07 को प्रावधान	300
	45
(–) अशोध्य ऋण वसूली	20
2007 वर्ष के लाभ-हानि खाता को नाजे को जाने वाली राशि	25

(iii) **देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान**

अशोध्य ऋण प्रावधान घटा कर देनदार (1,950 – 195) = 1,755 रुपये।

NOTES

	रुपये
बट्टे के लिए 31-12-07 को वांछित प्रावधान $\left(\frac{1,755 \times 2}{100}\right)$	35.10
(+) दिया गया बट्टा	100.00
	135.10
(–) 2-1-07 को बट्टे के लिए प्रावधान	120.00
2007 वर्ष के लाभ-हानि खाते की डेबिट राशि	15.10

(iv) लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान :

31-12-07 को वांछित प्रावधान $\left(\frac{1,000 \times 2}{100}\right)$	20
(+) प्राप्त बट्टा	60
	80
(–) 1-1-07 को बट्टा प्रावधान	70
2007 वर्ष के लाभ-हानि खाते को क्रेडिट की जाने वाली राशि	10

Journal Entries

			Rs.	Rs.
31-12-2007	Bad Debts a/c To Debtors a/c (Bad Debts written off)	Dr.	50	50
"	Provision for Bad Debts To Bad Debts a/c (Bad Debts charged to Provision)	Dr.	150	150
"	Cash a/c To Bad Debts Recovered a/c (Bad Debt previously written of recovered)	Dr.	20	20
"	Bad Debts Recovered a/c To Provision for Bad Debts a/c (Bad Debts recovered credited to Provision)	Dr.	20	20
"	Profit & Loss a/c To Provision for Bad Debts a/c (Provision made for Bad Debts)	Dr.	25	25
"	Provision for Discount on Debtors To Discount Allowed a/c (Discount allowed charged to Provision for discount a/c)	Dr	100	100
"	Profit & Loss a/c To Provision for Discount on Debtors a/c (Provision for Discount an debtors made)	Dr	15.10	15.10
"	Discount Received a/c To Provision for Discount on Creditors a/c (Discount received credited to provision for discount)	Dr	60	60
"	Provision for Discount on Creditors To Profit & Loss a/c (Provision for discount on Creditors made)	Dr.	10	10

Provision for Bad and Doubtful Debts Account

		Rs.			Rs.
31-12-07	To Bad Debts a/c	150	01-01-07	By Balance b/d	300
31-12-07	To Balance c/d	195	31-12-07	By Bad Debts Recovered a/c	20
			31-12-07	By P. & L. a/c	25
		345			345

Provision for Discount on Debtors Account

		Rs.			Rs.
31-12-07	To Discount Allowed a/c	100.00	10-10-07	By Balance b/d	120.00
31-12-07	To Balance c/d	35.10	31-12-07	By P. & L. a/c	15.10
		135.10			135.10

Provision for Discount on Creditors Account

		Rs.			Rs.
31-12-07	To Balance b/d	70	31-12-07	By Discount Recd.	60
31-12-07	To P. & L. a/c	10	31-12-07	By Balance c/d	20
		80			80

Profit and Loss Account

		Rs.			Rs.
To Provision for Bad and Doubtful Debts			By Provision for Discount on Creditors		
Bad Debts	100		Discount received	60	
Add : Further Bad Debts	50		Add : Provision on 31-12-07	20	
	150			80	
Add : Provision on 31-12-07	195		Less : Provision 1-1-07	70	10.00
	345				
Less : Provision on 1-1-07	300				
	45				
Less : Bad Debts recovered	20	25.00			
To Provision for Discount on Debtors					
Discount allowed	100.00				
Add : Provision on 31-12-07	35.10				
	135.10				
Less : Provision on 1-1-07	120.00	15.10			

Balance Sheet

		Rs.			Rs.
Sundry Creditors	1,000.00		Debtors	2,000.00	
Less : Provision for Discount			Less : Bad Debts	50.00	
on Creditors	20.00	980.00		1,950.00	
			Less : Provision for Bad		
			Debts	195.00	
				1,755.00	
			Less Provision for		
			Discount	35.10	1,719.90

NOTES

उदाहरण 5. निम्नलिखित तलपट छिन्दवाड़ा के डी. सुनील की पुस्तकों से बनाया गया है :

तलपट दिनांक 31-12-07

	रुपये		रुपये
आहरण	1,055	पूँजी	11,940
प्राप्य विनिमय विपत्र	950	ऋण 6% पर	2,000
कल एवं यंत्र	2,880	विक्रय	35,643
विविध देनदार	6,200	कमीशन	564
मजदूरी	4,097	विविध लेनदार	5,963
क्रय	25,659		
विक्रय वापसी	278		
किराया व कर	562		
वेतन	1,100		
1 जनवरी, 1984 को स्कन्ध	8,968		
यात्रा-व्यय	188		
बीमा	40		
रोकड़	53		
बैंक	1,897		
मरम्मत	337		
ऋण पर ब्याज	100		
बट्टा	487		
डूबत ऋण	362		
फर्नीचर	897		
	56,110		56,110

समायोजन - (i) 31 दिसम्बर, 2007 को अंतिम स्कन्ध का मूल्य 12,896 रु. था।

(ii) 200 रु. डूबत ऋण के लिखिए तथा 5% संदिग्ध ऋणार्थ संचिति बनाइए।

(iii) कल व यंत्र पर 5% तथा फर्नीचर पर 10% ह्रास लगाइए।

(iv) मजदूरी में 120 रु. ऐसे सम्मिलित है जो नए संयंत्र के स्थापना व्यय है।

(v) अनुपार्जित कमीशन का आकार 60 रु. है।

(vi) दो माह का ब्याज ऋण पर देय है।

उपर्युक्त जानकारी से :

(क) व्यापारिक खाता बनाइए, (ख) लाभ-हानि खाता बनाइए, तथा (ग) स्थिति-विवरण बनाइए।

Solution: **टिप्पणियाँ -**

		रुपये
(1) संदिग्ध ऋणार्थ संचिति : देनदार		6,200
	(–) डूबत ऋण	200
		6,000

संचिति $\left(\frac{6,000 \times 5}{100}\right)$ = 300 रु

		रु
(2) ह्रास कल व यंत्र	=	2,880
(+) स्थापना व्यय		120
		3,000

$$\text{ह्रास} : \left(\frac{3{,}000 \times 5}{100}\right) = 150 \text{ रु.}$$

$$\text{फर्नीचर} : \left(\frac{897 \times 10}{100}\right) = 89.70 \text{ रु. या } 90 \text{ रु}$$

(3) ऋण पर देय ब्याज $\left(\frac{2{,}000 \times 6 \times 2}{100 \times 12}\right) = 20$ रुपये।

Trading and Profit & Loss Account
For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		8,968	By Sales	35,643	
To Purchases		25,659	(–) Returns	278	35,365
To Wages	4,097				
(–) Capital Wages	120	3,977	By Closing Stock		12,896
To Gross Profit c/d	9,657				
		48,261			48,261
To Rent and Taxes		562	By Gross Profit b/d		9,657
To Salaries		1,100	By Commission	564	
To Travelling Expenses	188		(–) Unearned Commission	60	504
To Insurance		40			
To Repairs		337			
To Interest on Loan	100				
(+) Outstanding	20	120			
To Discount		487			
To Depreciation :					
Plant and Machinery		150			
Furniture		90			
To Provision for Bad and Doubtful Debts					
Bad Debts	362				
(+) Written off	200				
	562				
(+) Provision for Bad Debts on 31-12-07	300	862			
To Net Profit transferred to Capital a/c		6,225			
		10,161			10,161

Balance Sheet
As on 31st December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Capital	11,940		Bills Receivables		950
(–) Drawing	1,055		Plant and Machinery	3,000	
			(–) Depreciation	150	2,850
	10,885				

NOTES

(+) Net Profit	6,225	17,110	Sundry Debtors	6,200	
			(–) Bad Debts	200	
Loan		2,000			
Interest on Loan Due		20		6,000	
Sundry Creditors		5,963	(–) Provision for		
Unearned Commission		60	Doubtful Debts	300	5,700
			Cash		53
			Bank		1,897
			Furniture	897	
			(–) Depreciation	90	807
			Closing Stock		12,896
		25,153			25,153

उदाहरण 6. From the following balances extracted from the books of S. Krishnan, prepare Profit and Loss Account and Balance Sheet for the year ending 31st December, 2007

एस. कृष्णन की पुस्तकों से लिए गये निम्नलिखित आधिक्यों (Balances) से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ-हानि लेखा और स्थिति-विवरण (Balance Sheet) तैयार कीजिए :

	Rs. रुपये
Gross Profit (सकल लाभ)	2,812
Closing Stock (अन्तिम स्कन्ध)	7,000
Loan 6% (ऋण 6%)	1,000
Sundry Expenses (विविध व्यय)	796
Creditors (लेनदार)	7,480
Income Tax (आयकर)	406
Discount allowed (दत्त छूट)	252
Rent and Taxes (किराया और कर)	340
Bank (अधिकोष)	6,494
Debtors (देनदार)	3,800
Properties (सम्पत्तियाँ)	5,348
Interest on Investments (विनियोगो पर प्राप्त ब्याज)	244
Capital (पूँजी)	17,500
Investment (विनियोग)	4,000
Furniture (फर्नीचर)	1,200
Bad Debts Reserve (अशोध्य ऋण संचिति)	600

Adjustments (समायोजन) :-

(i) Loan was taken on 1st March, 2007 but interest has not been paid.
(ऋण 1 मार्च 2007 को लिया गया परन्तु उस पर ब्याज नहीं दिया गया है)

(ii) Prepaid Taxes Rs. 40 and Outstanding Rent Rs. 60
(पूर्वदत्त कर 40 रु. और अदत्त किराया 60 रु.)

(iii) Accrued interest on investment Rs. 54.
(विनियोगों पर अर्जित ब्याज 54 रु.)

(iv) Sundry expenses includes Rs. 96 of charity.
(विविध व्यय में 96 रु. धर्मादाय के हैं)

Give also the adjustment entries,
समायोजन प्रविष्टियाँ भी कीजिए।

Solution :

टिप्पणियाँ - (i) ऋण पर अदत्त ब्याज $\left(\frac{1,000 \times 6}{100} \times \frac{10}{12}\right) = 50$ रुपये

(ii) आयकर व्यापारी के स्वामी की कुल आय पर लगता है अतः इसे आहरण मानकर उसकी पूँजी में से घटाया जायेगा।

(ii) चूँकि धर्मादाय एक पृथक लेखा-शीर्षक (Accounting Head) है अतः धर्मादाय की राशि जो विविध व्यय में सम्मिलित की गई है, विविध व्यय में से घटाकर धर्मादाय शीर्षक के अन्तर्गत लाभ-हानि खाते में डेबिट की जायेगी।

Adjustment Entries

समायोजन प्रविष्टियाँ

2007			Rs.	Rs.
31 Dec.	Interest Loan a/c Dr. To Outstanding Interest a/c (Interest on loan due for 10 months)	ब्याज पर ब्याज खाता डे. अदत्त ब्याज खाता से (ऋण पर 10 माह का ब्याज अदत्त)	50	50
"	Prepaid Taxes a/c Dr. To Taxes a/c (Taxes prepaid)	पूर्वदत्त कर खाता डे. कर खाते से (पूर्वदत्त कर)	40	40
"	Rent a/c Dr. To Outstanding Rent a/c (Rent outstanding)	किराया खाता डे. अदत्त किराया खाते से (किराया अदत्त)	60	60
"	Accrued Interest a/c Dr. To Interest a/c (Interest Accrued on Invesment)	अर्जित ब्याज खाता डे. ब्याज खाते से (विनियोगों पर उपार्जित ब्याज)	54	54
"	Charity a/c Dr. To Sundry Expenses (Charity included in Sundry Expenses adjustment)	धर्मादाय खाता डे. विविध व्यय खाते से (विविध व्यय में सम्मिलित धर्मादाय के लिए समायोजन किया गया)	96	96

Profit & Loss Account

For the year ended 31st December, 2007

		Rs.			Rs.
To Sundry Expenses	796		Gross Profit		2,812
(–) Charity	96	700	By Interest on Investment	244	
			(+) Accrued Interest	54	298
To Charity		96			
To Discount Allowed		252			
To Rent and Taxes		340			
(+) Ountstanding Rent	60				
	400				
(–) Prepaid Taxes	40	360			
To Interest on Loan		50			
To Net Profit		1,652			
		3,110			3,110

NOTES

Balance Sheet
As on 31st December, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Creditors		7,480	Bank		6,494
Loan		1,000	Investments		4,000
Outstanding Expenses			Debtors	3,800	
Interest on Loan		50	(–) Bad Debtors Reserve	600	3,200
Rent		60			
Capital	17,500		Prepaid Taxes		40
(–) Income Tax	406		Accrued Interest		54
	17,094		Closing Stock		7,000
			Furniture		1,200
(+) Profit	1,652	18,746	Properties		5,348
		27,336			27,336

उदाहरण 7. श्री चान्डोक का 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष का तलपट नीचे दिया जाता है। इससे आप वर्ष 2007 का व्यापार एवं लाभ-हानि खाता और 31 दिसम्बर, 2007 का आर्थिक चिट्ठा तैयार कीजिए-

	डेबिट रुपये	**क्रेडिट रुपये**
श्री चान्डोक की पूँजी	....	1,19,400
श्री चान्डोक द्वारा आहरण (Drawings)	10,550	....
प्राप्य बिल	9,500	....
मशीनरी	28,800	....
विविध देनदार	62,000	....
ऋण खाता 6% ब्याज पर	....	20,000
मजदूरी (उत्पादक)	40,970	....
विक्रय वापसी	2,780	....
क्रय	2,56,590	..
विक्रय	....	3,56,430
कमीशन प्राप्त	....	5,640
किराया तथा कर	5,620	....
प्रारम्भिक रहतिया	89,680	
वेतन	11,000	
यात्रा खर्च	1,880	
बीमा (जिसमें रु. 300 वार्षिक दर से 31 मार्च, 2007 तक के शामिल है)	400	
नकद रोकड़	530	
बैंक रोकड़	18,970	
मरम्मत तथा नवकरण	3,370	
ब्याज तथा बट्टा	5,870	
अशोध्य ऋण	3,620	
विविध लेनदार	.	59,630
फर्नीचर व फिटिंग्स	8,970	...
	5,61,100	5,61,100

31 दिसम्बर, 2007 को रहतिया का मूल्य 1,28,960 रु. था। विविध देनदारों पर अशोध्य ऋण के लिए 5 प्रतिशत की संचिति करना है। पूँजी पर 5% ब्याज लगाना है। मजदूरी के 1,200 रु. में वह मजदूरी का खर्च शामिल है जो नई मशीन के लगाने में खर्च हुई। फर्नीचर व फिटिंग्स पर 10% तथा मशीन पर 5% की दर से ह्रास काटना है। ऋण पर दो माह का ब्याज देना बाकी है।

Solution : टिप्पणियाँ - (i) ऋण पर अदत्त ब्याज $\left(\frac{20,000 \times 6 \times 2}{100 \times 12}\right) = 200$ रु.

(ii) **बीमा** : 300 रु. वार्षिक दर से 3 माह का पूर्व-दत्त $\left(\frac{300 \times 3}{12}\right) = 75$ रु.

(iii) अशोध्य ऋण संचिति देनदारों पर 5% $= \left(\frac{62,000 \times 5}{100}\right) = 3,100$ रु.

(iv) मशीन लगाने पर व्यय पूँजीगत मजदूरी को मजदूरी में से घटा कर मशीन के मूल्य में जोड़ा जायेगा। अब मशीन $(28,800 + 1,200) = 30,000$ रु. की हो जाएगी।

(v) **ह्रास** : फर्नीचर $\left(\frac{8,970 \times 10}{100}\right) = 897$ रु.,

मशीनरी $\left(\frac{30,000 \times 5}{100}\right) = 1,500$ रु.।

(vi) पूँजी पर ब्याज $\left(\frac{1,19,400 \times 5}{100}\right) = 5,970$।

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

		रुपये			रुपये
प्रारम्भिक रहतिया		89,680	विक्रय	3,56,430	
उत्पादक मजदूरी	40,970		(–) वापसी	2,780	3,53,650
(–) मशीन स्थापना पर व्यय	1,200	39,770	अन्तिम रहतिया		1,28,960
क्रय		2,56,590			
सकल लाभ नी./ले.		96,570			
		4,82,610			4,82,610
किराया तथा कर		5,620	**सकल लाभ** नी./ला		96,570
वेतन		11,000	प्राप्त कमीशन		5,640
यात्रा खर्च		1,880			
बीमा	400				
(–) पूर्व-दत्त	75	325			
मरम्मत व नवकरण		3,370			
ब्याज तथा बट्टा	5,870				
(+) ऋण पर अदत्त ब्याज	200	6,070			
अशोध्य ऋण संचिति :					
अशोध्य ऋण	3,620				
(+) संचिति 31-12-07 को	3,100	6,720			
ह्रास :					
फर्नीचर		897			
मशीनरी		1,500			
पूँजी पर ब्याज		5,970			
शुद्ध लाभ		58,858			
		1,02,210			1,02,210

NOTES

चिट्ठा

31 दिसम्बर, 2007 को

दायित्व		रुपये	सम्पत्तियाँ		रुपये
पूँजी	1,19,400		प्राप्य बिल		9,500
(–) आहरण	10,550		मशीनरी	28,800	
	1,08,850		(+) नई मशीन	1,200	
(+) लाभ	8,858			30,000	
	1,67,708		(–) ह्रास	1,500	28,500
(+) ब्याज	5,970	1,73,678	देनदार	62,000	
			(–) अशोध्य ऋण संचिति	3,100	58,900
लेनदार		59,630			
ऋण खाता		20,000	नकद रोकड़		530
ऋण पर अदत्त ब्याज		200	बैंक रोकड़		18,970
			फर्नीचर	8,970	
			(–) ह्रास	897	8,073
			पूर्व-दत्त बीमा		75
			अन्तिम रहतिया		1,28,960
		2,53,508			2,53,508

उदाहरण 8. श्री डेविड आपको निम्नलिखित तलपट उपलब्ध कराते है

	डेबिट (रुपये)	क्रेडिट (रुपये)
क्रय (समायोजित) (Purchases Adjusted)	6,89,200	
वेतन (Salaries)	11,900	
गाड़ी भाड़ा (Carriage)	900	
सामान्य व्यय (General Expenses)	900	
भवन (Building)	30,000	
फर्नीचर (Furniture)	6,000	
पूर्व-दत्त व्यय (Prepaid Expenses)	200	
विविध देनदार (Sundry Debtors)	8,000	
ह्रास (Depreciation) :		
भवन (Building)	600	
फर्नीचर (Furniture)	600	
रोकड (Cash)	1,750	
स्कन्ध (Stock) 31-12-07	56,250	
रमेश का उदग्त खाता (Ramesh's Suspense a/c)	5,000	
पूँजी (Capital)		48,500
विक्रय (Sales)		7,40,000
बट्टा (Discount)		900
अदत्त व्यय (Expenses Unpaid)		700
विविध लेनदार (Sundry Creditors)		21,200
	8,11,300	8,11,300

रमेश का उदग्त खाता (Suspense a/c) उस राशि से सबंधित है जो श्री रमेश को संयुक्त साहस (Joint Venture) के सबंध में भेजी गयी थी। रमेश से प्राप्त सूचना के अनुसार संयुक्त साहस पर 4,000 रु. लाभ हुआ है, जिसमे श्री मालानी का हिस्सा 1,000 रु. है। इसका समायोजन किया जाना है।

NOTES

उदाहरण 9. निम्नलिखित सूचना एवं शेषों के आधार पर 30 सितम्बर, 2007 को व्यापारिक एवं लाभ हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइए:

	रुपये
स्कन्ध (Stock) 30-9-06	20,000
मजदूरी (Wages)	5,000
मार्गस्थ माल (Goods-in-transit) 30-9-07	4,000
प्रशासन एवं विक्रय व्यय (Administration and Selling Expenses)	7,000
रोकड़ (Cahs)	9,000
कार्यालय उपस्कर (Office Equipment)	9,000
देनदार (2,000 रु. 'ब' से प्राप्य सहित) (Debtors including Rs. 2,000 due from B)	30,000
लेनदार (3,000 रु. 'ब' को देने सहित) (Creditors including Rs. 3,000 due to B)	11,500
विक्रय (Sales)	85,000
उपार्जित व्यय (Accrued Expenses)	1,000
डूबत ऋण के लिए प्रावधान (Provision for Bad Debts)	1,500
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	6,000
पूंजी (Capital)	17,000
आहरण (Drawings)	2,000

समायोजन (Adjustments) -

(1) देनदारों में 2,500 रु. आहरण के तथा 500 रु. ऐसे ऋणों के सम्मिलित हैं जो अब अशोध्य हैं तथा अपलिखित किये जाने है।

(2) 30 सितम्बर, 2007 को गोदाम तथा शोरूम में स्कन्ध 10,000 रु.।

(3) संदिग्ध ऋणों के लिए 10% तथा देनदारों एवं लेनदारों पर छूट के लिए 1% व्यवस्था कीजिए।

(4) कमीशन काटने के बाद सकल लाभ पर 10% की दर से उत्पादन प्रबन्धक को कमीशन देना है।

(5) कार्यालय उपस्कर पर 1,370 रु. ह्रास काटना है।

Solution :

टिप्पणियाँ - (i) प्रश्न में क्रय (Purchases) की राशि नहीं दी गई है। इस हेतु तलपट बनाकर अन्तर की राशि को क्रय माना जायेगा

तलपट

	डेबिट रुपये	क्रेडिट रुपये
स्कन्ध 30-9-06	20,000	
मजदूरी	5000	
मार्गस्थ माल	4,000	
प्रशासन एवं विक्रय माल	7,000	

NOTES

Trading and Profit & Loss A/c

For the year ended 30th September, 2007

		Rs.		Rs.
To Stock (30-9-06)		20,000	By Sales	85,000
To Purchases		36,000	By Stock (30-9-07)	10,000
To Wages		5,000		
To Productions Manager's Commission		3,091		
To Gross Profit		30,909		
		95,000		95,000
To Admn. and Selling Expenses		7,000	By Gross Profit	30,909
To Provision for Bad Debts :			By Provision for Discount	95
To Bad Debts	500		on Creditors	
(+) Provision on 30-9-07	2,500			
	3,000			
(–) Provision on 30-9-07	1,500	1,500		
To Provision for Discount on				
Debtors		225		
To Depreciation on Office Equipment		1,370		
		20,909		
To Net Profit		31,004		31,004

Balance Sheet

As on 30th September, 2007

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Bank Overdraft		6,000	Cash		9,000
Creditors	9,500		Debtors	25,000	
Less : Provision for Discount	95	9,405	Less : Provision for Bad Debts	2,500	
Outstanding Expenses		1,000		22,500	
Commission Payable to Production			Less : Provision for Discount	225	22,275
Manager		3,091			
Capital	17,000		Goods in Transit		4,000
Less : Drawings			Closing Stock		10,000
(2,000 + 2,500)	4,500		Office Equipment	9,000	
	12,500		Less : Depreciation	1,370	7,630
Add : Net Profit	20,909	33,409			
		52,905			52,905

उदाहरण 10. एक व्यापारी की पुस्तकों से 31 दिसम्बर, 2006 को निम्नलिखित शेष प्राप्त किए गये

डेबिट शेष	**रुपये**	**क्रेडिट शेष**	**रुपये**
आहरण (Drawings)	3,000	पूँजी	28,000
देनदार (debtors)	20,100	लेनदार (Creditors)	10,401
ऋण पर ब्याज (Interest on Loan)	300	रहन पर ऋण (Loan on Mortgage)	9,500
हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	2,050	अप्राप्य ऋण संचय	710
स्कन्ध (Stock) 1-1-06	6,839	विक्रय (Sales)	1,10,243

मोटर-गाड़ियाँ (Vehicles)	10,000	क्रय वापसी (Purchase Returns)	1,346
बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	3,555	बट्टा (Discount)	540
भवन (Premises)	12,000	देय बिल (B/P)	2,614
अप्राप्य ऋण (Bad Debts)	525	प्राप्त किराया (Rent Received)	250
क्रय (Purchases)	66,458		
विक्रय वापसी (Sales Return)	7,821		
बाह्य गाड़ी भाड़ा (Carriage Outwards)	2,404		
आन्तरिक गाड़ी भाड़ा (Carriage Inwards)	2,929		
वेतन (Salaries)	9,097		
किराया, कर एवं बीमा	2,891		
विज्ञापन (Advertising)	3,264		
विविध व्यय (Sundry Expenses)	3,489		
प्राप्य बिल (B/R)	6,882		
	1,63,604		1,63,604

NOTES

निम्नलिखित समायोजन करते हुए व्यापारिक तथा लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिये :

(i) भवन पर 2½ % तथा गाड़ियों पर 20 % ह्रास काटिये।

(ii) ऋण पर 6 % वार्षिक ब्याज 6 माह का बकाया है।

(iii) एक ग्राहक को 500 रु. की लागत का माल 600 रु. में 'विक्रय या वापसी' (Sale or Return) आधार पर बेचा गया था जिसे बिक्री के रूप में लिखा गया था।

(iv) 750 रु. वेतन तथा 350 रु. कर के अदत्त हैं।

(v) बीमा 150 रु. पूर्व-दत्त है

(vi) अप्राप्य ऋणों के लिए देनदारों पर 5 % वार्षिक प्रावधान करना है।

(vii) प्रबन्धक को उस शुद्ध लाभ पर जो कमीशन देने के पश्चात् बचे, 10 % की दर से कमीशन देना है।

(viii) 31 दिसम्बर 2006 को अन्तिम स्कन्ध 6,250 रु. का था।

Solution :

टिप्पणियाँ - (i) **ह्रास :** भवन $\left(\frac{12{,}000 \times 5}{2 \times 100}\right) = 300$ रु., गाड़ियाँ $\left(\frac{10{,}000 \times 20}{100}\right) = 2{,}000$ रु.

(ii) **ऋण पर बकाया ब्याज :** $\left(\frac{9{,}500 \times 6 \times 6}{100 \times 12}\right) = 285$ रु.

(iii) स्वीकृति पर बेचे माल की चूँकि स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है, अत: (i) 600 रु. विक्रय तथा देनदारों में से घटाइये तथा (ii) 500 रु. लागत का स्टॉक जो ग्राहक के पास है, व्यापारिक खाते तथा चिट्ठे में दिखाइये।

(iv) **अप्राप्य ऋणों के लिए 31-12-06 को प्रावधान :**

देनदार (20,100 – 600) = 19,500 प्रावधान $\left(\frac{19{,}500 \times 5}{100}\right) = 975$ रु.

(v) **प्रबन्धक का कमीशन :** कमीशन चार्ज करने के पश्चात् बचे शुद्ध लाभ पर 10% अर्थात् कमीशन चार्ज करने से पूर्व 110 रु. के लाभ पर 10 रु. कमीशन $\left(\frac{8{,}712 \times 10}{110}\right) = 792$ रु.

NOTES

Trading and Profit & Loss Account
For the year ended 31st December, 2006

		Rs.			Rs.
To Stock 1-1-06		6,839	By Sales	1,10,243	
To Purchases	66,458		Less : Returns	7,821	
Less : Returns	1,346	65,112		1,02,422	
To Carriage Inwards		2,929	Less : Goods on Approval	600	1,01,822
To Gross Profit		33,692	By Closing Stock	6,250	
			Add : Goods with Customer	500	6,750
		1,08,572			1,08,572
To Interest on Loan	300		By Gross Profit		33,692
Add : Outstanding	285	585	By Discount		540
			By Rent Received		250
To Carriage Outwards		2,404			
To Advertisement		3,264			
To Sundry Expenses		3,489			
To Rent, Taxes and Insurance	2,891				
Add: Outstanding Tax	350				
	3,241				
Less : Prepaid Insurance	150	3,091			
To Provision for Bad and Doubtful Debts :					
Bad Debts	525				
Add: Provision on 31-12-06	975				
	1,500				
Less: Provision on 1-1-06	710	790			
To Depreciation :					
Premises	300				
Vehicles	2,000	2,300			
To Salaries	9,097				
Add : Outstanding	750	9,847			
To Manger's Commission		792			
To Net Profit		7,920			
		34,482			34,482

Balance Sheet
As on 31st December, 2006

Liabilities	Rs.	Assets		Rs
Creditors	10,401	Debtors	20,100	
Bills Payable	2,614	(–) Goods on Approval	600	
Loan on Mortgage	9,500		19,500	
Outstanding Expenses				
Interest on Loan	285	(–) Provision for Bad Debts	975	18,525
Salaries	750			
Taxes	350	Cash in Hand		2,050
Manager's Commission	792	Cash at Bank		3,555

Capital	28,000		Bills Receivables		6,882
(+) Net Profit	7,920		Prepaid Insurance		150
	35,920		Closing Stock	6,250	
			(+) Goods With Customer	500	6,750
(–) Drawings	3,000	32,920	Premises	12,000	
			(–) Depreciation	300	11,700
			Vehicles	10,000	
			(–) Depreciation	2,000	8,000
		57,612			57,612

NOTES

1.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions) :

(1) समायोजन से क्या आशय है? निम्नलिखित के संबंध में क्या समायोजन किये जाते हैं?

(क) अदत्त व्यय, (ख) उपार्जित आय तथा (ग) मूल्य ह्रास।

(2) अशोध्य ऋण प्रावधान से क्या अर्थ है? अशोध्य ऋण प्रावधान बनाने तथा इन्हें अन्तिम खातों में दिखाने की प्रक्रिया को संक्षेप मे समझाइये।

(3) देनदारों तथा लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान बनाने की प्रक्रिया समझाते हुए इनका अन्तिम खातों में कैसे व्यवहार होता है, दर्शाइए।

(4) निम्नलिखित के संबंध में अन्तिम खाते बनाते समय क्या समायोजन किये जाते है:

(क) आकस्मिक हानियाँ।

(ख) माल का आहरण जिसका लेखा न किया गया हो।

(ग) विक्रय या वापसी आधार पर भेजा गया माल।

(घ) ग्राहक द्वारा लौटाया गया माल जिसका लेखा नहीं किया गया।

(ङ) मैनेजर को शुद्ध लाभ पर कमीशन।

संख्यात्मक प्रश्न
(Numerical Questions)

Q.1. 30 जून 2007 को श्री राकेश की पुस्तकों में निम्न बाकियाँ थीं -

	डेबिट (रुपये)	क्रेडिट (रुपये)
रहतिया (1 जुलाई, 2006)	2,300	
क्रय	10,000	
विक्रय वापसी	200	
विविध लेनदार	3,410	
अशोध्य ऋण	300	
प्राप्य बिल	1,000	
मशीनें	4,400	
वेतन	600	
मजदूरी	4,500	
भाड़ा (क्रय पर)	130	

NOTES

भाड़ा (विक्रय पर)	120	
किराया	450	
मरम्मत	200	
आहरण	600	
रोकड़	1,000	
पूँजी		8,360
विक्रय		15,650
विविध लेनदार		1,700
देयबिल		3,200
क्रय वापसी		100
	29,010	29,010

30 जून, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक खाता व लाभ-हानि खाता तथा इसी तिथि पर आर्थिक चिट्ठा निम्न समायोजनों के साथ बनाइये-

(क) 30 जून, 2007 को अन्तिम रहतिया का मूल्य 4,000 रु. था।

(ख) मशीनों पर 10% मूल्य ह्रास करना है।

(ग) अदत्त व्यय - वेतन 100 रु. और किराया 100 रु.।

(घ) पूँजी पर ब्याज की व्यवस्था 5% की दर से करनी है।

[**Ans.** सकल लाभ 2,620 रु. शुद्ध लाभ 92 रु. तथा आर्थिक चिट्ठे का योग 13,370 रु. ।]

Q. 2. 31 दिसम्बर, 2007 को सुरेश चन्द्र का तलपट नीचे दिया गया है। इसके आधार पर इनका व्यापार खाता, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिए।

	नाम (Debit) रुपये	जमा (Credit) रुपये
पूँजी (Capital)		9,000
आहरण (Drawings)	500	
कलों तथा यन्त्र (Machinery & Tools)	4,500	
विविध लेनदार (Sundry Creditors)		1,500
क्रय (Purchases)	9,900	
मजदूरी (Wages)	4,500	
नगद (Cash)	1,200	
बिक्री (Sales)		15,800
मरम्मत (Repairs)	100	
रहतिया (Stock) 1-1-07	2,200	
किराया (Rent)	480	
ईंधन व्यय (Fuel Expenses)	720	
देय बिल (Bills Payable)		2,590
अप्राप्य ऋण (Bed Debts)	250	
ढुलाई (Carriage)	140	
वेतन (Salary)	800	
विविध देनदार (Sundry Debtors)	3,600	
	28,890	28,890

निम्नलिखित समायोजना भी कीजिए -

(1) 31 दिसम्बर, 2007 को अन्तिम रहतिया 390 रु. था।

(2) कलों तथा यन्त्रों पर 10 प्रतिशत मूल्य ह्रास करना है।

(3) पूँजी पर 5 प्रतिशत की दर से ब्याज देना है।

(4) मरम्मत पर 1,000 रु. देना बाकी है।

[**Ans.** - सकल हानि 1,270 रु., शुद्ध हानि 4,800 रु. चिट्ठे का योग 9,240 रु.।]

Q. 3. 31 दिसम्बर, 2007 को ब्राऊन की पुस्तकों में निम्न बाकियाँ थीं -

	डेबिट रुपए		क्रेडिट रुपए
रहतिया (1 जनवरी 2007)	4,000	पूँजी	15,000
क्रय	17,000	विक्रय	24,500
विक्रय-वापसी	160	विविध लेनदार	2,500
विविध देनदार	3,500		
भवन	4,500		
मशीनें	3,500		
फर्नीचर	1,700		
प्राप्य बिल	2,500		
वेतन	1,500		
मजदूरी	900	कमीशन	150
टैक्स	300	क्रय-वापसी	250
बीमा	200		
सामान्य व्यय	500		
गाड़ी भाड़ा (क्रय पर)	400		
अशोध्य ऋण	400		
रेल-भाड़ा	300		
बट्टा	140		
रोकड़ हाथ में	600		
रोकड़ बैंक में	300		
	42,400		42,400

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक खाता व लाभ-हानि तथा इसी तिथि पर आर्थिक चिट्ठा निम्न समायोजनाओं के साथ बनाइए -

(क) 31 दिसम्बर, 2007 को अन्तिम रहतिया का मूल्य 8,000 रु. था।

(ख) मशीनों पर 10% तथा भवन पर 5% मूल्य ह्रास करना है।

(ग) अदत्त व्यय - वेतन 100 रु. तथा मजदूरी 100 रु.।

(घ) विविध देनदारों पर 5% अशोध्य तथा संदिग्ध ऋण के लिए सचय करना है।

[**Ans.** - Gross Profit Rs. 9,890; Net Profit 6,150; Total of B/S Rs. 23,850]

Q. 4. श्री मुकेश के निम्नलिखित तलपट से 30 जून, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा इसी तिथि को आर्थिक चिट्ठा तैयार कीजिए -

	नाम (Debit) रुपये		**जमा** (Credit) रुपये
रोकड़ हाथ में (Cash in Hand)	2,500	पूंजी (Capital)	61,500
देनदार (Debtors)	20,000	विक्रय (Sales)	1,25,000

क्रय (Purchases)	50,000	लेनदार (Creditors)	25,000
स्टॉक आरम्भ में (Opening Stock)	75,000	विनियोग से आय	250
भवन (Building)	40,000	अशोध्य ऋण संचिति	
आन्तरिक ढुलाई (Carriage Inward)	250	(Reserve for Bad Debts)	1,250
विनियोग (Investment)	5,000	बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	2,500
भाड़ा एवं कर (Rent and Tax)	500		
विज्ञापन (Advertisement)	125		
निर्गत वाहन व्यय (Carriage Outward)	100		
फिक्चर्स एण्ड फिटिंग्स (Fixture & Fittings)	1,000		
अशोध्य ऋण (Bad Debts)	900		
ख्याति (Goodwill)	20,000		
ब्याज (Interest)	125		
	2,15,500		2,15,500

अन्तिम खाते बनाने से पूर्व निम्न समायोजनाएँ आवश्यक हैं -

(1) अन्तिम रहतिये का मूल्य 50,000 रु. था।

(2) भाड़ा और कर के 100 रु. अदत्त हैं।

(3) विज्ञापन के 50 रु. पूर्वदत्त है।

(4) भवन और फिक्चर्स व फिटिंग्स पर 5 % की दर से ह्रास लगाना है।

(5) देनदारों पर 5 % की दर से अशोध्य ऋण संचिति कीजिए।

(6) पूँजी पर 5 % वार्षिक ब्याज लगाइए।

[**Ans.** - सकल लाभ 49,750 रु., शुद्ध लाभ 43,325 रु., चिट्ठे का योग 1,35,500 रु.]

Q. 5. From the following Trial Balance of Shri S. P. Jajoo, prepare Trading, Profit & Loss a/c for the year ended 31st December, 2007 & a Balance Sheet as on that date.

(श्री एस. पी. जाजू के निम्नलिखित तलपट से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष का व्यापार खाता, लाभ-हानि खाता तथा उक्त तिथि का चिट्ठा बनाइए।)

	Rs.		Rs.		Rs.
Opening Stock	16,000	Building	24,000	Debtors	17,000
Machinery	10,000	Drawing	4,000	Purchases	90,000
Insurance	1,500	Trade Expenses	3,600	Salaries	8,200
Sales Return	600	Carriage	1,250	Bad Debts	300
Bills Receivables	4,500	Cash	1,400	Bank Loan	4,400
Capital	32,000	Creditors	11,600	Discount (Cr.)	400
Sales	1,30,000	Purchases Returns	800	Commission (Dr.)	750
Reserve for Bad and Doubtful Debts	400	Bills Payable	2,000		

निम्नलिखित समायोजन (Adjustment) भी कीजिए।

(a) Closing Stock Rs. 12,000 (अन्तिम स्कन्ध 12,000 रु.)

(b) Interest on Capital is to be allowed @ p.a. (पूँजी पर 5% वार्षिक ब्याज लगाना है।)

(c) Prepaid Insurance Rs. 150. Unpaid Salary Rs. 800 (पूर्वदत्त बीमा 150, अदत्त वेतन 800 रु.)

(d) Depreciate on Building @ 2% and Machinery @ 10% (भवन पर 2% तथा मशीनरी पर 10% ह्रास लगाइये।)

(e) Reserve 5% on Debtors for Bad & Doubtful Debts. (अशोध्य ऋण के लिए देनदारों पर 5% संचिति बनाइए।)

(f) Commission amounting to Rs. 200 is yet to be received. (200 रु. कमीशन अभी प्राप्त होना है।)

[**Ans.** - Gross Profit Rs. 34,950, Net Profit Rs. 18,520, Balance Sheet Rs. 66,920]

(**Hints** - Reserve for Bad & Doubtful Debts debited to P. & L. a/c Rs. 750 on 31-12-07 Rs. 850.)

NOTES

1.13 सारांश

लेखांकन कार्य करने के उपरान्त भी अन्तिम खाते बनाते समय जो व्यवहार लिखने से रह गये है और अपूर्ण है उन व्यवहारों को ध्यान में रखते हुये उनका समायोजन किया जाता है।

अदत्त व्यय, पूर्वदत्त व्यय, ह्रास, अन्तिम स्कन्ध, उपार्जित और अनुपार्जित आय सकरण व पूँजी पर ब्याज इत्यादि प्रमुख समायोजन है।

- जिन देनदारों से भुगतान देने की सम्भावना नहीं रहती या कम होती है उसे अशोध्य ऋण कहते हैं। अशोध्यकरण और अशोध्य ऋण पर प्रावधान व्यवसाय के लिये हानि होता है।
- जो देनदार निश्चित समय से पूर्व भुगतान कर देते है उन्हे कटौती दी जाती है जो व्यवसाय की हानि होती है। और जब लेनदारों से पहले भुगतान करते समय बट्टा प्राप्त होता है वह व्यवसाय का लाभ होता है।
- व्यवसाय के प्रबन्धक को वेतन के अतिरिक्त लाभ पर आधारित कमीशन दिया जाता है जो लाभ हानि खाते मे डेबिट और दायित्व पक्ष में सम्पत्ति में दिखाते है।

1.14 शब्दावली

समायोजन, अदत्त व्यय, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय, अनुपार्जित आय, ह्रास

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

ACCOUNTS/2028-1.PM5 FIRST PROOF DATE : 29.10.2014 (RAJ\AKS)

NOTES

अध्याय–2 बैंक समाधान विवरण
[BANK RECONCILIATION STATEMENT]

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 बैंक समाधान विवरण से आशय

2.3 रोकड़ बही के बैंक शेष और पास बुक के बैंक शेष में अन्तर के कारण

2.4 बैंक समाधान विवरण तैयार करने की विधियाँ

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे -

1. बैंक समाधान विवरण से आशय बता सकेंगे
2. रोकड़ बही के बैंक खाते और पास बुक के शेषों में अन्तर के कारणों को समझा सकेंगे।
3. बैंक समाधान विवरण तैयार कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

बैंक की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रायः प्रत्येक व्यापारी बैंक मे अपना हिसाब रखता है। जब वह बैंक के चालू खाते में रुपये जमा करता है तो वह अपनी रोकड़ बही मे इस रकम को बैंक के डेबिट लिख देता है तथा इसी प्रकार जब वह बैंक से रुपया निकालता है तो इस रकम को बैंक खाते में क्रेडिट कर देता है। बैंक भी अपने यहाँ प्रत्येक ग्राहक के लिए अलग-अलग खाता रखता है जिसे रकम जमा करने पर ग्राहक के खाते मे इस रकम को क्रेडिट करता है तथा ग्राहक द्वारा रुपया निकालने की दशा में इस रकम को डेबिट लिखता है। ग्राहक के खाते की एक नकल पास बुक के रूप मे बैंक अपने ग्राहक को देता है। ग्राहक तथा बैंक मे देनदार व लेनदार का सम्बन्ध होता है। अतः ग्राहक के बैंक खाते या रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ का डेबिट शेष पास बुक का क्रेडिट शेष होता है। तथा बैंक खाते या रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ का क्रेडिट शेष पास बुक का डेबिट शेष होता है। यदि रोकड़ बही के समस्त लेन-देन ठीक उसी दिन पास बुक में लिख दिये जाये तो रोकड़ बही व पास बुक के शेष मेल खायेंगे। परन्तु व्यवहार में यह देखा गया है कि कई बार रोकड़ बही का शेष पास बुक के शेष से नही मिलता। इसका कारण यह है कि कुछ लेन-देन रोकड़ बही मे लिख दिये जाते हैं परन्तु पास बुक में किसी एक तिथि तक उनकी प्रविष्टि नही की जाती है और इसी प्रकार कुछ लेन-देन पास बुक मे तो लिख लिये जाते है परन्तु किसी कारण से रोकड़ बही में उनका लेखा नहीं हो पाता। अतः ग्राहक को चाहिये कि समय-समय पर अपनी पास बुक से रोकड़ बही के बैंक खाते का मिलान कर ले तथा जो प्रविष्टियाँ नही की गई है उन्हें पूरा करके दोनों के शेष को मिला ले। जब पास बुक तथा रोकड़ बही के शेषों का मिलान नहीं होता है तो इसकी जाँच करने के लिए एक विवरण तैयार किया जाता है जिसे बैंक समाधान विवरण कहते है।

2.2 बैंक समाधान विवरण से आशय

''बैंक समाधान विवरण' वह विवरण है जो कि ग्राहक द्वारा किसी निश्चित तिथि पर अपनी रोकड़ बही के बैंक शेष तथा पास बुक के शेष का मिलान करने के उद्देश्य से बनाया जाता है।''

2.3 रोकड़ बही के बैंक शेष तथा पास बुक के शेष में अन्तर के कारण

NOTES

1. व्यापारी द्वारा लिखे गये चैकों को भुगतान हेतु प्रस्तुत नहीं किया जाना—व्यापारी दूसरे व्यक्ति को चैक द्वारा भुगतान करते समय अपनी रोकड़ बही में उसकी प्रविष्टि कर लेता है जिससे बैंक की जमा राशि उसके यहाँ कम हो जाती है परन्तु बैंक जब तक उस चैक का भुगतान नहीं कर देता तब तक पास बुक में उसकी प्रविष्टि नहीं करता है। अतः दोनों के शेष भिन्न होते हैं।

2. प्राप्त चैकों का संग्रह हेतु बैंक में जमा कराना परन्तु बैंक द्वारा जमा नहीं दिया जाना—जब व्यापारी कोई चैक, बिल तथा हुण्डियाँ बैंक में संग्रह करने के लिए भेजता है तो वह तुरन्त रोकड़ बही में बैंक के खाते में नाम लिख देता है। परन्तु बैंक उस समय तक ग्राहक के खाते को जमा नहीं करता जब तक वह इन चैक व बिल आदि का रुपया वसूल नहीं कर लेता। अतः पास बुक का शेष रोकड़ से भिन्न होगा।

3. बैंक द्वारा किये गये खर्चे तथा लिया गया ब्याज—बैंक का ब्याज, बैंक कमीशन तथा खर्च, आदि पास बुक में लिख दिये हों परन्तु हमें सूचना नहीं होने के कारण इनका लेखा रोकड़ मे नही हुआ हो।

4. स्थायी-आदेश के अनुसार बैंक द्वारा किये गये भुगतान—बैंक ने हमारे स्थायी आदेश के अनुसार बीमे की किस्त, क्लब का चन्दा तथा रेडियो लाइसेंस शुल्क, इत्यादि का भुगतान किया हो परन्तु सूचना के अभाव में हमने रोकड़ बही में इनका लेखा नहीं किया हो।

5. ग्राहकों द्वारा सीधा बैंक को भुगतान किया जाना—कभी-कभी ग्राहक हमें भुगतान न करके सीधे हमारे बैंक खाते में रकम जमा करा देते हैं। ऐसी रकमें पास बुक मे जमा हो जाती है परन्तु रोकड़ बही में उनका लेखा नही मिलता।

6. बैंक द्वारा दिया गया ब्याज—बैंक द्वारा ग्राहक की जमा राशि पर दिया गया ब्याज रोकड़ बही मे नही लिखा गया हो।

7. संग्रह के लिये लिखे गये चैक आदि को संग्रह के लिए नहीं भेजना—चैक, बिल ड्राफ्ट तथा हुण्डी आदि रोकड़ बही में संग्रह के लिए भेजते समय लिख लिये गए हों परन्तु उनको गलती से बैंक भेजना भूल गये हों।

8. ब्याज तथा लाभाँश आदि सीधे बैंक द्वारा वसूल किया जाना—बैंक ने हमारे स्थायी आदेश के अनुसार प्रतिभूतियों पर ब्याज तथा लाभांश वसूल किया हो तथा पास बुक में लिख लिया हो परन्तु हमे सूचना न मिलने के कारण इन रकमों को हमने रोकड़ मे नही लिखा हो।

9. बैंक के भुगतान पर तथा अनादृत हो जाने पर—बैंक से भुनाए गए बिल की पूरी रकम रोकड़ में लिख दी गई हो तथा पास बुक में कुल रकम में से बट्टा काट कर लेखा किया गया हो या बाद मे बिल अनादृत हो गया हो।

10. गलत प्रविष्टि होने पर—पास बुक अथवा रोकड़ बही में किसी सौदे की गलत प्रविष्टि हो गई हो।

उपर्युक्त कारणों को ध्यान मे रखकर बैंक समाधान विवरण द्वारा पास बुक व रोकड़ के बैंक शेषों का एक निश्चित तिथि को मिलान किया जाता है।

2.4 बैंक समाधान विवरण तैयार करने की विधियाँ
(Methods of preparing a Bank Reconciliation Statement)

बैंक समाधान विवरण बनाने की कई विधियाँ प्रचलित है। कई बार बैंक समाधान विवरण बनाने के पूर्व रोकड़ बही के बैंक शेष को सही किया जाता है। परन्तु परीक्षा की दृष्टि से निम्न दो विधियाँ अधिक सरल प्रतीत होती है—

A. रोकड़ बही के शेषों से बैंक समाधान विवरण बनाना—रोकड़ बही के शेष की सहायता से बैंक समाधान विवरण बनाते समय निम्न बातें स्मरणीय है—

(i) **रोकड़ बही में बैंक खाते का डेबिट शेष** (Dr Balance) **होने पर**

सर्वप्रथम रोकड़ बही के बैंक खाते के डेबिट शेष को लिखिये। अब इस शेष में जोड़िये।

NOTES

1. उन समस्त चैकों की राशि को जो हमने ऋणदाताओं को दिये है परन्तु उन्होंने अभी तक चैक भुगतान के लिये बैंक में प्रस्तुत नहीं किये है।

   (Add Cheques issued but not presented for payment)

2. बैंक द्वारा हमारी जमा रकम पर दिये गये ब्याज की रकम को क्योंकि यह ब्याज पास बुक में जमा कर दिया है।

   (Add interest allowed by Bank)

3. बैंक द्वारा हमारे विनियोगों पर प्राप्त की गई लाभांश व ब्याज की राशि को।

   (Add Interest and dividend received by the Bank)

4. ग्राहकों द्वारा सीधी हमारे बैंक खाते में जमा कराई गई राशि को।

   (Add amount deposited directly into the Bank by our Customers)

उपरोक्त के योग में से निम्न को घटाइये—

1. उन सब चैक तथा हुण्डियों की धनराशि को जो हमने बैंक मे संग्रह के लिये जमा किये है परन्तु बैंक ने अभी तक उनका संग्रह करके खाते में जमा नहीं किया है।

   (Less Cheques deposited into the bank but not collected)

2. बैंक द्वारा अपनी सेवाओं के लिये ली गई शुल्क (Bank Charges) तथा अधिविकर्ष पर बैंक द्वारा लिये गये ब्याज की राशि को।

   (Less Bank Charges and Interest on Bank overdraft)

3. बैंक द्वारा हमारी ओर से किये गये भुगतानो (बीमा प्रीमियम, लाइसेंस शुल्क, चन्दा आदि) को जो रोकड़ बही में नहीं लिखे गये है।

   (Less amounts paid direct by the bank and not entered in the Cash Book)

4. उन बिल, चैक तथा हुण्डियो की रकम को जो बैंक में संग्रह करने के लिये भेजे गये थे परन्तु अनादृत (Dishonour) हो गये।

   (Less amount of Cheques. Bills and Hundies deposited into bank but dishonoured)

संक्षेप में विद्यार्थियो को रोकड़ बही के शेष से बैंक समाधान विवरण बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जो रकम पास बुक में जमा है, उसे रोकड़ बही में भी जोड़ दे तथा जो पास बुक में नहीं है उस रकम को रोकड़ बही में से भी कम कर दें। ऐसा करने से रोकड़ व पास बुक का शेष मिल जावेगा।

(ii) **रोकड़ बही मे बैंक का क्रेडिट शेष (Overdraft) होने पर—**

सर्वप्रथम रोकड़ बही मे बैंक के क्रेडिट शेष को लिखो तथा इसमें निम्न प्रकार से विभिन्न रकमों को जोड़ो—

1. ऐसे जमा किए हुए चैक, ड्राफ्ट, बिल तथा हुण्डियों की रकम को जो संग्रह हेतु बैंक को भेजे गये है परन्तु एकत्रित करके हमारे खाते मे अभी तक जमा नहीं की है।

2. बैंक शुल्क तथा स्थायी आदेश के अन्तर्गत चुकाये गये खर्चों की राशि को।

3. बैंक द्वारा अधिविकर्ष पर लिये जाने वाले ब्याज की राशि को। इससे अधिविकर्ष की राशि बढ़ती है।

4. बैंक में संग्रह के लिये जमा कराये गये ऐसे बिल, चैक तथा हुण्डियो की राशि को जो अनादृत हो गये है।

अब उपरोक्त के जोड़ में से निम्न को घटाइये—

1. उन समस्त चैकों की राशि को जो हमने ऋणदाताओं को दिए है परन्तु उन्होंने अभी तक इन्हे भुगतान के लिए बैंक में प्रस्तुत नहीं किया है।

2. बैंक द्वारा दिये गए ब्याज तथा बैंक द्वारा हमारी ओर से प्राप्त की गई लाभांश तथा ब्याज की राशि को।

3. हमारे ग्राहकों द्वारा बैंको मे सीधे जमा कराई गई रकम को। ऐसी जमा से अधिविकर्ष कम होता है।

इस सम्बन्ध मे विद्यार्थियों को चाहिये कि डेबिट शेष से सम्बन्धित नियमों को याद कर ले। जब रोकड़ बही के बैंक खाते मे क्रेडिट शेष (Overdraft) हो तो डेबिट शेष की दशा में जो धनराशि जोड़ी जाती है उसे घटा दे तथा जो धनराशि घटाई जाती है उसे क्रेडिट शेष की दशा मे जोड दे। चार-पाँच क्रियात्मक प्रश्न करने पर ये नियम स्वतः ही याद हो जाते है।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए रोकड़ बही तथा पास बुक के शेष से बैंक समाधान विवरण बनाते समय जोड़े तथा घटाये जाने वाली विभिन्न मदों को निम्न चार्ट में एक दृष्टि में प्रदर्शित किया गया है।

S. No.	Items for which adjustments are to be made	In case of 1. Cash Book Dr. Balance 2. Pass Book Dr. Balance (overdarft)	In case of 1. Cash Book Cr. Balance (overdraft) 2. Pass Book Cr. Balance
1.	Cheques issued but not presented for payment	Add	Less
2.	Amount directly deposited by a customer in trader's account but not yet entered in cash Book	Add	Less
3.	Interest allowed by Bank not entered in Cash Book	Add	Less
4.	Interest and dividend on securities collected by Bank but not entered is Cash Book	Add	Less
5.	Amount received by Bank from customer, wrongly deposited in this Account instead of Account No. 2	Add	Less
6.	Any wrong entry on credit side of the Pass Book	Add	Less
7	Cheques, Bills, Hundies deposited into Bank for collection but not yet collected	Less	Add
8.	Interest charged by Bank on overdraft	Less	Add
9.	Bank charges	Less	Add
10.	Payment made by Bank under standing order i.e. Insurance premium Radio licence fee, Gun licence fee and Club's Subscription etc.	Less	Add
11.	Cheques and Bills deposited into Bank but dishonoured	Less	Add
12.	Cheques entered in Cash Book but forgot to send into Bank	Less	Add
13.	Amount wrongly deposited by Bank in this account instead Account No 2.	Less	Add
14.	Dishonour of a bill discounted with the Bank (Amount of the Bill plus Noting and other charges)	Less	Add
15.	Any wrong entry on debit side of the Pass Book	Less	Add

उदाहरण : 1 निम्नलिखित विवरण से 31 जनवरी 2007 को एक बैंक समाधान विवरण बनाइये—

1 रोकड़ बही का डेबिट शेष 5,000 रु

2 प्रेम बिहारी को 1,780 रु का चैक दिया परन्तु वह अभी तक भुगतान के लिए बैंक में प्रस्तुत नहीं किया गया।

3 बैंक में 2,460 रु. के चैक संग्रह के लिए जमा कराये परन्तु अभी तक उनका रुपया संग्रहित नहीं हुआ।

4 बैंक द्वारा दिया गया ब्याज 50 रु ।

5 बैंक ने हमारे स्थायी आदेश के अन्तर्गत 700 रु का बीमा प्रीमियम चुकाया जिसकी हमें कोई सूचना नहीं मिली।

6 बैंक शुल्क 30 रु ।

Example : 1 Prepare a Bank Reconciliation Statement from the following particulars as on 31st January, 2007

		Rs.
1	Debit Balance as per Cash Book	5,000
2.	Cheques issued to Prem Behari Gupta but not	1,780

NOTES

	presented for payment to the Bank	
3.	Cheques deposited into Bank for collection but not yet collected by the Bank	2,460
4.	Interest allowed by Bank	50
5.	Bank paid Insurance Premium as per out standing order but no information was given to us	700
6.	Bank charges	30

Solution :

I Method **Bank Reconciliation Statement**
As on 31 st Jan., 2007

Particulars	Details Rs.	Total Amount Rs.
Balance as per Cash Book (Dr.)		5,000
Add—		
(i) Cheques issued to Prem Behari but not yet presented for payment	1,780	
(ii) Interest allowed by the Bank	50	1,830
		6,830
Less—		
(i) Cheques deposited into Bank but not yet collected	2,460	
(ii) Insurance Premium paid by the bank under out standing orders	700	
(iii) Bank Charges	30	3,190
Balance as per Pass Book		**3,640**

II Method **Bank Reconciliation Statement**
As on 31 st Jan., 2007

Particulars	Plus (+) Items Rs.	Minus (–) Items Rs.
Balance as per Cash Book	5,000	
Add cheques issued but not presented	1,780	
Less Cheques deposited but not collected		2,460
Add Interest Allowed by the Bank	50	
Less Insurance Premium paid by Bank		700
Less Bank Charges		30
	6,830	**3,190**
Balance as per Pass Book	3,640	

वैकल्पिक विधि—सुविधा की दृष्टि से समाधान विवरण में राशि के लिए दो स्तम्भ बना लेने चाहिये एक में धनात्मक (+) चिन्ह तथा दूसरे में ऋणात्मक (–) चिन्ह लगाना चाहिये। रोकड़ बही का डेबिट शेष या पास बुक का क्रेडिट शेष होने पर यह राशि धनात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ में लिख देनी चाहिये तथा रोकड़ बही का क्रेडिट शेष या पास बुक का डेबिट शेष (अधिविकर्ष) होने की अवस्था में शेष की राशि ऋणात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ में लिख देनी चाहिए। इसके बाद निम्न तथ्यों को जोड़ना तथा घटाना चाहिये—

1. रोकड़ बही का शेष दिये जाने की अवस्था में—

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, सर्वप्रथम रोकड़ बही के शेष को उसकी प्रकृति के अनुसार धनात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ में (यदि यह नाम शेष है) या ऋणात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ मे (यदि यह जमा शेष है) दिखाना चाहिए। तत्पश्चात् आगे की क्रिया इस प्रकार होगी—

(अ) निम्न तथ्यों की राशि को जोड़ो अर्थात् धनात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ में लिखिए—

(क) उन सभी चैकों की राशि को जो ऋणदाताओं को दिये हैं परन्तु जो उन्होंने अभी तक भुगतान के लिए बैंक में प्रस्तुत नहीं किये।

(ख) बैंक द्वारा दिया गया ब्याज जिसका लेखा रोकड़ बही में नहीं किया गया है यद्यपि पास बुक में किया जा चुका है।

(ग) ग्राहकों द्वारा हमारे खाते में जमा कराई गई राशि जिसका लेखा रोकड़ बही में नहीं किया गया है।

(घ) विनियोगों व ऋणों पर बैको द्वारा वसूल लाभांश व ब्याज की राशि जिसका लेखा रोकड़ बही में नही किया गया है।

(ब) निम्न तथ्यों से सम्बन्धित राशि को कम करो अर्थात् ऋणात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ में लिखिये—

(च) उन समस्त चैकों, बिलों तथा हुण्डियों की राशि को जो बैंक में संग्रह के लिए भेजे हों परन्तु जिनका संग्रह नही किया जा सका हो।

(छ) बैंक द्वारा अधिविकर्ष पर लिया गया ब्याज तथा अपनी सेवाओ के फलस्वरूप लिये गये शुल्क (Bank charges) की राशि जिसका लेखा पास बुक में कर दिया गया हो परन्तु रोकड बही में नही किया गया हो।

(ज) हमारे स्थायी निर्देश पर बैंक द्वारा किये गये भुगतानों (बीमा प्रीमियम, चन्दा, लाइसेंस शुल्क, आदि) की राशि जिसका लेखा रोकड़ बही में नहीं किया गया हो।

(झ) उन बिल, चैक तथा हुण्डियों की राशि को जो बैंक मे संग्रह हेतु भेजे गये थे, परन्तु अनादृत होने पर रोकड़ बही में लेखा नही किया गया।

उपरोक्त मदों को जोड़ने तथा घटाने के पश्चात् जो निष्कर्ष रहेगा, वही पास बुक का शेष होगा। ऐसी धनात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ का योग ऋणात्मक चिन्ह वाले स्तम्भ के योग से अधिक आता है, तो पास बुक का जमा शेष रहेगा। विपरीत दशा में यह शेष अधिविकर्ष अर्थात् नाम शेष रहेगा।

2. कभी रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ का शेष नही दिया जाकर पास बुक का शेष दिया जाता है। ऐसी स्थिति मे भी प्रश्न को हल करने की प्रक्रिया मे विशेष अन्तर नहो आयेगा। यहाँ भी दो स्तम्भ बनाना श्रेयस्कर तथा सुविधाजनक होगा, एक धनात्मक चिन्ह (+) का तथा दूसरा ऋणात्मक (-) चिन्ह का। विशेष स्मरण योग्य बात यह है कि रोकड़ बही का शेष दिये जाने पर जिन तथ्यों से सम्बन्धित राशि को हम उपरोक्त लिखे अनुसार जोड़ते है, उन्हें अब पास बुक का शेष देने पर घटायेंगे तथा जिन्हे घटाते है, उन्हे अब जोड़ेंगे। अर्थात् प्रक्रिया विपरीत हो जायेगी।

वैकल्पिक विधि में प्रश्न हल करते समय निम्न सारणी द्वारा प्रविष्टियाँ करना सरल हो जाता है—

	दिया हुआ शेष (Given Balance)	Cash Book Dr. Balance	Pass Book Cr. Balance	Cash Book Cr. Balance	Pass Book Dr. Balance
	मालूम करना है (To find out)	Pass Book Balance	Cash Book Balance	Pass Book Balance	Cash Book Balance
1	Cheques issued but not presented for payment	+	–	–	–
2	Cheques, Bills, Hundies etc. deposited into Bank but not yet collected	–			
3	Interest allowed by Bank	+			+

4.	Collection of Dividend by Bank	+	–	–	+
5.	Bank Charges	–	+	+	–
6.	Direct payments by Bank	–	+	+	–
7.	Dishonoured Cheques or Bills	–	+	+	–
8.	Interest charged by Bank on overdraft	–	+	+	–

NOTES

उदाहरण : 2 निम्नलिखित विवरण से बैंक समाधान विवरण तैयार कीजिये—

1. 31 दिसम्बर, 2007 को रोकड़ वही के अनुसार वैंक का शेष 3,200 रु.
2. 31 दिसम्बर, 2007 को पास बुक का शेष 4,144 रु.
3. चैक जो लिखे गये परन्तु भुगतान के लिए प्रस्तुत नही किये गए, 1,780 रु.
4. चैक जो बैंक में जमा किये गये परन्तु जिनकी वसूली न हो सकी 860 रु.
5. बैंक ने ब्याज दिया 34 रु
6. बैंक शुल्क 10 रु.

Prepare a Bank Reconciliation Statement from the following particulars

1. Bank Balance on 31st December, 2007 as per Cash Book Rs. 3,200
2. Balance on 31st December, 2007 as per Pass Book Rs. 4,144
3. Cheques issued but not presented for payments Rs.; 1,780
4. Cheques deposited but not collected Rs. 860
5. Interest alowed by Bank Rs. 34
6. Bank Charges Rs. 10

Solution :

Bank Reconciliation Statement

As on 31st December, 2007

	Rs.	Rs.
Balance as per Cash Book		3,200
Add-Cheques issued but not presented for payments	1,780	
Add-Interest allowed by Bank	34	1,814
		5,014
Less Cheques deposited but not yet collected by Bank	860	
Less Bank Charges	10	870
Balance as per Pass Book		**4,144**

उदाहरण : 3 31 जनवरी, 2006 को मेरी रोकड़ में 4,935 रु. का बैंक अधिविकर्ष है। जाँच करने पर निम्न बातें ज्ञात हुई—

1 340 रु. के चैक बैंक में 27 जनवरी को भेजे गये जिसमें से 130 रु. के चैक खाते में 3 फरवरी को जमा किये और 25 रु. का एक चैक 4 फरवरी को अनादृत होकर वापस आया।

2 जनवरी के माह में मैंने 670 रु. के चैक लिखे जिसमें से 370 रु. के चैक खाते में 5 फरवरी को भुगतान के लिए प्रस्तुत किये गये और एक आदेश चैक 75 रु. का शर्मा एण्ड कम्पनी ने 1 फरवरी को लौटा दिया जिसके बदले में उन्हें एक वाहक चैक दे दिया गया।

3 बैंक ने मेरे स्थायी आदेशानुसार बीमा प्रीमियम 108 रु. जनवरी में चुकाई।

4 बैंक ने 15 रु. मेरे खाते में रिगल कॉटन मिल्स लि. से लाभांश वसूल किया और 80 रु. 4% सरकारी ऋण पर ब्याज के वसूल किये थे

5 बैंक ने गलती से 50 रु. मेरे खाते में जमा कर दिये जो मैंने खाता नं. 2 में जमा किये थे।

6. एक 30 रु. का बिल जो मैंने बैंक से 1 दिसम्बर, 2005 में भुना लिया था, 31 जनवरी, 2006 को अनादृत हो गया।

31 जनवरी, 2006 को बैंक समाधान विवरण बनाइये।

On 31st January, 2006 my Cash Book showed a bank overdraft of Rs. 4,935. On comparing it with the Pass Book the following differences were noted—

NOTES

1. Cheques amounting to Rs. 340 were sent to Bank on 27th January, but cheques worth Rs. 130 were credited on 3rd Feb. and one cheque for Rs. 25 was returned by them as dishonoured on 4th February.
2. During the month of January, I issued cheques worth Rs. 670 to my creditors. Out of these, cheques with Rs. 370 were presented for payment on 5th February and an order cheque for Rs. 75 given to Sharma & Co. was returned by them on 1st February and a bearer one was issued to them in exchange,
3. According to my standing orders the Bankers have paid Life Insurance Premium during the month of Junuary.
4. My Bankers have collected Rs. 15 as dividend on the shares of Birla Cotton Mills Ltd. and Rs. 80 as Interest on 4% Govt Loan.
5. My Bankers have given me a wrong credit for Rs. 50 paid in by me in my Account No. 2.
6. A Bill Receivable for Rs. 30 discounted with Bank on 1st Dec., 2005 has been dishonoured on 31st January, 2006.

Prepare a Bank Reconciliation Statement as on 31st January, 2006

Solution :

Bank Recociliation Statement as on 31st Jan. 2006

Particulars	Amount Rs.	Amount Rs.
Overdraft as per Cash Book		4,935
Add— Cheques deposited but not cleared	130	
Cheques deposited but returned as dishonoured	25	
Life Insurance Premium paid	108	
	30	293
Less Cheques deposited but not collected		**5,228**
Less— Cheques issued but not presented	370	
Cheques issued in Jan. but exchanged in February	75	
Dividend collected	15	
Interest collected	80	
Amount deposited in Account No 2 wrongly credited in this a/c	50	
	590	
Debit Balance (Overdraft) as per Pass Book		**4,638**

B. **पास बुक के शेष से बैंक समाधान विवरण बनाना—**

बैंक समाधान विवरण पास बुक के शेष से बनाया जा सकता है। इसके लिए निम्न क्रिया की जाती है—

जब पास बुक का जमा शेष हो तो निम्न में सम्बन्धित धनराशि को घटाओ—

1. उन चैकों की धन राशि जो ग्राहकों को लिखकर दिये है, परन्तु अभी तक भुगतान के लिए बैंक में प्रस्तुत नहीं किये है।
2. बैंक द्वारा जमा राशि पर दिये गये ब्याज की रकम।
3. स्थायी आदेश के अन्तर्गत बैंक द्वारा एकत्रित की गई लाभ तथा ब्याज की राशि।
4. ग्राहक द्वारा सीधी बैंक में हमारे खाते में जमा कराई गई धनराशि।

NOTES

निम्न रकम को जोड़िये—

5. उन चैक, ड्राफ्ट, बिल आदि की राशि जो बैंक में संग्रह के लिए जमा कराये गये हों परन्तु अभी तक संग्रह नहीं किये गये हों।
6. ऐसे चैक तथा बिल की राशि जो बैंक में जमा कराये गये परन्तु अनादृत हो गये और रोकड़ बही में उनकी कोई प्रविष्टि नहीं हुई हो।
7. बैंक द्वारा लिए गए बैंक शुल्क व अधिविकर्ष पर ब्याज की धनराशि।

जब पास बुक का नाम शेष या अधिविकर्ष हो—

पास बुक का शेष जब नाम का अथवा अधिविकर्ष हो तो उपर्युक्त वर्णित क्रम संख्या 1 से 4 तक की राशि घटाने के स्थान पर इसमें जोड़ दो तथा क्रम संख्या 5, 6 व 7 की राशि जोड़ने के स्थान पर घटा दो। जब पास बुक से बैंक समाधान विवरण बनाया जाता है तो ऐसी राशि जो रोकड़ बही में है, इसमें भी जोड़ दो तथा जो रोकड़ बही में नहीं है, उन्हें पास बुक में से घटा देना चाहिये।

उदाहरण : 4 निम्नलिखित विवरण से एक बैंक समाधान विवरण 30 अप्रैल, 2006 को बनाइये—

1. पास बुक की जमा बाकी 950 रु.।
2. राजेश खन्ना को 25 अप्रैल, 2006 को 2,960 रु. का एक चैक दिया गया परन्तु उसने चैक मई के प्रथम सप्ताह में भुगतान के लिए प्रस्तुत किया।
3. 1,790 रु. के चैक बैंक में संग्रह के लिए जमा कराये परन्तु 30 अप्रैल तक बैंक ने संग्रह करके हमारे खाते में जमा नहीं किये।
4. बैंक ने हमारे खाते को 30 रु. बैंक शुल्क से डेबिट किया जिसकी हमें कोई सूचना प्राप्त नही हुई।
5. बैंक ने हमारे खाते में 36 रु. ब्याज के जमा किए जो रोकड़ में नहीं लिखे गये।
6. बैंक ने हमारी ओर से 240 रु. अंशों का लाभांश प्राप्त करके हमारे खाते में जमा कर लिए परन्तु हमें कोई सूचना नहीं दी।

Prepare a Bank Reconciliation Statement as on 30th April, 2006 from the following particularars—

		Rs.
1.	Cr. Balance as per Pass Book	950
2.	Cheques issued to Rajesh Khanna on 25th April, 2006 but was presented for payment in the first week of May	2,960
3.	Cheques sent of Bank for collection but not credited by the bank till 30th april	1,790
4.	The Bank debited our account of Bank charges but no information received by us in this connection	30
5.	Interest credited by the Bank in our Current A/c but not entered in the Cash Book	36
6.	Dividend on shares collected by the Bank and credited in our account but no information given to us	240

Bank Reconciliation Statement
As on 30th April, 2006

Particulars	Detailed Amount Rs.	Total Amount Rs.
Credit Balance as per Cash Book		950
Add— (i) Cheques sent to Bank for collection but not yet collected.	1,790	
(ii) Bank charges debited by the Bank	30	1,820
	2,770	

Less—(i)	Cheque issued to Rajesh Khanna but not presented for payment till the end of April, 2006	2,960	
(ii)	Interest credited by the Bank	36	
(iii)	Dividend on shares collected by the Bank	240	3,236
	Credit Balance (Overdraft) as per Cash Book		466

NOTES

इसको दूसरी विधि से निम्न प्रकार से बनाया जा सकता है—

Bank Reconciliation Statement
As on 30th April, 2006

Particulars	Plus Items (+) Rs.	Minus Items (–) Rs.
Credit Balance as per Cash Book	950	
Add— Cheques deposited into Bank but not collected	1,790	
Add— Bank charges debited by the Bank	30	
Less— Cheques issued to Rajesh Khanna but not yet presented for payment		2,960
Less— Interest credited by the Bank on deposits		36
Less— Dividends collected by the Bank		240
	2,770	**3,236**
Credit Balance (Overdraft) as per Cash Book		**– 466**

उदाहरण : 5 निम्नलिखित विवरण में 30 जून, 2006 को एक बैंक समाधान विवरण तैयार कीजिए—

1. रोकड बही के बैंक खाते का क्रेडिट शेष 3,600 रु
2. 720 रु के चैक लिखे परन्तु अभी तक भुगतान के लिए प्रस्तुत नहीं किए गए।
3. 1,540 रु चैक संग्रह हेतु बैंक में जमा कराये गये परन्तु बैंक द्वारा अभी संग्रह नहीं किए गए।
4. बैंक ने शुल्क लिया 20 रु।
5. बैंक ने अधिविकर्ष पर ब्याज लिया 25 रु.।
6. एक ग्राहक ने सीधे हमारे बैंक खाते में 240 रु जमा करा दिए।
7. बैंक ने 35 रु मकान कर के हमारी ओर से चुकाये, परन्तु हमें सूचना अभी तक नहीं मिली।

Prepare a Bank Reconciliation Statement from the following particulars as on 30th June, 2006

		Rs.
1.	Credit Balance as per Bank column of Cash Book	3,600
2.	Cheques issued to creditors but not yet presented for payment	720
3.	Cheques deposited into Bank for collection but not collected by the Bank up to this time.	1,540
4.	Bank Charges	20
5.	Interest on overdraft charged by the Bank	25
6.	A customer deposited direct into our Bank Account without informing us	240
7.	Bank paid house tax on our behalf but no information received from Bank in this connection	35

NOTES

Solution :

Bank Reconciliation Statement
As on 30th June, 2006

Particulars	Detailed Amount Rs.	Total Amount Rs.
Credit Balance as per Cash Book		3,600
Add— (i) Cheques deposited into Bank not collected	1,540	
(ii) Interest on Bank overdraft charged	25	
(iii) Bank charges	20	
(iv) House Tax paid by the Bank on our behalf	35	1,620
		5,220
Less— (i) Cheques issued but not yet presented for payments	720	
(ii) Direct deposit by a customer into our Bank Account	240	960
Debit Balance (Overdraft) as per Pass Book		**4,260**

उदाहरण : 6 नीचे कुछ कारण दिए गये है जिनके कारण बैंक पास बुक का शेष रोकड़ बही के शेष से नहीं मिलता है। जिन मदों को जोड़ा जायेगा उनके आगे "A" अक्षर रखिये और यदि जिनको घटाना है तो "D" अक्षर (Deduct) रखिए।

मद	यदि हम रोकड़ बही के + शेष से प्रारम्भ करें	यदि हम पास बुक बुक के अधिविकर्ष शेष से प्रारम्भ करें
1. चैक निर्गमित किए गए परन्तु अभी तक भुगतान के लिए प्रस्तुत नही हुये।		
2. बैंक व्यय		
3. चैक बैंक मे जमा किए परन्तु अनादृत हो गए।		
4. ग्राहक की तरफ से बैंक द्वारा सीधा भुगतान किया गया।		
5. किरायेदार द्वारा दो माह का किराया सीधा बैंक मे हमारे खाते में जमा कराया गया।		
6. एक ग्राहक द्वारा सीधी राशि जमा कराई गई।		

Below are given the various reasons why the bank pass book balance does not agree with the cash book balance. Put the letter "A" against the items if it is to be add "D" (Deduct) if it is to dedacted.

Items	If we begin with Cash Book Balance with + Balance	If we begin with Pass Book Balance with overdraft
1. Cheques issued but not presented for payment		
2. Bank Charges		
3. Cheques deposited into Bank but dis-honoured		
4. Direct payment by Bank on client's behalf		
5. Rent for two months directly deposited in our Bank A/c by our tenant		
6. Amount deposited directly by a customer		

Solution :

Items	If we begin with Cash Book Balance with + Balance	If we begin with Pass Book Balance with overdraft
1. Cheques issued but not presented for payment	"A"	"A"
2. Bank Charges	"D"	"D"
3. Cheques deposited into Bank but dis-honoured	"D"	"D"
4. Direct payment by Bank on client's behalf	"D"	"D"
5. Rent for two months directly deposited in our Bank A/c by our tenant	"A"	"A"
6. Amount deposited directly by a customer.	"A"	"A"

NOTES

उदाहरण : 7 नीचे श्रीमती मधुलिका की दिसम्बर, 2005 की रोकड़ बही तथा पास बुक की नकल दी जा रही है। इनमें बैंक समाधान विवरण बनाइये।

Below are given the Cash Book and Pass Book of Mrs. Madhulika for December, 2005. Prepare a Bank Reconciliation Statement.

Cash Book (Bank Column only)

Date	Particulars	Amount Rs.	Date	Particulars	Amount Rs.
Dec.2005			Dec.2005		
Dec. 1	To Balance b/d	2,800	Dec. 4	By Best Decorators	1,300
6	" Cash	1,600	" 8	" Wages	1,800
9	" Hari Haran	1,200	" 18	" Rasik Bihari	600
16	" A. Kumar	2,300	" 20	" Sharma & Sons	1,500
19	" Sharma Bros.	800	" 25	" Cash	1,000
22	" Cash	3,200	"26	Hari Haran (cheque dishonoured)	1,200
			" 30	" Gupta's & Jain's	800
			" 31	" Balance c/d	3,700
2006		**11,900**			**11,900**
Jan. 1	To Balance b/d	3,700			

PASS BOOK

Date	Particulars	Amount withdrawan	Amount deposited	Dr. or Cr.	Balance
Dec. 2005		Rs.	Rs.		Rs.
Dec. 1	By Balance	—	—	Cr	2,800
" 6	By Cash	—	1,600	Cr	4,400
" 8	To Selves	1,800	—	Cr	2,600
" 10	To Best Decorators	1,300	—	Cr	1,300
" 18	By A. Kumar		2,300	Cr	3,600
" 22	By Cash	—	3,200	Cr	6,800
" 24	To Sharma & Sons	1,500	—	Cr	5,300
" 25	To Cash	1,000		Cr.	4,300
" 30	To Bank Charges	10		Cr	4,290
" "	To Life Insurance	600		Cr	3,690
" 31	By Rent Collected	—	700	Cr	4,390

NOTES

Solution :

Bank Reconciliation Statement

As on 31st December, 2005

			Rs.
	Balance as per Cash Book		3,700
Add—	1. Cheques issued not presented for payment		
	a. Rasik Bihari	600	
	b. Gupta's & Jain's	800	1,400
	2. Rent collected by Bank not entered in Cash Book		700
			5,800
Less—	1. Cheque of Sharma Bros. sent for collection, not yet collected	800	
	2. Bank Charges	10	
	3. Insurance premium paid by Bank not entered in Cash Book	600	1,410
	Balance as per Pass Book		**4,390**

उदाहरण : 8

लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल का 31 अक्टूबर, 2006 को पास बुक में 28,000 रु. का क्रेडिट शेष था। रोकड़ वही से मिलान करने पर निम्न तथ्य सामने आये—

1. 35,000 रु. के चैक गायक-कलाकारों को लिखे गये जिनकी प्रविष्टि रोकड़ वही में की गई परन्तु भुगतान हेतु बैंक को प्रस्तुत नहीं किये गये।
2. 24,000 रु. के चैक प्राप्त हुये जिन्हें रोकड बही में लिखा गया परन्तु बैंक ने अभी जमा नहीं दी।
3. लक्ष्मीकान्त प्यारे लाल के आदेशानुसार बैंक ने ब्याज के 1,600 रु. उनके स्थायी जमा खाते से चालू खाते में 6 नवम्बर, 2006 को स्थानान्तरित किया। यह राशि रोकड़ बही में 31 अक्टूबर, 2006 को क्रेडिट की जा चुकी थी।
4. रोकड़ बही के भुगतान पक्ष का योग 350 रु. से अधिक लग गया।
5. स्थायी जमा खाते से लिखा गया 500 रु. का चैक रोकड़ बही में चालू खाते से लिखा गया बताया गया।
6. अवधि समाप्त हो जाने पर अख्तर हैदराबादी को 4,000 रु. का लिखा गया चैक पुन: लिख दिया गया। इसकी प्रविष्टि रोकड़ बही में दुबारा कर दी गई। परन्तु अन्य कोई प्रविष्टि नही की गई। दोनो चैक ऊपर भुगतान हेतु प्रस्तुत नहीं किये गये चैकों की राशि में सम्मिलित थे।
7. 5,100 रु. का चैक बैंक में जमा कराया गया परन्तु बैंक ने भूल से 5,010 रु. ही जमा किये।
8. 250 रु. का चैक रोकड़ बही मे लिखा गया परन्तु बैंक में जमा होने से रह गया।
9. 20 अक्टूबर, 2006 को 9,500 रु. का चैक प्राप्त हुआ जो रोकड़ बही में भूल से 950 रु. से लिखा गया।

आपको 31 अक्टूबर, 2006 का बैंक समाधान विवरण बनाना है।

On 31st October, 2006 Laxmi Kant Pyare Lal's Pass Book had a credit balance of Rs. 28,000 On checking the cash book with the bank statement the following facts were revealed:—

1. Cheques drawn, amounting to Rs. 35,000 had been entered in the cash book but had not been presented
2. Cheques received, amounting to Rs. 24,000 had been entered in the Cash Book but had not beeen credited by the Bank.
3. On instructions from Laxmi Kant Pyare Lal the bank had transferred interest. Rs. 1,600 from his deposit account to his current account, recording the transfer on 6th November 2006. This amount had, however, been credited in the cash book as on 31st October 2006
4. The payments side of the cash book had been overcast by Rs. 350

5. A cheque, Rs. 500, drawn on deposit account had been shown in the cash book as drawn on current account.
6. A cheque issued to Akhtar Hyderabadi for Rs, 4,000 was replaced when out of date. It was entered again in the cash book, no other entry being made. Both cheques were included in the total of unpresented cheques shown above.
7. A cheque for Rs. 5,100 was paid into Bank but the Bank credited the account with Rs, 5,010 by mistake.
8. A cheque for Rs. 250 entered into the Cash Book was omitted to be banked.
9. On 20th October, 2006 a cheque for Rs. 9,500 was received from a customer but only Rs. 950 had been entered in the Bank column of the Cash Book by mistake.

You are required to prepare Bank Reconciliation Statement as at 31st October, 2006.

Solution : **Bank Reconciliation Statement**

As un 31st October, 2006

			Dr. Rs.	Cr. Rs.
		Balance as per Cash Book		28,000
Add—	1.	Cheques received and entered in the Cash Book		24,000
	2.	Difference in Amount wrongly credited		90
	3.	Cheque ommitted to be banked		250
Less—	1.	Unpresented cheques (including two cheques of Rs. 400 each issued to Akhtar Hyderabadi)	35,000	
	2.	Bank interest reversal of entry incorrectly credited	1,600	
	3.	Amount shown less in the Cash Book due to overcasting of payments side	350	
	4.	Cheques drawn on deposit account	500	
	5.	Amount of Cheque deposited wrongly entered in Cash Book	8,550	
			46,000	52,340
		Balance as per Cash Book	6,340	

वोध प्रश्न

1 बैंक समाधान विवरण क्या है?

2 बैंक समाधान विवरण क्या बनाया जाता है?

3 बैंक समाधान विवरण बनाने की विधियाँ बताइये

2.5 अभ्यास के लिए प्रश्न (Assignment Material)

NOTES

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions)

1. बैंक समाधान विवरण क्या है? यह क्यों बनाया जाता है?
   What is Bank Reconciliation Statement? Why it is prepared?
2. रोकड़ बही के बैंक खाते तथा पास बुक के शेषों के अन्तर रहने के कारणों को स्पष्टतया समझाइये।
   Explain clearly the reasons for difference between the balances as shown by the bank column of Cash Book and Pass Book.
3. बैंक समाधान विवरण क्या है? यह क्यों और कैसे बनाया जाता है?
   What is a Bank Reconciliation Statement? Explain fully stating why and how it is prepared.

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

4. निम्न विवरणों से बैंक समाधान विवरण तैयार कीजिये—

(1) 31 दिसम्बर, 2005 को पास बुक का नाम शेष 10,266 रु.

(2) 31 दिसम्बर, 2005 को 10,212 रु., 981 रु. और 1,128 रु. के चैक लिखे गये, परन्तु 3 जनवरी 2006 तक उनका भुगतान नहीं प्राप्त किया गया।

(3) अधिविकर्ष पर ब्याज जो रोकड़ बही में नहीं लिखा गया 1,510 रु.।

(4) दूसरे शहरों के 21,000 रु. के चैक 13 दिसम्बर, 2005 को संग्रह हेतु बैंक में जमा कराये परन्तु ये जनवरी, 06 में ही संग्रहित किये जा सके।

(5) 31 दिसम्बर, 2005 को प्राप्य 2,500 रु. की हुण्डी बैंक को भेजी गई जो दो दिन पूर्व संग्रहित कर ली गई और रोकड़ बही में लेखा कर दिया गया परन्तु यह राशि पास बुक में 1 जनवरी, 2006 तक जमा नहीं की गई।

(6) स्थायी आदेशानुसार बैंक द्वारा 3 दिसम्बर, 2005 को 100 रु. बीमा प्रीमियम का भुगतान किया गया जिसे रोकड़ बही में नहीं लिखा जा सका।

बैंक समाधान विवरण बनाते समय 31 दिसम्बर, 2005 को रोकड़ बही का शेष नहीं बदलना है। समस्त शुद्ध प्रविष्टियाँ जनवरी, 2006 में की गई है।

Prepare a Bank Reconciliation statement from the following particulars—

(i) Balance as per Pass Book on 31st Dec, 2005 overdrawn Rs. 10,266.

(ii) Cheques drawn on 31st Dec., 2005 but not cleared till 3rd January, 2006 Rs. 10,212, Rs. 981 and Rs. 1,128.

(iii) Interest on Bank overdraft not entered in the Cash Book Rs. 1,510.

(iv) Out station cheques Rs. 21,000 lodged in the Bank on 13th Dec., 2005 but collected and credited in Jan., 2006

(v) A Hundi for Rs. 2,500 due on 31st Dec., 2005 was sent to Bank, collected two days before and entered in the Cash Book forthwith but the proceeds were not credited in the Pass Book till 1st Jan., 2006.

(vi) Rs. 100 insurance premium paid by the Bank under a standing order on 31st December, 2005 had not been entered in the Cash Book.

While perparing the Bank Reconciliation Statement assume that you do not alter the Cash Book balance as on 31st Dec., 2005 all correcting entries were made in January, 2006.

[Answer—Debit Balance as per Cash Book Rs. 2,532]

5. 31 दिसम्बर, 2005 को प्राण एण्ड कम्पनी की रोकड़ बही के बैंक खाते का शेष 7,500 रु. था। रोकड़ बही की प्रविष्टियों को पास बुक से मिलाने पर पाया गया कि क्रमश: 500 रु. व 700 रु. के चैक जो 30 दिसम्बर को जमा कराये गये थे, अगले वर्ष की जनवरी तक जमा नहीं हो सके। इसके अतिरिक्त 28 दिसम्बर को निर्गमित 600 रु., 800 रु. तथा 1,200 रु. के चैक 3 जनवरी तक भुगतान के लिए प्रस्तुत नहीं किये गये। 31 दिसम्बर को ब्याज के सम्बन्ध में 125 रु. की जमा राशि पास बुक में दिखाई गई थी जिसे रोकड़ बही में नहीं लिखा गया। इसी प्रकार पास बुक में बैंक व्यय के सम्बन्ध में 10 रु. नाम लिखे गये थे जिसे रोकड़ बही में नहीं लिखा गया।

उपरोक्त से बैंक समाधान विवरण बनाइये।

The balance of Bank Column as shown by the Cash Book of Pran & Co. on 31st December,)05 was Rs. 7,500. On checking the entries in the Cash Book with the Pass Book, it was .certained that cheques of Rs. 500 and 700 respectively paid in on the 30th December, were not 'edited until the 2nd January following, and cheques of Rs. 600, Rs. 800 and Rs. 1,200 issued n the 28th December were not presented until the 3rd of January. There was a credit of Rs. 125 n the Pass Book in respect of interest under date 31st December which was not entered in the Cash Book. There was also Bank charges debited in the Pass Book amounting in all to Rs. 10 which were not entered in the Cash Book.

NOTES

Prepare a Bank Reconciliation Statement from the above.

[**Answer**—Balance as per Pass Book Rs. 9,015]

6. 31 दिसम्बर, 2005 को रामलाल की पास बुक मे 12,500 रु. का जमा शेष है। अपनी रोकड़ बही से मिलान करने पर उसने पाया कि—

अ) 3,500 रु. के चैक बैंक में जमा कराये, परन्तु केवल 1,557 रु. के चैक ही संग्रहित किये जा सके।

ब) उसने 5,250 रु. के चैक लिखे परन्तु भुगतान के लिए केवल 1,250 रु. के चैक ही प्रस्तुत किये गये।

(स) बैंक व्यय के सम्बन्ध में पास बुक मे 59 रु. का लेखा किया गया जिसे रोकड़ बही में नही लिखा गया।

(द) बैंक द्वारा दिया गया ब्याज 159 रु. पास बुक के जमा पक्ष की ओर लिखा गया परन्तु इसका लेखा रोकड़ बही में नही किया गया।

(य) बैंक ने उसका जीवन बीमा प्रीमियम 115 रु. चुकाया जिसका लेखा रोकड़ बही में नही किया गया।

र) 90 रु. भूल से उसके खाते में नाम लिख दिये गये जो रामनाथ से सम्बन्धित थे।

Ram Lal found that on 31st December, 2005 his Pass Book showed a credit balance of Rs. 12,500 On comparing it with the Cash Book, he found that—

a) Cheques worth Rs. 3,500 were deposited but so far only those for Rs. 1,557 were cleared.

b) He had issued Cheques for Rs. 5,250, but cheques for Rs. 1,250 only were presented for payment.

c) Bank charges amounting to Rs. 59 were entered in the Pass Book but the same were not entered in the Cash Book.

d) Rs. 159 allowed as interest by Bank were entered in the Pass Book on the credit side of his account, but the same entry was not made in the Cash Book.

(e) The Bank paid Rs. 115 as permium on his policy, but even this was not entered in his Cash Book.

f) An amount of Rs. 90 has been debited to his account wrongly. It ought to have gone to the account of Ram Nath.

Prepare a Bank Reconciliation Statement from the above as on 31st December, 2005.

2.6 सारांश

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

जब रोकड़ बही के बैंक खाते और पास बुक के शेषों का मिलान नही होता है तो इसकी जाँच के लिए एक विवरण तैयार किया जाता है जिसे बैंक समाधान विवरण कहते है।

- व्यापारी द्वारा निर्गमित चैकों को भुगतान के लिये प्रस्तुत न करने पर, प्राप्त चैकों का संग्रह बैंक द्वारा न होने पर बैंक व्यय बैंक से प्राप्त ब्याज, ग्राहकों द्वारा सीधे बैंक को भुगतान इत्यादि कारणों से रोकड़ बही के बैंक खाते और पास बुक के शेष में अन्तर पाता है।
- बैंक समाधान विवरण चार विधियों से बनाया जाता है पहला रोकड़ बही मे बैंक खाते का डेबिट शेष रोकड बही में बैंक खाते का क्रेडिट शेष, तीसरी पास बुक का डेबिट शेष चौथी पास बुक का क्रेडिट शेष।

2.7 शब्दावली

बैंक समाधान विवरण, रोकड़ बही, पास बुक

●●●

अध्याय–3 अशुद्धियों का सुधार
(RECTIFICATION OF ERRORS)

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 अशुद्धियों के प्रकार
 3.2.1 बही खाते की अशुद्धि
 3.2.2 तलपट की अशुद्धि
3.3 अशुद्धियों का अन्तिम खाते पर प्रभाव
3.4 अशुद्धियों की खोज और उनका सुधार
 3.4.1 खाते बन्द करने से पूर्व अशुद्धि सुधार
 3.4.2 खाते बन्द करने के बाद अशुद्धि सुधार
 3.4.3 अन्तिम खाते बनाने के बाद अशुद्धि सुधार
3.5 अभ्यास के प्रश्न
3.6 सारांश
3.7 शब्दावली

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे -

1. अशुद्धियों के प्रकारों को समझा सकेंगे।
2. अशुद्धियों का अन्तिम खाते पर प्रभाव बता सकेंगे
3. अशुद्धियों की खोज कर उनमें सुधार कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

किसी भी व्यापार अथवा व्यवसाय के अन्तर्गत खाते इसलिए रखे जाते हैं कि उसे एक निश्चित अवधि में व्यवसाय के लेन-देनों के परिणामों की सूचना मिल सके तथा एक निश्चित तिथि को वह अपनी आर्थिक स्थिति से अवगत हो सके। सही सूचना के लिए खातों की शुद्धता आवश्यक है और ऐसा तलपट बनाकर जाना जाता है। परन्तु जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है, तलपट का मेल खाना इस तथ्य का अन्तिम और अचूक प्रमाण नहीं है कि खाते पूर्णरूपेण शुद्ध हैं। तलपट के मेल खाने का अभिप्राय है कि गणितीय दृष्टि से खाते शुद्ध हैं। परन्तु भूल करना मानवीय स्वभाव है और लेखापाल इसका अपवाद नहीं है। तलपट के मेल न खाने पर तो अशुद्धियों का होना यथार्थ है परंतु इसके मेल खाने पर भी बहियों में अनेक प्रकार की अशुद्धियों की सम्भावना बनी रहती है और इन अशुद्धियों का निवारण सही स्थिति प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक है। अतः लेखा-बहियों में पाई जाने वाली विविध प्रकार की अशुद्धियाँ, उनका निरूपण और सुधार तथा शुद्धि का प्रभाव, आदि का विवेचन निम्न किया जा रहा है।

3.2 अशुद्धियों के प्रकार

कुछ अशुद्धियों के होने पर तलपट मेल नहीं खाता तथा कुछ अशुद्धियों के होने पर भी तलपट मेल खा जाता है। इस दृष्टि से अशुद्धियों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. बही-खाते की अशुद्धियाँ (Errors of Book keeping);
2. तलपट की अशुद्धियाँ (Errors of Trial Balance)।

3.2.1 बही-खाते की अशुद्धियाँ

इसमें वह अशुद्धियाँ सम्मिलित की जाती हैं जो तलपट को प्रभावित भी कर सकती हैं तथा नहीं भी, इस प्रकार की अशुद्धियाँ प्रारम्भिक लेखा-वहियों में अशुद्ध अंकन करने, मूल पत्रों में अशुद्धि रहना (बीजक, जमा-पत्र आदि) के परिणामस्वरूप हो सकती हैं तथा प्रारम्भिक पुस्तकों में लेखा करते समय, खतौनी करते समय, शेष निकालते समय, अग्रेनयन करते समय हो सकती है। इस प्रकार अशुद्धियों को चार वर्गों में बाँटा जाता है:—

(अ) भूल की अशुद्धियाँ (Errors of Omission) — जब लेन-देनों की प्रविष्टि प्रारम्भिक पुस्तकों में करने से रह जाती है, तो इन्हे भूल की अशुद्धियाँ भी कहते हैं। जैसे रामेश्वर से 600 रु. का माल खरीदा परतु क्रय बही में लिखने से रह गया। इसका तलपट पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। कभी भूल आंशिक भी हो जाती है। जैसे मनोहर से 200 रु. का माल वापस आया परंतु विक्रय वापसी बही में 100 रु. ही लिखा गया। इसका प्रभाव भी तलपट पर नहीं पड़ता। क्योंकि विक्रय वापसी खाता 100 रु. से डेबिट होगा व मनोहर का खाता भी 100 रु. से क्रेडिट होगा अतः तलपट मिल जावेगा।

(ब) हिसाब की अशुद्धियाँ (Errors of Commission) — प्रारम्भिक वहियों से खाता बही में अशुद्ध खतौनी करना, योग लगाने, आकलन करने तथा शेष निकालने में अशुद्धि करना, आदि के कारण इस प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं, जिनसे तलपट प्रभावित होता भी है तथा नहीं भी। इनके कुछ उदाहरण निम्न हैं:—

(i) विक्रय बही का योग मास के अन्त में 100 रु. से अधिक लग गया। (तलपट प्रभावित होगा)

(ii) राम एजेंसी को माल बेचा तथा उनके खाते में क्रेडिट कर दिया गया। (तलपट प्रभावित होगा)

(iii) गनेश से प्राप्त रोकड़ गनेशन के खाते में जमा कर दी गई। (तलपट प्रभावित नहीं होगा)

(स) सिद्धांत की अशुद्धियाँ (Errors of Principle) — ऐसी अशुद्धि तब होती है जबकि जर्नल की प्रविष्टि करने के मौलिक सिद्धान्तों की उपेक्षा कर दी जाती है। जैसे मशीन क्रय करने पर क्रय खाते को डेबिट कर दिया जाना, पुरानी मशीन की मरम्मत का व्यय मशीन खाते में लिखा जाना, आदि तथा फर्नीचर बेचने पर विक्रय खाते को क्रेडिट कर दिया जाना, अशुद्धि है। ऐसी अशुद्धियाँ तभी तक होती हैं जब आयगत व पूँजीगत मदों में अन्तर स्पष्ट नहीं किया जाता है। ह्रास या डूबत ऋणों के लिए अपर्याप्त प्रावधान करना या न करना अदत्त दायित्व, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय, पेशगी प्राप्त आय, आदि के सम्बन्ध में समायोजन न करना भी इसी में सम्मिलित होता है। इनका तलपट पर प्रभाव नहीं पड़ता। परतु लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा, दोनों ही प्रभावित होते है।

(द) क्षतिपूरक अशुद्धियाँ (Compensating Errors) — ऐसी अशुद्धियाँ जो एक-दूसरे के प्रभाव को समाप्त कर देती है, क्षतिपूरक अशुद्धियाँ कहलाती हैं। इन अशुद्धियों के होने पर भी तलपट मिल जाता है और इन अशुद्धियों का पता कठिनाई से लग पाता है। उदाहरणार्थ राम के डेबिट में 200 रु.अधिक लिख दिये जावें और मोहन के क्रेडिट में 200 रु. अधिक लिख दिये जावें अथवा शर्मा के डेबिट में 200 रु. कम लिख दिये जावें तो तलपट मिल जावेगा परंतु अशुद्धियाँ बनी रहेगी।

3.2.2 तलपट की अशुद्धियाँ

तलपट बनाते समय जो त्रुटियाँ हो जाती है, उन्हे तलपट की अशुद्धियाँ कहते है और जिनके हो जाने पर तलपट मेल नहीं खाता। जैसे:—

(अ) किसी खाते के शेष का तलपट में लिखे जाने से रह जाना,

(ब) तलपट में खाते के शेष की राशि को गलत लिख देना,

(स) तलपट में कोई शेष गलत पक्ष में लिख देना,

(द) तलपट के दोनों पक्षों का योग गलत लगा देना,

अशुद्धियाँ एवं तलपट : उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कुछ अशुद्धियाँ तलपट को प्रभावित करती है और कुछ नहीं करती।

NOTES

ऐसी अशुद्धियो के उदाहरण जो तलपट पर प्रभाव नहीं डालती–

(अ) भूल की अशुद्धियाँ– 400 रु. की बिक्री विक्रय बही में बिल्कुल नहीं लिखी जाये।

(ब) सिद्धान्त की अशुद्धियाँ– मशीन खरीदने पर क्रय खाते में लिखा जाना, न कि मशीन खाते में।

(स) गलत खाते में परंतु सही पक्ष की ओर लिखना- राम को किया गया भुगतान रमन के खाते में डेबिट करदेना, बैंक से अप्रतिष्ठित बिल लौट कर आने पर व्यक्तिगत खाते के स्थान पर प्राप्य बिल खाते को डेबिट करना।

ऐसी अशुद्धियों के उदाहरण जो तलपट के योग को प्रभावित करते हैं–

(अ) खाते का शेष गलत निकालना।

(ब) खाते के गलत पक्ष की ओर खतौनी करना।

(स) खाते में गलत रकम की खतौनी।

(द) सहायक बहियों से कोई मद खतौनी से रह जाना।

(य) सहायक बहियों का योग गलत लग जाना।

(इ) सहायक बही का योग सम्बन्धित खाते में खतौनी से रह जाना।

(ई) तलपट में किसी खाते का शेष या योग शामिल न करना।

(उ) तलपट में योग रोकड़ बही का शेष शामिल करने मे भूल।

(ऊ) तलपट के गलत पक्ष मे शेष का लिखना।

(ए) तलपट का योग गलत लगाना।

Example 1

31 दिसम्बर 2006 को एक व्यापारी को मालूम हुआ कि उसका तलपट नहीं मिलता है। बाद में उसे निम्न अशुद्धियां मिलीं–

(1) सी को दिये हुए 100 रु. उसके खाते मे 10 रु. ही डेबिट हुए।

(2) 200 रु. का क्रय किया गया फर्नीचर क्रय खाते में दिखाया गया।

(3) राम को बेचे गये 500 रु. के माल की बहियों में कोई प्रविष्टि नही की गई।

(4) क्रय बही का योग 50 रु. से अधिक लगाया गया।

(5) मशीन की मरम्मत के 50 रु. दिये जो मरम्मत खाते में नहीं खताये गये।

(6) बिक्री बही का योग 300 रु. कम लगाया गया।

किन त्रुटियों के कारण तलपट नहीं मिला और उसके योग मे कितना अन्तर है?

A Merchant on taking out a trial balance as on 31st December, 2006 found that it did not agree Subsequently he discovered the following errors-

(1) Cash paid to C Rs. 100 was debited to his account as Rs. 10

(2) Purchases of Furniture Rs. 200 debited to Purchases Account

(3) Goods sold to Ram Rs. 500 was not entered in the books

(4) The total of Purchases Book was overcast by Rs. 50

(5) Repairs to machinery Rs. 50 was not posted to Repairs Accounts.

(6) The total of Sales Book was undercast by Rs. 300

Which of the errors caused the totals of the balance to disagree and by how much did the total differ?

Solution:

उपरोक्त अशुद्धियों का तलपट पर निम्न प्रभाव पड़ेगा--

(1) सी का खाता 100 रु. के स्थान पर 10 रु. से ही डेबिट हुआ। अतः उसके खाते के डेबिट पक्ष में 90 रु. कम है। इसलिए तलपट का डेबिट योग 90 से कम है।

(2) इस अशुद्धि का तलपट के योग पर प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि यह सिद्धान्त की अशुद्धि है और रकम सही पक्ष में लिखी गई है, यद्यपि खाता गलत है।

(3) इस अशुद्धि का भी तलपट के योग पर प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि इसका लेखा बहियों में किया ही नहीं गया है। न तो 500 रु. डेबिट हुए और न ही क्रेडिट।

(4) क्रय वही का योग 50 रु. से अधिक लगाने से क्रय खाते में 50 रु. से अधिक डेबिट हुए। अतः तलपट के डेबिट पक्ष का योग 50 रु. अधिक है।

(5) मरम्मत के 50 रु. मरम्मत खाते में नहीं लिखने से मरम्मत खाते की डेबिट पक्ष 50 रु. होगी और तलपट में भी डेबिट पक्ष 50 रु. कम हुआ।

(6) बिक्री बही का योग 300 रु. कम लगने से बिक्री खाते के क्रेडिट पक्ष में 300 रु. कम हुए व तलपट का क्रेडिट पक्ष भी 300 रु. कम हुआ।

इन सबका सम्मिलित परिणाम यह होगा कि तलपट का क्रेडिट पक्ष 300 रु. से कम हुआ तथा डेबिट पक्ष 90 रु. से कम हुआ। अर्थात् तलपट का डेबिट योग क्रेडिट योग से 210 रु. अधिक होगा।

NOTES

3.3 अशुद्धियों का अन्तिम खातों पर प्रभाव (Effect of Errors on the Final Accounts)

अशुद्धियों के सुधार का प्रभाव अन्तिम खातों पर, अर्थात् लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठे पर भी पड़ता है। यदि अशुद्धि ऐसे खातों से सम्बन्धित है जो व्यापारिक व लाभ-हानि खाते में ले जाते हैं जैसे प्रारम्भिक रहतिया क्रय, मजदूरी, विक्रय, अन्तिम रहतिया, वेतन, कमीशन, किराया, ह्रास, आदि, तो इनका प्रभाव सकल तथा शुद्ध लाभ पर पड़ता है। यदि इन खातों को भूल से अधिक राशि से डेबिट कर दिया जाता है तो सकल लाभ कम लाभ अधिक दिखाया जाता है। अशुद्धि-सुधार के परिणामस्वरूप शुद्ध लाभ क्रमशः अधिक व कम हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि अशुद्धि ऐसे खाते से सम्बन्धित है जो चिट्ठे में दिखाये जाते है, जैसे देनदार, मशीन, पूँजी आदि तो फिर लाभ-हानि खाता प्रभावित न होकर चिट्ठा ही प्रभावित होता है। कभी-कभी अशुद्धियाँ दो खातों को प्रभावित करती हैं जिनमें से एक लाभ-हानि खाते में तथा दूसरा चिट्ठे में बताया जाता है, तो इसका प्रभाव लाभ-हानि खाते के साथ-साथ चिट्ठे पर भी होता है। दूसरे शब्दों में कुछ अशुद्धियाँ केवल लाभ-हानि खाते को ही प्रभावित करती है, कुछ केवल चिट्ठे को जबकि कुछ अशुद्धियाँ लाभ-हानि खाते व चिट्ठे, दोनों को प्रभावित करती है।

Example-2

एक व्यापारी ने तलपट का जोड़ मिलाकर अन्तिम खाते बना लिये। बाद में निम्न अशुद्धियां ज्ञात हुईं। इनका अन्तिम खातों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

1. विक्रय वापसी बही का जोड़ 300 रु. अधिक लगा दिया गया।
2. कटौती के 100 रु. दिए जो कटौती खाते के क्रेडिट में लिख दिए गए।
3. मरम्मत के 100 रु. चुकाए जो मरम्मत खाते में 10 रु. खताये गए।
4. राम से 200 रु. प्राप्त हुये जो बिक्री खाते के क्रेडिट में लिखे गये।
5. फर्नीचर के 500 रु. को क्रय बही में लिखा गया।
6. विक्रय बही का योग 2,565 रु. के स्थान पर 1,565 रु. आगे ले जाया गया।

Solutions:

NOTES

अन्तिम खातों पर अशुद्धियों का प्रभाव

अशुद्धि संख्या	व्यापारिक तथा लाभ-हानि खाते पर प्रभाव	चिट्ठे पर प्रभाव
1	सकल तथा शुद्ध लाभ 300 रु. से कम दिखाया गया है।	पूँजी 300 रु. से कम दिखाई गई है।
2	शुद्ध लाभ 200 रु. से अधिक बताया गया है।	पूँजी 200 रु. से अधिक दिखाई गई है।
3	शुद्ध लाभ 90 रु. से अधिक बताया गया है।	पूँजी 90 रु. से अधिक दिखाई गई है।
4	सकल तथा शुद्ध लाभ 200 रु. से अधिक दिखाया गया है।	पूँजी तथा देनदार 200 रु. से अधिक दिखाई गये है।
5	सकल तथा शुद्ध लाभ 500 रु. से कम दिखाया गया है।	पूँजी तथा फर्नीचर 500 रु. से कम दिखाये गये हैं।
6	सकल तथा शुद्ध लाभ 1,000 रु. से कम दिखाया गया है।	पूँजी 1,000 रु. से कम दिखाई गई है।

इन सब अशुद्धियों के परिणामस्वरूप लाभ-हानि खाते में शुद्ध लाभ 1,310 रु. से कम दिखाया गया है, चिट्ठे में पूँजी 1,310 रु. से कम तथा सम्पत्ति पक्ष की ओर देनदार 200 रु. से अधिक तथा फर्नीचर 500 रु. कम दिखाई गए हैं।

3.4 अशुद्धियों की खोज और उनका सुधार (Location of Errores and their Rectification)

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, सही लाभ का ज्ञान प्राप्त करने तथा सही आर्थिक स्थिति जानने के लिये समस्त अशुद्धियों का पता लगाया जाना चाहिये तथा अन्तिम खाते बनाने के पूर्व उनका सुधार भी किया जाना आवश्यक है; क्योंकि ये हमारे अन्तिम खातों को प्रभावित करती है।

तलपट के सही मिलने पर समस्त लेखा-कार्य की प्रारम्भ में जाँच की जाती है। पहले तलपट के दोनों पक्षों के योग की जाँच की जाती है, फिर खातों को ठीक प्रकार से तलपट में शामिल किया गया है अथवा नहीं, देखा जाता है। खातों के योग तथा उनके शेषों की सत्यता की जाँच, प्रारम्भिक लेखा-पुस्तकों से खाता-बही में खतौनी की जाँच, गत वर्ष के शेषों की जाँच, आदि करके अशुद्धियों का पता लगाया जाता है।

अशुद्धियों को सुधारने के लिए काट-छाँट नहीं किया जाना चाहिए अन्यथा बहियों की प्रामाणिकता पर अविश्वास किया जाने लगता है। यदि अंकणों में काट-छाँट करना आवश्यक हो हो जाये तो उन्हें काटकर शुद्ध संख्या ऊपर लिख देनी चाहिए तथा किसी उच्च अधिकारी के हस्ताक्षर करवा लेने चाहिये

बोध प्रश्न

1. अशुद्धियों से आप समझते हो?

....

....

2. अशुद्धियों के प्रकार बताइये।

....

....

3. भूल चूक खाते से आप क्या समझते हो?

....

....

....

NOTES

अशुद्धि-सुधार की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होती है :

3.4.1 खाते बन्द करने से पूर्व अशुद्धि-सुधार

यदि खाते बन्द करने से पूर्व ही अशुद्धि का पता लग जाता है तो प्रभावित खाते में सही प्रविष्टि कर अशुद्धि-सुधार कर दिया जाता है। जैसे माधव कृष्ण को 500 रु. का माल बेचा परंतु उसके खाते में 50 रु. से ही खतौनी की गई तो माधव कृष्ण के खाते में 450 रु. और डेबिट कर दिया जाएगा–

Madhav Krishna

			Rs.				Rs.
	To Sales Posted at Rs. 50 in place of Rs. 500		450				

या 50 रु. को काटकर 500 रु. कर दिया जायेगा तथा उच्च अधिकारी के हस्ताक्षर करा दिये जायेंगे। ऐसा तब किया जाना चाहिए। जब काट-छाँट अधिक स्थानों पर नहीं करना पड़े। वैसे काट-छाँट करना उचित नहीं है।

3.4.2 खाते बंद करने के बाद अशुद्धि-सुधार

खाते बन्द करने के बाद यदि तलपट मेल नहीं खाता है तो अशुद्धियों का पता लगाने का पूरा प्रयास किया जाता है। यदि अशुद्धियों का पता अन्तिम खाते बनाने से पूर्व लग जाता है तो उनका सुधार इस प्रकार किया जाता है–

(अ) एक-पक्षीय अशुद्धि होने पर– सम्बन्धित खातों को डेबिट या क्रेडिट करके सुधार किया जाता है जैसे (i) राम, रामेश्वर व रमेश को क्रमशः 700, 900 व 600 रु. का माल बेचा तथा रमेश को की गई बिक्री उसके खाते में 500 रु. से लिखी गई यहाँ Sales Account में 2,200 रु. (700+900+600) क्रेडिट किया गया है तथा राम, रामेश्वर व रमेश के खातों में क्रमशः 700,900 व 500 रु. डेबिट किया गया है। अतः रमेश को 100 रु. से और डेबिट कर दिया जायेगा।

Ramesh

			Rs.				Rs
	To Sales under-posted		100				

(ii) क्रय बही का योग 12,627 रु. के स्थान पर 12,657 रु. लग जाने पर क्रय खाता प्रभावित होगा क्योंकि इसे 30 रु. से अधिक डेबिट कर दिया गया है अतः सुधार हेतु क्रय खाते को 30 रु. से क्रेडिट कर दिया जाएगा।

Purchases A/c

			Rs.				Rs
					By Total of Purchases Book overcast on page...		30

(ब) द्वि-पक्षीय अशुद्धि होने पर– जैसा ऊपर स्पष्ट किया गया है, इस प्रकार की अशुद्धियाँ प्रारम्भिक

NOTES

बहियों में लेखा न करना अर्थात् भूल करने, अशुद्ध लेखा करने, अशुद्ध खाते में खतौनी करने तथा सिद्धान्त की अवहेलना करने से हुआ करती है। इनकी सुधार प्रक्रिया नीचे समझाई गई है—

(i) **भूल सम्बन्धी अशुद्धियाँ** (Errors of Omission) – जिस तथ्य के सम्बन्ध में लेखा करने में भूल हो जाती है, द्वि-प्रविष्टि पद्धति के अनुसार उसका नये सिरे से लेखा कर दिया जाता है। जैसे प्रियदर्शी से 150 रु. का माल वापस प्राप्त हुआ और लेखा-पुस्तकों में नहीं लिखा गया। अब इसकी प्रविष्टि निम्न होगी—

			Rs.	Rs.
	Sales Returns a/c Dr.		150	
	To Priyadarshi			150
	(Goods returned by Priyadarshi not recorded in the books)			

(ii) **अशुद्ध लेखा करने की अशुद्धियाँ** (Errors of Recording) – लेन-देन का लेखा तो करना परंतु कम या अधिक राशि से। जैसे श्याम प्रकाश से 1,350 रु. का माल खरीदा जो क्रय बही में 1,300 रु. लिखा गया। परिणामस्वरूप क्रय खाता 50 रु. से कम डेबिट तथा श्याम प्रकाश का खाता 50 रु. से कम क्रेडिट किया गया है। अतः इन दोनों खातों को क्रमशः 50 रु. से डेबिट व क्रेडिट कर दिया जायेगा।

			Rs.	Rs.
	Purchases a/c Dr.		50	
	To Shyam Prakash			50
	(Purchases form Shyam Prakash for Rs. 1,350 recorded as Rs. 1,300 now rectified)			

(iii) **गलत खाते में खतौनी करने की अशुद्धियाँ** (Errors of Posting to Wrong Account) — इस प्रकार की अशुद्धियाँ खाते में (क) गलत राशि से सही पक्ष की ओर, (ख) सही राशि से परंतु गलत पक्ष की ओर, (ग) सही पक्षों की ओर परंतु गलत राशि से, तथा (घ) गलत राशि से गलत पक्ष की ओर खतौनी करने के परिणामस्वरूप हुआ करती है। जैसे— गोटावाला एण्ड कम्पनी को 550 रु. का माल बेचा जिसे कोटावाला एण्ड कम्पनी के खाते में लिख दिया गया। यहाँ विक्रय बही में शुद्ध लेखा किये जाने से विक्रय खाता शुद्ध है परंतु गोटावाला एण्ड कम्पनी को डेबिट नहीं किया गया तथा कोटावाला एण्ड कम्पनी को डेबिट कर दिया गया। फलतः गोटावाला एण्ड कम्पनी को डेबिट तथा कोटावाला एण्ड कम्पनी को क्रेडिट किये जाने से दोनों खाते ठीक हो जायेंगे। सुधार प्रविष्टि इस प्रकार होगी—

			Rs.	Rs.
	Gotawala & Co. Dr.		550	
	To Kotawala & Co			550
	(Sales of Rs. 550 to Gotawala & Co. wrongly posted to Kotawala & Co. now rectifiled.)			

यदि गोटावाला एण्ड कम्पनी को की गई 550 रु. की बिक्री की खतौनी कोटावाला एण्ड कम्पनी के क्रेडिट में 500 रु. से कर दी जाय तो फिर कोटावाला एण्ड कम्पनी को 500 रु. से क्रेडिट किया जायेगा (क्योंकि गलत क्रेडिट किया गया) तथा गोटावाला एण्ड कम्पनी को 550 रु. से डेबिट किया जायेगा (क्योंकि इसे डेबिट नहीं किया गया) सुधार-लेखा इस प्रकार होगा—

Kotawala & Co.

						Rs.
				By Sales to Gotawala & Co. wrongly credited to this Account		500

Gotawala & Co.

	To Sales wrongly posted to Kotawala & Co.		Rs. 550				

इसके अन्तर्गत हमें अशुद्ध लेखे के प्रभाव को समाप्त करने तथा शुद्ध लेखा करने के सम्बन्ध में आवश्यक प्रविष्टियाँ करनी होती हैं।

NOTES

(iv) **सिद्धान्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ** (Errors of Principle) — लेखा-कार्य के सिद्धान्तों की अवहेलना करने के परिणामस्वरूप इस प्रकार की अशुद्धियाँ होती है जो दो खातों को प्रभावित करती हैं तथा लाभ-हानि खाता व चिट्ठा, दोनों ही अशुद्ध होते है। सम्पत्ति को खरीदने के व्यय तथा लागत से सम्पत्ति खाता डेबिट किया जाना चाहिए, न कि व्यय खाता तथा क्रय खाता। इसी प्रकार बेचने पर भी सम्पत्ति खाता क्रेडिट किया जाना चाहिए, न कि विक्रय खाता। जैसे—

(क) कार्यालय भवन के निर्माण पर 2,000 रु. मजदूरी के चुकाये जो मजदूरी खाते में डेबिट कर दिये गये। यह व्यय सम्पत्ति पर किया गया है अतः भवन खाते में डेबिट होना चाहिए। सुधार प्रविष्टि अग्र होगी

			Rs.	Rs.
	Buildings Account Dr.		2,000	
	To Wages Accounts			2,000
	(Wages paid on the construction of Office Building wrongly debited to Wages a/c, now rectified.			

(ख) टाइपराइटर को बेचने से 500 रु. आये जो विक्रय बही में लिख दिये गये। यह माल की बिक्री न होकर एक सम्पत्ति की बिक्री है। अतः सम्पत्ति खाते में क्रेडिट किया जाना चाहिए, न कि बिक्री खाते में। सुधार प्रविष्टि निम्न होगी—

			Rs.	Rs
	Sales Account Dr.		500	
	To Office Equipments a/c			500
	(Typewriter sold was wrongly entered in the sales book, now corrected.)			

3.3 अन्तिम खाते बनाने के बाद अशुद्धि सुधार

तलपट के नहीं मिलने पर अशुद्धियों की खोज की जाती है। परंतु पर्याप्त प्रयत्न करने के बाद भी यदि अशुद्धियों का पता नहीं लग पाता तो अधिक समय तक अन्तिम खाते बनाने के कार्य को स्थगित नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में तलपट के योग को बराबर करके अन्तिम खाते बना लिए जाते है। तलपट के योग को बराबर करने के लिए एक खाता खोला जाता है। जिसे 'भूल-चूक खाता' 'उदरत खाता' या 'उचन्ती खाता' (Suspense Account) कहते है। यदि तलपट के डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष के योग से कम होता है तो Suspense Account को डेबिट किया जाता है तथा इसे तलपट के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है। इसके विपरीत तलपट का क्रेडिट पक्ष का योग कम होने पर Suspense Account को क्रेडिट किया जाता है। अन्तिम खाते बनाते समय इस (Suspense Account) को चिट्ठे में डेबिट शेष होने पर सम्पत्ति पक्ष की ओर तथा क्रेडिट शेष होने पर दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जाता है। अगले वर्ष अशुद्धियों की खोज चालू रहेगी तथा उनके पता लगने से Suspense Account डेबिट तथा क्रेडिट होता जाता है। अन्त में सभी अशुद्धियों के मिल जाने पर Suspense Account स्वतः ही बंद हो जाता है।

अगले वर्ष समस्त अशुद्धियों के सुधार के लिए जर्नल प्रविष्टि की जायेगी। प्रविष्टि करने से पूर्व हमें दो बातें देखनी चाहिए— एक तो यह कि सही प्रविष्टि क्या होनी चाहिए, दूसरे कि वास्तव में प्रविष्टि क्या की गई

है। सुधार करने के लिए दो प्रविष्टियाँ करनी होंगी- एक तो अशुद्ध प्रविष्टि जो वास्तव में की जा चुकी है उसके प्रभाव को समाप्त करने के लिए विपरीत प्रविष्टि तथा दूसरी सही प्रविष्टि जो करनी थी परंतु की नहीं गई। व्यावहारिक रूप में दोनों प्रविष्टियों को मिलाकर एक ही प्रविष्टि की जाती है। जैसे दिवाकर को 500 रु. का माल बेचा जिसे विक्रय वापसी बही में लिख दिया गया, इसमें दो बातें सम्मिलित हैं— एक तो विक्रय को विक्रय वापसी पुस्तक में लिखा जाना तथा दूसरा विक्रय वापसी पुस्तक से दिवाकर के खाते में क्रेडिट किया जाना (क्योंकि क्रय वापसी पुस्तक की खतौनी व्यक्ति के खाते से क्रेडिट पक्ष में होती है। अतः जो दो प्रविष्टियाँ इस सम्बन्ध में सुधार के लिए की जायेगी, अग्रलिखित प्रकार से होंगी—

(अ) सही प्रविष्टि जो होनी चाहिये—

			Rs.	Rs.
	Diwakar a/c Dr.		500	
	To Sales a/c			500

(ब) अशुद्ध प्रविष्टि के प्रभाव को समाप्त करने के लिए विपरीत प्रविष्टि—

			Rs.	Rs.
	Diwakar Dr.		500	
	To Sales Returns a/c			500

अब वास्तव में इन दोनों प्रविष्टियाँ के स्थान पर अशुद्धि-सुधार के लिए एक ही प्रविष्टि की जावेगी, जो इस प्रकार होगी :—

			Rs.	Rs.
	Diwakar Dr.		1,000	
	To Sales a/c			500
	To Sales Returns a/c			500
	(Sales of Rs. 550 wrongly entered in Sales Returns Book, now corrected.)			

Example-3

एक लेखापाल के तलपट में 165 रु. का अन्तर है वह इस राशि से भूल-चूक खाते को डेबिट कर देता है। जाँच करने पर निम्न त्रुटियाँ मालूम हुई—

(अ) 55 रु. विक्रय वापसी बही का जोड़ क्रय वापसी खाता में क्रेडिट कर दिया गया।

(ब) जयराम के खाते का क्रेडिट की ओर जोड़ 10 रु. से अधिक लगा दिया गया।

(स) जदुनाथ के 150 रु. डूबत ऋण के डूबत ऋण खाते के डेबिट की ओर नहीं लिखे।

(द) 140 रु. घनश्याम से प्राप्त रोकड़ पुस्तक में ठीक लिख लिए गये, परंतु उनके व्यक्तिगत खाते में केवल 40 रु. ही खताए गए।

(इ) विक्रय पुस्तक का जोड़ 5 रु. कम था।

त्रुटियों को सुधारने के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये व भूल-चूक खाता बंद कीजिये।

A book-keeper finds that the totals of his trial balance disagree by Rs. 165. He temporarily debits a Suspense Account with this amount and closes the books. On an examination of the books, the following errors are discovered-

(a) Rs. 55, the total of Sales Returns Book, has been posted to the credit of the Purchases Returns Account.

(b) The total of the credit of Jai Ram's Account has been added up Rs. 10 too much.

(c) An item of Rs. 150 written off as a bad debt from Jadunath's Account has not been debited to Bad debts a/c.

(d) A receipt of Rs. 140 from Ghanshaym has been entered in the Cash Book correctly but has posted to the personal account as Rs. 40 only.

(e) Sales Book is undercast by Rs. 5.

Give Journal entries to rectify the errors. Close the Suspense Account also.

NOTES

Solution:

Journal

				Dr.	Cr.
				Rs.	Rs.
(a)	Sales Returns a/c	Dr.		55	
	Purchases Returns a/c	Dr.		55	
	To Suspense a/c				110
	(Total of the Sales return book posted to Purchases Returns a/c wrongly, now rectified.)				
(b)	Jai Ram	Dr.		10	
	To Suspense a/c				10
	(Overcasting of the credit side, now rectified)				
(c)	Bad Debts a/c	Dr.		150	
	To Suspense a/c				150
	(Bad Debts of Jadunath not posted to Bad Debts a/c, now posted.)				
(d)	Suspense a/c	Dr.		100	
	To Ghanshyam				100
	(Received Rs. 14 posted as Rs. 4, now rectified.)				
(e)	Suspense a/c	Dr.		5	
	To Sales a/c				5
	(Sales book undercast, now corrected.)				
	Total Rs.			375	375

Suspense Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	165	By Purchases Returns a/c	55
To Ghanshyam	100	By Sales Returns a/c	55
To Sales a/c	5	By Jai Ram	10
		By Bad Debts a/c	150
	270		270

Example 4.

तलपट तैयार करते समय लेखापाल को ज्ञात हुआ कि उसके मिलान में 1,731 रु. का अन्तर है। अन्तिम खाते शीघ्र तैयार करने के विचार से उसने अन्तर को एक नये उचन्ती खाते में लिख दिया, जिसका शेष आगामी वर्ष ले जाया जायेगा। अगले वर्ष निम्न भूलें मालूम हुईं :—

(i) एक व्यापारी से 531 रु. का माल खरीदा था परन्तु उसके खाते में क्रेडिट 555 रु. लिये गये।

(ii) एक 200 रु. का अप्रतिष्ठित प्राप्य बिल, जो कि बैंक से वापस आया, बैंक खाते में क्रेडिट करके प्राप्य बिल खाते में डेबिट कर दिया।

(iii) एक ग्राहक से 1,062 रु. का माल वापस आया जिसे उसके खाते में डेबिट कर दिया।

(iv) एक मशीन 260 रु. की बची थी जिसे विक्रय खाते में लिखा गया।

(v) एक व्यापारी हमारा 600 रु. का देनदार था, परंतु तलपट में उसका नाम लिखना भूल गये।

(vi) एक लेनदार से 231 रु. कटौती प्राप्त हुई जिसे उसके खाते में तो लिख दिया परंतु कटौती खाते में लिखना भूल गये।

उपरोक्त के सुधार की प्रविष्टियाँ लिखकर उचन्ती खाता खोलिए।

NOTES

On preparation of Trial Balance an accountant finds that there is a difference of Rs. 1,731 in the Trial Balance. Being in hurry to prepare final accounts he posts the difference to a newly opened Suspense Accounts. In the subsequent year the following errors were located:-

(i) Purchases of Rs. 531 from a trader were posted to the credit of his account at Rs. 555.

(ii) A dishonoured bill for Rs. 200 returned by the Bank was credited to Bank Account and devited to B/R Account

(iii) Goods returned by a customer Rs. 1,062 were debited in his Personal account.

(iv) Sale proceeds of a machinery Rs. 260 were entered in the Sales Account.

(v) Account of a Debtor for Rs. 600 was omitted from the Trial Balance.

(vi) Rs. 231 discount received from a creditor, was entered in his account but omitted to be posted in the discount account.

Pass Journal entries to rectify the above errors and open the Suspense Account.

Solution :

Journal

	Particulars	L. F.	Dr. Amount Rs. P.	Cr. Amount Rs. P.
(i)	Merchant a/c Dr. To Suspense a/c (Purchases of Rs. 531 posted to his credit as Rs. 555, now corrected.)		24	24
(ii)	Acceptors a/c Dr. To B/R a/c (Dishonoured Bill wrongly debited to B/R a/c, now rectified.)		200.00	200.00
(iii)	Suspense a/c Dr. To Customer's a/c (Sales Returns of Rs. 1,062, wrongly posted to debit of customer, now rectified.)		2,124	2,124
(iv)	Sales a/cDr. To Machinery a/c (Machinery sold wrongly credited to Sales a/c, now corrected.)	260.00		260.00
(v)	Debtor's a/c Dr. To Suspense a/c (Debtor's amounted omitted from the Trial Balance now corrected.)		600.00	600.00
(vi)	Suspense a/c Dr. To Discount a/c (Discount allowed by a creditor, not posted now rectified.)		231	231
	Total	3.439	3.439	

(v) अशुद्धि तलपट की अशुद्धि है। इसकी खतौनी सिर्फ Suspenses Account में ही होगी।

Suspense Account

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Customer's a/c	2,124.00	By Balance b/d	1731.00
To Discount	231.00	By Merchanr's a/c	24.00
		By Debtors	600.00
	2,355.00		2,355.00

नोट– प्रश्न में यह नहीं बताया गया है कि व्यापारी ने 1,731 रु. के अन्तर को उचन्ती खाते (Suspense Account) में डेबिट की ओर लिखा या क्रेडिट की ओर। अतः पहले Suspense Account कच्चा तैयार किया जायेगा तथा अशुद्धि सुधार की सभी प्रविष्टियों की खतौनी करने के बाद इसके डेबिट या क्रेडिट शेष का पता चलेगा।

Example-5

आपको एक तलपट दिया गया है जिसमें अन्तर है। इसे उचन्ती खाते में डेबिट कर दिया गया है निम्नलिखित अशुद्धियाँ ज्ञात हुई–

(i) टाइपराइटर की खरीद के लिए 135 रु. चुकाये गये और इस राशि को कार्यालय व्यय खाते में लिखा गया।

(ii) राजेन्द्र को 166 रु. का लाभ बेचा, जिसे विक्रय पुस्तक में ठीक लिखा गया परंतु राजेन्द्र के खाते में 176 रु. खताये गये। माह की कुल बिक्री 100 रु. से अधिक दिखाई गई

(iii) ज्ञान ने 130 रु. का माल वापिस किया, जिसे बिक्री पुस्तक में लिख दिया गया, जहाँ से इसे ज्ञान के व्यक्तिगत खाते के क्रेडिट पक्ष में खता दिया गया।

(iv) विक्रय वापसी बही का योग 100 रु. से अधिक दिखाया गया और उसी पुस्तक के एक पृष्ठ का योग, 1,730 रु. के स्थान पर 1,703 रु. आगे ले जाया गया।

(v) 124 रु. का माल बेचा, जिसे 20 दिसम्बर को बृजेन्द्र के खाते में डेबिट कर दिया गया। उससे यह माल 24 तारीख को वापिस कर दिया, जिसे 31 दिसम्बर को अन्तिम स्टॉक में शामिल कर लिया गया। इसकी पुस्तक में कोई प्रविष्टि नही हुई।

(vi) हरि से 160 रु. का बिल प्राप्त हुआ, जिसे देय बिल खाता और हरि के खाते के क्रेडिट पक्ष में खाता दिया गया।

आवश्यक सुधारों की जर्नल प्रविष्टि कीजिए तथा उचन्ती खाता तैयार कीजिए।

Journal

			Dr.	Cr.
			Rs	Rs
(i)	Typewriter a/c Dr To Office Expenses a/c (Cost of Typewriter wrongly debited to Office Expenses a/c, now corrected.)		135	135
(ii) (a)	Suspense a/c Dr To Rajendra (Sales of Rs. 166 to Rajendra, wrongly posted to his a/c Rs. 176, now rectifid.)		10	10
(b)	Sales a/c Dr To Suspense a/c (Sales book was overcasted, now corrected.)		100	100

NOTES

(iii)	Sales a/c Dr. Sales Returns a/c Dr. To Suspense a/c (Correction of sales return which was entered in sales book.)		130 130	 260
(iv)	Suspense a/c Dr. To Sales Return a/c (Correction of errors in Sales Return Book.) Rs. viz. (a) Excess addition 100 (b) Less Short carry forward 27 73		73	 73
(v)	Sales Returns a/c Dr. To Brijendra (Goods returned by Brijendra not entered in the book, now entered.)		124	 124
(iv)	B/P a/c Dr. B/R a/c Dr. To Suspense a/c (Correction of bill entered in B/P account instead or B/R account.)		160 160	 320

यहाँ प्रश्न में यह तो दिया गया है कि तलपट के अन्तर को उचन्ती खाते में डेबिट कर दिया गया है परतु यह नही दिया गया है कि अन्तर कितना है। अतः पहले यह मानकर कि समस्त अशुद्धियों का पता लग चुका है, कच्चा (Suspense Account) बनाकर यह पता लगाया जायेगा कि अन्तर किस ओर रखा जायेगा।

Suspense Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	597	By Sales a/c	100
To Rajendra	10	By Sales a/c	130
To Sales Returns a/c	73	By Sales Returns a/c	130
		By B/P a/c	160
		By B/R a/c	160
	680		680

Suspense a/c का शेष पता लगाने से पूर्व समस्त खतौनी करने से क्रेडिट में 680 रु. तथा डेबिट म 83 रु. आये। अत. खाते का शेष भी 597 रु. (680 − 83) डेबिट हुआ।

Exapmple 6

आनन्द एण्ड सन्स की बहियों से जाँच करने पर निम्न अशुद्धियों का पता लगा। इन्हे शुद्ध करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये-

(i) व्यापार के स्वामी ने अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए 200 रु. निकाले जो यात्रा व्यय खाते में डेबिट कर दिये गये।

(ii) रमेश से 300 रु. का माल खरीदा परन्तु इसका लेखा विक्रय पुस्तक मे कर दिया गया।

(iii) दिनेश से 50 रु. प्राप्त हुये लेकिन गलती से गणेश के खाते मे क्रेडिट कर दिये।

(iv) मोहन को दिये वेतन के 200 रु. इसके व्यक्तिगत खाते मे डेबिट कर दिये।

(v) दुकान की इमारत के विस्तार का एक बिल 2,700 रु. का ठेकेदार को चुकाया जो मरम्मत खाते मे डेबिट कर दिया गया।

(vi) रहीम बक्स का 300 रु. चैक अप्रतिष्ठित होकर वापिस आ गया लेकिन गलती से अलाउन्स खाते में डेबिट हो गया।

(vii) मैसर्स सी. ब्रादर्स ने 150 रु. का माल लौटाया लेकिन इसकी बहियों में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

(viii) मशीनरी की मरम्मत पर 500 रु. खर्च हुए जिसे मशीनरी खाता में डेबिट कर दिया।

(ix) प्लान्ट लगाने के 550 रु. मजदूरी दी। इसे मजदूरी खाते में दिखाया।

(x) लालाराम से प्राप्त 75 रु. का चैक टीकाराम के खाते में जमा कर दिया और बैंक खाते के स्थान पर रोकड़ खाता डेबिट कर दिया।

The following errors were detected in the accounts of Anand & Sons. Give journal entries to rectify them.

(i) The proprietor withdrew Rs. 200 for his personal use were debited to Travelling expenses account.

(ii) Goods for Rs. 300 were purchased from Ramesh, but the same was entered in the Sales Book.

(iii) Received Rs. 50 from Dinesh, but the same was wrongly credited to Ganesh.

(iv) Paid Rs. 200 as salaries to Mohan but that amount was debited to his personal account.

(v) Rs. 2,700 was paid to a contractor for the extension of the buildings of the shop, but the same was debited to repairs account.

(vi) A cheque for Rs. 300 received from Rahim Bux returned dishonoured but wrongly debited to allowances a/c.

(vii) Goods worth Rs. 150 returned by M/s. C. Bros. were received in the stores but no entry was made in the Books.

(viii) Rs. 500 spent on Repairs of Machinery was debited to the Machinery Account.

(ix) Rs. 550 paid for wages for errection of a plant were entered into the Wages Account.

(x) TikaRam's account was credited in respect of a cheque of Rs. 75 received from Lala Ram and debited to cash account instead of Bank Account.

Solution :

Journal

				Rs.	Rs.
(i)	Drawings a/c	Dr.		200	
	To Travelling Expenses a/c				200
	(Drawings were wrongly posted to travelling expenses account.)				
(ii)	Sales a/c	Dr		300	
	Purchases a/c	Dr		300	
	To Ramesh				600
	(Purchases from Ramesh was wrongly recorded as sales, now rectified.)				
(iii)	Ganesh	Dr.		50	
	To Dinesh				50
	(Cash Received from Dinesh was wrongly posted to Ganesh's a/c, now corrected.)				
(iv)	Salaries a/c	Dr		200	
	To Mohan				200
	(Salaries paid to Mohan was wrongly debited to his personal a/c, now corrected.)				
(v)	Building a/c	Dr		2,700	
	To Repairs a/c				2,700

NOTES

	(A bill for extention in Building was wrongly charged to Repairs a/c, now rectified.)			
(vi)	Rahim Bux Dr. To Allowances a/c (A Dishonoured cheque was wrongly debited to Allowance a/c instead of personal a/c, now corrected.)		300	300
(vii)	Sales Returns a/c Dr. To C Bros. (Sales Return was not entered, now entered.)		150	150
(viii)	Repairs a/c Dr. To Machinery a/c (Repairs wrongly debited to Machinery a/c, now rectified.)		500	500
(ix)	Plant a/c Dr. To Wages a/c (Capital expenditure on Plant was wrongly debited to Wages a/c, now rectified.)		550	550
(x) (a)	Tika Ram Dr. To Lala Ram (Cheque received from Lala Ram was wrongly credited on Tika Ram, now corrected.)		75	75
(b)	Bank a/c Dr. To Cash a/c (Rectification of wrong debit to Cash a/c instead of Bank a/c for cheque received,)		75	75

Example 7

निम्न अशुद्धियों को सुधारने के लिये प्रविष्टियाँ दीजिए।

(i) पी. से क्रय किया गया 258 रु. का माल क्रय बही में 2 रु. 58 पै. लिखा गया।

(ii) आर. को 248 रु. का बेचा गया माल क्रय बही में 428 रु. लिखा गया।

(iii) एस. से 75 रु. उसे उधार दी हुई रकम पर व्याज के रूप में प्राप्त हुए जो एस. के खाते में क्रेडिट किये गये।

(iv) टी. को 200 रु. वेतन के दिये जो उसके व्यक्तिगत खाते में डेबिट कर दिये गये।

(v) एच. से 123 रु. का माल खरीदा परन्तु विक्रय पुस्तक में लिखा गया।

(vi) डी. को 500 रु. का माल बेचा परन्तु क्रय पुस्तक में लिखा गया।

Give entries to rectify the following errors

(i) Goods bought from P for Rs. 258 was entered in the Purchases as Book Rs. 2.58.

(ii) Goods sold to R for Rs. 248 is passed through the Sales Book as Rs. 428.

(iii) Cash Received Rs. 75 from S for Interest on Loan given to him is credited to S's account

(iv) Salary paid to T. Rs. 200 is debited to T's a/c

(v) Goods purchased worth Rs. 123 from H is entered in the Sales Book.

(vi) Goods sold to D Rs. 500 is passed through the Purchase Book.

NOTES

Solution :

Journal

			Dr.	Cr.
			Rs.	Rs.
(i)	Purchases a/c Dr. To P (Purchases form P for Rs. 258 was wrongly recorded as Rs. 2.58 in Purchases Books now corrected.)		255.42	255.42
(ii)	Sales a/c Dr. To R (Sales of Rs. 248 entered as 428 in Sales Books, now corrected.)		180	180
(iii)	S Dr. To Interest a/c (Interest received on loan wrongly credited to S, now corrected.)		75	75
(iv)	Salaries a/c Dr. To T (Salary paid wrongly debited to personal a/c, now rectified.)		200	200
(v)	Purchases a/c Dr. Sales a/c Dr. To H (Purchases of Rs. 123, wrongly entered in Sales Book, now corrected.)		123 123	246
(vi)	D Dr. To Purchases a/c To Sales a/c (Sales of Goods, wrongly passed through Purchase Book, now corrected.)		1,000	500 500

Example 8.

एक लेखापाल हर महीने तलपट बनाता है और तलपट नहीं मिलने पर भूल-चूक खाता में अन्तर लिख देता है। 31.12.06 को तलपट मिल गया परंतु 31.1.07 को डेबिट की ओर का योग 344 रु. अधिक था और भूल-चूक खाता इससे क्रेडिट कर दिया गया। फरवरी 2007 में अंतर के निम्न कारण ज्ञात हुए–

(i) 36 रु. का बट्टा जो राम को दिया, उसके खाते में क्रेडिट कर दिया गया, परंतु सम्बन्धित दूसरी प्रविष्टि नहीं की गई।

(ii) 2,346 रु. मजदूरी के चुकाये और मजदूरी खाते में 2,746 रु. लिखे गये।

(iii) एक लेनदार का 140 रु. का शेष 31.1.2007 को तलपट में लिखने से रह गया।

(iv) शेष अन्तर विक्रय पुस्तक की गलत जोड़ के कारण था।

आवश्यक सुधार प्रविष्टि कीजिये व उचन्ती खाता बनाइये।

A book-keeper balances his books monthly and if at any time his books fail to balance he enters the difference in a suspense account. On 31st December, 06 the books were properly balanced but on 31st January, 07 there was an excess debit of Rs. 344 and therefore the suspense account was credited with this amount. During February, 07, the difference was found and accounted for as follows:-

(i) Discount of Rs. 36 had been allowed to customer., Ram, and credited to his account, but no other entry was made.

(ii) Wages paid amounting to Rs. 2,346 had been posted to wages account as Rs. 2,746.

(iii) A creditor's balance of Rs. 140 had been entirely overlooked when taking out the list of trial balance on 31.1.07.

(iv) The remainder of the difference was due to miscast in the Sales Book.

NOTES

Set out the necessary rectifying entries and prepare suspense account.

Solution :

	Journal		Dr.	Cr.
			Rs.	Rs.
(i)	Discount a/c	Dr.	36	
	To Suspense a/c			36
	(Discount allowed not posted to Discount a/c now posted.)			
(ii)	Suspense a/c	Dr.	400	
	To Wages a/c			400
	(Wages paid Rs. 2,346 wrongly entered as Rs. 2,746, now corrected.)			
(iii)	Suspense a/c	Dr.	140	
	To Creditors a/c			140
	(A creditor's balance was omitted to be entered in trial balance, now rectified.)			
(iv)*	Sales a/c	Dr.	160	
	To Suspense a/c			160
	(Sales Book was overstated by Rs. 160, now corrected.)			

Suspense Account

		Rs.		Rs.
To Wages a/c		400	By Balance b/d	344
To Creditors		140	By Discount a/c	36
			By Sales	160
		540		540

*Note - इस प्रविष्टि की न तो रकम दी हुई है और न ही यह दिया गया है कि विक्रय बही की जोड़ अधिक थी या कम थी। इस प्रविष्टि को ज्ञात करने के लिए पहले Suspense a/c तैयार करना होगा। Suspense a/c में (i), (ii), (iii) प्रविष्टियों को लिखने के बाद 160 रु. का अन्तर क्रेडिट में कम आता है। इसी रकम की अशुद्धि विक्रय बही के जोड़ में है, अत: Suspense a/c को बराबर करने के लिए 160 रु. से क्रेडिट किया गया है और Sales a/c को डेबिट किया गया है। इस प्रकार (iv) प्रविष्टि की जावेगी।

Example 9. जर्नल प्रविष्टियों द्वारा दिखाइये कि निम्न बातों का फर्म के 31.12.06 को वार्षिक खाते बनाते समय किस प्रकार समायोजन किया जावेगा।

(अ) एक रोकड़िये के खाते जाँचने में ज्ञात हुआ कि उसने 4,250 रु. देनदारों से प्राप्त किये और 730 रु. नकद बिक्री से। उसने 65 रु. माल खरीद कर चुकाये और 820 रु. लेनदारों को चुकाये जिस पर 30 रु. बट्टा मिला। इनकी कोई भी प्रविष्टि पुस्तक में नहीं की गई है।

(ब) राम को बेचा गया माल जो पुस्तकों में बिक्री बना दिया गया, 3,500 रु. का है, पैक कर दिया गया और बीजक भेज दिया गया। जब स्टॉक लिया गया तब राम को न भेजा गया माल स्टॉक में सम्मिलित कर लिया गया।

(स) 1,000 रु. का माल जो कर्मचारियों के लिए खरीदा, खरीद में शामिल कर लिया गया। इतनी ही राशि कर्मचारियों के वेतन में से कम कर दी गई और शेष भुगतान वेतन खाते में खता दिया गया।

NOTES

Show by means of Journal entries how the following matters should be adjusted when preparing the annual accounts of a firm for the year ended 31st December, 06.

(a) An examination of the accounts of a defaulting cashier reveals that Rs. 4,250 was received by him from the firms debtors and Rs. 730 from cash sales and that he paid Rs. 65 for goods purchased and Rs. 820 to creditors, the discount deducted being Rs. 30. No entries for these items had been passed in the Books.

(b) Goods sold and recorded as sales for Rs. 3,500, were packed and the invoice for them sent to the customer, Ram. Stock taking took place and goods not sent to Ram was included in stock.

(c) Goods costing Rs. 1,000 were purchased for various members of the staff and the cost was included in purchases. A similar amount was deducted from the salaries of the employee's concerned and the net payments to them posted to salaries account.

Solution :

	Journal			Dr.	Cr.
				Rs.	Rs.
(a)	Cash a/c	Dr.		4,980	
	To Sundry Debtors				4,250
	To Sales a/c				730
	(Cash received from Debtors and Sales, now recorded.)				
	Purchases a/c	Dr.		65	
	To Cash a/c				65
	(Cash Purchases now recorded.)				
	Sundry Creditors a/c	Dr.		850	
	To Cash a/c				820
	To Discount a/c				30
	(Cash paid to Creditors and discount received, now entered.)				
	Cashier's a/c	Dr.		4,095	
	To Cash a/c				4,095
	Cash retained by the Cashier.				
(b)	Sales a/c	Dr.		3,500	
	To Ram				3,500
	(Goods sold but not sent.)				
(c)	Salaries a/c	Dr.		1,000	
	To Purchases a/c				1,000
	(Goods Purchased for staff was debited to purchased a/c instead of salaries a/c, now corrected.)				

Note – रोकड़िए ने 4,980 रु. प्राप्त किए और 885 रु. (65 + 820) रु. का भुगतान किया। शेष राशि 4,095 रु. रोकड़िये ने गबन कर ली। अतः जो रकम (4,095 रु.) रोकड़िये के पास रह गई। उसके लिए रोकड़िये को डेबिट कर उसके नाम लिखने की प्रविष्टि की गयी है।

Example 10

निम्न अशुद्धियों को सुधार करने हेतु आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।

Give journal entries to rectify the following errors.

(a) राम से मशीन मरम्मत हेतु 150 रु. का व मशीन क्रय करने हेतु 950 रु. का बिल प्राप्त हुआ जिसे क्रय बही में 1,000 रु. से लिखा गया।

NOTES

Bill Received from Ram for Rs. 150 for repairs done to machine and for Rs. 950 for purchase of machine was entered in the purchases Book.

(b) एक लेनदार द्वारा दी गई बट्टे की राशि के 1,000 रु. उसके खाते में जमा पक्ष में 2,000 रु. खताये गये।

Discount allowed by a creditor Rs. 1,000 was posted to the credit of his account as Rs. 2,000.

(c) क्रय की एक 151 रु. की मद क्रय बही में 15 रु. लिखी गई और विक्रेता के खाते में 51 रु. खताई गई।

An item of purchase of Rs. 151 was entered in the purchases Book as Rs. 15 and posted to the sellers account as Rs. 51.

(d) मोहन को की गई 400 रु. की बिक्री सोहन के खाते को 40 रु. क्रेडिट की गयी।

Sales to Mohan Rs. 400 credited to Sohan's account as Rs. 40.

(e) मेहता ब्रदर्स को देय बिल के भुगतान में 500 रु. दिये जो मेहरोत्रा ब्रदर्स को नाम कर दिए गए।

Rs. 500 paid to Mehta Bros. against our acceptance were debited to Malhotra Bros.

Solution :

				Rs.	Rs.
(a)	Repairs a/c	Dr.		150	
	Machine a/c	Dr.		950	
	To Purchases a/c				1,000
	To Ram				100
	(A bill for repairs and Machine purchased wrongly entered in purchases Book, now corrected.)				
(b)	Creditor a/c	Dr.		3,000	
	To Suspense a/c				3,000
	(Discount recd. from a Creditro, wrongly credited his account, now corrected)				
(c)	Purchases a/c	Dr.		136	
	To Sellers a/c				100
	To Suspense a/c				36
	(Purchase of goods for Rs. 151, wrongly entered as Rs. 15 in Purchases Book and wrongly posted as Rs. 51 to Sellers a/c, now rectified)				
(d)	Mohan a/c	Dr.		400	
	Sohan	Dr.		40	
	To Suspense a/c				440
	(Sale to Mohan, wrongly entered to Sohan a/c now rectified				
(e)	B/P a/c	Dr.		500	
	To Mehta Bros.				500
	(Payment of B/P, wrongly posted to Personal a/c now rectified)				

3.5 अभ्यास के लिए प्रश्न (Assignment Material)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1. अशुद्धियों से आप क्या समझते हैं? इन्हें कैसे सुधारा जाता है?

   What is meant by Errors? How are they rectified?

2. क्या तलपट बहियों की शुद्धता का शत-प्रतिशत प्रमाण है? अगर नहीं, तो ऐसी कौन-सी अशुद्धियाँ हैं जो तलपट के मेल खाने पर भी रह जाती हैं?

Is Trial Balance a conclusive proof of accuracy of the Books of accounts ? If not, what are the errors which remain undetected inspite of its agreeement?

3. भूल चूक खाते से आप क्या समझते हैं? इसका क्या उपयोग है?

What do you understand by Suspense Account ? What purpose does it serve ?

NOTES

4. अशुद्धियों का अन्तिम खातों पर क्या प्रभाव पड़ता है? पाँच उदाहरण देकर अन्तिम खातों पर उनका प्रभाव बताइये

What is the effect of errors on the Final Accounts ? Give five examples to show effect on the Final Account.

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

1. निम्न अशुद्धियों को आप कैसे सुधारेंगे–

(अ) 500 रु. की रकम स्वामी ने अपने निजी कार्य हेतु निकाली वह व्यापारिक खर्चे खाते में डेबिट कर दी गई।

(ब) मोहन से प्राप्त 100 रु. सोहन के खाते में क्रेडिट कर दिये।

(स) सीता को 150 रु. की उधार की गई बिक्री क्रय बही में लिखी गई।

(द) 50 रु. मजदूरी के चुकाये जो मजदूरी खाते में दो बार खता दिए गए।

(य) बिक्री बही का जोड़ 100 रु. से कम लगा दिया गया।

(फ) 750 रु. का फर्नीचर क्रय किया उसे क्रय खाते में डेबिट कर दिया।

How would you rectify the following errors –

(a) An amount of Rs. 500 with drawn by the proprietor for his personal use has been debited to Trade Expenses account.

(b) Rs. 100 received from Mohan has been credited to Sohan.

(c) A credit sale of Rs. 150 to Sita has been wrongly passed through the Purchases Book.

(d) Rs. 50 paid for wages, were posted twice to wages a/c.

(e) Periodical totals of Sales Book was cast short by Rs. 100.

(f) An item of Rs. 750 paid for the purchase of Office Furniture has been debited to Purchases Account

2. एक व्यापारी की पुस्तकों में निम्न अशुद्धियाँ पाई गई–

(i) ब को बेचा हुआ 200 रु. का माल र खाते में डेबिट कर दिया गया।

(ii) स को दिये गये 25 रु. नकद बट्टे की छूट उसके खाते में जमा कर दी गयी, परन्तु रोकड़ पुस्तकें में कोई लेखा नहीं हुआ।

(iii) विक्रय बही में मई मास का जोड़ 100 रु. से कम लगाया गया।

(iv) एक कमरे की छत की मरम्मत का व्यय 85 रु. भवन के खाते में लिख दिया गया।

(v) किराया का चुकाया 130 रु. भवन के स्वामी के व्यक्तिगत खाते में डेबिट कर दिया गया।

(vi) फर्नीचर खरीद के लिये दिये गये 1,000 रु. क्रय खाते में डेबिट कर दिये गये।

उपरोक्त को सुधारने के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

The following errors were found in the books of a merchant.

(i) Goods worth Rs. 200 sold to B were posted to the debit of R's account

(ii) Cash discount Rs. 25 was allowed to C and was credited to his account but no entry was made in the Cash Book.

(iii) The total of the Sales Book for the month of May were undercast by Rs. 100

(iv) Rs. 85, Cost of repairing the roof of a room was charged to Building Account.

(v) Rs. 130 paid for Rent was debited to Land's account.

(vi) Rs. 1,000 paid for furniture had been charged to the Purchases account.

Give the entries necessary to correct the above.

3. एक एकाकी व्यापारी जी.डी. बोस का लेखापाल निम्न अशुद्धियों को नहीं खोज पाया—

NOTES

(i) विक्रय पुस्तक का योग 500 रु. कम लगाया गया।

(ii) कार्यालय के लिए खरीदी गई 450 रु. की अलमारी का लेखा क्रय पुस्तक में कर दिया गया।

(iii) बी. बोस को 250 रु. के बेचे गए माल को लेखा उसके खाते में क्रेडिट कर दिया गया।

(iv) जी.डी. बोस 350 रु. का माल ले गया, जिसके लिए कोई भी खाता डेबिट नहीं किया गया।

(v) 50 रु. की खरीदी गई स्टेशनरी को आफिस टाइप-राइटर खाते में डेबिट कर दिया गया।

अन्तर को भूल-चूक खाते में डालकर तलपट का योग मिला दिया गया है। आपको प्रदर्शित करना है कि (i) तलपट के मिलान को कौन-कौन से मद प्रभावित करेंगे, और (ii) भूल-चूक खाते में कितनी राशि थी। इन अशुद्धियों के सुधार के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

The under-mentioned errors could not be detected by the book-keeper of Mr. G.D. Bose, a sole trader:

(i) Sales day Book was cast Rs. 500 short.

(ii) The purchases of an Office Almirah for Rs. 450 was passed through the Purchases day Book.

(iii) The sale of goods worth Rs. 250 to B Bose was credited to his account.

(iv) Goods worth Rs. 350 taken by G.D. Bose were not debited to any account.

(v) Purchases of stationery for Rs. 50 was debited to office Typewriter account.

The Trial Balance was agreed by keeping the difference in Suspense Account.

You are required to state (i) What items would affect the agreement of Trial Balance, and (ii) what was the amount in the suspense account. Give correct Journal entries for rectification of these errose.

(**Answer :** इसमें i, iii, iv प्रविष्टियाँ तलपट के मेल को प्रभावित करेंगी। Suspense Account शेष 350 रु. था।) **संकेत–** 'iv' प्रविष्टि के सुधार हेतु Drawings A/c डेबिट होगा।

4. एक मुनीम को तलपट बनाने पर मालूम होता है कि 424 रु. 25 पैसे क्रेडिट में अधिक है। वह इस रकम को भूल-चूक खाते में ले जाता है। आपको बहियों की जाँच करने को कहा जाता है तथा आपको पता लगता है कि —

(i) अ को 53 रु. दिए गए किंतु उसके खाते में 35 रु. ही डेबिट किये गए।

(ii) 400 रु. मशीन खाते में घिसाई के खाते में डेबिट नहीं किये गये।

(iii) एक ग्राहक को छूट के 12 रु. 53 पैसे दिये गये किंतु ग्राहक के खाते में रु. 8.78 लिखे गये।

(iv) क्रय बही का कुल जोड़ 10 रु. कम लगाया गया।

अशुद्धियों को सुधारने हेतु जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये और किंतु ग्राहक के खाते तैयार कीजिये। यह भी बताइये कि लाभ-हानि खाते पर इन अशुद्धियों को शुद्ध करने का क्या प्रभाव पड़ेगा।

A book-keeper finds in his Trial Balance an excess credit of Rs. 424.25. He balances the books by carrying this amount to a Suspense Account. You are asked to check the book and you discover that –

(i) Rs. 53 paid to A has been debited to his account as Rs. 35

(ii) A sum of Rs. 400 written off as depreciation on machinery was not debited to the Depreciation a/c

(iii) A discount of Rs. 12.53 allowed to a customer has been credited in his accounut as Rs. 8.78

(iv) The total of the Purchases Book was added Rs. 10 short

Give the correcting entries and prepare a Suspense a/c. State also the ultimate effect of these correcting entries on the profit and Loss Account. **(Answer :** 1. Total of Suspenses Account Rs. 428)

2. Net Profit 410 रु. कम होगा)

5. 31 दिसम्बर, 2007 को बनाये गये एक तलपट में नाम पक्ष का जोड़ 143 रु. अधिक था। पुस्तपालक ने इस अन्तर को एक नये खोले गये उचन्ती खाते में डालकर हिसाब बन्द कर दिया। अगले वर्ष निम्न लिखित अशुद्धियों का पता चला–

(a) अ से वसूल की गई 649 रु. की रकम उसके खाते में 45 रु. नाम लिखी गई थी।

(b) 356 रु. मरम्मत पर व्यय मशीन खाते के नाम 156 रु. लिख दिये गये।

(c) 25.50 रु. की स द्वारा मिली हुई छूट उसके खाते में जमा कर दी गई थी।

(d) राम को दिये हुए 457 रु. रमन के खाते में 257 रु. नाम लिखे गये थे।

(e) क्रय बही का जोड़ 100 रु. से कम लगा था।

(f) फर्नीचर खरीदने के 367 रु. मरम्मत खाते में डाल दिये गये।

सुधार की प्रविष्टियाँ करो व उचन्ती खाता बनाओ। इन प्रविष्टियों का लाभ-हानि खाते पर प्रभाव बताओ। वर्ष के अन्त में 7,859.05 रु. का लाभ था।

On 31 December, 2007 a book-keeper found that the Trial Balance showed an exceses of Rs. 143 in the total of debit items. He closed the books by placing the difference to the credit of a newly opened Suspense Account. In the following year, he discovered the following mistakes–

(a) A sum of Rs. 649 received from A was posted to his debit as Rs. 45.

(b) Rs. 356 spent on Repairs was posted to the debit of Machinery Account as Rs. 156.

(c) A discount of Rs. 25.50 allowed by C was posted to his credit.

(d) Rs. 457 paid to Ram was debited to Raman's Account as Rs. 257.

(e) The total of the Purchases Book was added Rs. 100 short.

(f) Furniture purchases for Rs. 367 was debited to Repairs Account.

Pass the rectifying entries and prepare the Suspense Account. State the effect of the entries on the Profit and Loss Account which at the end of the year showed a net profit of Rs. 7,859.05.

(Answer : Total of Suspense a/c - Rs. 694 Net profit Rs. 7,770.05)

3.6 सारांश

लेखा बही खाते में पाई जाने वाली विभिन्न अशुद्धियों की खोज कर उनमे सुधार करने को अशुद्धियों का सुधार करते है।

- बही खाते की अशुद्धि और तलपट की अशुद्धि अशुद्धियों के दो प्रकार है।
- अशुद्धियो के सुधार का प्रभाव अन्तिम खातो पर भी पड़ता है यदि अशुद्धि व्यापार और लाभ हानि खाते से सम्बन्धित होती है तो इसका प्रभाव सकल लाभ शुद्ध लाभ पर पड़ता है।
- अशुद्धि सुधार की प्रक्रिया को खाते के बन्द करने से पूर्व व खाते को बन्द करने के बाद और अन्तिम खाते बन्द करने के बाद भी किया जा सकता है।
- पर्याप्त प्रयत्न करने के बाद भी यदि तलपट मे अशुद्धियों का ज्ञान नहीं होता है तो तलपट के योग को बराबर लाने के लिये एक खाता खोला जाता है जिसे उचन्त खाता कहते है।

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

3.7 शब्दावली

अशुद्धियो मे सुधार, क्षतिपूरक, एक पक्षीय लेखा, उचन्त खाता

●●●

ACCOUNTS/2028-4.PM5 FIRST PROOF DATE : 13.11.2014 (RAJ\AKS)

अध्याय–4 अलाभकारी संस्थाओं के लेखे
[ACCOUNTING FOR NONPROFIT ORGANISATION]

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 अलाभकारी संस्थाओं से आशय

4.2 गैर व्यवसायिक संगठनों का वर्गीकरण

4.3 अलाभकारी संगठनों के लिये लेखांकन

  4.3.1 प्राप्ति एवं भुगतान खाता

  4.3.2 आय एवं व्यय खाता

  4.3.3 आर्थिक चिट्ठा

4.4 प्राप्ति एवं भुगतान लेखा एवं रोकड़ पुस्तक में अन्तर

4.5 प्राप्ति एवं भुगतान तथा आय-व्यय में अन्तर

4.6 क्रियात्मक प्रश्न

4.7 सारांश

4.8 शब्दावली

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे

- अलाभकारी संस्था से आशय एवं उनका वर्गीकरण समझा सकेंगे।
- अलाभकारी संगठनों के लेखों को तैयार कर सकेंगे।
- प्राप्ति एवं भुगतान खाते और आय-व्यय खाते मे अन्तर कर सकेंगे।

4.1 अलाभकारी संस्थाओं से आशय

ऐसी संस्थाओं से है। जिनकी स्थापना का उद्देश्य लाभ कमाना न होकर समाज की सेवा करना या कला, संस्कृति व शिक्षा का सम्वर्द्धन करना होता है। ऐसी संस्थाओं को गैर-व्यापारिक संगठन कहते हैं। यह संस्थाएं व्यापार का दृष्टिकोण नहीं अपनाती है। व्यापार का दृष्टिकोण लाभ कमाना होता है। अलाभकारी संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों या समाज को परमार्थिक, बौद्धिक, धार्मिक, शारीरिक, शैक्षणिक, साहित्यिक दृष्टि से समय-समय पर लाभप्रद सेवायें प्रदान करना है।

4.2 गैर व्यावसायिक संगठनों का वर्गीकरण
(Classification of Non-Trading concerns)

गैर-व्यापारिक संगठनों में निम्न संस्थाओं को शामिल किया जाता है

(i) संघ (Association)—इसमें व्यापारियों या निर्माताओं के संघ, विभिन्न पेशों में कार्यरत व्यक्तियों के संघ, जैसे—चैम्बर ऑफ कामर्स, शिक्षक संघ, श्रमसंघ, बैंकर्स संघ आदि।

(ii) **पेशेवर व्यक्ति** (Professional Person)—ऐसे व्यक्ति जो कि पेशा करते हैं। पेशे से तात्पर्य ऐसे कार्य से है जो कि किसी विशेष योग्यता के आधार पर जीविकोपार्जन के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए- डॉक्टर, इंजीनियर, अंकेक्षक, फैशन डिजाइनर आदि।

(iii) **गैर-व्यापारिक संस्थाएँ** (Non-Trading Concerns)—जिनका उद्देश्य लाभ-कमाना नहीं होता। जैसे—स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, क्लब, अस्पताल, पुस्तकालय, धार्मिक तथा राजनैतिक संस्थाएँ आदि।

यद्यपि उपरोक्त गैर-व्यापारिक तथा गैर-लाभोपार्जन संस्थाओं में लाभ को ज्ञात करना उद्देश्य नहीं होता फिर भी ऐसी संस्थाओं को वर्ष के अन्त में, संस्था के वित्तीय कार्यकलापों सम्बन्धी जानकारी के लिए वित्तीय विवरण बनाने होते हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें एक उचित लेखांकन रीति की आवश्यकता होती है।

NOTES

4.3 अलाभकारी संगठनों के लिए लेखांकन (Accounting for Non-Profit Organisations)

ऐसी संस्थाएँ भी अपने हिसाब-किताब के लिए दोहरा लेखा प्रणाली या अन्य लेखांकन के सिद्धान्तों का पालन करती है। एक व्यापारिक संस्था अपने लेखे (i) रोकड़ पद्धति, (ii) व्यापारिक पद्धति (Mercantile System) या (iii) मिश्रित पद्धति (Hybrid System) के आधार पर रख सकती हैं। परन्तु गैर-व्यापारिक संस्थाएँ अधिकांशतः रोकड़ पद्धति (Cash System) के आधार पर अपने खाते रखती हैं। अतः इनमें रोकड़-पुस्तक एक महत्वपूर्ण पुस्तक होती है। इसी पुस्तक तथा अन्य विवरण व सूचनाओं के आधार पर वित्तीय विवरण (Financial Statements) तैयार किये जाते हैं। सामान्यतय ऐसी संस्थाओं में निम्नलिखित खाते तैयार किये जाते हैं :

1. प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Receipt and Payment Account),
2. आय एवं व्यय खाता (Income & Expenditure Account),
3. आर्थिक-चिट्ठा (Balance Sheet)

इन खातों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

4.3.1 प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Receipt and Payment Account)

गैर-व्यावसायिक संस्थाओं मे यह खाता वर्ष के अन्त मे तैयार किया जाता है। इसमें वर्ष के दौरान जितनी भी रोकड़ प्राप्ति होती है चाहे पूँजीगत प्रकृति की हो या आयगत प्रकृति तथा इसी प्रकार रोकड़ी भुगतान किसी भी प्रकृति के हो, लिखे जाते है। जिस प्रकार व्यापारिक संस्थाओं में रोकड़-पुस्तक रखी जाती है मूलतः उसी प्रकार गैर-व्यावसायिक संस्थाओं मे यह खाता खोला जाता है।

मुख्य विशेषताएँ (Main Features)

प्राप्ति एवं भुगतान खाते के सम्बन्ध मे निम्न विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं

(i) इस खाते की प्रकृति वास्तविक (Real) खाते की भाँति होती है। यह रोकड़ पुस्तक का सारांश है।

(ii) सभी आयगत (Revenue) तथा पूँजीगत (Capital) प्राप्तियाँ इस खाते के डेबिट पक्ष मे लिखी जाती है।

(iii) सभी आयगत तथा पूंजीगत भुगतानो को इस खाते के क्रेडिट पक्ष मे लिखा जाता है।

(iv) जो व्यय अभी हुए नही हैं या ऐसी आय जो प्राप्त नही हुई है, को इस खाते में नही दिखाया जाता।

(v) यदि संस्था पुरानी है तो इस खाते के पिछले शेष को सर्वप्रथम लिखा जाता है। यदि डेबिट शेष है तो डेबिट की ओर तथा क्रेडिट शेष होने पर क्रेडिट की ओर लिखते है।

(vi) इस खाते मे उस वर्ष मे हुए सभी भुगतानो तथा प्राप्तियो को लिखा जाता है जिस वर्ष के लिए यह खाता बनाया जा रहा है, चाहे ये प्राप्तियाँ तथा भुगतान किसी पिछले वर्ष (Past year) या चालू वर्ष (Current year) या आने वाले वर्ष (Next year) से सम्बन्धित हो।

(vii) वर्ष के अन्त मे इस खाते का शेष निकाला जाता है जो डेबिट या क्रेडिट हो सकता है। डेबिट शेष होने पर हस्तगत रोकड़ (Cash in hand) का ज्ञान हो जाता है जबकि क्रेडिट शेष होने पर बैंक ओवरड्राफ्ट (Bank Overdraft) होता है।

NOTES

प्राप्ति एवं भुगतान खाते का प्रारूप
(अवधि की समाप्ति पर)

(Specimen of Receipts and Payments Account)
(for the year ending on..........)

Receipts Capital and Revenue (Past, present and Future)	*Amount*	*Payments Capital and Revenue (Past, present and Future)*	*Amount*
	Rs.		Rs.
To Balance b/d (opening): Cash in hand Cash at Bank To Capital Receipts (for past, present and future periods) e.g. Legacies Sales of office furniture Sale of sports equipments Donations for special purposes e.g. buildings, prizes etc. Membership fees Sale of Investments Endowment fund receipts Receipts on account of special funds, e.g. Prize Fund, Tournament Fund. Interest on specific Fund Investments Entrance Fees To Revenue Receipts (for post, present and future Periods e.g. Subscriptions General donations Proceeds from entertainments Interest or dividends on General Investments Sale of old newspapers, waste papers etc. Miscellaneous receipts To Balance c/d (Bank overdfraft)		By Capital Payments (for post, present and future period) e.g. Buildings construction Books Sports equipments or materials Cost of leasehold land Investments Advance for purchase of buildings Governments loan Furniture. By Revenue Payments (for past, present and future periods) e.g. Prizes paid Entertainment expenses Printing and Stationery Newspapers and periodicals Repairs Postages Doctors. Secretary's Honorarium Expenses on special food to patients Insurance, Rent, Salaries Advertisement Audit Fees Tennis balls Telephone, electric charges Gardening Bar Purchases Bar Expenses Up-keep of lawns Municipal taxes Charity Printing of year book By Bank Overdrafts (Adjustment) By Drawings By Balance c/d (closing balance) Cash in hand Cash in Bank	

4.4 प्राप्ति-भुगतान लेखा एवं रोकड़ पुस्तक में अन्तर
(Difference Between Receipts and Payments Account and Cash Book)

क्र. सं.	अन्तर का आधार	प्राप्ति-भुगतान लेखा *(Receipts and Payments A/c)*	रोकड़ पुस्तक *(Cash Book)*
1.	तिथि	इसमें व्यवहारों का उल्लेख तिथिवार नहीं होता।	रोकड़ पुस्तक में व्यवहारों का उल्लेख तिथिवार होता है।
2.	संस्थाएँ	यह लेखा गैर-व्यापारिक संस्थाओं द्वारा तैयार किया जाता है।	रोकड़ पुस्तक व्यापारिक एवं गैर-व्यापारिक दोनों संस्थाओं द्वारा तैयार की जाती है।
3.	आधार	यह लेखा रोकड़ पुस्तक के आधार पर तैयार किया जाता है।	यह तिथिवार एवं क्रमानुसार नकद राशि की प्राप्ति एवं भुगतान के आधार पर तैयार की जाती है।
4	शीर्षक	इसमें लेखों को उचित शीर्षकों में बाँटकर लिखा जाता है तथा एक शीर्षक से सम्बन्धित सम्पूर्ण राशि का योग एक ही स्थान पर दर्शाया जाता है।	इसमें सभी लेखे विस्तारपूर्वक तिथिवार एवं क्रमानुसार लिखे जाते है। एक ही शीर्षक के मद का उल्लेख अलग-अलक तिथियों पर अलग-अलग स्थानों पर होता है।
5	बनाने का समय	प्राप्ति-भुगतान लेखा निश्चित अवधि की समाप्ति के पश्चात् ही बनाया जाता है।	रोकड़ पुस्तक में प्राप्तियों एवं भुगतानों का लेखा तिथिवार होता है अर्थात् जैसे-जैसे व्यवहार होते है, वैसे-वैसे उन व्यवहारों का उल्लेख क्रमानुसार इसमें होता है अर्थात् रोक पुस्त वर्ष भर लिखी जाती है।
6.	सारांश	प्राप्ति-भुगतान लेखा रोकड़ पुस्तक का सारांश होता है।	रोकड़ पुस्तक प्राप्ति-भुगतान लेखा का सारांश नहीं है।
7.	विस्तृत एवं संक्षिप्त ब्यौरा	प्राप्ति-भुगतान लेखा नकद व्यवहारों का संक्षिप्त ब्यौरा है।	रोकड़ पुस्तक नकद व्यवहारों का विस्तृत ब्यौरा होती है।
8	शुद्धता की जाँच	इसमें गैर-व्यापारिक संस्थाएँ अपने लेखों की शुद्धता की जाँच परीक्षा-सूची (तलपट) की भाँति कर सकती है।	इसमें लेखा शुद्धता की जाँच नहीं की जा सकती।
9	राशि स्तम्भ	इसमें नकद शेष एवं बैंक शेष एक ही राशि स्तम्भ में लिखे जाते हैं।	द्विस्तम्भीय अथवा तीन स्तम्भीय रोकड़ पुस्तक में नकद शेष एवं बैंक शेष की राशि पृथक्-पृथक् स्तम्भों में लिखी जाती है।
10	लेखांकन का अंग	पुस्तपालन एवं लेखाकर्म की दृष्टि से प्राप्ति भुगतान लेखा लेखांकन का महत्त्वपूर्ण अंग नहीं है।	रोकड़ पुस्तक पुस्तपालन एवं लेखाकर्म की दृष्टि से लेखांकन का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।
11	प्रति प्रविष्टि	इसमें राशि के खानों की संख्या एक होती है। अतः प्रति प्रविष्टि नहीं की जाती।	दो या दो से अधिक खाने वाली रोकड़ पुस्तक में राशि बैंक में जमा करने अथवा निकालने पर प्रति प्रविष्टि की जाती है।

NOTES

रोकड़ पुस्तक एवं प्राप्ति-भुगतान लेखा में समानता

उपरोक्त अन्तर के बावजूद प्राप्ति-भुगतान लेखा एवं रोकड़ पुस्तक दोनों में निम्न समानताएँ है :

(1) दोनों में नकद व्यवहारों का उल्लेख होता है।

(2) दोनों में पूँजी एवं आगम प्रकृति के मद दर्शाये जाते है।

(3) दोनों में उधार व्यवहारों का उल्लेख नहीं होता।

(4) दोनों में अदत्त, पूर्वदत्त, अप्राप्त, पूर्व-प्राप्त आदि से सम्बन्धित समायोजन नहीं किये जाते।

(5) दोनों ही प्रारम्भिक रोकड़ शेष से प्रारम्भ होते है तथा अन्तिम रोकड़ शेष पर समाप्त होते है।

Illustration 1 : निम्नलिखित सूचना से 31 मार्च, 2005 को समाप्त वर्ष के लिए छिन्दवाड़ा क्लब का प्राप्ति-भुगतान लेखा तैयार कीजिए :

हाथ में रोकड़ (1 अप्रैल, 2005) 5,850 रु.; प्रवेश शुल्क प्राप्त 3,000 रु.; दान प्राप्त 10,000 रु.; चन्दा प्राप्त 26,500 रु.; गत वर्ष का बकाया चन्दा प्राप्त 3,600 रु.; आजीवन सदस्यता शुल्क प्राप्त 5,000 रु.; वेतन दिया 12,000 रु.; पुस्तकें क्रय 6,000 रु.; छपाई एवं स्टेशनरी 1,200 रु.; डाक खर्च 450 रु ; नृत्य टिकटों का विक्रय 16,000 रु.; स्वल्पाहार का विक्रय 8,000 रु.; नृत्य पर व्यय 2,400 रु.; स्वल्पाहार पर व्यय 5,500 रु.; लाइटिंग पर व्यय 1,300 रु.; प्रतियोगिता पुरस्कार 5,100 रु.।

From the following information prepare Receipts and Payments Account of the Chhindwara. Club for the year ended 31st March, 2005.

Cash-in-hand (1st April, 2005) Rs. 5,850; Entrance Fee received Rs. 3,000; Donations received Rs. 10,000; Subscriptions received Rs. 26,500; Last Year's Arrears of Subscriptins received Rs. 3,600; Life Membership Fee received Rs. 5,000; Salaries paid Rs. 12,000; Books purchased Rs. 6,000; Printing and Stationery Rs. 1,200; Postage Rs. 450; Sale of Dance Tickets Rs. 16,000; Sale of Refreshment Rs. 8,000; Dance Expenses Rs. 2,400; Refreshment Expenses Rs. 5,500; Lighting Expenses Rs. 1,300; Competition Prizes, Rs. 5,100.

Solution :

Receipts and Payments Account of Chhindwara (Club)
(For the year ended 31st March, 2005)

Receipts		Rs.	Payments	Rs.
To Balance b/d :			By Salaries	12,000
Cash in hand		5,850	By Books purchased	6,000
To Entrance Fee		3,000	By Printing & Stationery	1,200
To Donations	Rs.	10,000	By Postage	450
To Subscriptions	26,500		By Dance Expenses	2,400
Add : Last Year's	3,600	30,100	By Refreshment Expenses	2,500
To Life Membership Fee		5,000	By Lighting Expenses	1,300
To Sale of Dance Tickets		16,000	By Competition Prizes	5,100
To Sale of Refreshments		8,000	By Balance c/d :	
			Cash in hand	
			(Balancing figure)	44,000
		77,950		77,950

Illustration 2 : निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सागर क्लब का 31 मार्च, 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति तथा भुगतान लेखा तैयार कीजिए

1 अप्रैल, 2004 को रोकड़ शेष 3,000 रु. था।

सदस्यता शुल्क—क्लब के 500 सदस्य थे जिनको प्रति सदस्य 200 रु. देने थे, उनमें से 40 सदस्यों ने वर्ष का शुल्क नहीं दिया तथा 10 सदस्यों ने आगामी वर्ष का भी शुल्क दे दिया है।

किराया—क्लब का अप्रैल, 2005 तक का किराया 1,000 रु. प्रति माह के हिसाब से दे दिया गया है।

वेतन—5,000 रु. प्रति माह की दर से दिसम्बर, 2004 तक का वेतन दे दिया गया है।

फर्नीचर—माह फरवरी, 2005 में फर्नीचर प्रदाय हेतु 5,000 रु. अग्रिम दिये गये परन्तु वर्ष के अन्त तक 6,000 रु. मूल्य का फर्नीचर प्राप्त हुआ।

बिजली के पंखे—बिजली के दो पंखे जिनकी प्रत्येक की कीमत 1,350 रु. थी, उधार क्रय किये गये जिनमें 1,500 रु. का भुगतान किया गया।

विद्युत व्यय—1,500 रु. अदा किये गये तथा 150 रु. अभी देना शेष है।

विविध व्यय—2,500 रु. दिये गये हैं तथा 500 रु. अभी देना शेष है।

From the following information prepare Receipts and Payments Account of Sagar Club for the year ended 31st March, 2005.

On 1st April, 2004 the Cash Balance was Rs. 3,000.

Membership Fees—There was 500 members of the club each to pay Rs. 200 membership fees but 40 members have not paid their fee for the year while 10 members have paid in advance.

Rent—Rent of the club Rs. 1,000 p. m. has been paid up to April, 2005.

Salary—Salary Rs. 5,000 per month has been paid up to December, 2004.

Furniture—An advance of Rs. 5,000 was given in the month of February, 2005 to supply furniture but furniture worth Rs. 6,000 was received upto the end of the year.

Electric Fans—Two electric fans costing Rs. 1,350 each were purchased on credit but only Rs. 1,500 have been paid.

Electric Charges—Paid Rs. 1,500 and Rs. 150 are unpaid.

Sundry Expenses—Rs. 2,500 have been paid and Rs. 500 are unpaid.

Solution :

Receipts and Payments Account of Sagar Club
(For the year ended 31st March, 2005)

Receipts		Rs.	Payment		Rs.
To Balance b/d (Cash Balance)		3,000	By Rent :		Rs.
To Membership Fee :	Rs.		2004-05	12,000	
(2004-05) (460 × 200)	92,000		2005-06	1,000	13,000
(2005-06) (10 × 200)	2,000	94,000	By Salary (5,000 × 9)		45,000
			By Furniture		5,000
			By Electric Fans		1,500
			By Electric Charges		1,500
			By Sundry Expenses		2,500
			By Balance c/d		28,500
		97,000			**97,000**

4.3 आय एवं व्यय खाता (Income and Expenditure Account)

जिस प्रकार एक व्यापारिक संस्था व्यापार के लाभ-हानि को ज्ञात करने के लिए वर्ष के अन्त में लाभ-हानि खाता तैयार करती है उसी प्रकार गैर-व्यावसायिक संगठन आय एवं व्यय खाता बनाकर इस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। इस खाते की प्रकृति नाममात्र (Nominal) खाते की तरह होती है। इस खाते में आयगत आयों तथा आयगत व्ययों को ही लिखा जाता है। वर्ष की इन सभी मदों को लिखने के बाद इस खाते का शेष ज्ञात किया जाता है। यदि इस खाते का क्रेडिट पक्ष डेबिट पक्ष की तुलना में अधिक होता है तो इस आधिक्य को 'आय का व्यय पर आधिक्य' (Excess of Income over Expenditure) कहते हैं। इसके विपरीत यदि डेबिट पक्ष क्रेडिट पक्ष की तुलना में अधिक होता है तो इस आधिक्य को 'व्यय का आय पर आधिक्य' (Excess of Expenditure over Income) कहते है।

NOTES

आय व्यय खाते की विशेषताएँ निम्नलिखित है—

1. इस खाते में केवल आयगत प्रकृति की आयें (Incomes) तथा व्यय लिखे जाते हैं। पूँजीगत प्रकृति की कोई भी आय तथा व्यय इसमें नहीं दिखाये जाते। यह नाम मात्र के खाते हैं
2. इस खाते में केवल चालू वर्ष के ही आय व व्यय लिखे जाते हैं। जो आयें व व्यय किसी पिछले (Past) या अगले (Next) वर्षों से सम्बन्धित है उन्हें समायोजन के बाद ही लिखा जाता है।
3. यदि प्राप्ति एवं भुगतान खाते को आय एवं व्यय खाते में परिवर्तित करना हो तो केवल चालू वर्ष की आयगत आये व व्ययों को लिखना चाहिए। रोकड़ का प्रारम्भिक व अन्तिम शेष इस खाते में नही लिखा जाता।
4. किसी आय या व्यय में आयगत प्रकृति को देखने के लिए आय या व्यय का आवर्ती स्वभाव (Recurring nature) होना आवश्यक है। आवर्ती स्वभाव से तात्पर्य किसी आय या व्यय का बार-बार होना होता है।
5. यदि सम्पत्तियों पर ह्रास या अप्राप्य ऋण (Bad debts) के सम्बन्ध में कोई समायोजन है तो उसे इस खाते में लिखा जाता है।
6. यह द्विप्रविष्टी प्रणाली का एक भाग है।

प्राप्ति एवं भुगतान तथा आय एवं व्यय खाते में अन्तर

(Difference Between Receipt & Payment Account and Income & Expenditure Account)

क्र. सं.	अन्तर का आधार	प्राप्ति एवं भुगतान खाता	आय एवं व्यय खाता
1.	**खाते की प्रकृति एवं रूप** (Nature & Form of Accounts)	इसकी प्रकृति वास्तविक खाते की भाँति होती है तथा रुप रोकड़ खाते की तरह होता है।	इसकी प्रकृति नामनात्र खाते की भाँति होती है तथा रूप लाभ-हानि खाते की तरह होता है।
2.	**प्रारम्भ** (Commencement)	इसका प्रारम्भ रोकड़ तथा बैंक के प्रारम्भिक शेषों से होता है।	इसका प्रारम्भ प्रत्येक वर्ष नये सिरे से होता है।
3.	**लेखांकन पद्धति** (System of Account)	यह लेखांकन की रोकड़-पद्धति पर आधारित होता है।	यह लेखांकन की व्यापारिक पद्धति (Mercantile System) पर आधारित होता है।
4.	**अवधि** (Period)	इसमें चालू वर्ष की प्राप्ति एव भुगतान के अतिरिक्त पिछले तथा आने वाले वर्ष से सम्बन्धित प्राप्ति एवं भुगतानों को भी दिखाया जाता है।	यह केवल चालू वर्ष की आय एव व्यय के आधार पर बनाया जाता है।
5.	**डेबिट एवं क्रेडिट** (Debit & Credit)	इसमें प्राप्तियां डेबिट तथा भुगतान क्रेडिट होते है।	इसमें आयें क्रेडिट तथा व्यय डेबिट होते है।
6	**आयगत व पूँजीगत स्वभाव** (Revenue & Capital Nature)	इसमें दोनों प्रकृति की आय व व्यय दिखाये जाते है।	इसमें केवल आयगत प्रकृति के ही व्यय तथा आयें दिखायी जाती है।
7	**उद्देश्य** (Object)	इसको बनाने का उद्देश्य वर्ष के अन्त में हस्तगत रोकड़ या बैंक रोकड़ ज्ञात करना है।	इसका उद्देश्य वर्ष में किये गये कार्यों के परिणाम के रूप में आधिक्य या कमी को देखना है।
8.	**आर्थिक चिट्ठा** (Balance Sheet)	इसमें आर्थिक चिट्ठा तैयार नही किया जाता है	इसके साथ आर्थिक चिट्ठा भी बनाया जाता है।

आय एवं व्यय खाते का प्रारूप
(Specimen of Income and Expenditure Account)

Expenditure	Amount	Income	Amount
	Rs.		Rs.
To Salaries	....	By Subscriptions	....
To Wages of Groundsmen	....	By General Donations	....
To Honorarium	....	By Entrance fees (not capitalised)	....
To Upkeep of ground	....	By Grants from local authorities,	
To Postage	....	government etc.	....
To Telephone Charges	....	By Interest on deposits	....
To Fax/E-mails Charges	....	By Rent of Hall	....
To printing & Stationery	....	By Proceeds of entertainments	
To Lighting		& lectures	....
To Bank Charges	....	By Interest on Investments	....
To General Expenses	....	By Sale of newspapers (waste)	....
To Charities	....	By Profit on Sale of assets	....
To Rent, Rates & Taxes	....	By Sale of grass	....
To Cost of entertainment		By Miscellaneous Revenue Receipts	
To Subscriptions to periodicals,		By Excess of Expenditure over	....
Magazines	....	over Income (if any)	
To Depreciation	....		....
To Repairs	....		
To Loss on Sale of assets	..		
To Excess of Income over			
expenditure (if any)	....		
	....		....

4.3 (a) आर्थिक चिट्ठा (Balance Sheet)

आर्थिक चिट्ठा वर्ष के अन्त में संस्था की वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। जिस प्रकार व्यापारिक संस्थाओं में अर्थात् लाभ कमाने वाली संस्थाओं में चिट्ठा बनाया जाता है ठीक उसी प्रकार गैर-व्यावसायिक संगठनों में चिट्ठा तैयार किया जाता है। सभी दायित्वों को बायीं ओर तथा सभी सम्पत्तियों को दायीं ओर दिखाया जाता है। दायित्व तथा सम्पत्ति जो चिट्ठे में लिखे जाते हैं वे पूँजीगत प्रकृति के होते हैं। चिट्ठा बनाते समय कुछ समायोजन भी करने होते हैं, जैसे—अदत्त व्यय, ह्रास की राशि आदि।

पूँजी कोष (Capital Fund)—पूँजी कोष को चिट्ठे में दायित्व की ओर दिखाया जाता है। यदि इस कोष की राशि न दी हो तो इसे प्रारम्भिक चिट्ठा बनाकर ज्ञात किया जाता है। प्रारम्भिक चिट्ठे में अदत्त तथा पूर्वदत्त आयों तथा व्ययों को दिखाया जाता है।

Capital Fund = (Outstanding Subscriptions + Prepaid Expenses + Opening Cash Balance)
− (Outstanding Salaries + Outstanding Expenses + Prepaid Subscriptions)

नोट—सभी अदत्त तथा पूर्वदत्त व्ययों तथा आयों का प्रारम्भिक शेष लिया जाता है।

NOTES

आर्थिक चिट्ठे का नमूना

(Specimen of Balance Sheet As On........)

Liabilities	Amount	Income	Amount
	Rs.		Rs.
Capital Fund ...		Cash in hand	....
Add : Excess of Income		Cash in Bank	....
over expenditure		Fixed Deposits	....
or		Investment	....
Less : Excess of Expenditure		Interest outstanding	....
over Income		Prepaid Expenses	....
Add : General Donation	....	Rent Receivable	....
Bank Load	....	Outstanding Subscriptions	....
Outstanding Expenses	....	Stock :	
Subscriptions received in advance		(i) Stamps & Stationery	....
	....	(ii) Sports material	....
Special Funds		(iii) Medicines etc.	....
(e.g. Tournament funds etc.)		Library books	....
Less : Expenses	....	Land & Building	....
Special Donations (for		Furniture & Fixture	....
Building etc.	....	Ground & Pavilion	
Legacies	....		
Entrance Fees	....		
Total	....	Total	....

Illustration : 3 नीचे दिये गये प्राप्ति-भुगतान खाते तथा दी गई अन्य सूचनाओं से 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय-व्यय खाता बनाइये

	रु.		रु.
पिछला शेष (1.1.2006)	7,700	दान	14,500
सहायताएँ	8,000	वेतन	2,600
चन्दा	4,000	किराया (9 महीना)	1,200
धर्मस्व	15,000	छपाई	300
वसीयतें	6,000	डाक खर्च	100
ब्याज	9,700	विज्ञापन	1,000
		विनियोग	28,000
		शेष आगे को (31.1.2006)	2,700
	50,400		50,400

सहायतार्थ दान तथा वसीयत की आधी रकम आय मानी गई है। धर्मस्व (Endowment) की सारी रकम पूँजीगत आय है। वेतन के 300 रु. और छपाई के 50 रु. साल के अन्त में बाकी रह गये। विज्ञापन 250 रु. आने वाले साल के लिए अग्रिम दिये गये।

From the following Receipt and Payment Account and the further information supplied prepare an Income and Expenditure Account for the year ended 31st December, 2006

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (1.1.2006)	7,700	By Charities	14,500
To Donations	8,000	By Salaries	2,600
To Subscriptions	4,000	By Rent (9 months)	1,200
To Endowment	15,000	By Printing	300
To Legacies	6,000	By Postage	100
To Interest	9,700	By Advertisements	1,000
		By Inverstments	28,000
		By Balance c/d (31.12.2006)	2,700
	50,400		50,400

Treat half of the donations and legacies as income. Endowment is all capital and Rs. 300 were owing for salaries and Rs. 50 for printing at the end of the year. Rs. 250 was paid for advertisement in advance for the coming year.

Solution :

Income and Expenditure Account
(For the year ended 31st December, 2006)

Expenditure		Amount	Income	Amount
		Rs.		Rs.
To Charities		14,500	By Donation ($\frac{1}{2}$)	4,000
To Salaries	2,600		By Legacies ($\frac{1}{2}$)	3,000
Add : Outstanding	300	2,900	By Subscription	4,000
To Rent (9 months)	1,200		By Interest	9,700
Add : Outstanding for 3 months	400	1,600		
To Printings	300			
Add : Oustanding	50	350		
To Postage		100		
To Advertisements	1,000			
Less : Advance	250	750		
To Excess of Income over Expenditure		500		
		20,700		20,700

Illustration : 4 बाम्बे ड्रेस के अग्रलिखित विवरण और सम्बन्धित सूचनाओं से 31 दिसम्बर, 2006 का आय-व्यय खाता तैयार कीजिए.

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति		रकम रु.	भुगतान	रकम रु.
1 जनवरी, 2006			31 दिसम्बर, 2006	
शेष			पेन्शन पाने वालों को भुगतान	12,650
जमा नकद में	5,000		किराया	750
चालू खाते का	1,160		ऑफिस के खर्चे तथा वेतन	2,750
रोकड़ हाथ में	70	6,230	कलेक्टर का कमीशन	370
31 दिसम्बर, 2000			मैगजीन की छपाई	260
दान और चन्दे		12,720	डाक व्यय	180
वसीयतें		4,000	ग्रेच्युटी विशेष फण्ड में	1,430
विशेष फण्ड दान		1,700	विनियोग 5,000 रु. का 3%	

NOTES

विनियोग पर ब्याज	1,350	सरकारी ऋण		3,000
जमा पर ब्याज	240	शेष :		
		जमा नकद	4,000	
		चालू खाते में	730	
		रोकड़ हाथ में	120	4,850
	26,240			**26,240**

मैनेजिंग कमेटी ने यह पास किया कि प्राप्त वसीयतों (Legacies) का आधा रुपया आमदनी समझा जाये और शेष पूँजी, 'स्पेशल फण्ड' को 'जनरल फण्ड' से अलग किया जाये, अदत्त किराया 250 रु.; मैगजीन में विज्ञापन देने वालों के पास बकाया 150 रु.; विनियोग पर ब्याज 300 रु. अभी प्राप्त नहीं हुए हैं।

From the following particulars of Bombay Dress and the subjoined information prepare in Income and Expenditure Account for the year ended 31st December, 2006.

Receipt and Payment Account

Receipts		Amount	Payments		Amount
		Rs.			Rs.
2006, Jan. 1			2006, Dec. 31		
To Balance :			By Payment to Pensioners		12,650
Cash on Deposit	5,000		By Rent		750
Cash on Current A/c	1,160		By Office Expenses and		
Cash in hand	70	6,230	Salaries		2,750
2006, Dec., 31			By Collector's Commission		370
To Donation and Subscriptions		12,720	By Printing Magazine		260
To Legacies		4,000	By Gratuities from Special		
To Special Fund Donation		1,700	Fund		1,430
To Interest on Investments		1,350	By Investment in Rs. 5,000		
To Interest on Deposit		240	3% Govt. Loan		3,000
			By Balance		
			Cash on Deposit	4,000	
			Cash on Current a/c	730	
			Cash in hand	120	4,850
		26,240			**26,240**

The committee of management resolve that one-half of legacies received shall be treated as income, the remained being capital and that the "Special Found" should be separted from the "General Fund". Rent was unpaid to the extent of Rs. 250. Sundry persons owed Rs. 150 for advertisements in the magazine. Interest on investments Rs. 300 had accrued but was not received

Solution :

Income and Expenditure Account

(For the year ended 31st December, 2006)

Expenditure		Amount	Income		Amount
		Rs.			Rs.
To Pensions		12,650	By Donations & Subscriptions		12,720
To Rent	750		By Legacies ($\frac{1}{2}$)		2,000
Add Unpaid	250	1,000	By Interest on		
To Office Expenses and			Investment	1,350	

NOTES

Salaries	2,750	*Add* : Accrued Int.	300	1,650
To Collector's Commission	370	By Interest on Deposit		240
To Printing Magazine	260	By Advertisements in Magazine		150
To Postage	180	By Excess of Expenditure over Income		450
	17,210			**17,210**

Illustration : 5 डॉ. राजीव ने 1 जनवरी, 2005 को एक नेत्र विशेषज्ञ की तरह पेशा करना आरम्भ किया। उसने 50,000 रु. साज-सामान मे लगाया। वर्ष भर का प्राप्ति एवं भुगतान खाता निम्नलिखित है:

प्राप्तियाँ	रकम रु.	भुगतान	रकम रु.
शुल्क	1,00,000	किराया	6,000
विविध प्राप्तियाँ	200	सहायकों को वेतन	15,000
साज-सामान की बिक्री	4,000	पत्रिका	2,000
		पुस्तकालय पुस्तकें	6,000
		साज-सामान	8,000
		आहरण	24,000
		बैंक शेष	43,000
		नकद शेष	200
	1,04,200		**1,04,200**

बकाया शुल्क 3,000 रु. थे। 1 अक्टूबर, 2000 को साज-सामान खरीदा एवं बेचा गया। बेचे गये साज-सामान का मूल्य 6,000 रु. था। साज-सामान पर ह्रास 20% एवं पुस्तकालय पुस्तकों पर 5% करना है। सहायकों को अभी भी देय वेतन 2,000 रु. है।

वर्ष 2005 के लिए आय-व्यय खाता एवं चिट्ठा बनाइए।

Dr. Rajeev commenced practice as an eye specialist investing Rs. 50,000 in equipment on 1st January, 2005. The Receipt and Payment Account for the year was as follows :

Receipts	Amount	Payments	Amount
	Rs.		**Rs.**
To Fees	1,00,000	By Rent	6,000
To Miscellaneous Receipts	200	By Salary to Assistant	15,000
To Sale of Equipment	4,000	By Journals	2,000
		By Library Books	6,000
		By Equipments	8,000
		By Drawings	24,000
		By Bank Balance	43,000
		By Cash Balance	200
	1,04,200		1,04,200

Rs. 3,000 of fees were still outstanding. Equipment sold and purchased was on 1st October, 2005, the cost of the equipment sold being Rs. 6,000. Depreciation on equipment is 20% and on library books 5%. Salaries to assistants still payble is Rs. 2,000.

Prepare the Income and Expenditure Account and the Balance Sheet relating to the year 2005

NOTES

Solution :

Income and expenditure of Dr. Rajeev

(For the year ended on 31st December, 2005)

Expenditure		Amount	Income		Amount
		Rs.			Rs.
To Salaries	15,000		By Fees	1,00,000	
Add : Outstanding	2,000	17,000	*Add :* Outstanding	3,000	1,03,000
To Rent		6,000	By Miscellaneous receipts		200
To Journals		2,000			
To Loss on Salle of Equipment		1,100			
To Depreciation :					
(i) Equipment :					
on 6,000	900				
on 8,000	400				
on 44,000	8,800	10,100			
(ii) Books		300			
To Excess of Income over Expenditure (Surplus)		66,700			
		1,03,200			**1,03,200**

Balance Sheet

(As at 31st December, 2005)

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Capital Fund	50,000		Cash Balance		200
Add : Surplus	66,700		Bank Balance		43,000
	1,16,700		Fees outstanding		3,000
Less : Drawings	24,000	92,700	Books	6,000	
Salaries payable		2,000	*Less :* Deprection	300	5,700
			Equipment	50,000	
			Less : Sold	6,000	
				44,000	
			Less : Depreciation	8,800	
				35,200	
			Add : Addition 8,000		
			Less : Dep 400	7,600	42,800
		94,700			**94,700**

Illustration : 6 एक सार्वजनिक स्कूल के लिए निम्नलिखित तलपट एवं नीचे दी आवश्यक सूचना से वर्ष 2005 के लिए आय-व्यय खाता तथा 31 दिसम्बर, 2005 को एक चिट्ठा बनाइए।

तलपट

डेबिट बाकियाँ	रकम	क्रेडिट बाकियाँ	रकम
	रु.		रु
भवन	2,50,000	नामांकन शुल्क	5,000
फर्नीचर एवं फिटिंग्स	55,000	ट्यूशन एवं अन्य शुल्क प्राप्त	2,00,000
पुस्तकालय पुस्तकें	60,000	आपूर्तिकर्ताओं के लिए लेनदार	6,000
निवेश 9% पर	2,00,000	हॉल का किराया	4,000

वेतन	2,00,000	विविध प्राप्तियाँ	12,000
सामान्य व्यय	8,000	सरकारी अनुदान	1,40,000
वार्षिक खेलकूद व्यय	6,000	सामान्य कोष	4,00,000
बैंक में रोकड़	20,000	पुस्तकालय पुस्तकों के क्रय हेतु	
हाथ में रोकड़	1,000	दान प्राप्त	25,000
		फर्नीचर की बिक्री (1.7.2005 को)	8,000
	8,00,000		**8,00,000**

NOTES

वर्ष के लिए अभी भी फीस (शुल्क) पाना बाकी है। 10,000 रु. अभी भी देय वेतन की राशि 12,000 रु., 15,000 रु. मूल्य का फर्नीचर 1.7.2005 को क्रय किया गया था। बेचे गये फर्नीचर का पुस्तक मूल्य 1.1.2000 को 20,000 रु. था। फर्नीचर एवं फिटिंग्स पर 10% वार्षिक की दर से, 15% पुस्तकालय पुस्तकों पर और 5% भवन पर ह्रास काटा जाना है।

कार्यात्मक टिप्पणी भी दीजिए।

From the following Trial Balance and the necessary information given below for a Public School, prepare Income and Expenditure Account for the year 2005 and a Balance sheet as at 31st Dec., 2005.

Debit Balance	Amount	Credit Balance	Amount
	Rs.		Rs.
Buildings	2,50,000	Admission fees	5,000
Furniture & Fittings	55,000	Tuition and other fees received	2,00,000
Library Books	60,000	Creditor for Supplies	6,000
Investment at 9%	2,00,000	Rent for the Hall	4,000
Salaries	2,00,000	Miscellaneous Receipts	12,000
General Expenses	8,000	Government Grant	1,40,000
Annual Sports Expenses	6,000	General Fund	4,00,000
Cash at Bank	20,000	Donation Received for	
Cash at hand	1,000	Purchase of Library Books	25,000
		Sale of Furniture (1.7.2005)	8,000
	8,00,000		**8,00,000**

Fees yet to be recived for the year is Rs. 10,000. Salaries yet to be paid amounted to Rs. 12,000. Furniture costing Rs. 15,000 was purchased on 1.7.2005. The book value of the furniture sold was Rs. 20,000 on 1.1.2005. Depreciation is to be charged @ 10% per annum on furniture and fittings, 15% on Library Books and 5% on Buildings.

Give working notes

Solution :

Income and Expenditure Account

(For the year ending 31st December, 2005)

Expenditure		Amount	Income		Amount
		Rs.			Rs.
To Salaries	2,00,000		By Admission Fees		5,000
Add Outstanding	12,000	2,12,000	By Tuition and other		
To General Expenses		8,000	fees received	2,00,000	
To Annual Sports Exps.		6,000	*Add* Fees		
			Outstanding	10,000	2,10,000
To Depreciation on Library books		9,000	By Rent for the Hall		4,000

NOTES

To Depreciation on Buildings		12,500	By Miscellaneous Receipts	12,000
To Depreciation on Furniture			By Government Grant	1,40,000
& Fittings :			By Investment Account on	18,000
On Rs. 15,000 for 1/2 yr.	750		Investment	
On Rs. 20,000 for 1/2 yr.	1,000			
On Rs. 20,000 for 1 yr.	2,000	3,750		
To Loss on Sale of Furniture		11,000[1]		
To Excess of Income over				
Expenditure		1,26,750		
		3,89,000		3,89,000

Balance Sheet of the Public School

(As at 31st December, 2005)

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Creditors for Supplies		6,000	Cash in hand		1,000
Donation for purchase of			Cash at Bank		20,000
Library Books		25,000[2]	Investment at 9%		2,00,000
Outstanding Salaries		12,000	Library Books	60,000	
General Fund	4,00,000		*Less :* Depreciation	9,000	51,000
Add : Excess of			Furniture and Fittings	55,000	
Income over			*Less :* Furniture sold	20,000	
Expenditure	1,26,750	5,26,750		35,000	
			Less : Deprecation		
			(3,000 + 750)	2,750	32,250
			Buildings	2,50,000	
			Less : Depreciation	12,500	2,37,500
			Interest Accured on		
			Investment		18,000[3]
			Fees Outstanding		10,000
		5,69,750			5,69,750

Working Notes :

			Rs.
1.	Loss on Sale of Furniture		20,000
	Book Values as on 1.1.2005		
	Less Depreciation for 1/2 yr.		1,000
	Written down value		19,000
	Less Sales Proceeds	Loss on Sale	8,000
			11,000

2. Donation received for special purpose i.e., for purchase of books has been treated as capital receipts

3. As the Trial Balance does not contain interest on investment, interest has been treated as outstanding income

Illustration : 7 लिटोगी और कल्याण मासाइटी के निम्नलिखित विवरण 31 मार्च, 2006 को प्राप्ति और भुगतान खाता, आय-व्यय खाता और आर्थिक चिट्ठा बनाइए

आर्थिक चिट्ठा 31 मार्च, 2006

दायित्व	रकम	सम्पत्तियाँ	रकम
	रु.		रु.
अदत्त लेनदार	850	बैंक में नकद	6,000
व्यय पर आय का संचयी आधिक्य		सरकारी प्रतिभूतियाँ	20,000
(पूँजी कोष)	31,150	उपार्जित ब्याज	250
		अदत्त चन्दे	800
		पुस्तकालय पुस्तकें	2,000
		फर्नीचर और फिक्सचर्स	2,950
	32,000		**32,000**

2005-2006 के लेन-देन इस प्रकार थे—चन्दे से प्राप्तियाँ 5,000 रु., मनोरंजन और व्याख्यान से प्राप्तियाँ 2,000 रु., प्रतिभूतियों के ब्याज से प्राप्तियाँ 950 रु., प्रवेश शुल्क से प्राप्तियाँ 1,000 रु., पुरानी कुर्सियों की बिक्री से प्राप्तियाँ 150 रु.।

भुगतान दिया—किराया 1,200 रु., छपाई 300 रु., विज्ञापन 400 रु., खुदरा व्यय 100 रु. और सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद 5,000 रु.।

अदत्त लेनदारों के लिए 850 रु., फर्नीचर के लिए 800 रु., पुस्तकालीय पुस्तक के लिए 600 रु. और मनोरंजन खर्चों के लिए 1,500 रु.।

31 मार्च, 2005 को अदत्त थे- प्रतिभूतियों पर ब्याज 300 रु., चन्दा 650 रु., और उसी दिन देय था छपाई का 150 रु., तथा किराया का 200 रु.।

From the following particulars, which relate to literary and cultural society, prepare a Receipt and Payment Account and an Income and Expenditure Account and a Balance Sheet as at 31st March, 2006.

Balance Sheet

(As on 31st March, 2006)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Outstanding creditors	850	Cash at Bank	6,00
Capital Fund :		Government Securities	20,000
Excess of Income over		Accrued Income	250
Expenditure	31,150	Outstanding Subscription	800
		Library Books	2,000
		Furniture & Fixtures	2,950
	32,000		**32,000**

The transactions for the year 2005-2006 were received from subscription Rs. 5,000 received from entertainments and lectures Rs. 2,000 received from interest on securities Rs. 950, entrance fees received Rs. 1,000, sale proceeds of old chairs Rs. 150.

Paid for rent Rs. 1,200; for printing Rs. 300; for advertising Rs. 400; for petty disbursements Rs. 100; and for purchase of government securities Rs. 5,000.

Paid for outstanding creditors Rs. 850, for furniture Rs. 800; for library books Rs. 600, for cost of entertainment fees Rs. 1,500.

On 31st March, 2006 there were also outstanding on account of interest on securities Rs. 300 and subscription Rs. 650, on the same date liabilities were outstanding for printing Rs. 150, and for rent Rs. 200.

NOTES

Solution :

Receipts & Payments Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Receipts		Amount	Payments		Amount
		Rs.			Rs.
To Balance of Cash			By Capital Expenditure		
(1st April, 2005)		6,000	Govt. :		
To Subscripation received		5,000	Securities	5,000	
To Proceeds from Entertainments			Furniture	800	
& Lectures		2,000	Library Books	600	6,400
To Entrance Fees		1,000	By Outstanding Creditors		850
To Interest on Securities		950	By Expenses paid :		
To Sale Proceeds for old			Rent	1,200	
chairs		150	Printing	300	
			Advertisement	400	
			Petty Disbursement	100	
			Cost of Entertainment	1,500	3,500
			By Balance of Cash (31.3.2006)		4,350
		15,100			**15,100**

Income & Expenditure Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Expenditure		Amount	Income	Amount
		Rs.		Rs.
To Expenses :			By Subscriptions	
Rent	1,400		(5,000 + 650 – 800)	4,850
Printing	450		By Entrance Fees	1,000
Advertisement	400		By Proceeds from Entertainments	
Petty Disbursement	100		and Lectures	2,000
Cost of Entertainment	1,500	3,850	By Interest on Securities	1,000
To Excess of Income over				
Expenditure		5,000		
		8,850		**8,850**

Balance Sheet

(As at 31st March, 2006)

Liabilites		Amount	Assets	Amount
		Rs.		Rs.
Outstanding Expenses			Cash	4,350
Rent	200		Govt Securities	25,000
Printing	150	350	Accrued Interest	300
Capital Fund			Outstanding Subscription	650
Balance from Last year	31,150		Library Books	2,600
Add : Excess of			Furniture & Fittings	3,600
Income over				
Expenditure (this year)	5,000	36,150		
		36,500		36,500

Illustration : 8 निम्नलिखित आय-व्यय लेखे के आधार पर 31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता तैयार कीजिए:

आय-व्यय खाता
(31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष का)

व्यय	रकम	आय	रकम
	रु.		रु.
वेतन बावत	2,000	दान	4,000
खर्च बावत	3,000	चन्दा	10,000
दर, कर बावत	500		
मूल्य ह्रास	900		
व्यय की तुलना मे आय का आधिक्य	7,600		
	14,000		**14,000**

अतिरिक्त जानकारी

	1 जनवरी 2005	31 दिसम्बर, 2005
	रु.	रु.
अचल सम्पत्ति	9,000	10,000
बकाया चन्दा	2,000	3,000
अग्रिम प्राप्त चन्दा	—	1,500
बकाया खर्चे	100	200
हाथ में रोकड़	1,000	—
बैंक में रोकड	100	7,100

From the following Income and Expenditure a/c prepare Receipt and Payment a/c for the year ended 31st December, 2005.

Income & Expenditure Account
(For the year ended 31st December, 2005)

Expenditure	Amount	Income	Amount
	Rs.		Rs.
To Salaries	2,000	By Donation	4,000
To Expenses	3,000	By Subscription	10,000
To Rates, Taxes	500		
To Depreciation	900		
To Excess of Income over Expenditure	7,600		
	14,000		**14,000**

Additional Informations

	1st Jan., 2005	31st Dec., 2005
	Rs.	Rs.
Fixed Assets	9,000	10,000
Subscription outstanding	2,000	3,000
Subscriptions received in advance	-	1,500
Outstanding Expenses	100	200
Cash in Hand	1,000	—
Cash at Bank	100	7,100

NOTES

Solution :

Receipt and Payment Account
(For the year ended 31st December, 2005)

Receipt		Amount	Payments		Amount
		Rs.			Rs.
To Balance b/d			By Salaries		2,000
Cash Balance		1,000	By Expenses	3,000	
Bank Balance		100	*Add* : Paid for 2000	100	
To Donations		4,000		3,100	
To Subscription	10,000		*Less* : Unpaid in 2000	200	2,900
Add : Received			By Rates, Taxes		500
for 1999	2,000		By Fized Assets Purchased		1,900
	12,000		By Balance c/d :		
Add : Received in			Bank Balance		7,100
Advance			Cash Balance		
for 2001	1,500		(Balancing figure)		1,200
	13,500				
Less : O/s for 2000	3,000	10,500			
		15,600			**15,600**

Working Note :

	Rs.
Fixed Assets Purchased	
Fixed Assets on 1.1.2000	9,000
Less : Deprecation for 2004	900
	8,100
Addition in 2005	~~1,900~~
Fixed Assets on 31.12.2005	10,000

Illustration : 9 31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष में सिल्वर क्लब का आगम व शोधन खाता अग्रवत् है। इससे आय-व्यय खाता एवं चिट्ठा 31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए बनाइए :

प्राप्तियाँ	रकम	भुगतान	रकम
	रु.		रु.
शेष (प्रारम्भिक)	4,000	नये भवन का क्रय	75,000
चन्दा	12,000	स्मारिका	2,000
सामान्य दान	13,000	वेतन	6,000
कार्यक्रमों से प्राप्ति	6,900	डाक तथा टेलीफोन	1,000
पुराने अखबारों की बिक्री	300	बिजली	600
स्मारिका विज्ञापन	5,800	अनुरक्षण व्यय	12,000
आधार कोष से आय	3,000	अखबार	500
पुराने भवन की बिक्री (पुस्तक मूल्य पर)	60,000	शेष (अन्तिम)	11,900
विनियोग से आय (10% की दर से)	4,000		
	1,09,000		**1,09,000**

निम्न सूचनाएँ ध्यान में रखनी हैं : रु.

(i) चन्दा :

2004 का (31.12.2004 को बकाया 1,500 रुपये) प्राप्त 1,000

2005 को बकाया 800

2006 को अग्रिम 1,200

(ii) बकाया व्यय : बिजली 100 रुपये, वेतन 1,200 रुपये, टेलीफोन तथा डाक व्यय 200 रुपये।

(iii) भवन पर ह्रास 5% लगाइए।

The following is the Receipts & Payments of Silver Club for the year ending on 31.12.2005. With the help of this prepare Income & Expenditure account and Balance sheet for the period ending on 31.12.2005.

Receipts	Amount	Payments	Amount
	Rs.		Rs.
Balance (Opening)	4,000	Purchase of new building	75,000
Subscriptions	12,000	Souvenir	2,000
General donations	13,000	Salaries	6,000
Receipts from functions	6,900	Postage & Telephone	1,000
Sale of old news papers	300	Electricity	600
Advertisement (Souvenir)	5,800	Maintenance Exps.	12,000
Income from Endowment fund	3,000	News paper	500
Sale of old building (on book value)	60,000	Balance (Closing)	11,900
Income from Investments @ 10%	4,000		
	1,09,000		**1,09,000**

The following information should also be kept in mind :

(i) Subscriptions — Rs.

Receipts of 2004 (Rs. 1,500 in arrears of 31.12.2004) 1,000

Arrear of 2005 (Outstanding) 800

Advance of 2006 1,200

(ii) Outstanding expensions—Salaries Rs. 1,200; Electricity Rs. 100; Telephone & Postage Expenses Rs. 200

(iii) Charge depreciation on building @ 5%.

Solution :

Income & Expenditure Account
(For the year ended 31st Dec., 2005)

		Rs.			Rs.
To Souvenir		2,000	By Subscription	12,000	
To Salaries	6,000		*Less* Last Year's Subs.	1,000	
Add O. S. Expenses	1,200	7200		11,000	
To Post and Telep.	1,000				
Add O. S. Expenses	200	1,200	*Add* Accrued	800	
To Electricity	600			11,800	
Add O. S. Expenses	100	700	*Less* Recd. in advance	1,200	10,600
To Maintenance Exps		12,000	By Ordinary Donations		13,000
To News Paper		500	By Receipt from functions		6,900
To Dep. on Building		3,750	By Sale of old News paper		300
To Surplus		16,250	By Advertisement		5,800
			By Income (Endowment)		3,000
			By Income from investment		4,000
		43,600			**43,600**

NOTES

Balance Sheet
(As at 31st Dec., 2005)

		Rs.			Rs.
Capital Fund	1,05,500		Cash		11,900
Add : Surplus	16,250	1,21,750	Building	75,000[1]	
Outstanding Exp.		1,500[3]	*Less* : Depreciation	3,750[1]	71,250
Subs. received in advance		1,200	Investment		40,000[2]
			Accrued Subs. 2005		800
			Accrued Subs. 2004		500
		1,24,450			**1,24,450**

Finding Opening Capital

Opening Balance Sheet

Liabilites	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Capital Fund	1,05,500	Cash	4,000
		Building	60,000
		Investment	40,000[2]
		Accrued Subscripation	1,500
	1,05,500		**1,05,500**

1. $\frac{75,500 \times 5}{100}$ = Rs. 3,750. यह माना गया है कि 60,000 रु. का भवन वर्ष के प्रारम्भ में ही बेच दिया गया इसीलिए इस पर कोई ह्रास नहीं निकाला गया।

2. $\frac{100 \times 4,000}{10}$ – Rs. 40,000;

3 Rs. 100 + 1,200 + 200 = Rs. 1,500.

Illustration : 10 निम्नलिखित आगम एवं शोधन खाता तथा चिट्ठे से 2006 वर्ष के लिए आय एवं व्यय खाता बनाइए

Prepare Income and Expenditure Account and Balance Sheet for the year 2006 from the following Receipts and Payments Account and B/S :

Receipts and Payments Account for 2006

	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
1.1.2006 को शेष (To Balance)		व्यय (By Expenses)	
(1.1.2006)	10,000	2005	1,200
चन्दे से (To Subscription)		2006	2,000
2005	200	भूमि (By Land)	4,000
2006	2,100	ब्याज (By Interest)	400
2007	150	विविध व्यय (By Misc. Expenses)	2,000
प्रवेश शुल्क से (To Entrance fees)	800	शेष (By Balance 31.12.2006)	8,350
लॉकर किराये से (To Lockers rent)	700		
विविध आयो से (To Misc. incomes)	4,000		
	17,950		**17,950**

NOTES

Balance Sheet

(As on 31st Dec., 2005)

	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
पूँजी फण्ड (Capital fund)	33,620	भवन (Building)	30,000
अग्रिम प्राप्त चन्दे (Subscription received in advance)	600	अदत्त चन्दे (Outstanding Subscriptions)	380
अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)	1,400	अदत्त लॉकर किराया (Outstanding Locker's rent)	240
ऋण (Loan)	5,000	रोकड़ (Cash)	10,000
	40,620		**40,620**

Solution :

Income & Expenditure Account (For the year ended 31st Dec., 2006)

Expenditure	Amount	Income		Amount
	Rs.			Rs.
To Expenses	2,000	By Subscriptions	2,100	
To Interest	400	Add : Received in		
To Misc. Expenses	2,000	advance in 2005	600	2,700
To Excess of Income over		By Entrance fees		800
expenditure	3,560	By Locker's rent	700	
		Less : Received for 2005	240	460
		By Misc. Income		4,000
	7,960			**7,960**

Balance Sheet (As at 31st Dec., 2006)

Liabilities		Amount	Assets	Amount
		Rs.		Rs.
Capital fund			Building	30,000
Balance on 1.1.2006	33,620		Land	4,000
Add : Excess of income			Outstanding Subscription : 2006	180
over expenditure	3,560	37,180	Cash	8,350
Outstanding expenses				
(1,400 – 1,200)		200		
Subscription received in advance		150		
Loan		5,000		
		42,530		**42,530**

Note to the solution :

1 वर्ष 2005 में बकाया चन्दा 480 रु. था जिसमें से 300 रु. प्राप्त हुए है अत: 180 रु. अभी भी बकाया है।

2 वर्ष 2005 में अदत्त व्यय 1,400 रु. थे जिसमें से 1,200 रु. दी दिये गये है अत: 200 रु. अब भी बकाया है।

3 वर्ष के प्रारम्भ के अदत्त अथवा पूर्वदत्त आय एवं व्यय की सूचना 1999 के चिट्ठे में प्राप्त होगी।

Illustration : 10 31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष की फ्री मेडिकल एड सोसाइटी का आगम एवं शोधन खाता निम्नलिखित है.

The following is the Receipts and Payment Account of Free Medical Aid Society for the year ended 31st March, 2006

NOTES

Receipts and Payments Account

(For the year ended 31st March, 2006)

प्राप्तियाँ (Receipts)	रकम (Amt.)	भुगतान (Payments)	रकम (Amt.)
	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
रोकड़ शेष (1-4-2005) (To Cash) in hand on 1st April, 2005	7,000	दवाएँ (By Payments for Medicines)	30,000
चन्दा (To Subscriptions)	50,000	चिकित्सकों को मानदेय (By Honorium to doctors)	10,000
दान (to Donations)	14,500	वेतन (By Salaries)	27,500
7% विनियोगों पर ब्याज (To Interest to Investments at 7% for the year)	7,000	विविध व्यय (By Sundry Exp.)	500
चैरिटी शो से प्राप्ति (To Charity show proceeds)	10,000	उपस्कर क्रय (By Equipments Purchased)	15,000
		चैरिटी शो के व्यय (By Charity show expenses)	1,000
		रोकड़ शेष (31.3.2006) (By Cash in hand on 31st March, 2006)	4,500
	88,500		**88,500**

अतिरिक्त सूचनाएँ (Additional Information)

	On 1.4.2005	On 31.3.2006
	रु. (Rs.)	रु. (Rs.)
देय चन्दा (Subscription due)	500	1,000
अग्रिम प्राप्त चन्दा (Subscription received in Advance)	1,000	500
दवाओं का स्कन्ध (Stock of medicines)	10,000	15,000
दवा आपूर्तिदाताओं को देय राशि (Amount due to medicine suppliers)	8,000	12,000
साज-सामान का मूल्य (Value of equipments)	21,000	30,000
भवन का मूल्य (Value of building)	40,000	38,000

बनाइए :

(i) 31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष का आय एवं व्यय खाता, तथा

(ii) चिट्ठा।

Prepare :

(a) Income and Expenditure Account for the year ended 31st March, 2006 and

(b) Balance Sheet

Solution :

Free Medical Aid Society

Income and Expenditure Account

(For the year ending 31st March, 2006)

Expenditure	Amount	Income	Amount
	Rs.		Rs.
To Medicines Consumed	25,000	By Subscription	51,000
To Medicines Consumed		By Donations	14,500
(purchased on Credit from		By Interest on investments	7,000

suppliers)	4,000	By Charity show proceeds	10,000
To Honorarium to doctors	10,000		
To Salaries	27,000		
To Sundry expenses	500		
To Charity show expenses	1,000		
To Depreciation on Equipments	6,000		
To Depreciation on building	2,000		
To Excess of income over expenditure	6,500		
	82,500		**82,500**

NOTES

Free Medical Aid Society
Balance Sheet
(As on 31st March, 2006)

Liabilities		Amount	Assets	Amount
		Rs.		**Rs.**
Capital fund	1,69,500		Buildings	38,000
Add : Surplus	6,500	1,76,000	Equipments	30,000
Amount due to medicines			Investments	1,00,000
suppliers		12,000	Subscription due	1,000
Subscription received in advance		500	Stock of medicines	15,000
			Cash in hand	4,500
		1,88,500		**1,88,500**

Notes to the Solution :

		Rs.
1.	Calculation of Medicines Consumed :	
	Opening stock of medicines	10,000
	Add : Purchased during the year	30,000
		40,000
	Less : Stock on 31.3.2006	15,000
		25,000
2.	Medicines purchased on Credit	
	Amounts due to medicine suppliers on 31.3.2006	12,000
	Less : Amounts due on 1.4.2005	8,000
		4,000
3	Calculation of Depreciation on Equipment :	
	Equipment balance on 1.4.2005	21,000
	Add : Purchased during the year	15,000
		36,000
	Less : Balance of Equipment as on 31.3.2006	30,000
	Depreciation during the year	6,000
4	Calculation of Depreciation on Buildings :	
	Value of building on 1.4.2005	40,000
	Less : Value of building on 31.3.2006	38,000
	Depreciation during the year	2,000
5.	Calculation of subscriptions	
	Subscriptions received during the year	50,000
	Add : Outstanding on 31.3.2006	1,000
	Add : Received in Advance on 1.4.2005	1,000

NOTES

		52,000
Less : Outstanding on 1.4.2005	500	
Less : Received in advance on 31.3.2006	500	1,000
Subscription pertaining to current year		51,000

6. Calculation of capital funds as on 1.4.2005

Balance Sheet

(As on 1.4.2005)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Amounts due to medicines suppliers	8,000	Building	40,000
Subscription received in advance	1,000	Equipments	21,000
Capital fund (Balancing figure)	1,69,500	Stock of Medicines	10,000
		Subscriptions due	500
		Investment	1,00,000
		Cash in hand	7,000
	7,78,500		**7,78,500**

7. Value of Investment .

$$\text{Rs. } 7{,}000 \times \frac{100}{7} = \text{Rs. } 1{,}00{,}000.$$

Illustration : 12 31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए एक क्लब का आय-व्यय लेखा निम्नानुसार है:

आय-व्यय लेखा

(31मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए)

व्यय	रु.	आय	रु.
वेतन से	43,995	दान को	26,397
सामान्य व्यय से	12,570	चन्दा को	50,280
सम्पत्तियों पर अवक्षयण से	7,542		
वर्ष में अतिरेक से	12,570		
	76,677		**76,677**

निम्नलिखित मदों को समायोजन भी किया गया है:

वर्ष 2004-05 को अदत्त चन्दा 1 अप्रैल, 2005 को 5,208 रु. में से वर्ष 2005-06 में सिर्फ 4,525 रु. की राशि ही प्राप्त हो सकी। अग्रिम प्राप्त चन्दा 31 मार्च, 2005 को 1,257 रु. तथा 31 मार्च, 2006 को 1,005 रु. रहा। वर्ष 2005-06 में 31 मार्च, 2006 को अदत्त चन्दा 1,760 रु. रहा। 1 अप्रैल, 2005 को विविध सम्पत्तियाँ 65,364 रु. तथा 31 मार्च, 2006 का अवक्षयण के पश्चात् विविध सम्पत्तियाँ 67,878 रु. की रहीं। 31 मार्च, 2006 को हाथ में रोक 16,592 रु. थी।

The following is the Income and Expenditure Account of a club for the year ended 31st March, 2006.

Income and Expenditure Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Expenditure	Rs.	Income	Rs.
To Salaries	43,995	By Donations	26,397
To General Expenses	12,570	By Subscription	50,280
To Depreciation of Assets	7,542		
To Surplus for the Year	12,570		
	76,677		**76,677**

Adjestments were also to be made for the following items :

Subscriptions for 2004-05 Outstanding on 1st April, 2005 Rs. 5,208 but Rs. 4,525, on this amount were realised in 2005-06. Subscriptions received in advance on 31st March, 2005 were Rs. 1,257 and 31st March, 2006 were Rs. 1,005. Subscriptions for 2005-06 Outstanding at 31st March, 2006 were Rs. 1,760.

Sundry Assets on 1st April, 2005 were Rs. 65,364, Sundry Sundry assets (after depreciation) were Rs. 67,878 on 31st March, 2006. Cash in hand on 31st March, 2006 Rs. 16,592.

Solution :

Receipts and Payments Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Receipts	Rs.	Payments	Rs.
To Balance b/d (Balancing figure)	4,023	By Salaries	43,995
To Subscription	52,793[1]	By General Expenses	12,570
To Donation	26,397	By Assets (Purchased)	10,056[2]
		By Balance c/d	16,592
	83,213		**83,213**

		Rs.
(1)	**Calculation of Subscription received during the year :**	Rs.
	Subscription as per Income and Expenditure Account	50,280
	Add : Advance received in Current Year	1,005
		51,285
	Add : Outstanding on Previous Year	4,525
		55,810
	Less : Advance received in Previous Year	1,257
		54,553
	Less : Outstanding on Current Year	1,760
	Subscription to be debited in Receipts & Payments A/c	52,793
(2)	**Calculation of Purchases of Fixed Assets :**	Rs.
	Value of the Assets of the end of the year	67,878
	Add : Depreciation charged during the year	7,542
		75,420
	Less . Value of the assets of the beginning of the year	65,364
	Assets purchased during the year	**10,056**

Illustration : 13 निम्न आय-लेखा से 31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति-भुगतान लेखा तैयार कीजिए:

From the following Income and Expenditure Account, prepare Receipts and Payments Account for the year ended 31st March, 2006

आय-व्यय लेखा

(Income & Expenditure Account)

(31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए)

(For the year ended 31st March, 2006)

व्यय (Expenditure)	रु. (Rs.)	आय (Income)	रु. (Rs.)
वेतन से (Salaries)	4,000	दान को (Donations)	8,000
व्यय से (Expenses)	6,000	चन्दा (Subscription)	20,000
दर एवं कर से (Rates & Taxes)	1,000		
अवक्षयण से (Depreciation)	1,800		
आय का व्यय पर आधिक्य (Excess of Income over Expenditure)	15,200		
	28,000		**28,000**

NOTES

अतिरिक्त सूचना (Additional Information) :

	1 अप्रैल, 2005 (1st April, 2005) रु. (Rs.)	31 मार्च, 2006 (31st March, 2006) रु. (Rs.)
स्थिर सम्पत्तियाँ (Fixed Assets)	18,000	20,000
अदत्त चन्दा (Subscriptions Outstanding)	4,000	6,000
अग्रिम प्राप्त चन्दा (Subscriptions received in Advance)	—	3,000
अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)	200	400
हाथ में रोक (Cash in hand)	2,000	?
बैंक में रोक (Cash at Bank)	200	14,200

Solution :

Receipts and Payments Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Receipts	Amount	Payments	Amount
	Rs.		Rs.
To Opening Balance :		By Salaries	4,000
Cash in hand	2,000	By Expenses	5,800[2]
Cash at Bank	200	By Rate & Taxes	1,000
To Donations	8,000	By Fixed Assets	3,800[3]
To Subscriptions	21,000[1]	By Cash at Bank	14,200
		By Cash in hand (Bal. figure)	2,400
	31,200		**31,200**

Note : **(1) Calculation of Subscription received :**

[(20,000 + 3,000 + 4,000) – 6,000] = Rs. 21,000

(2) Calculation of Total Expenses :

[(6,000 + 200) – 400] = Rs. 5,800

(3) Calculation of Fixed Assets purchased :

[(20,000 + 1,800) – 18,000] = Rs. 3,800

Illustration : 14 स्टार क्लब आपको निम्न सूचनाएँ देता है

आय-व्यय लेखा

(31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए)

व्यय	रु.	आय		रु.
प्रशिक्षक का पारिश्रमिक में	12,500	चन्दा को	रु.	62,500
कर्मचारियों का वेतन में	20,000	मद्यशाला (बार) में प्राप्ति को	12,000	
मैदान का किराया में	7,000	घटाया व्यय	10,000	2,000
मरम्मत में	6,500	प्रयुक्त किटों का विक्रय को		2,000
विविध व्यय में	3,500	हॉल का किराया को		6,000
मैदान का अनुरक्षण में	9,000			
फर्नीचर पर अवक्षयण में	1,500			
आयों का व्ययों पर आधिक्य	12,500			
	72,500			**72,500**

चिट्ठा
(31 मार्च, 2005 तथा 31 मार्च, 2006 को)

31 मार्च, 2005 को	दायित्व	31 मार्च, 2006 को	31 मार्च, 2005 को	सम्पत्तियाँ	31 मार्च, 2006
रु.		रु.	रु.		रु.
44,000	पूँजी कोष	62,500	21,000	फर्नीचर	19,500
4,000	अग्रिम प्राप्त चन्दा	3,000	6,000	अदत्त चन्दा	8,000
1,500	विविध व्यय	1,000	22,500	सावधि जमा	30,000
2,000	कर्मचारी वेतन	3,000	—	बैंक में रोक	4,000
3,000	मैदान का किराया	2,000	5,000	हाथ में रोक	10,000
54,500		**71,500**	**54,500**		**71,500**

NOTES

कर्मचारियों का वेतन, विविध व्यय तथा मैदान का किराया जो मार्च, 2005 को देय था, 31 मार्च 2006 वर्ष के दौरान चुका दिया गया। अग्रिम प्राप्त चन्दा आगे आने वाले वर्षों के लिए है। मार्च, 2001 में देय चन्दा मार्च, 2006 से पूर्व पूर्णतः प्राप्त हुआ।

पूँजी कोष में होने वाली वृद्धि का कारण 31 मार्च, 2006 वर्ष के दौरान अर्जित हुए अतिरेक के अतिरिक्त 6,000 रु. प्रवेश शुल्क की प्राप्ति है।

31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए स्टार क्लब का प्राप्ति-भुगतान (शोधन) लेखा तैयार कीजिए।

Star Club gives you the following informations :

Income and Expenditure Account

(For the year ended 31st March, 2006)

Expediture	Rs.	Income		Rs.
To Coach Remuneration	12,500	By Subscription	Rs.	62,500
To Staff Salaries	20,000	By Bar Receipts	12,000	
To Rent for Ground	7,000	Less : Expenses	10,000	2,000
To Repairs	6,500	By Sale of used Kits		2,000
To Sundry Expenses	3,500	By Rent of Hall		6,000
To Ground Maintenance	9,000			
To Depreciation of Furniture	1,500			
To Excess of Income over Expenditure	12,500			
	72,500			**72,500**

Balance Sheet

(As on 31st March, 2005 and 31st March, 2006)

31st March, 2005	Liabilities	31st March, 2006	31st March, 2005	Assets	31st March, 2006
Rs.		Rs.	Rs.		Rs.
44,000	Capital Fund	62,500	21,000	Furniture	19,500
4,000	Subscription received in Advance	3,000	6,000	Outstanding Subscription	8,000
1,500	Sundry Expenses	1,000	22,500	Fixed Deposit	30,000
2,000	Staff Salaries	3,000	—	Cash at Bank	4,000
3,000	Rend of Ground	2,000	5,000	Cash in hand	10,000
54,500		**71,500**	**54,500**		**71,500**

Staff Salaries, Sundry Expenses and Ground Rent due in March, 2001 had been paid during the year ended 31st March, 2006. Subscription received in advance is in respect of subsequent year. Subscription due in March, 2005 received in full before March, 2006.

The increase in capital fund was due to receipts of entrance fee of Rs. 6,000 during the year ended 31st March, 2006 in addition to the surplus earned.

Prepare the Receipts and Payments Account of Star Club for the year ended 31st March, 2006.

Solution :

Receipts and Payments Account of Star Club

(For the year ended 31st March, 2006)

Receipts		Rs.	Payments		Rs.
To Opening Balances :			By Coach Remuneration		12,500
Cash in hand		5,000	By Staff Salaries :	Rs.	
To Entrance Fees		6,000	(2005)	2,000	
To Subscription :	Rs.		(2006)	17,000[2]	19,000
(2005)	6,000		By Ground Rent :		
(2006)	50,500[1]		(2005)	3,000	
(2007)	3,000	59,500	(2006)	5,000[3]	8,000
To Sale of Kits		2,000	By Repairs		6,500
To Hall Rent		6,000	By Sundry Expenses :		
To Bar Receipts		12,000	(2005)	1,500	
			(2006)	2,500[4]	4,000
			By Ground Maintenance		9,000
			By Bar Expenses		10,000
			By Fixed Deposit		7,500[5]
			By Closing Balance		
			Cash in hand		10,000
			Cash at Bank		4,000
		90,500			**90,500**

Notes :

1. Rs. 62,500 – 8,000 – 4,000 = Rs. 50,500
2. Rs. 20,000 – 3,000 = Rs. 17,000
3. Rs. 7,000 – 2,000 = Rs. 5,000
4. Rs. 3,500 – 1,000 Rs. 2,500
5. Rs. 30,000 - 22,500 = Rs. 7,500

Illustration : 15 31 मार्च, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए जैन स्पोर्ट्स क्लब का आय-व्यय लेखा निम्नानुसार है :

व्यय	रु.	आय	रु.
वेतन में	60,000	चन्दा को	80,000
छपाई एवं स्टेशनरी में	2,700	प्रवेश शुल्क को	5,000
किराया में	8,000	वार्षिक रात्रि भोज हेतु अंशदान को	10,000
मरम्मत में	3,300	वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता में लाभ को	10,000
विविध व्यय से	4,000		
वार्षिक रात्रि भोज पर लागत में	15,000		

बैंक को ब्याज से	3,000		
क्रीड़ा उपकरणों पर आवक्षयण से	3,000		
आयों का व्ययों पर आधिक्य (अतिरेक)	6,000		
	1,05,000		**1,05,000**

NOTES

निम्न समायोजनों पश्चात् लेखा तैयार किया गया है -

अदत्त चन्दा 31 मार्च, 2005 को 6,000 रु.;

अग्रिम रूप में प्राप्त चन्दा 31 मार्च, 2005 को 4,500 रु.;

अग्रिम रूप में प्राप्त चन्दा 31 मार्च, 2006 को 2,700 रु.;

अदत्त चन्दा 31 मार्च, 2006 को 7,500 रु.।

वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ एवं अन्त में अदत्त वेतन क्रमशः 4,000 रु., तथा 5,000 रु. था विविध व्ययों में पूर्वदत्त बीमा के 600 रु. शामिल है।

क्लब के पास 1,00,000 रु. मूल्य की फ्रीहोल्ड मैदान है। 1 अप्रैल, 2005 को क्लब के क्रीड़ा उपकरणों का मूल्यांकन 26,000 रु. किया गया। वर्ष के अन्त में अवक्षयण के पश्चात् क्रीड़ा उपकरणों का मूल्यांकन 27,000 रु. किया गया। क्लब ने 1 सितम्बर, 2004 को बैंक से 20,000 रु. का ऋण लिया था जो 31 मार्च, 2006 तक नहीं चुकाया गया था। 31 मार्च, 2006 को हाथ में रोक का शेष 16,000 रु. था।

31 मार्च, 2006 के समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति-भुगतान (शोधन) लेखा तथा 31 मार्च, 2006 का चिट्ठा तैयार कीजिए।

The Income and Expenditure Account of Jain Sports Club for the year ended 31st March, 2006 is as follows :

Expenditure	Rs	Income	Rs.
To Salaries	60,000	By Subscriptions	80,000
To Printing and Stationery	2,700	By Entrance Fees	5,000
To Rent	8,000	By Contribution for Annual Dinner	10,000
To Repairs	3,300		
To Sundry Expenses	4,000	By Profit on Annual Sport Meet	10,000
To Annual Dinner Expenses	15,000		
To Interest to Bank	3,000		
To Depreciation on Sports Equipment	3,000		
To Excess of Income over Expenditure (Surplus)	6,000		
	1,05,000		1,05,000

The Account had been prepared after the following adjustments :

Subscription Outstanding on 31st March, 2005 Rs. 6,000,

Subscription received in Advance on 31st March, 2005 Rs. 4,500,

Subscription received in Advance on 31st March, 2006 Rs. 2,700,

Subscription Outstanding on 31st March, 2006 Rs. 7,500

Salaries outstanding at the beginning and the end of the financial year were Rs. 4 000 and Rs. 5,000 respecively. Sundry expenses include insurance prepaid Rs. 600. The club owned a freehold ground valued Rs. 1,00,000. The club has sports equipments on 1st April, 2005 valued at Rs. 26,000. At the end of the year after depreciation the sport equipments amounted to Rs. 27,000. The club reised a loan from bank Rs. 20,000 on 1st September, 2000 which was not paid on 31st March, 2006. On 31st March, 2006, cash in hand amounted to Rs. 16,000.

Prepare the Receipts and Payments Account of the club for the year ended 31st March, 2006 and Balance Sheet as on 31st March, 2006.

NOTES

Solution :

Receipts and Payments Account of Jain Sports Club

(For the year ended 31st March, 2006)

Receipts	Rs.	Payments	Rs.
To Balance b/d :		By Salary	
Cash in hand (Bal. figure)	13,900	(60,000 + 4,000 – 5,000)	59,000
To Subscription	79,700[2]	By Printing & Stationery	2,700
To Entrance Fees	5,000	By Rent	8,000
To Contribution for Annual Dinner	10,000	By Repairs	3,300
To Excess of Annula Sports		By Sundry Expenses	4,600
meet over Expenditure	10,000	By Annual Dinner Expenses	15,000
		By Interest to Bank	3,000
		By Sport Equipment	4,000[3]
		By Balance c/d :	
		Cash in hand	16,000
	1,15,600		**1,15,600**

Balance Sheet of Jain Sports Club

(As on 31st March, 2006)

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
		Rs.	Freehold Ground	Rs.	1,00,000
Capital Fund	1,17,400[1]		Sports Equipment	26,000	
Add : Excess of Income			*Add :* Additions	4,000	
over Expenditure	6,000	1,23,400		30,000	
Bank Loan		20,000	*Less :* Depreciation	3,000	27,000
Outstanding Salaries		5,000	Subscription in Arrear		7,500
Subscription in Advance		2,700	Prepaid Insurance		600
			Cash in hand		16,000
		1,51,100			**1,51,100**

Note : 1. Calculation of Capital Fund :

Balance Sheet

(As on 1st April, 2005)

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Subscription in Advance	4,500	Cash in hand	13,900
Outstanding Salaries	4,000	Subscription in Arrear	6,000
Bank Loan	20,000	Sports Equipment	26,000
Capital Fund (Balancing Figure)	1,17,400	Freehold Gound	1,00,000
	1,45,900		1,45,900

2. Rs. 80,000 + 6,000 + 2,700 – 7,500 – 4,500 = Rs. 76,700

3. Rs. 27,000 + 3,000 – 26,000 = Rs. 4,000

Illustration : 16 भोपाल क्लब के निम्न प्राप्ति व भुगतान खाते से 31-12-2005 को समाप्त हुए वर्ष का आय-व्यय खाता तथा इसी तिथि का आर्थिक-चिट्ठा बनाइए।

From the following Receipts and Payments a/c of Bhopal Club, prepare Income and Expenditure a/c for the year ended 31.12.2005 and its Balance Sheet as on that date :

प्राप्तियाँ (Receipts)	राशि (Amount)	भुगतान (Payments)	राशि (Amount)
	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
हाथ में रोकड़ (Cash in hand)	4,000	वेतन (Salary)	2,000
बैंक में रोकड़ (Cash in Bank)	10,000	मरम्मत व्यय (Repair Expenses)	500
दान (Donation)	5,000	फर्नीचर क्रय (Purchases of Furniture)	6,000
चन्दे (Subscriptions)	12,000		
प्रवेश शुल्क (Entrance Fees)	1,000	विविध व्यय (Misc. Expenses)	500
विनियोग पर ब्याज (Interest on Investment)	100	विनियोगों का क्रय (Purchases of Investment	6,000
बैंक से ब्याज प्राप्ति (Interest received from bank)	400	बीमा-प्रीमियम (Insurance Premium)	200
पुराने अखबारों की बिक्री (Sale of Old Newspaper)	150	बिलियर्ड टेबिल (Billiard Table)	8,000
		कागज स्याही आदि (Paper, Ink, etc.)	150
ड्रामा टिकटों की बिक्री (Sale of Drama Tickets	1,050	नाटक-व्यय (Drama expenses)	500
		हाथ में रोकड़ अन्तिम (Cash in Hand Closing)	2,650
		बैंक में रोकड़ (अन्तिम) (Cash at Bank (Closing)	7,200
	33,700		33,700

NOTES

सूचनाएँ (Information)

(1) बकाया चन्दे 2000 के लिए 900 रु. तथा अग्रिम चन्दे 2005 के लिए 350 रु. के है।

(2) अदत्त बीमा प्रीमियम 40 रु.।

(3) पूर्वदत्त विविध व्यय 90 रु।

(4) 50% दान को पूँजीगत बनाना है।

(5) प्रवेश शुल्क की राशि आगम-आय मानी जाय।

(6) 5 माह के लिए विनियोगों पर 8% वार्षिक ब्याज देय है।

(7) बिलियर्ड टेबिल गत वर्ष में 30,000 रु. लागत की खरीदी गई इसके लिए 22,000 रु. का भुगतान किया गया था।

(1) Subscription in arrer for 2000 Rs. 900 and subscriptions in advance for 2005 Rs. 350

(2) Insurance Premium Outstanding Rs. 40.

(3) Misc. Expenses Prepaid Rs. 90

(4) 50% of donation is to be capitalised.

(5) Entrance Fees are to be treated as revenue income

(6) 8% p.a. interest has accrued on investment for five months

(7) Billiard Table costing Rs. 30,000 was purchased during the last year and Rs. 22,000 were paid for it.

NOTES

Solution :

Income & Expenditure Account
(For the year ended 31.12.2005)

Dr.					Cr
		Rs.			**Rs.**
To Salary		2,000	By Donation		2,500
To Repair Expenses		500	By Subscription	12,000	
To Miscellaneous			*Add* : Outstanding	900	
Expenses	500			12,900	
Less : Prepaid	90	410	*Less* : Advance		
To Insurance premium	200		received	350	12,550
Add : Outstanding	40	240	By Entrance Fees		1,000
To Paper & Ink etc.		150	By Interest on		
To Drama Expenses		500	Investment	100	
To Surplus transferred to			*Add* : Accured	200	300
capital fund		14,150	By Interest Received		
			from Bank		400
			By Sale of old newspaper		150
			By Sale of drama tickets		1,050
		17,950			**17,950**

Balance Sheet
(As at 31.12.2005)

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Capital fund	36,000		Furniture	6,000
Add : Donation	2,500		Investments	6,000
Add : Surplus	14,150	52,650	Billiard Table	30,000
Subscription Received in			Cash in hand	2,650
advance		350	Cash in hand	7,200
Insurance Premium Outstanding		40	Subscription Outstanding	900
			Prepaid Miscellaneous Expenses	90
			Accrued Interest	200
		53,040		53,040

Working Notes :

1. Calculation of Opening Capital Fund

Balance Sheet
(As at 31.12.2004)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Creditors for Billiard Table	8,000	Cash in hand	4,000
Capital Fund (balancing figure)	36,000	Cash at Bank	10,000
		Billiard Table	30,000
	44,000		44,000

* Accrued Interest = Rs. $6,000 \times 8/100 \times 5/12$ = Rs. 200 (for 5 months)

Illustration : 17 एक क्लब के निम्न आय तथा व्यय खाते व आर्थिक चिट्ठे से 31-3-2005 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्राप्ति तथा भुगतान खाता तथा चन्दा खाता तैयार कीजिए।

NOTES

From the following Income and Expenditure Account and the Balance Sheet of a Club, prepare its receipts and Payments Account and Subscription Account for the year ending on 31st March, 2005.

Dr. **Income and Expenditure Account** **Cr.**

(For the year 2004-05)

व्यय (Expenditure)	राशि (Amount)	आय (Income)	राशि (Amount)
	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
भूमि रख-रखाव (To Upkeep of		चन्दे (By Subscriptions)	17,320
Ground)	10,000	रद्दी अखबारों की बिक्री (By Sale	
छपाई (To Printing)	1,000	on Newspaper (Old))	260
वेतन (Salaries)	11,000	व्याख्यान (By Lectures)	1,500
फर्नीचर पर ह्रास (To Depreciation		प्रवेश शुल्क (By Entrance Fee)	1,300
on Furniture)	1,000	विविध आय (By Miscellaneous	
किराया (To Rent)	600	Income)	400
		कमी (By Deficit)	2,820
	23,600		**23,600**

Balance Sheet

(As on 31st March, 2005)

दायित्व (Liabilities)		राशि (Amount)	सम्पत्ति (Assets)	राशि (Amount)
		रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
अग्रिम चन्दे (Advance			फर्नीचर (Furniture)	9,000
Subscription)		100	भूमि व भवन (Ground and)	
पुरस्कार फण्ड (Prize Fund) .			Building)	47,000
आरम्भिक शेष (Opening			पुरस्कार फण्ड विनियोग (Prize	
Balance)	25,000		Fund Investments)	20,000
जोड़े ब्याज			हाथ में रोकड़ (Cash in hand)	2,300
(*Add* : Interest)	1,000		अदत्त चन्दे (Outstanding	
	26,000		Subscriptions)	700
घटाया : पुरस्कार व्यय				
(*Less* : Prize Expenses)	2,000	24,000		
सामान्य फण्ड (General Fund)				
प्रारम्भिक शेष (Opening				
Balance)	56,420			
घटाया कमी (Deficit)	2,820			
	53,600			
जोड़े प्रवेश शुल्क				
(*Add* Entrance Fee)	1,300	54,900		
		79,000		79,000

उपरोक्त खातों में निम्न समायोजन किये गये :

(अ) भूमि-रख-रखाव के 600 रु. तथा छपाई के 240 रु. 2003-04 से सम्बन्धित, 2004-05 में भुगतान किये गये।

(ब) प्रवेश-शुल्क का आधा सामान्य फण्ड में हस्तान्तरण द्वारा पूँजीगत किया गया।

(स) 2003-04 के लिए चन्दे अदत्त 800 रु. तथा 2004-05 के लिए 700 रु. थे।

(द) अग्रिम प्राप्त चन्दे 2003-04 में 200 रु. तथा 2004-05 में 2005-06 के लिए 100 रु. थे।

The following adjustment have been made in the above accounts : (a) Upkeep of ground Rs. 600 and Printing Rs. 240 relating to 2003-04 were paid in 2004-05. (b) One-half of entrance fee has been capitalised by transfer to General Fund. (c) Subscriptions outstanding in 2003-04 was Rs. 800 and for 2004-05 Rs. 700. (d) Subscription received in advance in 2003-04 was Rs. 200 and in 2004-05 for 2005-06 Rs. 100.

Solution :

Receipts and Payments Account
(For the year endind on 31st March, 2005)

Receipts	Amount	Payments	Amount
	Rs.		**Rs.**
To Balance b/d		By Upkeep of Ground	
(Balancing figure)	4,660	(Rs. 10,000 + Rs. 600)	10,600
To Subscription	17,320	By Printing	
To Interest on Prize Fund		(Rs. 1,000 + Rs. 240)	1,240
Investments	1,000	By Salaries	11,000
To Lecture Fee	1,500	By Rent	600
To Entrance Fee	2,600	By Prizes	2,000
To Sale of Newspaper (Old)	260	By Balanced c/d	2,300
To Miscellaneous Income	400		
	27,740		**27,740**

Working Note :

Dr. Subscription Account Cr.

	Rs.		**Rs.**
To Outstanding Subscription a/c		By Advance Subscription a/c	
(in the beginning)	8000	(in the beginning)	200
To Advance Subscription a/c		By Cash (Balance figure)	17,320
(at the end)	100	By Outstanding Subscription	
To Income and Expenditure a/c	17,320	(at the end)	700
	18,220		**18,220**

बोध प्रश्न

1. अलाभकारी संस्था से आशय बताइये?

....

....

....

2. गैर व्यवसायिक संगठनों का वर्गीकरण कीजिये?

....

....

....

3. प्राप्ति एवं भुगतान लेखे और रोकड़ पुस्तक में अन्तर कीजिये?

....

4.6 अभ्यास के लिए प्रश्न (Assignment Material)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions)

1. प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय-व्यय खाते में अन्तर स्पष्ट कीजिए। एक प्राप्ति एवं भुगतान खाते को आप किस प्रकार आय-व्यय खाते में परिवर्तित करेंगे?

   Distinguish between Receipt and Payment Account and Income & Expenditure Account. How will you convert the Receipt and Payment Account into an Income & Expenditure Account ?

2. एक गैर-व्यावसायिक संगठन के अन्तिम खाते में आप (i) दान—सामान्य एवं विशिष्ट, तथा (ii) वसीयत का व्यवहार किस प्रकार करेंगे?

   How would you deal with (i) Donations—General & Specific and (ii) Legacy in the final accounts of a non-trading organisation ?

3. आप आगम एवं शोधन खाते को आय-व्यय खाते में किस प्रकार परिवर्तित करेंगे और ऐसा करने के लिए आप क्या अतिरिक्त सूचनाएँ चाहेंगे ?

   How would you convert the Receipt & Payment Account into Income & Expenditure Account and what additional informations would you require to do so ?

4. आगम तथा शोधन खाते व आय एवं व्यय खाते में दिखायी जाने वाली पाँच मदों की व्याख्या कीजिए।

   Give the explanation of five items that are shown in the Receipt & Payment account and Income & Expenditure account.

5. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:

   (i) आय-व्यय खाता, (ii) प्राप्ति एवं भुगतान खाता, (iii) पूँजी कोष, (iv) चन्दे, (v) पेशेवर व्यक्तियों की लेखा-पुस्तकें।

   Write short notes on following :

   (i) Income & Expenditure account (ii) Receipt & Payment account, (iii) Capital Fund, (iv) Subscriptions, (v) Account books of Professional men.

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

1. निम्न प्राप्ति एवं भुगतान खाते तथा अतिरिक्त सूचनाओं से वर्ष 2005 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए चन्दों से आय की गणना कीजिए तथा इन्हे क्लब के आय-व्यय खाते तथा आर्थिक-चिट्ठे में दिखाइए

From the following extracts of Receipts and Payments Account and additional information, you are required to calculate the income from subscriptions for the year ending December, 2005 and show them in the Income and Expenditure Account and the Balance sheet of a Club:

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

(Receipt And Payments Account)

(For the year ending December 31,2005)

प्राप्तियाँ (Receipts)		रकम (Amount)	भुगतान (Payments)	रकम (Amount)
		रु (Rs.)		
चन्दे (To Subscriptions)				
2004	5,000			
2005	30,000			
2006	6,000	41,000		

अतिरिक्त सूचनाएँ :	रु
(i) 31.12.2004 को अदत्त चन्दे	6,000
(ii) 31.12.2005 को अदत्त चन्दे	5,000
(iii) 31.12.2006 को अग्रिम प्राप्त चन्दे	6,000

Additional Information :

	Rs.
(i) Subscription outstanding on December 31, 2004	6,000
(ii) Subscription outstanding on December 31, 2005	5,000
(iii) Subscriptions Received in Advance on December 31, 2004	6,000

Ans. Total subscription Rs. 400.

NOTES

2. निम्न विवरण तथा टिप्पणियों से यंग क्लब के 31.12.2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अन्तिम खाते तैयार कीजिए। 1 जनवरी, 2000 को क्लब की सम्पत्तियाँ है फ्रीहोल्ड क्लब हाउस 20,000 रु., उपकरण 1,400 रु. बकाया क्लब चन्दे 160 रु. क्लब 800 रु. से एक फर्म का ऋणी है जो 2005 के क्रिसमस पार्टी से सम्बन्धित है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाते का वर्ष 2000 का सारांश

प्राप्तियाँ	रकम	भुगतान	रकम
रु.		रु.	
हस्तगत रोकड़	1,520	केटरिंग—2005 डांस	800
चन्दे	3,280	2006—डांस तथा सोशल	1,900
लॉकर किराया	200	2006 के डांस की बैंड फीस	500
डांस तथा सोशल से प्राप्तियाँ	2,780	नयी लॉन मोवर	1,060
प्रयोग की टेनिस बॉल की बिक्री	300	टेनिस नेट्स की मरम्मत	380
पुरानी लॉन मोवर का विक्रय	160	मैच टेनिस बाल	620
		मैच व्यय	340
		क्लब घर की मरम्मत तथा सजावट	1,300
		शेष	1,340
	8,240		**8,240**

नोट—

(1) 1 जनवरी 2006 को वर्ष के दौरान बेची गई पुरानी लॉन मोवर का पुस्तक मूल्य 60 रु. था।

(2) क्लब के 40 सदस्य है तथा चन्दा 80 रु. प्रति वर्ष प्रति सदस्य है। 2006 में प्राप्त चन्दे में 2005 की बकाया राशि भी है।

(3) 31.12.2006 को प्लेफेयर लि. के 220 रु. टेनिस बाल की पूर्ति के ऋणी है।

(4) 31.12.2006 को उपकरण 15% प्रतिवर्ष की दर से ह्रास के लिए अपलिखित करना है।

(5) टेनिस बाल आयगत व्यय से सम्बन्धित है।

From the following details and notes attached relating to the yung Club prepare the final accounts of the yrar ended on 31.12.2006

On 1 January, 2006 the club's assets are :

Freehold Club house Rs. 20,000; Equipment Rs. 1,400; club subscriptions in arrear Rs. 160, The club owed Rs. 800 to a firm for christmas 2005 dance catering

Summary of Receipt and Payments for 2006

Receipts	Amount	Payments	Amount
	Rs.		Rs.
Cash in hand	1,520	Catering—2005 dance	800
Subscriptions	3,280	2006—dance and socials	1,900
Locker Rent	200	Band fees 2006 dances	500
Receipts from dances and socials	2,780	New lawn-mower	1,060
Sale of used match tennis balls	300	Repairs to tennis nets	380
Sale of old lawn-mower	160	Match tennis balls	620

		Match expenses	340
		Repairs and decoration of club house	1,300
		Balance c/d	1,340
	8,240		**8,240**

NOTES

Note :

1. The book value on 1 January, 2006 of the old lawn mower sold during the year was Rs. 60.
2. The club has 40 members and the subscriptions is Rs. 80 each per annum. The subscriptions received in 2006 included those in arrear for 2005.
3. On 31st December, 2006 Rs. 220 was owed to Payfair Ltd. for tennis balls supplied.
4. Equipment as at 31 December, 2006 to be depreciated by 15% p.a.
5. Tennis balls are regarded as revenue expenditure.

Ans. Total Equipment = 1,400 + 1,060 – 60 = Rs. 2,400; Excess of income over expenditure Rs. 960; Total of Balance Sheet Rs. 23,460; Opening Capital Rs. 22,260.

3. 31 मार्च, 2005 वर्ष के लिए सुन्दर क्लब का प्राप्ति तथा भुगतान खाता निम्न है:

प्राप्ति तथा भुगतान खाता

(31.03.2005 को)

दिनांक	प्राप्तियाँ		रकम	दिनांक	भुगतान	रकम
			रु.			रु.
01.4.04	प्रारम्भिक शेष			31.3.05	वेतन	3,000
	हस्तगत रोकड़		2,000	31.3.05	स्टेशनरी	1,000
31.3.05	चन्दे :			31.3.05	कर व दर	300
	2003-04	3,000		31.3.05	टेलीफोन व्यय	1,500
	2004-05	4,000		31.3.05	8% प्रतिभूतियाँ (सम्पत्तियाँ)	5,000
	2005-06	1,000	8,000	31.3.05	विविध व्यय	200
31.3.05	स्पोर्ट्स पर लाभ		3,000	31.3.05	अन्तिम शेष	
31.3.05	8% प्रतिभूतियों पर ब्याज		1,000		हस्तगत रोकड़	3,000
			14,000			**14,000**

निम्न अतिरिक्त तथ्यों का पता लगा :

(अ) क्लब में 500 सदस्य है प्रत्येक 10 रु. वार्षिक चन्दा देता है। 2004-05 के प्रारम्भ में 2003-04 के लिए 3,500 रु. बकाया है। 2003-04 में 30 सदस्यों ने वर्ष 2004-05 का चन्दा अग्रिम दिया।

(ब) स्टेशनरी का स्टॉक 31.3.2004 को 400 रु. तथा 31.3.2006 को 500 रु. था।

(स) कर व दर 31.3.2006 को आने वाली जनवरी तक पूर्वदत्त है इनकी वार्षिक राशि 300 रु. है।

(द) टेलीफोन का एक तिमाही चार्ज अदत्त है जिसकी राशि 300 रु. उदय हुई। 2003-04 तथा 2004-05 को प्रत्येक तिमाही के लिए एक सा चार्ज है।

(य) विविध व्यय 31.3.04 को उदय 50 रु. तथा 31.3.06 को 60 रु. थे।

(र) 31.3.04 को भवन 30,000 रु. का पुस्तकों में था जिसको 10% प्रतिवर्ष की दर से ह्रास लगाकर अपलिखित करना है।

(ल) 31.3.04 को 8% प्रतिभूतियों का मूल्य 15,000 रु. था जो इसी दिन सममूल्य पर क्रय की। 31.3.2005 को 5,000 रु. की अतिरिक्त प्रतिभूतियाँ क्रय की।

आपको तैयार करना है

(i) 31.3.2005 का आय-व्यय खाता,

(ii) इसी दिन का आर्थिक चिट्ठा।

NOTES

The following is the Receipts and Payments Account to Sunder Club in respect of the year to 31 March, 2005.

Receipts and Payments Account

(For the year ended 31st March, 2005)

Date	Recipts		Amount	Date	Payments	Amount
			Rs.			**Rs.**
01.04.04	To Balance b/d			31.3.05	By Salaries	3,000
	Cash in hand		2,000	31.3.05	By Stationery	1,000
31.3.05	To Subscriptions :			31.3.05	By Rates and Taxes	300
	2003-04	3,000		31.3.05	By Telephone Charges	1,500
	2004-05	4,000		31.3.05	By 8% Securities at par	5,000
	2005-06	1,000	8,000	31.3.05	By Sundry Expenses	200
31.3.05	To Profit on sports		3,000	31.3.05	By Balance c/d	
31.3.05	To Interest on 8%			31.3.05	Cash in hand	3,000
	Securities		1,000			
			14,000			**14,000**

The following additional facts are ascertained :

(a) There are 500 members, each paying an annual subscription of Rs. 10; Rs. 3,500; being in arrears for 2003-04 at the beginning of 2004-05. During 2003-04

subscriptions were paid in advance by 30 members for 2004-05

(b) Stock of stationery at 31 March, 2004, was Rs. 400 and at 31 March, 2005, Rs. 500.

(c) At 31st March, 2005, the rates and taxes were prepaid to the following 31 January, the yearly charge being Rs. 300.

(d) A quarter's charge for telephone is outstanding the amount accrued being Rs. 300. The charge for each quarter is same for both 2004-05 and 2005-06.

(e) Sundry Expenses accruing at 31st March, 2004 were Rs. 50 and 31st March, 2005 Rs. 60.

(f) At 31st March. 2004 Building stood in the books at Rs. 30,000 and it is required to write of depreciation at 10% p.a.

(g) Value of 8% Securities at 31 March 2004 was Rs. 15,000 which were purchased at that date at par. Additional Securities worth Rs. 5,000 are purchased on 31 March, 2005.

You are required to prepare :

(i) An Income and expenditure Account for the year ended 31st March, 2005.

(ii) A Balance Sheet at that date.

Ans. Excess of income over expenses Rs. 590. Balance Sheet Rs. 51,150

4. इन्दौर क्लब का 31.12.2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति एवं भुगतान खाता निम्न है

The following is the Receipts and Payments Account of the Indore Club for the year ending 31.12.2006

प्राप्तियाँ (Receipts)	रकम (Amount)	भुगतान (Payments)	रकम (Amount)
	रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
प्रारम्भिक शेष (Opening Balances)		वेतन (Salaries)	6,000
रोकड़ (Cash)	1,025	खेल-व्यय (Sports Expenses)	6,900
टिकट (Stamps)	50	बिजली (Electricity)	1,000
स्थायी जमा-बैंक (Bank F. D.)	10,000	टेलीफोन (Telephone)	1,200
बचत खाता (S. B. Account)	4,200	डाक-व्यय (Postage Expenses)	200

NOTES

चालू-खाता (Cuurent Account)	2,100	साधारण बॉडी व्यय (General Body Expenses)	700
चन्दे (Subscriptions) :		छपाई व स्टेशनरी (Printing and) Stationery)	850
2005	1,010	भवन क्रय खाता (Building Purchase Account)	12,000
2006	18,900	मरम्मत (Repairs)	400
2007	900	अन्तिम शेष (Closing Balances) :	
दान (Donations)	7,000	रोकड़ (Cash)	1,740
बैंक ब्याज प्राप्त (Bank Interest Received)	1,340	टिकट (Stamps)	25
खेल से प्राप्त (Receipts from Sports)	2,600	स्थायी जमा बैंक (Bank F.D.)	11,000
टेलीफोन रिकवरी (Telephone Recoveries)	900	बचत खाता (S. B. Account)	4,310
		चालू खाता (Current Account)	3,700
	50,025		**50,025**

पिछले वर्ष एक भवन 1,00,000 रु. की लागत का क्रय किया परन्तु 88,000 रु. ही भुगतान किये गये।

2006 के लिए अदत्त चन्दे	1,100 रु
अदत्त वेतन	200 रु.
बैंक जमा पर ब्याज उदय परन्तु प्राप्त नहीं हुई	200 रु.

उपरोक्त से वर्ष 2006 का कलकत्ता क्लब का आय-व्यय खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

A Building costing one lac of rupees was purchased during the last year and Rs. 88,000 was paid for it.

Subscription outstanding for 2006	Rs. 1,100
Salaries outstanding	Rs. 200
Interest accrued on Bank deposits but not received	Rs. 200

From the above, prepare Income and Expenditure Account for the year 2006 and also the Balance Sheet as on 31.3.2006 of the Calcutta Club.

Ans. Excess of income over expenditure Rs. 14,590. Balance sheet Rs. 1,22,075.

5. एक डिस्पेन्सरी का निम्न विवरण है:

The one Dispensary had the following .

2006 का आय-व्यय खाता

(Income and Expenditure Account for 2006)

व्यय (Expenditure)		राशि (Amount)	आय (Income)	राशि (Amount)
		रु. (Rs.)		रु. (Rs.)
वेतन (Salaries)		23,500	चन्दे (Subscriptions)	25,000
सर्जरी एवं डिस्पेन्सरी (Surgery & Dispensary)		3,000	ब्याज (Interest)	9,000
किराया व कर (Rent and Taxes)		500	दान (Donations)	4,000
बीमा (Insurance)		200	विविध प्राप्तियाँ (Miscellaneous Receipts)	300
कार्यालय व्यय (Office expenses)		800		
ह्रास (Depreciation)				
भवन (Building)	3,759			
फर्नीचर (Furniture)	120			

उपकरण (Instruments)	100	3,970		
आधिक्य (Surplus)		6,330		
		38,300		**38,300**

NOTES

अन्य सूचनाएँ (Other Information)	31.12.05	31.12.2006
	रु. (Rs.)	रु. (Rs.)
हस्तगत रोकड़ तथा बैंक (Cash in hand and at bank)	?	18,700
सरकारी प्रतिभूतियाँ (अंकित मूल्य 2,00,000 रु.) (Government securities (Face value Rs. 2,00,000))	1,80,000	1,80,000
अदत्त चन्दे (Subscriptions outstanding)	7,000	10,000
अग्रिम प्राप्त चन्दे (Subscriptions received in advance)	200	600
अदत्त वेतन (Salaries unpaid)	1,000	1,500
फर्नीचर (Furniture)	2,000	1,980
भूमि व भवन (Land & Buildings)	2,00,000	1,96,250
उपकरण (Instruments)	3,500	3,900
सर्जरी व्यय देय (Surgery expenses due)	200	300
दवाइयों का स्टॉक (Stock of medicines)	300	100

2006 के लिए प्राप्ति तथा भुगतान खाता तथा आर्थिक चिट्ठा भी बनाइए।

Prepare Receipts and Payments Account for 2006 and also the Balance Sheet.

Ans. Cash in hand and at Bank Rs. 10,800; Balance Sheet Rs. 4,10,930.

6. 31 दिसम्बर, 2006 को भोपाल क्लब के निम्न तलपट से आय तथा व्यय खाता तथा इसी तिथि को आर्थिक चिट्ठा बनाइए। फर्नीचर को 10% से, बिलियर्ड टेबिलों तथा इससे सम्बन्धित सामान को 20% से तथा चाइना ग्लास, कटलरी व अन्य को $33\frac{1}{3}$% से ह्रासित कीजिए। 400 रु. चन्दे के अग्रिम भुगतान किये गये तथा 250 रु. बकाया है।

300 रु. स्टॉफ वेतन के ऋणी है।

From the following Trial Balance, prepare an Income and Expenditure Account of the Bhopal Club for the year ended 31st December, 2006 and a Balance as on that date. Depreciate Furniture by 10%, Billards Tables and accessories by 20% and China Glass, Cutley, etc., by $33\frac{1}{3}$%. Of the subscriptions Rs. 400 is paid in advance and Rs. 250 is in arrears. Rs. 300 is owing for salaries of staff.

डेबिट शेष (Dr. Balances) :	रु. (Rs.)
फर्नीचर (Furniture)	2,500
2004 में खरीदे बिलियर्ड मेज तथा अन्य सामान (Billiards Table & Accessories bought in 2004)	1,250
चाइना ग्लास, कटलरी आदि (China Glass, Cutlery, etc.)	333
मरम्मत (Repairs)	734
वेतन तथा मजदूरी (Salaries and Wages)	2,262
किराया व टेलीफोन (Rent and Telephone)	3,194
ईंधन तथा प्रकाश (Fuel and Light)	1,618
मनोरंजन की लागत (Cost of Entertainment)	2,190
विविध व्यय (Sundry Expenses)	1,600
वार्षिक डिनर की लागत (Cost of Annual Dinner)	760
विविध देनदार (Sundry Debtors)	1,170
बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	4,800

हस्तगत रोकड़ (Cash in hand)	174
क्रेडिट शेष (Cr. Balances) :	**रु. (Rs.)**
सदस्यों के चन्दे (Member's Subscription)	10,560
विलियर्ड से विविध प्राप्तियाँ (Sundry Receipts from Billiards, etc.)	1,743
मनोरंजन की टिकट विक्री (Sale to Tickets for Entertainment)	3,234
विविध लेनदार (Sundry Creditors)	2,600
प्रवेश-शुल्क (Entrance Fees)	448
आय-व्यय खाते का शेष (Income and Expenditure a/c balance)	4,000

Ans. Excess of income over expenses Rs. 2,566; Balance Sheet Rs. 9,866.

NOTES

4.7 सारांश

अलाभकारी संस्थायें वह संस्थायें होती है जिनकी स्थापना का उद्देश्य लाभ कमाना न होकर समाज की सेवा करना व संस्कृति, कला और शिक्षा का सम्बन्धन करना होता है।

गैर व्यापारिक संगठन में संघ, पेशेवर व्यक्ति और गैर व्यापारिक संस्थायें आती है।

- गैर व्यापारिक संस्थायें रोकड़ पद्धित के आधार पर अपने खाते बनाती है। ऐसी संस्थायें प्राप्ति एवं भुगतान खाता, आय-व्यय खाता और आर्थिक चिट्ठा बनाती है।
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता वित्तीय वर्ष के अन्त में बनाया जाता है इसमें वर्ष के दौरान जितनी भी रोकड़ प्राप्त होती है। इसमें लिख दी जाती है। यह खाता रोकड़ बही
- व्यापारिक संस्था अपने व्यापार का लाभ हानि निकालने के लिये आय-व्यय खाता बनाती है यह खाता नाम मात्र खाते की प्रकृति जैसा होता है।

4.8 शब्दावली

अलाभकारी संस्था, संघ, पेशेवर व्यक्ति, प्राप्ति एवं भुगतान खाता, आर्थिक चिट्ठा।

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–5 अपूर्ण अभिलेखों सम्बन्धी लेखे
[ACCOUNTS RELATED WITH INCOMPLETE RECORDS]

NOTES

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 एकल प्रविष्टि प्रणाली से आशय
4.3 परिभाषा
5.4 विशेषतायें
5.5 गुण
5.6 दोष
5.7 द्वि प्रविष्टि प्रणाली एवं एकल प्रविष्टि प्रणाली में अन्तर
5.8 लाभ-हानि की गणना
5.9 शुद्ध लाभ के निर्धारण से पूर्व समायोजन करना तथा चिट्ठा बनाना
5.10 साझेदारी फर्म के लाभ-हानि की गणना
5.11 एकल प्रविष्टि प्रणाली का द्वि प्रविष्टि प्रणाली में परिवर्तन
5.12 महत्वपूर्ण व्यवहारों का लेखांकन
5.13 क्रियात्मक प्रश्न
5.14 सारांश
5.15 शब्दावली

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे -

- एकल प्रविष्टि प्रणाली का आशय एवं विशेषताओं को बता सकेंगे।
- शुद्ध लाभ की गणना तथा चिट्ठा तैयार कर सकेंगे
- एकल प्रविष्टि प्रणाली को द्वि प्रविष्टि प्रणाली में परिवर्तन कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

द्वि-प्रविष्टि प्रणाली लेखा रखने की वैज्ञानिक, पूर्ण एवं शुद्ध प्रणाली है जिसके अन्तर्गत विस्तृत रूप से लेखे रखकर तलपट बनाकर लेखांकन कार्य की गणितीय शुद्धता की जाँच कर ली जाती है तथा तलपट की सहायता से अन्तिम खाते (Final Accounts) तैयार कर लिये जाते है। इस प्रणाली की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें लेखांकन कार्य निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार किया जाता है तथा निश्चित लेखा पुस्तकें तथा बहियाँ रखी जाती है। किन्तु कुछ व्यक्ति एवं संस्थायें द्वि-प्रविष्टि प्रणाली का अनुसरण इसलिए नहीं कर पाते कि उनके व्यवसाय का आकार छोटा होता है तथा उनके व्यवहारों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है। अत: वे द्वि-प्रविष्टि जैसी विस्तृत तथा खर्चीली प्रणाली का प्रयोग व्यावहारिक नहीं समझते।

5.2 एकल प्रविष्टि प्रणाली से आशय

ऐसे व्यक्ति या संस्थायें लेखांकन की एक ऐसी प्रणाली उपयोग मे लाती है जो पूर्णतः द्वि-प्रविष्टि प्रणाली नहीं होती जो रोकड़ पद्धति तथा द्वि-प्रविष्टि प्रणाली का मिलाजुला रूप होती है। इस प्रणाली को एकल प्रविष्टि प्रणाली या इकहरा लेखा प्रणाली कहते हैं।

NOTES

5.3 परिभाषा (Definition)

कोहलर (Kohler) के शब्दों में एकल प्रविष्टि "पुस्तपालन की वह पद्धति है जिसमें केवल रोकड़ तथा व्यक्तिगत खातों का लेखा रखा जाता है, यह सदैव अपूर्ण-द्वि-प्रविष्टि होती है जो परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।"

5.4 प्रमुख विशेषताएँ (Silent Characteristics)

1 **एकल प्रविष्टि प्रणाली के अन्तर्गत** द्वि-प्रविष्टि की भाँति निश्चित सिद्धान्तों का पालन नही किया जाता और न ही निश्चित लेखा पुस्तकें रखी जाती है। व्यापारी अपनी सुविधानुसार केवल आवश्यक व्यवहारों का लेखा करने के लिए कुछ बहियाँ रख लेता है। इस पद्धति मे प्रायः रोकड़ बही तथा एक खाताबही रख ली जाती है। खाताबही में भी केवल व्यक्तिगत खाते (Personal Accounts) ही खोले जाते है। वास्तविक खाते (Real Accounts) तथा नाममात्र के खाते (Nominal Accounts) नहीं खोले जाते है।

2 चूँकि पूर्ण लेखा पुस्तकें तथा समस्त खाते नहीं रखे जाते, अतः प्रत्येक व्यवहार का लेखा द्वि-प्रविष्टि प्रणाली की भाँति दो खातों में नही किया जा सकता। चूँकि वास्तविक खाते तथा नाममात्र के खाते नहीं खोले जाते। अतः इनसे सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा केवल एक ही स्थान पर किया जाता है, उनको दूसरी प्रविष्टि नही होती।

उदाहरण— (क) राम से फर्नीचर उधार खरीदनें पर इसका लेखा केवल राम के खाते में होगा, फर्नीचर खाता (वास्तविक खाता) खोलकर उसमें प्रविष्टि नही होगी। (ख) किराया दिया—इस व्यवहार का लेखा केवल रोकड़ पुस्तक में होगा; किराया खाता (नाम-मात्र का खाता) नही खोला जायेगा।

3 किन्तु एकल प्रविष्टि प्रणाली का यह आशय नहीं कि इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यवहार की केवल एक प्रविष्टि ही की जाती है। चूँकि इस प्रणाली में रोकड़ पुस्तक तथा व्यक्तिगत खाते दोनो रखे जाते है, अतः व्यक्तिगत खातों से सम्बन्धित रोकड़ व्यवहारो का लेखा द्वि-प्रविष्टि प्रणाली की भाँति दोनो खातों में होता है।

उदाहरण—राम को भुगतान करने पर इसका लेखा राम के खाते तथा रोकड़ पुस्तक दोनो में किया जायगा। यही कारण है कि अनेक लेखाकार एकल प्रविष्टि प्रणाली के बजाय 'बहीखाते की अपूर्ण पद्धति' नाम का उपयोग करते हैं।

4 इस प्रणाली के अन्तर्गत चूँकि समस्त खाते नहीं रखे जाते अतः द्वि-प्रविष्टि प्रणाली की भाँति तलपट बनाकर अन्तिम खाते तैयार करना सम्भव नही हो पाता। इस प्रणाली के अनुसार हिसाब-किताब रखने पर लाभ-हानि की गणना करने की एक भिन्न पद्धति का उपयोग करना पड़ता है जिसका उल्लेख आगे किया जायेगा।

5 इस प्रणाली के अन्तर्गत अनेक बार आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रमाणकों (vouchers) पर निर्भर रहना पड़ता है, जैसे उधार बिक्री की जानकारी या तो कुल देनदारों का खाता बनाकर प्राप्त की जा सकती है अथवा व्यापारी मूल बीजकों को अपने पास रखता जाता है तथा अन्त में उनका योग लगाकर उधार विक्रय की कुल राशि ज्ञात कर ली जाती है।

6 इस प्रणाली के अनुसार पुस्तकें ऐसे छोटे व्यापारी या संस्थाएं ही रखती है जो प्रायः एकल-स्वामित्व अथवा साझेदारी के अन्तर्गत कार्य करती है। संयुक्त स्कन्ध कम्पनियाँ इस प्रणाली का अनुसरण नहीं कर सकती, क्योंकि कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत उन्हे पूर्ण लेखे रखना अनिवार्य है।

उपर्युक्त विशेषताओ के आधार पर कहा जा सकता है कि एकल प्रविष्टि प्रणाली रोकड़ लेखा पद्धति तथा द्वि-प्रविष्टि प्रणाली का मिला-जुला रूप है जिसके अन्तर्गत व्यापारी अपनी सुविधानुसार केवल कुछ महत्वपूर्ण लेखा-

पुस्तकें एवं खाते ही रखता है। इस प्रणाली में निश्चित सिद्धान्तों का अनुसरण न करते हुए द्वि-प्रविष्टि प्रणाली को आवश्यकतानुसार समायोजित कर लिया जाता है।

NOTES

5.5 लाभ (Advantages)

एकल प्रविष्टि प्रणाली यद्यपि पूर्ण एवं वैज्ञानिक लेखा प्रणाली नहीं है, तथापि इसकी निम्नलिखित विशेषताओं के कारण इसका उपयोग किया जाता है।

1. ऐसे छोटे व्यापारियों के लिए यह प्रणाली सरल एवं मितव्ययी है जिनके व्यापारिक व्यवहार कम होते है।
2. दोहरे लेखे प्रणाली की जटिलताओं से यह प्रणाली मुक्त है। अतः लेखांकन का साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकते हैं।
3. इस प्रणाली के चूँकि कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है, अतः व्यापारी अपने व्यापार की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओ के अनुसार इसमें समायोजन कर सकता है। अतः यह प्रणाली लोचपूर्ण अधिक है।
4. इस प्रणाली का उपयोग कभी-कभी जानबूझकर अपनी आय छिपाने के उद्देश्य से भी किया जाता है।

5.6 दोष (Defects)

एकल प्रविष्टि प्रणाली के प्रमुख दोष निम्नानुसार है—

1. निश्चित सिद्धान्तों का अनुसरण न करने तथा लेखांकन कार्य में एकरूपता के अभाव के कारण यह प्रणाली अवैज्ञानिक तथा अविश्वसनीय मानी जाती है।
2. इस प्रणाली में सम्पूर्ण खाते नहीं रखे जाते अतः यह प्रणाली अपूर्ण मानी जाती है।
3. इस प्रणाली में केवल व्यक्तिगत खातों को ही महत्व दिया जाता है, वास्तविक तथा नाम-मात्र के खातों को नही खोला जाता। अतः 'लाभ-हानि' का निर्धारण सामान्य रीति से लाभ-हानि खाता बनाकर नहीं किया जा सकता तथा चिट्ठा बनाने में कठिनाई होती'। अन्तिम खाते बनाते समय आवश्यक जानकारी विभिन्न स्रोतों से एकत्रित करनी पड़ती है जिसमें त्रुटि की सम्भावना रहती है। अतः इस पद्धति के अन्तर्गत 'लाभ-हानि का निर्धारण न केवल कष्ट-साध्य होता है, वरन अविश्वसनीय भी होता है'।
4. इस प्रणाली के अन्तर्गत तलपट नहीं बनाया जा सकता अतः 'लेखांकन कार्य की गणितीय शुद्धता की जाँच नही हो पाती'। त्रुटियों को पकड़कर उनका सुधार करना भी अत्यन्त कठिन हो जाता है।
5. छल-कपट, जालसाजी आदि की सम्भावनाएं अधिक रहती है क्योंकि न तो समस्त व्यवहारों का लेखा रखा जाता है और न ही प्रत्येक व्यवहार की दोहरी प्रविष्टि की जाती है।
6. लेखों की अपूर्णता के कारण लेखाकन सम्बन्धी समस्त महत्वपूर्ण सूचनाएं एवं आँकड़े प्राप्त नही हो पाते। अतः प्रबन्ध के उपकरण के रूप में लेखाकन (accounting as a tool of management) का उपयोग नहीं हो पाता।
7. चूँकि वास्तविक खाते नही रखे जाते अतः व्यापार की सम्पत्तियों का सही मूल्यांकन नही होता। अतः व्यवसाय की बिक्री के समय व्यवसाय का मूल्याकन करने में कठिनाई रहती है।
8. आयकर, बिक्रीकर आदि के प्रकरणों में एकल प्रविष्टि के अनुसार रखे ये खाते अधिक विश्वसनीय नहीं माने जाते।

बोध प्रश्न

1. एकल प्रविष्टि प्रणाली की परिभाषा दीजिये।

2. एकल प्रविष्टि प्रणाली की विशेषताओं को बताइये।

....

....

....

3. एकल प्रविष्टि प्रणाली के दोष बताइये।

....

....

....

5.7 द्वि-प्रविष्टि प्रणाली एवं एकल प्रविष्टि प्रणाली में अन्तर (Difference between Double Entry and Single Entry Systems)

1. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली पूर्णतः वैज्ञानिक लेखा प्रणाली है, एकल प्रविष्टि प्रणाली वास्तव में अपूर्ण लेखा प्रणाली है, जो द्वि-प्रविष्टि प्रणाली में समायोजन करके बनाई गई है।
2. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली के अन्तर्गत व्यक्तिगत, वास्तविक तथा नाममात्र सभी प्रकार के खाते रखे जाते है, जबकि एकल प्रविष्टि प्रणाली में केवल रोकड़ खाता तथा व्यक्तिगत खाते ही खोले जाते हैं।
3. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली में प्रत्येक व्यवहार का लेखा दो खातों में किया जाता है जबकि एकल प्रविष्टि प्रणाली में रोकड़ के लेन-देन सम्बन्धी व्यवहारों का 'लेखा तो रोकड़ खाता तथा व्यक्तिगत खाता दोनों में किया जाता है, अन्य व्यवहारों की केवल एक खाते में ही प्रविष्टि की जाती है'।
4. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली मे तलपट बनाकर गणितीय शुद्धता की जाँच कर ली जाती है, एकल प्रविष्टि प्रणाली में ऐसा करना सम्भव नहीं होता।
5. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली में तलपट के आधार पर लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बना लिए जाते हैं। एकल प्रविष्टि प्रणाली में लाभ-हानि का निर्धारण शुद्ध मूल्य पद्धति (Net Worth Method) से किया जाता है अथवा अपूर्ण लेखों से प्राप्त सूचनाओं, विभिन्न गणनाओं व अनुमान या स्मरण-शक्ति पर आधारित मूल्यांकनो से अन्तिम खाते तैयार किये जाते हैं अतः वे अधिक विश्वसनीय नहीं होते।
6. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली मान्य एवं प्रतिष्ठित लेखा प्रणाली है अतः कम्पनी तथा अन्य सभी प्रकार की संस्थाएँ इसका उपयोग करती हैं। एकल प्रविष्टि का प्रयोग केवल छोटी संस्थाओं द्वारा ही किया जा सकता है। कम्पनी अधिनियम इस प्रणाली को मान्यता नहीं देता।

5.8 लाभ-हानि की गणना (Calculation of Profit & Loss)

एकल प्रविष्टि प्रणाली के अन्तर्गत चूँकि समस्त खाते नहीं रखे जाते अतः तलपट बनाकर सामान्य रीति से व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाकर लाभ-हानि की गणना नहीं की जा सकती। इस हेतु अग्रलिखित विधियों का उपयोग किया जा सकता है–

इस विधि के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार से लाभ की गणना की जाती है

1. अवस्था विवरण विधि अथवा शुद्ध मूल्य में वृद्धि विधि, तथा 2. परिवर्तन विधि।

अवस्था-विवरण विधि या शुद्ध मूल्य में वृद्धि विधि (Statement of Affairs Method or Increase in Net Worth Method)

1. लाभ/हानि का निर्धारण व्यापारिक अवधि के प्रारम्भ की पूँजी तथा व्यापारिक अवधि के अन्त की पूँजी की तुलना करके की जाती है। लेखा-विधि समीकरण (accounting equation) के अन्तर्गत हम यह अध्ययन कर चुके है कि–

(i) पूँजी + देयताएं = परिसम्पत्तियाँ (Capital + Liabilities) = Assets अथवा (Or) (ii) **परिसम्पत्तियाँ**—देयताएँ = पूँजी Assets—Liabilities = Capital

अतः वर्ष के आरम्भ एवं अन्त में लगी पूँजी की गणना करने के लिए आरम्भिक एवं अन्तिम अवस्था-विवरण बनाने होते हैं। चिट्ठे की भाँति इस अवस्था-विवरण के दायें पक्ष में विभिन्न सम्पत्तियाँ तथा बायें पक्ष में दायित्व लिए जाते हैं तथा दोनों पक्षों का अन्तर पूँजी होती है।

2. वर्ष के आरम्भ तथा अन्त की पूँजी की तुलना करके यह देखा जाता है कि वर्ष के दौरान व्यापारिक पूँजी या व्यापार के शुद्ध मूल्य (Net Worth) में कितनी वृद्धि या कमी हुई। उदाहरण—यदि वर्ष के प्रारम्भ में 10,000 रु. की पूँजी लगी हो तथा वर्ष के अन्त की पूँजी 15,000 रु. हो तो व्यापारिक पूँजी या व्यापार के शुद्ध मूल्य में 5,000 रु. की वृद्धि हुई।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि पूँजी में हुई यह वृद्धि या कमी क्या प्रकट करती है। हम यह भी अध्ययन कर चुके हैं कि लाभ (Profit) पूँजी में वृद्धि तथा हानि पूँजी में कमी उत्पन्न करती है। अतः यदि वर्ष के दौरान पूँजी में वृद्धि हुई है तो यह लाभ है तथा यदि कमी हुई हो तो इसे व्यापार में हुई हानि का परिणाम माना जा सकता है। किन्तु यह कथन पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि लाभ या हानि के अतिरिक्त निम्नलिखित और भी घटक हैं जो पूँजी में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं—

(क) आहरण (Drawings)—पूँजी में कमी होती है।

(ख) अतिरिक्त पूँजी (Additional Capital)—पूँजी में वृद्धि होती है।

(3) चूँकि हमारा उद्देश्य केवल शुद्ध लाभ-हानि की गणना करना है अतः आरम्भिक एवं अन्तिम पूँजी में हुई इस परिवर्तन में आहरण तथा अतिरिक्त पूँजी लगाने के कारण हुए परिवर्तन का प्रभाव समाप्त करने हेतु इनके कारण उत्पन्न हुए प्रभाव की उल्टी प्रक्रिया अपनानी चाहिए, अर्थात् आहरण को जोड़कर वर्ष में लगाई गई अतिरिक्त पूँजी घटा देनी चाहिए। इन समायोजनों के पश्चात् यह ज्ञात हो जायगा कि वर्ष में कितना लाभ या हानि हुई है।

उपर्युक्त विवेचना को निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है :

	Rs.
वर्ष के अन्त में पूँजी (Capital at the end of the year)	
(–) वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी (Capital at the beginning of the year)	
शुद्ध मूल्य में वृद्धि	——
(Increase in Net Worth)	
(+) आहरण (Drawings)	
(–) अतिरिक्त पूँजी (Additional Capital)	——
शुद्ध लाभ (Net Profits)	
	——

टिप्पणी—यदि वर्ष की अन्तिम पूँजी आरम्भिक पूँजी से कम हो तो शुद्ध मूल्य में कमी (decrease in net worth) होगी जो हानि का परिचायक होगी। इस स्थिति में आहरण को घटाया जाएगा तथा अतिरिक्त पूँजी को जोड़ा जायेगा।

वैकल्पिक विधि (Alternative Method)— अधिकांश लेखक लाभ-हानि की गणना निम्नानुसार करते है—

	Rs.
Capital at the end of the year	
(+) Drawings	–
(–) Additional Capital Introduced	—
(–) Capital at the beginning of the year	
Net Profit	——

सूत्र रूप में इसे निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है—

Net Profit = (Closing Capital + Drawings–Additional Capital)–Opening Capital

Illustration : 1. Ram Swarup keep his books by the Single Entry Method. His position on 31st December, 2005 was as follows :

NOTES

Cash in hand, Rs. 200, Cash at Bank, Rs. 3000; Stock-in-trade, Rs. 20,000; Sundry Debtors, Rs. 8,500; Fixture and Fittings, Rs. 1,800; Machinery and Plant Rs. 15,000; Sundry Creditors, Rs. 22,000; During the year, Ram Swarup introduced Rs. 5,000; as further Capital in the business and withdrew Rs. 750 per month.

On 31st December, 2006 his position was as follows :

Cash in Hand Rs. 300; Cash at Bank Rs. 2,000; Sundry Debtors Rs. 14,000; Stock-in-Trade Rs. 19,000; Plant and Machinery Rs. 27,000; Fixtures and Fittings Rs. 1,800; Sundry Creditors Rs. 29,000.

From the above, prepare a statement showing the profit or loss made by him for the year ended 31st December, 2006.

रामस्वरूप अपनी पुस्तकें इकहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर रखता है। 31 दिसम्बर, 2005 को उसकी स्थिति निम्नलिखित थीं—

रोकड़ हस्ते, 200 रु.; बैंक में रोकड़, 3,000 रु.; स्टॉक, 20,000 रु.; कुल देनदार, 8,500 रु.; फिक्चर्स और फिटिंग्स, 1,800 रु.; मशीन और प्लाण्ट, 15,000 रु ; कुल लेनदार, 22,000 रु , वर्ष में रामस्वरूप ने 5,000 रु. पूँजी के और लगाये और 750 रु. प्रति माह आहरण किये।

31 दिसम्बर, 2006 को उनकी स्थिति निम्नलिखित थी—

रोकड़ हस्ते, 300 रु.; बैंक में रोकड़, 2,000 रु.; कुल देनदार, 14,000 रु.; स्टॉक, 19,000 रु.; प्लान्ट और मशीन, 27,000 रु. फिक्चर्स और फिटिंग्स, 1,800 रु.; कुल लेनदार, 29,000 रु.।

उपरोक्त सूचना के आधार पर 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का उसका लाभ या हानि दिखलाते हुए एक विवरण तैयार कीजिए।

Solution : **Statement of Affairs** (As on 1st January, 2006)

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	22,000	Cash in Hand	200
Capital	26,500	Cash at Bank	3,000
(Balancing Figure)		Stock-in-Trade	20,000
		Sundry Debtors	8,500
		Fixtures and Fittings	1,800
		Machinery & Plant	15,000
	48,500		48,500

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	29,000	Cash in Hand	300
Capital	34,800	Cash at Bank	2,000
(Balancing Figure)		Sundry Debtors	14,000
		Stock-in-Trade	19,000
		& Machinery Plant	27,000
		Fixtures and Fittings	1,500
	63,800		63,800

Statement of Profit

	Rs.
Capital as on 31.12.2006	34,800
(+) Drawings (750 × 12)	9,000
	43,800
(–) Additional Capital introduced during the year	5,000
	38,800
(–) Capital as on 1.1.2006	26,500
Profit for 2006	12,300

5.9 शुद्ध लाभ का निर्धारण करने से पूर्व समायोजन करना तथा चिट्ठा बनाना (Making adjustment and Preparation of Balance Sheet)

यदि शुद्ध लाभ का निर्धारण करने से पूर्व कुछ समायोजन भी करने हों, (जैसे सम्पत्तियों पर ह्रास लगाना, अशोध्य ऋण अपलिखित करना अथवा संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना आदि) तथा वर्ष के अन्त में चिट्ठा भी बनाना हो, तो अग्रलिखित विधि अपनाई जानी चाहिए।

1. पूर्वोक्त पद्धति से अवस्था-विवरण बनाकर आरम्भिक एवं अन्तिम पूँजी की गणना करें।

   अन्तिम अवस्था –विवरण में समायोजन (adjustment) न करें।

2. पूर्वोक्त पद्धति से ही लाभ की गणना करें (अर्थात लाभ = अन्तिम पूँजी + आहरण अतिरिक्त पूँजी– आरम्भिक पूँजी) यह लाभ समायोजन से पूर्व का लाभ होगा।

3. इस लाभ में से आवश्यक समायोजन कर दें अर्थात् लाभ को कम करने वाले समायोजन (जैसे ह्रास, अशोध्य ऋण, आदि) लाभ में से घटा दें तथा लाभ को बढ़ाने वाले समायोजन (जैसे आहरण पर ब्याज) लाभ में जोड़ दें। अब जो शेष बचेगा वह शुद्ध लाभ होगा। यदि लाभ के बजाय हानि हो तो उपर्युक्त समायोजन उल्टे हो जायेंगे।

4. चिट्ठा सामान्य रीति से ही बनाएं, किन्तु ध्यान रहे कि—

   (i) चिट्ठा बनाते समय आवश्यक समायोजन कर दिए जाएं, तथा

   (ii) दायित्व पक्ष में आरम्भिक पूँजी दिखाकर उसमें से आहरण घटाकर शुद्ध लाभ तथा अतिरिक्त पूँजी जोड़ी जाएगी।

Illustration 2 : निम्नलिखित शेष अशोक जनरल स्टोर्स की पुस्तकों से लिए गए हैं जो अपने व्यवहारों के अपूर्ण लेखे रखता है:–

	1 जनवरी 2006	31 दिसम्बर 2006
	रु.	रु.
स्टॉक	2,400	3,000
देनदार	4,000	3,200
लेनदार	1,700	3,900
रोकड़	2,000	3,800
बैंक ओवरड्राफ्ट	2,400	
फर्नीचर	800	1,000
मोटरगाड़ी	9,500	9,500
प्राप्य बिल	2,000	4,300

वर्ष में कुल आहरण 2,800 रु. थे। फर्नीचर पर 5% तथा मोटर-गाड़ी पर 500 रु. का ह्रास अपलिखित करना है। देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए 5% का आयोजन करना है।

31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि ज्ञात कीजिए तथा उस तिथि को स्थिति-विवरण भी बनाइये।

Solution : 1. फर्नीचर पर ह्रास : $\left(\frac{1,000 \times 5}{100}\right)$ = 50 रु.

2. देनदारों पर आयोजन : $\left(\frac{3,200 \times 5}{100}\right)$ = 160 रु.

Statement of Affairs (As on 1st January, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	1,700	Stock	2,400
Bank Overdraft	2,400	Debtors	4,000
Capital	16,600	Cash	2,000
		Furniture	800
		Motor	9,500
		Bills Receivable	2,000
	20,700		**20,700**

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	3,900	Stock	3,000
Capital	20,900	Debtors	3,200
		Cash	3,800
		Furniture	1,000
		Motor	9,500
		Bills Receivable	4,300
	24,800		**24,800**

Statement of Profit

			Rs.
Capital as on 31st Dec., 2006			20,900
(+) Drawings			2,800
			23,700
(−) Capital as on 1st Jan., 2006			16,600
Gross Profit			**7,100**
(−) Depreciation :	Furniture	50	
	Motor	500	
	Provision	160	710
Net Profit			**6,390**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditor		3,900	Stock		3,000
Capital	16,600		Debtors	3,200	
(+) Profit	6,390		(−) Provision	160	3,040
	22,900				
(−) Drawings	2,800	20,190	Cash		3,800

NOTES

		Furniture	1,000	
		(–) Dep.	50	
				950
		Motor	9,500	
		(–) Dep.	500	
				9,000
		Bills Receivable		4,300
	24,090			**24,090**

6.10 साझेदारी फर्म के लाभ-हानि की गणना करना (Calculation of Profit and Loss of a Partnership Firm)

साझेदारी फर्म की लाभ-हानि की गणना करने के लिए अवस्था विवरण तथा लाभ-हानि विवरण बनाते समय फर्म की कुल पूँजी (विभिन्न साझेदारों की पूँजी का योग) तथा कुल आहरण लिए जाते है। जब फर्म का शुद्ध लाभ ज्ञात हो जाता है तो विभिन्न साझेदारों में उनके लाभ-लाभ विभाजन अनुपात में बाँट देते हैं। चिट्ठे में प्रत्येक साझेदार की पूँजी अलग-अलग दिखाई जाती है।

Illustration 3 : अ, ब, तथा स जो साझेदारी में व्यापार करते है, अपनी पुस्तकें इकहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर रखते हैं। 30 जून, 2005 को उनकी स्थिति निम्नानुसार थी—

	रु.		रु.
अ	87,600	बैंक में रोकड	24,100
ब	41,300	देनदार	42,800
लेनदार	21,800	स्टॉक	41,600
		प्लान्ट	28,500
		स	13,700
	1,50,700		**1,50,700**

30 जून, 2006 को स्थिति अग्रानुसार थी : बैंक में रोकड 4,700 रु. देनदार 71,400 रु., स्टॉक 38,000 रु. प्लाण्ट 42,000 रु., लेनदार 35,100 रु.।

वे क्रमश: 3/7, 2/7 तथा 2/7 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते है तथा वर्ष में प्रति सप्ताह उनके आहरण थे : अ 600 रु., ब 400 रू. तथा स 300 रु.। पूंजी तथा साझेदारों के अधिविकर्ष पर ब्याज 6% वार्षिक दर से लगाया जाता है। 30 जून, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए लाभ-हानि की गणना कीजिए तथा उनके पूंजी खातों की स्थिति दर्शाइए तथा चिट्ठा बनाइए।

Solution :

1. 30 जून, 2005 को फर्म की कुल पूंजी (87,600 + 41,300 – 13,700) = 1,15,200 रु

2. वर्ष के कुल आहरण

(अ) 700 × 52 = 36,400

(ब) 400 × 52 = 20,800

(स) 300 × 52 = 15,600

रु 72,800

(3) पूंजी पर ब्याज

(अ) $\left(\frac{87,600 \times 6}{100}\right) = 5,256$ रु

(ब) $\left(\frac{41,300 \times 6}{100}\right) = 2,478$ रु

(4) अधिविकर्ष पर ब्याज

(स) $\left(\frac{13,700 \times 6}{100}\right) = 822$ रु

(5) 30 जून 2006 को फर्म की पूंजी

Statement of Affairs (As on 30th June, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	35,100	Cash at Bank	4,700
Capital	1,21,000	Debtors	71,400
		Stock	38,000
		Plant	42,000
	1,56,100		**1,56,100**

Statement of Profit

		Rs.
Capital as on 30th June, 2006		1,21,000
(+) Drawings		72,800
		1,93,800
(–) Capital as on 30th June, 2005		1,15,200
		78,600
(+) Interest on C's Overdraft		822
		79,422
(–) Interest on Capital :	A : 5,256	
	B : 2,478	
		7,734
Net Profit		**71,688**

साझेदारों में लाभ का वितरण (निकटतम रुपये तक)

A $\left(71,688 \times \frac{3}{7}\right)$ = 30,723 रु.; B तथा C $\left(71,688 \times \frac{2}{7}\right)$ = 20,483 तथा 20,482 रु

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	—	—	13,700	By Balance b/d	87,600	41,300	—
To Drawings	36,400	20,800	15,600	By Interest	5,256	2,478	—
To Interest		---	822	By P. & L. A/c	30,723	20,483	20,482
To Balance c/d	87,179	43,461	—	By Balance c/d	—	—	9,640
	1,23,579	**64,261**	**30,122**		**1,23,579**	**64,261**	**30,122**

Balance Sheet (As on 30th June, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	35,100	Cash at Bank	4,700
Capital Account		Debtors	71,400
A	87,179	Stock	38,000
B	43,461	Plant	42,000
		C's Capital	9,640
	1,65,740		**1,65,740**

NOTES

6.11 एकल प्रविष्टि प्रणाली का द्वि-प्रविष्टि प्रणाली में परिवर्तन (Conversion of Single Entry into Double Entry)

यदि एकल प्रविष्टि प्रणाली से रखे गये खातों को द्वि-प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार परिवर्तित करना हो तो निम्नलिखित क्रियाएँ करनी होंगी—

1. सर्वप्रथम वर्ष के प्रारम्भ का अवस्था-विवरण बनाकर निम्नानुसार रोजनामचा प्रविष्टि करें—

		उदाहरण	
Various Assets A/C	Dr.	Cash in Hand A/c	Dr.
Top Various Liabilities A.c		Debtors A/c	Dr.
To Capital A/c		Furniture A/c	Dr.
		Stock A/c	Dr.
		To Creditors A/c	
		To Bank Overdraft A/c	
		To Capital A/c	

तत्पश्चात् वे खाते जो अभी नहीं खुले हैं (जैसे वास्तविक खाते) उन्हे पुस्तकों में खोल लीजिये। उपर्युक्त प्रविष्टि के आधार पर उनमें आरम्भिक शेष दिखलाइए।

2. रोकड़ खाता तथा बैंक खाता या रोकड़ बही में जिन व्यवहारों का लेखा है, उनकी प्रविष्टि सम्बन्धित खातों में कीजिए। ऐसा करते समय अनेक ऐसे व्यवहार होंगे जिनके लिए खाते नहीं खुले है, जैसे वास्तविक खाते, नाममात्र के खाते। ऐसे व्यवहारों के लिए आवश्यक खाते खोलकर प्रविष्टियाँ कीजिए। जैसे, यदि रोकड़ बही में मजदूरी का भुगतान दिखाया गया हो तो इसके लिए मजदूरी खाता खोलकर इसके डेबिट पक्ष पर प्रविष्टि करें। इसी प्रकार नकद बिक्री तथा नकद क्रय की सूचना रोकड़ बही से प्राप्त होगी जिसकी प्रविष्टि क्रय खाता तथा विक्रय खाता खोलकर करें। ऐसा करते समय यह ध्यान रखें कि जिन व्यवहारों की प्रविष्टि पहले ही सम्बन्धित खाते मे हो चुकी हो उनकी प्रविष्टि दुबारा न हो जाये। जैसे यदि व्यक्तिगत खातों के अन्तिम शेष प्रश्न में दिए गये है तो इसका आशय यह है कि इन खातो से सम्बन्धित व्यवहारों की प्रविष्टि पुनः नहीं की जायेगी।

3. यदि देनदारों तथा लेनदारों के व्यक्तिगत खाते अलग-अलग खुले हों तो उनसे सम्बन्धित कुल स्थिति (जैसे कुल उधार विक्रय, कुल उधार क्रय, कुल अशोध्य ऋण, प्राप्त एवं दत्त बट्टा, प्राप्त प्राप्य बिल या दी गई स्वीकृतियाँ आदि) ज्ञात करने के लिए कुल देनदार खाता (Total Debtors A/c) तथा कुल लेनदार खाता (Total Creditors A/c) बनाइये। ऐसा करने के लिए व्यक्तिगत खातों के विभिन्न व्यवहारों के योगों को कुल देनदार या कुल लेनदार खातों मे ले जाना होगा। जैसे यदि अ, ब तथा स तीन देनदार है तो इनके खातों के आरम्भिक शेष के योग को कुल देनदार खाता मे आरम्भिक शेष के रूप मे दिखाया जायेगा।

4. यदि व्यापार में विनिमय विपत्रों का लेन-देन भी होता है तो कुल देनदार खाता बनाने के लिए देनदारों से प्राप्त स्वीकृतियां (Bills Receivables received during the period) तथा कुल लेनदार खाता बनाने के लिए लेनदारों को दी गई स्वीकृतियों (Bills Payable issued to Creditors) की राशियाँ भी ज्ञात करनी होंगी। इस हेतु प्राप्य बिल खाता (Bills Receivable A/c) तथा देय बिल खाता (Bills Payable A/c) भी बनाने होंगे।

5. यदि लघु या खुदरा रोकड़ बही (Petty Cash Book) रखी गई है तो उसके व्यवहारों की प्रविष्टियाँ भी सम्बन्धित खातों में कर दी जायेंगी।

6. कुल देनदार खाता का विश्लेषण करके उधार विक्रय-वापसी, अशोध्य ऋण, दिया गया बट्टा या अपहार आदि व्यवहारों की राशियाँ ज्ञात हो जायेंगी, जिनकी प्रविष्टियाँ सम्बन्धित खातों में कर दी जायेंगी।

7. इसी प्रकार कुल लेनदार खाता का विश्लेषण करके उधार क्रय, क्रय-वापसी, प्राप्त बट्टा आदि व्यवहारों की राशियाँ ज्ञात कर उनकी प्रविष्टियाँ सम्बन्धित खातों मे कर दी जायेंगी।

8. उपर्युक्त प्रकार से विभिन्न खाते तैयार करके उनके अन्तिम शेष निकालकर तलपट बनाया जा सकता है।

9. तलपट बनाकर लेखांकन कार्य की गणितीय-शुद्धता प्रमाणित हो जाने पर सामान्य रीति से व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाया जा सकता है।

Illustration 4 : श्री प्रेम प्रकाश एकल-विशिष्ट प्रणाली के आधार पर अपने लेखे रखते हैं। 1 जनवरी 2006 को उनकी स्थिति निम्नानुसार थी : रोकड़ 6,000 रु., रहतिया 1,00,000 रु., फर्नीचर 20,000 रु., मशीनरी 14,000 रु., देनदार 80,000 रु. तथा लेनदार 20,000 रु.।

वर्ष में उनके रोकड़ी व्यवहार निम्नानुसार थे : देनदारों से प्राप्तियाँ 4,90,000 रु., नकद बिक्री 64,000 रु., ब्याज प्राप्त 2,000 रु., लेनदारों को भुगतान 4,00,000 रु., मशीनरी क्रय की 6,000 रु., वेतन 4,000 रु., मजदूरी 20,000 रु., छपाई एवं स्टेशनरी 2,000 रु. तार एवं डाक व्यय 3,000 रु., अन्य कार्यालयीन व्यय 7,000 रु., नकद क्रय 80,000 रु.।

31 दिसम्बर, 2006 को उनकी स्थिति निम्नानुसार थी : रहतिया 50,000 रु., देनदार 1,10,000 रु., लेनदार 30,000 रु., फर्नीचर 20,000 रु., मशीनरी 20,000 रु.।

उक्त एकल प्रविष्टि पर आधारित लेखों को द्वि-प्रविष्टि प्रणाली मे बदलिये, प्रारम्भिक प्रविष्टि दीजिए तथा तलपट बनाइये। तत्पश्चात् श्री प्रेम प्रकाश के अन्तिम खाते फर्नीचर तथा मशीनरी पर 10% वार्षिक ह्रास लगाते हुए तैयार कीजिये।

Solution : टिप्पणियाँ—

1. सर्वप्रथम आरम्भिक प्रविष्टि करके सम्बन्धित खाते खोलिये तथा उनमें आरम्भिक शेष दिखलाइये।
2. विभिन्न रोकड़ी व्यवहारों की प्रविष्टियाँ आवश्यक खाते खोलते हुए कीजिए।
3. जिन खातों के अन्तिम शेष प्रश्न में दिए हैं उनमें अन्तिम शेष दिखाइये।
4. कुल लेनदार खाता मे जो अन्तर आता है वह उधार बिक्री की राशि है जिसकी प्रविष्टि देनदार खाता तथा विक्रय खाता में कीजिए।
5. लेनदार खाता मे अन्तर उधार क्रय है जिसकी प्रविष्टि लेनदार खाता तथा क्रय खाते में किजिये।
6. अब विभिन्न खातों के शेष ज्ञात कर तलपट बनाइये।

आरम्भिक प्रविष्टि

		Rs.	Rs.
Cash A/c	Dr.	6,000	
Stock A/c	Dr.	1,00,000	
Furniture A/c	Dr.	20,000	
Machinery A/c	Dr.	14,000	
Debtors A/c	Dr	80,000	
To Creditor A/c			20,000
To Capital A/c			2,00,000
(Balancing Amount)			
(Being Opening Entry)			

Cash Account

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	6,000		By Creditors A/c	4,00,000
	To Debtors A/c	4,90,000		By Machinery A/c	6,000
	To Sale A/c	64,000		By Salaries A/c	4,000
	to Interest A/c	2,000		By Wages A/c	20,000
				By Prtg. and Staty. A/c	2,000
				By Postage A/c	3,000
				By Office Exp. A/c	7,000

NOTES

				By Purchases A/c	80,000
			31.12.06	By Balance c/d	40,000
		5,62,000			5,62,000
1.1.07	To Balance b/d	40,000			

Stock Account

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	1,00,000	31.12.06	By Trading A/c	1,00,000
		1,00,000			**1,00,000**

Debtor's Account

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	80,000		By Cash A/c	4,90,000
	To Soles A/c		31.12.06	By Balance c/d	1,10,000
	(Balancing figure)	5,20,000			
		6,00,000			**6,00,000**
1.1.07	To Balance b/d	1,10,000			

Creditors Account

		Rs.			Rs.
31.12.06	To Cash A/c	4,00,000	1.1.06	By Balance b/d	20,000
	To Balance c/d	30,000		By Purchase A/c	4,10,000
				(Balancing figure)	
		4,30,000			**4,30,000**
			1.1.07	By Balance b/d	30,000

Furniture Account

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	20,000	31.12.06	By Balance c/d	20,000
		20,000			**20,000**
1.1.07	To Balance b/d	20,000			

Machinery Account

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	14,000	31.12.06	By Balance c/d	20,000
	To Cash A/c	6,000			
		20,000			**20,000**
1.1.07	To Balance b/d	20,000			

Interest Account

		Rs.			Rs.
31.12.06	To Profit & Loss A/c	2,000		By Cash A/c	2,000
		2,000			**2,000**

Salaries Account

		Rs.			Rs.
31.12.06	To Cash A/c	4,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	4,000
		4,000			**4,000**

Sales Account

		Rs.			Rs.
31.12.06	To Trading A/c	5,84,000		By Profit & Loss A/c	64,000
				By Debtors A/c	5,20,000
		5,84,000			**5,84,000**

Purchase Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	80,000	31.12.06	By Trading A/c	4,90,000
	To Creditors A/c	4,10,000			
		4,90,000			**4,90,000**

Wages Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	20,000	31.12.06	By Trading A/c	20,000
		20,000			**20,000**

Printing and Stationery Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	2,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	2,000
		2,000			**2,000**

Postage and Telegram Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	3,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	3,000
		3,000			**3,000**

Office Expenses Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	7,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	7,000
		7,000			**7,000**

Postage and Telegram Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	3,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	3,000
		3,000			**3,000**

Office Expenses Account

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	7,000	31.12.06	By Profit & Loss A/c	7,000
		7,000			**7,000**

NOTES

Capital Account

		Rs.			Rs.
31.12.06	To Balance c/d	2,00,000	1.1.06	By Balance b/d	2,00,000
		2,00,000			**2,00,000**
			1.1.07	By Balance b/d	2,00,000

Trial Balance (As on 31st December, 2006)

	Dr.	Cr.
Stock Account	1,00,000	
Cash Account	40,000	
Sales Account		5,84,000
Purchases Account	4,90,000	
Wages Account	20,000	
Printing and Stationery Account	2,000	
Postage and Telegram Account	3,000	
Office Expenses Account	7,000	
Capital Account		2,00,000
Debtors Account	1,10,000	
Creditors Account		30,000
Furniture Account	20,000	
Machinery Account	20,000	
Interest Account		2,000
Salaries Account	4,000	
Total	**8,16,000**	**8,16,000**

Closing Stock Rs. 50,000

Trading and Profit & Loss A/c (For the year ended 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	1,00,000	By Sales A/c	5,84,000
To Purchases A/c	4,90,000	By Closing Stock A/c	50,000
To Wages A/c	20,000		
To Gross Profit	24,000		
	6,34,000		6,34,000
To Prtg. & Stationery	2,000	By Gross Profit	24,000
To Postage and Telegram	3,000	By Interest	2,000
To Office Expenses	7,000		
To Salaries	4,000		
To Depreciation	2,000		
Furniture	2,000		
Machinery	6,000		
To Net Profit	**26,000**		**26,000**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		30,000	Cash-in-Hand		40,000
Capital	2,00,000		Debtors		1,00,000
(+) Net Profit	6,000		Furniture	20,000	

	2,06,000	(–) Depreciation	2,000	18,000
		Machinery	20,000	
		(–) Depreciation	2,000	
				18,000
		Closing Stock		50,000
	2,36,000			**2,36,000**

NOTES

बोध प्रश्न

1. द्वि प्रविष्टि और एकल प्रविष्टि प्रणाली में अन्तर कीजिये।

....

....

....

2. एकल प्रविष्टि प्रणाली में लाभ-हानि की गणना आप किस प्रकार करेंगे।

....

....

....

संक्षिप्त विधि (Short-Cut Method)

एकल प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार रखे गये खातो को पूर्व-वर्णित रीति से द्वि-प्रविष्टि प्रणाली में परिवर्तित करके लाभ-हानि की गणना करने में अधिक समय लगता है। समस्त खातों को खोले बिना निम्नानुसार क्रियाऐं करके भी लाभ-हानि की गणना की जा सकती है—

1. प्रायः प्रश्न मे विभिन्न सम्पत्तियों एवं दायित्वो के आरम्भिक शेष दिये गये होते है। इनकी सहायता से अवस्था-विवरण बनाकर आरम्भिक पूँजी ज्ञात करें।

2. रोकड़ पुस्तक का विश्लेषण कर नकद क्रय, नकद विक्रय, विभिन्न प्राप्तियों एवं विभिन्न व्ययो आदि के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करे। यदि प्रश्न में रोकड़ बही का पूर्ण संक्षिप्त रूप नहीं दिया गया हो तो रोकड बही बना ले ताकि अन्तिम रोकड शेष ज्ञात किया जा सके। रोकड का अन्तिम शेष दिए होने पर भी कभी-कभी रोकड़ बही रोकड़ सम्बन्धी अज्ञात व्यवहारों (जैसे देनदारों से प्राप्त रोकड़, लेनदारो को भुगतान, नगद क्रय अथवा विक्रय आदि) की राशियाँ ज्ञात करने के लिए बनानी होती है।

3. नकद क्रय-विक्रय की राशियां तो रोकड़ बही से ज्ञात हो जाती है। यदि उधार क्रय-विक्रय की राशियां प्रश्न मे न दी गई हों तो कुल देनदार तथा कुल लेनदार खाता बनाकर ये राशियां ज्ञात करें। यदि विनिमय विपत्रों का लेनदेन भी होता हो तो इन खातो को बनाने से पूर्व प्राप्य बिल खाता तथा देय बिल खाता भी बनाने होंगे ताकि देनदारों से प्राप्त प्राप्य बिलो तथा लेनदारों को दिए गए देय बिलों की राशियां ज्ञात हो सकें। कुल देनदार, कुल लेनदार, प्राप्य बिल तथा देय बिल खातों को बनाने की आवश्यकता चिट्ठे के लिए क्रमशः अन्तिम देनदार, अन्तिम लेनदार, प्राप्य बिलो तथा देय बिलों की राशियाँ ज्ञात करने के लिए भी हो सकती है। देनदार तथा लेनदार खातो से लाभ-हानि खाता के लिए अशोध्य ऋण, प्राप्त बट्टा, प्राप्त कमीशन, दत्त बट्टा आदि मदें भी ज्ञात होती है।

4. प्रश्न मे दी गई अन्य सूचनाओ (जैसे अदत्त या पूर्वदत्त व्ययों, उपार्जित या अग्रिम प्राप्त आयों, ह्रास, अशोध्य ऋण आयोजन आदि) को दृष्टिगत रखते हुए व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाया जा सकता है।

5. चिट्ठा बनाने के लिए प्रायः सम्पत्तियो एवं दायित्वो के शेष दिए रहते है। वर्ष के अन्त मे देनदारों, लेनदारों, प्राप्य बिल, देय बिल, हस्तस्थ तथा बैंकस्थ अथवा बैंक अधिविकर्ष की राशियाँ बनाये गये सम्बन्धित खातो से ज्ञात कर ली जाती है। कुछ सम्पत्तियों के केवल आरम्भिक शेष दिए होते है, अन्तिम शेष नहीं। इन सम्पत्तियो के क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवहारो की जानकारी रोकड़ पुस्तक मे मिल जाती है। आरम्भिक शेष मे आवश्यक समायोजन करके इनके अन्तिम शेष ज्ञात कर लिए जाते है।

टिप्पणी—हमने यहाँ एकल प्रविष्टि के खातों से लाभ-हानि की गणना करने की सामान्य रीति का विवेचन किया है। किसी एक निश्चित प्रक्रिया का अनुसरण सभी प्रकार के प्रश्नों के लिए नहीं किया जा सकता। विद्यार्थी को सम्बन्धित प्रश्न का भली-भाँति अध्ययन करके यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कौन-कौन सी सूचनायें उपलब्ध नहीं है तथा उन सूचनाओं को जिन खातों से प्राप्त किया जा सकता हो, उन खातों को बना लेना चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण व्यवहारों का लेखांकन (Recording of Certain Important Transactions)

एकल प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार लाभ-हानि की गणना करने के लिए प्रायः देनदार खाता, लेनदार खाता, प्राप्य बिल खाता, देय बिल खाता बनाने होते हैं। इन खातों से सम्बन्धित व्यवहारों की रोजनामचा प्रविष्टियाँ तथा विभिन्न खातों के नमूने नीचे दिए जा रहे हैं—

व्यवहार	प्रविष्टियाँ
उधार विक्रय	Debtors A/c.........Dr. To Sales A/c
विक्रय-वापसी	Sales Return A/c.........Dr. To Debtors A/c
देनदारों से प्राप्त रोकड़	Cash A/c.........Dr. To Debtors A/c
देनदारों से प्राप्त बिल	Bills Receivable A/c.........Dr. To Debtors A/c
प्राप्य बिल का भुगतान प्राप्त होने पर	Cash A/c.........Dr. To Bills Receivable A/c
प्राप्य बिल का अनादरण	Debtors A/c.........Dr. To Bills Receivable A/c
बट्टे पर बिल का भुनाना	Bank A/c.........Dr. Discount A/c.........Dr. To Bills Receivable A/c
बट्टे पर भुनाए गए बिल का अनादरण	Debtor's A/c.........Dr. To Bank A/c
देनदारों को दिया गया बट्टा या छूट	Discount A/c.........Dr. Allowances A/c.........Dr. To Debtors A/c
अशोध्य ऋण	Bad Debts A/c.........Dr. To Debtors A/c
उधार क्रय	Purchases A/c.........Dr. To Creditors A/c
क्रय वापसी	Creditors A/c.........Dr. To Purchase Return A/c
लेनदारों को भुगतान	Creditors A/c.........Dr. To Cash A/c
लेनदारों को स्वीकृतियाँ (देय बिल)	Creditors A/c.........Dr. To Bills Payable A/c
लेनदारों से प्राप्त बट्टा	Creditors A/c.........Dr. To Discount A/c

NOTES

देय बिल का अनादरण	Bills Payable A/c.... ....Dr. To Creditors A/c
देनदारों से प्राप्त प्राप्य बिल लेनादारों को पृष्ठांकित	Creditors A/c.... ....Dr. To Bill Payable A/c
पृष्ठांकित प्राप्त बिल का अनादरण	Debtors A/c.... ....Dr. To Creditors A/c
देय बिल का भुगतान करने पर	Bills Payable A/c.... ....Dr. To Cash A/c

Total Debtors Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	....	By Cash (देनदारों से प्राप्त रोकड़)	.....
(प्रारम्भिक देनदार)	....	By B/R (देनदारों से प्राप्त स्वीकृतियाँ)	....
To Sales (उधार बिक्री)		By Discount (दिया गया बट्टा)	....
To Bills Receivable		By Allowances (अलाउन्स)	....
(अनादरित प्राप्य बिल)	....	By Bad Debts (अशोध्य ऋण)	....
		By Sales Return (विक्रय वापिसी)	....
		By Balance c/d (अन्तिम देनदार)	....
	....		....

Total Creditors Account

	Rs.		Rs.
To Cash (लेनदारों को रोकड़ भुगतान)	....	By Balance b/d (प्रारम्भिक लेनदार)	....
To B/P (दी गई स्वीकृतियाँ)	....	By Purchases (उधार क्रय)	....
To Discount (प्राप्त बट्टा)	....	By Bills Payable	
To Allowance (प्राप्त अलाउन्स)	....	(अनादरित देय बिल)	
To Purchases Return (क्रय वापसी)	....		
To Balance c/d (अन्तिम लेनदार)			
	....		

Bills Receivable Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Cash (प्राप्य बिलों का भुगतान प्राप्त)	
(वर्ष के प्रारम्भ में हस्तस्थ प्राप्य बिल	...	By Debtors A/c (बिलों का अनादरण)	
To Debtors A/c (प्राप्त स्वीकृतियाँ)	...	By Bank Discount (बट्टे पर बिलों का भुनाना)	
		By Creditors A/c (प्राप्त बिलों का पृष्ठांकन)	
		By Balance c/d (वर्ष के अन्त में हस्तस्थ बिल)	
	....		....

Bill Payable Account

	Rs.		Rs.
To Cash (देय बिलों का भुगतान)	...	By Balance c/d	....
To Creditors A/c (अनादरण)		(वर्ष के प्रारम्भ में देय बिल)	
To Balance c/d		By Creditors A/c	
(वर्ष के अन्त में देय बिल)		(नए स्वीकार किए गए देय बिल)	

NOTES

Illustration 5: Yor are given below :

1. The Balance Sheet of Messrs A and B as on 1st April 2005.
2. The cash transactions for 12 months to 31st March, 2006.
3. A summary of the remaining transactions for the year.

(1)

		Rs.		Rs.
Bank Overdraft		5,000	Cash in Hand	700
Sundry Creditors		36,000	Bill Receivable	25,000
Bills Payable		16,000	Sundry Debtors	39,000
Capitals :			Stock of Goods	75,300
A	1,10,000		Plant & Machinery	47,000
B	90,000	2,00,000	Land & Buildings	70,000
		2,57,000		**2,57,000**

(2)

	Rs.			Rs.
To Balance in Hand 1.4.2005	700	By Overdraft 1.4.2005		5,000
To Receipt from Debtors	2,90,000	By Salaries		12,000
To Bills Receivable	1,00,000	By Wages		15,800
		By Bills Payable		1,43,000
		By Payment to Creditors		1,47,000
		By Office Expenses		8,000
		By Drawings by A		25,000
		By Drawings by B		20,000
		By Balance 31.3.2006		
		in Hand	2,400	
		at Bank1	2,500	14,900
	3,90,700			**3,90,700**

(3)

	Rs.
Sales	4,07,000
Discount to Customers	2,000
Purchases	3,00,000
Discount Received from suppliers	1,000
Bills Receivable received during the year	1,09,000
Bills Payable issued during the year	1,50,000
Stock of Goods on 31st March, 2006	53,000

Provide for Doubtful Debts 5% on Debtors outstanding. Provide depreciation on Plant and Machinery at 5% and on Land and Building at $2\frac{1}{2}$%.

From the above particulars, prepare a Trading and Profit & Loss Account for the year ended 31st March, 2006 and a Balance Sheet as on that date

Solution : 1. प्रश्न में वर्ष के अन्त में देनदार, लेनदार, प्राप्य बिल तथा देय बिल की राशियाँ नहीं दी गई है। अतः निम्नलिखित खाते बनाने होंगे—

NOTES

Bills Receivables A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	25,000	By Cash A/c	1,00,000
To Debtors A/c	1,09,000	By Balance c/d	34,000
	1,34,000		**1,34,000**

Bills Payable A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	1,43,000	By Balance b/d	16,000
To Balance c/d	23,000	By Creditors A/c	1,50,000
	1,66,000		**1,66,000**

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	39,000	By Cash A/c	2,90,000
To Credit Sales	4,07,000	By Bills Receivable A/c	1,09,000
		By Discount A/c	2,000
		By Balance c/d	45,000
	4,46,000		**4,46,000**

Total Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	1,47,000	By Balance b/d	36,000
To Bill Payable A/c	1,50,000	By Credit purchases	3,00,000
To Discount A/c	1,000		
To Balance c/d	38,000		
	3,36,000		**3,36,000**

2. रोकड़ बही के अनुसार नकद क्रय-विक्रय नहीं है, अतः प्रश्न में दी गई राशियाँ उधार क्रय विक्रय की है।

3. शुद्ध लाभ अ तथा ब बराबर-बराबर बाँटा गया है।

Trading and Profit & Loss Account (For the year ended 31st March, 2006)

	Rs.		Rs.
To Stock	75,300	By Sales	4,07,000
To Purchases	3,00,000	By Stock	53,000
To Wages	15,800		
To Gross Profit	68,900		
	4,60,000		4,60,000
To Salaries	12,000		
To Office Expenses	8,000	By Gross Profit	68,900

NOTES

To Discount		2,000	By Discount	1,000
To Provision on Debtors		2,250		
To Depreciation :				
Plant		2,350		
Land		1,750		
To Net Profit :				
A	20,775			
B	20,775	41,550		
		69,900		**69,900**

Balance Sheet (As on 31st March, 2006)

		Rs.			**Rs.**
Creditors		38,000	Cash in Hand		2,400
Bills Payable :		23,000	Cash at Bank		12,500
Capital			Debtors	45,000	
A	1,10,000		(–) Provision	2,250	42,750
(+) Profit	20,775		Bill Receivables		34,000
	1,30,775		Stock		53,000
(–) Drawings	25,000		Plant	47,000	
		1,05,775	(–) Dep.	2,350	
B	90,000				44,650
(+) Profit	20,775		Land and Blds.	70,000	
	1,10,775		(–) Dep.	1,750	68,250
(–) Drawings	20,000	90,775			
		2,57,550			**2,57,550**

Illustration 6 : एक व्यापारी अपनी बहियाँ इकहरा लेखा पद्धति पर रखता है। 2006 वर्ष के लिए उसके व्यापार से सम्बन्धित निम्नलिखित सूचनाएँ उपलब्ध है :

रोकड़ बही का सारांश—बैंक में जमा की गई राशि 17,380 रु., नकद प्राप्त लाभांश 400 रु. आहरण नकद 850 रु., बैंक से 1,500 रु., देनदारों से प्राप्त राशि 23,400 रु., लेनदारों को भुगतान नकद 430 रु., चैक द्वारा 14,500 रु., वेतन चुकाया 3,000 रु.। विविध व्यय नकद चुकाए 2,150 रु. बैंक से प्राप्त ब्याज (बैंक खाते में जमा 20 रु.)

अन्य सूचनाएँ निम्नानुसार है—

	1 जनवरी, 2006	21 दिसम्बर, 2006
	रु.	रु.
स्टॉक	1,200	1,500
बैंक	1,600	2,000
रोकड़ हस्ते	100	80
देनदार	1,500	2,100
लेनदार	2,400	2,800
विनियोग	6,000	6,000

वर्ष के अन्त में खर्चों के 240 रु. देने शेष थे। वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी शेष पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज की व्यवस्था कीजिए।

उपर्युक्त सूचनाओं से 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिए।

Solution : 1. वर्ष के आरम्भ मे पूँजी

Statement of Affairs (As on 1st January, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	2,400	Stock	1,200
Capital	8,000	Bank	1,600
		Cash	100
		Debtors	1,500
		Investments	6,000
	10,400		**10,400**

2. पूँजी पर ब्याज : $\left(\frac{8,000 \times 5}{100}\right) = 400$ रु

3. उधार विक्रय की गणना

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,500	By Cash A/c	23,400
To Credit Sales	24,000	By Balance b/d	2,100
	25,500		**25,500**

4. उधार क्रय की गणना

Total Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	430	By Balance b/d	2,400
To Bank A/c	15,500	By Credit Purchases	16,330
To Balance c/d	2,800		
	18,730		**18,730**

Trading and Profit & Loss Account
(For the year ended 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
To Stock		1,200	By Sales	24,000
To Purchases		16,330	By Stock	1,500
To Gross Profit c/d		7,970		
		25,500		**25,500**
To Salaries		3,000	By Gross Profit	7,970
To Sundry Expenses			By Dividend	400
Paid	2,150		By Interest	20
(+) Due	240	2,390		
To Interest on Capital	400			
To Net Profit	2,600			
	8,390		**8,390**	

Balance Sheet
(As on 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
Creditors		2,800	Stock	1,500
Capital	8,000		Bank	2,000
(+) Interest	400		Cash	80

NOTES

(+) Net Profit	2,600		Debtors	2,100
	11,000		Investment	6,000
(–) Drawings	2,360	8640		
Outstanding Expenses		240		
		11,680		**11,680**

NOTES

आरम्भिक एवं अन्तिम स्कन्ध की गणना (Calculation of Opening and Closing Stock)

कभी-कभी प्रश्न में आरम्भिक स्कन्ध, क्रय, प्रत्यक्ष व्यय तथा बिक्री की राशियाँ तो दी गई होती है किन्तु अन्तिम स्कन्ध की राशि नहीं दी गई होती। यह भी हो सकता है कि क्रय, प्रत्यक्ष व्यय, बिक्री तथा अन्तिम स्कन्ध की राशियाँ तो दी गई हों किन्तु आरम्भिक स्कन्ध न दिया गया हो। इन दोनों ही स्थितियों में प्रश्न में विक्रय मूल्य पर सकल लाभ का प्रतिशत (Percentage of Gross Profit on Sales) दिया गया होता है। अतः सर्वप्रथम कुल बिक्री पर दिए गए प्रतिशत से सकल लाभ ज्ञात कर लिया जाता है। तत्पश्चात् निम्नानुसार गणनाएँ करके स्कन्ध की गणना की जा सकती है।

Opening Stock = (Sales + Closing Stock) — (Purchases + Direct Exp. + Gross Profit)

Closing Stock = (Opening Stock + Purchases + Direct Exp. + Gross Profit) — (Sales)

वैकल्पिक विधि (Alternative Method)—स्कन्ध की गणना निम्नानुसार मेमोरेन्डम व्यापार खाता बनाकर भी की जा सकती है :

Memorandum Trading A/c

	Rs.		Rs.
Opening Stock	....	Sales	....
Purchases	....	Closing Stock	....
Direct Exp. (e. g. Wages etc)			
Gross Profit	....		
	....		....

सकल लाभ की गणना करके सकल लाभ की राशि तथा अन्य उपलब्ध राशियाँ व्यापार खाते में लिख देते हैं। यदि आरम्भिक स्कन्ध दिया गया हो तो अन्तर की राशि अन्तिम स्कन्ध तथा यदि अन्तिम स्कन्ध दिया गया हो तो अन्तर की राशि आरम्भिक स्कन्ध होता है।

Illustration 7 : एक व्यापारी अपनी बैंक पास बुक के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं रखता। 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित व्यापार सम्बन्धी सूचनाओं से उसके अन्तिम खाते तैयार कीजिए

पास बुक के विश्लेषण से निम्न बातें ज्ञात होती है : बैंक में जमा की कुल राशि 37,050 रु., वैयक्तिक आहरण 3,000 रु., लेनदारों को भुगतान 20,400 रु., वेतन 1,500 रु., विज्ञापन 450 रु., विविध व्यापार खर्च 1,800 रु., दान 1,200 रु., आयकर 300 रु. भवन 10,000 रु. तथा 31 दिसम्बर, 2006 को बैंक में शेष 2,500 रु.।

2006 वर्ष में 4,675 रु. विक्रय के सम्बन्ध में अटल है। इसके अतिरिक्त 425 रु. के चार प्राप्य बिल है जो कि अप्राप्य है। उसके दायित्व निम्न प्रकार थे :—

	31.12.2005	31.12.2006
	रु.	रु.
क्रय के लिए	2,400	3,500
विज्ञापन के लिए	---	250
वेतन के लिए	200	250

31 दिसम्बर, 2006 को अनुमानित स्टॉक 3,500 रु. का है परन्तु 31 दिसम्बर, 2005 के स्टॉक का कोई लेखा नहीं है। आपको पता लगा कि सकल लाभ बिक्री का 25% होता है।

A trader has only a bank Pass Book and does not keep any other books of account. From the following information prepare his Final Accounts for the year ending 31st Deccember, 2006.

An analysis of the Pass Book shows : Total amount deposited in Bank Rs. 37,050; Personal Drawing Rs. 3,000; Payments to Creditors Rs. 20,400; Salaries Rs. 1,500; Advertisements Rs. 450; Sundry Trade Expenses Rs. 1,800; Charity Rs. 1,200; Income-tax Rs. 300; Building Rs. 10,000 and Bank Balance on 31st December. 2006 was Rs. 2,500.

An amount of Rs. 4,675 is outstanding in respect of sales for 2006. In addition there are four Bills Receivable amounting in all to Rs. 425 which are irrecoverable, His liabilities were as under :

		As on 31.12.2005	As on 31.12.2006
		Rs.	Rs.
Creditors	—	2,400	3,500
Advertisement	—	—	250
Salaries	—	200	250

The estimated value of Stock in trade on 31st December, 2006 is Rs. 3,500; but no information is available regarding the Stock-in-trade on 31st December, 2005. The trader takes 25 percent profit on sales.

Solution : 1. उधार विक्रय की गणना—

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Credit Sales	42,150	By Cash A/c	37,050
		By Bills Receivable	425
		By Balance c/d	4,675
	42,150		**42,150**

2. प्रश्न में रोकड़ पुस्तक में कुल जमा की राशि 37,050 रु. बताई गई है। यह राशि नकद बिक्री तथा देनदारों से प्राप्त धनराशि हो सकती है। चूंकि इस सम्बन्ध में कोई विवरण उपलब्ध नहीं है अतः यह समस्त राशि देनदारों से प्राप्त राशि मानी गई है।

3. उधार क्रय की गणना **Total Creditors A/c**

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	20,400	By Balance b/d	2,400
To Balance c/d	3,500	By Credit Purchases	21,500
	23,900		**23,900**

4. आरम्भिक स्कन्ध की गणना रु.

Sales 42,150

Gross Profit $\left(\frac{42,150 \times 25}{100}\right) =$ 10,538

Opening Stock = Sales + Closing Stock – Purchases + Gross Profit

= (42,150 + 3,500) – (21,500 + 10,538) = Rs. 13,612

5. 1.1.2006 को बैंकस्थ रोकड़ की गणना

NOTES

Cash Book (Bank Column)

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	4,100	By Drawings	3,000
To Cash	37,050	By Creditors A/c	20,400
		By Salaries	1,500
		By Advertisement	450
		By Sundry Exp.	1,800
		By Charity	1,200
		By Incom Tax	300
		By Building	10,000
		By Balance c/d	2,500
	41,150		**41,150**

6. आरम्भिक पूँजी की गणना :

Statement of Affairs
(As on 1.1.2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	2,400	Cash at Bank	4,100
Outstanding Salary	200	Stock	13,612
Capital	15,112		
	17,712		**17,712**

Trading and Profit & Loss A/c
(For the year ended 31.12.2006)

		Rs.		Rs.
To Stock		13,612	By Sales	42,150
To Purchase		21,500	By Stock	3,500
To Gross Profit		10,538		
		45,650		**45,650**
To Salaries	1,500		By Gross Profit	10,538
(−) For 2005	200			
	1,300			
(+) Due for 2006	250			
		1,550		
To Advertisement	450			
(+) Due for 2006	250	700		
To Sundry Expenses		1,800		
To Charity		1,200		
To Bad Debts		425		
To Net Profit		4,863		
		10,538		**10,538**

NOTES

Balance Sheet
(As on 31.12.2006)

		Rs.		Rs.
Creditors		3,500	Cash at Bank	2,500
Outstanding Expenses :			Debtors	4,675
Advertisement		250	Building	10,000
Salary		250	Stock	3,500
Capital				
As on 1.1.2006	15,122			
(+) Net Profit	4,863			
	19,975			
(–) Drawings	3,000			
	16,975			
(–) Income Tax	300	16,675		
		20,675		**20,675**

हल किये हुए प्रश्न (Solved Problems)

Problem 1 : निम्नलिखित विवरण से कुल-विक्रय की राशि ज्ञात कीजिए—

	रु.
आरम्भिक स्कन्ध	40,000
क्रय	2,00,000
अन्तिम स्कन्ध	35,000
सकल लाभ का विक्रय पर 20%	

Solution : Cost of Goods Sold = Opening Stock + Purchases – Closing Stock

= 40,000 + 2,00,000 – 35,000 = 2,05,000 रु.

Gross profit : (सकल लाभ का लागत पर प्रतिशत ज्ञात करना) माना विक्रय मूल्य 100 रु. है, लाभ 20 रु. होगा अर्थात् लागत 80 रु. होगी अर्थात् 80 रु. लागत पर सकल लाभ 20 रु. है।

Gross Profit $= \frac{2,05,000 \times 20}{80} = 51,250$ रु

Calculation of Total Sales :

Memorandum Traning A/c

	Rs.		Rs.
Opening Stock	40,000	Sales (Balancing Figure)	2,56,250
Purchases	2,00,000	Closing Stock	35,000
Gross Profit	51,250		
	2,91,250		**2,91,250**

वैकल्पिक पद्धति (Alternative method)

20 रु. लाभ होता है 100 रु. की बिक्री पर

51,250 रु. लाभ होगा $\left(\frac{51,250 \times 100}{20}\right)$ 2,56,250 रु. की बिक्री पर।

Problem 2 : A retail trader does not keep full double-entry records. His business Balance Sheet at 1st January 2006, was as follows

NOTES

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		**Rs.**
Creditors	4,000	Cash in Hand	500
Capital	12,000	Cash at Bank	6,000
		Stock	5,000
		Debtors	3,300
		Furniture	1,200
	16,000		**16,000**

His position as at the end of the year, 2006 was :

Cash in Hand Rs. 500; Cash at Bank Rs. 5,000; Stock Rs. 6,000; Debtors Rs. 4,600; Furniture Rs. 1,500 and Creditors Rs. 6,000.

He withdrew during the year Rs. 9,000 out of which he spend Rs. 6,000 on the cost of purchasing a motor car for the business.

Prepare necessary statements to determine the net profit for the year and Balance Sheet as on 31st December, 2006 after making the following adjustments :

Depereciate Furniture and Motor Car @ 10% write off Bad Debts Rs. 200 and provide 5% for Doubtful Debts.

Solution : टिप्पणियाँ— 1. 9,000 रु. के आहरण में 6,000 रु. की मोटरकार व्यवसाय के लिए क्रय की गई। अतः उसके व्यक्तिगत आहरण केवल 3,000 रु. के रहे। कार को सम्पत्तियों में सम्मिलित किया जायेगा।

2. ह्रास फर्नीचर $\left(\frac{1,500 \times 10}{100}\right)$ = 150 रु., मोटरकार $\left(\frac{6,000 \times 10}{100}\right)$ = 600 रु

3. 4,600 रु. के देनदारों में से 200 रु. अशोध्य ऋण अपलिखित करके शेष 4,400 रु. के देनदारों पर अशोध्य ऋण प्रावधान $\left(\frac{4,400 \times 5}{100}\right)$ = 220 रु

4. 31.12.2006 को पूँजी—

Statement of Affairs (As on 31.12.2006)

	Rs.		**Rs.**
Creditor	6,000	Cash in Hand	500
Capital	17,600	Cash at Bank	5,000
		Stock	6,000
		Debtors	4,600
		Furniture	1,500
		Motor Car	6,000
	23,600		**23,600**

Statement of Profit

			Rs.
Capital as on 31.12.2006			17,600
(+) Drawings			3,000
			20,600
Capital as on 1.1.2006			12,000
	Bad Debts		8,600
Less :	Provision for Bad Debts	200	
	Depreciation	220	
	Furniture	150	
	Motor	600	1,170
	Net Profit		7,430

Balance Sheet
(As on 31.12.2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		6,000	Cash in Hand		500
Capital			Cash at Bank		5,000
On. 1.1.2006	12,000		Stock		6,000
(+) Net Profit	7,430		Debtors	4,400	
	19,430		(–) Provision	220	4,180
( ) Drawings	3,000		Furniture	1,500	
		16,430	(–) Deprecation	150	
					1,350
			Motor Car	6,000	
			(–) Depreciation	600	
					5,400
		22,430			**22,430**

Problem 3 : निम्नलिखित विवरण से रामप्रकाश के 31.12.2006 को समाप्त वर्ष की लाभ-हानि की गणना कीजिए तथा उक्त तिथि को उनका चिट्ठा बनाइये—

	1.1.2006	**31.12.2006**
	रु.	रु.
फर्नीचर	5,000	5,000
भवन	10,000	10,000
देनदार	1,000	1,000
रोकड़	5,000	1,000
लेनदार	5,000	7,000

श्री राम प्रकाश ने 2,000 रु. निजी व्यय के लिए आहरण किये। फर्नीचर तथा भवन पर 10% ह्रास लगाइये।

Solution :

Statement of Affairs
(As on 1st January, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	5,000	Furniture	5,000
Capital	25,000	Building	10,000
(Balancing Figure)		Debtors	10,000
		Cash	5,000
	30,000		30,000

Statement of Affairs
(As on 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	7,000	Furniture	5,000
Capital		Building	10,000
(Balancing Figure)	10,000	Debtors	1,000
		Cash	1,000
	17,000		**17,000**

NOTES

Statement of Profit or Loss

	Rs.		Rs.
Capital as on 21.12.2006			10,000
(+) Drawings			2,000
			12,000
(–) Capital as on 1.1.2006			25,000
		Loss	– 13,000
Add : Depreciation : Furniture	500		
Building	1,000		1,500
		Net Loss	– 14,500

Balance Sheet
(As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		7,000	Furniture	5,000	
Capital			(–) Depreciation	500	4,500
As on 1.1.2006	25,000				
(–) Drawings	2,000		Building	10,000	
			(–) Depreciation	1,000	9,000
	23,000				
(–) Net Loss	14,000	8,500	Debtors		1,000
			Cash		1,000
		15,500			**15,500**

Problem 4 : A and B are equal partners in a business in which the books are kept on single entry The position of affairs on 1st January 2006 was as under :

		Rs.		Rs.
Bill Payable		650	Cash in Hand	250
Creditors		2,000	Cash at Bank	250
Capital Account			Bill Receivable	400
	A	7,500	Debtors	5,000
	B	7,500	Stock	3,250
			Plant	3,000
			Furniture	500
		17,650		**17,650**

The following was the position on the 31st December, 2006

Cash in Hand and at Bank Rs. 815 (Debtors Rs. 5,525; Bills Receivable Rs. 680, Stock Rs. 3,600; Creditors Rs. 2,100 and Bills Payable Rs. 590.

The partners had drawn Rs. 450 each during the year. They were entitled to 5% Interest on Capital (ignoring drawings). It was agreed to depreciate Plant at 10%, Furniture at 5%. During the year additions to Capital amounted to Rs. 300 by each partner (No interest on additional capital)

Prepare a Statement of Profit & Loss and the Statement of Affairs at it would finlly appear in the books after giving effect to all adjustments

Solution : **टिप्पणियाँ—**

1. 1 जनवरी, 2006 को फर्म की कुल पूँजी (7,500 + 7,500) = 15,000 रु

2. पूँजी पर ब्याज अ तथा ब प्रत्येक $\left(\frac{7,500 \times 5}{100}\right) = 375$ रु.

3. ह्रास प्लान्ट $\left(\frac{8,000 \times 10}{100}\right) = 800$ रु. फर्नीचर $\left(\frac{500 \times 5}{100}\right) = 25$ रु.

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	2,100	Cash in Hand and at Bank	815
Bills Payable	590	Debtors	5,525
Capital	16,430	Bills Receivable	680
		Stock	3,600
		Plant	8,000
		Furniture	500
	19,120		**19,120**

Statement of Profit

			Rs.
Capital as on 31.12.2006			16,430
(+) Drawings	A :	450	
	B :	450	
			900
(–) Additional Capital introduced			**17,330**
	A	300	
	B :	300	600
			16,730
(–) Capital as on 1.1 2006			15,000
(–) Depreciation			1,730
	Plant	800	
	Furniture	25	
	Interest on Capital		
	A :	375	
	B ·	375	1,575
		Profit	155

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		2,100.00	Cash in Hand and at Bank		815.00
Bills Payable		590.00	Debtors		5,525.00
capital Account :			Bills Receivable		680.00
A	7,500.00		Stock		3,600.00
(+) Interest	375.00		Plant	8,000	
(+) Additional Capital	300.00		(–) Dep	800	7,200.00
(+) Profit	77.50		Furniture	500	
	8,252.50		(–) Dep.	25	175.00
(–) Drawings	450.00	7,802.50			
B	7,500.00				

NOTES

(+) Interest	375.00			
(+) Additionall Capital	300.00			
(+) Profit	77.50			
	8,252.50			
(–) Drawings	450.00			
		7,802.50		
		18,295.00		18,295.00

Problem 5 : A, B and C are partners in a firm. They keep their books according to single entry system. Their statement of affairs on 31st December, 2005 was a follows :

	Rs.		Rs.
Creditors	4,000	Cash	500
A's Capital	10,000	Debtors	6,000
B's Capital	5,000	Machinery	10,000
		Stock	1,500
		C's Capital	1,000
	19,000		**19,000**

Balancee on 31st December, 2006 were : Cash Rs. 500; Debtors Rs. 8,000; Stock Rs. 2,000; Machinery Rs. 12,000; Creditors Rs. 1,500; A, B and C respectively withdraw Rs. 2,000; Rs. 1,000; and Rs. 1,500 for personal use. Interest on Capital is 5% p.a. and interest at the same percentage is charged on overdrawn Capital. Prepare Statement of Profit, Capital Accounts and Balance Sheet on 31st December, 2006 They share profit & losses in the ratio of 1/2 : 1/3 : 1/6

Solution : 1. पूँजी पर ब्याज A : $\left(\frac{10,000 \times 5}{100}\right)$ = 500 रु., B : $\left(\frac{5,000 \times 5}{100}\right)$ = 250 रु

2. अधिविकर्ष पर ब्याज C : $\left(\frac{1,000 \times 5}{100}\right)$ = 50 रु

3. 31.12.2005 को फर्म की कुल पूँजी . 10,000 + 5,000 — 1,000 = 14,000 रु

Statement of Affairs (As on 31st December. 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	1,500	Cash	500
Capital		Debtors	8,000
(Balancing figure)	21,000	Stock	2,000
		Machinery	12,000
	22.500		**22.500**

Statement of Profit

	Rs.
Capital as on 31.12.2006	21.000
(+) Drawing (2.000 + 1,000 + 1.500)	4,500
	25.500
(–) Capital as on 31.12.2005	14,000
	11.500
Less : Interest on partners' Capital (500 + 250)	750
	10.750
Add : Interest on C's Capital overdrawn	50
Net Profit	**10,800**

Division of Profit A : $\left(10,800 \times \frac{1}{2}\right)$ = 5,400 रु.; B : $\left(\frac{10,800 \times 1}{3}\right)$ = 3,600 रु. तथा C: $\left(10,800 \times \frac{1}{6}\right)$ 1,800 रु.

Balance Sheet

(As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		1,500	Cash		500
Capitals :			Debtors		8,000
A :	10,000		Stock		2,000
(+) Net Profit	5,400		Machinery		12,000
	15,400		C's Capital	1,000	
(–) Drawings	2,000		(+) Drawings	1,500	
			(+) Interest	50	
	13,000			2,550	
(+) Interest	500	13,900	(–) Net Profit	1,800	
B :	5,000				750
(+) Net Profit	3,600				
(+) Interest	250				
	8,850				
(–) Drawings	1,000	7,850			
		23,250			**23,250**

Problem 6 : एक व्यापारी अपनी पुस्तकें इकहरी लेखा पद्धति से रखता है। उसकी रोकड़ बही का 2006 वर्ष का विश्लेषण निम्न प्रकार है :

	रु.		रु.
विविध देनदारों से प्राप्त	4,000	बैंक अधिविकर्ष 1.1.2006 को	600
अतिरिक्त पूँजी लगाई 30 सितम्बर, 2006 को	300	विविध लेनदारों को भुगतान	2,700
माँ से 6% ब्याज पर ऋण लिया 1 जुलाई, 2006 को	2,500	सामान्य व्यय	900
		वेतन	300
		आहरण	400
		बैंक में शेष 31 दिसम्बर 2006 को	1,900
	6,800		**6,800**

1 जनवरी, 2006 को उसके आधिक्य निम्न प्रकार थे—

विविध देनदार 5,300 रु., विविध लेनदार 1,900 रु., स्कन्ध 1,800 रु., भवन 2,500 रु.. 31 दिसम्बर 2006 को उसके आधिक्य निम्न प्रकार थे।

विविध देनदार –6,000 रु., विविध लेनदार 1,900 रु., स्कन्ध 3,600 रु., भवन 2,500 रु., भवन को 5% प्रतिवर्ष से ह्रासित कीजिये, माँ के ऋण पर एक छमाही के ब्याज का आयोजन कीजिये तथा पूँजी पर 5% की दर से ब्याज लगाइये।

31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापारी का व्यापार खाता तथा लाभ-हानि खाता और उक्त तिथि को उसका स्थिति विवरण बनाइये।

NOTES

Solution : 1. उधार विक्रय की गणना :

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,300	By Cash A/c	4,000
To Credit Sales	4,700	By Balance c/d	6,000
	10,000		**10,000**

2. उधार क्रय की गणना :

Total Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	2,700	By Balance b/d	1,900
To Balance c/d	1,900	By Credit Purchases	2,700
	4,600		**4,600**

3. ऋण पर ब्याज देय $\left(\frac{2,500 \times 6 \times 6}{1000 \times 12}\right) = 75$ रु.

4. वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी की गणना

Statement of Affairs
(As on 1st January, 2006)

	Rs.		Rs.
Bank Overdraft	600	Debtors	5,300
Creditors	1,900	Stock	1,800
Capital	7,100	Building	2,500
	9,600		**9,600**

5. पूँजी पर ब्याज : $\left(\frac{7,100 \times 5}{100}\right) = 355$ रु. + अतिरिक्त पूँजी पर 3 माह का ब्याज : $\left(\frac{300 \times 5 \times 3}{100 \times 2}\right)$ 3.75 रु., कुल ब्याज 358.75 रु

6. भवन पर ह्रास : $\left(\frac{2,500 \times 5}{100 \times 12}\right) = 125$ रु.

Trading and Profit & Loss Account (For the Year ended 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	1,800.00	By Sales	4,700.00
To Purchases	2,700.00	By Closing Stock	3,600.00
To Gross Profit	3,800.00		
	8,300.00		**8,300.00**
To General Expenses	900.00	By Gross Profit	3,800.00
To Salaries	300.00		
To Interest on Capital	358.75		
To Depreciation on Building	125.00		
To Interest on C's Loan	75.00		
To Net Profit	2,041.25		
	3,800.00		**3,800.00**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Capital	7,100.00		Cash at Bank		1,900
(+) Additional Capital	300.00		Debtors		6,000
(+) Net Profit	2,041.75		Stock		3,600
(+) Interest on Capital	358.75		Building	2,500	
			(–) Depreciation	125	
	9,800.00				2,375
(–) Drawings	400.00	9,400			
Creditors		1,900			
C's Loan		2,500			
Accrued Interest		75			
		13,875			**13,875**

NOTES

Problem 7 : A trader, who was has not kept a complete set of books, asks you to prepare his final accounts for the year ended 31st December, 2006. You are, however, able to obtain the following information :

Summary of his Cash Book : Balance of Cash on 1st January, 2006 Rs. 5,170; Debtors Rs. 42,050; Personal Drawings Rs. 3,000; Purchases Rs. 32,400; Salaries Rs. 2,500; Rent Rs. 1,200; Electricity Charges Rs. 350; Printing and Stationery Rs. 250; Advertising Rs. 450; His other Assets and liabilities were as further :

His other assets and liabilities were—

	31 st Dec., 2005 Rs.	31st Dec., 2006 Rs.
Debtors	3,350	5,100
Creditors	1,400	3,500
Rent Outstanding	100	100
Electricity Charges Outstanding	20	15
Advertising outstanding	–	250

The Stock on 31st December, 2006 was valued at Rs. 4,500 but the trade has no record of the Stock on record of the Stock on 31st December, 2005. He informs you, however, that the invariably sells his goods at cost plus $33\frac{1}{3}$ %.

Prepare his Profit & Loss Account for the year ended 31st December, 2006 and his Balance Sheet as on that date.

एक व्यापारी जो पूर्ण पुस्तकें नहीं रखता, आपसे 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष के अन्तिम खाते तैयार करने के लिए कहता है। आपने किसी प्रकार निम्न सूचनाएँ प्राप्त की :

उसकी रोकड़ पुस्तक का सारांश : 1 जनवरी, 2006 को रोकड़ का शेष, 5,170 रु., देनदार 42,050 रु., वैयक्तिक आहरण 3,000 रु., क्रय 32,400 रु., वेतन 2,500 रु., किराया 1,200 रु., बिजली खर्च 350 मुद्रण व आलेखन 250 रु., विज्ञापन 550 रु.।

उसके अन्य सम्पत्ति व दायित्व —

	31 दिसम्बर, 2005 रु.	31 दिसम्बर, 2006 रु.
देनदार	3,350	5,100
लेनदार	1,400	3,500
अदत्त किराया	100	100
अदत्त बिजली	20	15
अदत्त विज्ञापन	...	250

31 दिसम्बर, 2006 को स्टॉक का मूल्य 4,500 रु. था, व्यापारी के पास 31 दिसम्बर, 2005 के स्टॉक का कोई लेखा न था। उसने आपको सूचना दी कि उसने अपना माल लागत पर $33\frac{1}{3}$ % सहित बेचा है। 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का उसका लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिए।

Solution : 1 उधार क्रय तथा उधार विक्रय ज्ञात करना।

NOTES

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	3,350	By Cash A/c	42,050
To Credit Sales	43,800	By Balance c/d	5,100
	47,150		**47,150**

Total Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	3,500	By Balance b/d	1,400
		By Credit Purchases	2,100
	3,500		**3,500**

प्रारम्भिक स्कन्ध की गणना—

Sales Rs. 43,800

Gross Profit : ($33\frac{1}{3}$ % on cost) $\left(43,000 \times \frac{100}{3} \times \frac{3}{400}\right)$ = Rs. 10,950

माना लागत मूल्य 100 रु. है, लाभ $\frac{100}{3}$ रु. होगा अर्थात् विक्रय मूल्य $\left(100 + \frac{100}{3}\right) = \frac{400}{3}$ रु. होगा।

अत: $\frac{400}{3}$ रु. विक्रय मूल्य पर लाभ $\frac{100}{3}$ है।

Memorandum Trading A/c

	Rs.		Rs.
Opening Stock (Balancing figure)	2,850	Sales	43,800
Purchases	34,500	Closing Stock	4,500
Gross Profit	10,950		
	48,300		**48,300**

3 31 दिसम्बर, 2005 को पूंजी

Statement of Affairs
(As on 31.12.2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	1,400	Debtors	3,350
Outstanding Rent	100	Cash	5,170
Electricity	20	Stock	2,850
Capital	9,850		
	11,370		**11,370**

4. 31.12.2006 को रोकड़ **Cash Book**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,170	By Drawings	3,000
To Debtors	42,050	By Purchases	32,400
		By Salaries	2,500
		By Rent	1,200
		By Electricity	350
		By Printing and Staty	250
		By Advertisement	450
		By Balance c/d	7,070
	47,220		**47,220**

NOTES

Trading and Profit & Loss A/c
(For the year ended 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
To Opening Stock		2,850	By Sales (Credit)	43,800
To Purchases :			By Closing Stock	4,500
Cash		32,400		
Credit		2,100		
To Gross Profit		10,950		
		48,300		**48,300**
To Salaries		2,500	By Gross Profit	10,950
To Rent	1,200			
(−) Paid for 2005	100			
	1,100			
(+) Due for 2006	100			
To Electricity	350	1,200		
(−) for 2005	20			
	330			
(+) Due for 2006	15	345		
To Advertisement	450			
(+) Due for 2006	250	700		
To Printing and Staty.		250		
To Net Profit		5,955		
		10,950		**10,950**

Balance Sheet
(As on 31st December, 2006)

Rs.		Rs.		
Creditors		3,500	Debtors	5,100
Outstanding Expenses			Closing Stock	4,500
Rent		100	Cash-in-Hand	7,070
Electricity		15		
Advertisement		250		
Capital on 1.1.2006	9,850			
(−) Drawings	3,000			
	6,850			
(−) Net Profit	5,955	12,805		
		16,670		**16,670**

NOTES

Problem 8 : एक व्यापारी ने 1 जनवरी, 2006 को 15,000 रु. की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। वह केवल एक रोकड़ बही तथा व्यक्तिगत बही रखता है। उसके रोकड़ व्यवहारों का लेखा निम्नानुसार था :

देनदारों से प्राप्त 8,500 रु., नकद विक्रय 3,450 रु., लेनदारों को भुगतान 10,640 रु., खर्चे चुकाए 1,250 रु., आहरण 2,000 रु., नकद क्रय 3,500 रु., फर्नीचर खरीदा 200 रु.।

31 दिसम्बर, 2006 को उसकी सम्पत्तियाँ एवं दायित्व निम्नानुसार थे—

अन्तिम खाते बनाइये तथा फर्नीचर पर 20 रु. ह्रास काटिये तथा 500 रु. डूबत ऋण संचिति बनाइये।

Solution : 1. उधार विक्रय की गणना

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Credit Sales	14,800	By Cash A/c	8,500
(Balancing figure)		By Balance c/d	6,300
	14,800		**14,800**

2. उधार क्रय की गणना : **Total Creditors A/c**

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	10,640	By Credit Purchases	14,420
To Balance c/d	3,780	(Balancing figure)	
	14,420		**14,420**

3. 31.12.2006 को हस्तस्थ रोकड़ की गणना : **Cash Book**

	Rs.		Rs.
To Capital	15,000	By Creditors	10,640
To Debtors	8,500	By Expenses	1,250
To Cash Sales	3,450	By Drawings	2,000
		By Purchases	3,500
		By Furniture	200
		By Balance c/d	9,360
	26,950		**26,950**

Trading and Profit & Loss A/c
(For the year ended 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
To Purchases			By Sales	
Cash		3,500	Cash	3,450
Credit		14,420	Credit	14,800
To Gross Profit		5,930	By Closing Stock	5,600
		23,850		**23,850**
To Expenses Paid	1,250		By Gross Profit	5,930
(−) Outstanding	150	1,400		
To Depreciation on Furniture		20		
To Provision for Bad Debts		500		
To Net Profit		4,010		
		5,930		**5,930**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.			Rs.
Creditors		3,780	Debtors	6,300	
Outstanding Expenses		150	(–) Provision	500	
Capital	15,000				5,800
(–) Drawings	2,000		Furniture	200	
			(–) Depreciation	20	
	13,000				180
(+) Profit	4,010		Cash		9,360
		17,010	Closing Stock		5,600
		20,940			**20,940**

Problem 9 : Mr. Jajoo whose account are recorded by single entry, commenced business only with Rs. 1,000; loan him by his wife and 2,000 of his own, acquired a retail business of which he took possession on 1st January, 2006.

Of the acquisition price Rs. 750 was attributed to Goodwill; Rs. 250 to Furniture Fixture and Fittings Rs. 1,750 to Stock and R. 250 was retained as working capital of which Rs. 200, was paid into the Bank.

During the year Mr. Jajoo's takings amount to Rs. 11,500 of which Rs. 10,900 was paid into the Bank, the remainder being in part utilised for cash payments

The payments out of the Bank and cash during the year were as under .	**Rs.**
Purchase	7,800
Salary—Head Assistant	250
Wages	820
Trade Expenses	360
Rent, Rates and Taxes	
Business	296
Personal	148
Payments made for domestic expenses	120
Drawings	1,200

At the close of the year Mr. Jajoo's Stock was of the value of Rs. 1,875.

He owed Sundry Creditors for goods Rs. 675, and there was owing him for goods sold Rs. 750.

The balance at the Bank was Rs. 275

Provide 5 percent depreciation of Furniture. Fittings and Fixtures Interest at 5% per annum on Wife's Loan, Rs. 50 for doubtful debts.

Prepare Cash Book with cash and bank columns, Profit & Loss Account for the year ended 31st December, 2006 and Balance Sheet as on that date.

Solution : टिप्पणियाँ—

1. प्रश्न में दी गई सूचना के अनुसार बैंक खाते में जमा राशि की स्थिति निम्नानुसार है—

	रु
पूंजी की राशि	200
बिक्री की जमा राशि	10,900
कुल जमा	11,100

प्रश्न में अन्तिम बैंक शेष 275 रु. बताया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि कुल भुगतानों में से (11,100 - - 275) = 10,825 रु. के भुगतान बैंक में से किए गये है।

NOTES

2. कुल भुगतान :

	रु.
क्रय	7,800
वेतन	250
मजदूरी	820
व्यापारिक व्यय	360
किराया, कर आदि	
व्यापारिक	296
व्यक्तिगत	148
घरेलू भुगतान	120
आहरण	1,200
	10,994
(—) बैंक द्वारा भुगतान	10,825
रोकड़ भुगतान	169

3. यह मान लिया गया है कि व्यापारिक व्यय 360 रु. में से 169 रु. रोकड़ी तथा शेष (360 —169) = 191 रु. बैंक द्वारा चुकाए गए है।

4. वर्ष के प्रारम्भ में कोई देनदार तथा लेनदार नही थे और न ही वर्ष में इससे कोई भुगतान सम्बन्धी व्यवहार हुए। अतः अन्तिम देनदार उधार विक्रय तथा लेनदार उधार क्रय होंगे।

Cash Book

Particulars	Cash	Bank	Particulars	Cash	Bank
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Capital	2,000		By Goodwill	750	
To Mrs. Jajoo's loan	1,000		By Furniture etc.	250	
To Cash		200	By Stock	1,750	
To Sales	600	10,900	By Bank	200	
			By Drawings		1,200
			By Rent, Rates etc		296
			By Purchases		7,800
			By Salaries		250
			By Wages		820
			By Trade Expenses	169	191
			By Personal Rent		148
			By Domestic Payments		120
			By Balance c/d	181	275
	3,600	11,100		3,600	11,100

Trading and Profit & Loss A/c
(For the year ended 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	1,750.00	By Sales Cash	11,500.00
To Purchases Cash	7,800.00	Credit	750.00
To Credit	675.00	By Closing Stock	1,875.00
To Wages	820.00		
To Gross Profit	3,080.00		
	14,125.00		14,125.00

To Salaries	250.00	By Gross Profit	3,080.00
To Trade Expenses	360.00		
To Rent, Rates etc.	296.00		
To Depreciation Furniture etc.	12.50		
To Interest on Wife's Loan	50.00		
To Provision for Doubtful Debts	50.00		
To Net Profit	2,061.50		
	3,080.00		**3,080.00**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

			Rs.			Rs.
Creditors			675.00	Goodwill		750.00
Wife's Loan		1,000.00		Furniture	250.00	
(+) Interest		50.00		(–) Depreciation	12.50	
			1,050.00			237.50
Capital		2,000.00		Closing Stock		1,875.00
(+) Net Profit		2,061.50		Bank		275.00
				Debtors	750.00	
		4,061.50		(–) Provision	50.00	700.00
(–) Presonal Exp.	148			Cash		481.00
Payments	120					
Drawings	1,200	1,468.00	2,593.50			
			4,318.50			**4,318.50**

Problem 10 : राममोहन अपनी पुस्तकें एकल प्रविष्टि के अनुसार रखता है। उसके व्यवसाय से सम्बन्धित निम्नलिखित सूचनाएँ आपको दी जा रही है

अवस्था विवरण (1 जनवरी, 2006 को)

	रु.		रु.
पूंजी	2,00,000	हस्तस्थ रोकड़	700
लेनदार	36,000	प्राप्य बिल	25,000
देय बिल	16,000	देनदार	39,000
बैंक अधिविकर्ष	5,000	स्टॉक	75,300
		प्लाण्ट एवं मशीनरी	40,000
		फर्नीचर	7,000
		भूमि एवं भवन	50,000
		अन्य सम्पत्तियाँ	20,000
	2,57,000		**2,57,000**

रोकड़ बही

	रु.		रु.
शेष	700	अधिविकर्ष	5,000
देनदारों से प्राप्त राशि	2,90,000	लेनदारों को भुगतान	1,47,000
प्राप्य बिलों की प्राप्त राशि	1,00,000	विनियोग (1 जुलाई, 1988 का 3% स.प्र. ऋण)	10,000
नकद विक्रय	37,000	आहरण	45,000
		देय-बिल	1,43,000
		मजदूरी	800

NOTES

NOTES

		वेतन	70,000
		विविध व्यय	2,000
		शेष :	
		हस्तस्थ	400
		बैंकस्थ	4,500
	4,27,700		**4,27,700**

अन्य सूचनायें :

	रु.		रु.
वर्ष की कुल बिक्री	4,40,000	पृष्ठांकित प्राप्त बिल अनादरित	500
बट्टा दिया	2,000	निर्गमित देय बिल	1,34,000
कुल क्रय	3,00,000	31.12.2006 को शेष देनदार	45,000
प्राप्त बट्टा	1,000	स्टॉक	53,000
प्राप्य बिल प्राप्त	1,09,000		
प्राप्य बिल अनादरित	1,000		
प्राप्य बिल पृष्ठांकित	10,000		

31 दिसम्बर, 2006 को राममोहन का व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये।

Solution : 1. प्रस्तुत प्रश्न में 31.12.2006 को लेनदार, प्राप्य बिलों तथा देय बिलों के शेष नहीं है। अतः ये खाते खोलने होंगे।

2. विनियोगों पर 6 माह का उपार्जित ब्याज $\left(\frac{10,000 \times 3 \times 6}{100 \times 12}\right)$ = 150 रु.

3. उधार बिक्री = कुल बिक्री – नकद बिक्री (4,40,000 — 37,000) = 4,03,000 रु ; चूंकि नकद क्रय नहीं है अतः समस्त क्रय उधार क्रय होगा।

4. कुल देनदार खाता का अन्तिम शेष सहित इस खाते से सम्बन्धित अन्य समस्त सूचनायें दी गई है। इन सूचनाओं से देनदार खाता बनाने पर डेबिट पक्ष में 250 रु. का अन्तर आता है। देनदार खाता में क्रेडिट शेष यह प्रकट करता है कि किसी ग्राहक से अग्रिम भुगतान (जैसे माल के आदेश के साथ अग्रिम) प्राप्त हो गया है। इसे चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाएगा।

Total Debtors A/c

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	39,000		By Cash A/c	2,90,000
	To B/R A/c	1,000		By Discount A/c	2,000
	To Creditors A/c	500		By B/R A/c	1,09,000
	To Credit Sales	4,03,000	31.12.06	By Balance c/d	45,000
31.12.06	To Balance c/d	2,500			
		4,46,000			**4,46,000**

Total Creditors A/c

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	1,47,000	1.1.06	By Balance b/d	36,000
	To Discount A/c	1,000		By Debtors A/c	500
	To B/R A/c	10,000		By Purchases A/c	3,00,000
	To B/P A/c	1,34,000			
31.12.06	To Balance c/d	44,500			
		3,36,500			**3,36,500**

Bills Receivable A/c

		Rs.			Rs.
1.1.06	To Balance b/d	25,000		By Cash A/c	1,00,000
	To Debtors	1,09,000		By Debtors A/c	1,000
				By Creditors A/c	10,000
			1.12.06	By Balance c/d	23,000
		1,34,000			**1,34,000**

Bills Payable A/c

		Rs.			Rs.
	To Cash A/c	1,43,000	1.1.06	By Balance b/d	16,000
31.12.06	To Balance c/d	7,000		By Creditors A/c	1,34,000
		1,50,000			**1,50,000**

Trading and Profit & Loss (For the year ended 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	75,300	By Sales	4,40,000
To Purchases	3,00,000	By Closing	53,000
To Wages	800		
To Gross Profit	1,16,900		
	4,93,000		**4,93,000**
To Salaries	70,000	By Gross Profit	1,16,900
To Sundry Expenses	2,000	By Accrued Interest	150
To Discount Allowed	2,000	By Discount Received	1,000
To Net Profit	44,050		
	1,18,050		**1,18,050**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
Creditors		44,500	Cash-in-Hand	400
Bills Payable	7,000		Cash-at-Bank	4,500
Capital	2,00,000		Debtors	45,000
(–) Drawings	45,000		Bills Receivable	23,000
	1,55,000		Plant & Machinery	40,000
(+) Net Profit	44,050		Furniture	7,000
		1,99,050	Land and Building	50,000
Debtors (Cr. Balance)		2,500	Other Assets	20,000
			Accrued Interest	150
			Investment	10,000
			Closing Stock	53,000
		2,53,050		2,53,050

NOTES

Problem 11 : P and Q are in partnership and keep their books by Single Entry. They share profit and losses in the ratio of 3/5th and 2/5th respectively. They instruct you to prepare their Balance Sheet as at 31st December, 2006 together with a Profit and Loss Account for the year ended on that date.

On analysis of firm's Cash Book for the period you find the following information; Bank Balance (1st January) Rs. 4,000; P's Drawings Rs. 4,500; Q's Drawings Rs. 3,000; Paid to Trade Creditors (including Bills Payable) Rs. 38,000; Wages Rs. 11,000; Salaries Rs. 5,000; Other Trade Expenses Rs. 13,255; Received fromTrade Debtors (including Bill Receivable) Rs. 53,645; Bank Balance 31st December (Overdraft) Rs. 1,500; Cash in Hand (31st December) Rs. 200 and Receipts from Cash Sales Rs. 15,810.

The respective Capitals of P and Q at 1st January were Rs. 40,000 and Rs. 10,000. Particulars of other assets and liabilites of the firm were as follows :

	1st January	**31st December**
Stock in Hand	19,800	25,000
Debtors	25,000	19,355
Creditors	22,000	7,000
Bills Receivable	5,000	7,000
Business Premises	20,000	20,000
Bills Payable	3,000	. . .
Office Furniture	1,200	1,200

Under the partnership deed 5% interest on partner's Capital is to be charged (ignoring drawings) on Profit & Loss Account Mr. Q is also entitled to be credited with a Commission of 6% upon the net profits divisible between the partners after charging such Commission. You are to create Reserve Rs. 1,500 for Doubtful Debts and write off 5% depreciation on Business Premises and Furniture.

Solution : 1. चूँकि प्रश्न मे व्यापारिक लेनदारो को दी गई राशि मे देय बिलों के भुगतान मे दी गई राशि तथा देनदारों से प्राप्त राशि मे प्राप्य बिलो के भुगतान में प्राप्त राशि भी सम्मिलित है, अत: देनदारो एवं प्राप्य बिल खाते तथा लेनदारो एव देय बिल खाते अलग-अलग न बनाए जाकर संयुक्त बनाने होंगे। इन खातो को बनाकर उधार बिक्री एवं उधार क्रय की राशियाँ ज्ञात की जायेंगी।

Debtors and Bills Receivable Account

	Rs.		**Rs.**
To Balance b/d :		By Cash A/c	53,645
Debtors	25,000	By Balance c/d :	
Bills Receivable	5,000	Debtors	19,355
To Credit Sales	50,000	Bills Receivable	7,000
	80,000		**80,000**

Creditors and Bills Payable A/c

	Rs.		**Rs.**
To Cash A/c	38,000	By Balance b/d	
To Balance c/d		Creditors	22,000
Creditors	7,000	Bills Payable	3,000
Bill Payble	.	By Credit Purchases	20,000
	45,000		45,000

2. **Q को देय कमीशन**– कमीशन चार्ज करने के पश्चात् शुद्ध लाभ पर 6% अर्थात् कमीशन चार्ज करने के पूर्व 106 रु. लाभ पर 6 रु. कमीशन—कमीशन चार्ज करने से पूर्व का लाभ 16,695 रु. (सकल लाभ

में से वेतन से लेकर ह्रास तक मदों का योग घटाएँ) कमीशन : $\left(\frac{16,695 \times 6}{106}\right) = 945$ रु.,

3. साझेदारों में लाभ का वितरण $\left(\frac{15,750 \times 3}{5}\right) = 9,450$ रु $\left(\frac{15,750 \times 2}{5}\right) = 6,300$ रु.।

Trading and Profit & Loss A/c

		Rs.		Rs.
To Opening Stock		19,800	By Sales	
To Purchases (Credit)		20,000	Cash	15,810
To Wages		11,000	Credit	50,000
To Gross Profit c/d		40,010	By Closing Stock	25,000
		90,810		**90,810**
To Salaries		5,000	By Gross Profit b/d	40,010
To Trade Ezpenses		13,255		
To Interest on Capitals				
P		2,000		
Q		500		
To Reserve for Doubtful Debts		1,500		
To Depreciation				
Business Premises		1,000		
Furniture		60		
To Q's Commission		945		
To Net Profit :				
P	9,450			
Q	6,300	15,750		
		40,010		**40,010**

Balance Sheet
(As on 31st December, 2006)

			Rs.			Rs.
Creditors			7,000	Debtors	19,355	
Q's Commission			945	(–) Reserve	1,500	
Bank Overdraft			1,500			17,000
Capital Accounts				Bills Receivables		7,000
	P	Q		Premises	20,000	
Balance	40,000	10,000		(–) Depreciation	1,000	
(+) Profit	9,450	6,300				19,000
Interest	2,000	500		Furniture	1,200	
				(–) Depreciation	60	
	51,450	16,800				1,140
(–) Drawings	4,500	3,000		Stock		25,000
			46,950	Cash		200
	46,950	13,800	13,800			
			70,195			**70,195**

Problem 12 : श्री विनीत अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं। आपको उनका व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाना है

	रु.		रु.
देनदारों को क्रेडिट की गई रोकड़ तथा बट्टा	64,200	देनदारों से प्राप्त चैक	43,200
प्राप्त बट्टा	200	चैक द्वारा आहरण (drawings)	4,200
व्यय नकद चुकाये गये	3,400	31.12.2006 को हस्तस्थ रोकड़	2,200

NOTES

अशोध्य ऋण	500	बट्टा दिया	700
बैंक से धन निकाला (Cash withdrawn)	4,500	लेनदारों को चैक द्वारा भुगतान	53,500
चैक द्वारा व्ययों का भुगतान	3,500	कुल बिक्री	69,100
देनदारों से प्राप्त रोकड़	20,300	नकद क्रय	2,100
बैंक में जमा की गई रोकड़	15,500	लेनदारों को रोकड़ी भुगतान	6,300
रोकड़ी आहरण (Cash drawings)	1,500		

	1.1.2006 रु.	31.12.2006 रु.
देनदार	—	15,000
रोकड़ तथा बैंक	13,900	5,300
स्टॉक	8,700	10,500
प्लाण्ट	5,600	4,600
फर्नीचर	2,200	2,200
लेनदार	6,000	9,400
व्ययों के लिए दायित्व	500	800

Solution : टिप्पणियाँ : 1. बैंक तथा रोकड़ के अलग-अलग आरम्भिक एवं अन्तिम शेष ज्ञात करने के लिए बैंक खाता तथा रोकड़ खाता बनाइये। 31.12.2006 की रोकड़ तथा बैंक का संयुक्त शेष 5,300 रु., हस्तस्थ तथा रोकड़ 2,200 रु. बताई गई है। अतः 31.12.2006 को बैंक खाते का शेष (5,300 — 2,200) = 3,100 रु. है। अब बैंक खाते का अन्तर आरम्भिक शेष (10,000 रु.) है। रोकड़ तथा बैंक खाते का आरम्भिक शेष 13,900 रु. है। इसमें से बैंक शेष 10,000 रु. घटाकर शेष 3,900 रु. आरम्भिक रोकड़ शेष है।

2. प्रश्न में कुल बिक्री 69,100 रु. की बताई गई है। रोकड़ खाते में आरम्भिक एवं अन्तिम शेष रखने के बाद आने वाला अन्तर 2,300 रु., नकद बिक्री तथा शेष (69,100 — 2,300) = 66,800 रु. उधार बिक्री होगी।

3. उधार बिक्री की प्रविष्टि करने के बाद देनदार खाते का अन्तर आरम्भिक देनदार होंगे।

4. कुल लेनदार खाते में अन्तर की राशि उधार क्रय होगा।

5. अब आर्थिक-स्थिति-विवरण बनाकर आरम्भिक पूँजी की गणना करें।

6. प्रश्न में एक मद देनदारों की क्रेडिट की गई रोकड़ तथा बट्टा 64,200 रु. दी गई है, यह निम्नलिखित मदों का योग है जो प्रश्न में अलग-अलग भी दी गई है। अतः 64,200 रु. की अलग से प्रविष्टि नहीं होगी

	रु.
देनदारों से प्राप्त रोकड़	20,300
देनदारों से प्राप्त चैक	43,200
देनदारों से प्राप्त बट्टा	700
	64,200

Bank Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	10,000	By Cash	4,500
(Balancing figure)		By Expenses	3,500
To Cash	15,500	By Drawings	4,200
to Debtors	43,200	By Creditors	53,400
		By Balance c/d	3,100
	68,700		**68,700**

Cash Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	3,900	By Expenses	3,400
To Bank	4,500	By Bank	15,500
To Debtors	20,300	By Drawings	1,500
To Cash Sales		By Purchases	2,100
(Balancing figure)	2,300	By Creditors	6,500
		By Balance c/d	2,200
	31,000		**31,000**

Total Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	12,900	By Cash	20,300
(Balancing figure)		By Bad Debts	500
To Credit Sales	66,800	By Bank	43,200
		By Discount A/c	700
		By Balance c/d	15,000
	79,700		**79,700**

Total Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Bank	53,400	By Balance b/d	6,000
To Cash	6,300	By Credit Purchases	63,300
To Discount	200	(Balancing figure)	
To Balance c/d	9,400		
	69,300		**69,300**

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
Creditors	6,000	Bank	10,000
Liability for Expenses	500	Cash	3,900
(Balancing figure)		Debtors	12,900
Capital	36,800	Stock	8,700
		Plant	5,600
		Furniture	2,200
	43,300		**43,300**

Trading and Profit & Loss A/c (For the Year Ended 31st December, 2006)

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	8,700	By Sales :	
To Purchases :		Cash	2,300
Cash	2,100	Credit	66,800
Credit	63,300	By Closing Stock	10,500
To Gross Profit	5,500		
	79,600		**79,600**

To Bad Debts		500	By Gross Profit	5,500
To Expenses :			By Discount Received	200
By Cheque	3,500		By Net Loss	3,700
By Cash	3,400			
Outstanding	6,900			
(+) For 2006	800			
	7,700			
(–) Outstanding for 2005	500	7,200		
To Discount allowed		700		
To Depreciation on Plant				
(5,600 — 4,600)		1,000		
		9,400		**9,400**

Balance Sheet (As on 31st December, 2006)

		Rs.		Rs.
Creditors		9,400	Cash at Bank	3,100
Liability for Expenses		800	Cash-in-Hand	2,200
Capital	36,800		Debtors	15,000
(–) Drawings			Stock	10,500
(1,500 + 4,200)	5,700		Plant	4,600
	31,100		Furniture	2,200
(–) Net Loss	3,700	27,400		
		37,600		**37,600**

अभ्यास के लिए प्रश्न
(Assignment Material)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions) :

1. अपूर्ण लेखा पद्धति (Incomplete System of Accounts) से आपका क्या आशय है? इसके क्या दोष है। आप अपूर्ण लेखा पद्धति को दोहरा लेखा पद्धति में किस प्रकार बदलेंगे?
2. अपूर्ण लेखा पद्धति या एकल प्रविष्टि प्रणाली से क्या आशय है? इसके अन्तर्गत खाते कैसे रखे जाते है? द्वि-प्रविष्टि प्रणाली से यह किस प्रकार भिन्न है?
3. एकल प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार खाते रखे जाने पर लाभ-हानि की गणना किस प्रकार की जाती है?
4. व्यापार के शुद्ध मूल्य (Net worth) से क्या आशय है? शुद्ध-मूल्य में हुए परिवर्तन के द्वारा लाभ-हानि की गणना कैसे की जा सकती है?
5. एकल-प्रविष्टि प्रणाली के अनुसार खाते रखे जाने पर निम्नलिखित की गणना आप कैसे करेंगे, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

   (क) उधार विक्रय, (ख) उधार क्रय, (ग) वर्ष में प्राप्त प्राप्य-बिल, (घ) आरम्भिक स्कन्ध।
6. 'एकल प्रविष्टि प्रणाली एक अपूर्ण, अवैज्ञानिक तथा दोषपूर्ण लेखा पद्धति है।' इस कथन की व्याख्या कीजिए। इन दोषों के होते हुए भी व्यवहार में इसका प्रयोग क्यों होता है?

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions) :

1. किसी संस्था का कुल लाभ क्या होगा, यदि वर्ष के प्रारम्भ में उसकी पूंजी 20,000 रु. वर्ष के अन्त में 22,500 रु. हो तथा वर्ष में उसने 4,500 रु. निजी व्यय के लिए निकाले हों? [Ans. 7,000 रु.]
2. अज्ञात राशि (missing figure) की गणना कीजिए।

   अन्तिम पूंजी 80,000 रु. आहरण 12,000 रु. वर्ष में अर्जित लाभ 24,000 रु. आरम्भिक पूंजी अज्ञात।

   [**Ans.** आरम्भिक पूंजी 68,000 रु.]

3. मिस्टर X अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा प्रणाली के आधार पर रखता है। उसकी स्थिति 30 जून, 2006 को निम्न प्रकार थी:

	रु.		रु.
व्यापार में रहतिया	12,700	मशीन	5,060
रोकड़ हाथ में	190	विविध देनदार	2,800
रोकड़ बैंक में	2,100	विविध लेनदार	5,020

31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले 6 माह में मिस्टर X ने घरेलू व्ययों के लिए व्यापार से 2,030 रु. निकाले।

उसकी स्थिति 31 दिसम्बर, 2006 को निम्न प्रकार थी :

	रु.		रु.
व्यापार में रहतिया	13,100	मशीन	5,260
रोकड़ हाथ मे	250	विविध देनदार	3,910
रोकड़ बैंक मे	1,090	विविध लेनदार	4,010

31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले 6 माह के लिए उसके लाभ-हानि का विवरण बनाइये तथा उसी दिन का चिट्ठा तैयार कीजिये। [**Ans.** शुद्ध लाभ 3,800 रु., चिट्ठे का योग 25,610 रु.]

(**संकेत**—आरम्भिक पूँजी 17,830 रु., अन्तिम पूँजी 19,600 रु.)

Mr. X keeps his books by Single Entry. His position on 30th June, 2006 was as follows :

	Rs.		Rs.
Stock in trade	12,700	Machinery	5,060
Cash in Hand	190	Sundry Debtors	2,800
Cash to Bank	2,100	Sundry Creditors	5,020

During the 6 month ended 31st Dec., 2005 Mr. X withdrawn from the business for his household expenses Rs. 2,030.

His position on 31st Decmber, 2006 was as follows :

	Rs.		Rs.
Stock in trade	13,100	Machinery	5,260
Cash in Hand	250	Sundry Debtors	3,910
Cash at Bank	1,090	Sundry Creditors	4,010

Perepare Statement to show his profit or loss for six month ended 31 December, 2006 and his Balance Sheet on that date.

4. मिन्कू अपनी पुस्तकें एकल-प्रविष्टि प्रणाली में रखता है। 31 दिसम्बर, 206 को उसकी पूँजी 1,87,000 रु. थी जबकि वर्ष के प्रारम्भ में यह पूँजी 1,92,000 रु. थी। वर्ष में उसने 84,200 रु. अपने निजी उपयोग हेतु व्यापार में निकाले तथा 20,000 रु. के अपने विनियोग 2% प्रव्याजि (premium) पर बेचकर उससे प्राप्त राशि भी व्यापार में लगा दी। विवरण बनाकर उसके लाभ की गणना कीजिए।

[**Ans.** लाभ 58,800 रु.]

[**संकेत**—विनियोगों के विक्रय से प्राप्त राशि $\left(\frac{20,000 \times 102}{100}\right)$ = 20,400 रु. अतिरिक्त पूँजी के रूप में व्यापार में लगाई गई।]

5. श्री सुमित्र अपनी पुस्तकें अपूर्ण पद्धति में रखता है। उसने निम्न सूचनायें दीं।

	1.1.2006	31.12.2006
	रु.	रु.
फर्नीचर	200	200
स्टॉक	2,800	3,050
देनदार	2,100	3,400

रोकड़	150	200
लेनदार	1,750	2,000
देय विपत्र	....	300
ऋण (Cr.)	....	500
विनियोग	....	1,000

NOTES

उसके आहरण 500 रु. थे।

उसका लाभालाभ निम्न समायोजनों को विचार में लेते हुए ज्ञात कीजिए तथा 31.12.2006 का चिट्ठा भी बनाइए :

(क) फर्नीचर पर 10% ह्रास अपलिखित कीजिए।

(ख) देनदारों पर 10% डूबत ऋण आयोजन कीजिए।

(ग) देनदारों तथा लेनदारों पर $2\frac{1}{2}$% बट्टे के लिए आयोजन कीजिए।

[**Ans.** शुद्ध लाभ 1,663.50 रु., चिट्ठे का योग 7,413.50 रु.]

[**संकेत**—आरम्भिक पूँजी 3,500 रु., अन्तिम पूँजी (समायोजन से पूर्व) 5,050 रु., देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन देनदारों में से डूबत ऋण घटाकर शेष राशि पर बनाइये।]

5.14 सारांश

- ऐसे व्यक्ति या संस्थाओं जो रोकड़ पद्धति और प्रविष्टि प्रणाली का मिला जुला रूप प्रयोग करते है। इसे एकल प्रविष्टि प्रणाली कहते है।
- छोटे व्यापारियों के लिये यह प्रणाली सरल और मितव्ययी है, लेखांकन का साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी इस प्रणाली का उपयोग कर सकता है।
- अवस्था वितरण विधि और परिवर्तन विधि के माध्यम से लाभ-हानि खाते की गणना की जाती है।

5.15 शब्दावली

एकल प्रविष्टि प्रणाली, द्वि प्रविष्टि प्रणाली, आर्थिक चिट्ठा, साझेदारी फर्म

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–6 बीमा दावे के लेखे
[ACCOUNTING FOR INSURANCE CLAIM]

NOTES

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 बीमा से आशय

6.3 बीमा की परिभाषा

6.4 बीमा का वर्गीकरण

6.5 साधारण बीम से आशय

6.6 साधारण बीमा का राष्ट्रीय करण

6.7 साधारण बीमा कम्पनियों के खाते

6.8 आगम खाता

6.8.1 आगम खाता की कुछ मदों का स्पष्टीकरण

6.9 लाभ-हानि खाता

6.10 लाभ-हानि विनियोजन खाता

6.11 आर्थिक चिट्ठा

6.12 क्रियात्मक प्रश्न

6.13 सारांश

6.14 शब्दावली

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे।

- बीमा से आशय एवं वर्गीकरण को समझा सकेंगे।
- साधारण बीमा कम्पनियो के खाते तैयार कर सकेंगे।
- लाभ-हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा बना सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

बीमा आधुनिक युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त अनिश्चितताओं एवं उनसे उत्पन्न जोखिमों ने बीमा को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। **बीमा जोखिमों से सुरक्षा का** सर्वाधिक प्रभावकारी उपाय है।

6.2 बीमा से आशय (Meaning of Insurance)

बीमा वह प्रावधान है जो एक विवेकशील व्यक्ति आकस्मिक या अवश्यम्भावी घटनाओं, हानियों या दुर्भाग्य के विरुद्ध करता है। यह जोखिम को बाँटने या फैलाने का तरीका है।

NOTES

6.3 परिभाषा

फैडरेशन ऑफ इन्श्योरेन्स इन्स्टीट्यूटस् के अनुसार, "बीमा एक पद्धति है जिसमें एक समान प्रकार की जोखिम से घिरे व्यक्ति एक सामान्य कोष में अंशदान करते हैं जिसमें से कुछ दुर्भाग्यशाली व्यक्तियों को दुर्घटनाओं से उत्पन्न हानियों को पूरा किया जाता है।"

बून तथा कूर्ज (Boon and Kurtz) के शब्दों में —"बीमा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक फर्म (बीमा कम्पनी), शुल्क (बीमा प्रीमियम) के बदले लिखित अनुबन्ध (बीमा पत्र) में उल्लिखित धनराशि दूसरी फर्म या व्यक्ति (बीमित) को हानि होने पर देने को सहमत होती है।'

6.4 बीमा का वर्गीकरण (Classification of Insurance)

भारत में बीमा अधिनियम, 1983 के अनुसार व्यावसायिक दृष्टि से विभिन्न प्रकार के बीमा को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(क) जीवन बीमा (Life Insurance), तथा

(ख) साधारण बीमा (General Insurance)

6.5 साधारण बीमा से आशय (Meaning of General Insurance)

साधारण बीमा व्यवसाय से आशय अग्नि, समुद्री अथवा विविध बीमा व्यवसाय से है जो किसी एक बीमा कम्पनी या अनेक बीमा कम्पनियों द्वारा मिलकर किया जाता है। इस प्रकार साधारण बीमा को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(1) अग्नि बीमा (2) समुद्री बीमा, तथा (3) विविध बीमा।

(1) **अग्नि बीमा** (Fire Insurance)- -इस प्रकार के बीमे में अग्नि से उत्पन्न होने वाली जोखिमों के विरुद्ध बीमा कराया जाता है। बीमाकर्त्ता बीमित को बीमा की विषय-वस्तु की अग्नि से उत्पन्न होने वाली क्षति को पूर्ति करने का वचन देता है।

समुद्री बीमा (Marine Insurance)—समुद्री बीमा सामुद्रिक जोखिमों के विरुद्ध बीमा है। समुद्री बीमा अधिनियम, 1963 की धारा 3 के अनुसार— "समुद्री बीमा एक ऐसा अनुबन्ध है जिसके द्वारा बीमाकर्त्ता बीमा अनुबन्ध में वर्णित विधि एवं सीमा तक बीमित व्यक्ति को सामुद्रिक हानियों की पूर्ति का दायित्व लेता है।" सामुद्रिक बीमा जहाज, जहाज में ढोये जाने वाले माल, जहाजी भाड़े आदि का कराया जा सकता है।

विविध बीमा (Miscellaneous Insurance)—अग्नि और सामुद्रिक बीमा के अतिरिक्त अन्य सामान्य बीमे विविध बीमा में आते हैं। वाहन बीमा, चोरी-डकैती बीमा, फसल बीमा, पशु बीमा आदि विविध बीमा के उदाहरण है।

6.6 साधारण बीमा का राष्ट्रीयकरण (Nationalisation of General Insurance)

भारत में जीवन बीमा की भाँति साधारण बीमा का भी राष्ट्रीयकरण कर लिया गया है। साधारण बीमा व्यवसाय (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम, 1972 की धारा 9 के अन्तर्गत **भारतीय साधारण बीमा निगम** (General Insurance Corporation) का गठन किया गया है जो साधारण बीमा व्यवसाय का निरीक्षण, नियन्त्रण एवं संचालन करता है। निगम एवं इसकी सहायक कम्पनियों पर भी कतिपय अपवादों को छोड़कर बीमा अधिनियम (Insurance Acts.) लागू होता है।

बोध प्रश्न

1. बीमा को परिभाषित कीजिये।

2. बीमा को कितने भागों में बाँटा गया है। नाम बताओ।

....

....

....

NOTES

3. साधारण बीमा कम्पनी मे कौन से खाते बनाये जाते है।

....

....

....

6.7 साधारण बीमा कम्पनियों के खाते (Accounts of General Insurance Companies)

बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 10 के अनुसार प्रत्येक बीमा कम्पनी को प्रत्येक प्रकार के बीमा (तथा विविध बीमा) की प्राप्तियों एवं भुगतानों के पृथक्-पृथक् लेखे रखने होते है।

अधिनियम की धारा 11 के अनुसार प्रत्येक बीमा कम्पनी को वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर को निम्नलिखित विवरण तैयार करने होते है :—

(1) **चिट्ठा या स्थिति-विवरण** (Balance Sheet)—प्रथम अनुसूची के खण्ड I में निर्दिष्ट विनियमनों के अनुसार उस अनुसूची के खण्ड II में निर्दिष्ट प्रारूप 'A' में।

(2) **लाभ-हानि खाता** (Profit and Loss A/c) तथा लाभ-हानि विनियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation A/c) द्वितीय अनुसूची के खण्ड I के विनियमनों के अनुसार उस अनुसूची के खण्ड II में निर्दिष्ट प्रारूप 'B' तथा 'C' मे।

(3) अग्नि, सामुद्रिक तथा विविध प्रत्येक वर्ग के बीमा-व्यवसाय के लिए पृथक्-पृथक् **आगम खाता** (Revenue A/c) तृतीय अनुसूची के खण्ड I के विनियमनों के अनुसार उस अनुसूची के भाग II में निर्दिष्ट प्रारूप 'F' में।

6.8 आगम खाता (Revenue Account)

बीमा कम्पनी का अग्नि, समुद्री तथा विविध प्रत्येक प्रकार के बीमे से होने वाले लाभ/हानि की अलग-अलग गणना करने के उद्देश्य से प्रत्येक प्रकार के व्यवसाय का आगम खाता पृथक्-पृथक् बनाया जाता है। आगम खाता वाणिज्यक लेखाकन (Mercantile Accounting) के सामान्य सिद्धान्तो के अनुसार ही बनाया जाता है, जिसमे उस व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त व्ययों एवं आयों का लेखा किया जाता है तथा अदत्त व्ययों (outstanding expenses) उपार्जित आयो (accrued incomes) आदि के लिए आवश्यक समायोजन भी किए जाते है। आगम खाता प्रारूप 'F' में बनाया जाता है, जो निम्नानुसार है—

Form 'F'

.... Company

.... Revenue Account

For the year ended 31st December, 19

	Rs.		Rs.
Claims under policies less reinsurance paid during the year **Add** : Total estimated liability in		Balance of Account at the beginning of the year Reserve for Unexpired Risks Additional Reserve	

NOTES

respect of outstanding claims at the end of the year, whether due or intimated		Premium less reinsurance	
Less : Outstanding at the end of the previous year		Interest, Dividends and Rents............ (—) Income tax	
Commission :		Commission on Reinsurance Ceded	
On Direct Business		Other Incomes	
On Reinsurance Accepted			
Expenses of Management			
Bad Debts			
Taxes			
Other Expenditure			
Profit transferred to Profit and Loss A/c			
Balance of A/c at the end of the year			
Reserve for unexpired Risks			
Additional Reserve			
Claims paid to claimants in India		Premiums derived from business effected in India	
Claims paid to claimants outside India		Premiums derived from business effected outside India	

प्रारूप 'F'

अग्नि बीमा व्यवसाय, समुद्री बीमा व्यवसाय तथा विविध बीमा व्यवसाय पर लागू होने वाला आगम खाता का प्रारूप।

.... कम्पनी का आगम खाता

.... को समाप्त वर्ष के लिए

.... बीमा व्यवसाय के लिए

	रु.		रु.
पॉलिसियों के अधीन दावे, पुनर्बीमा घटाकर वर्ष में भुगतान किए गए		वर्ष के प्रारम्भ में खाते का शेष असमाप्त जोखिम के लिए संचय	
जोड़िये वर्ष के अन्त में अदत्त दावों के		अतिरिक्त संचय	
सम्बन्ध में कुल अनुमानित दायित्व जो		प्रीमियम, पुनर्बीमा घटाकर	
देय हो गए हैं अथवा सूचित हो गए हैं		ब्याज, लाभांश एवं किराए	
घटाइए : गत वर्ष के अन्त में अदत्त		(—) आयकर	
कमीशन		अर्पित पुनर्बीमा पर कमीशन	
प्रत्यक्ष व्यवसाय पर		अन्य आय (निर्दिष्ट की जाए)	
स्वीकृत पुनर्बीमा पर		हानि, लाभ-हानि खाता को हस्तान्तरित	
प्रबन्ध-व्यय		विनियोजन खाता से हस्तान्तरण	
अशोध्य ऋण			
कर			
अन्य व्यय (निर्दिष्ट किया जाए)			
लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित लाभ			

वर्ष के अन्त में खाते का शेष असमाप्त जोखिम के लिए संचय अतिरिक्त संचय			
भारत मे दावेदारों को भुगतान किए गए दावे	–	भारत में किए गए व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम	
भारत के बाहर दावेदारों को भुगतान किए गए दावे	–	भारत के बाहर किए गए व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम	

NOTES

6.8.1 आगम खाता की कुछ मदों का स्पष्टीकरण (Explanation of certain items of Revenue A/c)

पुनर्बीमा (Reinsurance)

जब कोई बीमा कम्पनी किसी बीमा अनुबन्ध की सम्पूर्ण जोखिम स्वय अकेले उठाने में समर्थ नही होती तो वह उसके कुछ भाग का बीमा किसी अन्य बीमा कम्पनी से करा लेती है। इस प्रकार एक बीमा कम्पनी द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त व्यवसाय की कुछ जोखिम का हस्तांतरण पुनर्बीमा स्वीकार करने वाली कम्पनी को कर दिया जाता है। इस प्रकार कराए गए पुनर्बीमा को अर्पित पुनर्बीमा (reinsurance ceded) तथा इस प्रकार स्वीकार किए गए पुनर्बीमा को स्वीकृत पुनर्बीमा (reinsurance accepted) कहते है।

पुनर्बीमा के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य ध्यान रखने चाहिए–

(1) जो कम्पनी पुनर्बीमा कराती है उसे प्रीमियम का भुगतान करना होता है, चूँकि वह व्यवसाय दे रही है अतः उसे कमीशन प्राप्त होता है तथा दावा उत्पन्न होने पर वह पुनर्बीमा स्वीकार करने वाली कम्पनी से राशि वसूल करती है जिसे पुनर्बीमा वसूली कहते है।

(2) जो कम्पनी पुनर्बीमा करती है उसे प्रीमियम प्राप्त होता है, कमीशन का भुगतान करना होता है तथा दावा होने पर भुगतान करना होता है।

पॉलिसियों के अन्तर्गत दावे (Claims under policies)

बीमा कम्पनी जिस जोखिम का बीमा करती है उसके उत्पन्न हो जाने पर उसे बीमा कराने वाले दावे (claim) का भुगतान या क्षति-पूर्ति करनी होती है। आगम खाते में व्यय की यह प्रथम मद है। इस मद में सर्वप्रथम वर्ष मे भुगतान किए गए दावों (claims paid during the year) की राशि दिखाते है। उल्लेखनीय है कि भुगतान किए दावों की राशि में दावो के सम्बन्ध मे प्रत्यक्ष व्ययों–जैसे दावो के सम्बन्ध में चिकित्सा व्यय, कानूनी व्यय, सर्वेक्षण व्यय आदि जोड़े जाते है। इसके अतिरिक्त यदि इन दावों के सम्बन्ध मे कोई पुनर्बीमा हो तो पुनर्बीमा करने वाली कम्पनी से वसूल की गई राशि (re-insurance recoveries) भुगतान किए गए दावों की राशि मे से घटा देते है। इस प्रकार आगम खाते मे दर्शाई जाने वाली वर्ष मे भुगतान किए गए दोवो की राशि निम्नानुसार ज्ञात की जाती है–

	रु.
Claims paid (भुगतान किए गए दावे)	
(–) Reinsurance Recoveries (पुनर्बीमा वसूली)	
(+) Direct Expenses regarding claims (दावों के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष व्यय) जैसे	
Legal Expenses (कानूनी व्यय)	
Medical Expenses (चिकित्सा व्यय)	
Survey Expenses (सर्वेक्षण व्यय)	
Claims paid during the year (वर्ष मे भुगतान किए गए दावे)	

अदत्त दावो के सम्बन्ध में अनुमानित दायित्व (Estimated liability in respect of outstanding claims)–वर्ष के अन्त मे कुछ ऐसे दावे होते है जो देय तो हो गए होते है, अथवा जिनकी सूचना प्राप्त हो गई होती है किन्तु जिनका अभी भुगतान नही किया गया होता है। चूंकि ये दावे इसी वर्ष मे सम्बन्धित होते है,

अतः वर्ष के अन्त में अदत्त दावों के सम्बन्ध में कुल दायित्व का अनुमान लगाकर इनकी राशि वर्ष में भुगतान किए गए दावों की राशि में जोड़ देते हैं।

इसी प्रकार इस वर्ष भुगतान किए गए दावों की राशि में गत वर्ष अदत्त रहे दावों की राशि भी सम्मिलित होती है। चूँकि ये दावे गत वर्ष के हैं तथा इनको गत् वर्ष भुगतान किये गये दावों की राशि में जोड़ा जा चुका होगा, अतः इन्हें अब इस वर्ष भुगतान किए गए दावों की राशि में से घटा दिया जाएगा।

कमीशन (Commission)

बीमा कम्पनी को प्राप्त होने वाले बीमा व्यवसाय पर कमीशन का भुगतान करना होता है जो उसके लिए व्यय होता है। बीमा कम्पनी व्यवसाय या तो प्रत्यक्ष प्राप्त करती है अथवा स्वीकृत पुनर्बीमा के रूप में। अतः प्रत्यक्ष व्यवसाय पर कमीशन (Commission on Direct Business) तथा स्वीकृत पुनर्बीमा पर कमीशन (Commission on Reinsurance Accepted) को आगम खाते में डेबिट करते हैं। जब बीमा कम्पनी किसी अन्य कम्पनी से पुनर्बीमा कराती है तो उसे कमीशन मिलता है जो उसकी आय होती है, अतः अर्पित पुनर्बीमा पर कमीशन (Commission on Reinsurance Ceded) आगम खाते में क्रेडिट करते हैं।

प्रबन्ध व्यय (Expenses of Management)

ये व्यय आगम खाते में डेबिट किए जाते हैं तथा इनमें बीमा कम्पनी के प्रबन्धक एवं प्रशासन से सम्बन्धित व्ययों को सम्मिलित किया जाता है। इनके कुछ उदाहरण हैं— कर्मचारियों-अधिकारियों को वेतन-भत्ते आदि, किराया, डाक, तार, टेलीफोन, यात्रा-व्यय, छपाई, स्टेशनरी, कानूनी व्यय, अंकेक्षण शुल्क, संचालकों का शुल्क आदि।

खातों का शेष, कोष या संचय (Balance of Account, Fund or Reserve)

बीमा कम्पनी को प्रीमियम एक निश्चित अवधि की जोखिम का दायित्व लेने के लिए प्राप्त होती है। वर्ष के अन्त में अनेक ऐसी पॉलिसियाँ होती हैं जिनके जोखिम की अवधि अभी समाप्त नहीं हुई होती है तथा अगले वर्ष तक जाती है। उदाहरण के लिए कम्पनी ने मान लीजिए 1 अक्टूबर, 1987 को बीमे किए। वर्ष के अन्त तक इन बीमों की पूर्ण जोखिम समाप्त नहीं होगी क्योंकि इसकी अवधि 1 अक्टूबर, 1987 से 30 सितम्बर, 1988 तक की होगी। इस प्रकार समाप्त नहीं हुई जोखिम असमाप्त जोखिम (unexpired risk) कहलाती है। किसी वर्ष का आगम खाता बनाते समय प्रत्येक कम्पनी को इस प्रकार की असमाप्त जोखिम के लिए प्रावधान करना अनिवार्य होता है। सामुद्रिक बीमा के सम्बन्ध में असमाप्त जोखिम के संचय शुद्ध प्रीमियम (अर्थात् प्राप्त प्रीमियम में से पुनर्बीमा प्रीमियम घटाकर) का 100% तथा अग्नि एवं विविध बीमा के सम्बन्ध में शुद्ध प्रीमियम का 50% बनाना होता है।

अतिरिक्त संचय (Additional Reserve)—असमाप्त जोखिम के लिए उपर्युक्त प्रकार से बनाये जाने वाले अनिवार्य संचय के अलावा यदि कम्पनी चाहे तो अतिरिक्त संचय भी बना सकती है यह संचय भी शुद्ध प्रीमियम पर कम्पनी द्वारा निर्धारित प्रतिशत से बनाया जाता है।

इन संचयों के आरम्भिक शेष आगम खाते के क्रेडिट-पक्ष में वर्ष के प्रारम्भ में खातों के शेष (Balance of Account at the beginning of the year) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाते हैं तथा वर्ष के अन्त में इन संचयों में क्रेडिट की जाने वाली राशि आगम खाता को डेबिट की जाती है। वर्ष के अन्त में इन संचयों के शेष चिट्ठे के दायित्व पक्ष में Balances of Funds and Accounts शीर्षक के अन्तर्गत दिखाए जाते हैं।

प्रीमियम पुनर्बीमा घटाकर (Premiums less reinsurance)

बीमा कम्पनी बीमा कराने वालों से प्रीमियम लेती है जो उसकी आय का प्रमुख स्रोत होती है। प्रत्यक्ष व्यवसाय तथा स्वीकृत पुनर्बीमा पर प्राप्त कुल सकल प्रीमियम में से अर्पित पुनर्बीमा पर दी जाने वाली प्रीमियम घटाकर शेष बचने वाली राशि आगम खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाई जाती है।

प्रीमियम में कमी करके बोनस (Bonus in reduction of Premium)

इसे 'No claim bonus' कहते हैं। ऐसी पॉलिसियों का जिन पर बीमा कराने वाले ने गत वर्ष कोई दावा (claim) न लिया हो, जब अगले वर्ष नवीनीकरण (renewal) कराया जाता है तो उस पर बीमा कम्पनी प्रीमियम में कुछ छूट 'no claim bonus' के रूप में दे देती है। इस प्रकार बोनस दिए जाने पर कम्पनी को प्राप्त होने वाली प्रीमियम की राशि कम हो जाती है। आगम खाता बनाते समय इस बोनस को प्रीमियम में जोड़ देते हैं तथा आगम खाता के डेबिट पक्ष में इसे अन्य व्यय (Other expenditure) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाते हैं।

भारत में तथा भारत के बाहर व्यवसाय (Business in India and outside India)

आगम खाते में यह भी पृथक्-पृथक् बताना होता है कि कुल दोनों में से कितने दावे भारत के अन्दर भुगतान किये गये (Claims paid to claimants in India) तथा कितने दावे भारत के बाहर किये गये (Claims paid to claimants outside India)। इसी प्रकार प्रीमियम के सम्बन्ध में भी भारत में किये गये व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम (Premiums derived from business transacted in India) तथा भारत के बाहर किये गये व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम (Premiums derived from business transacted outside India) का ब्यौरा अलग-अलग देना होता है।

NOTES

Illustration : 31 दिसम्बर, 2007 को एक साधारण बीमा कम्पनी की पुस्तकों में समुद्री बीमा से सम्बन्धित निम्नलिखित विवरण था (On 31st December, 2007, the books of a General Insurance Company in respect of marine insurance contained the following particulars :

	रु. (Rs.)
असमाप्त जोखिम के लिए संचय 31-12-2006 को (Reserve for Unexpired Risks on 31.12.2006)	12,00,000
अतिरिक्त संचय 31-12-2006 को (Additional Reserve on 31.12.2006)	1,00,000
दत्त दावे (Claims Paid)	6,40,000
अदत्त दावों के सम्बन्ध में अनुमानित दायित्व (Estimated liability in respect of Outstanding Claims) :	
31 दिसम्बर, 2006 को (on 31st December, 2006)	65,000
31 दिसम्बर, 2007 को (on 31st December, 2007)	90,000
प्रबन्ध व्यय (दावों के सम्बन्ध में चुकाये गये 30,000 रु. कानूनी व्यय के शामिल हैं) (Expenses of Management including Rs. 30,000 Legal Expenses paid in connection with Claims)	2,80,000
पुनर्बीमा प्रव्याज (Reinsurance Premiums)	75,000
पुनर्बीमा प्राप्तियाँ (Reinsurance Recoveries)	20,000
प्राप्त प्रव्याजि (Premiums Received)	10,00,000
अर्जित प्रव्याजि (Accrued Premiums)	
31 दिसम्बर, 2006 को (on 31st December, 2006)	80,000
31 दिसम्बर, 2007 को (on 31st December, 2007)	2,00,000
ब्याज एवं लाभांश (Interest and Dividends)	64,520
ब्याज एवं लाभांश पर आयकर (Income Tax on Interest and Dividends)	6,520
विनियोगों के विक्रय पर लाभ (Profit on sale of Investments)	11,000
प्रत्यक्ष व्यवसाय पर दत्त कमीशन (Commission paid on Direct Business)	1,42,000
स्वीकृत पुनर्बीमा पर दत्त कमीशन (Commission paid on Reinsurance Accepted)	10,000
अर्पित पुनर्बीमा पर प्राप्त कमीशन (Commission received on Reinsurance Ceded)	12,000

2007 के लिए निर्धारित प्रारूप में समुद्री आगम खाता बनाइए। शुद्ध प्रव्याजि का 100% असमाप्त जोखिम के लिए संचय कीजिए। अतिरिक्त संचय अपरिवर्तित रखिए। यह मान लीजिए कि दावों और प्रव्याजि का 1/4 भाग भारत के बाहर के व्यवसाय से सम्बन्धित है। (Prepare in the prescribed form the Marine Insurance Revenue Account for 2007, reserving 100% of Net Premiums for Unexpired Risks. Keep the Additional Reserve unchanged. Assume that one-fourth of the Claims and Premiums are applicable to business outside India.)

NOTES

Solution. हल—

(1) **Claims paid during the year :**

	Rs.
Paid	6,40,000
(–) Reinsurance Recoveries	20,000
(+) Legal Expenses	6,20,000
	30,000
	6,50,000

(2) **Premiums less reinsurance :**

Premiums received	10,00,000
(–) Reinsurance Premiums	75,000
	9,25,000
(+) Accrued Premiums on 31.12.2007	2,00,000
	11,25,000
(–) Accrued Premiums on 31.12.2006	80,000
	10,45,000

Marine Revenue Account (For the year ended 31st December, 2007)

	Rs.			Rs.
Claims under policies less reinsurance		Balance of A/c at the begining of the year		
Paid during the year	6,50,000	Reserve for unexpired Risks		12,00,000
Add : Total estimated liability in respect of Claims outstanding at the end of the year whether due or intimated	90,000	Additional Reserve		1,00,000
		Premiums less reinsurance		10,45,000
		Interest, divident and rents	64,520	
		(–) Income Tax	6,520	
	7,40,000			58,000
Less : Outstanding at the end of the previous year	65,000	Commission on reinsurance added		12,000
	6,75,000	Other Income		
		Profit on sale of Investment		11,000
Commission on				
Direct Business	1,42,000			
On Reinsurance Accepted	10,000			
Expenses of Management	2,50,000			
Bad Debts	—			
Taxes				
Other expenditure	—			
Profit transferred to Profit and Loss A/c	2,04,000			
Balance of A/c at the end of the year				
Reserve for Unexpired Risks	10,45,000			
Additional Reserve	1,00,000			
	24,26,000			24,26,000
Claims paid to Claimants in India 3/4	5,06,250	Premiums derived from Business transacted in India 3/4		7,83,750
Claims paid to Claimants outside India 1/4	1,68,750	Perimmum derived from Business transacted outside India 1/4		2,61,250
	6,75,000			10,45,000

Illustration 2. 31 दिसम्बर, 2007 को बजाज जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि. की पुस्तकों से उसके अग्नि बीमा व्यापार के सम्बन्ध में निम्न विवरण प्राप्त हुआ। (On 31st December, 2007 the books of the Bajaj General Insurance Company Ltd. discolsed the following particulars in respect of its Fire Insurance Business)—

	Rs.
असमाप्त जोखिम के लिए संचय (31 दिसम्बर, 2006) (Reserve for Unexpired Risk on 31st Dec. 2006)	5,20,000
अतिरिक्त संचय (31 दिसम्बर, 2006) (Additional Reserve on 31st Dec. 2006)	1,00,000
दावों का भुगतान (Claims Paid)	6,40,000
अदत्त दावों के सम्बन्ध में अनुमानित दायित्व (Estimated liability in respect of outstanding claims)—	
31 दिसम्बर, 2006 को (On 31st Dec. 2006)	70,000
31 दिसम्बर, 2007 को (On 31st Dec. 2007)	80,000
व्यवस्थापन व्यय (दावों के सम्बन्ध में प्रदत्त विधि व्यय के 25,000 रु. सम्मिलित) (Expenses of Management including Rs. 25,000 legal charges paid in connection with claims)	2,60,000
कमीशन (Commission)	1,50,000
विनियोगों के विक्रय से लाभ (Profit on sale of Investments)	12,000
प्रीमियम (Premiums)	11,20,000
डूबत ऋण (Bad Debts)	12,000
पुनर्बीमा का प्रीमियम (Reinsurance Premiums)	80,000
पुनर्बीमा से वसूली (Reinsurance Recoveries)	50,000
ब्याज, लाभांश तथा किराया (Interest Dividends and Rents)	72,000
उपरोक्त पर आयकर (Income Tax thereon)	9,000

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष का कम्पनी का अग्निबीमा रेवेन्यू खाता बनाइए। असमाप्त जोखिम के लिए शुद्ध प्रीमियम का 50% तथा अतिरिक्त संचय को अपरिवर्तित रखिए। (Prepare the Fire Insurance Revenue Account of the Company for the year ended 31st Dec. 2007. Reserve for unexpired risks 50% of the net premiums and keep the Additional Reserve unchanged.)

Solution. हल—

	Rs.
(1) दावे भुगतान किए :	6,40,000
(–) पुनर्बीमा वसूली	50,000
	5,90,000
(+) कानूनी व्यय	25,000
दावे वर्ष में भुगतान किए गए	6,15,000

(2) प्रीमियम (11,20,000 – 80,000) = 10,40,000 रु

अग्नि बीमा आगम खाता

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

	रु.			रु.
पॉलिसियों के अधीन दावे, पुनर्बीमा घटाकर वर्ष में भुगतान किए गए	6,15,000	वर्ष के प्रारम्भ में खाते का शेष असमाप्त जोखिम के लिए संचय		5,20,000
(+) वर्ष के अन्त में अदत्त दावों के सम्बन्ध में कुल अनुमानित दायित्व जो देय हो गए है अथवा सूचित हो गए हैं	80,000	अतिरिक्त संचय		1,00,000
		प्रीमियम पुनर्बीमा घटाकर		10,40,000
		ब्याज, लाभांश एवं किराये	72,000	
		(–) आयकर	9,000	
	6,25,000	अन्य आय -		63,000

NOTES

(–) गत वर्ष के अन्त में अदत्त दावे	70,000	विनियोगों के विक्रय पर लाभ	12,000
	6,25,000		
कमीशन :			
प्रत्यक्ष व्यवसाय पर	1,50,000		
	—		
स्वीकृत पुनर्बीमा पर	—		
प्रबन्ध व्यय	2,35,000		
अशोध्य ऋण	12,000		
लाभ-हानि खाते को हस्तांतरित लाभ	93,000		
वर्ष के अन्त में खाते का शेष			
असमाप्त जोखिम के लिए संचय	5,20,000		
अतिरिक्त संचय	1,00,000		
	17,35,000		**17,35,000**

6.9 लाभ-हानि खाता (Profit and Loss Account)

आगम खाता किसी विशिष्ट प्रकार के बीमा व्यवसाय के लाभ-हानि प्रकट करता है। बीमा कम्पनी की किसी व्यापारिक वर्ष मे सभी प्रकार के व्यवसायों से होने वाले कुछ शद्ध लाभ/हानि की गणना करने हेतु प्रारूप 'B' में लाभ हानि खाता बनाया जाता है। अग्नि बीमा, समुद्री बीमा तथा विविध बीमा से हुए लाभ-हानि को संबंधित आगम खाता से लाभ-हानि खाता में हस्तांतरित करके ले आया जाता है तथा व्यय एवं आय की ऐसी मदे जो किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवसाय से सम्बन्धित न हों, इस खाते में डेबिट/क्रेडिट की जाती है। इस खाते का शेष व्यवसाय का शुद्ध लाभ/हानि होती है जिसे लाभ-हानि विनियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation A/c) में ले जाते हैं। लाभ-हानि खाते का निर्दिष्ट प्रारूप अग्रानुसार है:

Form 'B'

Form of Profit and Loss Account

Profit and Loss Account of .... for the year ended 19............

	Rs.		Rs.
Indian Central Tax on the Insurer's Profit not applicable to any particular Fund or Account		Interest, Dividend and Rent not applicable to any particular Fund or Account	
Expenses of Management not applicable to any particular Fund or Account		Less Income tax thereon	
Loss on Realisation of Investments not charged to Reserve or any particular Fund or Account		Profit on realisation of Investments not credited to reserves or any particular Fund or Account	
Depreciation of Investment not charged to Reserves or any particular Fund or Account		Appreciation of Investments not credited to reserve or any particular Fund or Account	
Loss transferred from Revenue Account (details to be given)		Profit transferred from Revenue Accounts (details to be given)	
Other Expenditure to be specified		Transfer Fees	
Balance for the year carried to Appropriation Account		Other Inocme to be specified	
		Balance being loss for the year carried to Appropriation Account	

प्रारूप 'B'
.... कम्पनी का लाभ-हानि खाता
.... को समाप्त वर्ष के लिए

	रु.		रु.
बीमाकर्त्ता के लाभों पर भारतीय केन्द्रीय कर जो किसी विशिष्ट कोष या खाता से सम्बन्धित नहीं हो		ब्याज, लाभांश तथा किराया जो किसी विशिष्ट फण्ड या खाते से सम्बन्धित न हो घटाइए– उस पर आयकर	
प्रबन्ध-व्यय जो किसी विशिष्ट कोष या खाता से सम्बन्धित न हो		विनियोगों की वसूली पर लाभ जिसे किसी संचय, विशिष्ट कोष या खाते को क्रेडिट नहीं किया गया हो	
विनियोगों की वसूली पर हानि जो किसी संचय, विशिष्ट कोष या खाते को चार्ज नहीं की गई हो		विनियोगों में वृद्धि जिसे किसी संचय विशिष्ट कोष या खाते को क्रेडिट नहीं किया गया हो	
आगम खाते से हस्तांतरित हानि		आगम खाते से हस्तांतरित लाभ	
.... आगम खाता		.... आगम खाता	
.... आगम खाता		.... आगम खाता	
.... आगम खाता		.... आगम खाता	
अन्य व्यय (विवरण दिया जाए)			
वर्ष का शेष विनियोजन खाते को ले जाया गया		हस्तांतरण शुल्क	
		अन्य आय (विवरण दिया जाए)	
		शेष जो वर्ष की हानि है जिसे विनियोजन खाते में ले जाया गया	

6.10 लाभ-हानि विनियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation Account)

NOTES

लाभ-हानि खाते का शेष विनियोजन खाते में लाया जाता है। इस खाते के क्रेडिट पक्ष में गत वर्ष से लाया गया शेष दिखाया जाता है। यदि गत वर्ष के सम्बन्ध में कोई लाभांश दिया गया हो तो वह इसमें से घटा दिया जाता है। लाभ में से किये जाने वाले अन्य विनियोजन जैसे चालू वर्ष का लाभांश, संचय में हस्तान्तरण आदि इस खाते में डेबिट किये जाते हैं। वर्ष के अन्त में इस खाते का शेष चिट्ठे में ले जाया जाकर 'Reserve or Contingency A/c' शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है। इस खाते का निर्दिष्ट प्रारूप निम्नानुसार है

Form 'C'
Profit and Loss Appropriation Account

	Rs.		Rs.
Balance being loss b/f from last year		Balance b/f from last year Less : Dividends paid in respect of last year	
Balance being loss for the year brought from P. & L. A/c		Balance for the year b/f from P. & L. a/c	
Dividends paid during the year on account of the current year		Balance being loss at the end of the year as shown in the Balance Sheet	
Transfers to any particular Fund or Accounts			
Balance at the end of the year as shown in the Balance Sheet			

NOTES

प्रारूप 'C'
लाभ-हानि विनियोजन खाता

	रु.		रु.
शेष जो गत वर्ष से लाई गई हानि है		शेष गत वर्ष से आगे लाया गया	
शेष जो इस वर्ष की हानि है जिसे		(−) गत वर्ष के लिए दिया गया	
लाभ-हानि खाता से लाया गया		लाभांश	
चालू वर्ष के लिए दिया गया लाभांश			
किसी विशिष्ट कोष या खाते को		लाभ-हानि खाते से लाया गया शेष	
हस्तान्तरण		शेष जो वर्ष के अन्त में हानि है	
वर्ष के अन्त में शेष चिट्ठे में दिखाया गया		जिसे चिट्ठे में दिखाया गया	

Illustration 3. 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए माडर्न जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड का निम्नलिखित शेषों से (क) अग्नि आगम खाता, (ख) सामुद्रिक आगम खाता और (ग) लाभ-हानि खाता बनाइए।

From the following balances of the Modern General Insurance Co. Ltd. as on 31st December, 2007 prepare (a) Fire Revenue Account; (b) Marine Revenue Account, and (c) Profit and Loss Account.

	Rs.		Rs.
Bonus in reduction of premium (Fire)	2,000	Aditional reserve on Jan. 2007 (Fire)	50,000
Bad debts (Fire)	5,000	Depreciation	35,000
Bad debts (Marine)	12,000	Interest, dividends received	14,000
Director's fees	5,000	Miscellaneous receipts	5,300
Auditor's fees	1,200	Profit on sale of land	60,000
Share transfer fees	800	Fire premiums less reinsurance	6,00,000
Bad debts recovered	12,000	Marine premiums less reinsurance	10,80,000
Fire fund (1st Jan. 2007)	2,50,000	Management expenses (Fire)	1,45,000
Marine fund (1st Jan. 2007)	8,20,000	Management expenses (Marine)	4,00,000
Claims Paid (Fire)	1,80,000	Commission on reinsurance ceded	
Claims outstanding (Fire)	10,000		
Claims paid and outstanding (Marine)	3,80,000	(Fire)	30,000
		Commission on reinsurance ceded (Marine)	60,000
Commission Paid (Fire)	90,000		
Commission Paid (Marine)	1,08,000	Commission on re-insurance	
Add. Reserve on Jan., 2007 (Fire)	50,000	accepted (Fuire)	10,000

Solution. **Revenue Account (For the year ended 31st Dec., 2007)**

	Fire	Marine		Fire	Marine
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Claims under policies less reinsurance :			Balance of A/c at the beginning of the year :		
Paid & outstanding	1,90,000	3,80,000	Reserve for Unexpired Risks	2,50,000	8,20,000
Commission					
On Direct Business	90,000	1,08,000	Additional Reserve	50,000	
On Reinsurance Accepted	10,000	–	Premiums less reinsurance	6,02,000	10,80,000

Expenses of Management	1,45,000	4,00,000	Commission on		
Bad Debts	5,000	12,000	Reinsurance Ceded	30,000	60,000
Bouns in reduction of			Loss transferred to		
Premium	2,000	—	Profit and Loss A/c	—	20,000
Profit transferred to					
P. & L. A/c	1,89,000	—			
Balance of A/c at the					
end of the year					
Reserve for unexpired					
Risks	3,01,000	10,80,000			
	9,32,000	19,80,000		9,32,000	19,80,000

Profit and Loss Account (For the year ended 31st Dec., 2007)

	Rs.		Rs.
Management Expenses :		Interest, Dividends and Rent	14,000
Director's Fee	5,000	Profit transferred from Fire	
Auditor's Fee	1,200	Revenue A/c	1,89,000
Depreciation	35,000	Transfer Fees	800
Loss transferred from Marine		Other Income	
Revenue A/c	20,000	Bad Debts Recovered	1,200
Balance transferred to Profit		Misc. Receipts	5,300
and Loss Appropriation A/c	2,09,100	Profit on sale of Land	60,000
	2,70,300		**2,70,300**

बोध प्रश्न

4. आगम खाते का प्रारूप दीजिये।

....

....

....

5. लाभ-हानि खाता कैसे बनाया जाता है।

....

....

....

6.11 चिट्ठा (Balance Sheet)

साधारण बीमा कम्पनी का चिट्ठा प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बीमा अधिनियम की प्रथम अनुसूची के भाग I में वर्णित नियमों के अनुसार अनुसूची के भाग II में निर्दिष्ट प्रारूप 'A' में बनाया जाता है। यह प्रारूप निम्नानुसार है—

Part II (Form A)
Form of Balance Sheet
Balance Sheet of ———— of ———— 20 ——

	Rs.		Rs.
Shareholder's Capital		**Loans :**	
(each class to be stated separately)		On Mortgages of property within India	
Authorised		On Mortgages of property outside India	

NOTES

.... shares of Rs. .... each Rs. ....
Subscribed :
.... shares of Rs. .... each Rs. ....
Called up :
.... shares of Rs. .... each Rs. ....
Less Unpaid calls Rs. ....
Reserve or Contingency Accounts (a)
Investment reserve account
Profit and loss appropriation
account balance
....
Balances of Funds and Accounts :
Fire insurance business account
Marine insurance business account
Miscellaneous insurance business
account (m)
Other accounts, if any to be specified (1)
Pension or superannuation accounts (b)
Debenture stock percent
Loans and Advances (c)
Bills Payable (c)
Estimated liability in respect of
outstanding claims, whether due or
intimated (d)
Outstanding dividends
Amounts due to other person or bodies
carrying on insurance business (c)
Sundry creditors (including outstanding
and accruing expenses and taxes (c)
Other sums owing by the insurer
(particulars to be given) (c)
Contingent liabilities (to be specified)

On security of municipal and other public
retes.
On Stock and shares
On Insurer's policies within their surrender
value :
On Personal security
To Subsidiary companies
(other than reversionary).
Reversions and life interests purchased
Loans on reversions and life interests.
Debentures and debenture stocks
of subsidiary reversionary
companies
Ordinary stock and shares of subsidiary
Reversionary companies
Loans to subsidiary
Reversionary companies
Investments :
Deposit with the Reserve Bank of India
(securities to be specified)
India Government Securities
British, British Colonial and British
Dominion Government Securities
Foreign Government Securities
Indian Municipal Securities
British and Colonial Securities
Foreign Securities
Bonds, debentures, stock and other
securities whereon interest is guaranteed
by the Indian Government or a State
Government
Bonds, debentures, stocks and other
securities whereon interest is guaranteed
by the British or any colonial government
Bonds, debentures, stocks and other
securities where on interest
is guaranteed by any Foreign Government
Debentures of any railway in India
Debentures of any railway out of India
Preference or guaranteed
shares of any railway in India
Perference or guaranteed
shares of any railway out of India
Railway ordinary stocks (i) in India
(ii) out of India
Other debentures and debenture stock of
companies incorporated (i) in India,
(ii) out of India
Other guaranteed and Preference stocks

	and shares of companies incorporated (i) in India; (ii) out of India
	Other ordinary stacks and shares of companies incorporated (i) in India, (ii) out of India
	Holdings in subsidiary companies (f)
	House property (i) in India, (ii) out of India.
	Freehold and leasehold ground rents and rent charges
	Agent's Balances
	Outstanding Premiums (g) (d)
	Interest, Dividends and Rents Outstanding (d)
	Interest, Dividends and Rents Accruing but not due (d)
	Amount due from other preson or Bodies carrying on Insurance Business (h)
	Sundry Debtors (i)
	Bills Receivable
	Cash :
	At bankers on deposit account
	At bankers on current account and in hand
	At call and short notice (j)
	Other Accounts (to be specified) (k)
Rs.	Rs. ....

Note :

(a) The resrve or contingency account must be separately stated .

(b) If the insurer has not full and unrestricted control of the assets constituting the Pension or superannuation accounts, either those accounts and the assets and liabilities relating thereto must be emitted from the balance sheet or the assets on which the insurer has no such control must be cleary indicated on the face of balance sheet

(c) If the insurer has deposited security as cover in respect of any of these items, the amount and nature of the securities so deposited must be clearly indicated on the face of the baloance sheet.

(d) These items are or have been included in the corresponding items in the Revenue or Profit and Loss Account. Outstanding and accruing interest, dividends and rents must be shown after deduction of income-tax or the income-tax must be provided for amongst the liabilities on the other side of the balance sheet.

(e) Such items as amount of liability in respect of bills discounted, uncalled capital of subsidiary companies, uncalled capital of other investments etc., must either be shown in their several categories under the heading "Contingent Liabilities" or the appropriate items on the assets side must be set out in such details as will clearly indicate the amount of the uncalled capital.

(f) Either this item must be shown net or the commission must be provided for amongst the liabilities on the other side of the balance sheet.

NOTES

(g) The aggregate amount owing by a subsidiary company or subsidiary companies is to be shown separately from all other asets and the aggregate amount owing to a subsidiary company or subsidiary companies is to be shown spearately from all other liabilities.

(h) Amounts due from directors and officers must be shown separately.

(i) No amounts must be entered under this heading unless fully secured. If not fully secured, the amounts must be included in the heading "Sundry Debtors".

(j) Under this heading must be included such items as the following, which must be shown under separate headings suitable described : Office furniture, goodwill, preliminary, formation and organization expenses, development expenditure carried forward to be written off in future years, balance being loss on profit and loss appropriation accounts, etc. The amounts included in the balance sheet must not be in excess of cost.

(k) Under the head "Other accounts, if any (to be specified)" on the left hand side, fines realised from the staff and their contributing towards the provident fund, if any, should be shown under separare sub-heads.

(l) Where the insurer is required to maintain a separate account in respect of any sub-class of miscellaneous insurance business this heading is to be split up accordingly.

जैसा कि उपर्युक्त प्रारूप से स्पष्ट है बीमा कम्पनी का चिट्ठा काफी विस्तृत सूचनाओं के साथ बनाया जाता है। विद्यार्थियों को सम्पूर्ण प्रारूप तैयार करने में कठिनाई होती है तथा प्राय: परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों में सम्पूर्ण विवरण देकर चिट्ठा नहीं बनवाया जाता। अत: चिट्ठे के संक्षिप्त प्रारूप (abridged form) अंग्रेजी तथा हिन्दी में यहाँ दिए जा रहे है।

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
1. Shareholder's Capital		1. Loans	
2. Reserve of Contingency Accounts		2. Investments	
3. Balance of Funds and Accounts		3. House Property	
4. Debenture Stock		4. Agents Balances	
5. Loans and Advances		5. Premiums outstanding	
Bills Payable		6. Interest, Dividend and Rent	
Estimated liability in respect		Outstanding	
of outstanding claims		7. Amount due from other insurers	
Unclaimed Dividends		8. Bills Receivables	
Amounts due to other insurers		9. Cash Balances	
Sundry Creditors		10 Other Accounts	
Other items			
6 Contingent Liabilities			

प्रारूप 'A'

.... कम्पनी का चिट्ठा .... को

	रु.		रु.
अंशधारियों की पूंजी		ऋण	
(प्रत्येक वर्ग को अलग से बतलाई जाए)		विनियोग	
संचय या आकस्मिकता खाते		एजेण्टों के शेष	
विनियोग संचय खाता		अदत्त प्रीमियम	
लाभ-हानि विनियोजन खाता		अदत्त ब्याज, लाभांश एवं किराया	

कोष एवं खातों के शेष	ब्याज, लाभाँश एवं किराये जो
अग्नि बीमा खाता	उपार्जित है किन्तु देय नहीं
समुद्री बीमा खाता	बीमा व्यवसाय करने वाले अन्य
विविध बीमा खाता	व्यक्तियों, संस्थाओं द्वारा देय राशियाँ
अन्य खाते	विविध देनदार
ऋण-पत्र स्टॉक	प्राप्य बिल
ऋण एवं अग्रिम	रोकड़
देय बिल	(क) बैंक में सावधि खातों में
अदत्त दावों के सम्बन्ध में अनुमानित	(ख) बैंक में चालू खातों में
दायित्व	(ग) माँग एवं अल्प सूचना पर
अग्नि बीमा	अन्य खाते (निर्दिष्ट किए जाएँ)
समुद्री बीमा	
विविध बीमा	
अदत्त लाभाँश	
बीमा व्यवसाय करने वाले अन्य व्यक्तियों	
या संस्थाओं को देय राशि	
विविध लेनदार	
(अदत्त व्ययों, करों सहित)	
बीमाकर्त्ता द्वारा देय अन्य राशियाँ	
आकस्मिक दायित्व (निर्दिष्ट किए जाएँ)	

Illustration 4. हिन्दुस्तान साधारण बीमा कम्पनी का 31-12-2007 को तलपट निम्नानुसार था (The Trial Balance of Hindustan General Insurance Co. on 31.12.2007 was as follows)—

	Rs.	Rs.
Fire fund 1.1.2007		1,22,000
Fire Premium		34,000
Marine fund 1.1.2007		1,84,000
Marine Premium		71,200
Management expenses		
Fire	7,500	
Marine	9,500	
Interest, Dividend and Rent		24,700
Investment Reserve fund		7,200
Claims paid and outstanding		
Fire	12,200	
Marine	10,700	
Provident fund		9,200
Transfer fee		300
Audit fee	400	
Director's fee	700	
Motor Car	2,400	

NOTES

Preference Shares		
Capital (10,000 shares of Rs. 10		
each, Rs. 8 paid up)		80,000
Equity Share Capital		2,00,000
(50,000 shares of Rs. 5 each Rs. 4 paid)		
Forfeited share A/c		700
Claims outstanding		
Fire		2,100
Marine		1,700
Sundry Creditors		2,200
Debtors for Premium due	700	
Fire claims recoverable	900	
Furniture (cost Rs. 9,000)	8,000	
Taxes	2,700	
Reserve fund		22,700
Commission : Fire	2,200	
Marine	2,700	
Land and Building	1,00,000	
Investments	6,00,000	
Cash	3,100	
Bank	15,200	
Profit & Loss A/c (1.1.2007)		12,200
Debts due from other offices	1,000	
Amount due to other offices		5,700
	7,79,900	7,79,900

फर्नीचर की मूल लागत पर 10% तथा मोटर कार पर 15% ह्रास काटिए। असमाप्त जोखिम के लिए प्रावधान अग्नि बीमा के लिए 50% तथा समुद्री बीमा के लिए 100% शुद्ध प्रीमियम पर कीजिए। वर्तमान शेष के अतिरिक्त विनियोग संचय कोष में 700 रुपये और प्रावधान कीजिए। अग्नि तथा समुद्री बीमा व्यवसायों के आगम खाते, लाभ-हानि खाता, लाभ-हानि विनियोग खाता तथा चिट्ठा बनाइए। (Depreciate furniture by 10% on the original cost and Motor car by 15%. Provide for Reserve for unexpired Risks at 50% of premium income for fire and at 100% of premium income for Marine business and Rs. 700 for Investment Reserve fund in addition to the existing balance. Prepare Revenue Accounts for Fire and Marine business and company's Profit and Loss A/c. Profit and Loss Appropriation A/c and Balance Sheet.)

Solution. हल (1) अदत्त दावे तथा वसूली योग्य दावे तलपट में दिए गए है, अत: इनका समायोजन किया जा चुका है।

Revenue Accounts
For the year ended 31.12.2007

	Fire	Marine		Fire	Marine
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Claims under policies			Balance of A/c at the		
reinsurance			beginning of the year		
Paid during the year			Reserve for Unexpired		
and outstanding at			Risks	1,22,000	1,84,000

NOTES

the end of the year	12,000	10,700	Premiums less		
Commission	2,200	2,700	Reinsurance	34,000	71,200
Expenses of Management	7,500	9,500			
Profit transferred to					
Profit & Loss A/c	1,17,100	1,61,100			
Balance of A/c at the					
end of the year					
Resevre for Unexpired					
Risks	17,000	71,200			
	1,56,000	**2,55,200**		**1,56,000**	**2,55,200**

Profit and Loss Account For the year ended 31.12.2007

	Rs.		Rs.
Taxes	2,700	Interest, Dividend & Rent	24,700
Expenses of Management	1,100	Profit transferred from	
Depreciation		Fire Revenue A/c	1,17,100
Furniture	900	Marine Revenue A/c	1,61,100
Motor Car	360	Transfer fee	300
Balance transferred to P. & L.			
App. A/c	2,98,140		
	3,03,200		**3,03,200**

Profit and Loss Appropriation A/c

	Rs.		Rs.
Transfer to Investment Reserve	700	Balance brought forward from	
Balance Carried to Balance Sheet	3,09,640	last year	12,200
		Balance for the year brought	
		forward from P. & L. A/c	2,98,140
	3,10,340		**3,10,340**

Balance Sheet (As on 31st Dec., 2007)

	Rs.			Rs.
Shareholders Capital		Investments		6,00,000
Issued, Subscribed and Paid up		House Property		1,00,000
1,000 Pref. shares of Rs. 10/- each,		Agents Balances		1,200
Rs 8/- Paid-up	80,000	Outstanding Premiums		700
50,000 equity shares of Rs 5/-		Amount due from other		
each,	2,00,000	Reinsurance		900
Rs 4/– paid-up	700	Bills Receivables		
Share forfeited A/c		Cash In hand		3,100
Reserve or Contingency Accounts		At Bank		15,000
Investment Reserve Fund	7,900	Motor Car		2,040
Profit & Loss App. A/c	3,09,640	Furniture	9,000	

NOTES

Reserve Fund	22,700	(–) Depreciation	1,900	
Balance of Funds and Accounts				7,100
Fire Insurance Business	17,000			
Marine Insurance Business	71,200			
Provident Fund	9,200			
Debenture Stock				
Loans and Advances				
Outstanding Claims at the end of the year—				
Fire Insurance	2,100			
Marine Insurance	1,700			
Amount due to other offices	5,700			
Sundry Creditors	2,200			
Contingent Liability	—			
	7,30,040			**7,30,040**

हल किए हुए प्रश्न
(Solved Problems)

Problem 1. रिलायन्स इन्श्योरेन्स कम्पनी लि. की 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष की पुस्तकों से लिए गए निम्नलिखित शेषों से अग्नि बीमा आगम खाता तैयार कीजिए। (From the following balances as at December 31, 2007, in the books of Reliance Insurance Co. Ltd., prepare a Revenue A/c in respect of Fire Insurance business carried out by them).

	Rs.
Claims paid	4,80,000
Claims outstanding on January 1, 2007	40,000
Claims intimated and accepted but not paid on December, 31, 2007	70,000
Premiums received	12,00,000
Reinsurance Premium paid	1,20,000
Commission	2,00,000
Commission on reinsurance ceded	8,000
Commission on reinsurance accepted	4,000
Expenses of Management	3,02,000
Provision for Unexpired Risks on January 1, 2007	4,00,000
Additional Provision for Unexpired Risks on January 1, 2007	20,000
Bonus utilised in reduction of premium	12,000
Reinsurance recoveries of claims	8,000
Medical expenses regarding claims	5,000
Loss on sale of motor car	3,500
Bad Debts	2,500
Refund of Double Taxation	4,500
Interest and Dividend	8,000
Income tax deducted thereon	1,500

Legal Expenses regarding claims	4,000
Profit on sale of Investments	3,500
Rent of Staff Quarters deducted from Salaries	2,400
Depreciation of Furniture	4,600

NOTES

You are required to provide for Reserve for unexpired risks at 40% of net premium and additional reserve at 1 percent of the net premium in addition to the opening balance of Additional Reserve. (अतिरिक्त संचय के आरम्भिक शेष के अतिरिक्त, शुद्ध प्रीमियम के 1 प्रतिशत का अतिरिक्त संचय बनाइए। असमाप्त जोखिम के लिए प्रीमियम का 40% संचय कीजिए।

Solution : हल—

		रु.
(1)	**वर्ष में दिए गए दावे**	
	भुगतान किए दावे	4,80,000
	(–) पुनर्बीमा वसूली	8,000
		4,72,000
	(+) चिकित्सा व्यय	5,000
	कानूनी व्यय	4,000
		4,81,000
(2)	**प्रीमियम–**प्राप्त प्रीमियम	12,00,000
	(–) पुनर्बीमा प्रीमियम	1,20,000
		10,80,000
	(+) बोनस	12,000
		10,92,000

अग्नि बीमा आगम खाता (31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए)

	रु.			रु.
पॉलिसियों के अधीन दावे, पुनर्बीमा घटाकर वर्ष म दिए गए दावे	4,81,000	वर्ष के प्रारम्भ में खाते का शेष असमाप्त जोखिम क लिए संचय		4,00,000
(+) वर्ष के अन्त मे अदत्त दावों के सम्बन्ध में कुल अनुमानित दायित्व जो देय हो गए हैं अथवा सूचित हो गए है	70,000	अतिरिक्त संचय		20,000
	5,51,000	प्रीमियम पुनर्बीमा घटाकर		10,92,000
(–) गत वर्ष के अन्त मे अदत्त दावे	40,000	ब्याज, लाभांश एवं किराये	8,000	
	5,11,000	(—) आयकर	1,500	6,500
कमीशन		आर्पित पुनर्बीमा पर कमीशन		8,000
प्रत्यक्ष व्यवसाय पर	2,00,000	अन्य आय		
स्वीकृत पुनर्बीमा पर	4,000	दोहरे करारोपण की वापसी		4,500
प्रबन्ध व्यय	3,02,000	विनियोगों के विक्रय पर लाभ		3,500
अशोध्य ऋण	2,500	स्टॉफ क्वार्टर्स का किराया		2,400
अन्य व्यय				
ह्रास	4,600			
बोनस	12,000			
मोटर-कार पर, हानि	3,500			
लाभ-हानि खाते को हस्तांतरित लाभ	29,580			

NOTES

वर्ष के अन्त में खाते का शेष असमाप्त जोखिम के लिए संचय (50%)	4,36,800		
अतिरिक्त संचय	30,920		
	15,36,900		15,36,900
भारत में दावेदारों को दिए गए दावे	—	भारत में किए गए व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम	—
भारत के बाहर दावेदारो को दिए गए दावे	—	भारत के बाहर किए गए व्यवसाय से प्राप्त प्रीमियम	—

Problem 2. 31 दिसम्बर, 2007 को निम्नलिखित सूचनाओं से टाटा सामुद्रिक बीमा कम्पनी लि. का आगम खाता बनाइए। (From the following information as on 31 December, 2007 prepare the Revenue A/c of the Tata Marine Insurance Co. Ltd.).

			प्रत्यक्ष व्यवसाय (Direct Business)	पुनर्बीमा (Reinsurance)
			रु.	रु.
(I)	Premium			
	Received		46,00,000	7,20,000
	Receivable—	1st Jan.	2,48,000	27,000
		31st Dec.	3,36,000	34,000
	Paid		-	4,60,000
	Payable—	1st Jan	—	37,500
		31st Dec	—	62,000
(II)	Claims			
	Paid		23,50,000	3,00,000
	Payable—	1st Jan	1,66,000	39,000
		31st Jan.	2,08,000	44,000
	Received		—	1,70,000
	Receivable—	1st Jan.	—	16,000
		31st Jan		23,000
(III)	Commission			
	On Insurance accepted		2,20,000	19,000
	On Reinsurance ceded		—	26,000

(IV) Other Expenses and Income

Salaries Rs. 3,20,000, Rent, Rates and Taxes Rs. 29,000, Postage, Telegrams and Stationery Rs. 43,000; Interest, Dividend and Rent received (net) Rs. 1,37,500, Income tax deducted at source Rs. 40,250; Legal Expenses (inclusive of Rs. 40,000 in connection with settlement of claims) Rs. 72,000; Other Expenditure Rs. 4,40,000.

(V) Balance of Fund on 1st January Rs. 38,45,000 including Additional Reserve of Rs. 4,45,000 Additional Reserve has to be maintained at 5% of the net premium of the year. (अतिरिक्त संचय 4,45,000 रु. सहित 1 जनवरी को कोष का शेष 38,45,000 रु। अतिरिक्त संचय वर्ष की शुद्ध प्रीमियम पर 5% रखना है।)

NOTES

Solution. हल—

(1) **प्रीमियम, पुनर्बीमा घटाकर**

प्राप्त प्रीमियम	46,00,000 + 7,20,000 =		53,20,000
(+) 31-12-07 को प्राप्य	3,36,000 + 34,000 =		3,70,000
			56,90,000
(–) 1-1-2007 को प्राप्य	2,48,000 + 27,000 =		2,75,000
			54,15,000
घटाइए : पुनर्बीमा प्रीमियम		4,60,000	
भुगतान की गई		62,000	
(+) 31-12-07 को देय		5,22,000	
(–) 1-1-07 को देय		37,500	4,84,500
			49,30,500

(2) दावे : वर्ष में भुगतान किए गए	23,50,000 + 3,00,000 =		26,50,000
(–) पुनर्बीमा वसूली : प्राप्त		1,70,000	
31-12-07 को प्राप्य		23,000	
		1,93,000	
1-1-07 को प्राप्य		16,000	1,77,000
			24,73,000
(+) कानूनी व्यय			40,000
			25,13,000

31-12-07 को अदत्त = 2,08,000 + 44,000 = 2,52,000

1-1-07 को अदत्त = 1,66,000 + 39,000 = 2,05,000

(3) प्रबन्ध व्यय– 3,20,000 + 29,000 + 43,000 + 32,000 = 4,24,000

Marine Revenue Account (For the year ended 31st December, 2007)

	Rs.			Rs.
Claims under policies less reinsurance		Balance of A/c at the beginning of the year		
Paid during the year	25,13,000	Reserve for Unexpired Risks		34,00,000
Add : Total estimated liability in respect of claims outstanding at the end of the year whether due or intimated	2,52,000	Additional Reserve		4,45,000
	27,65,000	Premiums less reinsurance		49,30,500
Less Outstanding at the end of the previous year	2,05,000	Interest, Dividend and Rents	1,77,750	
	25,60,000	(–) Income tax	40,250	1,37,500
Commission :		Commision on Reinsurance ceded		26,000
On Direct Business	2,20,000	Other Income		
On Reinsurance Accepted	19,000			
Expenses of Management	4,24,000			
Bad debts	—			
Taxes	—			

NOTES

Other Expenditure	4,40,000		
Profit transferred to Profit and Loss A/c	98,975		
Balance of A/c at the end of the year			
Reserve for Unexpired Risks	49,30,500		
Additional Reserve	2,46,525		
	89,39,000		89,39,000

Problem 3. यह मानते हुए कि असमाप्त जोखिम के लिए कोई संचय नहीं किया गया है, नेशनल फायर बीमा कम्पनी लि. का 31 दिसम्बर, 2007 को निम्नलिखित सूचना के आधार पर रेवेन्यू खाता तथा चिट्ठा बनाइए:—

डेबिट बाकियाँ	रु.	क्रेडिट बाकियाँ	रु.
पुनर्बीमा प्रीमियम	69,000	प्रीमियम	7,70,000
अग्नि से हानि	4,80,000	पुनर्बीमा पर प्राप्य हानियाँ	60,000
प्रबन्ध के व्यय	1,20,000	लाभ-हानि खाता	3,500
कमीशन	1,19,000	सामान्य निधि संचय	2,80,000
अप्राप्य ऋण	11,000	ब्याज व लाभांश (जिसमें से 5,000 रु. प्राप्त नहीं हुए)	13,500
लाभांश का भुगतान	12,500		
भारत में बन्धक	1,00,000	पूँजी	2,50,000
भारत के बाहर बन्धक	10,000	अदत्त अग्नि हानियाँ	63,000
विदेशी प्रतिभूतियाँ	1,55,000	अदत्त लाभांश	6,500
रेलवे ऋणपत्र	1,50,000		
रेलवे पूर्वाधिकार अंश	33,000		
नगरपालिका ऋण	17,000		
बैंक निक्षेप	20,000		
विदेशी कम्पनियों में निक्षेप	17,000		
प्रन्यासियों के पास निक्षेप	11,000		
एजेन्ट व शाखा कार्यालय शेष	1,05,000		
मुख्य कार्यालय पर बकाया प्रीमियम	1,500		
बैंक में रोकड़	10,500		

Solution. हल—(1) अदत्त दावे तलपट में दिए हैं, अतः इनका समायोजन हो चुका है।

(2) अदत्त दावे 63,000 रु. को सम्मिलित करते हुए अग्नि की हानि 4,80,000 है अतः भुगतान किए गए दावे 4,17,000 रु. के हुए इनमें से 60,000 रु. की पुनर्बीमा वसूली घटाकर 3,57,000 रु. आगम खाते में डेबिट किए जाएँगे।

Fire Revenue Account (For the year ended 31st Dec., 2007)

	Rs.		Rs.
Claims under policies less reinsurance		Balance of A/c at the beginning of the year	
Paid during the year	3,57,000	Reserve for Unexpired Reserve	-
Add : Total estimated Liability in respect of claims outstanding		Additional Risks	—
		Premiums less reinsurance	7,01,000

NOTES

at the end of the year		Interest, Dividend and Rents	13,500
whether due or intimated	63,000	Commission on Reinsurance Ceded	—
		Other Incomes	—
	4,20,000		
Less : Outstanding at the end of previous year	—		
	4,20,000		
Commission :			
On Direct Business	1,19,000		
On Reinsurance Accepted			
Expenses of Management	1,20,000		
Bed Debts	11,000		
Taxes	—		
Other expenditure	—		
Profit transferred to			
Profit and Loss A/c	44,500		
Balance of A/c at the end of the year			
Reserve for Unexpired Risks	—		
Additional Reserve	—		
	7,14,500		7,14,500

Profit and Loss Appropriation Account (For the year ended 31st Dec. 2007)

Rs.		Rs.	
To Dividends	12,500	By Balance b/d	3,500
To Balance c/d	35,500	By Profit & Loss Account	44,500
	48,000		48,000

Balance Sheet (As at 31st Dec., 2007)

	Rs.		Rs.
Shareholders Capital	2,50,000	Loans :	
Reserve for Contingency A/c		Mortgages within India	1,00,000
General Reserve Fund	2,80,000	Mortgages out of India	10,000
Profit and Loss A/c	35,500	Investments :	
Loans and advances		Foreign Securities	1,55,000
Outstanding Fire Losses	63,000	Railway debentures and stock	1,50,000
Outstanding Dividends	6,500	Railway Pref. Shares	33,000
		Municipal Loans	17,000
		Bank Deposits	20,000
		Deposits with Foreign Companies	17,000
		Deposits with Trustees	11,000
		Agents and Branch office balances	1,05,000
		Outstanding Premium	1,500
		Outstanding Interest and Dividends	5,000
		Cash at Bank	10,500
	6,35,000		6,35,000

NOTES

Problem 4. जनरल मेरीन इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड के निम्नांकित शेषों से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष का रेवेन्यू खाता और उसी तारीख का चिट्ठा तैयार कीजिए:—

रु.		रु.	
प्रीमियम पुनःबीमा कम करने के बाद	1,60,000	वर्ष में चुकाये गए दावे	1,10,000
कमीशन	8,400	प्रबन्ध के व्यय	7,500
अंश पूँजी	1,90,000	31-12-2007 को अदत्त दावे	14,000
रिजर्व बैंक में जमा	2,00,000	सरकारी प्रतिभूतियाँ	20,000
भवन 30,000	उपस्कर	2,000	
लाभ-हानि खाता (नाम शेष)	8,000	स्टॉक एवं अंश	18,000
समुद्री बीमा कोष 1 जनवरी, 2007	46,000	हस्तस्थ रोकड़	1,500
अतिरिक्त संचय	2,000	बैंक में रोकड़	8,000
ब्याज, लाभांश एवं किराया	1,400		

31 दिसम्बर, 2007 को, वर्ष में प्राप्त प्रीमियम आय का 100% भाग असमाप्त जोखिम के लिए संचय (Reserve) तथा 10,000 रु. अतिरिक्त संचय कीजिए।

Solution. हल—(1) चूँकि वर्ष के अन्त में अदत्त दावे तलपट में दिए गए है अतः उनका समायोजन वर्ष में चुकाए गए दावों की राशि में किया जा चुका होगा।

समुद्री आगम खाता
31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त वर्ष के लिए

	रु.		रु.
पॉलिसियों के अधीन दावे, पुनर्बीमा घटाकर		वर्ष के प्रारम्भ में खाते का शेष	
वर्ष में चुकाए गए	96,000	असमाप्त जोखिम के लिये संचय	2,000
(+) वर्ष के अन्त में अदत्त दावों के		अतिरिक्त संचय	2,000
सम्बन्ध में कुल अनुमानित दायित्व		प्रीमियम पुनर्बीमा घटाकर	1,60,000
जो देय हो गए है अथवा सूचित हो		ब्याज, लाभांश एवं किराये	1,400
गए है	14,000	लाभ-हानि खाते को हस्तांतरित हानि	86,500
	1,10,000		
(–) गत वर्ष के अन्त में अदत्त दावे	—		
	1,10,000		
कमीशन :			
प्रत्यक्ष व्यवसाय पर	8,400		
प्रबन्ध व्यय	7,500		
अशोध्य ऋण	—		
कर	—		
अन्य व्यय	—		
वर्ष के अन्त में खाते का शेष			
असमाप्त जोखिम के लिए संचय	1,60,000		
अतिरिक्त संचय	10,000		
	2,95,900		**2,95,900**

लाभ-हानि विनियोजन खाता

	रु.		रु.
गत वर्ष का शेष	8,000	शेष चिट्ठे में ले जाया गया	94,500
लाभ-हानि खाता से हानि	86,500		
	94,500		**94,500**

चिट्ठा 31-12-2007 को

	रु.		रु.
अंशधारियों की पूँजी	1,90,000	ऋण	
संचिति एवं आकस्मिकता खाते	—	विनियोग	
कोष एवं खातों के शेष		रिजर्व बैंक में जमा	2,00,000
समुद्री बीमा कोष	1,70,000	सरकारी प्रतिभूतियाँ	20,000
ऋण-पत्र स्टॉक	—	अंश एवं स्टॉक	18,000
ऋण एवं अग्रिम		मकान सम्पत्ति	30,000
वर्ष के अन्त में अदत्त दावे— समुद्री	14,000	फर्नीचर	2,000
		रोकड़	
		हस्तस्थ	1,500
		बैंकस्थ	8,000
		लाभ-हानि विनियोजन खाता	94,500
	3,74,000		**3,74,000**

Problem 5. Prepare Revenue Account and Balance Sheet of Religare Fire Insurance Co. Ltd. as on 31.12.2007 from the following :

Trial Balance as on 31.12.2007

	Rs.		Rs.
Claims paid	3,75,600	Premium Received	6,78,000
Reinsurance Premiums paid	60,000	Loss recovered from Reinsurance	35,000
Management Expenses	98,400	Share Capital	2,50,000
Commission paid	74,580	Interest and Dividends	16,800
Taxes	8,250	Investment Fluctuation Fund	50,000
Interim Dividends	12,500	Loans from Bank	1,00,000
Security Deposits in Bank	1,99,000	Profit & Loss A/c	69,230
Investments in Govt. Securities	2,05,000		
Investments in Railway Debentures	1,00,000		
Agents & Branch Balance	40,500		
Cash in hand	25,200		
	11,99,030		**11,99,030**

Adjustments : (a) There are claims admitted and payable to the extent of Rs. 20,000.

(b) Amount of losses to be recovered from reinsurance is Rs. 8,400

(c) Interest accrued but not received Rs. 5,000.

(d) Provision for unexpired risk is to be made at 50% of the net premium received

NOTES

रेलीगेयर फायर बीमा कम्पनी लिमिटेड की निम्नलिखित परीक्षा सूची से 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष का आगम लेखा तथा उक्त तिथि का स्थिति-विवरण बनाइए:—

परीक्षा सूची–31-12-2007

दावों का भुगतान	3,75,600	प्रीमियम की प्राप्ति	6,78,000
पुनर्बीमा प्रीमियम का भुगतान	60,000	पुनर्बीमा से हानि की क्षतिपूर्ति	35,000
प्रबन्ध व्यय	98,400	अंश पूँजी	2,50,000
कमीशन का भुगतान	74,580	विनियोजन उच्चावचन निधि	50,000
कर	8,250	ब्याज एवं लाभांश	16,800
अन्तरिम लाभांश	12,500	बैंक से ऋण	1,00,000
बैंक में जमा प्रतिभूति	1,99,000	लाभ-हानि लेखा	69,230
सरकारी प्रतिभूतियों में विनियोजन	2,05,000		
रेलवे के ऋण-पत्रों मे विनियोजन	1,00,000		
एजेण्टों एवं शाखाओं पर शेष	40,500		
रोकड़	25,200		
	11,99,030		11,99,030

समायोजन—(क) 20,000 रु. के दावे स्वीकार कर लिए गए है और देय है।

(ख) पुनर्बीमा से 8,400 रु. की हानि की क्षतिपूर्ति की जाएगी।

(ग) 5,000 रु. का ब्याज उपार्जित हो गया है परन्तु अभी प्राप्त नहीं हुआ है।

(घ) असमाप्त जोखिमों के लिए बीमा प्रीमियम की प्राप्त शुद्ध राशि के 50% के बराबर आयोजन करना है।

Solution हल—(1) वर्ष मे भुगतान किए गए दावे पुनर्बीमा घटाकर (3,75,600 – 35,000) = 3,40,600 –8,400 = 3,32,200 रु.

(2) प्रीमियम (6,78,000 - 60,000) = 6,18,000 रु.

Fire Insurance Revenue Accounts (For the year ended 31st Dec., 2007)

	Rs.			Rs.
Claims under policies less reinsurance		Balance of A/c at the beginning of the year		
Paid during the year	3,32,200	Reserve for Unexpired Risks		–
Add : Total estimated liability in respect of claims outstanding at the end of the year whether due or intimated		Additional Reserve		
		Premiums less Reinsurance		6,18,000
		Interest, Dividend and Rents	16,800	
	20,000	(+) Accrued	5,000	21,800
	3,52,200	Other Income		–
Less Outstanding at the end of the previous year	-	Loss transferred to Profit & Loss A/c	2,02,630	3,52,200
Commission :				
On Direct Business	74,580			
On Reinsurance Accepted	–			
Expenses of Management	98,400			
Bad Debts				

	Rs.		Rs.
Taxes	8,250		
Other expenditure	–		
Balance of A/c at the end of the year			
Reserve for Unexpired Risks	3,09,000		
Additional Reserve	–		
	8,42,430		8,42,430

Profit and Loss Appropriation A/c

	Rs.		Rs.
Loss transferred from P. & L.		By Balance b/d	69,230
A/c (Fire Revenue loss)	2,02,630	By balance transferred to	
Interim Dividend	12,500	Balance Sheet	1,45,900
	2,15,130		2,15,130

Balance Sheet (As on 31st Dec. 2007)

	Rs.		Rs.
Shareholder's Capital	2,50,000	Loans	–
Reserve and Contingency A/c		Investments	
Investment Fluctuation Fund	50,000	Security Deposit in Bank	1,99,000
		Govt. Securities	2,05,000
		Railway Debentures	1,00,000
Balance of Fund and Accounts		Agents Balances	40,500
Fire Reserve A/c	3,09,000	Interest Accrued	5,000
Loans and Advances		Amount due from Reinsurers	8,400
Loans from Bank	1,00,000	Cash in Hand	25,200
Outstanding claims	20,000	Profit and Loss App. A/c	1,45,900
	7,29,000		7,29,000

अभ्यास के लिए प्रश्न
(Assignment Material)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1 साधारण बीमा व्यवसाय का आगम खाता कैसे बनाया जाता है? आगम खाते का प्रारूप देते हुए उसकी प्रमुख मदों को समझाइए।

2 संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(क) पुनर्बीमा (ख) असमाप्त जोखिम के लिए संचय

(ग) पुनर्बीमा वसूली (घ) प्रबन्ध व्यय।

3 साधारण बीमा कम्पनी के चिट्ठे का निर्दिष्ट प्रारूप काल्पनिक प्रविष्टियों सहित दीजिए।

4 साधारण बीमा कम्पनी के आगम खाते में निम्नलिखित मदों के अन्तर्गत क्या विवरण दिया जाता है

(क) पॉलिसियों के अन्तर्गत दावे, पुनर्बीमा घटाकर (ख) प्रीमियम, पुनर्बीमा घटाकर

(ग) कमीशन।

5 संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए (साधारण बीमा व्यवसाय के सन्दर्भ में)

(क) आगम खाता (ख) लाभ-हानि खाता (ग) लाभ-हानि विनियोजन खाता।

NOTES

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

निम्नलिखित विवरण से 2007 वर्ष के लिए अग्नि बीमा रेवेन्यू खाता बनाइए:—

		रु.
Q. 1.	दावों का भुगतान	2,40,000
	प्रीमियम प्राप्त	6,00,000
	पुनर्बीमा प्रीमियम	60,000
	कमीशन	1,00,000
	प्रबन्ध व्यय	1,50,000
	असमाप्त जोखिमों के लिए संचय (1-1-07)	2,60,000
	अदत्त दावे (1-1-07)	20,000
	अदत्त दावे (31-12-07)	35,000

वर्ष के अन्त में असमाप्त जोखिमों के लिए शुद्ध प्रीमियम के 50% से संचय बनाइये।

[**Ans.** Rs. 25,000]

Q. 2. 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए रिलायन्स इन्श्योरेन्स कं. लि. की अग्नि बीमा से सम्बन्धित सूचनाएँ निम्नानुसार है: (The following information relates to Fire Insurance business of Reliance Insurance Co. Ltd. for the year ended 31st Dec. 2007.)

	Rs.		**Rs.**
Commission on Reinsurance ceded	5,000	Premiums	2,70,000
Provision for Unexpired Risk 31-12-2007	1,20,000	Commissions	37,500
Estimated Liability in respect of outstanding Claims- 2006	1,05,000	Management Expenses (including Rs. 1,500 Legal Exp. paid in connection with claims)	84,000
2007	1,12,500	Interest, Dividends and Rents	16,000
Claims Paid	1,05,000	Income Tax thereon	4,000
Commission on Reinsurance Accepted	5,000	Medical Expenses reclaims	2,625
Reinsurance Premiums	6,750	Profit on Sale of Investments	2,250
Reinsurance Recoveries	2,250	Additional Reserve 31-12-06	90,000

वर्ष 2007 के लिए निर्धारित प्रारूप में अग्नि बीमा से सम्बन्धित रेवेन्यू खाता बनाइए। शुद्ध प्रीमियम का 50% असमाप्त जोखिम के लिए संचय तथा 1,00,000 रु. अतिरिक्त संचय कीजिए।

Prepare in the prescribed form, the Fire Revenue Account for the year 2007, reserving 50% of the Net Premiums for Unexpired Risks and keeping an Additional Reserve of Rs. 1,00,000

[**Ans.** Profit Rs. 22,250.]

Q. 3. 31 दिसम्बर 2007 को माडर्न अग्नि एवं सामान्य बीमा कम्पनी लिमिटेड की पुस्तकों में निम्नांकित बाकियाँ थी:—

The following balance appeared in the books of the Modern Fire and General Insurance Company Ltd. on 31st December 2007.

	रु.
पुनर्बीमा प्रीमियम (Reinsurance Premium paid)	50,000
असमाप्त जोखिम के लिए संचय (1 जनवरी 2007) (Reserve for Unexpired Risk as on 1st January 2007)	8,24,800
प्रबन्ध व्यय (Expenses of Management)	1,25,600
प्रीमियम प्राप्तियाँ (Premiums Received)	7,89,000
कमीशन (Commissions)	1,52,000

दत्त भुगतान (Claim Paid)	2,21,000
विनिमय पर हानियाँ (Losses of Exchange)	9,000
अदत्त दावे (1 जनवरी 2007) (Claims Outstanding as on 1st January 2007)	2,81,000

निम्नांकित सूचनाओं को ध्यान में रखकर 31 दिसम्बर 1987 वाले वर्ष के लिए रेवेन्यू खाता बनाइये:—

(अ) प्रीमियम पर 100% असमाप्त जोखिम के लिए संचय कीजिए।

(ब) अतिरिक्त संचय 75,000 रु. का कीजिए।

(स) अदत्त प्रीमियम वर्ष के अन्त में 1,50,000 रु. के थे।

(द) 31 दिसम्बर, 2007 को अदत्त दावे 3,37,000 रु. के थे।

NOTES

You are required to prepare Revenue Account for the year ended 31st December, 2007 after taking the following information into consideration :

(a) Provide for Unexpired Risk at 100% of the premium.

(b) Create Additional Reserve of Rs. 75,000.

(c) Premiums outstanding at the end of the year Rs. 1,50,000.

(d) On 31st December 2007 the claims outstanding were Rs. 3,37,000.

[**Ans.** Profit Rs. 1,86,200]

Q.4. बजाज अलायंस अग्नि बीमा कम्पनी की पुस्तकों में 31 दिसम्बर को निम्नांकित शेष थे—

	रु
प्रबन्ध के व्यय	2,31,900
कमीशन	2,27,000
चुकाये गये दावे	4,30,000
विनिमय पर हानि	5,000
अप्राप्य ऋण	100
1 जनवरी को अदत्त दावे	5,20,000
1 जनवरी को असमाप्त जोखिम के लिए संचय	3,08,700
1 जनवरी को अतिरिक्त संचय	25,000
प्रीमियम	8,76,000

निम्नांकित सूचना को ध्यान में रखकर वर्ष के लिए रेवेन्यू खाता बनाइए—

(1) असमाप्त जोखिम के लिए प्रीमियम का 50 प्रतिशत संचय कीजिए।

(2) वर्ष के अन्त में 20,000 रु. प्रीमियम प्राप्त होने का था।

(3) 31 दिसम्बर को अदत्त दावे 3,04,600 रु. के थे। दावे और प्रीमियम के लिये अनुमान भारत में 3/4 तथा बाहर 1/4 मानिये।

[**Ans.** Profit Rs 1,03,100]

Q.5. 31 दिसम्बर, 2007 को न्यू इंडिया अग्नि एवं साधारण बीमा कम्पनी लि. की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे—

	रु
पुनर्बीमा प्रीमियम	5,000
असमाप्त जोखिम के लिए 1 जनवरी को संचित	82,480
प्रबन्ध व्यय	12,560
प्रीमियम प्राप्तियाँ	78,900
कमीशन	15,200
दावों का भुगतान	22,100
विनिमय पर हानि	900
अदत्त दावे 1 जनवरी को	28,100

निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखकर 31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आगम खाता निर्धारित प्रारूप में बनाइये–

(1) प्रीमियम पर 50 प्रतिशत असमाप्त जोखिम के लिए संचय कीजिए।

(2) अतिरिक्त संचय 7,500 रु. का कीजिए।

(3) अदत्त प्रीमियम वर्ष के अन्त में 15,000 रु.।

(4) 31 दिसम्बर, 2007 को अदत्त दावे 33,700 रु. के थे। [**Ans.** Profit Rs. 63,970]

Q. 6. यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कम्पनी की पुस्तकों में 31 दिसम्बर, 2007 को अग्नि बीमा के सम्बन्ध में निम्न विवरण प्राप्त हुए–

	रु
असमाप्त जोखिम के लिए संचय, 31 दिसम्बर, 2006	5,00,000
अतिरिक्त संचय, 31 दिसम्बर, 2006	1,00,000
दावे चुकाये गये	6,40,000
अदत्त दावों के सम्बन्ध में अनुमानित दायित्व–	
31-12-06 को	65,000
31-12-07 को	90,000
प्रबन्ध के व्यय (30,000 रु. के कानूनी व्यय सहित जो दावों के भुगतान के सम्बन्ध में किए गये)	2,80,000
पुनर्बीमा प्रीमियम	75,000
पुनर्बीमा वसूली	20,000
प्रीमियम	11,20,000
ब्याज तथा लाभांश	64,520
उपर्युक्त पर आयकर	6,520
विनियोगों की बिक्री पर लाभ	11,000
कमीशन	1,52,000

2007 के लिए अग्नि बीमा रेवेन्यू खाता खोलिये। असमाप्त जोखिम के लिए प्रीमियम का 50% संचय कीजिये और 1,00,000 रु. अतिरिक्त संचय के लिए रखिए। यह मान लीजिए कि प्रीमियम और दावों का 1/4 भारत के बाहर के व्यापार से सम्बन्धित है और भारत में प्रत्यक्षतः लिखी गयी कुल प्रीमियम की राशि 11,25,000 रुपये थी।

On 31st December, 2007 the books of the United India Insurance Co. Ltd. contained the following particulars in respect of fire insurance–

	Rs.
Reserve for Unexpired Risks on 31st December, 2006	5,00,000
Additional Reserve on 31st December, 2006	1,00,000
Claims paid	6,40,000
Estimated Liability in respect of outstanding claims :	
On 31st December 2006	65,000
On 31st December, 2007	90,000
Expenses of Management (including Rs. 30,000 legal expenses paid in connection with claim)	2,80,000
Reinsurance premiums	75,000
Reinsurance recoveries	20,000

NOTES

Premiums	11,20,000
Interest and Dividends	64,520
Income tax thereon	6,520
Profit on sale of investments	11,000
Commission	1,52,000

Prepare in the prescribed form, the Fire Insurance Revenue Account or the year 2007 reserving 50 per cent of the premiums for unexpired risks and keeping an additional reserve of Rs. 1,00,000. Assume that one fourth of the premium and claims are applicable to business outside Iodia and that the gross premium written direct in India amounted to Rs. 11,25,000.

[**Ans.** Profit Rs. 14,500]

6.13 सारांश

- बीमा वह प्रावधान है जो एक विकासशील व्यक्ति को आकस्मिक घटनाओं व हानियों के विरूद्ध जोखिम को बाँटता है।
- बीमा दो प्रकार का होता है - जीवन बीमा और साधारण बीमा।
- साधारण बीमा व्यवसाय से आशय अग्नि, समुद्री या विविध बीमा व्यवसाय से है जो किसी बीमा कम्पनी द्वारा किया जाता है जिसमे तीन तरह के बीमा को सम्मिलित किया जाता है। पहला समुद्री बीमा, अग्नि बीमा, और विविध बीमा।
- साधारण बीमा व्यवसाय अधिनियम का राष्ट्रीय 1972 की धारा 9 के अन्तर्गत कसाधारण बीमा के नाम से हुआ था। साधारण बीमा कम्पनी को चिट्ठा और लाभ-हानि खाते के विवरण का निरीक्षण, नियन्त्रण तथा संचालन करना होता है।
- आगम खाते मे व्यवसाय से सम्बन्धित सभी आय एवं व्ययों तथा अदत्त व्यय और उपर्जित आयो का भी लेखा किया जाता है।

6.14 शब्दावली

बीमा, अग्नि बीमा, समुद्री बीमा, आगम खाता, आर्थिक चिट्ठा।

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–7 विनियोग लेखे [INVESTMENT ACCOUNTS]

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 विनियोगो से आशय
7.3 विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन
  7.3.1 लाभांश अर्जित करने वाली प्रतिभूतियाँ
  7.3.2 ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिाूतियाँ
7.4 अंश सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन
  7.4.1 क्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टि
  7.4.2 विक्रेता की पुस्तकों मे प्रविष्टि
7.5 बोनस अंश या अधिकार अंश
7.6 ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों का लेखांकन
7.7 ब्याज रहित मूल्य
  7.7.1 ब्याज रहित व्यवहारों का लेखांकन
7.8 वर्ष के अन्त में विनियोगों का मूल्यांकन
7.9 उपार्जित ब्याज
7.10 सतम्भीय विनियोग खाता
7.11 क्रियात्मक प्रश्न
7.12 सारांश
7.13 शब्दावली

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेगें -

- विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन कर सकेंगे।
- बोनस तथा अधिकार अंश सम्बन्धी व्यवहारो का लेखांकन कर सकेंगे।
- वर्ष के अन्त में स्तम्भीय विनियोग खाता तैयार कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति अपने अतिरिक्त धन या कोषों को ऐसे साधनो मे लगाना चाहता है जहाँ वह सुरक्षित रहे, जिस पर उसे नियमित आय मिलती रहे तथा उसके मूल्य मे वृद्धि भी हो सके। एक व्यक्ति अथवा व्यावसायिक संस्था अपने कोषो का विनियोजन (Investment) कम्पनियो के अंशो (Shares), ऋण-पत्रों (Debentures) अथवा सरकारी प्रतिभूतियों (Government Securities)– जैसे बॉण्ड्स (Bonds), ऋणों (Loans) आदि मे कर सकती है। इन विनियोगो पर ब्याज अथवा लाभांश के रूप मे आय प्राप्त होती है, विनियोजित राशि सुरक्षित रहती है, आवश्यकता पड़ने पर विनियोगों को बेचकर धन वापस प्राप्त किया जा सकता है तथा विनियोगो का बाजार मूल्य बढ़ जाने पर पूंजीगत वृद्धि (Capital Appreciation) का लाभ भी मिलता है। इसके अतिरिक्त एक व्यवसाय के रूप में, प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय द्वारा लाभ भी कमाया जा सकता है।

7.2 विनियोगों से आशय (Meaning of Investments)

विनियोगों से हमारा आशय अंशों, ऋण-पत्रों, बॉण्ड्स तथा अन्य प्रतिभूतियों से होता है जिनमें धन या कोषों का विनियोजन किया जाता है। विनियोग भौतिक सम्पत्तियाँ (Physical assets) न होकर विधिक स्वतत्वों (Legal claims) का प्रतिनिधित्व करने वाली विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों के रूप में विशिष्ट प्रकार की सम्पत्तियाँ होती हैं।

बैंक, बीमा कम्पनियाँ, विनियोग-प्रन्यास (Investment Trusts) आदि व्यवसायी अपने कोषों को बड़ी मात्रा में इन विनियोगों में लगाते है। अन्य व्यवसायी भी अपने अतिरिक्त कोषों, सिंकिंग फण्ड आदि का विनियोजन अपने व्यवसाय के बाहर करते है। इस अध्याय में हम यह अध्ययन करेंगे कि विनियोगों के क्रय-विक्रय इन पर प्राप्त होने वाली आय, क्रय-विक्रय पर होने वाले लाभ/हानि से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा कैसे किया जाता है।

7.3 विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन (Accounting of transactions relating to Investments)

विनियोगों के क्रय-विक्रय, उन पर प्राप्त होने वाली (लाभांश या ब्याज) क्रय-विक्रय पर होने वाले लाभ या हानि आदि से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा क्रेता एवं विक्रेता दोनों को ही पुस्तकों में किया जाता है। जहाँ ऐसे व्यवहारों की संख्या बहुत अधिक हो, वहाँ विनियोग खाता बही (Investments ledger) अलग से रख ली जाती है किन्तु जहाँ व्यवहार कम हो, वहाँ इनका लेखा सामान्य खाता बही में ही कर लिया जाता है। विनियोग खाता एक वास्तविक खाता (Real A/c) होता है तथा प्रायः प्रत्येक विनियोग के लिए एक अलग खाता खोला जाता है।

7.3.1 विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन (Accounting of Investment Transactions)

विनियोग सम्बन्धी व्यवहारो के लेखाकन प्रक्रिया का अध्ययन हम विभिन्न प्रकार के विनियोगों को दो शीर्षकों के अतर्गत विभाजित करते हुए करेंगे (क) लाभाँश अर्जित करने वाली प्रतिभूतियाँ तथा (ख) ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियाँ।

लाभाँश अर्जित करने वाली प्रतिभूतियाँ (Dividend Earning Securities)— कम्पनियों के अंशों (shares) का क्रय-विक्रय स्टॉक एक्सचेंजों मे किया जाता है। विनियोक्ता अपने धन का विनियोग कम्पनियों के अशो मे कर सकते है जिन पर उन्हे कम्पनी द्वारा घोषित किया जाने वाला लाभांश (dividend) प्राप्त होता है। अंशों का बाजार मूल्य घटता-बढ़ता रहता है। अतः अंशों के क्रय-विक्रय पर विनियोक्ताओं को लाभ-हानि भी होती है।

लाभाँश सहित एवं लाभाँश रहित मूल्य (Cum-dividend and Ex-dividend Quotation)— अशों का क्रय-विक्रय या तो लाभांश-सहित मूल्य पर किया जाता है अथवा लाभाँश रहित मूल्य पर। अतः अशो के क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवहारो की लेखाकन प्रक्रिया का अध्ययन करने से पूर्व इन शब्दों का अर्थ भली-भांति समझ लेना आवश्यक है।

लाभाँश सहित (Cum-dividend or c d.)— इस शब्द का प्रयोग कम्पनियो के अशो के सम्बन्ध में किया जाता है। लाभांश सहित मूल्य का अर्थ यह है कि अंशो का जो मूल्य विक्रेता क्रेता से वसूल कर रहा है उसमें कम्पनी द्वारा अभी हाल मे ही घोषित किया गया लाभाँश भी सम्मिलित है जिसका अभी भुगतान नहीं किया गया है। यह लाभांश क्रेता ही लाभांश भुगतान की तिथि पर प्राप्त करेगा। चूँकि यह लाभांश गत वर्ष के लाभ में घोषित किया गया है और चूँकि उस समय विक्रेता इन अशो का स्वामी था, अतः इस लाभांश को प्राप्त करने का वास्तविक अधिकारी विक्रेता ही होता है। अतः जब लाभांश सहित अंश बेचे जाते हैं तो विक्रेता अश तो बेचता ही है साथ ही वह इन अंशो पर लाभांश पाने का अपना अधिकार भी क्रेता को बेच देता है। इस प्रकार जो मूल्य विक्रेता क्रेता से वसूल करता है उसमें निम्नलिखित दो तत्व सम्मिलित होते है —

(i) अशों का मूल्य, (ii) घोषित लाभांश।

उपर्युक्त तथ्य को सूत्र रूप में निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है —

लाभांश सहित मूल्य = अशों का मूल्य + घोषित लाभांश

NOTES

Cum-dividend Price = Cost of the Shares + Declared dividend.

लाभाँश सहित व्यवहारों में पूँजीगत मूल्य की गणना– जब अंशों का क्रय-विक्रय लाभाँश सहित किया जाता है तो क्रेता एवं विक्रेता दोनों ही की पुस्तकों में विनियोगों के क्रय-विक्रय का लेखा करने से पूर्व यह मालूम कर लेना आवश्यक होता है कि जो मूल्य दिया-लिया जा रहा है उसमें अंशों का पूँजीगत मूल्य क्या है तथा घोषित लाभाँश क्या है? इसके लिए क्रय-विक्रय मूल्य में से घोषित लाभाँश की राशि घटा दी जाती है।

पूँजीगत मूल्य की गणना निम्नानुसार की जाती है:–

क्रेता की पुस्तकों में (In the books of the Purchaser) :–

Purchase Price of..................Shares of Rs..................		Rs.
each @ Rs..................c.d.		....
(+) Expenses:		
(1) Brokerage	....	
(2) Commission etc.	.....	
Less : Accured Dividend @ Rs..................Per share		.....
Capital Cost of Shares Purchased		....

विक्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Seller) :–

Sale Price of .... Shares of Rs.		Rs.
each @ Rs. .... per Share c.d.		.....
(-) Expenses :		
(1) Brokerage,	.....	
(2) Commission etc.	....	
Less : Accrued Dividend		.....
Capital Cost of Shares Sold		.....

लाभाँश रहित मूल्य (Ex-dividend Price)– अंशों के लाभाँश रहित मूल्य का अर्थ यह है कि मूल्य में कोई लाभाँश सम्मिलित नही है, अर्थात् सम्पूर्ण भुगतान अंशों का मूल्य ही है। अतः लाभाँश रहित क्रय-विक्रय की दशा में पूँजीगत मूल्य की गणना हेतु किसी समायोजन की आवश्यकता नही होती।

7.4 अंश सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन (Accounting of transactions relating to shares)

अंशों में विनियोग से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा क्रेता एवं विक्रेता की पुस्तकों में अग्रानुसार किया जाता है।

7.4.1 क्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ (In the Books of the Purchaser)

(1) क्रेता ने जो क्रय मूल्य दिया है उसमें में जितनी राशि अंशों के पूंजीगत मूल्य के सम्बन्ध में थी उतनी राशि से विनियोग खाता डेबिट तथा जितनी राशि लाभाँश के लिए थी उतनी राशि से लाभाँश खाता डेबिट करके दोनों के योग से रोकड़ खाता क्रेडिट कर दिया जाएगा।

अंश खाता	डे	Shares A/c	Dr	अंशों का पूँजीगत मूल्य उपार्जित
लाभांश खाता	डे	Dividend A/c	Dr.	लाभांश कुल मुल्य
रोकड़ खाता से		To Cash/Bank A/c		
(.....रु. वाले अंश ..		(Purchase of........shares of Rs.		
रु ला.स. की दर से क्रय किए)		..........each c.d.)		

(2) इसके पश्चात् चूँकि अंश लाभाँश-सहित मूल्य पर क्रय किए गए थे अतः लाभाँश भुगतान तिथि पर लाभाँश का भुगतान क्रेता को प्राप्त होगा जिसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगीः—

रोकड़ खाता	डे.	Cash A/c	Dr.	
लाभांश खाता से		To Dividend A/c		प्राप्त राशि से
(...अंशों पर...रु. प्रति अंश की दर से लाभाँश प्राप्त किया)		(Received Dividend on............. shares @ Rs. .... per share)		

7.4.2 विक्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Seller)

(1) अंशों को बेचने से जो राशि विक्रेता को प्राप्त होती है उससे रोकड़ खाता डेबिट किया जाएगा तथा उसमें से जितनी राशि अंशों के पूँजीगत मूल्य की थी उससे अंश खाता तथा जितनी लाभाँश के सम्बन्ध में थी उससे अंश खाता क्रेडिट किया जाएगाः—

रोकड़ खाता	डे.	Cash A/c	Dr.	कुल प्राप्त राशि से पूँजीगत
अंश खाता से		To Shares A/c		मूल्य से लाभाँश की राशि से
लाभांश खाता से		To Dividend A/c		
(...रु. वाले...अंश......रु. ला स. दर से बेचे)		(Sold......Shares @ Rs.............. each share c.d.)		

(2) लाभाँश खाते का शेष लाभ-हानि मे निम्नलिखित प्रविष्टि करके अन्तरित कर दिया जाएगाः

लाभाँश खाता	डे.	Dividend A/c	Dr.
लाभ-हानि खाता से		To Profit & Loss A/c	
(लाभाश खाता का शेष अन्तरित)		(Balance of Dividend A/c transferred to Profit & Loss A/c)	

Illustration 1. On 1st March 2006, Anil Kumar purchased from Rakesh Kumar 100 shares of Rs 10/- each of the Straw Products Ltd., Bhopal at Rs. 25 c.d. Both paid Brokerage @ Rs. 1/- per cent. The Company has declared a dividend of Rs. 2/- per share free of Income-tax on account of which is payable on or after 15th April, 2006.

Record the above transaction in the books of Anil and Rakesh

1 मार्च 2006 को अनिल कुमार ने राकेश कुमार से 10 रु. वाले स्ट्रॉ प्रोडक्ट्स लि. भोपाल के 100 अंश 25 रु. ला. स. की दर से क्रय किए। दोनों ने 1 रु. प्रतिशत दलाली दी। कम्पनी ने आय-कर मुक्त 2 रु. प्रति अंश लाभांश घोषित किया है जो 15 अप्रैल, 2006 को या उसके बाद देय है। उपर्युक्त व्यवहार का लेखा अनिल तथा राकेश की पुस्तकों में कीजिए।

Solution. **In the Books of Anil Kumar :**

		Rs.
	Purchase price of 100 Shares @ Rs. 25 c.d.	2,500
(+)	Brokerage $\left(\frac{1,500 \times 1}{100}\right)$	15
		2,515
	Less : Dividend (Rs. 2/- per share)	200
	Capital Cost of Shares	2,315

NOTES

Journal Entries

			Rs.	Rs.
1-3-06	Shares in Straw Products A/c	....Dr.	2,315	
	Dividend A/c	....Dr.	200	
	To Cash A/c			2,515
	(Purchased 100 Share (a) Rs. 25/- c.d. per share			
15-4-06	Cash A/c	....Dr.	200	
	To Dividend A/c			200
	(Received dividend (a) Rs. 2/- per share)			

Shares in Straw Products Ltd. Bhopal A/c

		Rs.			Rs.
1-3-06	To Cash A/c	2,315	31-12-06	By Balance c/d	2,315
		2,315			2,315

Dividend A/c

		Rs.			Rs.
1-3-06	To Cash A/c	200	15-4-06	By Cash A/c	200
		200			200

In the Books of Rakesh Kumar :

	Rs.
Sale Price of 100 Shares (a) Rs. 25 c.d.	2,500
Less: Brokerage @ Rs. 1 per cent	15
	2,485
Less : Dividend @ Rs. 2 per share	200
Capital Cost of Investment Sold	2,285

Journal Entries

			Rs.	Rs.
1-3-06	Cash A/c	....Dr.	2,485	
	To Shares Straw Products A/c			2,285
	To Dividend A/c			200
	(Sold 100 Shares @ Rs. 25/- each c.d.)			
31-12-06	Dividend A/c	....Dr.	200	
	To Profit & Loss A/c			200
	(Balance of Dividend A/c transferred)			

Shares in Straw Products Ltd. A/c

		Rs.			Rs.
1-1-06	To Balance b/d	2,285	1-3-06	By Cash A/c	2,285
		2,285			2,285

Dividend A/c

		Rs.			Rs.
31-12-06	To Profit & Loss A/c	200	1-3-06	By Cash A/c	200
		200			200

प्रतिभूतियों के विक्रय होने वाले लाभ/हानि की गणना (Calculation of Profit or Loss on Sale of Investment)— जब कोई विनियोक्ता अपने विनियोगों को बेचता है तो उसे यह गणना करनी होती है कि इस व्यवहार में उसे क्या लाभ या हानि हुई। इस हेतु उसे बेचे जाने वाले विनियोगों के क्रय-विक्रय (पूँजीगत) तथा उनके विक्रय मूल्य (पूँजीगत) की गणना करनी होती है। विक्रय मूल्य का क्रय मूल्य पर आधिक्य लाभ होता है जिसे लाभ-हानि खाता को क्रेडिट करते हैं। यदि विक्रय मूल्य क्रय मूल्य से कम हो तो हानि होती है, जिसे लाभ-हानि खाता को डेबिट किया जाता है।

Illustration 2. On 15th April, 2006 Hajela Bros. purchased from Sharma Bros. 100 Rs. 100 shares of Desai Mills Ltd. @ Rs. 105 ex-dividend. The Company had declared a dividend of Rs. 4 per share which was to be paid on 30th April, 2006.

Record this transaction in the books of both the purchaser and the seller assuming that they close their books on 31st December.

15 अप्रैल 2006 को हजेला ब्रदर्स ने शर्मा ब्रदर्स से 100 रु. वाले देसाई मिल्स लि. के 100 अंश 105 रु. लाभाँश रहित की दर से क्रय किए। कम्पनी इन अंशों पर 4 रु. प्रति अंश लाभाँश घोषित कर चुकी थी। जिसका भुगतान 30 अप्रैल को होना है। इस व्यवहार की प्रविष्टि क्रेता एवं विक्रेता दोनों की ही पुस्तकों में यह मानकर कीजिए कि वे अपनी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द करते हैं।

Solution टिप्पणी— चूँकि ये अंश लाभाँश रहित दर से क्रय किए गए हैं इसका अर्थ यह है कि 30 अप्रैल, 2006 को मिलने वाला लाभाँश विक्रेता, शर्मा ब्रदर्स ही प्राप्त करेंगे।

In the Books of Hajela Bros :

	Rs.
Purchase Price of 100 Shares @ Rs. 105/- each	10,500

Journal Entries

			Rs.	Rs.
15-4-06	Shares in Desai Co. Ltd. A/c	....Dr.	10,500	
	To Cash A/c			10,500
	(Purchased 100 Shares (a) Rs. 105 ex-dividend)			

Shares in Desai Co. Ltd. A/c

		Rs.			Rs.
15-4-06	To Cash A/c	10,500	31-12-06	By Balance c/d	10,500
		10,500			10,500

In the Books of Sharma Bors :

Journal Entries

			Rs.	Rs.
15-4-06	Cash A/c	.Dr	10,500	
	To Shares in Desai Co. Ltd. A/c			10,500
	(Sold 100 Shares @ Rs. 105 ex-dividend)			
30-4-06	Cash A/c	.Dr.	400	
	To Dividend A/c			400
	(Dvidend Received)			
31-12-06	Dividend A/c	..Dr.	400	
	To Profit & Loss A/c			400
	(Balance of Dividend A/c transferred to P. & L. A/c)			

Shares in Desai Co. Ltd.

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	10,500	15-4-06	By Cash A/c	10,500

Dividend A/c

		Rs.			Rs.
31-12-06	To Profit & Loss A/c	400	30-4-06	By Cash A/c	400
		400			400

Illustration 3. On 1st October, 2006 Ram Kumar and Sons purchased from Mahendra Nath 200 Rs. 100 Equity shares of Goodluck Co. Ltd. @ Rs. 180 c.d. The Company had declared a dividend of Rs. 6 per share which was to be paid on 15th November, 06. On 15th December they sold half of these shares @ Rs. 178 per share.

Record these transaction in the books of Ram Kumar & Sons assuming that they close their accounts on 31st December.

1 अक्टूबर, 2006 को रामकुमार एण्ड सन्स ने महेन्द्रनाथ से गुडलक कम्पनी लि. के 100 रु. वाले 200 ईक्विटी अंश 180 रु. ला. स. की दर से क्रय किए। कम्पनी ने 6 रु. प्रति अंश लाभाँश घोषित किया है जो 15 नवम्बर, 2006 के पश्चात देय है। 15 दिसम्बर, 2006 को उन्होंने आधे अंश 178 रु. प्रति अंश की दर से बेच दिए। यह मानकर की पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द की जाती हैं, इन व्यवहारों का लेखा राम कुमार एण्ड सन्स की पुस्तकों में कीजिए।

Solution टिप्पणियाँ–

In the Books of Ram Kumar & Sons :

			Rs.
(1)	Purchase Price of 200 shares @ 180 c.d.		36,000
	Less :	Dividend (Rs. 6 per share)	1,200
		Capital Cost of the Shares :	34,800
(2)	Sale price of 100 shares (100 × 178) = 17,800 रु		
(3)	**अंशों के विक्रय पर लाभ**		रु.
	100 अंशों का विक्रय मूल्य (178 × 100)		17,800
	100 अंशो का क्रय मूल्य $\left(\frac{34,800 \times 100}{200}\right)$		17,400
	विक्रय पर लाभ		400

Shares in Good Luck Co. Ltd. A/c

		Rs.			Rs.
01-10-06	To Cash	34,800	15-12-06	By Cash A/c	17,800
31-12-06	To Profit & Loss A/c	400	31-12-06	By Balance c/d	17,400
		35,200			35,200

Dividend A/c

		Rs.			Rs.
1-10-06	To Cash A/c	400	15-11-06	By Cash A/c	400
		400			400

बोनस अंश तथा अधिकार अंश (Bonus Shares and Right Shares)– **(क) बोनस अंश** (Bonus share)– इक्विटी अंशधारी यदि कम्पनी से कुछ बोनस अंश प्राप्त करते है, तो इन अंशों का अंकित मूल्य Nominal खाने में लिखा जाएगा। चूँकि इन अंशों के लिए कोई मूल्य नहीं चुकाना पड़ता, अतः इनकी प्रविष्टि Capital खाने में नहीं की जाएगी।

(ख) **अधिकार अंश** (Right shares)– इक्विटी अंशधारियों का यह अधिकार होता है कि कम्पनी द्वारा भविष्य में निर्गमित किए जाने वाले अंश उन्हें प्रस्तावित किए जायें। ऐसे अंश अधिकार अंश कहलाते हैं। अंशधारी या तो प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए अंश खरीद लेता है अथवा समस्त अथवा उनमें से कुछ अंश किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में त्याग देता (Renunicate) है।

अधिकार अंश क्रय किए जाने की दशा में अंशों का अंकित मूल्य Nominal खाने में तथा उनके लिए दिया गया मूल्य Capital खाने में लिखा जाता है। अधिकार त्यागने पर यदि कोई राशि प्राप्त न हो तो उसे क्रेडिट पक्ष में Capital खाते में लिखा जाएगा।

Illustration 4. On 1st April, 2006 Mr. Singhal had 20,000 Equity shares of Rs. 10 each of Toyota Ltd., purchased for Rs. 3,20,000. On 1st June, 2006 he purchased further 5,000 shares at a premium of Rs. 4 per share. On 30th June, 2006 the Directors of the Company announced a bonus and right issue. Bonus shares were allotted @ 1 Equity share for every 5 Equity shares held and these were received on 2nd August, 2006. The terms of the right issues were :

(a) Right shares to be issued to existing share holders on 10th August, 2006.

(b) Right issue would entitle the holders to subscribe the additional Equity shares @ 1 share for every 3 shares held @ Rs. 15 per share – the whole sum being payable on 30th Sept, 2006.

(c) Existing share holders may, to the extent of their entitlement, either wholly or in part, transfer their rights to outsiders.

(d) Mr. Singhal exercised his option under the issue for 50% of his entitlement and the balance of rights he sold to Mr. Varadani for a consideration of Rs. 1.50 per share.

(e) Dividends for the year ended 31st March, 2006 @ 15% were declared by the company and received by Mr. Singhal on 30th October, 2006.

(f) On 1st November, 2006 Mr. Singhal sold 20,000 Equity shares at a premium of Rs. 3 per share.

Prepare the Investment Account in the books of Mr. Singhal as on 31-12-2006 and show the value of shares held by him on that date.

Solution. **(टिप्पणियां)**–(1) 1st June, 2006 — रु.

5,000 अंशों का क्रय मूल्य 14 रु. प्रति अंश की दर से — 70,000

(2) 2nd August, 2006.

बोनस अंश $\left(\frac{25,000 \times 1}{5}\right) = 5,000 \times 10 =$ — 50,000

(3) 30th September, 2006 **अधिकार अंश** (Right Issues) $\left(\frac{30,000 \times 1}{3}\right)$=10,000 अंश — **रु.**

50% अर्थात् 5,000 अंश क्रय किए 15 रु. की दर से = — 75,000

50% अर्थात् 5,000 अंशों का अधिकार 1.50 रु. प्रति अंश की मे हस्तांतरित किया : प्राप्त राशि = — 7,500

(4) 30th October, 2006 को प्राप्त लाभांश $\left(\frac{3,50,000 \times 15}{100}\right)$= — 52,500

(5) 1st November, 2006 : 20,000 अंशों का विक्रय मूल्य 13 रु. प्रति अंश की दर से = — 2,60,000

(6) विक्रय पर लाभ की गणना विनियोगों के औसत मूल्य के आधार पर की गई है। 35,000 अंशों का मूल्य = (3,20,000 + 70,000 + 75,000) = 4,65,000 रु. में से अधिकार अंशों से प्राप्त लाभाँश 7,500 रु. तथा प्राप्त लाभाँश 7,500 रु. घटाकर 4,50,000 रु. आता है। 20,000 अंशों का मूल्य $\left(\frac{4,50,000}{3,530} \times 20,000\right)$ 2,57,143 रु. हुआ है जिन्हें 2,60,000 रु. में बेचा गया, अतः लाभ 2,857 रु.। चूँकि खाते 31 मार्च के बन्द होना माने गए हैं, अतः लाभांश की आय लाभ-हानि खाते में क्रेडिट न करके आगे ले गये हैं।

Equity Shares of Toyota Ltd. Account

Date	Particulars	Nominal	Capital	Dividend	Date	Particulars	Nominal	Capital	Dividend
2006		Rs.	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
Apr, 1st	To Balance b/d	2,00,000	3,20,000	—	Sep. 30th	By Bank A/c	—	7,500	—
June 1st	To Bank A/c	50,000	70,000	—	Oct. 30th	By Bank A/c	—	7,500	30,000
Aug. 2nd	To Bonus Shares	50,000	—	—	Nov. 1st	By Bank A/c	2,00,000	2,60,000	—
Sep. 30th	To Bank A/c (Rights)	50,000	75,000	—	Dec. 31st	By Balance c/d	1,50,000	1,92,857	—
Dec. 31st	To Profit & Loss A/c	—	2,857	—					
Dec. 31st	To Balance c/d	—	—	30,000					
		3,50,000	4,67,857	30,000			3,50,000	4,67,857	30,000

7.6 ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियां (Interest earning Securities)

कम्पनियों एवं अन्य सार्वजनिक संस्थानों के ऋण-पत्र, बॉण्डस, सार्वजनिक ऋण-पत्र आदि प्रतिभूतियों पर पूर्व-निर्दिष्ट दर से ब्याज का भुगतान निर्धारित समयावधियों (जैसे-छःमाही या वार्षिक आधार पर) पर किया जाता है। लाभांश की गणना वार्षिक आधार पर की जाती है किन्तु ब्याज दैनिक आधार पर (on day to day basis) अर्जित किया जाता है भले ही उसका भुगतान छमाही या वार्षिक किया जाए। ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय भी ब्याज सहित अथवा ब्याज रहित आधार पर किया जाता है।

7.7 ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों का लेखांकन (Accounting of Interest earning Securities)

ऋण-पत्रों, बॉण्डस, शासकीय ऋण आदि ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों का लेखांकन भी क्रेता एवं विक्रेता दोनों की पुस्तकों में किया जाता है। ऐसा करने से पूर्व ब्याज-सहित अथवा ब्याज-रहित जैसा भी मूल्य हो उसके अनुसार प्रतिभूतियों के मूल्य का पूँजी एवं आगम में विनिधान करके यह ज्ञात कर लेना चाहिए कि जो मूल्य दिया-लिया जा रहा है उसमें कितनी राशि प्रतिभूतियों के पूँजीगत मूल्य के लिए है तथा कितनी ब्याज की। तत्पश्चात् क्रेता एवं विक्रेता की पुस्तकों में निम्नानुसार रोजनामचा प्रविष्टियां की जाती हैं।

ब्याज-सहित क्रय-विक्रय की दशा में (In case of cum-interest transactions)— प्रतिभूतियों के ब्याज-सहित क्रय-विक्रय का आशय यह है कि प्रतिभूतियों के साथ उपार्जित ब्याज भी बेचा जा रहा है। ब्याज-सहित आधार पर प्रतिभूतियाँ तब बेची जाती हैं जब व्यवहार ब्याज की तिथियों के बीच हो तथा जब प्रतिभूतियों पर कुछ ब्याज उपार्जित किया जा चुका होता है किन्तु ब्याज के भुगतान की तिथि आने से पूर्व ही विक्रेता प्रतिभूतियों को बेच देता है तथा आगामी भुगतान की तिथि को सम्पूर्ण अवधि के ब्याज का भुगतान क्रेता को प्राप्त होता है। अतः विक्रेता उपार्जित ब्याज (ब्याज के भुगतान की अन्तिम तिथि से व्यवहार की तिथि तक की अवधि का ब्याज) की राशि विक्रय-मूल्य में जोड़कर प्रतिभूतियों का मूल्य क्रेता से वसूल करता है।

अतः ब्याज-सहित प्रतिभूतियों के विक्रय मूल्य में उपार्जित ब्याज की राशि सम्मिलित रहती है। अतः क्रेता एवं विक्रेता की पुस्तकों में क्रय/विक्रय मूल्य में से उपार्जित ब्याज घटाकर प्रतिभूतियों का पूँजीगत मूल्य निकाल लेना चाहिए। इसके पश्चात् निम्नलिखित प्रकार से प्रविष्टियां की जानी चाहिए।

क्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Purchaser)

(1) विनियोग क्रय करते समय:

विनियोग खाता	...डे.	Investment A/c	...Dr.	(Capital Cost)
ब्याज खाता	...डे.	Investment A/c	...Dr.	(Accrued Interest)
रोकड़ या बैंक खाता से		To Cash or Bank A/c		Total amount paid
(...विनियोग ...रु...		(Purchased.............(Investment)		
ब्याज-सहित दर से क्रय किए)		(a)..................c.d.)		

(2) ब्याज प्राप्त करने पर :

रोकड़ या बैंक खाता	डे	Cash or Bank A/c	..Dr.
ब्याज खाता से		To Interest A/c	
(...अवधि का ब्याज प्राप्त किया)		(Received interest for the period...........)	

(3) ब्याज खाते का शेष लाभ-हानि खाते में अन्तरित करने के लिए :

ब्याज खाता	डे	Interest A/c	Dr
लाभ-हानि खाता से		To Profit & Loss A/c	
(ब्याज खाता का शेष लाभ हानि खाता को अन्तरित)		(Balance of Interest A/c Transferred to Profit & Loss A/c)	

विक्रेता की पुस्तकों में (In the Books of Seller)

(1) विनियोग बेचने पर :

रोकड़ या बैंक खाता	डे	Cash or Bank A/c	.Dr	Total amount received
विनियोग खाता से		To Investment A/c		Capital Cost
ब्याज खाता से		To Interest A/c		Accrued Interest
(विनियोग रु. की दर से बेचे)		(Sold ....(a)....... each cost interest)		

(2) विक्रय पर होने वाली लाभ-हानि के लिए :

(अ) लाभ की दशा में :

विनियोग खाता	डे	Investment A/c	Dr
लाभ-हानि खाता से		To Profit & Loss A/c	
(विनियोगों के विक्रय पर लाभ, लाभ-हानि खाता को हस्तान्तरित)		(Profit on the sale of................ (Investment) transferred to Profit & Loss A/c)	

(ब) हानि की दशा में :	
लाभ-हानि खाता ...डे	Profit & Loss A/c ....Dr.
विनियोग खाता से	To Investment A/c
(विनियोगों के विक्रय पर हानि हस्तान्तरित)	(Loss on the sale of Investment transferred)

(3) ब्याज खाते का शेष अन्तरित करने के लिए :	
ब्याज खाता ...डे.	Interest A/c ....Dr.
लाभ-हानि खाता से	To Profit & Loss A/c
(लाभ-हानि खाता का शेष हस्तान्तरित)	(Balance or Interest A/c transferred)

Illustration 5. On 1st March, 2006 the Bharat Store Ltd. Purchased Rs. 18,000 4% debentures at Rs. 95, interest being payable on 30th June and 31st December, Expenses amounted to Rs. 158.50 and brokerage 10 paise per cent On 1st August Rs. 6,000 Debentures were sold at the rate of Rs. 98. Record these transactions in the books of Bharat Stores.

1 मार्च, 2006 को भारत स्टोर्स लि. ने 18,000 रु. के 4% ऋण-पत्र 95 रु. की दर से क्रय किए, ब्याज का भुगतान 30 जून तथा 31 दिसम्बर को देय होता है। व्यय 158.50 रु. हुए तथा दलाली 10 पैसे प्रतिशत है। 1 अगस्त को 6,000 रु. के ऋण-पत्र 98 रु. की दर से बेच दिए गए। इन व्यवहारों का लेखा भारत स्टोर्स की पुस्तकों मे कीजिए।

Solution टिप्पणियां–

		Rs.
(1) 1-3-2006 :		
(1) Purchase price of 180 Debentures @ Rs. 95 c.d.		17,100.00
	Rs.	
(+) Expenses	158.50	
Brokerage @ 10 paise per cent on Rs. 18,000	18.00	
		176.50
Total amount paid		17,276.50
(−) Accrued Interest (1st January to 29th Feb.) $\left(\frac{18,000 \times 4 \times 2}{100 \times 12}\right)$		120.00
Capital Cost of Debentures Purchased		17,156.50
(2) 1-8-2006		Rs.
Sales Price of 60 Debentures @ Rs. 98 c.d		5,880.00
(−) Accrued Interest (1st July to 31st July) $\left(\frac{6,000 \times 4}{100} \times \frac{1}{12}\right)$ =		20.00
Capital cost of debentures sold		**5,860.00**
(3) Profit & Loss on Debentures sold		Rs.
Sale price of 60 debentures		5,860.00
Cost price of 60 debentures $\left(\frac{17,156.50}{180} \times 60\right)$ =		5,718.83
Profit on Sale of 60 debentures		141.17

4% Debentures A/c (Interest payable on 30th June and 31st December)

		Rs.			Rs.
1-3-06	To Cash A/c	17,156.50	01-08-06	By Cash A/c	5,860.00
1-8-06	To P. & L. A/c	141.17	31-12-06	By Balance c/d	11,437.67
		17,297.67			17,297.67

Interest A/c

		Rs.			Rs.
01-03-06	To Cash A/c	120.00	30-06-06	By Cash A/c	360.00
31-12-06	To Profit & Loss A/c	500.00	01-08-06	By Cash A/c	20.00
			31-12-06	By Cash A/c	240.00
		620.00			620.00

NOTES

7.7 ब्याज-रहित मूल्य (Ex-Interest Quotation)

प्रतिभूतियों के ब्याज-रहित मूल्य का अर्थ इंग्लैण्ड तथा भारतीय संदर्भ में अलग-अलग है।

भारतीय सन्दर्भ– भारत में प्रतिभूतियों के ब्याज-रहित मूल्य से आशय यह है कि इस मूल्य में ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि से व्यवहार की तिथि तक का ब्याज सम्मिलित नहीं है। दूसरे शब्दों में, क्रेता को विनियोगों के मूल्य के अतिरिक्त उपार्जित ब्याज का भुगतान अलग से विक्रेता को करना होगा।

ब्याज-रहित व्यवहारों में मूल्य की गणना निम्नानुसार की जाती है–

	रु.	
प्रतिभूतियों के लिए दिया गया मूल्य	....	पूँजीगत (Capital)
(+) ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि से व्यवहार की तिथि तक का ब्याज	....	आगम (Revenue)
प्रतिभूतियों के लिए दी गई कुल राशि	....	कुल भुगतान (Total Price Paid)

ब्याज-रहित मूल्य की दशा में ब्याज का अगला भुगतान क्रेता को प्राप्त होता है।

इंग्लैण्ड के सन्दर्भ में– इंग्लैण्ड में ब्याज-रहित मूल्य का आशय सर्वथा भिन्न होता है। वहाँ जब प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय 'ब्याज-रहित मूल्य' पर होता है तो इसका अर्थ यह होता है कि ब्याज-भुगतान की आगामी तिथि को सम्पूर्ण अवधि के ब्याज का भुगतान विक्रेता को होगा यद्यपि वह इससे पूर्व ही प्रतिभूतियाँ क्रेता को बेच चुका होता है। ब्याज-भुगतान की अन्तिम तिथि से व्यवहार की तिथि तक का ब्याज पाने का वास्तविक अधिकारी तो विक्रेता होता है किन्तु व्यवहार की तिथि से ब्याज के आगामी भुगतान की तिथि तक का ब्याज पाने का अधिकार वास्तव में क्रेता का हो जाता है किन्तु इस अवधि का ब्याज भी विक्रेता ही प्राप्त करता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जब क्रेता ब्याज-रहित मूल्य पर प्रतिभूति खरीदता है तो वह व्यवहार की तिथि से ब्याज के भुगतान की आगामी तिथि तक की अवधि का ब्याज पाने के अपने अधिकार को विक्रेता के पक्ष में त्याग देता है। विक्रेता इस हानि की पूर्ति इस प्रकार करता है कि वह क्रेता से विनियोग का वास्तविक मूल्य वसूल न करके उसमें से उपर्युक्त अवधि का ब्याज घटाकर वसूल करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि ब्याज-रहित मूल्य विनियोगों का घटा हुआ मूल्य होता है और विनियोग का पूँजीगत मूल्य ज्ञात करने के लिए क्रेता जो मूल्य देता है उसमें व्यवहार की तिथि से ब्याज भुगतान की आगामी तिथि तक का ब्याज और जोड़ दिया जाना चाहिए।

अतः पूँजीगत मूल्य की गणना निम्नानुसार की जाती है

	रु.
दिया गया कुल मूल्य	
(+) व्यवहार की तिथि से ब्याज के भुगतान की आगामी तिथि तक की अवधि का ब्याज	
प्रतिभूतियों का पूँजीगत मूल्य	

महत्वपूर्ण टिप्पणी– हमने ब्याज-रहित मूल्य की व्याख्या भारतीय एवं इंग्लैण्ड के सन्दर्भों में अलग-अलग स्पष्ट की है। अनेक भारतीय पाठ्य पुस्तकों में आज भी विनियोग सम्बन्धी प्रश्न इंग्लैण्ड की परम्परा के आधार पर हल किए गए हैं जो उचित प्रतीत नहीं होता। दोनों सन्दर्भों में प्रश्नों के हल सर्वथा भिन्न होंगे। परीक्षा सम्बन्धी प्रश्नों में छात्रों को टिप्पणी देकर स्पष्ट कर देना चाहिए कि उन्होंने किस पद्धति का अनुसरण किया है। प्राध्यापक बन्धुओं/छात्रों से अनुरोध है कि वे ब्याज-रहित व्यवहारों को भारतीय सन्दर्भ में ही मान्यता दें।

NOTES

ब्याज-रहित व्यवहारों का लेखांकन (Accounting of Ex-Interest transactions)– जैसा कि पूर्व-पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है, ब्याज-रहित मूल्य के सम्बन्ध में भारतीय सन्दर्भ तथा इंग्लैण्ड के सन्दर्भ में अवधारणा अलग-अलग है। दोनों सन्दर्भों में पूँजीगत मूल्य की गणना अलग-अलग प्रकार से की जाती है, अतः रोजनामचा प्रविष्ठियाँ भी अलग-अलग प्रकार से होगी। हम यहाँ दोनों पद्धतियों का विवेचन कर रहे हैं।

भारतीय सन्दर्भ में (In Indian Context)

क्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Purchaser)

(1) विनियोग क्रय करने पर–

विनियोग खाता	डे.	Investments A/c	....Dr.	विनियोग का मूल्य
ब्याज खाता	डे.	Interest A/c	....Dr.	ब्याज की राशि
रोकड़ या बैंक खाता से		To Cash or Bank A/c		कुल भुगतान

(2) ब्याज प्राप्त होने पर–

रोकड़ या बैंक खाता	डे	Cash or Bank A/c	...Dr.	पूर्ण अवधि के ब्याज से
ब्याज खाता से		To Interest A/c		

(3) ब्याज खाता बन्द करने हेतु–

ब्याज खाता	डे.	Interest A/c	..Dr.	ब्याज खाता के शेष से
लाभ-हानि खाता से		To P. & L. A/c		

विक्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Seller)

(1) विनियोगों को बेचने पर–

रोकड़ या बैंक खाता	डे.	Cash/Bank A/c	....Dr.	कुल प्राप्त राशि से
विनियोग खाता से		To Investments A/c		विनियोगों के मूल्य से
ब्याज खाता से		To Interest A/c		ब्याज की राशि से

(2) ब्याज– अगला ब्याज क्रेता को प्राप्त होगा, अतः विक्रेता की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

(3) विक्रय पर लाभ/हानि

लाभ–

विनियोग खाता	डे.	Investments A/c	...Dr.
लाभ-हानि खाता से		To Profit & Loss A/c	

हानि– विलोम (reverse) प्रविष्टि।

Illustration 6. 1 मार्च, 2006 को रामास्वामी एण्ड कम्पनी ने 10,000 रु. के 9% ऋण-पत्र 108 रु. ब्याज रहित दर पर क्रय किए जिन पर ब्याज का भुगतान 30 जून तथा 31 दिसम्बर को होना है। नवम्बर को आधे ऋण-पत्र 105 रु. ब्याज सहित की दर से बेच दिए गए क्रय-विक्रय के प्रत्येक व्यवहार पर 1% दलाली एवं अन्य व्यय हुए। इन व्यवहारों का लेखा करने हेतु रोजनामचा प्रविष्टियाँ दीजिए तथा आवश्यक खाते खोलिए।

Solution. टिप्पणियां– (1) 1-3-2006 | रु.

		रु.
10,000 रु. के ऋणपत्रों को 108 रु. ब्याज रहित दर से क्रय		10,800
(+) दलाली एवं व्यय $\left(\frac{10,000 \times 1}{100}\right)$		100
	पूँजीगत मूल्य	10,900
(+) ब्याज (जनवरी-फरवरी) (आरम्भ) $\left(\frac{10,000 \times 9}{100} \times \frac{2}{12}\right)$		150
	कुल भुगतान	11,050

(2) 30-6-2006 ब्याज $\left(\frac{10,000 \times 9}{100} \times \frac{6}{12}\right)$ 450

NOTES

(3) 1-11-2006

5,000 रु. के ऋण-पत्रों का 105 रु. ब्याज रहित दर पर विक्रय		5,250
(–) दलाली एवं व्यय $\left(\frac{5,000 \times 1}{100}\right) =$		50
	पूँजीगत	5,200
(+) ब्याज (जुलाई-अक्टूबर) आगम $\left(\frac{5,000 \times 9}{100} \times \frac{4}{12}\right) =$		150
	कुल प्राप्त राशि	5,350

(4) विक्रय पर लाभ/हानि

विक्रय मूल्य		5,200
क्रय मूल्य $\left(\frac{10,900}{10,000} \times 5,000\right) =$		5,450
	हानि	250

(5) 31-12-06 ब्याज $\left(\frac{5,000 \times 9}{100} \times \frac{6}{12}\right)$ 225

Journal Entries

2006			Rs.	Rs.
March 1	9% Debentures A/c	...Dr.	10,900	
	Interest A/c	...Dr.	150	
	To Bank A/c			11,050
	(Purchased Rs. 10,000 Debentures @ Rs. 108 x.d. Brokarage 1%)			
June 30	Bank A/c	....Dr.	450	
	To Interest A/c			450
	(Half-Yearly interest received)			
Nov 1	Bank A/c	...Dr.	5,350	
	To 9% Debentures A/c			5,200
	To Interest A/c			150
	(Rs. 5,000 debentures sold at Rs. 105 x.d.; Brokerage 1%)			
Nov.	Profit & Loss A/c	....Dr.	250	
	To 9% Debentures A/c			250
	(Loan on sale of debentures)			
Dec 31	Bank A/c	....Dr	225	
	To Interest A/c			225
	(Half-yearly interest received)			
Dec 31	Interest A/c	..Dr.	675	
	To Profit & Loss A/c			675
	(Interest income credited to P & L A/c)			

9% Debentures A/c (Interest payable on 30th June, 31st Dec.)

2006		Rs.			Rs.
March 1	To Bank A/c	10,900	Nov 1	By Bank A/c	5,200
				By P & L A/c	250
			Dec. 31	By Balance c/d	5,450
		10,900			10,900

NOTES

Interest A/c

2006		Rs.	2006		Rs.
March 1	To Bank A/c	150	June 30	By Bank A/c	450
Dec. 31	To P. & L. A/c	675	Nov. 1	By Bank A/c	150
			Dec. 31	By Bank A/c	225
		825			825

इंग्लैण्ड के सन्दर्भ में:—

क्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Purchaser)

(1) विनियोग क्रय करते समय :

विनियोग खाता ...डे.	Investment A/c ....Dr.	(Capital Cost Investment)
ब्याज खाता से	To Interest A/c	(From the date of transaction to the date of next payments)
रोकड़/बैंक खाता से	To Cash/Bank A/c	(Amount actually paid)
(...रु...ब्याज-रहित दर से क्रय किए)	(Purchased ....@....... ex-interest)	

(2) ब्याज के सम्बन्ध में—क्रय करने के तुरन्त बाद वाला ब्याज विक्रेता को मिलता है, अतः क्रेता की पुस्तकों में कोई भी प्रविष्टि करने का प्रश्न नहीं उठता। इसके पश्चात् भविष्य में जब भी ब्याज प्राप्त होगा निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी :

रोकड़/बैंक खाता ...डे.	Cash/Bank A/c ....Dr.
ब्याज खाता से	To Interest A/c
(ब्याज प्राप्त हुआ)	(Interest received)

(3) ब्याज खाते के शेष अन्तरित करने के लिए :

ब्याज खाता डे.	Interest A/c ....Dr.
लाभ-हानि खाता से	To Profit & Loss A/c
(ब्याज खाता का शेष अन्तरित)	(Balance of Interest A/c transferred)

विक्रेता की पुस्तकों में (In the Books of the Seller)

(1) विनियोग बेचते समय :

रोकड़/बैंक खाता डे	Cash/Bank A/c Dr.	(Actual Sale Price)
ब्याज खाता डे	Interest A/c ....Dr.	From the date of transaction to the date of next payment
विनियोग खाता से	To Investment A/c	(Capital Cost of Investment)
(...विनियोग...रु....ब्याज-रहित दर से बेचे)	(Sold .... Investment @ Rs.......... ex-interest)	

(2) विक्रय पर होने वाले लाभ-हानि के लिए—लाभ:

विनियोग खाता डे	Investment A/c ....Dr.
लाभ-हानि खाता से	To Profit & Loss A/c
(विनियोगों के विक्रय पर लाभ, लाभ-हानि को अन्तरित)	(Profit on Sale of Investment transferred to profit & Loss A/c)

हानि:

लाभ-हानि खाता ...डे.	Profit & Loss A/c ...Dr.
विनियोग खाता से	To Investment A/c
(विनियोगों के विक्रय पर हानि, लाभ-हानि खाता को अन्तरित)	(Loss on Sale of Investment transferred to Profit & Loss A/c)

(3) ब्याज के लिए– विक्रय के तुरन्त बाद वाली अवधि का ब्याज विक्रेता को ही प्राप्त होगा, जिसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि होगी:

रोकड़/बैंक खाता ...डे.	Cash/Bank A/c ...Dr.
ब्याज खाता से	To Interest A/c
(ब्याज प्राप्त हुआ)	(Received Interest)

(4) ब्याज खाते का शेष अन्तरित करने के लिए:

ब्याज खाता ...डे.	Interest A/c ...Dr.
लाभ-हानि खाता से	To Profit & Loss A/c
(ब्याज खाता का शेष अन्तरित)	(Balance on Interest A/c transferred)

Illustration 7. On 16th March, 2006, Bhagwan Swaroop purchased from Shastri Bros. 10, Rs. 100 5% Debentures of Gandhi Industries Ltd., @ Rs. 90 ex-interest. Interest is payable on 1st April and 1st October.

Record this transaction in the books of both the buyer and the seller assuming that both of them had to pay Rs. 10 for Brokrage.

(16 मार्च, 2006 को भगवान स्वरूप ने शास्त्री ब्रदर्स से 10,100 रु. गाँधी इन्डस्ट्रीज लि. के 5% ऋण-पत्र 90 रु. ब्याज रहित दर से क्रय किए। ब्याज 1 अप्रैल तथा 1 अक्टूबर को देय होता है। यह मानकर कि दोनों को 10 रु. दलाली देनी पड़ी, इस व्यवहार का लेखा क्रेता एवं विक्रेता दोनों की पुस्तकों में कीजिए।)

Solution. In the Books of Bhagwan Swaroop

		Rs.
	Purchase Price of 10 Debentures @ Rs. 90 ex-interest	900.00
(+)	Brokerage	10.00
		910.00
(+)	Interest for 15 days (From : 16th March to 31st March)	2.08
	Capital Cost	912.08

Journal Entries

			Rs.	Rs.
16-3-06	Debentures of Gandhi Industries A/c	...Dr.	912.08	
	To Cash A/c			910.00
	To Interest A/c			2.08
	(Purchased 10 Debentures @ Rs. 90 ex-interest)			
1-10-06	Cash A/c	...Dr.	25.00	
	To Interest A/c			25.00
	(Interest received for the half year ending 30th Sep.)			
31-12-06	Interest A/c	...Dr.	27.08	
	To Profit & Loss A/c			27.08
	(Balance of Interest A/c transferred)			

NOTES

5% Gandhi Industries Debentures A/c (Interest payable 1st April and 1st October)

2006		Rs.	2006		Rs.
March 16	To Cash A/c	910.00	Dec. 31	By Balance c/d	912.08
	To Interest A/c	2.08			
		912.08			912.08

Interest A/c

2006		Rs.	2006		Rs.
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	27.08	March 16	By Gandhi Industries Debentures A/c	2.08
			Oct. 1	By Cash A/c	25.00
		27.08			27.08

In the Books of Shastri Bros.

	Rs.
Sale Price of 10 Debentures @ Rs. 90 ex-interest	900.00
Less : Brokerage	10.00
	890.00
Add : Interest for 15 days (16th March to 31st March)	2.08
	892.08

Journal Entries

			Rs.	Rs.
16-3-06	Cash A/c	....Dr.	890.00	
	Interest A/c	....Dr.	2.08	
	To Debentures A/c			892.08
	(Sold 10 Debentures @ Rs. 90 ex-interest)			
1-4-06	Cash A/c	....Dr.	25.00	
	To Interest A/c			25.00
	(Interest received for six months)			
31-12-06	Interest A/c	....Dr.	22.92	
	To P. & L. A/c			22.92
	(Balance of Interest A/c transferred)			

5% Gandhi Industries Debentures A/c
(Interest payable 1st April & 1st October)

					Rs.
	To Balance b/d	892.08	16-3-06	By Cash A/c	890.00
				By Interest A/c	2.08

Interest A/c

		Rs.			Rs.
16-3-06	To Debentures A/c	2.08	1-4-06	By Cash A/c	25.00
31-12-06	To Profit & Loss A/c	22.92			
		25.00			25.00

वर्ष के अन्त में विनियोगों का मूल्यांकन (Valuation of Investments at the close of the year)— विनियोग या तो स्थाई सम्पत्ति के रूप में रखे जाते हैं अथवा चल सम्पत्ति के रूप में। यदि विनियोगों को स्थायी सम्पत्ति के रूप में रखा गया हो तो वर्ष के अन्त में उन्हें लागत मूल्य पर ही दिखाया जाना चाहिए, इनका बाजार मूल्य कुछ भी क्यों न हो। किन्तु यदि किसी विनियोग के मूल्य में स्थायी कमी हो गई हो तो इसे उस घटे हुए मूल्य पर दिखाना चाहिए तथा इस प्रकार की हानि के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाना चाहिए —

लाभ-हानि खाता ...डे.	Profit & Loss A/c ....Dr.
विनियोग उच्चावचन संचय खाता	To Investment Fluctuation Reserve A/c
(विनियोगों के मूल्य में कमी)	(Loss in the value of Investments)

NOTES

यदि विनियोगों को चल सम्पत्ति के रूप में रखा जा रहा हो तो लेखा वर्ष के अन्त में उनका मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोनों में से जो भी कम हो उस मूल्य पर करना चाहिए वर्ष के अन्त में विनियोगों का बाजार मूल्य या तो लाभाँश सहित होता है अथवा लाभाँश रहित। अतः विनियोगों का बाजार मूल्य निकालते समय ब्याज के सम्बन्ध में आवश्यक समायोजन कर देना चाहिए। चूँकि विनियोगों का मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोनों में जो भी कम हो पर किया जाता है, अतः मूल्यांकन के परिणाम लाभ होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जब बाजार मूल्य लागत मूल्य से कम होगा तो हानि होगी जिसको निम्नलिखित प्रविष्टि करके लाभ-हानि खाते में अन्तरित कर दिया जाता है–

लाभ-हानि खाता ...डे.	Profit & Loss A/c ....Dr.
विनियोग खाता से	To Investment A/c
(विनियोगो के मूल्यांकन पर हानि हस्तान्तरित)	(Loss on the valuation of Investment transferred)

एक दूसरी पद्धति यह हो सकती है कि पहले इस हानि को विनियोगों के विक्रय पर लाभ-हानि खाते मे भेज दिया जाए तथा बाद में इस खाता का शेष लाभ-हानि में अन्तरित कर दिया जाए।

(1)	Profit and Loss on Sale of Investment A/c	...Dr.
	To Investment A/c	
	(Loss on Valuation of Investment transferred to Profit & Loss on Sale of Investment A/c)	
(2)	Profit & Loss A/c	....Dr.
	To Profit & Loss on Sale of Investment A/c	
	(Balance of Profit & Loss on Sale of Investment A/c transferred to P. & L. A/c)	

7.9 उपार्जित ब्याज (Accrued Interest)

ब्याज वाली प्रतिभूतियों पर ब्याज दिन-प्रतिदिन अर्जित होता है किन्तु उसका भुगतान निर्धारित तिथियों पर ही किया जाता है। यह कोई आवश्यक बात नहीं है कि ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि तथा अन्तिम खाते तैयार करने की तिथि एक ही हो अथवा विनियोगों पर प्राप्त होने वाला समस्त ब्याज अन्तिम खाते तैयार करने की तिथि तक प्राप्त हो जाए। जब ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि अन्तिम खाते तैयार करने की तिथि से पूर्व पड़ती है तो प्रत्येक वर्ष के अन्त में इन विनियोगों पर कुछ ब्याज ऐसा होगा (ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि से वर्ष समाप्ति की तिथि तक की अवधि का) जो अर्जित तो कर लिया गया है किन्तु जो अगले व्यापारिक वर्ष में प्राप्त होगा। उदाहरण के लिए राम एण्ड कम्पनी जो अपनी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द करती है, के पास कुछ ऋण-पत्र है जिन पर छमाही ब्याज 1 अप्रैल व 1 अक्टूबर को प्राप्त होता है। इस स्थिति में इन ऋण-पत्रों पर 1 अक्टूबर को अन्तिम छमाही का ब्याज प्राप्त हो जाएगा तथा उसके बाद इन पर ब्याज फिर से अर्जित होना प्रारम्भ हो जाएगा और 31 दिसम्बर को जब कम्पनी अपनी पुस्तकें तैयार करेगी 3 माह का ब्याज अर्जित हो चुका होगा।

लेखा वर्ष के अन्त में विनियोग एवं ब्याज खाते बन्द करने से पूर्व विभिन्न विनियोगों पर उपार्जित ब्याज की गणना करके उसका लेखा निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा कर दिया जाता है –

उपार्जित ब्याज खाता डे.	Accrued Interest A/c ...Dr.
ब्याज खाता से	To Interest A/c
(विनियोगों पर ...माह का ब्याज उपार्जित)	(Interest Accrued on Investment for......... Months)

NOTES

उपार्जित ब्याज खाते का शेष अगले वर्ष आगे ले जाते है। अगले लेखा वर्ष के आरम्भ में उपार्जित ब्याज के सम्बन्ध में उपर्युक्त प्रविष्टि की विलोम प्रविष्टि निम्न प्रकार से कर देते है–

ब्याज खाता ...डे.	Interest A/c ....Dr.
उपार्जित ब्याज खाता से	To Accrued Interest A/c
(उपार्जित ब्याज खाता का शेष ब्याज खाता को अन्तरित)	(Opening balance of Accrued Interest A/c transferred to Interest A/c)

7.10 स्तम्भीय विनियोग खाता (Investment Account in Column form)

पूर्व वर्णित पद्धति में विनियोग खाता, ब्याज खाता तथा उपार्जित ब्याज खाता अलग-अलग बनाये जाते है। जहाँ विनियोगों के व्यवहार बड़ी संख्या में होते है, प्रत्येक विनियोग के लिये विनियोग खाताबही (Investment Ledger) में एक अलग विनियोग खाता (Investment A/c) खोल देते है जिसमे विनियोगों के साथ-साथ ब्याज का भी एक खाना डेबिट-क्रेडिट दोनों पक्षो में बना दिया जाता है। अतः ब्याज एवं उपार्जित ब्याज का लेखा करने हेतु अलग-अलग खाते नहीं खोलने पड़ते। स्तम्भीय विनियोग खाता निम्नानुसार प्रारूप में बनाया जाता है –

15% हीरो-होण्डा ऋण-पत्र खाता (15% Hero Honda Debentures Account)

ब्याज 30 जून तथा 31 दिसम्बर को देय (Interest payable on 30th June, 31st December)

Date दिनांक	Particulars (विवरण)	Nominal Value (अंकित मूल्य)	Capital (पूँजीगत मूल्य)	Interest ब्याज	Date दिनांक	Particulars (विवरण)	Nominal Value (अंकित मूल्य)	Capital पूँजीगत मूल्य)	Interest (ब्याज)
		Rs.	Rs.	Rs.			Rs.	Rs.	Rs.

स्तम्भीय विनियोग खाता में प्रविष्टियाँ निम्नानुसार की जाती है –

(1) **विनियोग क्रय करने पर**– प्रविष्टियाँ विनियोग खाता के डेबिट पक्ष में की जाती है। क्रय की गई प्रतिभूतियों का अंकित मूल्य (Nominal Value) के खाने में, मूल्य का पूँजीगत अंश (Capital Component) 'Capital' खाने में तथा आगम अंश (Revenue component) Interest खाने में लिख देते है।

(2) **ब्याज**– ब्याज प्राप्त होने पर उसको प्रविष्टि खाता के क्रेडिट पक्ष मे Interest के खाने में करते है,

(3) **विनियोगों के विक्रय पर**– प्रविष्टियाँ खाता के क्रेडिट पक्ष में की जाती है। बेची गई प्रतिभूतियों का अंकित मूल्य 'Nominal' खाने में प्राप्त मूल्य का पूँजीगत अंश 'Capital' खाने में तथा आगम अंश 'Interest' खाने में लिखा जाता है।

(4) **विक्रय पर लाभ/हानि**– विनियोगों के विक्रय पर यदि लाभ हो तो डेबिट पक्ष में Capital खाने में अथवा यदि हानि हो तो क्रेडिट पक्ष में Capital खाने में लिखी जाती है।

(5) **उपार्जित ब्याज**– लेखा वर्ष के अन्त में यदि कोई ब्याज उपार्जित हो तो उसे क्रेडिट पक्ष में Interest खाने में अन्तिम शेष के रूप में लिखते है। अगले वर्ष इसे डेबिट पक्ष में आरम्भिक शेष के रूप में ब्याज के खाने में दिखाते है।

(6) **शेष निकालना**– लेखा-वर्ष के अन्त में विभिन्न खानो के शेष निकाले जाते है। ब्याज खाने का शेष लाभ-हानि खाते को अन्तरित कर दिया जाता है। Nominal तथा Capital खानों के शेष 'By Balance c/d' के रूप में आगे ले जाये जाते है।

टिप्पणी– यदि विनियोगों का मूल्यांकन लागत मूल्य पर न किया जाकर बाजार मूल्य पर किया जाए तो जिस मूल्य पर उनका मूल्यांकन किया गया है उस मूल्य पर उन्हे Capital खाने में लिखकर Capital खाते में जो अन्तर आए उसे लाभ-हानि खाता में हस्तान्तरित कर देंगे।

Illustration 8. Mr. Investor furnishes the following details relating to his holding in 6% Government Bonds :–

Opening balance nominal Rs, 60,000, Cost Rs. 59,000

1-3-2005 100 Units purchased ex-interest Rs. 98

1-7-2005 Sold 200 ex-interest out of the original holding at Rs. 100

1-10-2005 Purchased 50 units at Rs. 98 cum-interest

1-11-2005 Sold 200 units ex-interest at Rs. 99 out of original holdings

Mr. Investor closes his books every 31st December. Show the investment account as it would appear in his books. Interest dates are 30th September and 31st March.

श्री विनियोक्ता के पास 6% शासकीय बॉण्ड्स थे जिसके सम्बन्ध में वह निम्नलिखित विवरण उपलब्ध कराते हैं:–

आरम्भिक शेष : अंकित मूल्य 60,000 रु., लागत 59,000 रु.

1-3-2005 100 बॉण्ड्स 98 रु. ब्याज-रहित की दर से क्रय किए

1-7-2005 बेचे 200 बॉण्ड्स 100 रु. ब्याज रहित की दर से आरम्भिक शेष में से

1-10-2005 50 बॉण्डस 98 रु. ब्याज-सहित दर पर क्रय किए

1-11-2005 200 बॉण्ड्स 99 रु. ब्याज-रहित की दर से आरम्भिक शेष में से बेचे

श्री विनियोक्ता अपनी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द करते हैं। उनकी पुस्तकों में विनियोग खाता बनाइए। ब्याज की तिथियाँ 30 सितम्बर तथा 31 मार्च है।

Solution. टिप्पणियां– रु.

(1) 1-1-2005 को उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-दिसम्बर) $\left(\frac{60,000 \times 6 \times 3}{100 \times 12}\right) =$ 900

(2) 1-3-2005 (ब्याज-रहित) क्रय मूल्य 100 × 98 = (पूँजीगत) 9,800

(+) ब्याज (अक्टूबर-फरवरी) $\left(\frac{10,000 \times 6 \times 5}{100 \times 12}\right)$ (आगम) 250

कुल भुगतान 10,050

(3) 31-3-2005

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{70,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$ 2,100

(4) 1-7-2005 (ब्याज-रहित)

विक्रय मूल्य (200 × 100) (पूँजीगत) 20,000

(+) ब्याज (अप्रैल-जून) $\left(\frac{20,000 \cdot 6}{100} \times \frac{3}{12}\right) -$ (आगम) 300

कुल प्राप्त राशि 21,000

विक्रय मूल्य 20,000

क्रय मूल्य $\left(\frac{59,000}{60,000} \times 20,000\right)$ 19,667 (लाभ) 333

(5) 30-9-2005

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{50,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right)$ 1,500

(6) 1-10-2005

क्रय मूल्य (50 × 98) = 4,900

(7) 1-11-2005 (ब्याज-रहित)

विक्रय मूल्य (200 × 99) (पूँजीगत) 19,800

NOTES

(+) ब्याज $\left(\frac{20,000 \times 6}{100} \times \frac{1}{12}\right)$ (आगम) 100

कुल प्राप्त राशि 19,900

विक्रय मूल्य 19,800

क्रय मूल्य $\left(\frac{59,000}{60,000} \times 20,000\right)$ 19,667 (लाभ) 133

(8) 31-12-2005

उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-दिसम्बर) $\left(\frac{35,000 \times 6}{100} \times \frac{3}{12}\right) =$ 525

6% Govt. Bonds Account (Interest payable on 30th Sept. – 31st March)

Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest	Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest
2005		Rs.	Rs.	Rs.	2005		Rs.	Rs.	Rs.
Jan 1	To Balance b/d	60,000	59,000	900	March 31	By Bank A/c	–	–	2,100
March 1	To Bank A/c	10,000	9,800	250	July 1	By Bank A/c	20,000	20,000	300
July 1	To P. & L. A/c	–	333	–	Sept. 30	By Bank A/c	–	–	1,500
Oct. 1	To Bank A/c	5,000	4,900	–	Nov 1	By Bank A/c	20,000	19,800	100
Nov. 1	To P. & L. A/c	–	133	–	Dec. 31	By Balance c/d	35,000	34,366	525
Dec 31	To P & L. A/c	–	–	3,375					
		75,000	74,166	4,525			75,000	74,166	4,525
2006 Jan 1	To Balance b/d	35,000	34,366	525					

हल सहित प्रश्न
(Solved Problems)

Problem 1. Nutan Bharat Bank Ltd. held on 1st January, 2006, 1,000 Equity Shares of Rs. 10 each in Double Century Ltd. at a book value of Rs. 14,250. It had the following further transactions during the year 2006 in respect of these shares

(1) Purchased on 1st April 2006, 50 shares cum dividend for Rs. 850 (including brokerage) (the shares were immediately registered in its name.)

(2) The Company declared and paid on 15th April 2006 dividend at 20%

(3) The Company declared on 1st June 2006 a bonus issue of 3 shares for every 7 shares held in the Company

(4) The Bank sold 450 shares on 1st July 2006 at Rs. 11.25 per share, and paid brokerage and transfer charges Rs. 25

You are required to prepare the investment Account in the Bank's Ledger in respect of these shares

नूतन भारत बैंक लि. के पास 1 जनवरी 2006 को डबल सेन्चुरी लि. के 10 रु. वाले 1,000 ईक्विटी अंश थे जिनका पुस्तक मूल्य 14,250 रु. था। 2006 वर्ष में इन अंशों के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्यवहार और हुए —

(1) 1 अप्रैल 2006 को 50 अंश लाभांश सहित 850 रु. में दलाली सहित क्रय किए जिन्हें तत्काल अपने नाम में रजिस्टर करा लिया गया।

(2) कम्पनी ने 15 अप्रैल 2006 को 20% लाभाँश घोषित कर भुगतान किया।

(3) 1 जून, 2006 को कम्पनी ने प्रत्येक 7 अंशों के लिए 3 अंश की दर से बोनस अंश घोषित किए।

(4) बैंक ने 1 जुलाई, 2006 को 450 अंश 11.25 रु. प्रति अंश की दर से बेचे, दलाली एवं हस्तांतरण प्रभार के 25 रु. दिए।

आपको इन अंशों के सम्बन्ध में बैंक की खाताबही में विनियोग खाता बनाना है।

NOTES

Solution. टिप्पणियां–

		रु.
(1) 1st April, 2006		
50 अंशों का क्रय-मूल्य ला.स.		850
(–) उपार्जित लाभाँश $\left(\frac{500 \times 20}{100}\right) =$		100
	पूँजीगत लाभ	750
(2) 1st June, 2006		
Bonus Shares $\left(\frac{1,050 \times 3}{7}\right) = 450$ अंश		4,500
(3) 1st Jul, 2006		
450 अंशों का विक्रय मूल्य 11.25 रु. प्रति अंश की दर से		5,062.50
(–) दलाली एवं हस्तांतरण व्यय		25.00
	पूँजीगत मूल्य	5,037.50
(4) लाभाँश 1st April $\left(\frac{10,500 \times 20}{100}\right) =$		2,100
(5) अंशों के विक्रय पर हानि (यह मानकर कि 450 अंश 1-1-06 को उपलब्ध 1,000 अंशों में से बेचे गए है)		
450 अंशों की लागत $\left(\frac{14,250 \times 450}{1,000}\right) =$		6,412.50
(–) विक्रय मूल्य		5,037.50
	हानि	1,375.00

Double Century Equity Shares A/c

Date	Particulars	Nominal Value	Capital	Dividend	Date	Particulars	Nominal Value	Capital	Dividend
2006		Rs.	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	14,250.00		April 15	By Bank A/c			2,100
April 1	To Bank A/c	500	750.00	100	July 1	By Bank A/c	4,500	5,037.50	
June 1	To Bonus Issue	4,500			Dec. 31	By Profit & Loss A/c		1,375.00	
Dec. 31	To P. & L. A/c			2,000	Dec. 31	By Balance c/d	10,500	8,587.50	
		15,000	15,000.00	2,100			15,000	15,000.00	2,100

	रु.
(6) 31st April, 2006 का शेष (Capital)	
$(1,000–450) = 550$ अंश $\left(\frac{14,250 \times 550}{1,000}\right)$	7,837.50
1 April का क्रय 50 अंश	750.00
	8,587.50

NOTES

Problem 2. 6% Rs. 30,000 Debentures of X Ltd. were purchased at Rs. 29,000 in 2005 and was carried down as balance on 1st January, 2006. Interest is payable yearly on 31st December on 1st April 2006, Rs. 5,000 such Debentures were purchased @ 98 plus ½% brokerage.

On 1st December, 2006 Rs. 6,000 6% Debentures of X Ltd. were purchased at 95 ex-interest and on 15th December, 2006 Rs. 4,000 such Debentures were sold for 96 ex-interest, the prices being net after adjustment of brokerage Prepare Investment Account of 6% Debentures of X Ltd.

6% 30,000 रु. के X कम्पनी के ऋणपत्र 2005 में 29,000 रु. में क्रय करके 1 जनवरी 2006 को शेष के रूप में लाए गए थे। ब्याज का वार्षिक भुगतान 31 दिसम्बर को किया जाता है। 1 अप्रैल, 2006 को 5,000 रु. के ऐसे ऋणपत्र 98 की दर से ½% दलाली जोड़कर क्रय किए गए। 4,000 रु. के ऋणपत्र 99 ब्याज सहित की दर से 30 सितम्बर, 2006 को ½% दलाली घटाकर बेचे गए। 1 दिसम्बर, 2006 को X कम्पनी के 6,000 रु. के 6% ऋणपत्र 95 ब्याज-रहित क्रय किए गए तथा 15 दिसम्बर, 2006 को 4,000 रु. के ऋणपत्र 96 ब्याज-रहित की दर से बेचे गए। ये मूल्य दलाली के समायोजन के पश्चात् है। X कम्पनी के 6% ऋणपत्रों का विनियोग खाता बनाइए।

Solution. टिप्पणियां—

	रु
(1) 1-4-2006	
5,000 रु. के ऋणपत्रों का क्रय मूल्य 98 रु. ब्याज सहित की दर से	4,900
(+) दलाली $\left(\frac{5,000\times1}{2\times100}\right)=$	25
	4,925
(–) 3 माह (जनवरी— मार्च) का उपार्जित ब्याज $\left(\frac{5,000\times3\times6}{12\times100}\right)=$	75
पूँजीगत मूल्य	4,850
(2) 30-9-2006	
4,000 रु. के ऋणपत्रों का विक्रय मूल्य 99 रु. ब्याज सहित की दर से	3,960
(–) दलाली $\left(\frac{4,000\times1}{2\times100}\right)=$	20
	3,940
(–) उपार्जित ब्याज 9 माह (जनवरी-सितम्बर) का $\left(\frac{4,000\times9\times6}{12\times100}\right)$	180
पूँजीगत मूल्य	3,760
(3) 1-12-2006	
6,000 रु. के ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य 95 रु. ब्याज रहित की दर से	
ब्याज 11 माह (जनवरी—दिसम्बर) का	5,700
$\left(\frac{6,000\times11\times6}{12\times100}\right)$	330
(4) 15-12-2006	
4,000 रु. के ऋण-पत्रों का विक्रय मूल्य 96 रुपये ब्याज रहित की दर से	3,840
11½ माह का ब्याज $\left(\frac{4,000\times6}{100}\times\frac{11.5}{12}\right)=$	230

(5) ऋण पत्रों के विक्रय पर हानि (यह मानकर कि ऋण-पत्र 1-1-2006 को उपलब्ध 39,000 रु. के ऋण-पत्रों में से बेचे गये है।)

	रु
8,000 रु. के ऋण-पत्रों का क्रय-मूल्य $\left(\frac{29,000 \times 8,000}{30,000}\right)$	7,733.33
(–) विक्रय मूल्य (3,760 + 3,840) =	7,600.00

हानि 133.33

(6) 31-12-2006 को ब्याज $\left(\frac{33,000 \times 6}{100}\right) =$ **Rs.** 1,980

(7) यह मान लिया गया है कि ब्याज 31 दिसम्बर को ही प्राप्त हो जाता है।

6% Debentures of X Ltd. Account (Interest payable on 31st December)

Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest	Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest
2006		Rs.	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
Jan. 1st	To Balance b/d	30,000	29,000	—	Sep. 30th	By Bank A/c	4,000	3,760	180
April 1st	To Bank A./c	5,000	4,800	75	Dec. 15th	By Bank A/c	4,000	3,840	230
Dec. 1st	To Bank A/c	6,000	5,700	330	Dec. 31st	By Bank A/c	—	—	1,980
Dec. 31st	To P. & L. A/c	—	—	1,985	Dec. 31st	By P. & L. A/c	—	133	—
					Dec 31st	By Balance c/d	33,000	31,817	—
		41,000	39,550	2,390			31,000	49,550	2,390

Problem 3. Mr. Ram Manohar held on 1st January, 2006 Rs. 2,40,000 6% M.P. Government Loan which he had purchased for Rs. 2,36,000. His transactions during the year were :

Purchase	**Sale**
1-3-06 : Rs. 40,000 Loan @ Rs. 98 ex-interest	1-7-06 Rs. : 80,000 Loan @ Rs. 100 ex-interest
1-10-06 : Rs. 20,000 Loan @ Rs. 98 cum-interest	1-11-06 : Rs. 80,000 Loan @ Rs. 99 ex-interest

Interest dates are 30th September and 31st March. Prepare the Investments Account in the books of Mr. Ram Manohar presuming that he closes the books on 31st December.

Solution टिप्पणियाँ— (1) 1-1-2006 को गत वर्ष का उपार्जित ब्याज रु.

(1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर) $\left(\frac{2,40,000 \times 6}{100} \times \frac{3}{12}\right) =$ 3,600

(2) 1 मार्च 2006

40,000 रु. के ऋण का क्रय मूल्य 39,200

98 रु. ब्याज रहित की दर से ब्याज (1 अक्टूबर से 1 मार्च)

$\left(\frac{40,000 \times 6}{100} \times \frac{5}{12}\right) =$ 1,000

(3) 31 मार्च, 2006

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{2,80,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right)$ 8,400

(4) 1 जुलाई, 2006

80,000 रु. के ऋण का विक्रय मूल्य 100 रु. की दर से Rs. 80,000

3 माह का ब्याज $\left(\frac{80,000 \times 6}{100} \times \frac{3}{12}\right) =$ 1,200

(5) 30 सितम्बर का ब्याज प्राप्त

$\left(\frac{2,00,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$ 6,000

NOTES

(6) 1 अक्टूबर, 2006

20,000 रु. के ऋण का क्रय मूल्य 98 रु. ब्याज रहित की दर से — 19,600

(7) 1 नवम्बर, 2006

80,000 रु. के ऋण का विक्रय मूल्य 99 रु. ब्याज रहित की दर से — 79,200

ब्याज (1 अक्टूबर से 1 नवम्बर) $\left(\frac{80,000 \times 6}{100} \times \frac{1}{12}\right) =$ — 400

(8) 31 दिसम्बर को उपार्जित ब्याज

(1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर) $\left(\frac{1,40,000 \times 6}{100} \times \frac{3}{12}\right) =$ — 2,100

प्रतिभूतियों के विक्रय पर लाभ हानि (यह मानकर कि बेची गई प्रतिभूतियाँ 1-1-06 को उपलब्ध 2,40,000 रुपए में से थीं)

1 जुलाई, 2006		रु.
80,000 रु. के ऋण का क्रय मूल्य $\left(\frac{2,36,000 \times 80,000}{2,40,000}\right)$	=	78,667.00
विक्रय मूल्य	=	80,000.00
	लाभ =	1,333.00

1 नवम्बर, 2006		रु.
80,000 रुपए के ऋण का क्रय मूल्य (उपर्युक्तानुसार)		78,667
विक्रय-मूल्य		79,200
	लाभ =	533

Problem 4. A purchased on 1st March, 2006 Rs. 24.000 5% Gwalior Debenture Stock at Rs. 90 cum-interest. Interest being payable on 31st March and 30th Sept. each year. Stamp and expenses on purchase amounted to Rs. 20 and brokerage at 1/8% was charged on nominal value, interest for half year was received on due date. On 1st Sept. Rs. 10,000 of the stock was sold at 92 ex-interest less brokerage at 1/8% and expenses of sale Rs. 8. On 30th Sept. Rs. 8,000 stock was purchased at 91 ex-interest plus brokerage at 1/8% and charges Rs. 10. On 1st December Rs. 6,000 Stock was sold at 94 ex-interest less brokerage at 1/8% expenses of sale Rs. 12. Show the Investment A/c for the year ended 31st December, marking all calculations in months.

A ने 1 मार्च, 2006 को 24,000 रुपए का 5% ग्वालियर ऋण-पत्र स्टॉक 90 रु. ब्याज सहित खरीदा ब्याज प्रत्येक वर्ष 31 मार्च तथा 30 सितम्बर को देय होता है। स्टाम्प तथा क्रय के व्यय 20 रु. हुए तथा दलाली 1/8% अंकित मूल्य पर चार्ज की गई। अर्द्ध-वार्षिक ब्याज दातव्य तिथि पर प्राप्त हो गया। 1 सितम्बर को 10,000 रु. का स्टॉक 92 ब्याज रहित 1/8% दलाली तथा विक्रय व्यय 8 रु. घटाकर बेच दिया गया। 30 सितम्बर को 8,000 रु. का स्टॉक 91 रु. ब्याज रहित 1/8% दलाली तथा 10 रु. व्यय जोड़कर क्रय किया गया। 1 दिसम्बर को 6,000 का स्टॉक 94 रु. ब्याज-रहित 1/8% दलाली तथा विक्रय-व्यय 12 रु. घटाकर बेचा गया। 31 दिसम्बर को समाप्त वर्ष का विनियोग खाता बनाइए, गणनायें महिनों में की जाए।

Solution. टिप्पणियां—

(1) 1-3-2006		रु.
24,000 रुपए के ऋण-पत्र स्टॉक का मूल्य $\left(\frac{24,000 \times 90}{100}\right) =$		21,600
(+) स्टाम्प $\left(\frac{24,000 \times 1}{8 \times 100}\right)$	30	
व्यय	20	50
		21,650

NOTES

(-) उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-फरवरी) $\left(\frac{24,000 \times 5}{100} \times \frac{5}{12}\right) =$ | 500

पूँजीगत मूल्य | 21,150

(2) **31 मार्च–** माह का ब्याज $\left(\frac{24,000 \times 5}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$ | 600

(3) **1 सितम्बर–** 10,000 रु. के स्टॉक का 92 रु. ब्याज-रहित की दर से विक्रय मूल्य

$\left(\frac{10,000 \times 92}{100}\right) =$ | 9,200

(–) दलाली $\left(\frac{10,000 \times 1}{8 \times 100}\right) = 12.50$

व्यय 8.00

20.50 | 21

पूँजीगत प्राप्ति | 9,179

(+) ब्याज (अप्रैल-अगस्त) $\left(\frac{10,000 \times 5}{100} \times \frac{5}{12}\right) = 208.33$ | 208

कुल प्राप्त राशि | 9,387

(4) 30 सितम्बर को 6 माह का ब्याज $\left(\frac{14,000 \times 6}{12} \times \frac{5}{100}\right) =$ | 350

(5) 30 सितम्बर– 8,000 रु. के स्टॉक का 91 रु. ब्याज सहित की दर से क्रय7,280

(+) दलाली $\left(\frac{8,000 \times 1}{8 \times 100}\right) = 10$

व्यय 10 | 20

पूँजीगत मूल्य | 7,300

(6) **1 दिसम्बर–** 6,000 रु. के स्टॉक का 94 रु. ब्याज सहित की दर से विक्रय | 5,640

(–) दलाली $\left(\frac{6,000 \times 1}{8 \times 100}\right) = 7.50$

व्यय 12.00

19.50 | 20

(पूँजीगत) | 5,620

(+) उपार्जित व्यय (अक्टूबर-नवम्बर) $\left(\frac{6,000 \times 5}{100} \times \frac{5}{12}\right) =$ | 50

कुल प्राप्त राशि | 5,670

(7) 31 दिसम्बर को उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-दिसम्बर) $\left(\frac{16,000 \times 5}{100} \times \frac{3}{12}\right)$ | 200

(8) 1 सितम्बर को बेचे गए स्टॉक पर लाभ-हानि

विक्रय मूल्य | 9,179

लागत मूल्य $\left(\frac{21,150}{24,000} \times 10,000\right) = 8,812.50$ | 8,813

लाभ | 366

(9) 1 दिसम्बर को विक्रय पर लाभ

विक्रय मूल्य | 5,620

क्रय मूल्य $\left(\frac{21,150}{24,000} \times 6,000\right) =$ | 5,288

लाभ | 332

NOTES

5% Gwalior Debenture Stock A/c (Interest dates 31st March and 30th Sept.)

Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest	Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest
2006		Rs.	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
March 1st	To Bank A/c	24,000	21,150	500	March 31st	By Bank A/c	—	—	600
Sep. 30th	To Bank A/c	8,000	7,300	—	Sep. 1st	By Bank A/c	10,000	9,180	208
Dec. 31st	To P. & L. A/c	—	700	908	Sep. 30th	By Bank A/c	—	—	350
					Dec. 1st	By Bank A/c	6,000	5,620	50
					Dec. 31st	By Balance c/d	16,000	14,350	200
		32,000	29,150	1,408			32,000	29,150	1,408

टिप्पणी– 31-12-2006 को शेष विनियोगों का लागत मूल्य — रु.

8,000 रु. के स्टॉक का मूल्य $\left(\frac{21,150}{24,000} \times 8,000\right) =$ 7,050

8,000 रु. के स्टॉक का मूल्य = 7,300

16,000 रु. के स्टॉक का मूल्य = 14,350

Problem 5. श्री धनवान के विनियोगों का विवरण अग्रानुसार है– 31 दिसम्बर 2005 को 6,00,000 रु. के 5% ऋण-पत्र थे जिन्हें 5,76,000 में क्रय किया गया था। ब्याज 1 अप्रैल तथा 1 अक्टूबर को प्राप्त होता है। 1 जून, 2006 को 3,60,000 रु. के ऋण-पत्र 3,20,000 रु. में क्रय किए गए। 15 अक्टूबर को 1,50,000 रु. के ऋण-पत्र 1,40,000 रु. में बेच दिए गए। क्रय-विक्रय के समस्त व्यवहारों पर 1/2% दलाली लगती है। श्री धनवान की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलकर इन व्यवहारों का लेखा कीजिए।

Solution **टिप्पणियां**–(1) 1-1-06 को गत् वर्ष का उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-दिसम्बर) — रु.

$\left(\frac{6,00,000 \times 5}{100} \times \frac{3}{12}\right) =$ 7,500

(2) 1-4-06 को प्राप्त ब्याज $\left(\frac{6,00,000 \times 5}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$ 15,000

(3) 1-6-06 3,60,000 रुपए के ऋण-पत्रों का ब्याज सहित क्रय — 3,20,000

(+) दलाली $\left(\frac{3,60,000 \times 1}{2 \times 100}\right) =$ 1,800

कुल भुगतान — 3,21,800

(–) उपार्जित ब्याज (अप्रैल-मई) $\left(\frac{3,60,000 \times 5}{100} \times \frac{2}{12}\right) =$ 3,000

पूँजीगत — 3,18,800

(4) 1 अक्टूबर– प्राप्त ब्याज $\left(\frac{9,60,000 \times 5}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$ 24,000

(5) 15 अक्टूबर– 1,50,000 रु. के ऋण-पत्रों का ब्याज सहित विक्रय — 1,40,000

(–) दलाली $\left(\frac{1,50,000 \times 1}{2 \times 100}\right) =$ 750

प्राप्त राशि — 1,39,250

(–) उपार्जित ब्याज (15 दिनों का) $\left(\frac{1,50,000\times15}{365}\times\frac{5}{100}\right)=$ 308

पूँजीगत 1,38,942

(6) विक्रय पर लाभ/हानि (रु.)

लागत मूल्य $\left(\frac{5,76,000}{6,00,000}\times1,50,000\right)=$ 1,44,000

विक्रय मूल्य 1,38,942

हानि 5,058

(7) 31 दिसम्बर को उपार्जित ब्याज (अक्टूबर-दिसम्बर) रु.

$\left(\frac{8,10,000\times5}{100}\times\frac{3}{12}\right)=$ 10,125

NOTES

5% Debenture A/c (Interest Payable on 1st April– 1st October)

Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital	Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital
2006		Rs.	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
Jan. 1st	To Balance b/d	6,00,000	7,500	5,76,000	April 1st	By Bank A/c	—	15,000	—
June 1st	To Bank A/c	3,60,000	3,000	3,18,800	Oct. 1st	By Bank A/c	—	24,000	—
Dec. 31st	To P. & L. A/c	—	38,933	—	Oct. 15th	By Bank A/c	1,50,000	308	1,38,942
						By P. & L. A/c	—	—	5,058
					Dec. 31st	By Balance c/d	8,10,000	10,125	7,50,800
		9,60,000	49,433	8,94,800			9,60,000	49,433	800

Problem 6. 1 अप्रैल, 2005 को एक्स एण्ड कम्पनी के पास 10,000 रु. के अंकित मूल्य के कॉमर्स लि. के 9% ऋण-पत्र थे। जिनकी लागत उसके लिए 8,000 रु. थी। इस तिथि को इसका बाजार मूल्य 9,000 रु. था। ब्याज प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को देय होता है। 1 दिसम्बर 2005 को 6,000 रु. अंकित मूल्य के ऋण-पत्र 5,000 रु. ब्याज रहित मूल्य पर क्रय किए गए। 31 दिसम्बर 2005 को 2,000 रु. अंकित मूल्य के ऋण-पत्र 1,900 रु. ब्याज सहित में बेचे गए। 1 जनवरी 2006 को 6,000 रु. के अंकित मूल्य के ऋण-पत्र 5,800 रु. में क्रय किए गए। 31 मार्च 2006 को ऋण-पत्रों का बाजार मूल्य 90 रु. था।

एक्स एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में विनियोगों के विक्रय पर लाभ हानि दिखाते हुए विनियोग खाता बनाइए। स्टॉक का मूल्यांकन प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य दोनों में से जो भी कम हो, मूल्य पर किया जाता है।

On 1st April 2005, X & Co. held 9% Debentures in Commerce Ltd. of the face value of Rs. 10,000 at a Cost of Rs. 8,000 Market value on that date was Rs. 9,000 Interest is payable on 31st December every year. On 1st December, 2005 debentures of nominal value of Rs. 6,000 were purchased for Rs. 5,000 ex-interest and on 31 December 2005 debentures of nominal value of 2,000 were sold cum-interest for Rs. 1,900. On 1st January, 2006 debentures of nominal value of Rs. 6,000 were bought at Rs. 5,800. The market value of the debentures on 31st March, 2006 was at Rs. 90.

Make out Investment A/c in the books of XY and Co. showing profit or loss on sale of investment Stock on 31st March each year are valued at lower of cost and market price.

Solution. टिप्पणियाँ– (1) लेखा वर्ष अप्रैल-मार्च

(2) गत वर्ष उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) $\left(\frac{10,000\times9}{100}\times\frac{3}{12}\right)=$ 225 रु.

NOTES

(3) 1 दिसम्बर 2005— 6,000 रु. ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य ब्याज रहित दर से पूँजीगत — रु. 5,000

(+) ब्याज (जनवरी-नवम्बर) $\left(\frac{6,000 \times 9}{100} \times \frac{11}{12}\right)$ = आयगत — 495

कुल भुगतान — 5,495

(4) 31 दिसम्बर 2005 को 2,000 रु. के ऋण-पत्रों का ब्याज सहित विक्रय मूल्य 1,900

(−) उपार्जित ब्याज $\left(\frac{2,000 \times 9}{100}\right)$ = — 180

पूँजीगत — 1,720

(5) 31 दिसम्बर को प्राप्त ब्याज $\left(\frac{14,000 \times 9}{100}\right)$ = — 1,260

(6) 1 जनवरी 2006 को 6,000 रु. के ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य = — 5,800

(7) 31 मार्च को उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) $\left(\frac{20,000 \times 9}{100} \times \frac{3}{12}\right)$ = — 450 रु.

9% Debentures in Commerce Ltd. A/c (Interest payable on 31st December)

Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital	Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital
2005		Rs.	Rs.	Rs.	2005		Rs.	Rs.	Rs.
April 1st	To Balance b/d	10,000	225	8,000	Dec. 31	By Bank A/c	2,000	180	1,720
Dec. 1st	To Bank A/c	6,000	495	5,000	Dec.	By Bank A/c	—	1,260	—
Dec 31	To P. & L. A/c	--	—	120	31				
2006									
Jan. 1	To Bank	6,000		5,800	Dec	By Balance	20,000	450	17,200
March 31	To P. & L. A/c	—	1,170		31	c/d			
		22,000	1,890	18,920			22,000	1,890	18,920

टिप्पणी— 2,000 रु. के ऋण-पत्रों के विक्रय पर लाभ-हानि

लागत मूल्य $\left(\frac{8,000}{10,000} \times 2,000\right)$ = — 1,600 रु

विक्रय मूल्य — 1,720 रु

लाभ — 120 रु

Problem 7. विनियोग बैंक लि. ने 1 जनवरी 2004 को 10,000 रु. का 3% सरकारी स्टॉक 40 रु. ब्याज रहित की दर से क्रय किया तथा 100 रु. दलाली सम्मिलित करते हुए 4,100 रु. का चैक दिया। ब्याज 31 मार्च, 30 जून, 30 सितम्बर तथा 31 दिसम्बर को प्राप्त होता है। सम्पूर्ण स्टॉक 31 मई 2006 को 43 रु. ब्याज-सहित की दर से बेच दिया गया तथा दलाली घटाकर 4,100 रु. प्राप्त हुए। वित्तीय वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है। आपको तीन वर्षों का विनियोग खाता तथा ब्याज खाता बनाना है।

Investment Bank Limited bought Rs. 10,000 3% Government stock at Rs. 40 ex-interest on 1st January, 2004 and paid a cheque for Rs. 4,100 including Rs. 100 for Brokerage. The interest is recieved on 31st March, 30th June, 30th September and 31st December.

The entire stock is sold on 31st May, 2006 at Re. 43, cum-interest and a sum of Rs. 4,190 was received after deducting brokerage.

The financial year of the firm ends on 31st December.

You are required to prepare the investment A/c and interest A/c for the three years.

NOTES

Solution. टिप्पणियाँ—2004 (1) 1-1-04 10,000 रु. के स्टॉक का

	रु.
40 रु. ब्याज रहित की दर से मूल्य (+) दलाली	4,000
	100
पूँजीगत मूल्य	4,100

(2) 31 मार्च, 30 जून, 30 सितम्बर तथा 31 दिसम्बर को प्राप्त ब्याज

$$\left(\frac{10,000\times 3}{100}\times\frac{3}{12}\right) = 75 \text{ रु.}$$

(3) 2005 ब्याज प्राप्त = उपर्युक्तानुसार प्रत्येक तिमाही 75 रु.

(4) 2006 ब्याज 31 मार्च = 75 रु.

	रु.
(5) 31 मई 2006 10,000 रु. के स्टॉक का 43 रु. ब्याज सहित की दर से विक्रय-मूल्य	4,300
(–) दलाली	110
प्राप्त रोकड़	4,190
(–) उपार्जित ब्याज (अप्रैल-मई) $\left(\frac{10,000\times 3}{100}\times\frac{2}{12}\right)$ =	50
पूँजीगत मूल्य	4,140

(6) विक्रय पर लाभ-हानि रु.

विक्रय मूल्य	4,140
क्रय मूल्य	4,100
लाभ	40

Govt. Stock A/c

(Interest payable on 31st March, 30th June, 30th Sept and 31st Dec.)

		Rs.			Rs.
1-1-04	To Bank A/c	4,100	31-12-04	By Balance c/d	4,100
		4,100			4,100
1-1-05	To Balance b/d	4,100	31-12-05	By Balance c/d	4,100
		4,100			4,100
1-1-06	To Balance b/d	4,100	31-5-06	By Bank A/c	4,140
	To Profit & Loss A/c	40			
		4,140			4,140

Interest A/c

		Rs.			Rs.
31-12-04	To Profit & Loss A/c	300	31-3-04	By Bank A/c	75
			30-6-04	By Bank A/c	75
			30-9-04	By Bank A/c	75
			31-12-04	By Bank A/c	75
		300			300
31-12-05	To Profit & Loss A/c	300	31-3-05	By Bank A/c	75
			30-6-05	By Bank A/c	75
			30-9-05	By Bank A/c	75
			31-12-05	By Bank A/c	75
		300			300
31-12-06	To Profit & Loss A/c	125	30-3-06	By Bank A/c	75
			31-5-06	By Bank A/c	50
		125			125

Problem 8. कलकत्ता इन्वेस्टमेण्टस के पास 1 अप्रैल, 2005 को आगरा लिमिटेड के 100 रु. वाले 400, 12% ऋण-पत्र है जिनकी लागत 50,000 रु. है। ब्याज का भुगतान प्रतिवर्ष 30 जून तथा 31 दिसम्बर को किया जाता है। 1 जून, 2005 को 200 ऋण-पत्र ब्याज-सहित 21,400 रु. के क्रय किए गए। 1 नवम्बर, 2005 को 300 ऋण-पत्र ब्याज-रहित 28,650 रु. में बेचे गए। 30 नवम्बर, 2005 को 200 ऋण-पत्र ब्याज-रहित 19,200 रु. में क्रय किए गए। 31 दिसम्बर 2005 को 300 ऋण-पत्र ब्याज-सहित 32,250 रु. में बेचे गए। 31 मार्च, 2006 को अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन लागत मूल्य (प्रथम आगमन प्रथम निर्गमन के अनुसार) या बाजार मूल्य में से जो भी कम हो, पर करते हुए विनियोग खाता बनाइए। 31 मार्च, 2006 को ऋण-पत्रों का बाजार मूल्य सम-मूल्य (at par) था।

Calcutta Investment hold 400, 12 percent Debentures of Rs. 100 each in Agra Ltd. as on 1st April, 2005 at a cost of Rs. 50,000. Interest is payable on 30th June and 31st December each year. On 1st June, 2005, 200 Debentures are purchased cum-interest at Rs. 21,400. On 1st November, 2005, 300 debenture are sold ex-interest at Rs. 28,650. On 30th November, 2005, 200 debentures are purchased ex-interest at Rs. 19,200. On 31st December, 2005, 300 debentures are sold cum-interest for Rs. 32.250

Prepare investments account valuing closing stocks as on 31st March, 2006 at cost (applying FIFO method) or market price, whichever is lower. The debentures were quoted at par on 31st March, 2006)

Solution. **टिप्पणियां–** (1) 1 अप्रैल, 1987– उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) रु.

$$\left(\frac{40,000\times12}{100}\times\frac{3}{12}\right)=\quad 1,200$$

(2) 1 जून, 2005

200 ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य		21,400
(–) उपार्जित ब्याज (जनवरी-मई) $\left(\frac{20,000\times12}{100}\times\frac{5}{12}\right)=$		1,000
पूँजीगत मूल्य		20,400

(3) 30 जून, 2005

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{60,000\times12}{100}\times\frac{6}{12}\right)=$		3,600

(4) 1 नवम्बर, 2005

300 ऋण-पत्रों का विक्रय (ब्याज-रहित)	(पूंजीगत)	28,650
(+) ब्याज (जुलाई-अक्टूबर) (आगम) $\left(\frac{30,000\times12}{100}\times\frac{4}{12}\right)=$		1,200
कुल प्राप्त राशि		29,850
विक्रय मूल्य =		28,650
लागत $\left(\frac{50,000}{40,000}\times30,000\right)=$		37,500
हानि		8,850

(5) 30 नवम्बर, 2005

200 ऋण-पत्रों का ब्याज-रहित क्रय-मूल्य	(पूंजीगत)	19,200
(+) ब्याज (जुलाई-नवम्बर) $\left(\frac{20,000\times12}{100}\times\frac{5}{12}\right)=$ (आगम)		1,000
कुल भुगतान		20,000

(6) 31 दिसम्बर, 2005

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{20,000\times12}{100}\times\frac{6}{12}\right)=$		1,200

(7) 31 दिसम्बर, 2005

300 ऋण-पत्रों का विक्रय मूल्य (ब्याज सहित)		32,250
(–) उपार्जित ब्याज $\left(\frac{30,000\times12}{100}\times\frac{6}{12}\right)$ =		1,800
पूँजीगत मूल्य		30,450
विक्रय मूल्य		30,450
क्रय मूल्य $\left(\frac{50,000}{40,000}\times10,000\right)$	12,500	
20,000 रु. के ऋण-पत्र =	20,400	
	32,900	
हानि	2,450	
(8) उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) $\left(\frac{20,000\times12}{100}\times\frac{3}{12}\right)$ =		600

12% Agra Limited Debentres Account (Interest Payable on 30th–31st December)

Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest	Date	Particulars	Nominal	Capital	Interest
2005		Rs.	Rs.	Rs.	2005		Rs.	Rs.	Rs.
April 1st	To Balance b/d	40,000	50,000	1,200	June 30th	By Bank A/c	—	—	3,600
June 1st	To Bank A/c	20,000	20,400	1,000	Nov. 1st	By Bank A/c	30,000	28,650	1,200
Nov. 30th	To Bank A/c	20,000	19,200	1,000	Nov. 1st	By P. & L. A/c	—	8,850	-
2006 March 31st	To P. & L. A/c	—	—	5,200	Dec. 31st	By Bank A/c	—	—	1,200
					Dec. 31st	By Bank A/c	30,000	30,450	1,800
					Dec. 31st	By P. & L A/c	—	2,450	—
					2006 March 31st	By Balance c/d	20,000	19,200	600
		80,000	89,600	8,400			80,000	86,000	8,400

Problem 9. During the year ended 31st December, 2005 Bear-Bull Investments Limited purchased and sold investments as per the following details :–

31st March, 2005 Purchased 5,000 5% Debentures of Rs. 100 each of Bear Ltd. at Rs. 97, Brokerage and stamp duty amounting to Rs. 12,800. Interest is payable on 1st July and 1st January

1st May, 2005 Purchased 5,000 6% comulative preference shares of Rs. 100 each in Bull Ltd. at Rs. 95, brokerage and stamp duty being Rs. 12,100. Dividends payable on 30th June and 31st December

1st July, 2005 Sold Rs. 3,00,000 debentures of Bear Ltd. at Rs. 99 less brokerage etc. Rs. 1,800

1st October, 2005 Purchased a further 2,000 6% cumulative preference shares of Rs. 100 each of Bull Limited at Rs. 90, brokerage and stamp duty being Rs. 4,300

Write up the ledger accounts of these two investments for the year 2005

बीयर– बुल इन्वेस्टमेंट लि. ने 31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त वर्ष के दौरान निम्नलिखित विवरण के अनुसार विनियोग का क्रय-विक्रय किया–

31 मार्च, 2005– बीयर लि. के 5% 100 रु. वाले 5,000 ऋण-पत्र 97 रु. की दर से क्रय किए दलाली एवं स्टाम्प ड्यूटी 12,800 रु. ब्याज 1 जुलाई तथा 1 जनवरी को देय।

1 मई, 2005– बुल लि. के 5,000 6% संचयी अधिमान्य अंश 95 रु. की दर से क्रय किए, दलाली एवं स्टाम्प ड्यूटी 12,100 रु., लाभाँश 30 जून तथा 31 दिसम्बर को देय।

1 जुलाई, 2005– 3,00,000 रु. के बीयर लि. के ऋण-पत्र 99 रु. की दर से 1,800 रु. दलाली घटा कर बेचे।

1 अक्टूबर, 2005– बुल लि. के 2,000 6% संचयी अधिमान्य अंश 100 रु. वाले 90 रु. की दर से क्रय किए, दलाली तथा स्टाम्प ड्यूटी 4,300 रु.।

2005 वर्ष के लिए इन दो विनियोगों के खाते बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ– (क) बीयर लि. के ऋण-पत्र

(1) 31 मार्च, 2005	रु.
5,000 ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य 97 रु. ब्याज सहित की दर से	4,85,000
(+) दलाली एवं स्टाम्प	12,800
	4,97,800
(–) उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) $\left(\frac{5,00,000\times5}{100}\times\frac{3}{12}\right)=$	6,250
पूँजीगत मूल्य	4,91,550
(2) **1 जुलाई**– 6 माह का ब्याज $\left(\frac{5,00,000\times5}{100}\times\frac{6}{12}\right)=$	12,500
(3) **1 जुलाई**– 3,00,000 रु. के ऋण-पत्रों का विक्रय-मूल्य 99 रु. की दर से	2,97,000
(–) दलाली	1,800
पूँजीगत मूल्य	2,95,200
विक्रय-मूल्य =	2,95,200
लागत मूल्य $\left(\frac{4,91,550}{5,00,000}\times3,00,000\right)=$	2,94,930
विक्रय पर लाभ	270
(4) 31 दिसम्बर– उपार्जित ब्याज (जुलाई-दिसम्बर)	
$\left(\frac{2,00,000\times5}{100}\times\frac{6}{12}\right)=$	5,000

(ख) बुल लिमिटेड

(1) **1 मई**– 5,000 अंशों का मूल्य 95 रु. लाभ सहित की दर से	4,75,000
(+) दलाली एवं स्टाम्प	12,100
	4,87,100
(–) उपार्जित लाभाँश (जनवरी-अप्रैल) $\left(\frac{5,00,000\times6}{100}\times\frac{4}{12}\right)=$	10,000
पूँजीगत मूल्य	4,77,100
(2) **30 जून**– लाभाँश प्राप्त $\left(\frac{5,00,000\times6}{100}\times\frac{6}{12}\right)=$	15,000
(3) **1 अक्टूबर**– 2,000 अंशों का 90 रु. की दर से क्रय-मूल्य	1,80,000
(+) दलाली एवं स्टाम्प	4,300
	1,84,300
(–) उपार्जित लाभाँश (जुलाई-सितम्बर) $\left(\frac{2,00,000\times6}{100}\times\frac{3}{12}\right)$	3,000

पूँजीगत मूल्य	1,81,300
(4) 31 दिसम्बर– प्राप्त लाभाँश $\left(\frac{7,00,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$	21,000

NOTES

5% Rs. 100 Debentures of Bear Limited

(Interest payable on January 1st, and July 1st)

Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital	Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital
2005		Rs.	Rs.	Rs.	2005		Rs.	Rs.	Rs.
March 31st	To Bank A/c	5,00,000	6,250	4,91,550	July 1st	By Bank A/c	—	12,500	—
Dec. 31st	To P. & L A/c	—	11,250	270	Dec. 31st	By Bank A/c	3,00,000	—	2,95,200
					Dec. 31st	By Balance c/d	2,00,000	5,000	1,96,620
		5,00,000	17,500	4,91,820			5,00,000	17,500	4,91,820

6% Rs. 100 Cumulative Preference Shares of Bull Limited

(Dividend payable on 30th June and 31st December)

Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital	Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital
2005		Rs.	Rs.	Rs.	2005		Rs.	Rs.	Rs.
May 1st	To Bank A/c	5,00,000	10,000	4,77,100	June 30th	By Bank A/c	—	15,000	—
Oct. 31st	To Bank A/c	2,00,000	3,000	1,81,300	Dec. 31st	By Bank A/c	—	21,000	—
Dec. 31st	To P. & L. A/c	—	23,000	—		By Balance c/d	7,00,000	—	6,58,400
		7,00,000	36,000	6,58,400			7,00,000	36,000	6,58,400

Problem 10. राजस्थान फर्नीचर ने 29 फरवरी, 2006 को 40,000 रु. के 6% रेलवे बाण्डस 97.50 रु. ब्याज सहित की दर से क्रय किए तथा 50 पैसे प्रतिशत की दलाली व 10.25 रु. अन्य व्यय दिए। ब्याज 30 अप्रैल व 31 अक्टूबर को दिया जाता है। 31 मार्च को 15,000 रु. के विनियोग 96 रु. लाभ रहित की दर से तथा दो माह पश्चात् इसके आधे विनियोग 99 रु. ब्याज सहित की दर से बेचे गये। 30 नवम्बर को 5,000 रु. के बॉण्डस 99.50 रु. ब्याज सहित दर पर बेच दिए गए। विनियोग खाता तथा ब्याज खाता बनाइए। रोजनामचा प्रविष्टियाँ भी दीजिए तथा इस प्रश्न को स्तम्भीय पद्धति में भी हल कीजिए।

Solution. टिप्पणियां– (ब्याज-रहित व्यवहार भारतीय सन्दर्भ में)

(1) 29-2-2006		रु
40,000 रु. के 6% बॉण्डस का क्रय मूल्य 97.50 रु. ब्याज-सहित की दर से		39,000.00
(+) दलाली $\left(\frac{40,000 \times 50}{100 \times 100}\right) =$ 200.00		
अन्य व्यय	10.25	210.25
		39,210.25
(–) उपार्जित ब्याज (नवम्बर-फरवरी) $\left(\frac{40,000 \times 6}{100} \times \frac{4}{12}\right) =$		800.00
पूँजीगत मूल्य		38,410.25
(2) 31-3-2006		
15,000 रु. के बॉण्डस का 96 रु. लाभ (पूँजीगत) की दर से विक्रय मूल्य		14,400.00

NOTES

(+) उपार्जित ब्याज (नवम्बर-मार्च) (आगम) $\left(\frac{40,000 \times 6}{100} \times \frac{5}{12}\right) =$	1,000.00
कुल प्राप्त रोकड़	15,400.00

(3) 30-4-2006

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{25,000 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$	750

(4) 31-5-2006

7,500 रु. के बॉण्डस का 99 रु. व्या. स. की दर से विक्रय-मूल्य	7,425.00
(–) उपार्जित ब्याज (मई) $\left(\frac{7,500 \times 6}{100} \times \frac{1}{12}\right) =$	37.50
पूँजीगत मूल्य	7,387.50

(5) 31-10-2006

प्राप्त ब्याज $\left(\frac{17,500 \times 6}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$	525

(6) 30-11-2006

5,000 रु. के बॉण्डस का 99.50 रु. व्या. स.दर से विक्रय-मूल्य	4,975.00
(–) उपार्जित ब्याज (नवम्बर) $\left(\frac{5,000 \times 6}{100} \times \frac{1}{12}\right) =$	25.00
पूँजीगत मूल्य	4,950.00

(7) विक्रय पर लाभ/हानि

31-3-06 विक्रय मूल्य		14,400.00
क्रय मूल्य $\left(\frac{38,410.25}{40,000} \times 15,000\right) =$		14,403.85
	हानि	3.85
31-5-06 विक्रय मूल्य		7,387.50
क्रय मूल्य $\left(\frac{38,410.25}{40,000} \times 7500\right) =$		7,201.92
	लाभ	185.58
30-11-2006 विक्रय मूल्य		4,950.00
क्रय मूल्य $\left(\frac{38,410.25}{40,000} \times 5,000\right) =$		4,801.28
	लाभ	148.72

(8) उपार्जित ब्याज (नवम्बर-दिसम्बर)

$\left(\frac{12,500 \times 6}{100} \times \frac{2}{12}\right)$	125.00

(9) शेष विनियोगों का मूल्य

$\left(\frac{38,410.25}{40,000} \times 12,500\right) =$	12,003.20

Journal Entries

2006			Rs.	Rs.
Feb. 29	6% Rly. Bonds A/c	Dr.	38,410.25	
	Interest A/c	Dr.	800.00	
	To Bank A/c			39,210.25
	(Bought Rs. 40,000 Bonds @ 97.50 c.d. paid brokerage 50 paise percent and other expenses Rs. 10.25)			

March 31	Bank A/c ....Dr.		15,400.00	
	To 6% Rly. Bond A/c			14,400.00
	To Interest A/c			1,000.00
	(Sold Rs. 15,000 Bonds @ Rs. 96 x.d.)			
March 31	Profit & Loss A/c ....Dr.		3.85	
	To 6% Rly. Bonds A/c			3.85
	(Loss on sale of Bonds)			
April 31	Bank A/c ....Dr.		750.00	
	To Interest A/c			750.00
	(Half-yearly interest received)			
May 31	Bank A/c ....Dr.		7,425.00	
	To 6% Rly. Bonds A/c			7,387.50
	To Interest A/c			37.50
	(Sold Rs. 7,500 Bonds @ Rs. 99 c.d.)			
May 31	6% Rly. Bonds A/c ....Dr.		185.58	
	To Profit & Loss A/c			185.58
	(Profit on sale of Bonds)			
Oct. 31	Bank A/c ....Dr.		525.00	
	To Interest A/c			525.00
	(Half-yearly interest received)			
Nov. 30	Bank A/c ....Dr.		4,975.00	
	To 6% Rly. Bonds A/c			4,950.00
	To Interest A/c			25.00
	(Sold Rs. 5,000 Bonds @ Rs. 99.50 c.d.)			
Nov. 31	6% Rly. Bonds A/c ....Dr.		148.72	
	To Profit & Loss A/c			148.72
	(Profit on sale of Bonds)			
Dec. 31	Accured Interest A/c ....Dr.		125.00	
	To Interest A/c			125.00
	(Accrued Interest for 2 months)			
Dec. 31	Interest A/c ....Dr.		1,662.50	
	To Profit & Loss A/c			1,662.50
	(Interest income credited to Profit & Loss A/c)			

NOTES

6% Railway Bonds A/c

(Interest payable on 30th April and 31st October)

2006		Rs.	2006		Rs.
Feb. 29	To Bank A/c	38,410.25	March 31	By Bank A/c	14,400.00
May 31	To Profit & Loss A/c	185.58	May 31	By Bank A/c	7,387.50
Nov. 31	To Profit & Loss A/c	148.72	May 31	By P. & L. A/c	3.85
			Nov. 30	By Bank A/c	4,950.00
			Dec. 31	By Balance c/d	12,003.20
		38,744.55			38,744.50

NOTES

Interest A/c

2006		Rs.	2006		Rs.
Feb. 29	By Bank A/c	800.00	March 31	By Bank A/c	1,000.00
Dec. 31	To P. & L. A/c	1,662.50	April 30	By Bank A/c	750.00
			May 31	By Bank A/c	37.50
			Oct. 31	By Bank A/c	525.00
			Nov. 30	By Bank A/c	25.00
			Dec. 31	By Accrued Interest A/c	125.00
		2,462.50			2,462.50

Accrued Interest A/c

2006		Rs.	2006		Rs.
Dec. 31	To Interest A/c	125.00	Dec. 31	By Balance b/d	125.00
		125.00			125.00

6% Railway Bonds Accounts
(Interest payable on 30th April & 31st October)

Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital	Date	Particulars	Nominal	Interest	Capital
2006		Rs	Rs.	Rs.	2006		Rs.	Rs.	Rs.
Feb. 29	To Bank A/c	40,000	800.00	38,410.25	March 31	By Bank A/c	15,000	1,000.00	14,400.00
May 31	To P. & L. A/c	—	—	185.50	March 31	By P. & L. A/c	—	—	3.85
Nov. 30	To P. & L. A/c	—	—	148.72	April 30	By Bank A/c	—	750.00	—
Dec. 31	To. P. & L. A/c	—	1,662.50	—	May 31	By Bank A/c	7,500	37.50	7,387.50
					Oct. 31	By Bank A/c	—	525.00	—
					Nov. 30	By Bank A/c	5,000	25.00	4,950.00
					Dec. 31	By Balance c/d	12,500	125.00	12,003.20
		40,000	2,462.50	38,744.50			40,000	2,462.50	38,744.55

Problem 11. वर्ष, 2006 में श्री साधन सम्पन्न विनियोगों के क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवहार निम्नानुसार थे:

(1) 31 मार्च को 10,000 रु. के 3% देश सेवा बॉण्ड 95 रु. ब्याज सहित की दर से क्रय किए।

(2) 1 जुलाई को 5,000 रु. के बॉण्ड 96 रु. की दर से तथा 1 अक्टूबर को 2,500 रु. के बॉण्ड 96.50 रु. ब्याज की दर से बेचे। ब्याज का भुगतान 30 जून तथा 31 दिसम्बर को होना है। 31 दिसम्बर को जब पुस्तकें बंद होती है बॉण्ड्स का बाजार मूल्य 95 रु. ब्याज सहित था। आवश्यक खाते बनाकर इन व्यवहारों का लेखा कीजिए

Solution. टिप्पणियां–

	रु.
(1) 31 मार्च– 10,000 रु. के 3% बॉण्ड 95 रु. ब्याज सहित की दर से क्रय-मूल्य	9,500
(–) उपार्जित ब्याज (जनवरी-मार्च) $\left(\frac{10,000 \times 3}{100} \times \frac{3}{12}\right)$	75
पूंजीगत मूल्य	9,425
(2) 30 जून– ब्याज $\left(\frac{10,000 \times 3}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$	150
(3) 1 जुलाई– 5,000 रु. के बॉण्डों का 96 रु. की दर से विक्रय मूल्य	4,800
(4) 1 अक्टूबर– 2,500 रु. के बॉण्डों का 96.50 रु. की दर से विक्रय मूल्य	2,412.50
(–) उपार्जित ब्याज (जुलाई-सितम्बर) $\left(\frac{2,500 \times 3}{100} \times \frac{3}{12}\right)$	18.75

पूँजीगत मूल्य	2,393.75
(5) 31 दिसम्बर—ब्याज $\left(\frac{2,500 \times 3}{100} \times \frac{6}{12}\right) =$	37.50
(6) 31 दिसम्बर को बाजार मूल्य $\left(\frac{2,500 \times 95}{100}\right) =$	2,375.00
पुस्तक मूल्य $\left(\frac{9,425}{10,000} \times 2,500\right) =$	2,365.25
(7) विक्रय हर लाभ/हानि	
1 जुलाई : विक्रय मूल्य	4,800.00
क्रय मूल्य $\left(\frac{9,425}{10,000} \times 5,000\right) =$	4,712.50
लाभ	87.50
1 अक्टूबर : विक्रय मूल्य	2,393.75
क्रय मूल्य $\left(\frac{9,425}{10,000} \times 5,000\right) =$	2,356.25
लाभ	37.50

NOTES

3% Desh Seva Bonds A/c

(Interest payable on 30th June, 31st December)

2006		Rs.	2006		Rs.
March 31	To Bank A/c	9,425.00	July 1	By Bank A/c	4,800.00
July 1	To P. & L. A/c	87.50	Oct. 1	By Bank A/c	2,393.75
Oct. 1	To P. & L. A/c	37.50	Dec. 31	By Balance c/d	2,356.25
		9,550.00			9,550.00

Interest A/c

2006		Rs.	2006		Rs.
March 31	To Bank A/c	75.00	June 30	By Bank A/c	150.00
Dec 31	To P. & L. A/c	131.25	Oct. 1	By Bank A/c	18.75
			Dec. 31	By Bank A/c	37.50
		206.25			206.25

Problem 12. पीयूष ने सफलता लि. के 500 ईक्विटी अंश 62,500 रु. में दलाली तथा स्टाम्प ड्यूटी सम्मिलित करते हुए क्रय किए। कुछ वर्ष बाद कम्पनी ने अपने लाभों का पूँजीकरण करने (to Capitalise its profits) तथा इस हेतु प्रत्येक ईक्विटी अंशधारक को एक के बदले एक बोनस अंश निर्गमित करने का निश्चय किया। पूँजीकरण से पूर्व कम्पनी के अंशों का बाजार मूल्य 175 रु. प्रति अंश था। पूँजीकरण के पश्चात् अंशों का मूल्य 92½ रु. प्रति अंश बताया गया। पीयूष ने बोनस अंशों को बेच दिया तथा 90 रु. प्रति अंश प्राप्त किए। पीयूष की पुस्तकों में विनियोग खाता बनाइए।

Solution. टिप्पणियां—

	रु.
(1) कुल 1,00,000 अंशों की लागत	62,500
50,000 अंशों की लागत $\frac{50,000 \times 62,500}{1,00,000} =$	31,250
लाभ (45,000 − 31,250) =	13,750

NOTES

Shares in Success Ltd. A/c

	Nominal Rs.	Capital Rs.		Nominal Rs.	Capital Rs.
To Bank A/c	50,000	62,500	By Bank A/c		
To Banks Shares	50,000	—	(50,000 × 90)	50,000	45,000
To Profit & Loss A/c	—	13,750	By Balance c/d	50,000	31,250
	1,00,000	76,250		1,00,000	76,250

बोध प्रश्न

1. विनियोग लेखे क्या है?

2. ब्याज रहित और ब्याज सहित व्यवहारों में क्या अन्तर है?

3. स्तम्भीय आधार पर विनियोग खाता कैसे बनायेंगे?

4. उपार्जित आय की गणना आप कैसे करेंगे?

7.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theorytical Questions)

1. विनियोग लेखे क्या है? विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा किस प्रकार किया जाता है?
2. ब्याज सहित तथा ब्याज रहित व्यवहारों में क्या अन्तर है? दोनों स्थितियों में पूंजी एवं आगम के मध्य विनिधान कैसे किया जाता है?
3. ब्याज सहित व्यवहारों का लेखांकन कैसे किया जाता है?
4. क्रेता की पुस्तकों में क्या प्रविष्टियाँ की जाती है यदि (क) प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय ब्याज-सहित आधार पर किया जाता है, (ख) प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय ब्याज-रहित आधार पर किया जाता है।

5. लाभांश सहित आधार पर अंशों के क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा क्रेता तथा विक्रेता की पुस्तकों में कैसे किया जाता है?

6. अग्रलिखित की गणना कैसे की जाती है (क) विनियोगों के विक्रय पर लाभ-हानि, (ख) उपार्जित ब्याज, (ग) विनियोगों का बाजार मूल्य।

7. स्तम्भीय विनियोजन खाता क्या है? स्तम्भीय आधार पर विनियोग खाता कैसे बनाया जाता है?

8. विनियोगों के क्रय-विक्रय तथा ब्याज सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा कैसे किया जाता है यदि विनियोग खाता स्तम्भीय आधार पर बनाया जाता है।

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

1. गुप्ता कम्पनी लि. ने 15 अगस्त, 2005 को विद्युत लि. के 100 ईक्विटी अंश 100 रु. वाले 150 रु. की दर से क्रय किए। इन अंशों पर 8 रु. प्रति अंश लाभाँश 22 अगस्त 1987 को दिया गया। इनमें से 50 अंश 148 रु. की दर से 15 अक्टूबर, 2005 को बेच दिए गए। कम्पनी अपने खाते 31 दिसम्बर को बन्द करती है। आवश्यक खाते बनाकर इन व्यवहारों का लेखा कीजिए।

 [**Ans.** विनियोग खाता शेष 7,100 रु., विक्रय पर लाभ 300 रु.]

2. 31 मार्च, 2006 को विश्वसेवा न्यास ने 10,000 रु. 3% सरकारी ऋण-पत्र 95 रु. ब्याज सहित की दर से क्रय किये। ब्याज 30 जून और 31 दिसम्बर को देय है। 1 जुलाई को 5,000 रु. ऋण-पत्र 96 रु. की दर से 1 अक्टूबर को 25 ऋणपत्र 96.50 रु. ब्याज सहित की दर से बेचे। 31 दिसम्बर 2006 को इन ऋण-पत्रों का बाजारू मूल्य 95 रु. ब्याज सहित है। विनियोग खाता बनाइए।

 [**Ans.** विनियोग खाते का शेष 2,356.25 रु. लाभ-हानि खाते को क्रेडिट ब्याज 131.25 रु.]

3. एक फर्म जो अपने खाते 31 दिसम्बर को बन्द करती है, 1 जनवरी 2006 को 100 रु. वाले 100, 3% जनता बॉण्ड रखती है जिन पर ब्याज 1 फरवरी तथा 1 अगस्त को मिलता है। 1 अप्रैल को आधे ऋण-पत्र 85.25 रु. की दर से 25 पैसे प्रतिशत बैंक कमीशन देकर बेच दिए गए। फर्म की पुस्तकों में विनियोग खाता तथा ब्याज खाता बनाइए।

 [**Ans.** विनियोग खाता का शेष 5,000 रु. लाभ-हानि खाता को क्रेडिट ब्याज 187.50 रु.]

4. 1 मई, 2006 को हरीसिंह ने 2,000 रु. के 3% सरकारी ऋण पत्र 95 रु. की दर से क्रय किए जिन पर 1/8% दलाली और 12.50 स्टाम्प के दिए। 30 सितम्बर को 1,000 रु. के ऋण-पत्र 98 रु. की दर से बेच दिए गए जिन पर 15 रु. व्यय हुए। ऋण-पत्रों पर ब्याज प्रतिवर्ष 30 जून और 31 दिसम्बर को दिया जाता है। इन व्यवहारों का लेखा कीजिए।

 [**Ans.** विनियोग खाते का शेष 947.50 रु. लाभ-हानि खाते को क्रेडिट ब्याज 32.50 रु.]

5. 1 जनवरी, 2005 को श्री अग्रवाल के पास 10,000 रु. के 3% 2006 डिफेंस बॉण्ड थे जिन पर 1 फरवरी तथा 1 अगस्त को ब्याज मिलता है। इन्हें सम-मूल्य (at par) क्रय किया गया था। 1 जुलाई 2005 को यही बॉण्ड 10,000 रु. के 101.62 रु. की दर से फिर क्रय किए गए। यह मानते हुए कि 1 फरवरी 2006 को इन बॉण्डों का सम-मूल्य पर शोधन कर दिया गया, आवश्यक खाते बनाइए।

 [**Ans.** विनियोग खाता 2005 शेष 20037 रु. 2006 शोधन पर हानि 37 रु. लाभ-हानि को क्रेडिट ब्याज 2005 450 रु., 2006 50 रु.]

6. त्रिन्दल फूड लि. अपने अन्तिम खाते 31 दिसम्बर को तैयार करते हैं। इन्होंने 1 जनवरी 2006 को 100 रु. वाले 100 ग्वालियर नगर निगम के 3% ऋण-पत्र 8725 रु. में क्रय किए। 1 अप्रैल 2006 को 50 ऋण-पत्र 25 पैसे प्रतिशत बैंक व्यय देकर 85.25 पैसे की दर से बेच दिए गए। कम्पनी की पुस्तकों में इन व्यवहारों का लेखा करने हेतु आवश्यक खाते खोलिए।

 [**Ans.** विनियोग खाते का शेष 4,300 रु. विक्रय पर हानि 75 रु. लाभ-हानि खाता को क्रेडिट ब्याज 187.50 रु.]

7. 31 मार्च, 2006 को गोपाल ने 10,000 रु. का 5% म.प्र. ऋण (2008) 95 रु. ब्याज की दर से क्रय किया। इस पर ब्याज का भुगतान 30 जून तथा 31 दिसम्बर को होता है। 1 जुलाई 2006 को आधा ऋण 96 रु. की दर से तथा 1 अक्टूबर को 2,500 रु. का ऋण 96.50 रु. ब्याज सहित की दर से बेचा। 31 दिसम्बर को जब गोपाल अपने खाते बन्द करता है, ऋण का बाजार मूल्य 95 रु. ब्याज-सहित था।

[**Ans.** विनियोग खाता का शेष 2,343.75 रु. विक्रय पर लाभ 150 रु. लाभ-हानि खाता को क्रेडिट ब्याज 218.75 रु.]

7.12 सारांश

NOTES

- विनियोग से आशय अंशों, ऋणपत्रों एवं बॉण्ड्स या अन्य प्रतिभूतियों से है जिसमें धन या कोषों का विनियोजन किया जाता है।
- विनियोग सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा दो प्रकार के विनियोग में किया जाता है - लाभांश अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों और ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियाँ
- अंशों का क्रय विक्रय या तो लाभांश सहित मूल्य पर किया जाता है या लाभांश रहित मूल्य पर। लाभांश सहित मूल्य का अर्थ है क्रेता को लाभांश सहित अंश बेचना अर्थात् विक्रेता अपना लाभांश पाने का अधिकार भी क्रेता को दे देता है। अंशों के लाभांश रहित से आशय है कि मूल्य में कोई लाभांश सम्मिलित नहीं है अर्थात् सम्पूर्ण भुगतान अंशों का मूल्य है।
- ऋण पत्र, बॉण्डस आदि ब्याज अर्जित करने वाली प्रतिभूतियों का लेखांकन भी क्रेता और विक्रेता दोनों की पुस्तकों में होता है। प्रतिभूतियों का ब्याज सहित क्रय से आशय कि प्रतिभूति के साथ ब्याज भी बेचा जाता है। प्रतिभूतियों का ब्याज सहित मूल्य से आशय है कि इस मूल्य में ब्याज के अन्तिम भुगतान की तिथि से व्यवहार तक की तिथि तक का ब्याज सम्मिलित नहीं होता है।
- ब्याज वाली प्रतिभूतियों पर ब्याज दिन प्रतिदिन अर्जित होता है किन्तु इसका भुगतान निर्धारित तिथियां पर किया जाता है उसे उपार्जित ब्याज कहते है।
- जब विनियोग खाते बनाते है तो उसमें विनियोगों के साथ-साथ ब्याज का भी एक खाता डेबिट क्रेडिट पक्ष में बना दिया जाता है इसे स्तम्भीय विनियोग खाता कहते है।

7.13 शब्दावली

विनियोग, लाभांश सहित लाभांश रहे ब्याज सहित और ब्याज रहित प्रतिभूति।

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–8 जहाजी यात्रा लेखे
[VOYAGE ACCOUNTS]

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 जहाजी यात्रा से आशय

8.3 जहाजी यात्रा के प्रकार

8.4 जहाजी यात्रा लेखा

8.5 अपूर्ण जहाजी यात्रा की दशा में लाभ-हानि ज्ञात करना

8.6 क्रियात्मक प्रश्न

8.7 सारांश

8.8 शब्दावली

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे -

- जहाजी यात्रा से आशय और प्रकार समझा सकेंगे।
- जहाजी यात्रा का लेखांकन कर सकेंगे।
- अपूर्ण जहाजी यात्रा की दशा में लाभ-हानि ज्ञात कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

8.2 जहाजी यात्रा से आशय

जहाजी यात्रा से आशय है, कि जहाजी कम्पनियाँ सामुद्रिक मार्ग से यात्रियों एवं वस्तुओं अथवा माल को जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती हैं उसे जहाजी यात्रा कहते है। इन कम्पनियों का मुख्य उद्देश्य जहाजी यात्रा के माध्यम से लाभ-अर्जन करना है। जहाजों या जलयान के अन्तर्गत एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह तक माल पहुँचाने का प्रमुखत से जो कार्य किया जाता है, उसे जहाजी यात्रा कहते है।

8.3 जहाजी यात्रा के प्रकार

जहाजी यात्रा, निम्नलिखित दो प्रकार की होती है–

(1) **बाह्य यात्रा** (Outward Journey)– बाह्य यात्रा के अन्तर्गत कोई जहाज भारत के बन्दरगाह से विदेश के कोई भी बन्दरगाह जाता है अथवा भारत के किसी बन्दरगाह से भारत के ही किसी बन्दरगाह में जाता है तो उसे बाह्य यात्रा कहते है।

(2) **आन्तरिक यात्रा** (Inward Journey)– इसके अन्तर्गत जब कोई जहाज विदेश के बन्दरगाह से भारत के कोई भी बन्दरगाह में आता है अर्थात् वापसी यात्रा को आन्तरिक यात्रा कहते है।

NOTES

8.4 जहाजी यात्रा लेखा (Voyage Account)

जहाजी यात्रा के दौरान जहाजी कम्पनियाँ प्रत्येक यात्रा के अन्तर्गत यह ज्ञात करना चाहती है, कि लाभ हानि की क्या स्थिति है अर्थात् जहाजी यात्रा से सम्बन्धित लाभ हानि ज्ञात करती है। इस प्रकार जहाजी यात्रा लेखा तैयार किया जाता है। प्रत्येक यात्रा के व्यय एवं आय को लेखा में डेबिट एवं क्रेडिट किया जाता है। जहाजी यात्रा खाता अथवा लेखा तैयार करते समय निम्नांकित आय-व्यय प्रकृति की मदों को स्पष्टतः समझ लेना आवश्यक होता है।

(1) **भाड़ा** (Freight)— यात्रा खाते (Voyage Account) में जहाज द्वारा एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह को माल ले जाने तथा वापसी यात्रा से सम्बन्धित भाड़ा अलग-अलग प्रदर्शित करना चाहिए। यदि प्रश्न में भाड़े की एकमुश्त रकम न देकर भाड़े की दर दी गई है तो भाड़े की गणना दी गई दर के आधार पर करनी चाहिए।

(2) **प्राइमेज** (Primage)— पहले यह राशि जहाज के कप्तान को मिलती थी, परन्तु अब यह जहाजी कम्पनी को मिलती है। यह सामान्यतः भाड़े (Freight) का एक प्रतिशत होती है।

(3) **यात्रा धनराशि** (Passage Money)— ज्यादातर माल वाहक जहाजों में कुछ यात्रियों को ले जाने की भी व्यवस्था होती है। इन यात्रियों से प्राप्त किराया यात्रा धनराशि (Passage Money) कहलाती है।

व्यय की मदें (Items of Expenses)

(1) **माल चढ़ाई तथा उतराई व्यय** (Stevedoring)— जहाज पर माल चढ़ाने तथा उतारने की मजदूरी को Stevedoring कहते है। इसकी राशि प्रत्येक बन्दरगाह के लिए अलग-अलग होती है।

(2) **बन्दरगाह व्यय** (Port Charges)— यह राशि जहाज पर माल लादने तथा जहाज से माल उतारने की अनुमति तथा सुविधा देने के लिए बन्दरगाह के प्रबन्ध की अधिकृत संस्था (Port Authority) को भुगतान की जाती है। प्रत्येक बन्दरगाह के लिए व्यय की राशि अलग-अलग होती है।

(3) **एड्रेस कमीशन** (Address Commission)— यह कमीशन उस एजेंट को दिया जाता है जिसके माध्यम से भाड़ा प्राप्त होता है। यदि पूरा जहाज किराये पर लिया गया है तो किराये पर लेने वाले (Charterer) को ही यह कमीशन प्राप्त होता है। इसकी गणना भाड़े (Freight) के एक प्रतिशत के रूप में की जाती है इस उद्देश्य के लिए भाड़े मे प्राइमेज (Primage) भी शामिल किया जाता है।

(4) **बीमा** (Insurance)— बीमा प्रीमियम की राशि यात्रा खाते (Voyage Account) मे डेबिट की जाती है बीमा पालिसी दो प्रकार की हो सकती है- (i) समय पालिसी (Time Policy), (ii) यात्रा पालिसी (Voyage Policy)। समय पालिसी की दशा मे यात्रा मे लगे हुए समय के अनुपात मे प्रीमियम की राशि यात्रा खाते मे डेबिट की जाती है। परन्तु यात्रा पालिसी केवल यात्रा की अवधि केवल यात्रा की अवधि के लिए होती है, अतः कुल प्रीमियम की राशि यात्रा खाते में डेबिट होती है। सामान्यतः जहाज का बीमा (Hall Insurance) समय पालिसी के आधार पर तथा माल का बीमा (Cargo Insurance) यात्रा पालिसी के आधार पर किया जाता है।

(5) **बंकर लागत** (Bunker Costs)— बंकर लागत, कोयला, तेल, डीजल, पानी आदि की कुल लागत को कहते है। यात्रा खाते मे यह व्यय की मुख्य मद है। यदि प्रश्न मे इस मद मे व्यय की कुल राशि एक मुश्त न देकर उपभोग की दर दी गई है तो दी गई सूचना के अनुसार गणना की जायगी। उपभोग की दर जहाज के बन्दरगाह मे खड़ा रहने तथा समुद्र मे चलते रहने के समय अलग-अलग होती है।

(6) **जहाज खड़ा करने का किराया** (Berthage)— जहाजी कम्पनी को बन्दरगाह मे जहाज खड़ा करने के लिए जो किराया देना पड़ता है, उसे Berthage कहते है। यह राशि बन्दरगाह पर जहाज खड़ा रहने की अवधि पर निर्भर होती है।

(7) **ह्रास** (Depreciation)— जहाज तथा अन्य साज-सामान पर निर्धारित दर से ह्रास निकाला जाता है और यात्रा मे लगे हुए समय के अनुपात मे ह्रास यात्रा खाते मे डेबिट किया जाता है।

(8) **मैनेजर का कमीशन** (Commission to Manager)— जहाजी कम्पनी के मैनेजर को लाभ के एक प्रतिशत के रूप मे कमीशन दिया जा सकता है। कमीशन की गणना दो प्रकार से की जा सकती है

(i) कमीशन के पूर्व के लाभ का निश्चित प्रतिशत — इस स्थिति मे निम्न सूत्र से कमीशन निकालेंगे—

$$\text{Commission} = \frac{\text{Net Profit before Commission} \times \text{Rate}}{100}$$

(ii) कमीशन के पश्चात के लाभ का निश्चित प्रतिशत :–इस स्थिति मे निम्न सूत्र से कमीशन निकालेंगे–

$$\text{Commission} = \frac{\text{Net Profit before Commission} \times \text{Rate}}{100 + \text{Rate}}$$

8.5 अपूर्ण जहाजी यात्रा (Incomplete Voyage) की दशा में लाभ-हानि ज्ञात करना

यदि जहाजी कम्पनी का हिसाब-किताब का वर्ष (Accounting year) समाप्त हो गया है और कोई जहाज अभी अपनी यात्रा समाप्त करके वापस नहीं लौटा है तो अपूर्ण यात्रा से सम्बन्धित आय तथा व्यय को अगले वर्ष हस्तान्तरित कर देंगे। इस वर्ष केवल सम्पूर्ण यात्रा (Complete voyage) का लाभ या हानि ज्ञात करेंगे। उदाहरणार्थ यदि जहाज अपने प्रारम्भिक बिन्दु से दूसरे बन्दरगाह पहुँच चुका है परन्तु वापसी की यात्रा में केवल आधी यात्रा पूरी कर सका है तो वापसी यात्रा से सम्बन्धित आय को यात्रा खाते में डेबिट पक्ष में तथा व्यय को क्रेडिट पक्ष में लिखेंगे और केवल बाहरी यात्रा (Outward Journey) से सम्बन्धित लाभ हानि ज्ञात करेंगे।

उदाहरण (Illustration) 1. (Complete Voyage)

Golden Ship undertook a voyage from London to Calcutta starting on 1st January, 2007 and reaching on 31st march, 2007. The cargo consisted of 900 tons of foodgrains and 100 tons for steel. The freight charges were Rs. 150 per ton for foodgrains and Rs. 100 per ton for steel. In addition, primage was 10%. Brokerage was payable at 5%. The expenses were:

गोल्डन जहाज ने एक यात्रा लन्दन से कलकत्ता तक की। यात्रा 1 जनवरी, 2007 को प्रारम्भ होकर 31 मार्च, 2007 को समाप्त हुई। जहाज में 900 टन अनाज तथा 100 टन स्टील सामान था। भाड़ा 150 रु. प्रति टन अनाज के लिए तथा 100 रु. प्रति टन स्टील के लिए था। इसके अतिरिक्त प्राइमेज 10% था। दलाली 5% की दर से भुगतान की जानी थी। निम्नलिखित व्यय हुए:

	London	**Calcutta**
Coal and Diesel	20,000	–
Port charges	9,000	2,000
Harbour Wages	3,000	1,000
Loading Charges	2,000	
Other Expenses :		
Stores	10,000	
Discharging Expenses	2,000	
Postage	1,000	
Salaries of Crew	10,000	

The ship was insured for Rs. 10,00,000 at 1% for Voyage Policy of Hull. The freight was insured @ ½ %. Depreciation is charged on the W.D.V. of the ship at 5% p.a. The value of ship as on 1st January 2007 was Rs. 8,00,000. Prepare Voyage Account.

जहाज का यात्रा पालिसी के आधार पर 1% की दर से 10,00,000 रु. का बीमा था। भाड़े का ½ % की दर से बीमा था। जहाज के अपलिखित मूल्य पर 5% प्रति वर्ष की दर से ह्रास लगाना है। 1 जनवरी 2007 को जहाज का मूल्य 8,00,000 रु. था।

Solution :

Golden Ship

Voyage Account for the period from 1st January 2007 to 31st March 2007

Particulars	**Amount**	**Particulars**		**Amount**
To Brokerage		By Freight		
(5% of 1,59,500)	7,975	Foodgrains		
To Coal and Diesel	20,000	900 Tons @ 150	1,35,000	

NOTES

To Port charges			Steel goods;		
London :	9,000		100 Tons @ 100 =	10,000	1,45,000
Calcutta :	2,000	11,000	By Primage @ 10%		14,500
To Harbour wages .					
London :	3,000				
Calcutta :	1,000	4,000			
To Loading charges		2,000			
To Stores		10,000			
To Discharging Exp.		2,000			
To Postage		1,000			
To Salaries of Crew		10,000			
To Insurance					
Hull Ins.	10,000				
Freight Ins.					
(159500 × ½ %)	798	10,798*			
To Depreciation					
$\left(8,00,000 \times \frac{5}{100} \times \frac{3}{12}\right)$		10,000			
To Profit & Loss A/c		70,727			
		1,59,500			**1,59,500**

* Since insurance has been effected through voyage policy, full premium has been debited to voyage A/c.

उदाहरण (Illustration) 2.

W.Y. Jalyan commenced a voyage on 1st July, 2008 from Mumbai to Kolkata and back. The voyage was completed on 31st August 2008. It carried a consignment of cotton textiles on its outward journey and of jute and tea on its return journey. The ship was insured at an annual premium of Rs. 30,000. From the following particulars, draw up the Voyage Account.

डब्लु वाई जलयान ने मुम्बई से कोलकाता तथा वापसी की यात्रा 1 जुलाई 2008 को प्रारम्भ की। यात्रा 31 अगस्त, 2008 को समाप्त हुई। अपनी बाहरी यात्रा पर इसमें सूती कपड़े ले जाये गये तथा वापसी यात्रा पर जूट तथा चाय आयी। जहाज का 30,000 रु. वार्षिक प्रीमियम पर बीमा कराया गया। निम्न विवरण से एक यात्रा खाता बनाइए.

Rs		Rs	
Coal Purchased	70,000	Interest on Loan	500
Stores Supplied	56,000	Wages and Salaries	16,000
Harbour charges	3,500	Sundry Expenses	5,000
Lighterage	2,500	Freight earned (Outward)	1,20,000
Depreciation (Annual)	96,000	Freight earned (Return)	1,00,000
Bunker	4,000	Passage Money Recieved	6,000
Captain's Exp	1,500		

Address commission is @ 5% on outward and 6% on return freight. Primage is 5% on freight.

The manager is entitled to 10% commission on the profits earned after charging such commission. Stores and coal on hand are worth Rs. 10,600 on the conclusion of Journey

बाहरी भाड़े पर 5% तथा वापसी भाड़े पर 6% एड्रेस कमीशन है। प्राइमेज भाड़े का 5% है।

कमीशन घटाने के पश्चात ज्ञात लाभ का 10% मैनेजर को कमीशन भुगतान करना है। यात्रा की समाप्ति पर 10,600 रु. की सामग्री तथा कोयला स्टाक में था।

Solutions 2.

NOTES

W.Y. Jalyan

Voyage Account for the period from 1st July, 2008 to 31st Aug. 2008

Particulars		Amount	Particulars	Amount
To Address Commission			By Freight .	
Outward	6,300		Outward	1,20,000
Return	6,300	12,600	Return	1,00,000
To Coal Purchased	70,000		By Primage @ 5%	
Stores Supplied	56,000		Outward	6,000
	1,26,000		Return	5,000
Less Stock	10,600	1,15,400	By Passage Money	6,000
To Harbour charges		3,500		
To Lighterage		2,500		
To Depreciation (96,000 × 2/12)		16,000		
To Insurance Premium		5,000		
To Bunker		4,000		
To Captain's Exp		1,500		
To Interest on Loan		500		
To Wages and Salaries		16,000		
To Sundry Exps.		5,000		
To Manager's Commission		5,000		
To Profit		50,000		
		2,37,000		**2,37,000**

Workings :

(i) Address commission has been calculated on freight plus primage

For Outward Journey - 1,26,000 × 5/100 = Rs. 6,300

For Return Journey - 1,05,000 × 6/100 = Rs. 6,300 Total Rs. 12,600

(ii) Insurance Premium - Rs. 30,000 × 2/12 = Rs. 5000

(iii) Manager's Commission

Commission is payable @ 10% of net profits after charging such commision, therefore.

Commission 55,000 × 10/110

(iv) Passage Money is the amount received from passengers and treated as income

उदाहरण (Illustration) 3.

'S.K. Indian Glory' is employed on conference trade and is on regular run between India and the United Kingdom. The conference freight rate is Rs. 200 per freight ton to be enhanced by a surcharge of 20% for port congestion and an adjustment of + 7½% for currency factor

The vessel arrived in Mumbai on 20th February, 2008 and started loading cargo. Loading was over on 1st March (morning) when she set sail for London where she arrived on the night of

NOTES

the 20th March 2008. Unloading of the cargo was over and the vessel commenced here next employment on 1st April, 2008 (evening). The total voyage time was calculated at 40 days.

'एस.के. इण्डियन गलोरी' कानफरेंस व्यापार में कार्यरत है और भारत तथा यूनाइटेड किंगडम के बीच नियमित चलता है। कान्फरेंस भाड़ा दर 200 रु. प्रति भाड़ा टन है जिसे बन्दरगाह में भीड़ के लिए 20% अधिभार की दर से बढ़ाना है तथा करेंसी की दर में परिवर्तन के लिए $+7\frac{1}{2}\%$ की दर से समायोजन करना है।

जहाज 20 फरवरी 2008 को मुम्बई पहुँचा और माल लादना शुरू किया। माल की लदाई एक मार्च (प्रातः) को समाप्त हो गई। वह उसी समय लंदन के लिए चल दिया जहाँ वह 20 मार्च, 2008 की रात को पहुँचा। एक अप्रैल, 2008 (शाम) को सब माल उतर गया और जहाज ने नया कार्य प्रारम्भ किया। यात्रा के कुल समय की गणना 40 दिन की गई।

At Mumbai, the ship took in 8,500 frieght tonnes. The following direct expenses were incurred:

मुम्बई में कुल 8,500 टन माल जहाज में भरा गया। निम्नलिखित प्रत्यक्ष व्यय किये गये.

		Rs.
(i)	Entry fee, tug hire, berth hire at Mumbai	72,000
(ii)	Port charges at London	85,000
(iii)	Light house dues	7,600

(iv) Insurance Premium on cargo @ 0.25% of the basic freight rate

(v) Stevedoring charges are Rs. 18 and Rs. 25 per freight ton at Mumbai and London respectively.

(vi) Consumption of Bunkers :

(a) During port stay– 4 ton of fuel oil and 25 ton of fresh water per day.

(b) On sailing days–12 ton of fuel oil and 10 ton of fresh water per day.

Cost of fuel oil Rs. 1,350 per ton and fresh water Rs. 25 per ton.

(vii) Annual cost of maintenance of ship (considering 360 days as normal working days in a year).

(a) Salaries to officers and crew	Rs. 30,00,000
(b) Insurance Premium	Rs. 12,15,000
(c) Repairs and Maintenance	Rs. 25,00,000
(d) Interest on loan and capital	Rs 11,25,000

(e) Working life of vessel bought for Rs. 75 Lacs is to be taken as six years.

(viii) Freight brokerage at $1\frac{1}{2}\%$ is payable

Kindly draw a Voyage Account and ascertain the results of the Voyage

एक यात्रा खाता बनाइये तथा यात्रा के परिणाम को ज्ञात करिये।

Solution : 3.

S.K. Indian Glory

Voyage Account for the Period from 20th February 2008 to 1st April, 2008

Particulars	Amount	Particulars	Amount
To Brokerage		By Freight	21,93,000
(@ $1\frac{1}{2}\%$ on 21,93,000)	32,895		
To Standing charges	10,10,000		
To Direct Expenses :			

Cost of Bunkers	4,49,500		
Entry fee etc. at Mumbai	72,000		
London Port charges	85,000		
Light House Dues	7,600		
Stevedoring charges	3,65,500		
Cargo Insurance	4,250		
To Profit on Voyage	1,66,255		
	21,93,000		**21,93,000**

NOTES

Workings :

1 **Freight :**

Effective rate of freight :

Basic Rate	Rs. 200	per Ton
Add : Surcharge @ 20%	Rs. 40	Per Ton
	Rs. 240	Per Ton
Add : Currency factor @ 7½%	18	Per Ton
	258	Per Ton
Amount of freight .	8,500	ton @ Rs. 258 Per Ton
	=	Rs. 21,93,000

2. **Standing Charge :**

Annual standing charges :

		Rs.
(i)	Salaries to Officers and Crew	30,00,000
(ii)	Insurance Premium	12,15,000
(iii)	Repairs and Maintenance	25,00,000
(iv)	Interest on Loan and Capital	11,25,000
(v)	Depreciation (75,00,000/6)	12,50,000
	Total Annual standing charges :	90,90,000

Proportionate standing charges for the period of voyage i.e. 40 days.

90,90,000 × 40/360 = Rs. 10,10,000

3. **Cost of Bunker :**

	Fuel Oil (Tons)	Fresh Water (Tons)
Port stay 20 days	80	500
Sailing 20 days	240	200
	320	700

Cost of fuel oil @ Rs. 1350 per ton for 320 tons	Rs.	4,32,000
Cost of Fresh Water @ Rs. 25 per ton for 700 tons	Rs.	17,500
Total Bunker Cost		4,49,500

4. **Stevedoring Charges :**

At Mumbai @ Rs. 18 for 8500 Tons	Rs.	1,53,000
At London @ Rs. 25 for 8500 Tons	Rs.	2,12,500
		3,65,500

5. **Cargo Insurance :**

@ ¼% of Basic Freight i.e. $\left(\frac{8500 \times 200 \times 1}{4 \times 100}\right)$ = Rs. 4,250

उदाहरण (Illustration) 4. (Incomplete Voyage)

Indian Ships Ltd. Calcutta acquired a ship Jalpari costing Rs. 25,00,000 on 1st September, 2008 and got her insured at 6%. The freight was also insured at the same rate, the amount of policy being Rs. 16,00,000. During the four months to December, 31, 2008, the ship made one round trip to Japan and was half through the second trip (single way) to Japan. It carried the following cargo :

इंण्डियन शिप्स लि. ने 1 सितम्बर, 2008 को 25,00,000 रु की लागत से एक जहाज जलपरी क्रय किया और 6% की दर से इसका बीमा कराया। भाड़े का भी इसी दर से बीमा कराया गया। भाड़े के लिए बीमा पालिसी का मूल्य 16,00,000 रु. था। 31 दिसम्बर 2008 को समाप्त होने वाली 4 माह की अवधि में जहाज ने जापान की एक वापसी यात्रा की तथा जापान की दूसरी यात्रा (एक तरफ) में आधे रास्ते में था। जहाज में निम्न माल ले जाया गया।

To Japan	10,000 Tonnes @ Rs. 25 per Tonne
From Japan	8,000 Tonnes @ Rs. 20 per Tonne
To Japan	10,000 Tonnes @ Rs. 22 per Tonne

Primage was 3% and Address Commission was 10%. The expenses incurred were :

Port due Rs. 15,000; Wages and Salanes Rs. 50,000; Fuel and Power Rs. 60,000 Stevedoring Rs. 56,000 (@ Rs. 2 per Tonne); Stores Puuchases Rs. 15,000; Stock of Stores on 31.12.2008 Rs. 3,000.

This Ship is subject to depreciation @ 6% p.a. on the original cost.

Prepare Voyage Account to ascertain profit or loss for the period from 1st September, 2008 to 31st December 2008.

1 सितम्बर, 2008 से 31 दिसम्बर 2008 की अवधि के लिए लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये यात्रा खाता बनाइए।

Solution : 4.

Japari

Voyage Account for the period from 1st Sept., 2008 to 31st Dec. 2008

Particulars		Amount	Particulars		Amount
To Address Commission		64,890	By Freight		
To Port Dues		15,000	To Japan	2,50,000	
To Wages and Salaries		50,000	From Japan	1,60,000	
To Fuel and Power		60,000	To Japan		
To Stevedoring		56,000	(Incomeplete)	2,20,000	6,30,000
To Stores Consumed			By Primage @ 3%		
(15000 - 3,000)		12,000	To Japan	7,500	
To Depreciation		50,000	From Japan	1,800	
To Insurance			From Japan	4,800	
On Ship	50,000		To Japan		
On Freight	32,000	82,000	(Incomplete)	6,600	18,900
To Provision for unearned			By Voyage in Progress		96,460
Income on Incomplete					
Voyage		2,26,600			
To Profit on Voyage		1,28,870			
		7,45,360			7,45,360

Workings

(1) Address Commission :

$$10\% \text{ of Freight + Primage } = \frac{(6,30,000+18,900)10}{100} = \text{Rs. } 64,890$$

(2) Depreciation :

$$= \frac{25,00,000 \times 4 \times 6}{12 \times 100} = \text{Rs. } 50,000$$

(3) Insurance :

On Ship $= \frac{25,00,000 \times 6 \times 4}{100 \times 12} = \text{Rs. } 50,000$

On Freight $= \frac{16,00,000 \times 6 \times 4}{100 \times 12} = \text{Rs. } 32,000$

In absence of information regarding nature of insurance policy, It has been assumed to be a Time Policy

4. Provision for Unearned Income :

Second voyage is incomplete therefore income of second voyage will be debited to Voyage Account

	Rs.
Freight to Japan (Incomplete)	2,20,000
Primage @ 3%	6,600
	2,26,600

5. Voyage in Progress :

Expenses relating to incomplete voyage will be calculated as under :

Address commission @ 10% on Rs. 2,26,600	Rs.	22,660
Stevedoring @ Rs. 2 on 10,000 Tonnes	Rs.	20,000
$\frac{1}{5}$ of other Expenses $\left\{\frac{\text{Rs. } 2,69,000}{5}\right\}$	Rs.	53,800
		96,460

Since Second trip (single) has been completed to the extent of $\frac{1}{2}$ only, therefore total Voyage completed is $2\frac{1}{2}$ and $\frac{1}{2}$ out of $2\frac{1}{2}$ works out $\frac{1}{5}$ of total.

उदाहरण (Illustration) 5.

S.S. Nilgiri owned by the Indian Shipping Company Ltd. is on the Mumbai London lines trade. Her daily standing charges (Fixed Costs) are Rs. 45,000. In the period between 1st July and 31st December 2008, the ship had finished one round voyage to london and on the date when the books of accounts of the Company were closed at the end of the year, the vessel was on her way to London, having sailed out of Mumbai after midnight of 21st December. Loading for London commenced on 1.12.2008.

From the following details, prepare a voyage account.

इंडियन शिपिंग कम्पनी लिमिटेड के स्वामित्व वाला एस.एस. नीलगिरि मुम्बई-लन्दन मार्ग पर कार्यरत है। इसके प्रतिदिन स्थाई व्यय 45,000 रु. है। 1 जुलाई से 31 दिसम्बर 2008 की अवधि में जहाज ने लन्दन की एक वापिसी यात्रा पूरी कर ली तथा वर्ष के अन्त में जब कम्पनी के खाते बन्द किये गये, जहाज अपनी लंदन की दूसरी यात्रा पर था, जहाज 21 दिसम्बर की मध्य रात्रि के बाद मुम्बई बन्दरगाह से निकला। लंदन के लिये माल की लदाई 1 दिसम्बर 2008 को प्रारम्भ हुई।

निम्नलिखित विवरण से एक यात्रा खाता बनाइए

Freight earned :

(a) Completed Voyage–Mumbai to London

(i) 20,000 tonnes textiles at Rs. 280 per tonne

(ii) 10,000 tonnes copra at Rs. 340 per tonne

On textiles, a surcharge of 10% was also recovered

London to Mumbai –

32,000 tonnes of urea at Rs. 300 per tonne

(b) Unfinished Voyage–

30,000 tonnes of general cargo at Rs. 240 per tonne plus a surcharge at 15%.

NOTES

NOTES

Expenses :

(a) **Stevedoring expenses :**

(i) at Rs. 20 per tonne at Mumbai for general cargo and Rs. 25 per tonne for textiles and copra.

(ii) at London on a uniform rate of £1 per tonne.

(b) **Fuel Consumptions –**

(i) on sailing days – 30 tonnes of fuel oil per day : 5 tonnes of diesel per day

(ii) on days in port – 10 tonnes of fuel oil per day
5 tonnes of diesel per day

(iii) Cost per tonne – Fuel oil Rs. 1,400 per tonne
Diesel Rs. 2,500 per tonne

(c) **Port dues** – at London – £ 2,000
at Mumbai – Rs. 2,40,000 (inclusive of
Rs. 60,000 for the incomplete voyage)

(d) **Sundry Stores** – Rs. 60,000

(e) During the period, the vessel was in Mumbai Port for 70 days and in London port for 40 days

(f) Conversion rate £ a could be adopted at Rs. 20.

Solution : 5.

S.S. Nilgiri
Voyage Account
for the Period from 1st July 2008 to 31st Dec. 2008

Particulars	Amount	Particulars	Amount
To Standing charges (ii)	82,80,000	By Freight Earned (i)	2,74,40,000
To Fuel Consumed (iii)		By Expenses of incomplete	
Fuel oil	46,48,000	Voyage c/d (v)	31,66,500
Diesel	23,00,000		
To Stevedoring charges (iv)	32,30,000		
To Port dues	2,80,000		
To Sundry Stores	60,0000		
To Freight on Incomplete			
Voyage carried down	82,80,000		
To Net Profit for the period	35,28,500		
	3,06,06,500		3,06,06,500

Working notes :

(i) Freight earned

20,000 tonnes textile @ Rs. 308 per ton	61,60,000
(i.e. Rs. 280 plus 10%)	
10,000 tonnes of Copra @ Rs. 340 per ton	34,00,000
London to Mumbai :	
32,000 tonnes of Urea @ Rs. 300 per ton	96,00,000
Unfinished Voyage :	
30,000 tonnes of General Cargo @ Rs. 276 per tonne	
(i.e. Rs. 240 + 15%)	82,80,000
	2,74,40,000

(ii) Standing Charges for 184 days @ Rs. 45,000 per day			82,80,000

(iii) Fuel consumpion

Stay at port for 110 days

	Fuel oil	Diesel
	Rs. 15,40,000	Rs. 13,75,000
	(1100 tonnes @ Rs. 14,000)	(550 tonnes @ Rs. 2,500)
Durning Journey	Rs. 31,08,000	Rs. 9,25,000
74 days	(2220 tonnes @ Rs. 1,400)	(370 tonnes @ Rs. 2500)
	Rs. 46,48,000	Rs. 23,00,000

(iv) Stevedoring charges

At Mumbai 30,000 tonnes fo textile and copra @ Rs. 25/ton	Rs.
At London 30,000 tonnes of texile and copra @ Rs. 20/ton	7,50,000
	6,00,000
32,000 tonnes of urea @ Rs. 20/ton	6,40,000
At Mumbai 32,000 tonnes of Urea @ Rs. 20/ton	6,40,000
30,000 tonnes of general cargo @ Rs. 20/ton	6,00,000
(v) Expenses on Incomplete Voyage :	32,30,000

	Fuel Oil	Diesel
Fuel Consumption	Tonnes	Tonnes
At Port 21 days	210	105
Sailing days 10	300	50
	510	155
Rate/tonne	Rs. 1,400	Rs. 2,500
	Rs. 7,14,000	Rs. 3,87,500

	Rs.
7,14,000 + 3,87,500 =	11,01,500
Stevedoring Charges	6,00,000
Port charges	60,000
Standing charges for 31 days @ Rs. 45,000	13,95,000
Sundry Stores (1/6th on time basis)	10,000
	31,66,500

Illustration 6 : तूफान एक्सप्रेस नियमित रूप से भारत और दक्षिण अमेरिका के बीच माल ले जाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसने अपनी यात्रा 1 जुलाई, 2008 को शुरू की और अपने निर्दिष्ट स्थान पर 14 अगस्त, 2008 को पहुँचा। निम्नांकित विवरण के अनुसार समुद्री खाता बनाइए

(अ) जहाज 2001 में 100 लाख रुपए में क्रय किया गया था और क्रय करने के समय इसके कार्यालय की अवधि 16 वर्ष रह गयी थी। जहाज पर ह्रास स्थायी प्रभाग प्रणाली से लगाया जाता है।

(ब) ह्रास को छोड़कर प्रति दिन के स्थायी व्यय 22,000 रु. है।

(स) जहाज में प्रतिदिन निम्नांकित का उपयोग है

फ्यूल तेल 14 टन, डीजल 2 टन, ताजा पानी 15 टन। इनकी लागत क्रमशः 1,000 रु., 1,350 रु. एवं 20 रु. प्रति टन है।

(द) जहाज निम्नांकित माल ले गया

4,000 टन जिस पर 875 रु. प्रति टन के हिसाब से भाड़ा लिया गया, 3,500 टन जिस पर 190 रु. प्रति टन के हिसाब से भाड़ा लिया गया। ये दोनों दरें 20% सरचार्ज से बढ़ाई जाती है।

(य) भाड़ा दलाली 2.5%।

(र) बन्दरगाह के व्यय ढुलाई एवं उतरवाई बन्दरगाहों पर क्रमशः 40,000 रु. एवं 85,000 रु. थे।

NOTES

NOTES

Toofan Express is regularly employed on cargo trade between India and South America. She set on her voyage on 1st July, 2008 and arrived at her destination on 14th August, 2008. You are to prepare a Voyage Account according the following particulars :

(a) The vessel was purchased in 2008 for Rs. 100 Lakh and at the time of purchase had 16 years of working life left. Depreciation on ship is charged on straight line basis.

(b) Standing cost per day excluding recovery of depreciation is Rs. 22,000.

(c) The vessel consumes daily 14 tons of fuel oil, 2 tons of diesel and 15 tons of fresh water. The cost of these are Rs. 1,000, Rs. 1350 and Rs. 20 per ton respectively.

(d) The vessel loaded the under–mentioned Cargo :

4,000 tons on which freight of Rs. 375 per ton was charged and 3,500 tons on which the rate of freight was Rs. 190 per ton. Both the rates are to be enhanced by a surcharge at 20% over the basic rates.

(e) Freight brokers were gives a brokerage at 2.5%.

(f) Port charges at loading and discharging ports were Rs. 40,000 and Rs. 85,000 respectively.

Solution 6.

Voyage Account of Toofan Express

(1st July, 2008 to 14th August, 2008)

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Standing Cost		By Freight (Note 1)	25,98,000
(Rs. 22,000 × 45)	9,90,000		
To Bunker Cost (Note 2)	7,65,000		
To Port Charges			
(40,000 + 85,000)	1,25,000		
To Depreciation (Note 3)	77,055		
To Brokerage (Note 4)	64,950		
To Net Profit transfer			
to Profit & Loss A/c	5,75,995		
	25,98,000		**25,98,000**

Working Notes :

		Rs
(1)	Calculation of freight earned :	
	4,000 ton @ Rs. 375per ton	15,00,000
	3,500 ton @ Rs. 190 per ton	6,65,000
		21,65,000
	Add Surcharge 20%	4,33,000
		25,98,000
(2)	Bunker Cost	
	Fuel (14 × 45 × Rs. 1,000)	6,30,000
	Diesel (2 × 45 × Rs. 1,350)	1,21,500
	Fresh Water (15 × 45 × Rs. 20)	13,500
		7,65,000

(3) Depreciation for 45 days

Rs. 1,00,000 × 1/16 × 45/365 = Rs. 77,055

(4) Brokerage

2.5% of Rs. 25,98,000 = Rs. 64,950

Illustration 7.

पारस जलयान 1-2-2007 को कोलकाता से चला और विशाखापट्नम होता हुआ 31-3-2007 को चेन्नई बन्दरगाह पहुँचा। इसमें निम्नांकित माल लादा गया:

कोलकाता बन्दरगाह पर 1,000 M.T. स्टील चेन्नई बन्दरगाह के लिए तथा 200 M.T. स्टील विशाखापट्नम बन्दरगाह के लिए। विशाखापट्नम पर चेन्नई के लिए 500 M.T. सामान और लादा गया। किराये भाड़े हैं:

NOTES

कोलकाता बन्दरगाह से विशाखापट्नम बन्दरगाह तक 600 रु. प्रति M.T. कोलकाता बन्दरगाह से विशाखापट्नम तक 500 रु. प्रति M.T. विशाखापट्नम बन्दरगाह से चेन्नई बन्दरगाह तक 400 रु. प्रति M.T. किराये भाड़े पर 10% प्राइमेज, 5% एड्रेस कमीशन तथा 2½% दलाली है। किराये भाड़े का बीमा 1/2% पर कराया गया। जलयान का बीमा समुद्री यात्रा के लिए 1% पर कराया गया। ह्रास 3% प्रति वर्ष है। जलयान की लागत एक करोड़ रुपये है। विभिन्न बन्दरगाहों पर निम्नांकित व्यय हुए:

	कोलकाता	विशाखापटनम	चेन्नई
	रु.	रु.	रु.
बन्दरगाह व्यय	36,000	20,000	20,000
डीजल व पानी	1,00,000	30,000	—
कप्तान की संदिग्धताएँ	7,000	2,000	10,000
बन्दरगाह मजदूरी	10,000	20,000	15,000

समुद्री यात्रा के लिए स्टोर्स 50,000 रु. के क्रय किये गये। स्टोर्स का प्रारम्भिक रहतिया 40,000 रु. था और इसके अन्तिम रहतिये का अनुमान 30,000 रु. का था।

डीजल का स्टॉक अन्त में 30,000 रु. का अनुमानित किया गया जबकि इसका प्रारम्भिक रहतिया 10,000 रु. का था। निकट भविष्य में जलयान कोलकाता बन्दरगाह वापस नहीं आयेगा।

वेतन एवं मजदूरी 80,000 रु. प्रति माह थी।

समुद्री यात्रा खाता बनाइए।

Paras ship sailed from Kolkata port on 1.2.2007 and arrived at Chennai port on 31.3.2007 via Vishakapatanam port on Voyage. The following goods were loaded :

1,000 M.T. and 200 M.T. steel at Kolkata port for Chennai port and Vishakapatanam port respectively. Another 500 M.T. material was loaded at Vishakapatanam for Chennai. The Freight charges were :

Kolkata port to Chennai port Rs. 600 per M.T.

Kolkata port to Vishakapatanam port Rs. 500 per M.T

Vishakapatanam port to Chennai port Rs. 400 per M.T.

The freight is subject to 10% primage, 5% address commission and 2½% brokerage. The freight was insured at 1/2%. The hull was insured for the voyage at 1%. Depreciation was provided at 3% p.a. Cost of the ship is Rs. 1 crore. Following were the expenses incurred at different Ports :

	Kolkata	Vishakapatanam	Chennai
	Rs.	Rs.	Rs.
Port Charges	36,000	20,000	20,000
Diesel and Water	1,00,000	30,000	–
Captain's Contingencies	7,000	2,000	10,000
Harbour wages	10,000	20,000	15,000

Stores purchased for the voyage amounted to Rs. 50,000. Opening stock of stores was Rs. 40,000 and closing stock was estimated at Rs. 30,000. Stock of diesel at close estimated at Rs. 30,000 as against stock of Rs. 10,000 at the beginning. The ship will not come back to Kolkata port in the near future as part of the voyage programme. Salaries and wages amounted to Rs. 80,000 p.m. Prepare voyage Account.

NOTES

Solution 7.

Paras Ship

Voyage Account

(from 1st Feb. to 31st March, 2007)

	Rs.		Rs.
To Port charges	76,000	By Freight Charges	9,00,000[3]
To Diesel	1,10,000[1]	By Primage	90,000[4]
To Stores	60,000[2]		
To Captain's contingencies	19,000		
To Harbour wages	45,000		
To Address commission	49,500[5]		
To Brokerage	24,750[6]		
To Freight Insurance	4,950[7]		
To Hull Insurance	1,00,000[8]		
To Hull Depreciation	50,000[9]		
To Salaries & Wages	1,60,000[10]		
To P. & L. A/c	2,90,800[11]		
	9,90,000		9,90,000

	Diesel[1]	Stores[2]
Opening stock	10,000	40,000
Add : Purchases	1,30,000	50,000
	1,40,000	90,000
Less : Closing stock	30,000	30,000
	1,10,000	60,000

		Qty × Rate Rs	Total Rs.
1	Kokata to Chennai port	1,000 × 600	= 6,00,000
	Kolkata to Vishakapatanam	200 × 500	= 1,00,000
	Vishakapatanam to Channai	500 × 400	= 2,00,000
		Total Rs	9,00,000

4. 10% on freight charges = Rs. 9,00,000 × $\frac{10}{100}$ = Rs. 90,000

5. 5% on (freight charges + Primage) = $\frac{5}{100}$ × Rs. 9,90,000 = Rs. 49,500

6. $\frac{2.5}{100}$ × Rs. 9,90,000 = Rs. 24,750

7. To find out Insurance on Freight @ 1/2% = $\frac{0.5}{100}$ × Rs. 9,90,000 = Rs. 4,950

8. To find out Insurance on Hull for the voyage @ 1% = Rs. $\frac{1,00,00,000 \times 1}{100}$ = Rs. 1,00,000

9. Depreciation on Hull for 2 months @ 3% = $\frac{3}{100}$ × 1,00,00,000 × $\frac{2}{12}$ = Rs. 50,000

10. Rs. 80,000 × 2 months = Rs. 1,60,000

11. This amount is the difference between the total of credit side and total debit side of this voyage account.

बोध प्रश्न

1. जहाजी यात्रा से आशय बताइये।

....

....

....

2. जहाजी यात्रा के प्रकार बताइये।

....

....

....

3. अपूर्ण जहाजी यात्रा की दशा में लाभ की गणना आप कैसे करेंगे?

....

....

....

सैद्धान्तिक प्रश्न
(Theoretical Questions)

1. समुद्री यात्रा लेखा क्या है? यह क्यों बनाया जाता है? अपूर्ण यात्राओं के सम्बन्ध में लाभ किस प्रकार निर्धारित किया जाता है?

   What is voyage account ? Why is it prepared How is Profit ascertained in case of incomplete voyage ?

2. जहाजी यात्रा खाता क्या है? जहाजी यात्रा लेखे के डेबिट एवं क्रेडिट पक्ष में किन मदों का लेखा किया जाता है?

   What is voyage Account ? What items are usually recorded in the debit and credit side of voyage account?

3. अपूर्ण जहाजी यात्रा की दशा में लाभ की गणना किस प्रकार करेंगे।

   How would you calculate profit in case of incomplete voyage ?

संख्यात्मक प्रश्न
(Numerical Questions)

1. शालीमार ने समुद्री यात्रा कोलकाता से कोचीन 1 दिसम्बर, 2007 को प्रारम्भ की। जिस दिन खाते बन्द किये जाते हैं वापसी यात्रा पूरी नहीं हुई थी। कोचीन तक की तथा कोलकाता वापस आने की सम्पूर्ण यात्रा जो 31 दिसम्बर, 2007 के बाद पूरी हुई, उस सम्पूर्ण यात्रा का विवरण निम्न है

   भाड़ा 6,00,000 रु ; डीजल प्रयोग किया गया 1,05,000 रु., स्टोर्स प्रयोग किया गया 45,000 रु., बन्दरगाह के व्यय 22,500 रु., कर्मचारियों का वेतन 60,000, ह्रास 60,000 रु., बीमा समुद्री जहाज 30,000 रु; बीमा भाड़ा 12,000 रु ; प्राइमेज 10% एड्रेस कमीशन 5%, वापसी यात्रा पर मात्र 2,25,000 रु. का भाड़ा उपलब्ध था।

   31 दिसम्बर, 2007 तक का समुद्री यात्रा खाता बनाइए। वापसी यात्रा के पूरे व्यय सम्मिलित किए गए है।

   Shalimar set on voyage from Kolkata to Cochin on 1st December, 2007. On which date the accounts are closed, the return voyage had not been completed. The details for the entire voyage to Cochin and back to Kolkata completed after December 31, 2007 are given below

   Freight Rs. 6,00,000; Diesel consumption Rs. 1,05,000, Stores consumed Rs. 45,000, Port charges Rs. 22,500; Salaries of crew Rs. 60,000; Depreciation Rs. 60,000, Insurance-Ship

Rs. 30,000; Insurance–Freight Rs. 12,000; Primage 10%; Address commission 5%; Only Rs. 2,25,000 freight was available on return Journey.

Prepare Voyage Account upto 31st December, 2007. Expenses on full return Voyage have been included.

Ans. Net Profit Rs. 2,23,125.

NOTES

2. सुपर सम्राट ने कोचीन से जापान और वापसी समुद्री यात्रा 31 अक्टूबर, 2007 को प्रारम्भ की। 31 दिसम्बर, 2007 को वापसी यात्रा आधे रास्ते में थी। जहाज का बीमा 12,00 रुपए वार्षिक था। निम्न विवरणों के आधार पर समुद्री यात्रा खाता बनाइए:

बन्दरगाह व्यय 2,800 रुपए, डीजल 15,000 रुपए, मजदूरी 24,000 रुपए, स्टोर्स क्रय किये गये 8,400 रुपए, विविध व्यय 5,800 रुपए। ह्रास (वार्षिक) 48,000 रुपए, भाड़ा अर्जित (बाह्य) 50,000 रुपए, भाड़ा अर्जित (वापसी) 35,000 रुपए।

एड्रेस कमीशन– बाह्य भाड़ा 5% और वापसी भाड़ा 4%, यात्रा राशि (बाह्य) 5,000 रुपए अतिरिक्त भाड़ा (प्राइमेज) 5%। स्टोर्स हस्तगत 1,500 रुपए। प्रबन्धक अर्जित शुद्ध लाभ पर 5% कमीशन पाने का अधिकारी है।

Super Samrat commenced a Voyage on 31st October, 2007 from Cochin to Japan and back. On 31st December, 2007 the return voyage was half the Journey. The ship was insured at an annual premium of Rs. 12,000. From the following particulars, draw up the Voyage Account:

Port charges Rs. 2,800, Diesel Rs. 15,000 Wages Rs. 2,400, Stores purchased Rs. 8,400, Sundry Expenses Rs. 5,800, Depreciation (annual) Rs. 48,000, Freight earned (outward) Rs. 50,000, Freight earned (Return) Rs. 35,000.

Address Commission 5% on outward freight and 4% on return freight, Passage money (outward) Rs. 5,000, Primage is 5% on freight, Stores on hand Rs. 1,500. Manager is entitled to a commission of 5% on net profit earned.

Ans. Net profit after Manager's Commission Rs. 11,310; Manager's Commission $11,875 \times \frac{5}{105} =$ Rs. 565; Expenses relating to incomplete Journey Rs. 22,970.

3. शिव पार्वती समुद्री जहाज ने 1 जनवरी, 2007 को मुम्बई से विशाखापट्नम तथा वापसी की यात्रा आरम्भ की। 31 मार्च, 2007 को जबकि अन्तिम खाते बन्द किये जाते हैं वापसी यात्रा पूरी नहीं हो पाई थी। जहाज का बीमा 2% वार्षिक की दर से कराया गया था, बीमित राशि 10,00,000 रु थी। इस विशिष्ट साहस के लिए आप एक समुद्री यात्रा खाता निम्न विवरण की सहायता से तैयार कीजिए

Shiv Parvati a ship started its Voyage on 1st January, 2007 from Mumbai to Vishakhapatnam and back. On 31st March, 2007, on which date the final accounts are closed, the return Voyage was still in progress. The ship was insured for Rs. 10,00,000 at 2% per annum. From the following particulars, you are required to prepare Voyage Account for this specific venture

	Rs.
मजदूरी एवं वेतन (Wages and Salaries)	50,000
स्टोर्स क्रय (Stores purchased)	20,000
बन्दरगाह व्यय (Port charges)	10,000
डीजल एवं ईंधन (Diesel and Fuel)	25,000
विविध व्यय (Sundry charges)	4,000
प्रति वर्ष ह्रास (Depreciation per annum)	5%
भाड़ा अर्जित- बाह्य [Freight earned (outward)]	1,50,000
भाड़ा अर्जित– आन्तरिक [Freigh earned (inward)]	60,000
यात्रा राशि बाह्य [Passage money (outward)]	30,000
स्टोर्स 31 मार्च को (Stores on hand on 31st March)	2,000
एड्रेस कमीशन (Address Commission on) :	
बाह्य भाड़ा (Outward freight)	5%

वापसी भाड़ा (Return freight) 4%

दोनों भाड़ों पर प्राइमेज (Primage on both freights) 5%

मैनेजर को अर्जित लाभ पर 5% कमीशन प्राप्त करने का अधिकार है।

The Manager is entitled to a commission of 5% on profit earned.

Ans. Net Profit after commission Rs. 72,976; Manager's Commission Rs. 3,649; Net profit before commission Rs. 76,625, Expenses relating to incomplete Voyage Rs. 44,020.

NOTES

Hint : (1) स्पष्ट सूचना के अभाव में यह माना गया है कि दिये हुए व्ययों की रकम वहीं तक की है जहाँ तक अपूर्ण यात्रा पूर्ण हो चुकी है। इसीलिए कुल यात्रा 1.5 तथा अपूर्ण यात्रा 0.5 मानी गई है और अपूर्ण यात्रा का अनुपात 0.5/1.5 लिया गया है।

(2) मैनेजर को देय कमीशन की गणना कमीशन देने के उपरान्त बचने वाले लाभ की रकम पर की गई है।

4. Sagar Samrat commenced a voyage on 31st October from Cochin to London and back, on 31st December the voyage was still progress. It carried a consignment of tea on its outward journey and of machinery return on its return Journey. The ship was insured at an annual premium of Rs. 12,000 per annuam. From the following particulars, draw up the Voyage Account :

	Rs.
Port charges	2,800
Coal	15,000
Wages	24,000
Stores purchases	8,400
Sundry Expenses	5,800
Depreciation (annual)	48,000
Freight earned (outward)	50,000
Address Commission 5% on outward and 4% on return freight	35,000
Passage money received (outward journey)	5,000

Primage is 5% on freight

The manager is entitled to a cominision of 5% on the profit earned; stores and coal on hand were valued at Rs. 1,500 on December 31.

सागर सम्राट ने कोचीन से लन्दन तथा वापसी की यात्रा 31 अक्टूबर को प्रारम्भ की। 31 दिसम्बर को वापसी की यात्रा समाप्त नहीं हुई थी। बाहरी यात्रा पर जहाज चाय ले गया तथा वापसी की यात्रा में मशीन लाया। जहाज का 12,000 रु. का वार्षिक का बीमा कराया गया। निम्न विवरण से यात्रा खाता बनाइए.

बन्दरगाह व्यय 2800 रु. कोयला 15,000 रु. मजदूरी 24,000 रु., सामग्री क्रय 8,400 रु., विविध व्यय 5,800 रु., ह्रास (वार्षिक) 48,000 रु. अर्जित भाड़ा (बाहरी) 50,000 रु., अर्जित भाड़ा (वापसी) 35,000 रु.।

बाहरी भाड़े पर 5% तथा वापसी भाड़े पर 4% एड्रेस कमीशन दिया गया। यात्रियों से प्राप्त धनराशि (बाहरी यात्रा) 5,000 रु., प्राइमेज भाड़े का 5%।

मैनेजर को अर्जित लाभ का 5% कमीशन दिया जाना है। 31 दिसम्बर का सामग्री तथा कोयले के स्टॉक का मूल्य 1500 रु. था।

Ans. Profit Rs. 11,310; Manager's Commission Rs. 565, Voyage–in–Progress Rs. 22,970, Reserve for unearned income for incomplete voyage Rs. 36,750. Profit before commission 11,875]

1. Voyage–in–Progress has been calculated as under

	Rs.
Address commission 4% of Rs. 36,750	1470
Add 1/3rd of other expenses (64500 × 1/3)	21,500
	22,970

2. Manager's Commission has been calculated at the rate of 5% of profit after charging such commission i.e. 11,875 × 5/105 = 565

NOTES

8.7 सारांश

- जहाजी यात्रा से आशय है जहाज कम्पनियाँ जो सामुद्रिक मार्ग से यात्रियों और वस्तुओं पर माल को जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती है उसे जहाजी यात्रा कहते है।
- जहाजी यात्रा दो प्रकार से होती है बाह्य एवं आन्तरिक यात्रा।
- जहाजी यात्रा खाते में भाड़ा, प्राइमेज और यात्रा धनराशि आय की मदें होती है। माल को चढ़ाई उतराई, एड्रेस कमीशन, बीमा, बंकर, ह्रास इत्यादि व्यय को मदे है।

8.8 शब्दावली

जहाजी यात्रा, भाड़ा, प्राइमेज, ऐड्रस कमीशन

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–9 दिवालिया लेखे
[INSOLVENCY ACCOUNTS]

NOTES

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 दिवालिया से आशय
9.3 दिवालिया - दिवालियापन के कार्य
9.4 दिवाला कानून तथा कार्य-विधि
9.5 स्थिति विवरण तथा कमी खाता
9.5.1 स्थिति विवरण
9.5.2 स्थिति विवरण का दायित्व पक्ष
9.5.3 स्थिति विवरण का सम्पत्ति पक्ष
9.5.4 कमी या न्यूनत खाता
9.5.5 कमी या न्यूनता खाते का प्रारूप
9.6 स्थिति विवरण तथा चिट्ठे में अन्तर
9.7 कमी खाता तथा लाभ हानि खाता
9.8 सम्पत्ति पर एक से अधिक प्रकार होना
9.9 अरक्षित लेनदारों को मिलने वाले लाभांश की गणना करना
9.10 व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ तथा व्यक्तिगत दायित्व
9.11 लेनदारों को भुगतान किए जाने हेतु प्रयुक्त की जाने वाली सम्पत्तियाँ
9.12 सम्पत्ति का ऐच्छिक हस्तान्तरण
9.13 पुनरीक्षित स्थिति विवरण तथा कमी खाता बनाना
9.14 साझेदारी फर्म का दिवाला
9.15 क्रियात्मक
9.16 सारांश
9.17 शब्दावली

9.0 उद्देश्य

- इस इकाई की अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे -
- दिवालियासे आशय और दिवालियापन के का बता सकेंगे।
- स्थिति विवरण तथा कमी खाता तैयार कर सकेंगे।
- साझेदारी फर्म के दिवालियापन का लेखा कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

प्रत्येक व्यापारी अधिकाधिक लाभ अर्जित करने की आकांक्षा से व्यापार करता है। जैसे-जैसे व्यापार में

NOTES

लाभ होता जाता है, व्यापार की सम्पत्तियाँ बढ़ती जाती हैं तथा सम्पत्तियो का देयताओं पर आधेक्य अर्थात् पूँजी (Excess of assets over liabileties or Capital) में भी वृद्धि होती जाती है। किन्तु यदि दुर्भाग्य से व्यापार में हानि होने लगे तो उसकी सम्पत्तियाँ कम होने लगती है तथा देयताएँ बढ़ने लगती है यह स्थिति भी आ सकती है कि व्यापारिक सम्पत्तियाँ इतनी कम रह जाएँ कि उनसे व्यापारी अपने समस्त दायित्वों का पूर्ण भुगतान करने की स्थिति में न रहे। ऐसी स्थिति में व्यापारी संकट में पड़ जाता है, उसके लेनदार अपने ऋणों का भुगतान चाहते हैं किन्तु वह उन्हें भुगतान करने की स्थिति में नहीं होता। ऐसा व्यापारी दिवाला कानून (Insolvency law) के अन्तर्गत संरक्षण प्राप्त कर सकता है। वह दिवालिया घोषित किये जाने हेतु न्यायालय में आवेदन कर सकता है। इस स्थिति में व्यापारी की समस्त सम्पत्तियाँ न्यायालय द्वारा नियुक्त अधिकारी Official Receiver के अधिकार में आ जाती है जो उन्हें बेचकर प्राप्त होने वाली राशि को व्यापारी के विभिन्न लेनदारों में उनके अधिकारों के अनुसार विपरीत कर देता हे। तत्पश्चात् न्यायालय व्यापारी को विमुक्त दिवालिया (discharged insolvent) घोषित कर देता है अर्थात् व्यापारी का अपने लेनदारो को भुगतान करने का दायित्व समाप्त हो जाता है तथा वह अपना नया जीवन प्रारम्भ कर सकता है।

9.2 दिवालिया से आशय (Insolvent)

भारतीय दिवाला अधिनियमों में दिवालिया शब्द को कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है। भारतीय वस्तु विक्रय अनुबन्ध (Indian Sales of Goods Act) की धारा 2 (8) के अनुसार "एक व्यक्ति तब दिवालिया कहाँ जाता है। जब वह अपने सामान्य व्यापार के सचालन में अपने ऋणों का भुगतान करने में असमर्थ रहता है। चाहे उसने दिवालियापन का कोई कार्य किया हो अथवा नही।"

ब्लेक स्टोन (Black stone) के अनुसार, दिवालियापन ऐसी कार्यवाही है जिसके अन्तर्गत किसी ऋणी द्वारा अपने ऋणों का भुगतान न कर पाने तथा अपने दायित्व को पूरा न कर पाने की स्थिति में न्यायालय द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को नियुक्त करके ऋणी की समस्त सम्पत्तियो को उसके अधिकार में दे दिया जाता है जिन्हें बेचकर समानुपात में लेनदारों मे वितरित कर दिया जाता है।"

भारतीय दिवालिया सम्बन्धी कानून के अन्तर्गत दिवालिया उसे कहा जाता है जो दिवालियापन का कोई कार्य करता है तथा जिसे न्यायालय द्वारा दिवालिया अभिनिर्णीत कर दिया जाता है।

9.3 दिवालिया-दिवालियापन के कार्य (Insolvent—Acts of Insolvency)

दिवालिया वह व्यक्ति होता है जो दिवालियापन का कोई कार्य करे तथा जिसे दिवाला कानून के अन्तर्गत न्यायालय द्वारा दिवालिया घोषित कर दिया जाए। निम्नलिखित कार्य दिवालियापन के कार्य कहलाते है--

(1) यदि वह व्यक्ति 500 रु. तथा इससे अधिक राशि के ऋण का भुगतान नही करता;

(2) यदि वह व्यक्ति अपने लेनदारों का अहित करते हुए, अथवा उनके ऋण का भुगतान विलम्ब से करने के उद्देश्य से, अपनी समस्त सम्पत्तियाँ अथवा उसके कुछ भाग को किसी तृतीय पक्ष को हस्तातरित कर देता है,

(3) यदि वह अपने लेनदारों का अहित करने अथवा उनके ऋण का भुगतान विलम्बित करने के उद्देश्य से भारत से बाहर चला जाता है, या भारत के बाहर रहता है, अथवा अपने निवासस्थान या व्यापार के सामान्य स्थान से चला जाता है, अथवा अपने लेनदारों से सम्बन्ध विच्छेद करने के इरादे से किसी एकान्त स्थान पर चला जाता है,

(4) अपने लेनदारों को ऋण का भुगतान स्थगित कर देने अथवा स्थगित करने के इरादे की सूचना देता है,

(5) यदि उसे न्यायालय की किसी डिक्री (decree) के अन्तर्गत कारावास भेज दिया गया हो, अथवा गिरफ्तार कर लिया गया हो, अथवा डिक्री को क्रियान्वित करने हेतु उसकी कोई सम्पत्ति बेच दी गई हो।

इग्लैण्ड में Insolvent तथा Bankrupt इन दो शब्दों को अलग अलग अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। Insolvent वह व्यक्ति होता है जिसके दायित्व उसकी सम्पत्तियो से अधिक होते है। Bankrupt के दायित्व तो सम्पत्तियों से अधिक होते है, उसे सरकार द्वारा दायित्वों से संरक्षण भी प्राप्त हो गया होता है, भारत में इन दोनों शब्दों का उपयोग समान अर्थों में किया जाता है।

9.4 दिवाला कानून तथा कार्य-विधि (Insolvency law and Procedure)

भारत में दिवाला कानून की तीन प्रमुख अवस्थाएँ हैं (i) ऋणी को दिवालिया घोषित करना तथा उसको संरक्षण देना; (ii) उसकी सम्पत्तियों की वसूली तथा प्राप्त राशि की उसके लेनदारों में न्यायोचित आधार पर वितरित करना तथा (iii) ऋणी को दायित्वों से मुक्त करना।[1]

भारत में दिवाला सम्बन्धी दो अधिनियम हैं—

(क) **प्रेसीडेन्सी टाउन्स दिवाला अधिनियम,** 1909 (Presidency Towns Insolvency Act, 1909) जो बम्बई, कलकत्ता तथ मद्रास शहरों में लागू होता है, तथा

(ख) **प्रान्तीय दिवाला अधिनियम,** 1920 (Provincial Insolvency Act, 1920) जो उपर्युक्त वर्णित तीन प्रेसीडेन्सी नगरों के अतिरिक्त शेष समस्त भारत पर लागू होता है।

इन अधिनियमों के अन्तर्गत दिवाला सम्बन्धी कार्य-विधि संक्षेप में निम्नानुसार है—

(1) **न्यायालय को आवेदन करना**—ऋणी द्वारा पूर्व-वर्णित दिवालियापन के कार्यों में से कोई कार्य करने पर ऋणी स्वयं अथवा 500 रु. से अधिक राशि का उसका कोई लेनदार न्यायालय के समक्ष दिवालिया घोषित किए जाने हेतु आवेदन कर सकता है। न्यायालय आवेदन पत्र की सुनवाई करेगा तथा यदि न्यायालय सन्तुष्ट हो जाता है कि आवेदक को दिवालिया घोषित करना उचित है, तो वह दिवालिया होने का आदेश दे देगा।

(2) **सरकारी आदाता की नियुक्ति**—न्यायालय एक अधिकारी की नियुक्ति कर देगा जिसे सरकारी आदाता या प्रापक (Official Receiver) कहते है। ऋणी की समस्त सम्पत्तियाँ इस अधिकारी के अधिकार मे आ जाती हैं।

(3) **सम्पत्तियों की वसूली**—सरकारी आदाता के अधिकार में ऋणी की सम्पत्तियाँ आ जाने पर वह उन्हें बेचता है तथा उनकी राशि वसूल करता है। आदाता को ऋणी की सम्पत्तियों को बेचने, गिरवी रखने, वाद प्रस्तुत करने या वाद से बचाव करने, व्यापार को चलाने, सम्पत्ति को लेनदारों में विभाजित करने का पूर्ण अधिकार होता है।

(4) **लेनदारों को भुगतान**—दिवालिया के लेनदारों को सरकारी आदाता के समक्ष अपने ऋण प्रमाणित करने होते है। आदाता विभिन्न लेनदारों के अधिकारों के अनुसार (अरक्षित पूर्ण-रक्षित, आंशिक-रक्षित तथा पूर्वाधिकार लेनदार) उनकी सूचियाँ बनाकर सम्पत्तियों की वसूली से प्राप्त राशि लेनदारों में न्यायोचित आधार पर वितरित कर देता है।

(5) **दिवालिया की मुक्ति**—सम्पत्तियों की वसूली से प्राप्त राशि को लेनदारों में वितरण हो जाने के पश्चात् दिवालिया न्यायालय से मुक्ति के लिए आवेदन करता है। न्यायालय मुक्ति का आदेश (order of discharge) प्रसारित कर देता है। इस आदेश का प्रभाव यह होता है कि दिवालिया अपने पूर्व के समस्त लेनदारों को भुगतान करने के दायित्व से मुक्त हो जाता है। अब वह अपना नया जीवन प्रारम्भ कर सकता है, अर्थात् वह नए सिरे से कोई कार्य या व्यापार कर सता है तथा वह पूर्व ऋणों के भार से पूर्णत मुक्त हो जाता है।

9.5 स्थिति विवरण तथा कमी खाता (Statement of Affairs and Deficiency Account)

जब कोई व्यक्ति दिवालिया घोषित किए जाने हेतु आवेदन करता है तो उसे सरकारी आदाता (Official Receiver) के समक्ष (i) स्थिति विवरण तथा (ii) कमी का खाता बनाकर प्रस्तुत करना होता है।

स्थिति विवरण (Statement of Affairs)—स्थिति विवरण (अथवा अवस्था विवरण) ऋणी के विभिन्न दायित्वों तथा सम्पत्तियों की स्थिति प्रकट करता है तथा यह बतलाता है कि विभिन्न सम्पत्तियों को बेचकर प्राप्त होने वाली राशि लेनदारों की अपेक्षा कितनी कम पड़ने की सम्भावना है। स्थिति-विवरण का प्रारूप उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित किया जाता है यह प्राय निम्नलिखित प्रारूप में बनाया जाता है—

Statement of Affairs
(As required by them Indian Insolvency Act)
In the Hight Court of Justice

In Insolvency

To the Insolvent—You are required to fill up carefully and accurately, this Sheet and the several sheets A, B, C, D, E, F, G and H, showing the state of your affairs on the day on which the order of adjudication was made against you, viz , the day of 19

NOTES

Such sheets, when filled up, will constitute your Schedule and must be verified by Oath or Declaration.

Gross Liabilities	Liabilities (as stated and estimated by the Debtor)	Expected to Rank	Assets (as stated and estimated by the Debtor)	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.
....	Unsecured creditors as per list A	....	Propety as per list E viz :	....
	Fully secured creditors as per list B Rs. ...		(a) Cash at Bank	....
	Estimated value of securities....		(b) Cash in Hand	
	Surplus		(c) Cash deposited with solicirot for cost of pettition	..
	Less : Amount carried to list C...........		(d) Stock-in-trade	
	Balance thereof to contra		(e) Machinery	.
....	Partly secured creditors as per list C Rs.		(f) Trade fixtures, fittings, utensils, etc	...
	Less : Estimated value of securities		(g) Furniture	
			(h) Life Policies	..
			(i) Other Property	
		..	Book Debts as per list F Good	.
...	Preferential Creditors as per list D		Doubtful ...	
			Bad	...
	Deducted as per contra		Bills of Exchange or other similar securities on hand as per List G	
			Add. Surplus from securities in the hands of creditors full secured (per contra)	.
			Deduct : Preferential Creditors (per contra)	.
			Deficiency as explained in list H	
...	Rs		Rs.	..

I/we..........make oath, solemnly affirm, and say, that the above statement and the several lists here-into annexed A, B, C, C, E, F, G and H are, to the best of my/our knowledge and belief, full true, and complete statement of my/our affairs on the date of the above-mentioned order of adjudication made against me/us

$\frac{\text{Affirmed}}{\text{Sworn}}$ at ..... this ... day of

before

Commissioner (Signature)..........

(हिन्दी अनुवाद)

स्थिति-विवरण

सकल दायित्व	दायित्व	संभावित शोध्य राशि	सम्पत्तियाँ	पुस्तक मूल्य	अनुमानित प्राप्य राशि
रु.				रु.	रु.
	अरक्षित लेनदार— सूची A के अनुसार		सम्पत्तियाँ सूची E के अनुसार		

	पूर्ण रक्षित लेनदार—		....	.....	.....
	सूची B के अनुसार		....	.....	.....
	रु.		....	.....	.....
....					
	लेनदार		पुस्तकीय ऋण—		
	प्रतिभूतियों का मूल्य.....		सूची F के अनुसार		
	आधिक्य		शोध्य		
	विपरीत ओर को		संदिग्ध	.....	.....
			अशोध्य	.....	.....
	अंशतः रक्षित लेनदार —		प्राप्य बिल—		
	सूची C के अनुसार रु.		सूची G के अनुसार	.....	.....
.....					
	लेनदार		जोड़िए—पूर्ण रक्षित लेनदारों के		.....
	प्रतिभूतियों का मूल्य.....		पास प्रतिभूतियों का		
		.....	आधिक्य—विपरीत ओर से		.....
	पूर्वाधिकार लेनदार— रु		घटाइए—पूर्वाधिकार लेनदार		
			विपरीत ओर से		
	विपरीत ओर से				
	घटाए गए		कमी (Deficiency)—		
			सूची H के अनुसार		.....

जैसा कि उपर्युक्त प्रारुप से स्पष्ट है स्थिति-विवरण के दो पक्ष होते है—(i) दायित्व पक्ष तथा (ii) सम्पत्ति पक्ष।

स्थिति-विवरण का दायित्व पक्ष (Liabilities side of Statement of Affairs)

स्थिति-विवरण के दायित्व पक्ष में ऋणी के विभिन्न लेनदार तथा उनको देय राशियाँ दिखाई जाती है। विभिन्न लेनदारों को 4 वर्गों में बाँटा जाता है तथा प्रत्येक के लिए अलग-अलग सूचियाँ निम्नानुसार बनाई जाती है:

(1) अरक्षित लेनदार — सूची A

(2) पूर्णतः रक्षित लेनदार — सूची B

(3) अंशतः रक्षित लेनदार — सूची C

(4) पूर्वाधिकार लेनदार — सूची D

(1) **अरक्षित लेनदार** (Unsecured Creditors)—सूची A में उन लेनदारों को सम्मिलित किया जाता है जिनके पास ऋणी की कोई सम्पत्ति प्रतिभूति या जमानत के रूप में नहीं होती। व्यापारिक लेनदार (Trade Creditors or Creditors on Open Account), देय पत्र (B / P), बैंक अधिविकर्ष (Bank overdraft), अदत्त व्यय (Out standing Expenses) प्रायः अरक्षित लेनदार होते है। वेतन, मजदूरी एवं किराए की वह राशि जो पूर्वाधिकारी लेनदारों की सीमा से अधिक होती है, भी सूची A में सम्मिलित की जाती है।

महत्वपूर्ण बिन्दु—(i) स्थिति-विवरण के सकल दायित्व (Gross liabilities) वाले खाने में अरक्षित लेनदारों के पुस्तक-मूल्य पर उनके सकल दायित्व की राशियाँ दिखाई जाती है जबकि भुगतान योग्य राशि या अनुमानित शोध्य-राशि (Expected to rank) वाले खाने में लेनदारों को भुगतान की जाने वाली राशि लिखी जाती है।

(ii) **भुनाए गए बिलों** (Bills discounted) के सम्बन्ध में सकल दायित्व वाले खाने में भुनाए गए बिलों की कुल राशि लिखी जाती है जबकि अनुमानित शोध्य-राशि के खाने में केवल वह राशि लिखी जाती है जिसका भुगतान ऋणी को इसलिए करना पड़ेगा कि कुछ बिलों के देय-तिथि पर अनादरित या अप्रतिष्ठित कर दिए जाने की सम्भावना (likely to be dishonoured) है। संक्षेप में सकल दायित्व के अन्तर्गत भुनाए गए बिलों की कुल

राशि तथा अनुमानित शोध्य-राशि में भुनाए गए बिलों पर दायित्व (liability on bills discounted) की राशि दिखायी जाती है।

(iii) **संयोगिक दायित्व** (contingent liabilities)—यदि कोई दायित्व ऐसे हों जो स्थिति-विवरण बनाने की तिथि पर विद्यमान न हों किन्तु भविष्य में किसी घटना के घटित होने पर उत्पन्न हो सकते हों, तो सकल दायित्व वाले खाने में ऐसे संयोगिक दायित्व की कुल राशि तथा अनुमानित शोध्य-राशि मे वह राशि दिखाई जाएगी जिसके भुगतान करना पड़ने की आशंका है। उदाहरण-मान लीजिए ऋणी ने कोई ठेका ले रखा है जिसके अनुबन्ध की एक शर्त यह है कि यदि ठेका पूरा नही किया जा सका तो ऋणी को 5,000 रु. क्षतिपूर्ति ठेकादाता को देनी होगी। दिवाला निकल जाने के कारण ऋणी ठेका पूरा नहीं कर सकता, किन्तु उसे यह आशा है कि उसकी प्रतिकूल परिस्थितियां को दृष्टिगत रखते हुए ठेकादाता केवल 2,000 रु. ही क्षतिपूर्ति माँगेगा। इस उदाहरण में सकल दायित्व के अन्तर्गत 5,000 रु. तथा अनुमानित शोध्य-राशि में 2,000 रु. लिखे जाएँगे।

NOTES

(iv) **पत्नी से ऋण** (Loan form wife)—यदि दिवालिया ने अपने व्यापार के लिए अपनी पत्नी से कोई ऋण ले रखा हो, तो इस सम्बन्ध में दो स्थितियाँ हो सकती है—

(क) पत्नी को अपनी आय का कोई स्वतन्त्र स्रोत न हो तथा उसने अपने पति से प्राप्त धन मे से ही व्यापार को ऋण दे रखा हो इस स्थिति मे पत्नी को स्थगित लेनदार (deferred creditor) माना जाएगा अर्थात् उसे अन्य समस्त लेनदारों को पूर्ण भुगतान कर दिए जाने के पश्चात् भुगतान किया जाएगा। चूँकि दिवाले की स्थिति में अन्य लेनदारों को पूर्ण भुगतान नही मिल पाता, अतः पत्नी को कोई भुगतान नही किया जाएगा। इस स्थिति में, पत्नी का ऋण केवल सकल दायित्व वाले खाने मे लिखा जाएगा, अनुमानित शोध्य-राशि कुछ भी नही होगी।

(ख) पत्नी ने यह ऋण अपने स्वयं द्वारा अर्जित राशि में से अथवा स्त्री-धन में से दिया हो इस स्थिति में पत्नी को अन्य सामान्य लेनदारो की भाँति ही अरक्षित लेनदारो मे सम्मिलित किया जाकर भुगतान किया जाएगा।

(2) **पूर्णतः रक्षित लेनदार** (Fully-Secured Creditors)—सूची B के अन्तर्गत उन लेनदारों को सम्मिलित किया जाता है जो पूर्णतः रक्षित है, अर्थात् जिन्होंने जितनी राशि ऋणी को ऋण दे रखी है उतनी राशि अथवा उससे अधिक मूल्य की ऋणी की कोई सम्पत्ति उनके पास प्रतिभूति (रहन, बन्धक या ग्रहणाधिकार) के रूप में है।

उदाहरण—ऋणी ने 10,000 रु. का बैंक ऋण अपने भवन की जमानत पर लिया। भवन का अनुमानित प्राप्य मूल्य 1,20,000 रु. है। इस स्थिति में बैंक पूर्णतः रक्षित लेनदार है।

पूर्णतः लेनदारो के पास जो सम्पत्ति प्रतिभूति के रूप में होती है उसे बेचकर प्राप्त राशि में से लेनदार को देय राशि का भुगतान कर दिया जाता है तथा आधिक्य (Surplus) की राशि सम्पत्ति पक्ष में ले जाई जाती है जहाँ उसका उपयोग अन्य अरक्षित लेनदारों को भुगतान करने हेतु किया जाता है।

यह भी हो सकता है कि रक्षित लेनदार के पास रखी सम्पत्ति पर किसी अन्य लेनदार का द्वितीय प्रभार (second charge) हो। इस स्थिति मे आधिक्य की समस्त राशि अथवा, यदि द्वितीय प्रभार किसी निश्चित सीमा तक हो, तो उसका केवल उतना भाग उस लेनदार को दे दिया जाएगा तथा शेष राशि ही सम्पत्ति पक्ष में ले जाई जाएगी।

सकल दायित्व वाले खाने मे पूर्णतः रक्षित लेनदारो की कुल राशि दिखाई जाती है जबकि अनुमानित शोध्य राशि मे कोई राशि नही दिखाई जाती क्योंकि इन लेनदारों को पूर्ण भुगतान सम्पत्ति में से मिल जाता है

उदाहरण—मान लीजिए ऋणी ने 18,000 रु. के मूल्य की सम्पत्ति पर बैंक से 10,000 रु. का ऋण लिया। स्थिति-विवरण मे इस लेनदार को निम्नानुसार लिखा जाता है—

Gross Liability	Liabilities		Expected to rank
Rs.		Rs.	Rs.
10,000	Fully—Secured Creditors as per list B		
	Creditor	10,000	
	Value of Security	18,000	
	Surplus to contra	8,000	

(3) **अंशतः रक्षित लेनदार** (Partly-Secured Creditors)—सूची C के अन्तर्गत उन लेनदारो को लिखा जाता है जो पूर्णतः रक्षित नही होते अर्थात् जिनके पास ऋणी की जो सम्पत्ति प्रतिभूति, बन्धक या ग्रहणाधिकार

के अन्तर्गत होती है उसका प्राप्य मूल्य लेनदार को देय राशि से कम होता है। इन लेनदारों को सम्पत्ति से प्राप्त राशि का भुगतान कर दिया जाता है तथा शेष राशि अनुमानित शोध्य-राशि के अन्तर्गत लिखी जाती है जो बाद में कुल अरक्षित लेनदारों में जुड़ जाती है।

उदाहरण—मान लीजिए ऋणों ने अपने स्टॉक की प्रतिभूति पर 10,000 रु. का ऋण लिया तथा स्टॉक का अनुमानित प्राप्य मूल्य 7,000 रु. है। स्थिति-विवरण में इस लेनदार को निम्नानुसार दिखाया जाएगा—

Gross Liability	Liabilities		Expected to rank
Rs.		Rs.	Rs.
10,000	Partly— Secured Creditors as per list C		
	Creditor	10,000	
	Value of Security	7,000	
			3,000

(4) **पूर्वाधिकार या अधिमान्य लेनदार** (Preferential Creditors)—सूची D के अन्तर्गत उन लेनदारों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें दिवाला कानून के अन्तर्गत अन्य लेनदारों की अपेक्षा भुगतान का पूर्वाधिकार प्राप्त होता है अर्थात् इन्हें सबसे पहले भुगतान किया जाता है। चूँकि इन लेनदारों को पहले भुगतान किया जाता है, अतः इन्हें पूर्ण राशि भुगतान में प्राप्त हो जाती है। इन लेनदारों को पूर्ण भुगतान वाले लेनदार (Creditors payable in full) भी कहते हैं।

दिवाला कानून के अन्तर्गत पूर्वाधिकार लेनदार—प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सौलवैन्सी एक्ट तथा प्रॉविन्शियल इन्सौलवैन्सी एक्ट के अन्तर्गत निम्नलिखित लेनदार पूर्वाधिकार लेनदार होते हैं—

पूर्वाधिकार लेनदार (प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सौलवैन्सी एक्ट) (Presidence Towns Insolvency Act)	**पूर्वाधिकार लेनदार** (प्रॉविन्शिल इन्सौलवैन्सी एक्ट के अनुसार) (Provincial Insolvency Act)
(1) वे समस्त राशियाँ जो केन्द्र, राज्य या स्थानीय सरकार को देय हों।	(1) वे समस्त राशियाँ जो केन्द्र, राज्य या स्थानीय सरकार को देय हों।
(2) **वैधानिक दायित्व**—कर्मचारी क्षतिपूर्ति अधिनियम या अन्य किसी अधिनियम के अन्तर्गत देय कोई राशि।	(2) **वैधानिक दायित्व**—कर्मचारी क्षतिपूर्ति अधिनियम या अन्य किसी अधिनियम के अधीन देय कोई राशि।
(3) आवेदन-पत्र देने की तिथि के ठीक पूर्व के चार के अन्तर्गत दिवालिया के यहाँ की हुई नौकरी के सम्बन्ध में वेतन या मजदूरी, जो एक लिपिक (Clerk) के लिए 300 रुपये और एक मजदूर या नौकर के लिए 100 रु. से अधिक नहीं होना चाहिए।	(3) आवेदन-पत्र देने की तिथि के ठीक पूर्व के चार माह के अन्तर्गत दिवालिया के यहाँ की गई नौकरी के सम्बन्ध में वेतन या मजदूरी, जो एक लिपिक (Cleark), मजदूर या नौकर के लिए 20 रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।
(4) भूस्वामी (Landlord) को देय किराया जो एक माह से अधिक का नहीं होना चाहिए।	

महत्त्वपूर्ण बिन्दु—पूर्वाधिकार लेनदारों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दु उल्लेखनीय है—

(i) मजदूरी, वेतन तथा किराया के लेनदार एक निश्चित सीमा तक ही पूर्वाधिकार होते है, ऐसे लेनदारों का जो भाग पूर्वाधिकार नहीं होता उसे सूची A (अरक्षित लेनदार) में सम्मिलित करते है।

(ii) यदि प्रश्न में यह न दिया गया हो कि उपर्युक्त भुगतान कितने व्यक्तियों को अथवा कितनी अवधि के लिए किए जाने है तो इनकी समस्त राशि पूर्वाधिकार मानी जाती है।

(iii) स्थिति-विवरण में पूर्वाधिकार लेनदारों की राशि सकल दायित्व के खाने में दिखाई जाती है। चूंकि इनका भुगतान सम्पत्ति पक्ष में सम्पत्तियों से प्राप्य राशि में से किया जाता है, अतः अनुमानित शोध्य राशि वाले खाने में कोई राशि नहीं लिखी जाएगी।

NOTES

उदाहरण—स्थिति-विवरण मे इन लेनदारो को निम्नानुसार लिखा जाता है—

Gross Liability	Liabilities		Expected to rank
Rs.			Rs.
1,000	Preferenctial Creditors as per list D		
		1,000	
	Deducted per contra		....

Illustration : 1 श्री दुर्गास्वामी ने 1 जनवरी 2006 को दिवाले के लिए आवेदन किया। उनके लेनदारो की स्थिति निम्नानुसार है—

		रु.	रु.
व्यापारिक लेनदार :	रमेश	5,000	
	मोहन	4,000	
	सोहन	3,000	12,000
बैंक अधिविकर्ष			15,000
राज्य विकास निगम से ऋण			10,000
देय बिल			2,000
बकाया आय कर		1,000	
कर्मचारियों को देय राशि			
4 लिपिकों को गत पाँच माह का वेतन 275 रु. प्रति माह प्रति लिपिक की दर से			
10 श्रमिकों की गत दो माह की मजदूरी 150 रु. प्रति माह प्रति श्रमिक की दर से			
भूस्वामी (landlord) को देय किराया (गत दो माह का)			2,000
एक श्रमिक को श्रमजीवी क्षतिपूर्ति अधिनियम के अन्तर्गत देय क्षतिपूर्ति			500

प्राप्य बिल भुनाए गए 10,000 रु. के 1,000 रु. के अतिरिक्त अन्य सभी बिलो के प्रतिष्ठित किए जाने की आशा है।

रमेश का स्कन्ध पर ग्रहणाधिकार था, स्कन्ध का अनुमानित प्राप्य मूल्य 3,000 रु. है।

बैंक अधिविकर्ष के लिए बैंक का मशीनरी पर प्रभार था। मशीनरी का पुस्तक मूल्य 30,000 रु. था किन्तु इसका प्राप्य मूल्य 10% कम होने की सम्भावना है।

राज्य विकास निगम का बैंक के पास रखी मशीनरी पर 11,000 रु. तक द्वितीय प्रभार था।

श्री दुर्गास्वामी के स्थिति-विवरण में इन लेनदारो को विभिन्न सूचियों में कैसे वर्गीकृत किया जाएगा, यदि (क) श्री दुर्गास्वामी बम्बई के निवासी हो, (ख) इन्दौर के निवासी हो?

Solution : List 'A' **Unsecured Creditors**

		Bombay Presidency Towns Act		Indore Previncial Insolvency Act	
		Gross Liability	Expected to rank	Gross Liability	Expected to rank
		Rs	Rs.	Rs.	Rs.
Trade Creditors	Mohans	4,000	4,000	4,000	4,000
	Sohan	3,000	3,000	3,000	3,000
Bills Payable		2,000	2,000	2,000	2,000
Liability on Bills discounted		10,000	1,000	10,000	1,000
Clerks Salaries (non-preferenctial)		4,300	4,300	5,420	5,420
Wages of Workers (non-perferential)		2,000	2,000	2,800	2,800
Rent (non-preferential)		1,000	1,000	2,000	2,000
		26,300	**17,300**	**29,220**	**20,220**

List 'B' **Fully Secured Creditors**

Gross Liability	Liabilities		Expected to rank
Rs.		Rs.	Rs.
15,000	Bank overdraft	15,000	
	Value of Security (Machinery)	27,000	
		12,000	
	Surplus to State Development Corpur.	11,000	
	Surplus to Contra	1,000	—
10,000	Lone from State Development Corpur.	10,000	
	Value of Security (Second Charge on Machinery to the extent of Rs. 11,000)	11,000	
	Surplus to Contra	1,000	—

List 'C' **Partly-Secured Creditors**

Gross Liability	Liabilities		Expected to rank
Rs.		Rs.	Rs.
5,000	Ramesh	5,000	
	Value of Security (stock)	3,000	
			2,000

List 'D' **Preferential Creditors**

	Bombay Presidency Towns Act		Indore Previncial Insolvency Act	
	Gross Liability	Expected to rank	Gross Liability	Expected to rank
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Income Tax	1,000	1,000	1,000	1,000
Compensation	500	500	500	500
Rent for one month 1,000		1,000	—	—
4 Clerk Salaries @ Rs. 300 per clerk	1,200	1,200	-	—
@ Rs. 20 per clerk —		—	80	80
10 Workers wags Rs 100 per worker	1,000	1,000	—	—
@ Rs 20 per worker		—	—	200
	4,700	4,700	1,780	1,780

Illustration : 2 श्री अनसक्सेसफुल 1 जुलाई 2006 को दिवालिया घोषित किए गए। उनके लेनदार निम्नानुसार थे—

(Mr Unsuccessful has been adjudged insolvent on 1st July 2006 His Creditors are as follows)

		Rs.
(i)	Trade Creditors (व्यापारिक लेनदार)	1,00,000
(ii)	Income Tax (आय कर)	1,000
(iii)	Municipal dues (नगरपालिका का बकाया)	800
(iv)	Salary of 4 Clerks for two months (4 लिपिकों का 2 माह का वेतन)	3,000

NOTES

(v)	Wages of 2 labourers for two months	360
(vi)	Private Creditors (व्यक्तिगत लेनदार)	8,000
(vii)	Rent due to landlord for two months (भूस्वामी को देय 2 माह का किराया)	2,400
(viii)	Loan from Bank on tha Security of his Machinery (estimated to realise Rs. 40,000) (बैंक से मशीनरी की प्रतिभूति पर ऋण, अनुमानित प्राप्य मूल्य 40,000)	20,000
(ix)	Creditors holding a Second Charge on Machinery to the extent of Rs. 1,000 (लेनदार जिनका मशीनरी पर 1,000 रु. तक द्वितीय प्रभार है)	4,000

On 1st May he had discounted bills amounting to Rs. 5,000; all of which, with the exception of one bill for Rs. 500, are likely to be honoured.

उसने 1 मई को 5,000 रु. के बिल बट्टे पर भुनाए थे, 500 रु. एक बिल को छोड़कर अन्य सभी बिलों के देय तिथि पर प्रतिष्ठित किए जाने की आशा है।

From the above particulars, prepare liabilities side of his Statement of Affairs.

उपर्युक्त विवरण से उसके स्थिति-विवरण का दायित्व पक्ष बनाइए।

Solution : टिप्पणियाँ **(1) पूर्वाधिकार लेनदार** : प्रान्तीय दिवाला अधिनियम

	रु.
आय कर	1,000
नगरपालिका का बकाया	800
4 लिपिकों का वेतन—अधिकतम राशि 20 रु. प्रतिव्यक्ति	80
2 मजदूरों की मजदूरी—अधिकतम राशि 20 रु. प्रतिव्यक्ति	40
	1,920

(2) अरक्षित लेनदार

व्यापारिक लेनदार	1,00,000
लिपिकों का वेतन जो पूर्वाधिकार नहीं है (3,000—80) =	2,920
मजदूरी जो पूर्वाधिकार नहीं है (360- 40) =	320
किराया	2,400
व्यक्तिगत लेनदार	8,000
भुनाए गए बिलों पर दायित्व	500
	1,14,140

Statement of Affairs As on 1st July 2006

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to rank	Assets	Book Value	Estimated to produce
Rs.			Rs.		Rs.	Rs.
1,18,640	Unsecured Creditors as per list A		1,14,140			
20,000	Jully—secured Creditors as per list B	20,000				
	Value of Security	40,000				
		20,000				
	Surplus to List C	1,000				
	Surplus to Contra	19,000				
4,000	Partly-Secured Creditors as per list C	4,000				
	Value of Security	1,000				

			3,000			
1,920	Preferential Creditors as per list D Deducted per contra	1,920				
1,44,560			**1,17,140**			

NOTES

स्थिति-विवरण का सम्पत्ति पक्ष (Statement of Assets side of Affairs)

स्थिति-विवरण का दूसरा पक्ष सम्पत्ति पक्ष होता है जिसमें ऋणी की उन विभिन्न सम्पत्तियों को दिखाया जाता है जो किसी लेनदार के पास बन्धक नहीं हैं। जो सम्पत्तियाँ किसी लेनदार के पास प्रतिभूति के रूप में होती है उन्हें स्थिति-विवरण के दायित्व पक्ष में पहले ही लिया जा चुका है अतः उन्हें पुनः सम्पत्तियों में सम्मिलित करने का प्रश्न ही नही उठता। हाँ, पूर्ण-रक्षित लेनदारों के पास रखी गई सम्पत्तियों का आधिक्य (surplus from fully secured creditors) अवश्य सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है। स्थिति-विवरण में प्रत्येक सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य (Book vlaue) तथा उससे अनुमानित प्राप्य राशि (estimated to produce) दोनों ही मूल्य दिखाए जाते है।

ऋणी की विभिन्न सम्पत्तियों को E, F तथा G तीन सूचियों में सम्मिलित किया जाता है। इन सूचियों का विवरण निम्नानुसार है—

(1) **सम्पत्तियाँ** (Property)—सूची E के अन्तर्गत ऋणी के देनदारों तथा प्राप्य बिलों को छोड़कर अन्य सम्पत्तियों को सम्मिलित किया जाता है। सूची E में सम्मिलित की जाने वाली सम्पत्तियों के कुछ उदाहरण है— (i) हस्तस्थ तथा बैकस्थ रोकड (ii) व्यापारिक स्कन्ध, फर्नीचर, भूमि एवं भवन, विनियोग आदि ऐसी अन्य सम्पत्तियाँ जो रक्षित लेनदारों के प्रभार से मुक्त है तथा विभाजन-योग्य हैं अर्थात् जिनका उपयोग ऋणी के लेनदारों को भुगतान हेतु किया जा सकता है।

(2) **पुस्तकीय ऋण** (Book Debts)—सूची F के अन्तर्गत ऋणी के देनदारों को (i) उत्तम या शोध्य (Good) (ii) संदिग्ध (Doubtful) तथा (iii) अशोध्य या डूबत (Bad) तीन श्रेणियों मे वर्गीकृत करके लिखा जाता है। उत्तम देनदारों में पूर्ण राशि प्राप्त होने की सम्भावना होती है, संदिग्ध देनदारो से आंशिक भुगतान ही प्राप्त होने की सम्भावना होती है, जबकि अशोध्य देनदारों से कुछ भी भुगतान मिलने की सम्भावना नही होती।

(3) **प्राप्य बिल तथा प्रतिज्ञा पत्र** (Bills of Exchange and Promissory Note)—सूची G के अन्तर्गत उन विनिमय-विपत्रों को लिखा जाता है जो बट्टे पर भुनाए नहीं गए हैं तथा जिनका भुगतान स्थिति-विवरण बनाए जाने तक देय नही हुआ है। ऐसे विनिमय-विपत्रों की कुल राशि तथा देय-तिथि पर सभावित प्राप्य राशि स्थिति-विवरण में दिखाई जाती है।

स्थिति-विवरण के सम्पत्ति पक्ष में उपर्युक्त प्रकार से सूची E, F तथा G के अन्तर्गत ऋणी की विभिन्न सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य तथा उनसे प्राप्य सम्भावित राशियों को दिखाया जाता है। इसके पश्चात् इनका योग लगा दिया जाता है। इस योग में पूर्ण-रक्षित लेनदारों से उपलब्ध आधिक्य (Surplus from Fully-Secured Creditors) को दायित्व पक्ष से लाकर जोड दिया जाता है। इस प्रकार वह कुल राशि ज्ञात हो जाती है जो ऋणी के पूर्वाधिकार लेनदारों तथा अरक्षित लेनदारों को भुगतान किए जाने हेतु उपलब्ध होती है।

उपर्युक्त राशि में से सर्वप्रथम पूर्वाधिकार लेनदारों को देय राशि दायित्व पक्ष से लाई जाकर (Preferential Creditors as per contra) घटा दी जाती है। शेष राशि अरक्षित लेनदारों (सूची A तथा सूची C का अरक्षित भाग अर्थात् स्थिति-विवरण के दायित्व पक्ष के अनुमानित शोध्य-राशि वाले खाने का योग) को भुगतान हेतु उपलब्ध होती है। दिवालेपन की स्थिति में यह उपलब्ध राशि लेनदारों को देय राशि से कम होती है। अतः इनका अन्तर कमी या न्यूनता (Dificiency) कहलाती है। कमी की राशि लिखकर स्थिति-विवरण के दोनों पक्षों का योग बराबर करके लिख दिया जाता है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है। कि स्थिति-विवरण बनाने का उद्देश्य यह स्पष्ट करना होता है कि दिवालिया के विभिन्न लेनदारों का किस प्रकार भुगतान प्राप्त हो सकेगा तथा अरक्षित लेनदारों को भुगतान करने के लिए कितनी कमी (deficiency) पड़ेगी। यह कमी किस प्रकार उत्पन्न हुई है, इसकी व्याख्या स्थिति-विवरण में नहीं की जाती। इस हेतु कमी खाता (Deficiency Account) बनाया जाता है, जिसे सूची H कहते है।

Illustration : 3 श्री चंद्रप्रसाद ने 31 दिसम्बर 2006 को दिवाले का आवेदन प्रस्तुत किया। उनकी सम्पत्तियों एव दायित्वों की स्थिति निम्नानुसार थी

NOTES

	रु.
व्यापारिक लेनदार	10,000
देय बिल	2,000
बैंक ओवरड्राफ्ट	1,000
मशीनरी (प्राप्य मूल्य 2,000 रु.)	4,000
स्टॉक (प्राप्य मूल्य 5,000 रु.)	8,000
रोकड़	500
पुस्तकीय ऋण : अच्छे	400
संदिग्ध (प्राप्य मूल्य 50 रु.)	150
डूबत	50
फर्नीचर (प्राप्य मूल्य 1,000 रु.)	1,500
भुनाए गए बिल (अनुमानित दायित्व 1,000 रु.)	1,500
आय कर	500
प्राप्य बिल	500

बैंक का मशीनरी पर गृहणाधिकार था तथा व्यापारिक लेनदारों में सम्मिलित 2,000 रु. के एक लेनदार का फर्नीचर पर अधिकार था। श्री बद्रीप्रसाद का स्थिति-विवरण बनाइए।

Solution : टिप्पणी—

	Gross Liability	Expected to rank
	Rs.	Rs.
(1) अरक्षित लेनदार (10,000−2,000) =	8,000	8,000
देय बिल	2,000	2,000
भुनाए गए बिल पर दायित्व	1,500	1,000
	11,500	11,000

Statement of Affairs As on 31st December 2006

Gross Liabilities	Liabilities (as stated and estimated by the Debtor)		Expected to Rank	Assets (as stated and estimated by the Debtor)	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs		Rs.	Rs.
11,500	Unsecured Creditors as per list A		11,000	Assets as per list E		
				Stock	8,000	5,000
				Cash	500	500
1,000	Fully-Secured Creditors as per list B	1,000		Book Debts as per list F		5,500
	Value of Security	2,000		Good	400	400
	Surplus to Contra	1,000		Doubtful	150	50
			–	Bad	50	—
2,000	Partly-Secured Creditors as per list C	2,000				5,950
	Value of Security	1,000	1,000	Bills of Exchange as per list G	500	500
500	Preferential Creditors as per list D	500				6,450
	Deducted per Contra		—	Add : Surplus per Contra		1,000
						7,450

			Deduct : Preferenttial Creditors as per Contra		500
					6,950
			Deficiency as per list H		5,050
15,000		**12,000**			**12,000**

NOTES

कमी या न्यूनता खाता (Deficiency Account)

ऋणी को अपने स्थिति-विवरण के साथ-साथ एक कमी खाता भी न्यायालय में प्रस्तुत करना होता है। यद्यपि यह एक खाते की तरह बनाया जाता है, तथापि इसमें जो प्रविष्टियाँ होती हैं। उनकी द्वि-प्रविष्टि नहीं होती तथा To एवं By शब्दों को प्रयोग भी नहीं किया जाता। इसे सूची H कहते है तथा इसे बनाने का उद्देश्य यह स्पष्ट करना होता है कि स्थिति-विवरण में अनुमानित में कमी कैसे उत्पन्न हुई।

कमी खाते के दो पक्ष होते है—बाँया पक्ष तथा दाँया पक्ष। बाँयें पक्ष में सर्वप्रथम ऋणी अपनी पूँजी लिखता है। तत्पश्चात् जो भी मदें पूँजी मे वृद्धि करती है। (उदाहरण : पूँजी पर ब्याज, व्यापार के स्वामी को दिया गया वेतन, व्यापारिक लाभ, सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि के कारण उसकी वसूली पर लाभ, व्यक्तिगत सम्पत्तियों के मिलने के कारण व्यापार को लाभ तथा किसी दायित्व के कम हो जाने के कारण होने वाला लाभ) उन्हें कमी खाते के बाये पक्ष में दिखाते हैं। जो मदे व्यापार की पूँजी को कम करती है (उदाहरण : आहरण, व्यापारिक हानियाँ, सम्पत्तियों की वसूली पर होने वाली हानियाँ, अन्य हानियाँ (जैसे सट्टे की हानि, स्टॉक एक्सचेंज की हानियाँ, आदि) तथा व्यक्तिगत दायित्वों का व्यापार द्वारा भुगतान करना पड़ने अथवा किसी नए दायित्व के उत्पन्न हो जाने के कारण होने वाली हानि) कमी खाते के दाएँ पक्ष में दिखाते है।

उपर्युक्त प्रविष्टियों के कर दिए जाने पर कमी खाता के दाएँ पक्ष के योग से बाएं पक्ष का योग कम होगा—यह अन्तर उस कमी (deficiency) के बराबर होगा जो स्थिति-विवरण (Statement of Affairs) में अनुमानित की गई थी। कमी की इस राशि की बाएँ पक्ष में लिखकर कमी खाते के दोनों पक्षों का योग बराबर कर दिया जाता है।

कमी खाते का प्रारुप (From of Deficiency Account)

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Capital (Excess of Assets over liabilities)	...	Drawings	....
Interest on Capital		Trading Losses	
Salary	...	Speculation or other losses	
Trading Profit	..	Loss on Realisation or Assets	
Private Assets	.	....	
Profit on Realisation of Assets	...	....	
Exemption from liabilities	...	....	
Deficiency as per Statement of Affairs		Unsecured libilities	

हिन्दी रुपान्तरण **कमी खाता**

	रु.		रु.
पूँजी (सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य)		आहरण	
पूँजी पर ब्याज		व्यापारिक हानियाँ	
वेतन		सट्टा या अन्य हानियाँ	
व्यापारिक लाभ		व्यक्तिगत दायित्व	
व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ		सम्पत्तियों की वसूली पर हानियाँ	
सम्पत्तियों की वसूली पर लाभ			
दायित्व से मुक्ति		.	
कमी—स्थिति विवरण के अनुसार		नए दायित्व	

उल्लेखनीय—(1) कमी खाते का कोई निर्धारित प्रारुप नहीं है, अतः इसकी मदों का क्रम आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है।

NOTES

(2) कमी खाते में प्रायः ऋणी वह पूँजी दिखाता है जिससे उसने व्यापार प्रारम्भ किया था। इस स्थिति में व्यापार प्रारम्भ करने के वर्ष से कमी खाता बनाए जाने तक समस्त वर्षों के पूँजी पर ब्याज व्यापारिक लाभ। हानि, स्वामी या साझेदार को वेतन तथा अन्य हानियों की कुल राशियों को कमी खाते में लिखा जाता है।

(3) दिवाला निकलने की दशा में ऋणी की विभिन्न सम्पत्तियों को बेचना होता है। इस स्थिति में प्रत्येक सम्पत्ति की वसूली पर अनुमानित लाभ या हानि को कमी खाते में लिखा जाता है। इस लाभ या हानि की गणना स्थिति-विवरण में दिखाए गए विभिन्न सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य (Book values) तथा उनसे अनुमानित प्राप्य राशि (Estimated to produce) को दृष्टिगत रखते हुए की जाती है। यदि किसी सम्पत्ति का अनुमानित प्राप्य मूल्य उसके पुस्तक मूल्य से कम हो तो हानि होगी तथा अनुमानित प्राप्य मूल्य पुस्तक मूल्य से अधिक होने पर लाभ होगा।

9.6 स्थिति-विवरण तथा चिट्ठे में अन्तर
(Difference between a Statement of Affairs and Balance Sheet)

(1) स्थिति-विवरण दिवाले के समय बनाया जाता है जबकि चिट्ठा प्रत्येक लेखा-अवधि के अन्त में बनाया जाता है।

(2) स्थिति-विवरण बनाने का उद्देश्य यह अनुमान लगाना होता है कि ऋणी के लेनदारों को भुगतान हेतु कितनी कमी (Deficiency) पड़ेगी, जबकि चिट्ठा किसी एक निर्दिष्ट तिथि को व्यापार की आर्थिक स्थिति (सम्पत्तियों, दायित्वों तथा पूँजी की स्थिति) प्रकट करता है।

(3) स्थिति-विवरण दिवाला अधिनियम के अन्तर्गत निर्धारित प्रारूप में बनाया जाता है जिसके अन्तर्गत विभिन्न लेनदारों को सूची A, B, C तथा D के अन्तर्गत तथा सम्पत्तियों को सूची E, F तथा G के अन्तर्गत वर्गीकृत करके दिखाया जाता है, जबकि चिट्ठा में सम्पत्तियों तथा दायित्वों को तरलता अथवा स्थायित्व के क्रम में दिखाते है।

(4) स्थिति-विवरण में विभिन्न दायित्वों के सकल दायित्व (Gross Liabilities) तथा सम्भावित शोध्य राशियाँ (Expected to rank) तथा सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य (Book Values) तथा अनुमानित प्राप्य मूल्य (Estimated to produce) दिखाये जाते है जबकि चिट्ठा में विभिन्न सम्पत्तियां एवं दायित्व पुस्तक-मूल्य पर ही दिखाये जाते है।

(5) स्थिति-विवरण में व्यापारिक दायित्वों तथा व्यापारिक सम्पत्तियों के अतिरिक्त दिवालिया के लेनदारों में विभाजनीय अन्य व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ, व्यक्तिगत दायित्व, सम्भावित दायित्व आदि भी दिखाये जाते है।

(6) स्थिति-विवरण में यह दिखाया जाता है कि दिवालिया ऋणी के विभिन्न लेनदारों को कितनी राशि किस प्रकार से भुगतान की जा सकेगी, चिट्ठा ये सूचनाएँ प्रकट नहीं करता।

(7) स्थिति-विवरण में केवल उन मूर्त सम्पत्तियों (tangible assets) को ही दिखाया जाता है जिन्हें वसूल किया जा सकेगा, जबकि चिट्ठे में मूर्त तथा अमूर्त ऐसी सभी सम्पत्तियों को दिखाया जाता है जिन पर व्यापार का स्वामित्व है।

9.7 कमी खाता तथा लाभ-हानि खाता में अन्तर
(Difference between Deficiency Account and Profit & Loss Account)

(1) कमी खाता दिवाला खातों का एक भाग है जबकि लाभ-हानि खाता अंतिम खाते का एक भाग है।

(2) कमी खाता बनाने का उद्देश्य दिवालिया ऋणी की कमी (अर्थात् लेनदारों को भुगतान करने हेतु सम्पत्तियों की अपर्याप्तता) के कारण स्पष्ट करना होता है जबकि लाभ-हानि खाता किसी खाता व्यापार के वित्तीय

परिणाम (लाभ या हानि) ज्ञात करने के उद्देश्य से बनाया जाता है।

(3) कमी खाते में आरम्भिक पूँजी तथा व्यापार प्रारम्भ करने से दिवाले तक की अवधि के पूँजी पर ब्याज, आहरण, व्यापारिक लाभों तथा हानियों, अन्य हानियों, सम्पत्तियों की वसूली पर लाभ-हानियों, व्यापार को प्राप्त निजी सम्पत्तियों एवं दायित्वों आदि को दिखाया जाता है, जबकि लाभ-हानि खातों में किसी लेखा-अवधि की व्यापारिक आय तथा व्ययों को दिखाया जाता हे।

(4) कमी खाता के दो पक्ष बाएँ तथा दाएँ होते है तथा इसे एक सूची (H) के रूप में बनाया जाता है जबकि लाभ-हानि खाते के डेबिट तथा क्रेडिट दो पक्ष होते हैं।

(5) कमी खाते में दोनों पक्षों के अन्तर की राशि कमी (Deficiency) होती है जिसका अनुमान स्थिति-विवरण में लगाया गया होता है, जबकि लाभ-हानि खाते के दोनो पक्षों का अन्तर शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि होती है जिसे चिट्ठे में ले जाते है।

Illustration : 4 श्री असफल ने दिवालिया घोषित किए जाने हेतु आवेदन किया। 31 दिसम्बर, 2006 को उसकी स्थिति निम्नानुसार थी—

	रु.
व्यापारिक लेनदार	52,500
वेतन एवं कर	2,800
बैक ऋण (35,000 रु. के पुस्तक मूल्य के स्टॉक पर गृहणाधिकार)	17,500
बैक में रोकड़	60
हस्तस्थ रोकड़	40
मशीन (प्राप्य मूल्य 3,500 रु.)	7,000
स्टॉक (प्राप्त मूल्य 31,500 रु.)	10,000
देनदार : अच्छे	52,500
संदिग्ध (प्राप्य मूल्य 4,000 रु.)	14,500
अशोध्य	शून्य
प्राप्य बिल (5,250 रु. के अप्रतिष्ठित होने की सम्भावना)	8,750

भुनाए गए बिल 10,500 रु. के जिसमें से 3,500 रु. के एक बिल के अप्रतिष्ठित किए जाने की संभावना है।

देय बिल	17,500
फर्नीचर	7,000

श्री असफल ने 3 वर्ष पूर्व 43,750 रु. की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। उसने 17,500 रु. प्रति वर्ष आहरण किए तथा इस अवधि में उसे 18,300 रु. का लाभ हुआ।

श्री असफल का स्थिति-विवरण तथा कमी खाता बनाइए।

Solution : टिप्पणीयाँ—

		रु.	रु.
(1) सूची A	व्यापारिक लेनदार	52,500	52,500
	भुनाए गए बिल	10,500	3,500
	देय बिल	17,500	17,500
		80,500	73,500

(2) बैक के ग्रहणाधिकार के अन्तर्गत स्टॉक का प्राप्य मूल्य $\left(\frac{31,500}{52,500} \times 35,000\right) = 21,000$ रु.

(3) शेष स्टाक (52,500—35,000) = 17,500 रु., प्राप्त मूल्य $\left(\frac{31,500}{52,500} \times 17,500\right) = 10,500$ रु.— सूची E में दिखाया जाएगा।

NOTES

Statement of Affairs As on 31st December, 2006

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
80,500	Unsecured Creditor as		Property as per list E		
	per list A	73,000	Bank	60	60
	Fully-Secured Creditiors		Cash	40	40
17,500	as per list B 17,500		Machinery	7,000	3,500
	Value of Security 21,000		Stocks	17,500	10,500
	Surplus Contra 3,500	—	Furniture	7,000	7,000
	Partly-Secured Creditors		Book Debts as per list F		21,000
	as per list C Nil	—	Good	10,000	10,000
			Doubtful	14,000	4,000
	Preferential Creditiors as		Bill of Exchange as		35,100
	per list D 2,800	—	per list G	8,750	3,500
2,800	Deducted per Contra		Add : Surplus per		38,600
			Contra		3,500
			Deduct : Preferential		42,100
			Creditiors as per Contra		2,800
					39,300
			Definciency as per list H		34,200
1,00,800		73,500			**73,500**

Deficiency Account (List H)

	Rs.		Rs.
Capital	43,750	Drawing (17,500 × 3)	52,500
Profit	18,300	Loss on Realisation of assets	
Deficiency	34,200	Machinery	3,500
		Stock	21,000
		Debtors	10,500
		B/R	5,250
		Liability on Bills discounted	3,500
	96,250		96,250

बोध प्रश्न

1. दिवालिया किसे कहते है?

2. भारत में दिवाला कानून के विषय म बताइये?

3. अवस्था विवरण से क्या आशय है?

....

....

....

NOTES

सम्पत्ति पर एक से अधिक प्रभार होना (More than one charges on any Asset)

किसी पूर्ण-रक्षित लेनदार के पास रखी सम्पत्ति पर किन्हीं अन्य लेनदारों को प्रभार भी हो सकता है अर्थात् एक सम्पत्ति एक से अधिक लेनदारों से लिये गये ऋणों की प्रतिभूति हो सकती है। इस स्थिति में—

(1) विभिन्न लेनदारों के प्रभार का क्रय प्रथम प्रभार (First Charge) या द्वितीय प्रभार (Second Charge) निर्धारित कर दिया जाता है।

(2) सम्पत्ति के अनुमानित प्राप्य मूल्य में से सर्वप्रथम प्रभार रखने वाले लेनदार को भुगतान किया जाता है। यदि द्वितीय प्रभार के सम्बन्ध मे प्रभार को अधिकतम राशि की कोई सीमा नहीं लगाई गई हो तो प्रथम प्रभार के पश्चात् शेष बचने वाला समस्त आधिक्य द्वितीय प्रभार के लेनदार को मिल जाता है। इस स्थिति में सम्पत्ति पक्ष मे कोई आधिक्य नही ले जाया जाता, किन्तु यदि द्वितीय प्रभार के सम्बन्ध में कोई अधिकतम सीमा हो, तो केवल उतना आधिक्य ही द्वितीय प्रभार के लेनदार को भुगतान हेतु उपलब्ध होगा, शेष आधिक्य सम्पत्ति पक्ष में ले जाया जाएगा।

Illustration : 5 Raghunath Rai finds himself insolvent on 31st December, 2006. His position was as follows:

Sundry Debtors—Good Rs. 5,000 Doubtful Rs. 30,000 (Estimated to produce Rs. 25,000) Bad Rs. 15,000

	Rs.
1,000 shares in Asian Co. Ltd. (Estimated to produce Rs. 15,000)	25,000
Shares in Alexander Co. Ltd. (Estimated to realise Rs. 75,000)	91,500
Loss through betting	2,000
Creditors on open Account	85,600
Creditors holding a second charge on the Shares in Alexander Co. Ltd. to the extent of Rs. 25,000	30,000
Creditors holding a first charge on the Shares in Alexander Co. Ltd	40,000
Bill Payable	4,000
Creditors for Rent, Rates, Taxes wages etc. (of which Rs. 4,600 are preferential)	5,000
Furniture & Fixtures (Estimated to realise Rs. 3,000)	15,000
Cash in hand and at Bank	550
Stock-in-Trade (Estimated to realise Rs. 30,450)	35,950
Bills Receivable (Estimated to realise Rs. 7,000)	9,000

Raghunath Rai started With a Capital of Rs. 70,000 on 1st Januray. 2004 and the business resulted in a Profit of Rs. 8,800 and Rs. 10,100 for the first two years respectively and in a loss of Rs. 5,000 for the third year, after allowing Rs. 3,500 as interest on Capital each year. Withdrawals for the whole period amounted to Rs. 30,000.

Prepare a Deficiency Account and a statement of affairs

31 दिसम्बर, 2006 को रघुनाथ राय दिवालिया हो गया। इसकी स्थिति निम्न थी

विविध देनदार अच्छे 5,000 रु., संदिग्ध 30,000 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 25,000 रु.)

	रु.
डूबत 15,000 रु.	
एशियन कम्पनी लिमिटेड 1,000 अंश (अनुमानित प्राप्य राशि 15,000 रु.)	25,000
अलैक्जेण्डर कम्पनी लि. में अंश (अनुमानित प्राप्त राशि 75,000 रु.)	91,500

NOTES

जुए में हानि	2,000
लेनदार अरक्षित	85,600
ऐसे लेनदार जिनका अलैक्जेण्डर कम्पनी लि. के अशों पर 25,000 रु. की सीमा तक द्वितीय प्रभार है	30,000
लेनदार जिनका अलैक्जेण्डर कम्पनी लि. के अंशो पर प्रथम प्रभार है	40,000
देय बिल	4,000
लगान, कर एवं मजदूरी के लिए लेनदार (जिनमें से 4,600 रु. के पूर्वाधिकार है)	5,000
फर्नीचर एव फिक्चर्स (अनुमानित प्राप्य राशि 3,000 रु.)	15,000
रोकड़ हस्तस्थ तथा बैंक में	550
व्यापारिक रहतियां (अनुमानित प्राप्य राशि 30,450 रु.)	35,950
प्राप्य बिल (अनुमानित प्राप्य राशि 7,000 रु.)	9,000

1 जनवरी 2004 को रघुनाथ राय की पूंजी 70,000 रु. थी। उसे प्रथम दो वर्षो में 8,800 रु. तथा 10,000 रु. का लाभ हुआ एवं तृतीय वर्ष में 5,000 रु. की हानि हुई। ये लाभ एवं हानि प्रतिवर्ष 3,500 रु. पूंजी पर ब्याज लगाने के बाद हुई। सम्पूर्ण अवधि के आहरण 30,000 रु. थे।

स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइए।

Solution : टिप्पणीयाँ—(1) अरक्षित लेनदार—

	रु.	रु.
लेनदार	85,600	85,600
देय बिल	4,000	4,000
कर, दर तथा मजदूरी का वह भाग जो पूर्वाधिकार नही है	400	400
	90,000	90,000

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditor as			Property as per list E		
90,000	per list A		90,000	Shares (Asian)	25,000	15,000
	Fully-Secured Creditors			Stock	35,950	30,450
40,000	as per list B	40,000		Furniture	15,000	3,000
	Value of Security	75,000		Cash	500	500
	To List C	35,000		Book Debts as per list F		49,000
	(Second charge)	25,000		Good	5,000	5,000
	Surplus to			Doubtful	30,000	25,000
	contra	10,000		Bad	15,000	
30,000	Partly-Secured Creditors			Bills of Exchange as per		79,000
	as per list C	30,000		list G	9,000	7,000
	Value of Security	25,000	5,000			86,000
4,600	Preferential Creditors as			Add : Suplus per Contra		10,000
	per list D	Rs. 4,600		Deduct : Preferantial		96,000
	Deducted per Contra			Deditors per Contra		4,600
						91,400
				Deficiency as per list H		3,600
1,64,600			95,000			95,000

Deficiency Account (List H)

	Rs.		Rs.
Capital	70,000	Loss : III year	5,000
Profit : I Year	8,800	Drawings	30,000
II Year	10,100	Loss through betting	2,000
Interest on Capital (3,500 × 3)	10,500	Loss on Realisation of assets	
Deficiency	3,600	Shares (Assian Co.)	10,000
		Shares (Alexandar Co.)	16,500
		Furniture	12,000
		Stock	5,500
		B/R	2,000
		Book Debts	20,000
	1,03,000		**1,03,000**

9.9 अरक्षित लेनदारों को मिलने वाले लाभांश की गणना करना (Calculation of dividend payable to Unsecured Creditors)

स्थिति-विवरण के सम्पत्ति पक्ष में सूची E, F तथा G के अन्तर्गत सम्मिलित विभिन्न सम्पत्तियों, देनदारों तथा प्राप्य बिलों से प्राप्य अनुमानित राशि में पूर्ण-रक्षित लेनदारों से प्राप्य आधिक्य (दायित्व पक्ष से लाए गए) को जोड़ कर वह कुल राशि ज्ञात हो जाती है जो पूर्वाधिकार लेनदारों तथा अरक्षित लेनदारों को भुगतान हेतु उपलब्ध होती है (रक्षित लेनदारों को भुगतान उनके पास रखी सम्पत्तियों से प्राप्त हो जाता है।) इस राशि में से सर्वप्रथम पूर्वाधिकार लेनदारों को भुगतान कर दिया जाता है। शेष राशि में से यदि समापन के कोई व्यय हों (cost of winding up) तो पहले उनका भुगतान किया जाएगा। इसके पश्चात् जो राशि शेष बचेगी वह अरक्षित लेनदारों (सूची A + सूची C का अरक्षित भाग) को भुगतान हेतु उपलब्ध होगी। चूँकि यह राशि लेनदारों की देय राशि से कम होती है, अत: उन्हें पूर्ण भुगतान नहीं मिल पाता, उन्हें केवल आंशिक भुगतान ही प्राप्त होता है जिसे लाभांश कहते हैं। अरक्षित लेनदारों को मिलने वाले लाभांश की दर प्रति रुपया अथवा प्रतिशत निम्नानुसार निकाली जा सकती है—

(क) प्रति रुपया लाभांश $= \dfrac{\text{उपलब्ध राशि}}{\text{अरक्षित लेनदार}}$

(ख) प्रतिशत लाभांश $= \dfrac{\text{उपलब्ध राशि}}{\text{अरक्षित लेनदार}} \times 100$

Illustration : 6 Prepare a Statment of Affairs and Deficiency Account of harvilas Dwarka Das of Indore on 10th October, 2005

Cash in hand Rs. 85, Book Debts Rs. 3,472 Estimated to produce Rs. 2,869, Unfinished contaract in had (estimated to produce Rs. 3,000 over and abouve the cost of completing it) Plant, tools, etc cost Rs. 1,880 (estimated to realise Rs. 500); Office furniture (estimated to realise Rs. 25), Stock-in-trade valued at Rs. 1,900; Investments valued at Rs. 6,200 of which deposited with bankers as security for loan of Rs. 5,460, Life Policies for Rs. 2,000 of the estimated surrender value of Rs 1,470 subject to the advances made by insurance company amounting to Rs. 1,420, Unsecured Creditors on trade account Rs. 4,140, Unsecured creditors for cash advanced Rs. 5,308, Mohan for two months wages due to him as clerk Rs. 30, Sohan six minth's salary due to him at Rs. 15 per month, Rent outstanding Rs. 45, Bankers for loan partly secured Rs. 10,134 (estimated value of securities held by bankers, Rs. 7,460, (viz., Investments, Rs. 5,460, and Lease Rs. 2,000)

Capital Account on 1st January, as shown by the books Rs. 189; Loss on Trading from 1st Janurary to 10th Octorber, 2005 Rs. 374, Loss on sale of Investments made on 13th June, Rs. 200, Drawings Rs. 750

Estimating the cost of winding up Rs. 3,005.50, state the amount of dividend which could be expected to be paid to the unsecured creditors.

NOTES

10 अक्टूबर, 2005 को इन्दौर के हर विलास द्वारकादास का स्थिति-विवरण और कमी का खाता बनाइए। हस्तस्थ रोकड़ 85 रु. पुस्तकीय देनदारियाँ 3,473 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 2,869 रु.); असमाप्त अनुबन्ध हाथ में (इसे पूर्ण करने की लागत के अतिरिक्त अनुमानित प्राप्त राशि 3,000 रु.); प्लाण्ट लागत 1,880 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 500 रु.); आफिस फर्नीचर (अनुमानित प्राप्य राशि 25 रु.); व्यापारिक रहतिये का मूल्यांकन 1,900 रु. पर किया गया, विनियोगों का मूल्यांकन 6,200 रु. पर किया गया जिनमें से बैंक के पास ऋण के लिए 5,460 रु. के विनियोग प्रतिभूतियों की तरह जमा थे, जीवन बीमा पॉलिसी की राशि 2,000 रु. इसका अनुमानित समर्पण मूल्य 1,470 रु.; यह पॉलिसी बीमा कम्पनी से लिए हुए 1,420 रु. के अग्रिम के लिए प्रतिभूति की तरह जमा थी, असुरक्षित व्यापारिक लेनदार 4,140 रु.; असुरक्षित लेनदार नकद अग्रिम के लिए 5,308 रु.; मोहन लिपिक को दो माह की मजदूरी 30 रु. देय है, सोहन का 6 माह का वेतन 15 रु. प्रतिमाह के हिसाब से देय है। देय किराया 45 रु.; बैंकों को देय ऋण 10,134 रु. है जो प्रतिभूतियाँ इस ऋण के लिए बैंक को दी गई थीं उनका अनुमानित मूल्य 7,460 रु. (विनियोग 5,460 रु. और पट्टा 2,000 रु.) है। 1 जनवरी को उनकी पूँजी 189 रु. थी; 1 जनवरी से 10 अक्टुबर 2005 तक व्यापार में हानि 374 रु. की हुई। विनियोगों की बिक्री में हानि 13 जून को 200 रु. की हुई; आहरण 750 रुपये।

समापन के व्यय 3,005.50 रु. का अनुमान लगाते हुए; लाभांश को निकालिए जिसे असुरक्षित लेनदारों को दिए जाने की आशा है।

Solution : टिप्पणियाँ—

			रु.
(1)	पूर्वाधिकार लेनदार	मोहन की मजदूरी	20
		सोहन का वेतन	20
			40
(2)	अरक्षित लेनदार :	व्यापारिक लेनदार	4,140
		नकदी लेनदार	5,308
		किराया	45
		मोहन की शेष मजदूरी (30—20)	10
		सोहन का शेष वेतन (90 –20)	70
			9,573

(3) 6,200 रु. के विनियोगों में से 5,460 रु. के विनियोग बैंक के पास प्रतिभूति के रूप में है शेष (6,200—5,460) 740 रु. के विनियोग सूची E में लिए जाएँगे।

(4) जीवन बीमा पॉलिसी व्यापारिक सम्पत्ति है। यदि इसे व्यक्तिगत सम्पत्ति मानकर कमी खाते के डेबिट पक्ष में लिया जाता है तो कमी खाता के क्रेडिट पक्ष में 1,470 रु. का अन्तर आएगा जिसे अप्रकट हानि (Undisclosed loss) मानकर कमी खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाएगा।

Statement of Affairs (As at 10th October, 2005)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs		Rs.	Rs.
9,573	Unsecured Creditors as			Property as per List E		
	per List A		9,573	Cash in Hand		85
1,420	Creditors fully secured			Office Furniture		25
	as per List B Rs	1,420		Investment-in-Trade		740
	Estimated value of			Stock-in-trade		1,900
	securities	1,470		Unfinished Contaract		3,000
				Plant, Tools, etc		500
	Surplus to contra	50		Book Debts as per		6,250
10,134	Partly secured Creditor			List F	3,472	2,869
	as per List C	10,134		Bill of exchange & other		9,119

	Less : Estimated value of securities 7,460	2,674	securities at per List G	—
				9,119
40	Preferential Creditors as per List D deducted as per contra (Mohan Rs. 20 + Sohan Rs. 20) = 40		Surplus as per contra	50
				9,169
			Deduct : Preferenctial Creditors as per contra	40
				9,139
			Deficiency as per List H	3,118
21,167		**12,247**		**12,247**

Deficiency Account (List H)

	Rs.			Rs.
Capital on 1st January	189	Net Losses		374
Deficiency	3,118	Drawing		750
		Bad Debts		603
		Other Realisation Losses :	Rs.	
		Plant and Tools	1,308	
		Investment	200	1,580
	3,307			**3,307**

अरक्षित लेनदारों को लाभाँश की गणना—पूर्णरक्षित एवं पूर्वाधिकार लेनदारों को भुगतान करने के पश्चात् 9,129 रु. उपलब्ध है। इसमें से 3,005.50 रु. समापन के व्यय चुकाने के पश्चात, 6,123.50 रु. बचेंगे जो 12,247 रु. के अरक्षित लेनदारों को भुगतान में दिए जाएँगे। प्रति 1 रु. के लेनदार को 0.50 रु. लाभांश मिलेगा, जैसाकि निम्नलिखित गणना से स्पष्ट है—

∵ 12,247 रु. के लेनदारों को मिलेंगे 6,123.50 रु.

∴ 1 रु. के लेनदार को मिलेंगे $\dfrac{6,123.50}{12,247} = 0.50$ रु.

पत्नी द्वारा दिया गया ऋण—स्थगित लेनदार (Loan from wife—Deferred Creditor)

यह हो सकता है कि ऋणी की पत्नी ने अपने पति के व्यापार को कोई ऋण दे रखा हो। दिवालिया की दशा में दो स्थितियाँ हो सकती है—

(क) **पत्नी की आय का कोई स्वतन्त्र स्रोत हो**—अर्थात् पत्नी ने अपनी स्व-अर्जित आय में से अथवा स्त्री-धन में से ऋण दिया हो—इस स्थिति में पत्नी को अन्य लेनदारों की भाँति ही माना जाएगा तथा उसे लेनदारों की सूची में सम्मिलित किया जाएगा।

(ख) **पत्नी ने पति से प्राप्त आय में से ही ऋण दिया हो**—यदि पत्नी ने ऋण स्व-अर्जित आय में से न देते हुए उस आय में से दिया हो जो उसने पति से प्राप्त की हो तो पत्नी को स्थगित लेनदार (deferred creditor) माना जाएगा, अर्थात् पहले अन्य व्यापारिक लेनदारों को भुगतान किया जाएगा इसके पश्चात् यदि कोई राशि शेष बचे तो ही पत्नी के ऋण का भुगतान किया जाएगा। व्यवहार में, चूँकि दिवालिया की सम्पत्तियाँ उसके व्यापारिक लेनदारों को पूर्ण भुगतान करने हेतु ही पर्याप्त नहीं होती, अतः पत्नी को कोई भुगतान प्राप्त नहीं होगा।

पत्नी को स्थगित-लेनदार माने जाने की दशा में (क) पत्नी के ऋण को केवल '[illegible] दायित्व' में लिखा जाएगा, सम्भावित शोध्य राशि में सम्मिलित नहीं किया जाएगा, तथा (ख) चूँकि इस ऋण का भुगतान नहीं करना होता अर्थात् एक व्यापारिक दायित्व कम हो जाता है, अतः इसे कमी खाते के [illegible] पक्ष में दिखाया जाएगा।

यदि प्रश्न में पत्नी के ऋण का स्रोत स्पष्ट न हो तो छात्र उपर्युक्त-वर्णित दो स्थितियों में से किसी एक स्थिति को मानकर प्रश्न हल कर सकते है, किन्तु उन्हें 'टिप्पणी' देकर अपनी मान्यता स्पष्ट कर देनी चाहिए।

NOTES

Illustration : 7 From the following figures, prepare a Statement of Affairs and a Deficiency Account as at 31st December, 2005. Assume that the Stock realizes Rs. 666; Fixtures and Fittings, Rs. 282, and Bad and Doubtful Debts, Rs, 600. On 1st January, 2003 the debtor commenced business with a capital of Rs. 6,350. His profits for the year, 2003 and 2004 amounted to Rs. 5,554. He suffered a loss of Rs. 2,500 in 2005. His total drawings upto 31st December, 2005 were Rs. 9,000.

	Rs.
Cash	230
Stock in-Trade	1,000
Debtors—Good	7,000
Debtors—Doubtful	1,800
Debtors—Bad	1,500
Fixtures and Fittings	564
Investemnts in shares	500
Unsecured Creditors (including Rs. 1,000 of his wife)	13,000
Secured Creditors	2,500
Value of securities held by Secured Creditors	3,500
Preferential Claims for Rent, Rates, Taxes etc.	190

निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर एक स्थिति-विवरण तथा कमी खाता 31 दिसम्बर, 2005 को बनाइए। रहतिये पर अनुमानित प्राप्य राशि 666 रु. तथा फिक्चर्स एवं फिटिंग्स का अनुमानित प्राप्य मूल्य 282 रु.। अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों पर प्राप्य राशि 600 रु.। 1 जनवरी, 2003 को ऋणी ने अपना व्यापार 6,350 रु. की पूँजी से प्रारम्भ किया उसके 2003 और 2004 वर्षों के लाभ 5,554 रु. थे। उसने 2005 में 2,500 रु. की हानि उठायी। 31 दिसम्बर, 2005 तक के उसके कुल आहरण 9,000 रु. के थे।

	रु.
रोकड़	230
व्यापारिक रहतिया	1,000
देनदार—अच्छे	7,000
देनदार—संदिग्ध	1,800
देनदार—डूबत	1,500
फिक्चर्स एवं फिटिंग्स	564
अंशों में विनियोग	500
असुरक्षित लेनदार (अपनी पत्नी के 1,000 रु. सहित)	13,000
सुरक्षित लेनदार	2,500
सुरक्षित लेनदारों द्वारा रखी जाने वाली प्रतिभूति	3,500
किराया एवं करों के लिए पूर्वाधिकार लेनदार	190

Solution : टिप्पणियाँ—(1) यह माना गया कि पत्नी की आय का कोई स्वतन्त्र साधन नहीं है तथा उसने अपने पति द्वारा अर्जित आय में से व्यापार को ऋण दिया है, पत्नी को स्थगित लेनदार (deferred creditor) माना गया है। अतः पत्नी के ऋण को लेनदारों में से घटा दिया गया।

Statement of Affairs (As at 31st December, 2005)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditors as		Property as per List E		
12,000	per List A	12,000	Cash	230	230
	Fully-secured Creditors		Stork-in-trade	1,000	666

2,500	as per list B	2,500		Fixtures	564	282
	Value of Security	3,500		Investments	500	500
	Surplus to			Book-Debts as per list F		1,678
	Contra	1,000	—	Good	7,000	7,000
	Partly-secured Creditors			Doubtful	1,800	600
—	as per list C			Bad	1,500	—
190	Preferential Creditors as			Bill of Exchange as per		9,278
	per list D	190		list G		—
	Deducted per Contra			Add : Surplus as per		9,278
				Contra		1,000
				Deduct : Preferential		10,278
				Creditors as per Contra		190
						10,088
				Deficiency as per list H		1,912
14,690			**12,000**			**12,000**

Deficiency Account (List H)

	Rs.		Rs.
Capital	6,350	Loss : 2005	2,500
Profit : 2003 } 2004 }	5,554	Drawings	9,000
		Loss on Realisation of Assets	
Wife's Loan (deferred creditors)	1,000		
Deficiency	1,912	Stock	334
		Book Debts	2,700
		Fixtures	282
	14,816		**14,816**

9.10 व्यक्तिगत सम्पतियाँ तथा व्यक्तिगत दायित्व (Private Assets and Private Liabilities)

एक एकाकी व्यापारी (sole trader) के दिवालिया होने की स्थिति में उसकी व्यापारिक सम्पत्तियों तथा व्यक्तिगत सम्पत्तियों और व्यापारिक दायित्वों तथा व्यक्तिगत दायित्वों में कोई अन्तर्भेद नहीं दिया जाता, अर्थात् व्यक्तिगत सम्पत्तियों को व्यापार की सम्पत्तियों में तथा व्यक्तिगत दायित्वों को व्यापारिक दायित्वों में सम्मिलित करके स्थित-विवरण बनाया जाता है।

जब व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ व्यापार को उपलब्ध होती है तो यह व्यापार का लाभ होता है तथा जब व्यक्तिगत दायित्वों का भुगतान व्यापार को करना होता है तो यह व्यापार की हानि होती है। अत: कमी खाता (Deficiency A/c) बनाते समय यह गणना कर लेनी चाहिए कि व्यापार को कितने मूल्य की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ तथा व्यक्तिगत दायित्व मिले है। इस सम्बन्ध में निम्नानुसार व्यवहार किया जाता है—

(क) यदि व्यक्ति सम्पत्तियाँ, व्यक्तिगत दायित्वों की अपेक्षा अधिक मूल्य की हो, तो इनका अन्तर 'व्यक्तिगत सम्पत्तियों का व्यक्तिगत दायित्वों पर आधिक्य' (Excess of private Assets over Private Liabilities) व्यापार को लाभ होगा, जिसे कमी खाते के बाएँ पक्ष में दिखाया जाएगा।

(ख) यदि व्यक्तिगत सम्पत्तियों में व्यक्तिगत दायित्व अधिक मूल्य के हों, तो इनका अन्तर 'व्यक्तिगत दायित्वों का व्यक्तिगत सम्पत्तियों पर आधिक्य' (Excess of Private Liabilities over Private Assets) व्यापार की हानि होगी, जिसे कमी खाते के दाएँ पक्ष में दिखाया जाएगा।

Illustration : 8 The Capital in the business of Mr. Unfortunate on 31st December, 2005, was Rs. 700. During the year 2006, he sustained a trading loss of Rs. 780, and his drawings out of the business were Rs. 700, he was complelled to file his petition in Insolvency. His assets consisted of

—(a) Book Debts Rs. 1,000 of which Rs. 800 were considered good and the remainder estimated to produce Rs. 100. (b) Stock (Cost Rs. 1,500) estimated to ploduce Rs. 1,100. (c) Machinery (Cost Rs. 1,600) estimated to produce Rs. 900.

(d) Personal House Valued at Rs. 1,200, the deeds of which were lodged with the Banks as secruity for an overdraft on business account of Rs. 800.

(e) His life policy (surrender value Rs. 600) give as part security for a private loan of Rs. 1,000.

His unsecured creditors amounted to Rs. 4,030 and he owed Rs. 50 to his peon being salary for two months ended 30th November, 2006. Prepare his Statement of Affairs and Deficiency Account.

मि. अन्फोरच्यूनेट के व्यापार में 31 दिसम्बर, 2005 को 700 रु. की पूंजी लगी हुई थी। 2006 वर्ष में उसे 780 रु. की व्यापारिक हानि हुई तथा उसके आहरण 700 रु. के थे। उसे दिवाला निकालने हेतु आवेदन करना पड़ा।

उसकी सम्पत्तियाँ निम्न प्रकार थी —

(क) पुस्तकीय ऋण 1000 रु. जिनमें से 800 रु. के ऋण अच्छे (Good) थे तथा शेष से 100 रु. प्राप्त होने की संभावना थी।

(ख) स्कन्ध (लागत 1,500 रु.) आगणित प्राप्य राशि (estimated to produce) 1,100 रु.।

(ग) मशीनरी (लागत 1,600 रु.) आगणित प्राप्य राशि 900 रु.।

(घ) निजी मकान जिसका मूल्य 1,200 रु. था तथा जो व्यापारिक कार्य हेतु लिये गये बैंक अधिविकर्ष 800 रु. के सम्बन्ध में बैंक के पास जमानत के रूप में रखा था।

(ड) उसकी जीवन बीमा पालिसी (समर्पण मूल्य 600 रु.) जो निजी कार्य हेतु लिए गए 1,000 रु. के ऋण की आंशिक प्रतिभूति के रूप में दी गयी थी।

उसके अरक्षित लेनदार 4,030 रु. के थे तथा उसे अपने मूल्य भृत्य को 30 नवम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले 2 माह के वेतन के 50 रु. देने शेष थे। उसका स्थिति-विवरण तथा कमी खाता (Statements of Affairs and Deficiency Account) तैयार कीजिए।

Solution : टिप्पणियाँ—

		रु.
(1)	**अरक्षित लेनदार**—लेनदार	4,030
	चपरासी का वेतन (50—20) =	30
		4,060
(2)	व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ—मकान	1,200
	जीवन बीमा पॉलिसी	600
		1,800
	व्यक्तिगत दायित्व—ऋण	1,000
	व्यक्तिगत सम्पत्तियों का आधिक्य	800

Statement of Affairs (As at 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
4,060	Unsecured Creditors as		Property as per List I.		
	as per list 'A'	4,060	Stock	1,500	900
			Plant	1,600	1,100
	Fully secured Creditors				
	as per list 'B'				2,000

800	Rs. 800		Book Debts as per list 'F'		
	Value of		Good	800	800
	Securities 1,200		Doubtful and Bad	200	2,900
	Surplus to Contra 400		Bills of Exchange list 'B'		—
	Partly secured Creditors		Add: surplus from list B		
	as per list 'C'		per contra		400
1,000	Rs. 1000				3,300
	Value of security 600		Deduct : Preferenctial		
	Preferential Creditors	400	creditors as per contra		20
20	as per list 'D' Rs. 20				3,280
	Deducted per contra		Deficiency as per list 'H'		1,180
5,880		**4,460**			**4,460**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Excess of Assets over liabilities	700	Business loss	780
Excess of Private assets over		Drawings	700
private liabilites	800	Loss on realization of assets :	
Deficiency	1,180	Book Debts	100
		Stock	400
		Plant and Machinery	700
	2,680		**2,680**

9.11 लेनदारों को भुगतान किए जाने हेतु प्रयुक्त की जा सकने वाली सम्पत्तियाँ (Assets available for Distribution to Creditors)

एक दिवालिया की निम्नलिखित सम्पत्तियों को ही उसके लेनदारों को भुगतान करने हेतु प्रयुक्त किया जा सकेगा—

(1) अभिनिर्णयन आदेश (order of adjudication) निर्गमित होने की तिथि पर ऋणी की समस्त सम्पत्तियाँ

(2) उक्त तिथि के पश्चात् तथा मुक्ति के आदेश (order of discharge) प्राप्त होने के पूर्व की अवधि में दिवालिया को प्राप्त होने वाली समस्त सम्पत्तियाँ

(3) वे सम्पत्तियाँ जिनका दिवालिया ख्याति प्राप्त स्वामी (reputed owner) है।

ख्याति प्राप्त स्वामित्व का सिद्धान्त (Dectrine of Reputed Ownership)—यदि किसी अन्य व्यक्ति का कोई माल (चल सम्पत्ति) उस माल के वास्तविक स्वामी की इच्छा या स्वीकृति से ऋणी के कारोबार में या उसके अधिकार में हो तथा उस माल पर ऐसी कोई पहचान या चिह्न नहीं हो जिनसे यह समझा जा सके कि ऋणी के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति उसका वास्तविक स्वामी है। जिससे दिवालिया से व्यवहार करने वाला कोई व्यक्ति यह समझ ले कि दिवालिया ही उस माल का वास्तविक स्वामी है, तो दिवालिया उस माल का वास्तविक मालिक न होते हुए भी उसका ख्याति प्राप्त मालिक समझा जाएगा तथा उस चल सम्पत्ति का उपयोग उसके लेनदारों को भुगतान हेतु किया जा सकेगा।

अपवाद (Exceptions)—यह सिद्धान्त निम्नलिखित परिस्थितियों में लागू नहीं होगा

(1) अचल सम्पत्तियाँ

(2) ऐसी सम्पत्तियाँ जो दिवालिया के पास किराया-क्रय (Hire Purchaes) के अन्तर्गत है,

(3) ऐसी सम्पत्तियाँ जो दिवालिया के अधिकार में (क) कमीशन एजेन्ट (ख) गिरवी-धारक (Pawnee) (ग) मरम्मत के लिए (घ) प्रन्यासी (trustee) अथवा (ङ) प्रशासक (administrator) के रूप में हों।

NOTES

लेनदारों को भुगतान हेतु उपलब्ध न होने वाली सम्पत्तियाँ (Assets not available for distribution to Creditors)

(1) **प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सौलवेन्सी एक्ट के अन्तर्गत**— (क) ऐसी सम्पत्तियाँ जो दिवालिया के पास प्रन्यासी के रूप में हों तथा (ख) दिवालिया के, उसकी पत्नी तथा बच्चों के पहनने के वस्त्र, भोजन के बर्तन तथा फर्नीचर आदि कुल मिलाकर अधिकतम 300 रु. तक।

(2) **प्राविन्शयल इन्सौलवैन्सी एक्ट के अन्तर्गत**— (क) ऐसी सम्पत्तियाँ जो दिवालिया के पास प्रन्यासी के रूप में हो, तथा (ख) दिवालिया, उसकी पत्नी तथा बच्चों के पहनने के वस्त्र, भोजन के बर्तन, फर्नीचर आदि उस सीमा तक जिस सीमा तक दीवानी प्रक्रिया संहिता (Civil Procedure Code) के अन्तर्गत कुर्की नहीं की जा सकती।

Illustration : 9 31 दिसम्बर, 2006 को जब बम्बई के श्री दुर्भाग्यमल दिवालिया घोषित हुए, उनकी स्थिति निम्नानुसार थी—

सम्पत्तियाँ—स्टॉक 25,000 रु., प्लाण्ट 12,000 रु., देनदार 13,000 रु.

दायित्व—लेनदार 30,000 रु., अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान 2,000 रु., भू-स्वामी को 3 माह का किराया 3,000 रु., पूँजी 5,000 रु., 10 श्रमिकों की मजदूरी 1,000 रु., 5 लिपिकों को वेतन 2,000 रु., कर 3,000 रु., कानूनी दायित्व (legal liabilites) 4,000 रु.।

उसकी व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ 6,000 रु. की तथा व्यक्तिगत दायित्व 5,000 रु. के थे। उसकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों (private assets) में निम्नलिखित सम्मिलित है—

(i) उसके तथा परिवार के सदस्यों के पहनने के कपड़े (wearing clothes) 500 रु., खाना बनाने के बर्तन (Cooking utensils) 600 रु. तथा फर्नीचर 400 रु.

(ii) सम्पत्तियाँ जो उसके पास प्रन्यासी (trustee) के रूप में हैं 2,000 रु.

(iii) सम्पत्तियाँ जिनका वह ख्याति प्राप्त स्वामी (reputed owner) है 2,500 रु.

उसने 1 जनवरी 2002 को प्रारम्भ किया। 2002 तथा 2003 में उसे क्रमश: 3,000 रु. तथा 4,000 रु. की हानि, 2004 तथा 2005 में क्रमश: 9,000 रु. तथा 3,000 रु. का लाभ तथा 2006 में 5,000 रु. की हानि हुई। स्टॉक तथा प्लाण्ट का अनुमानित वसूली मूल्य क्रमश: 20,000 रु. तथा 8,000 रु. है।

श्री दुर्भाग्यमल का स्थिति-विवरण तथा कमी खाता बनाइए।

Solution : टिप्पणियाँ—

(1)	प्रेसीडेन्सी टाउन्स एक्ट के अन्तर्गत पूर्वाधिकार लेनदार :		रु.
	किराया 1 माह का (3,00 – 3)		1,000
	10 श्रमिकों की मजदूरी		1,000
	5 लिपिकों का वेतन। अधिकतम (5 × 300)	=	1,500
	कर		3,000
	कानूनी दायित्व	=	4,000
			10,500
(2)	**अरक्षित लेनदार** : लेनदार		30,000
	शेष किराया		2,000
	शेष वेतन		500
	व्यक्तिगत दायित्व		5,000
			37,500

(3) प्रेसीडेन्सी टाउन्स एक्ट के अन्तर्गत 300 रु. तक के दिवालिया के तथा उसके परिवार के सदस्यों के पहनने के कपड़े, बर्तन, फर्नीचर आदि सम्पत्तियाँ लेनदारों में विभाजन योग्य नहीं होतीं। इसी प्रकार दिवालिया

के पास प्रन्यास की सम्पत्तियाँ भी विभाजन-योग्य नहीं होती अतः केवल निम्नलिखित समपत्तियाँ ही अवस्था-विवरण में सम्मिलित होंगी।

	रु.
उसके तथा परिवार के सदस्यों के कपड़े, बर्तन तथा फर्नीचर 500 + 600 + 400 + 300 =	1,200
सम्पत्तियाँ जिनका वह ख्याति प्राप्त स्वामी है :	2,500

3,700

(4) व्यक्तिगत दायित्वों का व्यक्तिगत सम्पत्तियों पर आधिक्य (5,000—3,700) = 1,300 रु.

(5) देनदारों की वसूली पर कोई हानि नहीं है अतः अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान खाते का शेष लाभ के रूप मे कमी खाते (Dificiency A/c) के डेबिट पक्ष में ले जाया जाएगा।

Statement of Affairs (As at 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
37,500	Unsecured Creditors as as per list 'A'	37,500	Property as per List E		
			Stock	25,000	20,000
	Fully secured Creditors		Plant	12,000	8,000
—	as per list 'B'		Private assets		3,700
		—			31,700
—	Partly-Secured Creditors as per list 'C'	—	Book-Debts as per list F	13,000	13,000
					44,700
10,500	Preferencial Creditors as per list D Rs. 10,500 Deducted per contra		Bills of Exchanges as per list G		
			Add : Surplus per contra		—
					44,700
			Deduct : Preferencial Creditors per contra		10,500
					34,200
		—	Deficiency as per list H		3,300
48,000		**37,500**			**37,500**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	5,000	Excess of private liabilities over private assets	1,300
Profit 2004	9,000	Trading losses 2002	3,000
2005	3,000	2003	4,000
		2006	5,000
Provision for Bad and Doboutful Debts	2,000	Loss on Realisation of assets	
		Stock	5,000
		Plant	4,000
Deficiency	3,300		
	22,300		**22,300**

9.12 सम्पत्ति का ऐच्छिक हस्तान्तरण (Voluntary Transfer of Property)

प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अनुसार दिवालिया ऋणी द्वारा दिवाले के लिए आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने (प्रेसीडेन्सी टाउन्स एक्ट के अन्तर्गत दिवालिया आदेश की तिथि) के पहले 2 वर्षों में निम्नलिखित के अतिरिक्त,

यदि सत्पत्ति का कोई हस्तान्तरण किया जाता है तो ऐसा हस्तान्तरण व्यर्थ एव प्रापक के विरुद्ध होगा तथा न्यायालय द्वारा रद्द किया जा सकता है—(क) विवाह के पूर्व तथा उसके प्रतिफल में किया गया कोई हस्तान्तरण, तथा (ख) सम्पत्ति की सद्भावनापूर्ण तथा उचित प्रतिफल के लिए की गई बिक्री की दशा में सम्पत्ति का हस्तान्तरण।

यदि किसी सम्पत्ति का उपर्युक्त प्रकार से अवैध हस्तान्तरण कर दिया जाता है तो प्रापक ऐसी सम्पत्तियों को वापस ले लेगा तथा उसका उपयोग ऋणी के लेनदारों को भुगतान करने में किया जा सकेगा।

सम्पत्ति के ऐच्छिक हस्तान्तरण व्यर्थ किए जाने की दशा में सम्पत्ति वापस मिलने पर ऐसी सम्पत्ति के प्राप्य मूल्य को स्थिति विवरण की सूची E में तथा कमी खाते के बाएँ पक्ष में दिखाते है।

Illustration : 10 A receiving order has been made against Bramhanand dated 15th December, 2005. The particulars of his assets and liabilities are as under—

	Rs.
Unsecured Creditors	14,487
Creditors fully secured (holding life polices valued at Rs. 12,315)	10,333
Loas from Bank (the security held is a second mortgage on an asset pledged with a fully secured creditor, the surplus available being Rs. 1,020)	1,582
Creditors for rent, rates and taxes	37
Cash in Hand	4
Life policies not charged, surrender value (estimated)	30
Stock and Shares (estimated)	154
Motor Cycle (estimated)	249
Debts Rs. 76 (of which Rs. 39 are good) estimated	52

The debtor has conveyed his furniture to his wife by deed of gift dated the 3rd March, 2005. The value of this item is estimated at Rs. 300.

The deficiency starts from the 30th June, 2004, on which date the excess of liabilites over assets was Rs. 5,000. The causes of failure are unsuccessful trading, stock exchange losses, and excessive interest on money borrowed.

Prepare the Statement of Affairs and Deficiency Account inserting in the latter such items of gains and losses as are usual or suggested by the particulars given.

बृह्मानन्द के विरुद्ध 15 दिसम्बर, 2005 को दिवालियापन के लिए आदेश हुआ। उसकी सम्पत्ति एव दायित्व का विवरण निम्नानुसार है—

	रु.
अरक्षित लेनदार	14,487
पूर्णरक्षित लेनदार (12,315 रु. मूल्य की जीवन बीमा पालिसियों के बन्धक पर)	10,333
बैंक से ऋण (एक सम्पत्ति जो कि पूर्णरक्षित लेनदारो पर बन्धक थी उस पर द्वितीय बन्धक की प्रत्याभूति पर जिससे 1,020 रु. आधिक्य उपलब्ध है)	1,582
किराया व कर के लेनदार	37
हस्तस्थ रोकड़	4
जीवन बीमा पॉलिसी प्रभार रहित अनुमानित समर्पित मूल्य	30
स्टॉक तथा अंश (अनुमानित)	154
मोटर साइकिल (अनुमानित)	249
देनदार 76 रु. (जिसमें से 39 रु. अच्छे है) अनुमानित प्राप्त राशि	52

ऋणी ने अपना फर्नीचर अपनी पत्नी के नाम 3 मार्च 2005 को वसीयत द्वारा हस्तान्तरित कर दिया था जिसका अनुमानित मूल्य 300 रु. था।

कमी का खाता 30 जून 2004 से प्रारम्भ हुआ जबकि उसके दायित्वों का सम्पत्ति पर आधिक्य 5,000 रु. था। असफलता के कारण है, व्यापारिक असफलता, स्कन्ध विपणी हानियाँ तथा उधार ली गयी राशि पर अत्यधिक ब्याज।

स्थिति-विवरण तथा कमी का खाता बनाइए। लाभ तथा हानि के लिये सामान्य मदों अथवा दिये हुए विवरण में उपलब्ध मदों का प्रयोग कीजिये।

Solution : टिप्पणियाँ—(1) दिवालिया घोषित होने की तिथि के पूर्व दो वर्षों की अवधि मे बिना पर्याप्त प्रतिफल के किया गया सम्पत्ति का हस्तान्तरण अमान्य होता है। अतः पत्नी को उपहार-स्वरूप दिया गया फर्नीचर लेनदारों में वितरित किए जाने हेतु वापस ले लिया जाएगा।

(2) 76 रु. के कुल देनदारों से 52 रु. प्राप्त होते हैं। 39 रु. के लेनदार अच्छे हैं अर्थात् 39 रु. ही प्राप्त होते है, शेष (76—39) = 37 रु. के संदिग्ध लेनदारों से (52—39) = 13 रु. प्राप्त होंगे।

(3) कमी खाता (Deficiency A/c) की समस्त मदें प्रश्न में नहीं की गई है अतः कमी खाते में स्थिति-विवरण से ज्ञात कमी की राशि लिखकर अन्य मदें काल्पनिक रखी जाएँगी। इन मदों को तारांकित कर दिया गया है।

(4) निजी सम्पत्तियाँ—बीमा पॉलिसी 12,315 + 30 = 12,345 रु.

Statement of Affairs (As at 31st December, 2005)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditor as		Property as per list E		
14,487	per list A	14,487	Cash-in-hand	4	4
	Fully-secured Creditors		Life Policy	—	30
10,333	as per list B 10,333		Stock and Shares		154
	Value of securities 12,315		Motor Cycle		249
	1,982		Furniture		300
	Surplus to list C 1,020				737
	Surplus to Contra 962		Book Debts as per list F		
	Partly-secured Creditors		Good	39	39
1,582	as yet list C 1,582		Doubtful	37	13
	Value of Security 1,020		Bad		
		5.62	Bills of Exchange as per		789
	Preferential Creditors as		list G		—
37	per list D 37		Add : Surplus as per		789
			Contra		962
	Deducted per Contra		Deduct : Preferential		1,751
			Creditors per Contra		37
					1,714
			Deficiency as per list H		13,335
26,439		15,049			15,049

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Private assets	12,345	Excess of Liabilities over assets	5,000
Deficiency	13,335	Trading Loss	16,800
		Stock Exchange losses	3,000
		Loss on Realisation of assets	
		Stock and Shares	656
		Book debts	24
		Motor Cycle	200
	25,680		25,680

NOTES

बोध प्रश्न

4. स्थिति विवरण ओर चिट्ठे में अन्तर बताइये।

....

....

....

5. कमी खाता किसे कहते है? यह कैसे बनाया जाता है

....

....

....

6. अरक्षित लेनदारों को मिलने वाले लाभांश की गणना आप कैसे करेंगे।

....

....

....

9.13 पूर्ण सूचनाओं के अभाव में कमी खाता बनाना (Preparation of Deficiency A/c with Incomplete Information)

कमी खाता बनाने के लिए व्यापार प्रारम्भ करने की तिथि से स्थिति-विवरण बनाने की तिथि तक विभिन्न वर्षों के लाभ, हानि, आहरण आदि की राशियो की जानकारी की आवश्यकता पड़ती हैं कभी-कभी कुछ अवधि की सूचनाएँ खाते न बनाए जाने या रिकार्ड उपलब्ध न होने के कारण प्रश्न मे नही दी गई होतीं। इस स्थिति मे प्रश्न मे दी गई सूचनाओं के आधार पर तलपट बनाकर न दी गई सूचना प्राप्त कर ली जाती है। इस सम्बन्ध मे यह ध्यान रहे कि—

(1) तलपट मे विभिन्न सम्पत्तियाँ तथा दायित्व उनके पुस्तक-मूल्य (Book Values) पर लिखे जायेंगे 'सभाविन शोध्य मूल्य' या 'अनुमानित प्राप्य राशि' पर नहीं।

(2) तलपट मे केवल व्यापारिक सम्पत्तियां एव दायित्वों को ही लिया जाएगा—व्यक्तिगत सम्पत्तियों या व्यक्तिगत दायित्वो को नही।

(3) तलपट मे केवल उन्हीं सम्पत्तियां एव दायित्वो को लिया जाएगा जो दिवाला की तिथि को पुस्तको मे दिखाए गए थे—बाद मे प्राप्त सम्पत्तियो अथवा नये उत्पन्न दायित्वों अथवा सम्भावित दायित्वों (जैसे भुनाए गए बिलो पर दायित्व) को तलपट मे नहीं लिया जाएगा।

Illustration : 11 X filed his petition in Bankruptcy on 30 June, 2006 and you are instructed to prepare Statement of Affairs and Deficiency Account from the following information.

Stock-in-Trade at cost, Rs 36,000, of which Rs. 3,000 worth is in the hands of a Creditor for Rs 5,000 who is entitled to exercise a lien. Book Debts : Good Rs.48,750, Dobutful Rs. 600 (estimated to relize Rs. 200), Bad, Rs. 750; Cash in hand, Rs. 50; Bills Receivable Rs 5,500 (hold by bankers against overdraft of Rs. 20,000, the balance of which is secured by a second charge on debtor's freeheld property and by the guarantee of his brother), Fixtures and Fittings, Rs. 1,150; Customers bills under discount, Rs 7,500 of which Rs 1,000 is ascertained to be Bad and Rs 500 is Doubtful Freehold property, Rs 15,000 subject to a first mortgage of Rs. 10,000 The Unsecured Creditors amount to Rs. 1,49,000 in in addition to claims for rates, taxes and wages amounting to Rs. 1 200 The Stock-in-Trade is estimated to be worth 75 per cent of its face value and the Freehold Property is valued at Rs 11,000. Subject to the modifications above stated, the assets are worth their book values.

X started his business on 1st Jan. 2004, with a capital of Rs. 5,000, since then he has withdrawn Rs. 15,000 per annum in equal monthly instalments His profit for the year ended 31st Dec. 2004 were Rs. 10,500 and for 2005 Rs 2,100, since that date he has not made up his books

X ने 30 जून, 2006 को दिवाला के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। निम्नांकित सूचनाओं से उसका स्थिति-विवरण तथा कमी का खाता बनाइए—

व्यापारिक रहतिया 36,000 रु. जिनमें से 3,000 रु. का रहतिया 5,000 रु. वाले एक लेनदार के पास ग्रहणधिकार की तरह है; पुस्तकीय देनदारियाँ : अच्छी 48,750 रु., संदिग्ध 600 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 200 रु.) डूबत 750 रु.; रोकड़ 50 रु.; प्राप्य बिल 5,500 रु. जो कि 20,000 रु. के ओवरड्राफ्ट के लिए बैंक के अधिकार में है, शेष राशि के लिए ऋणी की फ्रीहोल्ड सम्पत्ति पर द्वितीय प्रभार तथा उसके भाई की गारण्टी है। फिक्चर्स एवं फिटिंग 1,150 रु., ग्राहकों के भुनाए हुए प्राप्य बिल 7,500 रु. जिनमें से 1,000 रु. के डूबत तथा 500 रु. के संदिग्ध हैं। फ्रीहोल्ड सम्पत्ति 15,000 रु. है, इस पर पहला बंधक 10,000 रु. का है। असुरक्षित लेनदार 1,49,000 रु. के हैं, इसके अतिरिक्त मजदूरी तथा करों के 1,200 रु. देना है। व्यापारिक रहतिया पर 75% राशि वसूल होने की आशा है तथा फ्रीहोल्ड सम्पत्ति का मूल्यांकन 11,000 रु. किया गया। शेष सम्पत्तियों का पुस्तकीय मूल्य प्राप्त है।

X ने अपना व्यापार 1 जनवरी, 2004 को 25,000 रु. की पूंजी से प्रारम्भ किया तथा तब से उसने समान राशि की मासिक किस्तों में 15,000 रु. प्रतिवर्ष आहरण किये है। 31 दिसम्बर, 2004 एवं 31 दिसम्बर, 2005 को समाप्त होने वाले वर्षों के लिए उसका कुल लाभ क्रमशः 10,500 रु. और 2,100 रु. था, इस दिनांक के पश्चात् उसने कोई लेखे तैयार नही किए है।

Solution :

(1) स्टॉक का मूल्य 75% रह गया है, 36,000 रु. के स्टॉक में से 3,000 रु. की लागत प्राप्य राशि $\left(\frac{3,000 \times 75}{100} = 2,250 \text{ रु}\right)$ 5,000 रु. के लेनदार ग्रहणाधिकार के अन्तर्गत है,

शेष 33,000 रु. $\left(\text{प्राप्य राशि } \frac{33,000 \times 75}{100} = 24,750 \text{ रु.}\right)$ का स्टॉक सूची E में सम्मिलित होगा।

(2) 7,500 के भुनाए गए बिलों पर दायित्व (1,000 + 500) = 1,500 रु. है।

(3) अरक्षित लेनदार

	लेनदार	1,49,000	1,49,000
	भुनाए बिल	7,500	1,500
		1,56,500	1,50,500

(4) 1 जनवरी, 2006 से 30 जून, 2006 तक के व्यापारिक परिणाम ज्ञात नहीं है। इस हेतु निम्नानुसार तलपट बनाया जाएगा। तलपट में 77,500 रु. का डेबिट अन्तर आता है जो उक्त अवधि की हानि होगी।

Trial Balance

	Rs.	Rs.
Stock-in-Trade	36,000	
Creditors		5,000
Book Debts	50,100	
Cash in hand	50	
Bills Receivable	5,500	
Bank Overdraft		20,000
Fixtures and Fittings	1,150	
Freehold Property	15,000	
Mortgage		10,000
Unsecured Creditors		1,49,000
Rates, taxes and wages		1,200
Capital		25,000
Drawings ($15,000 \times 2\frac{1}{2}$)	37,500	
Profit (for two years)		12,600
Loss (1.1.06 to 30.6.06)	77,500	
	2,22,800	**2,22,800**

NOTES

Statement of Affairs (As at 31st June, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
1,56,000	Unsecured Creditor as		Property as per list E		
	per List A	1,50,500	Cash		50
10,000	Fully Secured Creditors as		Stock	33,000	24,750
	per List B Rs. 10,000		Fixtures	1,150	1,150
	Estimated value of				
	securities 11,000				25,950
	Surplus carried to		Book Debts as per List F		
	List C 1,000		Good		48,750
			Doubtful	600	200
25,000	Partly secured Creditors		Bad	750	
	as per List C 25,000				74,790
	Estimated value of		Deduct : Pref. Crs. as		
	securities 8,750		per contra		1,200
		16,250			
1,200	Preferential Creditors as				73,700
	per List D 1,200		Deficiency as per List H		93,050
	Deducted per contra				
1,92,200		**1,66,750**			**1,66,750**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	25,000	Loss from Business	77,500
Profit	12,600	Drawings	37,500
Deficiency	93,050	Loss on Realisation	
		Stock	9,000
		Freehold Property	4,000
		Book debts	1,150
		Liability on Bill discounted	1,500
	1,30,650		1,30,650

9.13 पुनरीक्षित स्थिति-विवरण तथा कमी खाता बनाना (Preparation of Revised Statement of Affairs)

कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई ऋणी अपने स्थिति-विवरण को बनाने तथा कमी का अनुमान लगा चुकने के पश्चात् यह पाता है कि कुछ प्रविष्टियाँ पुस्तकों में लिखने से छूट गयी थीं, जैसे वह अपनी कुछ लेनदारियों या दायित्वों को पुस्तकों में लिखना भूल गया हो। इस स्थिति में छूटी हुई मदों को सम्मिलित करते हुए पुनरीक्षित स्थिति-विवरण तथा कमी खाता बनाना आवश्यक हो जाता है। ऐसा करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होता है:

(क) यदि प्रश्न में सम्पत्तियों का पुस्तक-मूल्य, दायित्व तथा अनुमानित कमी (deficiency) दी हो तो सम्पत्तियों का अनुमानित प्राप्य निम्नानुसार ज्ञात किया जाता है—

सम्पत्तियों का अनुमानित प्राप्य = दायित्व - अनुमानित कमी

(Realisable Value of Assets = Liabilities—Deficiency)

(ख) जो नये दायित्व उत्पन्न होते हैं उन्हें खाते के दाएँ पक्ष में नहीं लिखा जाता है।

(ग) यदि यह पता लगे कि स्वयं दिवालिया को कुछ भुगतान नहीं किए गए हैं (जैसे उसे पूँजी पर ब्याज या वेतन नहीं दिया गया है।) तो अब उसका कोई समायोजन स्थिति-विवरण या कमी खाते में नहीं किया जाएगा क्योंकि दिवालिया जब लेनदारों को ही भुगतान नहीं कर पा रहा है तो उसे स्वयं को भुगतान करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Illustration : 12 अजमेर के श्री करोड़ीमल की लेखा पुस्तकों के अनुसार 31 दिसम्बर, 2006 को सम्पत्ति एवं दायित्व क्रमशः 40,000 रु. एवं 30,000 रु. के थे। उसने दिवालिया घोषित होने हेतु प्रार्थना पत्र दिया और उसने 25,000 रु. न्यूनता का अनुमान लगाया। न्यूनता का अनुमान लगाने के बाद उसको यह ज्ञात हुआ कि निम्न की प्रविष्टि उसके खाते में नहीं हुई—

(क) 1 जनवरी, 2006 से 6% की दर से उसकी पूँजी पर ब्याज;

(ख) भुनाए गए बिल 10,000 रु., अनुमानित देय राशि 4,000 रु.;

(ग) 500 रु. के ऋणदाता को पुस्तकों में दिखाना भूल गए उसका दावा ऋणी ने स्वीकार कर लिया,

(घ) अदत्त व्यय :

- (i) 100 रु. प्रतिमाह प्रति लिपिक के हिसाब से 4 लिपिकों का तीन माह का वेतन,
- (ii) अगस्त, 2006 के लिए एक श्रमिक की मजदूरी 60 रु;
- (iii) सितम्बर 2006 के लिए 4 श्रमिकों की मजदूरी 40 रु. प्रति श्रमिक के हिसाब से;
- (iv) नवम्बर, 2006 का मकान मालिक का किराया 400 रु.,
- (v) नगरपालिका की देय कर 500 रु.; विभाग को देय राशि 1,000 रु. और बिक्रीकर विभाग को देय राशि 1,000 रु ;
- (vi) श्रमिकों की क्षतिपूर्ति की राशि 400 रु । उसका स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइए।

The assets and liabilites of Shri Karorumal of Ajmer as shown by his books on 31st December, 2006 were Rs. 40,000 and Rs. 30,000 respectively. He filed his petition for bankruptcy and estimated his deficiency to be Rs. 25,000. After making the above estimates, he found that the following items were not recorded in his account books—

(a) Interest on his capital @ 6% from 1st Janauary, 2006.

(b) Bills discounted Rs. 10,000 expected to rank Rs. 4,000/-

(c) A creditor for Rs. 500 was omitted to be entered in the books. His claim was, however, admitted by the debtor.

(d) Outstanding expenses :

- (i) Salaries of 4 clerks @ Rs. 100 p.m. for each clerk for 3 months.
- (ii) Wages of a worker for the month of August, 2006 Rs. 60.
- (iii) Wages of 4 workers for the month of November, 2006 @ Rs. 40 per worker
- (iv) Rent for the month of November, 2006 Rs. 400
- (v) Amount due to municipality for rates Rs. 500 and to the Income Tax Deptt. Rs. 1,000 and to the Sales Tax Deptt. Rs. 1,000
- (vi) Compensation to workers Rs. 400

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account.

Solution : **टिप्पणियाँ**—(1) 40,000 रु. की पुस्तकीय मूल्य वाली सम्पत्तियों का वसूली मूल्य

Realisable Value of Assets = Liabilites—Deficiency

$$= 30{,}000 - 25{,}000 = \text{Rs. } 5{,}000$$

(2) पूर्वाधिकार लेनदार — रु.

(i) 4 लिपिकों का 3 माह का वेतन @ Rs. 100 p.m. = 1,200 रु.
पूर्वाधिकार 20 रु. प्रति व्यक्ति — 80

(ii) 4 श्रमिकों की मजदूरी (4 × 20) = — 80

(iii) एक श्रमिक की मजदूरी 60 रु. पूर्वाधिकार राशि 20 रु. — 20

	(iv) नगरपालिका कर	500
	(v) आयकर	1,000
	(vi) बिक्रीकर	1,000
	(vii) श्रमिक को देय क्षतिपूर्ति	400
		3,080
(3)	अरक्षित लेनदार : लेनदार	30,000
	4 लिपिकों का शेष वेतन	1,120
	1 श्रमिक की शेष मजदूरी	40
	किराया	400
	4 श्रमिकों की शेष मजदूरी	80
	भुनाए गए बिलों पर दायित्व	4,000
	नया ऋणदाता	500
		36,140

NOTES

Revised Statement of Affairs

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs		Rs.	Rs.
42,140	Unsecured Creditors as		Property as list E	40,000	5,000
	per list A	36,140			5,000
—	Fully secured Creditors		Book Debts as per list F		—
	as per list B	Nil	Bills of Exchange as per		5,000
—	Partly-Secured Creditors		list G		Nil
	as per list C	Nil			5,000
3,080	Preferential Creditors 3,080		Add : Surpuls		
	Deducted per contra		Deduct : Preferential		5,000
			Creditors per contra		3,080
					1,920
			Deficiency as per list H		34,220
45,220		36,140			36,140

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Excess of assets over liabilites	10,000	Loss on Realisation assets	35,000
Deficiency	34,220	Liability on Bills discounted	4,000
		Unrecorded Creditor	500
		Out standing Expenss	
		Clerk's salary	1,200
		Worker's wages	60
		Worker's wages	160
		Rent	400
		Municipal tax	500
		Income tax	1,000
		Sales tax	1,000
		Compensation	400
	44,220		44,220

एक ही व्यक्ति जो लेनदार तथा देनदार दोनों है का समायोजन
(Adjustment in respect of a person who in both a Creditor and Debitor)

यदि दिवालिया को किसी एक व्यक्ति को भुगतान करना है (लेनदार) तथा उसी व्यक्ति से दिवालिया से कुछ भुगतान प्राप्त भी करना है (देनदार) तो उस व्यक्ति को लेनदारों तथा देनदारों की सूचियों में अलग-अलग सम्मिलित न करते हुए, उसकी लेनदारी तथा देनदारी का समायोजन करके केवल अन्तर की राशि का भुगतान किया या प्राप्त किया जाएगा। उदाहरण—मान लीजिए राम को सोहन से 1,000 रु. प्राप्त करते हैं तथा उसे ही 400 रु. भुगतान भी करने हैं। इस स्थिति में राम को 1,000 रु. के लिए सूची F में तथा 400 रु. के लिए सूची A में सम्मिलित न करते हुए, उसे 600 रु. के लिए सूची F में सम्मिलित किया जाएगा। यह समायोजन कमी खाते पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा।

Illustration : 13 निम्नलिखित विवरण से श्री कपाड़िया का स्थिति-विवरण एवं कमी खाता बनाइए। 31 दिसम्बर 2006 को जब दिवालिया अभिनिर्णीत होने के लिए आवेदन किया, उसकी स्थिति निम्नानुसार थी—

	रु.
व्यापारिक लेनदार	20,400
देय विपत्र	32,000
रहन (जिनके पास 40,000 रु. मूल्य की प्रतिभूति है)	30,000
अंशतः रक्षित लेनदार (प्रतिभूति पूर्ण रक्षित लेनदारों से उपलब्ध आधिक्य में से 500 रु.)	4,500
आय कर	800
भुनाए गए बिल (दायित्व कुछ भी नहीं)	5,000
स्टॉक (प्राप्य राशि 20,000 रु.)	40,000
मशीनरी (प्राप्य राशि 9,500 रु.)	15,000
भवन (प्राप्य राशि 10,000 रु.)	17,000
फर्नीचर (प्राप्य राशि 2,000 रु.)	5,000
रोकड़	200
पुस्तकीय ऋण (Book Debts)	
अच्छे	3,600
संदिग्ध (प्राप्य राशि 200 रु.)	500
अशोध्य	100

श्री कपाड़िया ने 4 वर्ष पूर्व 30,000 रु. की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। उसने 500 रु. प्रति वर्ष आहरण किए। प्रथम दो वर्षों में 13,700 रु. का लाभ तथा अन्तिम दो वर्षों में 8,000 रु. की हानि हुई। श्री मोहन को देय 1,000 रु. लेनदारों में तथा उससे प्राप्य 800 रु. देनदारों में सम्मिलित हैं। इसी प्रकार श्री राकेश से प्राप्य 1,500 रु. देनदारों में तथा उसे देय 400 रु. लेनदारों में सम्मिलित है।

Solution : टिप्पणियाँ–

(1) मोहन को 1,000 रु. देना तथा उससे 800 रु. प्राप्त करना है अर्थात् वह 200 रु. का लेनदार है अत: 1,000 रु. लेनदारों में से तथा 800 रु. देनदारों में से घटा कर 200 रु. लेनदारों में जोड़े जाएँगे।

(2) राकेश से 1,500 रु. प्राप्त करना तथा उसे 400 रु. देने है, अर्थात् वह 1,100 रु. का देनदार है। 1,500 रु. देनदारों में से तथा 400 रु. लेनदारों में से घटाकर 1,100 रु. देनदारों में जोड़े जाएँगे।

(3) अरक्षित लेनदार

	रु.
व्यापारिक लेनदार	
(–) मोहन 1,000	20,400
(–) राकेश 400	1,400
	19,000
(+) मोहन	200
	19,200

NOTES

	देय विपत्र	32,000
		51,200
(4)	पुस्तकीय ऋण : अच्छे	3,600
	(–) मोहन 800	
	(–) राकेश 1,500	2,300
		1,300
	(+) राकेश	1,100
		2,400

Statement of Affairs (As at 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs		Rs.	Rs.
56,200	Unsecured Creditors as per list A		51,200	Property as per list E		
				Stock	40,000	20,000
30,000	Fully-Secured Creditors as per list B	30,000		Machinery	15,000	9,500
	Value of securities	40,000		Building	17,000	10,000
		10,000		Furniture	5,000	2,000
	Surplus to list C	500		Cash	200	200
						41,700
				Book Debts as per list F		
				Good	2,400	2,400
	Surplus to contra	9,500	—	Doubtful	500	200
				Bad	100	—
						44,300
4,500	Partly-Secured Creditors as per list C	4,500		Bills of Exchange as per list G		—
	Values of security	500	4,000			44,300
800	Preferential Creditors as per list D	800		Add : Surplus per contra		9,500
	Deducted per contra					53,800
				Deduct : Preferential Creditors per contra		800
						53,000
				Deficiency as per list H		2,200
91,500			55,200			55,200

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	30,000	Drawings (500 × 4) =	2,000
Profit	13,700	Loss	8,000
Deficiency	2,200	Loss on Realisation of assets	
		Stock	20,000
		Machinery	5,500
		Building	7,000
		Furniture	3,000
		Debtors	400
	45,900		45,900

9.14 साझेदारी फर्म का दिवाला (Insolvency of a Partnership Firm)

एक साझेदारी फर्म दिवालिया मानी जाती है जबकि फर्म के साथ-साथ उसके सभी साझेदार भी दिवालिया हो जाएँ। इस स्थिति में फर्म की सम्पत्तियाँ तथा साझेदारों की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ मिलाकर भी फर्म के समस्त दायित्वों का पूर्ण भुगतान करने के लिए पर्याप्त नहीं होतीं।

एक एकांकी व्यापारी के दिवालिया होने की स्थिति में उसके व्यापारिक दायित्वों एवं व्यक्तिगत दायित्वों तथा व्यापारिक सम्पत्तियों एवं व्यक्तिगत सम्पत्तियों में कोई अन्तर्भेद नही किया जाता। दोनों प्रकार के दायित्वों तथा सम्पत्तियों को स्थिति-विवरण में दिखाया जाता है। किन्तु एक फर्म के दिवालिया होने पर इस सम्बन्ध में स्थिति भिन्न है जो निम्न प्रकार है—

(1) फर्म तथा साझेदारों का दिवालियापन साथ-साथ लिया जाता है। फर्म के दिवाला हेतु नियुक्त प्रापक (Receiver) को सभी साझेदारों की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ भी सौंप दी जाती है।

(2) किसी साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्तियों का उपयोग सर्वप्रथम उसके व्यक्तिगत दायित्वों का भुगतान करने हेतु किया जाता है, इसके बाद यदि कोई शेष या आधिक्य बचे (surplus from private estate of a partner) तो वह आधिक्य फर्म को मिल जाता है जिसके उपयोग फर्म के दायित्वों का भुगतान करने में किया जाता है। यदि साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ उसके व्यक्तिगत दायित्वों को पूरा करने हेतु ही पर्याप्त न हों तो फर्म को उस साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्तियों से कोई राशि प्राप्त नहीं होगी।

(3) इसी प्रकार फर्म की सम्पत्तियाँ सर्वप्रथम फर्म के दायित्वों का भुगतान करने में प्रयुक्त की जाएँगी, यदि कोई शेष या आधिक्य बचता है तो उसे साझेदारों में वितरित कर दिया जाएगा। प्रत्येक साझेदार अपने भाग का उपयोग अपने व्यक्तिगत दायित्वों का भुगतान करने में कर सकता है।

(4) इस प्रकार फर्म के दिवालिया होने पर फर्म के स्थिति-विवरण तथा कमी खाता बनाने के साथ-साथ प्रत्येक साझेदार का स्थिति-विवरण तथा कमी खाता अलग से बनाना पड़ता है।

Illustration : 14 अ तथा ब साझेदार है तथा दिवाले के लिए प्रार्थना करते है निम्नलिखित विवरण से साझेदारों की संयुक्त सम्पत्ति तथा पृथक्-पृथक् सम्पत्ति के स्थिति-विवरण एवं कमी खाते बनाइए—

A and B are partners and file their petition in brankruptcy. From the following particulars, perpare the Statement of Affairs and Deficiency Account of the joint estate and separate estates of the partners :

Balance Sheets

	A and B	A	B
	Rs.	Rs.	Rs.
Mortagage on Freehold	3,000	..	
Bank Overdraft	3,000		
Sundry Creditors	12,400	1,500	2,900
Preferential Creditors	100		..
Capitals A	3,000		
B	2,000		
Surplus		5,000	1,100
	23,500	6,500	4,000
Freehold	6,000		
Plant	6,500		
Furniture	400	1,000	1,00
Stock	5,500		
Debtors	5,500		
Investments		2,500	800
Cash	100		
Capitals in A and B		3,000	2,000
	23,500	**6,500**	**4,000**

NOTES

The Bank Overdraft was secured by a second mortagage on Freehold ans B/s personal guarantee, supported by the deposit of B's investments as collateral security.

Firm's assets are estimated to realise as follows :

Freehold Rs. 4,500, Plant Rs. 3,000, Furniture Rs. 150, Stock Rs. 3,100, Debtros : Good Rs. 2,575, Doubtful (Rs. 1,000) 50 paise in the rupee, Bad (Rs. 1,425) nil. A/s assets. Furniture Rs. 600, Investments Rs. 2,000. B's assets : Furniture Rs. 800 and Investments Rs. 300.

बैंक अधिविकर्ष फ्रीहोल्ड सम्पत्ति पर द्वितीय बन्धक, ब की व्यक्तिगत जमानत तथा सहायक प्रतिभूति (collateral securety) के रूप में ब के विनियोगों से सुरक्षित था।

फर्म की सम्पत्तियों से निम्नानुसार राशि होने की सम्भावना है :

फ्रीहोल्ड 4,500 रु. प्लाण्ट 3,000 रु., फर्नीचर 150 रु.; स्टॉक 3,100 रु.; देनदार : अच्छे 2,575 रु. संदिग्ध (1,000 रु.) एक रुपए में 50 पैसे; अशोध्य (1,4525 रु.) शून्य, अ की सम्पत्तियाँ : फर्नीचर 600 रु., विनियोग 2,000 रु. ब की सम्पत्तियाँ फर्नीचर 800 रु. तथा विनियोग 300 रु.

Solution : टिप्पणियाँ—

(1) साझेदारों की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ तथा दायित्वों की स्थिति निम्नानुसार है:

व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्राप्य मूल्य :	अ	ब
फर्नीचर	600	800
विनियोग	2,000	300
	2,600	1,100
(—) लेनदार (व्यक्तिगत)	1,500	2,900
फर्म की उपलब्ध आधिक्य	1,100	Nil

Joint E II state of the form   Statement of Affairs of the form as on..............

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
12,400	Unsecured Creditors as		Property as per		
	per list A	12,400	list F		
			Plant	6,500	3,000
3,000	Fully-Secured Creditors		Furniture	400	150
	as per list B 3,000		Stock	5,500	3,100
	Value of Security 4,500		Cash	100	100
			Surplus from private		
	Surplus to Contra 1,500		estate of A		1,100
3,000	Partly-Secured Creditors		Book Debts as per		7,450
	as per list C 3,000		list I		
	Value of Security 1,500		Good	2,575	2,575
			Doubtful	1,000	500
100	Preferential Creditors as		Bad	1,425	--
	per list D 100	1,500			
	Deducted per Contra		Bills of Exchange		10,525
			as per list G		—
			Deduct Preferential		15,525
			Creditors as per contra		100
			Deficiency as per		10,425
			list H		3,475
18,500		13,900			13,900

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital (3,000 + 2,000) =	5,000	Loss on Realisation of assets	
Surplus from the private estate of A	1,100	Freeholds	3,000
Deficiency	3,475	Plant	3,500
		Furniture	250
		Stock	2,400
		Debtors	1,925
	9,575		**9,575**

Seperate Estate of A **Statement of Affairs (As on..............)**

Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
1,500	Unsecured Creditors as		Property as per list E		
	per list A	1,500	Furniture	1,000	600
—	List B	—	Investments	2,500	2,000
—	List C	—			2,600
--	List D	—			—
—	Surpluse as per List H	1,100	List F		—
			List G		—
					2,600
			Add : Surplus per Contra		—
			Deduct : Preferential		
			Creditors per Contra		2,600
		2,600			**2,600**

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Excess of assets over liabilities	5,000	Loss of Capital in the firm	3,000
		Loss on Realisation of assets	
		Furniture	400
		Investments	500
		Surplus transferred to firm	1,100
	5,000		**5,000**

Seperate Estate of B.

टिप्पणी—बैंक को 1,500 रु. फर्म से फ्रीहोल्ड पर द्वितीय बन्धक से प्राप्त हो जाते हैं, शेष 1,500 रु के लिए बैंक फर्म का अरक्षित लेनदार है। 10,425 रु जब फर्म के 13,900 रु के अरक्षित लेनदारों को बाँटे जाएंगे तो बैंक को फर्म से $\left(\frac{10,425}{13,900} \times 1,500\right)$ = 1,125 रु प्राप्त हो जाएंगे शेष (1,500 – 1,125) = 357 रु के भुगतान का दायित्व ब का होगा। बैंक के पास ब के 300 रु मूल्य के विनियोग जमा हैं जिन्हें बैंक अपने पास रख लेगी, शेष 75 रु. ब को और देने होंगे।

Statement of Affairs (As on..............)

Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditors as		Property as per list E		
2,975	per list A	2,975	Furniture	1,200	800
—	List B	—			800
	List C	—			—

NOTES

—	List D	—	List F	—
			List G	—
			Surplus per contra	800
			Deduct : Preferential	—
			Creditors	800
			Deficiency as per list H	2,175
2,975		**2,975**		**2,975**

Deficiency Account (List H)

	Rs.		Rs.
Excess of assets over liabilities	1,100	Loss of Realisation of assets	
Deficiency	2,175	Furniture	400
		Investments	500
		Loss of Capital in the Firm	2,000
		Loss due to guarantee to Bank	75
		Loss of Investments of the Bank	300
	3,275		**3,275**

फर्म के लेनदार के पास किसी साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्ति प्रतिभूति के रूप में होना

(Private property of a partuer as security with Firm's creditors)

यह हो सकता है कि फर्म के किसी लेनदार ने किसी साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्ति की जमानत पर फर्म को ऋण दिया हो। इस स्थिति में—

(1) ऐसा लेनदार फर्म के लिए अरक्षित लेनदार होगा, सुरक्षित नहीं क्योंकि फर्म ने अपनी कोई सम्पत्ति प्रतिभूति के रूप में नहीं दी है।

(2) लेनदार को सर्वप्रथम फर्म की सम्पत्तियों में से भुगतान प्राप्त होगा। चूँकि वह फर्म का अरक्षित लेनदार है, अतः उसे पूर्ण राशि प्राप्त नहीं होगी, केवल आंशिक भुगतान ही मिल सकेगा। लेनदार फर्म से भुगतान प्राप्त कर लेने के पश्चात् केवल शेष राशि ही साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्ति से प्राप्त करने का अधिकारी होगा।

उदाहरण—मान लीजिए राम ने एक फर्म को 10,000 रु. का ऋण फर्म के एक साझेदार घनश्याम के मकान (जिसका मूल्य 50,000 रु. है) की प्रतिभूति पर दिया। फर्म दिवालिया हो गई तथा उसके लेनदारों को केवल 40% भुगतान ही मिल सका। इस स्थिति में राम $\left(\frac{10,000 \times 40}{100}\right)$ = 4,000 रु. फर्म से प्राप्त कर लेगा तथा शेष 6,000 रु. वह घनश्याम के मकान से वसूल कर सकेगा।

Illustration : 15 On 31 st March, 2006 the Balance Sheet of A and B was as follows :

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	24,000	Machinery	24,000
Bills payable	30,000	Buildings	12,000
Bank	18,000	Books Debts	24,000
Twelve month rent	1,200	Cash	1,200
One month's salary	1,200	Stock	37,200
Capital :	A	12,000	
	B	12,000	
	98,400		**98,400**

A owed personally Rs. 21,600 and he had in addition to his interest in the firm, a house which cost Rs. 6,000, Furniture Rs. 2,400 and Life Policies on which he had paid life premiums amounting to Rs. 1,200. B owed Rs. 16,800 and he had paid life premiums amounting to Rs. 3,600 and had furniture which cost Rs. 1,200. The Bank held the deeds of A's property and his life policies. It became necessary to call the creditors together.

The partnership assests were valued as follows : Machinery Rs. 13,080, Building Rs. 6,000, Book Debts : Good Rs. 12,000; Doubtful Rs. 6,000 (estimated at Rs. 3,600), Bad Rs. 6,000; Stock Rs. 24,000.

A's property was considered to be worth Rs. 6,000 and his life polices Rs. 600, his furniture Rs. 1,800. B's life policies were worth Rs. 1,800, his furniture Rs. 600.

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Accounts of the firm as well as of the partners.

A व्यक्तिगत रूप से 21,600 रु. का ऋणी है तथा फर्म में उसके हित के अतिरिक्त उसके पास 6,000 रु. का एक मकान, 2,400 रु. का फर्नीचर तथा एक जीवन बीमा पॉलिसी है जिस पर वह 1,200 रु. प्रीमियम दे चुका है। B 16,800 रु. का ऋणी है तथा उसने 3,600 रु. अपनी जीवन बीमा पॉलिसी पर प्रीमियम के रूप में दिये है तथा उसके पास 1,200 रु. का फर्नीचर है। बैंक के पास A की सम्पत्ति के स्वामित्व संलेख तथा उसके जीवन बीमा की पॉलिसी है।

साझेदारी की सम्पत्तियों का मूल्यांकन निम्न प्रकार हुआ : मशीनरी 13,080 रु.; भवन 600 रु.; पुस्तकीय देनदार : अच्छे 12,000 रु., संदिग्ध 6,000 रु., (अनुमानित प्राप्त राशि 3,600 रु.), डूबत 6,000 रु., रहतिया 24,000 रु.।

A की सम्पत्तियों का मूल्य 6,000 रु. आँका गया, उसकी जीवन बीमा पॉलिसी तथा उसके फर्नीचर का मूल्यांकन क्रमशः 600 रु. और 1,800 रु. पर किया। B की जीवन बीमा पॉलिसी तथा फर्नीचर का मूल्य क्रमशः 1,800 रु. और 600 रु. था। साझेदारों एवं फर्म के स्थिति-विवरण एवं कमी के खाते बनाइए।

Solution : टिप्पणियाँ—(1) A की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ (6,000 + 600 + 1,800) = 8,400 रु. की तथा उसके व्यक्तिगत दायित्व 21,600 रु. के है। चूँकि A की व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ उसके व्यक्तिगत दायित्वों को पूरा करने हेतु ही अपर्याप्त है, अतः फर्म को कोई आधिक्य प्राप्त नहीं होगा।

(2) B की व्यक्तिगत सम्पत्तियां (1,800 + 600) = 2,400 रु. तथा उसके व्यक्तिगत दायित्व 16,800 रु. के है। अतः B की सम्पत्तियो से भी फर्म को कोई आधिक्य प्राप्त नही होगा।

(3) बैंक ओवरड्राफ्ट के लिए फर्म ने कोई प्रतिभूति नही दी है, A ने व्यक्तिगत रूप से अपनी सम्पत्ति तथा बीमा पॉलिसी की जमानत दी है अतः बैंक फर्म का रक्षित लेनदार नहीं है।

(4) अरक्षित लेनदार के रूप में बैंक सर्वप्रथम फर्म से भुगतान प्राप्त करेगी। उसे जितना भुगतान फर्म से कम मिलेगा केवल उतनी राशि ही बैंक A की व्यक्तिगत सम्पत्तियों से वसूल करेगी। इसकी गणना निम्नानुसार की जाएगी।

∵ 73,200 रु. के अरक्षित लेनदारों को फर्म देगा 58,680 रु.

∴ 18,000 रु. के बैंक अधिविकर्ष पर भुगतान होगा $\left(\frac{18,000 \times 58,680}{73,200}\right) = 14,430$ रु.

A का दायित्व (18,000 — 14,430) = 3,570 रु.।

(5) फर्म के अरक्षित लेनदार

	सूची A	रु.
	व्यापारिक लेनदार	24,000
	देय बिल	30,000
	बैंक	18,000
	किराया	1,200
		73,200

NOTES

Statement of Affairs of A and B (As 31st March, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets		Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
73,200	Unsecured Creditors as		Paroperty as per List E		
	per List A	73,200	Cash	1,200	1,200
—	Fully secured Creditors		Stock	37,200	24,000
	as per List B	—	Building	12,000	6,000
—	Partly secured Creditors		Machinery	24,000	13,000
	as per List C	—	Book Debts as per List F		44,280
1,200	Preferential Creditors		Good		12,280
	as per List D		Doubtful	6,000	3,600
	Deduct per contra Rs. 1,200		Bad	6,000	
			Bills of Exchange as per List G		59,880 —
			Deduct : Preferential Creditors Per contra		1,200
					58,680
			Deficiency as per list H		14,520
74,400		73,200			73,200

Deficiency Account of the Firm

	Rs.		Rs.
Excess of assets over liabilities 8,400	24,000	Bad Debts	
Deficiency	14,520	Loss on Realisation of Assets Rs.	
		Stock	13,200
		Building	6,000
		Machinery	10,920
			30,120
	38,520		38,520

Statement of Affairs of A

Rs.		Rs.		Rs.
21,600	Unsecured Creditors as		Property per List E	
	per List A	21,600	Furniture (Rs. 2,400)	1,800
	Fully Secured Creditors		Surplus of Security held	
	as per List B		by Bank	3,030
	Partly Secured Creditors		Investment in the firm	
	as per List C	-	(10,000)	Nil
--	Preferential Creditors as			4,830
	per List D		Book Debts as per List F	—
			Bills of Exchange as per List G	--
			Deficiency as per List H	16,770
21,600		21,600		21,600

Deficiency Account of A

	Rs.		Rs.
Deficiency	16,770	Loss on Furniture	600
		Loss on Policy	600
		Loss on Investment (Business)	12,000
		Security held by Bank	3,570
	16,770		**16,770**

Statement of Affairs of B

Rs.		Rs.		Rs.
16,800	Unsecured Creditors as per List A	16,800	Property as per List E :	
			Furniture (Rs. 1,200)	600
			Policies (Rs. 3,600)	1,800
			Deficiency as per List H	14,400
16,800		**16,800**		**16,800**

Deficiency Account of B

	Rs.		Rs.
Deficiency	14,400	Loss on Capital in Business	12,000
		Loss on Furniture	600
		Loss on Policies	1,800
	14,400		**14,400**

हल किए हुए प्रश्न
(Solved Problems)

Problem 1. अरुण ने 31 दिसम्बर, 2006 को दिवाले का आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया। निम्नलिखित समकों से उसका स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइए। (Arun filed his insolvency petition on 31st Dec., 2006 From the following figures, prepare his Statement of Affairs and Deficiency Account.)

	Rs.	Rs.
अरक्षित लेनदार (Unsecured Creditors)		3,940
पूँजी खाता (Capital A/c)		700
अमर-ऋण खाता (Amar—Loan A/c)		564
अजय-ऋण खाता (Ajay—Loan A/c)		12,654
स्कन्ध (Stock)	4,113	
फिक्चर्स (Fixtures)	250	
पूर्वाधिकार लेनदार (Preferential Creditors)		310
देय बिल (B/P)		225
हस्तस्थ रोकड़ (Cash-in-hand)	110	
घोड़े तथा गाड़ी (Horse and Carts)	251	
प्राप्य बिल (B/R)	169	
विविध देनदार (Sundry Debtors)	2,446	
बैंकस्थ रोकड़ (Cash at Bank)	356	
फ्रीहोल्ड प्रॉपर्टी (Freehold Property)	5,000	
बीमा पॉलिसी (Insurance Policy)	1,778	

लाभ-हानि खाता (Profit & Loss A/c)	776	
आहरण (Drawings)	1,219	
सट्टे की हानि (Speculation loss)	1,925	
	18,393	**18,393**

NOTES

भुनाए गए बिलों पर संभावित दायित्व 358 रु.; जिसका भुगतान का कोई दायित्व नहीं है। (Contingent liability on Bills discounted Rs. 358, not expected to rank)

अमर का बीमा पॉलिसी पर प्रथम प्रभार है। अजय का बीमा पॉलिसी पर द्वितीय प्रभार तथा फ्रीहोल्ड प्रापर्टी पर भी प्रभार है। स्टॉक से 3,500 रु. प्राप्त होने की आशा है। देनदारों में से 291 रु. के देनदार संदिग्ध है तथा उनसे 100 रु. वसूल होने की आशा है तथा 287 रु. के ऋण अप्राप्य है। 1 जनवरी, 2006 को पूँजी 700 रु. की थी तथा इस वर्ष 776 रु., की व्यापारिक हानि हुई।

(Amar holds a first charge on life policy and Ajai besides having a second charge on life policy, also holds a charge on Freehold Property. The Stock is expected to realse Rs. 3,500. Of the Debtors, Rs. 291 are doubtful and are estimated to prduce Rs. 100, Rs. 287 are bad. On 1st January 2006 the Capital was Rs. 700 and trading loss amounting to Rs. 776 was incurred during the year.)

Solution : टिप्पणियाँ—

(1) बीमा पॉलिसी तलपट में दी है, अतः यह व्यापारिक सम्पत्ति है।

(2) कुल देनदार 2,446 रु. के है। इसमें से 291 रु. के संदिग्ध तथा 287 रु. के अप्राप्य है। अतः अच्छे देनदार 2,446—291 + 287 = 1,868 रु. के है।

(3) भुनाए गए बिल 358 रु. के सकल दायित्व में दिखाए जाएँगे, चूँकि इन पर भुगतान का कोई दायित्व नहीं है अतः भुगतान की राशि तथा कमी खाते मे कोई राशि नहीं दिखाई जाएगी।

Statement of Affairs (As at 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs.		Rs.	Rs.
4,523	Unsecured Creditors as			Property as per list E		
	per List A		4,165	Stock	4,113	3,500
				Fixtures	250	250
564	Fully-Secured Creditors			Cash	110	110
	as per List B	564		Horses and Carts	251	251
	Value of Security	1,778		Bank	356	356
	Surplus to list C	1,214		Book-Debts as per list F		4,467
12,652	Partly secured Creditors			Good	1,868	1,868
	as per List C	12,654		Doubtful	291	100
	Value of securities			Bad	187	—
	(1,214 + 5,000) =	6,214		Bills of Exchange as per		6,435
			6,440	List G		169
310	Preferential Creditors					6,604
	as per List D	310		Deduct Preferential		
	Deducted per contra			Creditors as per list D		310
						6,294
				Deficiency as per list 'H'		4,311
18,051			**10,605**			**10,605**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	700	Profit & Loss A/c	776
Deficiency	4,311	Drawings	1,219
		Speculation Loss	1,625
		Loss on Realisation of assets	
		Stock	613
		Debtors	478
	5,011		**5,011**

NOTES

Problem 2. Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account of Mr. Ram Mohan of Delhi against whom an order of adjudication was passed on 31st December, 2006. Following figures were obtained from his book at the date of insolvency :

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	20,000	Liabilities on Bills Receivable	
Bills Payable	30,000	Discounted (estimated to rank	
Bank Overdraft	2,000	Rs. 2,500)	5,000
Mortagages (holding the security		Stock-in-trade (estimated to	
worth Rs. 40,000)	30,000	realize Rs. 20,000)	40,000
Partly secured creditors (security		Machinery (estimated to realize	
being a second charge on the		Rs. 25,000)	35,000
assets held by fully secured		Furniture (estimated to realize	
Creditors to the extent of Rs. 500)	4,500	Rs. 2,000)	5,000
Rates and Taxes due	450	Cash	200
Deu to Landlord in respect of		Books Debts :	
rent for two months (Rs. 200		Good	600
per month)	400	Doubtful (estimated to	
Wages and salaries	350	produce Rs. 200)	500
		Bad	100

The insolvent commenced business two years ago with a capital of Rs. 34,000. Drawings in the two years amounted to Rs. 1,100. In the year 2005 there was a net profit of Rs. 300 and net loss or Rs. 500 was incurred in 2006. Interest on capital was allowed to the tune of Rs. 500 per annum.

देहली के श्री राममोहन का 31 दिसम्बर, 2006 को (जब वह दिवालिया हुआ) स्थिति-विवरण और कमी खाता बनाइये। दिवाला की तारीख पर निम्नांकित सूचनाएं उसकी पुस्तकों से प्राप्त हुई।

दिवाला ने 34,000 रु. की पूँजी से दो वर्ष पहले व्यापार प्रारम्भ किया। दो वर्ष में 1,100 रु. के आहरण किये। 2005 में, 300 रु. लाभ और 2006 में 500 रु. की हानि हुई। पूँजी पर ब्याज 500 रु. प्रतिवर्ष मान्य है।

Solution : टिप्पणी

		रु.	रु.
(1) अरक्षित लेनदार	व्यापारिक लेनदार	20,000	20,000
	देय बिल	30,000	30,000
	किराया	400	400
	बैंक अधिविकर्ष	2,000	2,000
	भुनाए गए बिल पर दायित्व	5,000	2,500
		57,400	54,900

NOTES

Statement of Affairs (As on 31st December, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs.		Rs.	Rs.
57,400	Unsecured Creditors as per List A		54,900	Property as per List E		
				Stock	40,000	20,000
30,000	Fully-Secured Creditors			Machinery	35,000	25,000
	as per List B	30,000		Furniture	5,000	2,000
	Value of Securities	40,000		Cash	200	200
		10,000		Book Debts as per list F		47,200
	Surplus to list C	500	—	Good	600	600
	Surplus to Contra	9,500		Doubtful	500	200
4,500	Partly-secured Creditors			Bad	100	....
	as per list C	4,500		Add : Surplus as per		48,000
	Value of Security	500		contra		9,500
			4,000	Deduct : Preferential		57,500
800	Perferential			Creditors per contra		800
	Creditors	800				56,700
	Deducted per Contra			Deficiency as per List H		2,200
92,700			**58,900**			**58,900**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	34,000	Loss (2006)	500
Profit (2005)	300	Drawings	1,100
Interest on Capital for two year	1,000	Liability on Bills discounted	2,500
Deficiency	2,200	Loss on Realization of assets	
		Stock	20,000
		Machinery	10,000
		Furniture	3,000
		Debts (300 + 100) =	400
	37,500		**37,500**

Problem 3. मद्रास के श्री मेनन की स्थिति दिनांक 30.6.2006 को निम्नानुसार थी—

	रु.		रु.
लेनदार	20,000	रोकड़ शेष	2,100
देय-विपत्र	3,000	प्राप्य विपत्र	6,650
अधिविकर्ष	1,300	देनदार	11,800
भवन पर बन्धक	8,000	स्कन्ध	5,400
पूंजी	5,450	भवन	12,000
	37,950		37,950

लेनदारों में मुनीम का 60 रु. प्रति माह की दर से 6 माह का बकाया वेतन, 2 माह का किराया 400 रु. और कर के 580 रु. भी सम्मिलित है। देनदारों में 5,000 रु. शोध्य तथा शेष में से 2,200 रु. वसूल होने का अनुमान है। अन्य सम्पत्तियों से निम्नलिखित राशि वसूल होने का अनुमान है : स्कन्ध 3,000 रु., भवन 12,800 रु., प्राप्य विपत्र 4,500 रु.। उसने वर्ष भर में रु. 15,000 के विपत्र बेचे, जिनमें से 3,000 रु. के विपत्रों की अवधि पूरी नहीं हुई है और इनमें से रु. 1,200 के विपत्र सम्मानित न होने का अनुमान है। तीन वर्ष पूर्व उसकी

पूँजी 10,000 रु. थी तथा कुल लाभ (हानि घटा कर) रु. 3,000 और कुल आहरण 7,550 रु. रहे। उनके निजी उपस्कर 700 रु. के तथा बीमा पॉलिसी 1,800 रु. मूल्य की है। श्री मेनन का अवस्था पत्रक तथा न्यूनता खाता बनाइए। यदि समापन व्यय 3,324 रु. हों, तो लेनदारों को लाभाँश किस दर से मिलेगा?

NOTES

Solution : टिप्पणियाँ—

		रु.	
(1)	**अरक्षित लेनदार—** लेनदार		20,000
	(—) पूर्वाधिकार लेनदार :	रु.	
	मुनीम का वेतन (अधिकतम राशि)	300	
	1 माह का किराया	200	
	कर	580	1,080
			19,120
	देय-विपत्र		3,000
	अधिविकर्ष		1,300
	भुनाए गए विपत्रों पर दायित्व		1,200
			24,620
(2)	**लाभांश की दर की गणना—**		रु.
	उपलब्ध धन राशि		23,020
	(—) सामापन व्यय		3,324
	24,620 रु. के अरक्षित लेनदारों को उपलब्ध राशि		19,696

लाभांश $\left(\frac{19,696}{24,620} \times 1\right) = 0.80$ रु

अर्थात् 1 रु. के लेनदार को 80 पैसे भुगतान मिलेगा।

Statement of Affairs (As on 30.6.2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditors as		Property as per List E		
38420	per List A	24,620	Cash	2,100	2,100
	Fully-Secured Creditors		Stock	5,400	3,000
8,000	as per List B 8,000		Fixtures	–	700
	Value of Securities 12,800		Life Policy		1,800
	Surplus to		Book Debts as per list F :		7,600
	Contra 4,800	—	Good	5,000	5,000
	Partly-secured Creditors		Deubtful	6,800	2,200
-	as per list C	Nil	Bad		
1,080	Perferential Creditors		Bill of Exchange as per		14,800
	as per list D 1,080		list G	6,650	4,500
	Deducted per contra	–	Add : Surplus as per		19,300
			Contra		4,800
			Deduct : Preferential		24,100
			Creditors as per Contra		1,080
					23,020
			Deficiency as per list H		1,600
47,500		24,620			24,620

NOTES

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	10,000	Drawings	7,550
Profit	3,000	Loss on Realisation of assets	
Private assets (700 + 1,800) =	2,500	B/R	2,150
Gain in Realisation of Building	800	Drs	4,600
Deficiency	1,600	Stock	2,400
		Liability on Bills discounted	1,200
	17,900		**17,900**

Problem 4. एक्स ने 1 जनवरी 2006 को दिवालियापन के लिए आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया। उक्त तिथि को उसकी सम्पत्तियाँ निम्न थी—

भवन—10,000 रु. (अनुमानित वसूली मूल्य 60%), फर्नीचर—5,000 रु. (अनुमानित वसूली मूल्य 50%), संयत्र एवं मशीनें—20,000 रु. (अनुमानित वसूली मूल्य 22,000 रु.)

उसकी जीवन पॉलिसी का समर्पण मूल्य 5,000 रु. था (इस पॉलिसी पर प्रीमियम के 10,000 रु. भुगतान किए जा चुके है) उसके मकान का मूल्य 6,000 रु. था।

उसके दायित्व—बैंक अधिविकर्ष 1,10,000 रु. (जो मकान के ऊपर बंधक द्वारा सुरक्षित है।) उसने भाई से 5,000 रु. का ऋण लिया है जिस पर भवन की प्रतिभूति है। भुनाए गए बिलों की राशि 5,000 रु. हैं जिनके सम्बन्ध में 1,000 रु. का दायित्व उदय होने की सम्भावना है।

एक्स की पत्नी के आभूषण 10,000 रु. मूल्य के है जिनमे 2,000 रु. मूल्य के आभूषण उसके पिता से प्राप्त धन से क्रय किये गए है और शेष अपने पति द्वारा किये गये आहरणों से क्रय किए गए है। घर का सामान 6,000 रु. का है। वह 5,000 रु. मूल्य की सम्पत्ति का प्रन्यासी (Trustee) भी है।

एक्स के निजी दायित्व 15,000 रु. के हैं। दो माह का कार्यालय भवन का किराया 500 रु. अदत्त है तथा 600 रु. एक कर्मचारी का वेतन देना बाकी है। 1 जनवरी 2005 को उसके पूंजी खाते मे 81,100 रु. का डेबिट शेष था।

एक्स का अवस्था विवरण एवं हीनता (Deficiency) लेखा प्राविन्शियल इन्सालवेन्सी अधिनियम तथा प्रेसीडेन्सी टाउन्स अधिनियम के अनुसार बनाइए।

Solution : टिप्पणियाँ—(1) पत्नी के वे ही आभूषण लेनदारों के भुगतान हेतु उपयोग में लाए जा सकेंगे जो उसने अपने पति द्वारा किए गए आहरणों से क्रय किए है, पिता से प्राप्त आभूषण नहीं लिए जाएँगे।

(2) एक्स के पास प्रन्यासी के रूप मे 5,000 रु. मूल्य की सम्पत्ति को भी नही किया जाएगा।

(3) घर का सामान (household effects) 6,000 रु. प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अन्तर्गत व्यापार के दायित्व चुकाने के लिए उपयोग मे लाये जा सकेंगे जबकि प्रेसीडेंसी टाउन्स अधिनियम के अन्तर्गत 300 रु. तक का घरेलू सम्पत्तियाँ विभाजन योग्य नहीं होती अर्थात् केवल 5,700 रु. का घरेलू सामान ही लिया जाएगा।

(4) दोनों अधिनियमों के अन्तर्गत व्यक्तिगत सम्पत्तियों एवं व्यक्तिगत दायित्वों की स्थिति निम्नानुसार है

	प्रेसीडेन्सी टाउन्स एक्ट	प्राविन्शियन इन्सौलवैन्सी एक्ट
	रु.	रु.
बीमा पॉलिसी	5,000	5,000
मकान	6,000	6,000
पत्नी के आभूषण	8,000	8,000
घर का सामान	5,700	6,000
	24,700	25,000
व्यक्तिगत दायित्व	15,000	15,000
सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य	9,700	10,000

		प्रेसीडेन्सी एक्ट	प्राविन्शियल एक्ट
		रु.	रु.
(5) अरक्षित लेनदार—	भुनाए गए बिलों पर दायित्व	1,000	1,000
	निजी दायित्व	15,000	15,000
	एक माह का किराया	250	—
	दो माह का किराया	—	500
	कर्मचारी का वेतन	300	580
		16,550	**17,080**
(6) पूर्वाधिकार लेनदार	एक माह का किराया	250	—
	कर्मचारी का वेतन	300	20
		550	**20**

NOTES

Presidency Towns Act

Statement of Affairs (As on 1.1.2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
20,550	Unsecured Creditor as		Property as per list E		
	per list A	16,500	Plant and Machinery	20,000	22,000
5,000	Fully-Secured Dreditors		Life Policy	—	5,000
	as per list B 5,000		Ornaments	—	8,000
	Value of Security 6,000		Household effects	—	5,700
	Surplus to Contra 1,000	--	Furniture	5,000	2,500
1,10,000	Partly-Secured Creditors				43,200
	as per list C 1,10,000		Book Debts as per list F		—
	Value of security 6,000		Bills of Exchange as		43,200
550	Preferential Creditors as		per list G		—
	per list D 550		Add : Surplus per		43,200
	Deducted per Contra	—	Contra		1,000
			Deduct : Preferential		44,200
			Creditors as per Contra		550
					43,650
			Deficiency as per list H		76,900
1,36,100		1,20,550			1,20,550

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Profit on Realisation of		Capital (Dr. balance)	81,100
Plant and Machinery	2,000	Liability on Bills discounted	1,000
Excess of Private assets over		Loss on Realisation of Assets	
private liabilities	9,700	Building	4,000
Deficiency	76,900	Furniture	2,500
	88,600		**88,600**

NOTES

Provincial Insolvency Act.

Statement of Affairs (As on 1.1.2006)

Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
21,080	Unsecured Creditors as		Property as per List F		
	per List A	17,080	Plant and Machinery	20,000	22,000
5,000	Fully-secured creditors		Life policy	--	5,000
	as per list B 5,000		Ornaments	—	8,000
	Value of security 6,000		Household effects		6,000
			Furniture	5,000	2,500
	Surplus to contra 1,000	—			
1,10,000	Partly-secured Creditors				43,500
	as per list C 1,10,000		Book debts as per list F		--
	Value of security 6,000				
		1,04,000	Bills of Exchange as per		43,500
20	Preferential Creditor as		list G		—
	per list D 20	—	Add : Surplus as per		43,500
	Deducted per contra		Contra		1,000
			Deduct : Preferential		44,500
			Creditors as per Contra		20
					44,480
			Deficiency as per list H		76,600
1,36,100		**1,21,080**			**1,21,080**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Profit on realisation of		Capital (Dr. balance)	81,100
Plant an Machinery	2,000	Liability on Bills discounted	1,000
Excess of private assets over		Loss on Realisation of Assets	
private liabilites	10,000	Building	4,000
Deficiency	76,000	Furniture	2,500
	88,600		**88,600**

Problem 5. बम्बई के P के लिए निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर एक स्थिति-विवरण बनाइए।

पट्टे की सम्पत्ति, 1,00,000 रु. अनुमानित प्राप्य राशि 90,000 रु.।

प्लाण्ट एवं मशीनरी 40,000 रु. अनुमानित प्राप्य राशि 30,000 रु.।

व्यापारिक रहतिया 20,000 रु. अनुमानित प्राप्य राशि 14,000 रु.।

पुस्तकीय देनदार : अच्छे 60,000 संदिग्ध 5,000 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 25%),

अशोध्य ऋण 14,000 रु.।

विपत्र जो अपने पास है 3,750 रु.

जीवन पॉलिसी 25,000 रु. इसका समर्पण मूल्य 5,000 रु., यह एक बीमा कम्पनी के पास 2,000 रु. के ऋण के लिए प्रतिभूति स्वरूप रखी है।

घरेलू फर्नीचर 3,600 रु., अन्य देनदारियां 2,900 रु.। बिल भुनाये 6,000 रु. के जिनमें 2,000 रु. के बिलों के अनादरित होने की संभावना है।

पट्टे के बन्धक पर ऋण 50,000 रु.।

हस्तस्थ रोकड़ 100 रु.।

बैंक अधिविकर्ष 50,000 रु. जो P के भाई की व्यक्तिगत प्रतिभूति द्वारा सुरक्षित है तथा जिसे पट्टे पर दूसरा प्रभार प्राप्त है।

असुरक्षित लेनदार 1,50,000 रु.।

N से ऋण 2,500 रु. जो पॉलिसी पर द्वितीय प्रभार द्वारा सुरक्षित है।

पट्टे की भूमि पर तीन माह का किराया 250 रु. देय हैं।

वह अपने कार्यालय के दो लिपिकों को 6 माह का वेतन 1,500 रु. भुगतान नहीं कर पाया तथा 1,500 रु. करों के देने है।

स्थिति-विवरण बनाइए।

Solution : टिप्पणियाँ—

			रु.	रु.
(1)	अरक्षित लेनदार :	घरेलू ऋण	2,900	2,900
		भुनाया गया वेतन	6,000	2,000
		अरक्षित लेनदार	1,50,000	1,50,000
		लिपिकों का वेतन (1,500—600)	900	900
		पट्टे पर भू-कर (250—83) =	167	167
			1,55,967	1,55,967

(2) पूर्वाधिकार लेनदार : दो लिपिकों का 4 माह का वेतन $\left(\frac{1,500 \times 4}{6}\right) = 1,000$ रु.

पूर्वाधिकार राशि प्रति लिपिक 300 रु. (300 × 2) =	600
एक माह का किराया (250 ÷ 3) =	83
कर एवं दर	1,500
	2,183

			रु.
(3)	पूर्णरक्षित लेनदार	पट्टे के विरुद्ध ऋण	50,000
		पॉलिसी के विरुद्ध ऋण	2,000
		N से ऋण	2,500
	प्रतिभूतियाँ :	रु.	54,500
		पट्टा 90,000	
		पॉलिसी 5,000	95,000
		आधिक्य	40,500
		पट्टे का आधिक्य जो बैंक ओवरड्राफ्ट (सूची सी) को जाएगा	40,000
		आधिक्य सम्पत्ति पक्ष को	500

(4) पट्टे का प्राप्य-मूल्य 90,000 रु. है इस पर 50,000 रु. का ऋण है, आधिक्य 40,000 रु. बचता है। इस पट्टे पर बैंक का द्वितीय प्रभार है। बैंक अधिविकर्ष की राशि 50,000 रु. है, जबकि उपलब्ध आधिक्य केवल 40,000 रु. है अतः बैंक अंशतः रक्षित लेनदार है।

NOTES

Statement of Affairs (As on................)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
1,59,967	Unsecured Creditor as		Property as per list E		
	per list A	1,55,967	Plant and Machinery	40,000	30,000
54,500	Fully-secured Creditors		Stock-in-trade	20,000	14,000
	as per list B 54,500		Household furniture	—	3,600
	Value of Securities 95,000		Cash-in-hand	100	100
	40,500		Book Debts as per list F		47,700
	Surplus to list C 40,000		Good	60,000	60,000
			Doubtful	5,000	2,500
	Surplus to Contra 500	—	Bad	14,000	—
			Bill of Exchange as per		1,10,200
50,000	Partly-Secured Creditors		list G	3,750	3,750
	as per list C 50,000		Add : Surplus as per		1,13,950
	Value of securities 40,000		Contra		500
		10,000	Deduct : preferential		1,14,450
2,183	Preferential Creditors as		Creditors per Contra		2,183
	per list D 2,183				1,12,267
	Deducted per Contra	—	Deficiency as per list H		53,700
2,66,650		**1,65,967**			**1,65,967**

Problem 6. Madan Mohan filed a petition in bankruptcy on 30th June, 2006. His books showed the following balance :

		Rs.	Rs.
Cash in hand		10	
Furniture and Fitings (estimated to produce Rs. 80)		250	
Stock-in-Trade (estimated to produce Rs. 1,200)		1,800	
Sundry Creditors—			
Trade Creditors			2,000
Bills Payable			2,200
Sundry debtors—	Rs.		
Good	1,000		
Doubtful (estimated at 50%)	2,000		
Bad	2,000		
		5,000	
Bank Overdraft			1,200
Capital			1,660
	Total	7,060	7,060

Liability on Bills discounted Rs. 500, expected to rank Rs. 100. His Household furniture etc was valued at Rs. 250. He owned a House valued at Rs. 750 having a mortgage on it of Rs. 600 at 4% interest paid up to the preceding 31st December.

Preferential Creditors amounted to Rs. 35 (included in Sundry Creditors) and Rs. 15 for Rates on the House.

Prepare a Statement of Affairs and Deficiency Account.

मदन मोहन ने 30 जून, 2006 को दिवाला के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। उसकी पुस्तकों मे निम्नांकित बाकियाँ थीं।

		रु.	रु.
रोकड़		10	
फर्नीचर एवं फिटिंग्स (अनुमानित प्राप्य राशि 80 रु.)		250	
व्यापारिक रहतिया (अनुमानित प्राप्य मूल्य 1,200 रु.)		1,800	
कुल लेनदार :			
व्यापारिक लेनदार			2,000
देय बिल			2,200
कुल देनदार :	रु.		
अच्छे	1,000		
संदिग्ध (अनुमानित मुल्यांकन 50%)	2,000		
अशोध्य	2,000		
		5,000	
बैंक अधिविकर्ष			1,200
पूँजी			1,660
		7,060	7,060

भुनाये गये बिल के सम्बन्ध में दायित्व 500 रु. है, सम्भावित दायित्व 100 रु. है। उसके घरेलू फर्नीचर का मूल्य 250 रु. था। उसके पास 750 रु. का मकान था जिसको उसने 600 रु. में गिरवी रख दिया था। उस ऋण पर ब्याज 4% की दर से पिछले 31 दिसम्बर तक दिया गया है।

पूर्वाधिकार लेनदार 35 रु. के हैं (यह राशि विभिन्न लेनदारों में सम्मिलित है) तथा 15 रु. मकान के कर के हैं।

स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये।

Solution : टिप्पणियाँ—

			रु.	रु.
(1)	अरक्षित लेनदार	व्यापारिक लेनदार (2,000 — 35) =	1,965	1,965
		देय बिल	2,200	2,200
		बैंक अधिविकर्ष	1,200	1,200
		भुनाए गए बिलों पर दायित्व	500	100
			5,865	5,465

(2) पूर्वाधिकार लेनदार (35 + 15) = 50 रु

(3) रहन पर 6 माह ब्याज (1 जनवरी से 30 जून तक) $\left(\frac{600 \times 4}{100} \times \frac{6}{12}\right) = 12$ रु

(4) व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ (फर्नीचर तथा मकान) (250 + 750) 1,000 रु

(5) व्यक्तिगत दायित्व (रहन + ब्याज + मकान पर कर) (600 + 12 + 15) = 627 रु

Statement of Affairs (As on 30th June, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs.		Rs.	Rs.
5,865	Unsecured Creditors as per list A		5,465	Property as per list E		
				Cash	10	10
612	Fully-Secured Creditors			Fixtures	250	80
	as per list B	612		Stock	1,800	1,200
	Value of Security	750		Household Furniture	—	250

NOTES

	Surplus to contra 138	....	Book Debts as per list F		1,540
—	Partly-Secured Creditors	Nil	Good	1,000	1,000
	as per list C		Doubtful	2,000	1,000
50	Preferential Creditors as		Bad	2,000	—
	per list D 50	—	Add : Surplus as per		3,540
	Deducted per Contra		Contra		138
			Deduct : Preferential		3,678
			Creditors as per Contra		50
					3,628
			Deficiency as per list H		1,837
6,527		**5,465**			**5,465**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	1,660	Liability on Bills discounted	100
Surplus of private assets over		Loss on Realisation of Assets	
private liabilities (1,000— 627) =	373	Fixtures	170
Deficiency	1,837	Stock	600
		Book Debts	3,000
	3,870		**3,870**

Problem 7. The assets of a merchant of 30th June, 2006 as shown by his books were Rs. 56,000 and his liabilities Rs. 44,000, filed his petition in the Insolvency Court and estimated his deficiency to be Rs. 30,000. After making the above estimate he found that the following items were not passed through his account books

Interest at 6% on his capital from 1st January, 2006.

A continget liability for Rs. 2,500 on bills discounted by him for Rs. 10,000.

Amount due as wages Rs. 300, as salaries, Rs. 700, as rent, Rs. 300; as rates and taxes. Rs 200.

Prepare . his Statement of Affairs and his Deficiency Account.

30 जून, 2006 को एक व्यवसायी की सम्पत्तियाँ 56,000 रु. और दायित्व 44,000 रु. के थे। उसने दिवालिया होने के लिए न्यायालय में प्रार्थना-पत्र दिया और अपनी अनुमानित कमी 30,000 रु. बताई। उपर्युक्त अनुमान लगाने के पश्चात् उसे यह पता चला कि निम्नांकित मदें लेखे पुस्तकों में नहीं ली गई हैं।

1 जनवरी, 2006 से उसकी पूँजी पर ब्याज 6% वार्षिक की दर से।

उसके द्वारा भुनाए हुए 10,000 रु. के बिलों पर संदिग्ध दायित्व 2,500 रु.।

देय राशियाँ : मजदूरी 300 रु., वेतन 700 रु., किराया 300 रु. तथा कर 200 रु.

उसका स्थिति-विवरण और कमी का खाता बनाइए।

Solution : **टिप्पणियाँ**—(1) 30 जून, 2006 को सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य (56,000 —44,000) = 12,000 रु.

(2) सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य 56,000 रु. था. अनुमानित प्राप्य मूल्य निम्नानुसार ज्ञात किया जाएगा

सम्पत्तियों का प्राप्य मूल्य = दायित्व – कमी (deficiency) = 44,000—30,000 = 14,000 रु.

(3) नए दायित्व उत्पन्न होना हानि है अत: इन्हें कमी खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाएगा।

		रु.
(4) अरक्षित लेनदार—	दायित्व	44,000
	भुनाए गए बिलों पर दायित्व	2,500
	किराया	300
		46,800

NOTES

Statement of Affairs (As on 30th June, 2006)

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
	Unsecured Creditors as		Property as per list E	56,000	14,000
54,300	per list A	46,800	Book Debts as per		
	Fully secured Creditors		list 'F'	—	—
—	as per list 'B'	—	Bills of Exchange as per		
	Partly secured Creditors		list 'G'	—	—
–	as per list 'C'	—	Surplus as per contra		—
	Preferential Creditors as				
	per list 'D' Rs. 1,200		Deduct : Preferential		14,000
1,200	Deducted per contra	—	Creditors as per contra		1,200
					12,800
			Deficiency as per list 'H'		34,000
55,500		**46,800**			**46,800**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Excess of Assets over Liabilities	12,000	Loss on realization of assets	42,000
Deficiency	34,000	Liability on Bills discounted	2,500
		Expenses owing :	
		Salaries	700
		Taxes	200
		Wages	300
		Rent	300
	46,000		**46,000**

Problem 8. Mr. Gyan had on 31st March, 2006 assets as shown by his books Rs. 27,600 including Machinery, valued in the books at Rs. 2,000 and was estimated to realise only 45% of the book value. He had liabilites of Rs. 20,400 of which Rs. 800 were fully secured against the Machinery. He filed his petition in Bankruptcy and estimated his deficiency to be Rs. 14,400 before taking into account the following outstanding liabilities—

Wages Rs. 600; Salaries 1,300; Rent 500.

Prepare his statement of Affairs and Deficiency Account

श्री ज्ञान की सम्पत्तियाँ 31 मार्च, 2006 को 27,600 रु. की थीं। इनमें 2,200 रु. की एक मशीन भी सम्मिलित है और पुस्तक का मूल्य 2000 है जिसका अनुमानित प्राप्य मूल्य 45% था। उसके दायित्व 20,400 रु. के थे जिनमें 800 रु. के दायित्व मशीनरी द्वारा पूर्ण सुरक्षित थे। उन्होंने दिवाला होने के लिए आवेदन पत्र दिया तथा 14,400 रु. की कमी बिना निम्नांकित अदत्त दायित्वों का लेख हुये अनुमानित की

	रु.
मजदूरी	600
वेतन	1,300
किराया	500

उपर्युक्त सूचनाओं के आधार पर श्री ज्ञान का स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइए।

Solution : **टिप्पणियाँ** (1) कुल सम्पत्तियाँ 27,600 रु., दायित्व 20,400 रु., अनुमानित कमी (Deficiency) 14,400 रु., सम्पत्तियों का प्राप्य मूल्य (20,400—14,400) = 6,000 रु.।

NOTES

(2) 27,600 रु. की कुल सम्पत्तियों का प्राप्य मूल्य 6,000 रु. है इसमें 2,000 रु. की एक मशीन सम्मिलित है जिसका प्राप्य मूल्य $\left(\frac{2,000 \times 45}{100}\right)$ = 900 रु. है। अतः मशीन के अलावा अन्य सम्पत्तियाँ जिनका पुस्तक मूल्य (27,600—2,000) = 25,600 रु. है (6,000—900) = 5,100 रु. मूल्य प्राप्त करेंगी।

			रु.
(3)	अरक्षित लेनदार :	लेनदार (20,400—800) =	19,600
		किराया	500
			20,100

(4) पूर्वाधिकार लेनदार (600 + 1,300) = 1,900 रु.

(5) 31 मार्च, 2006 को सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य (27,600—20,400) = 7,200 रु

Statement of Affairs

Gross Liabilities	Liabilities		Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.			Rs.		Rs.	Rs.
20,100	Unsecured Creditors as			Property as per list E	25,600	5,100
	per list A		20,100	Book Debts as per		5,100
800	Fully secured Creditors			list 'F'		—
	as per list 'B'	800		Bills of Exchange as per		5,100
	Value of Security	900		list 'G'		—
	Surplus to Contra	100	—	Add : Surplus per		5,100
	Partly-secured Creditors			Contra		100
	as per list C		—			
1,900	Preferential Creditors as			Deduct : preferential		5,200
	as per list D	1,900		Creditors per contra		1,900
	Deducted per contra		—			3,300
				Deficiency as per list H		16,800
22,800			**20,100**			**20,100**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Excess of Assets over Liabilities	7,200	Loss on Realization of assets	21,600
Deficiency	16,800	Outstanding liabilities	
		Expenses owing :	
		Wages	600
		Salaries	1,300
		Rent	500
	24,000		**24,000**

Problem 9. Sohan of Bhind commenced business on 1st Janurary, 2002 with a capital of Rs. 35,000. He drew on the average Rs. 3,000 per year. His profits for the first 3 years were Rs. 5,000. He did not prepare proper acounts for the next two years. On 31st December, 2006 an adjudication order was made against him. He submits the following information from which his statement of Affairs and Deficiency Account are to be prepared—

	Rs.		Rs.
Sundry creditors	20,000	Plant & Machinery cost Rs. 20,000	
Mortagage on Free hold Property	4,000	less Depreciation writeen off	
Creditors secured by Life Policy		Rs. 6,000 estimated to realise	2,000
estimated to be worth Rs. 4,000	12,000	Second Mortagage of Free hold	
Landlord—2 month's rent	200	property	12,000
Clerk's salary for two months	200	Book Debts, good—Rs. 6,000	
Municipal Taxes owing	180	Doubtful—Rs. 2,000; estimated	
Mrs. Sohan's Loan	3,000	to realise Rs. 600. Bad Rs. 500	
Bills Receivable Discounted and expected to renk	3,200	Cash in Hand	80
Free hold Property (estimated to Realise Rs. 20,000)	40,000		
Fixtures & Fittings cost Rs. 800 estimated to realise	350		
Stock-in-Trade cost Rs. 8,000 estimated to realise	5,550		

Solution : टिप्पणियाँ—

		रु.	रु.
अरक्षित लेनदान :	विविध लेनदार	20,000	20,000
	किराया	200	200
	लिपिक का शेष वेतन (200—20) =	180	180
	भुनाया गया बिल	3,200	3,200
		23,580	23,580

(2) यह मानकर कि श्रीमती सोहन को आय का कोई स्वतन्त्र स्रोता नही है, उन्हे स्थगित लेनदार (Deferred Creditor) माना गया है, अर्थात् श्रीमती सोहन को लेनदारो मे सम्मिलित नहीं किया गया है।

(3) अन्तिम दो वर्षो के व्यापारिक परिणाम खाते न बनाए जाने के कारण ज्ञात नहीं है। इस हेतु निम्नानुसार तलपट बनाया जाएगा:

Trial Balance

		Dr. (Rs.)	Cr. (Rs.)
Sundry Creditors		—	20,000
Mortgage on Freehold property		—	4,000
Creditors —		12,000	
Landlord for rent			200
Clerk's Salary —		200	
Municipal Taxes		—	180
Mrs. Shoan's Loan		--	3,000
Freehold Property		40,000	
Fixtures and Fittings		800	—
Stock-in-trade8,000		--	
Plant and Machinery		14,000	12,000
Second Mortgage		6,000	
Book Debts	Good	2,000	
	Doubtful	500	
	Bad	80	
Cash in hand			35,000

NOTES

Capital	15,000	
Drawings (3,000 × 5) =		
Profit for 3 year		5,000
	86,380	91,580
Deffeicencey being Loss	5,200	—
	91,580	91,580

Statement of Affairs As on 31st December, 2006

Gross Liabilities	Liabilities	Expected to Rank	Assets	Book Value	Estimated to Produce
Rs.		Rs.		Rs.	Rs.
23,500	Unsecured Creditors as		Property as per list E		
	per list A	23,580	Fixtures and Fittings	800	350
16,000	Fully-Secured Creditors		Stock-in-trade	8,000	5,550
	as per list B 16,000		Plant and Machinery	14,000	2,000
	Value of security 20,000		Cash in Hand	80	80
					7,980
	Surplus to contra 4,000	—	Book Debts as per list F		
12,000	Partly-Secured Creditors		Good	6,000	6,000
	as per list C 12,000		Dobutful	2,000	600
	Value of security 4,000		Bad	500	
		8,000			
200	Preferential Creditors as				14,580
	per list D 200	—	Add : Surplus per contra		4,000
	Deducted per contra				18,580
			Deduct : Preferential		
			Creditors per contra		200
					18,380
			Deficiency as per list H		13,200
		31,580			**31,580**

Deficiency Account (List 'H')

	Rs.		Rs.
Capital	35,000	Drawings	15,000
Profit for three years	5,000	Loss for two years	5,200
Life Policy (Private)	4,000	Liability on bill discounted	3,200
Mrs. Sohan's Loan	3,000	Loss on Realisation of Assets	
Deficiency	13,200	Freehold Property	20,000
		Fixtures	450
		Stock	2,450
		Plant	12,000
		Book Debts	1,900
	60,200		**60,200**

अभ्यास के लिए प्रश्न
(Assignment Material)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions)

(1) दिवालिया किसे कहते हैं? कौन-कौन से कार्य दिवालियापन के कार्य कहलाते हैं?

(2) भारत में दिवाला कानून का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(3) पूर्वाधिकार लेनदार से क्या आशय है? प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सौलवैन्सी एक्ट तथा प्राविन्शियल इन्सौलवैन्सी एक्ट के अन्तर्गत कौन-कौन से लेनदार पूर्वाधिकार लेनदार माने जाते हैं।

(4) अवस्था-विवरण (Statement of Affairs) से क्या आशय है? चिट्ठे तथा अवस्था-विवरण में अंतर कीजिए।

(5) अवस्था-विवरण बनाते समय लेनदारों तथा सम्पत्तियों की कौन-कौन सी सूचियाँ बनाई जाती हैं? संक्षेप में समझाइए।

(6) संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए— (i) स्थगित-लेनदार (Deffered Creditors) (ii) सम्पत्तियों का ऐच्छिक हस्तांतरण (Voluntary Transfer of Assets) (iii) विभाजन-योग्य सम्पत्तियाँ (Divisible Assets) (iv) कमी खाता (Deficiency Account)।

(7) कमी खाता किसे कहते हैं? यह कैसे बनाया जाता है?

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

Q 1. Prepare a Statement of Affairs and Deficiency Account as at 31st March, 2005 from the following figures; Stock realised Rs. 500; Fixtures and Fittings, Rs. 400; and Bad and Doubtful Debts Rs. 500; Share realised full value. The business was commenced on 1st April, 2002 with a capital of Rs. 9,100. Profits for amounted to Rs. 4,000, for 2003-04 Rs. 2,000 and there was a loss of Rs. 1,800 in 2004-2005 Total drawings amount to Rs. 10,000.

	Rs.
Cash	300
Stock-in-Trade	1,000
Debtors : Good	8,000
Doubtful	2,000
Bad	1,500
Fixture and Fittings	600
Investment in Shares	600
Unsecured Creditors	11,000
Secured Creditors	3,000
Value of Security held by Secured Creditors	3,500
Preferential Claims	[illegible]

31 मार्च, 2005 का एक स्थिति-विवरण तथा कमी का खाता निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर बनाइए स्टॉक का प्राप्त मूल्य 500 रु., फिक्चर्स और फिटिंग्स का प्राप्य मूल्य 400 रु., संदिग्ध और डूबत ऋण का प्राप्य मूल्य 500 रु., अंशों का पूर्ण मूल्य प्राप्य है। 9,100 रु. की पूँजी से 1 अप्रैल, 2002 को व्यापार प्रारम्भ किया गया। 2002-03 और 2003-04 में लाभ क्रमशः 4,000 रु. और 2,000 रु. के हुए, 2004-05 में 1,800 रु. की हानि हुई थी कुल आहरण 10,000 रु. के थे।

	रु.
रोकड़	300
व्यापारिक स्कंध	1,000
देनदार : अच्छे	8,000
संदिग्ध	2,000
डूबत	1,500
फिक्चर्स और फिटिंग	600
अंशों में विनियोग	600

NOTES

अरक्षित लेनदार	11,000
सुरक्षित लेनदार	3,000
सुरक्षित लेनदारो द्वारा रखी हुई प्रतिभूतियाँ	3,500
पूर्वाधिकार लेनदार	200

[**Ans.** कमी (deficiency) 400 रु.; कमी खाते का योग 15,500 रु.]

Q 2. श्री मोहन अपने व्यापार के लेनदारो का भुगतान करने में असमर्थ है। उनकी पुस्तकों से निम्न सूचनाएँ 31 मार्च, 2006 को प्राप्त की गई

			रु.
माल के लेनदार			75,000
देय बिल			5,000
अंशो द्वारा सुरक्षित लेनदार			40,000
स्टॉक द्वारा सुरक्षित लेनदार			15,000
भुनाये गए बिलों पर दायित्व			7,000
(दायित्व की संभावना 3,000 रु.)			
मिल पर बन्धक			10,000
लेनदार जिन्हे पूरा भुगतान होगा			3,000
देनदार : अच्छे			20,000
संदिग्ध (प्राप्य राशि 2,000 रु.)			10,000
प्रेषक पर माल	10,000		
अंश	16,000	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	15,000
स्टॉक	40,000	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	60,000
मिल	11,000	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	20,000
मशीनरी	15,000	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	15,000
फिक्चर्स	3,500	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	3,800
झोंपड़ियाँ	1,800	अनुमानित प्राप्य मूल्य रु.	5,000
बैंक में जमा राशि	100		
विनिमय			1,400

6 वर्ष पूर्व 1 अप्रैल को उसकी पूँजी 54,000 रु. थी। प्रथम चार वर्षों में कुल अर्जित लाभ 45,500 रु. थे तथा अन्तिम दो वर्षों की कुल हानियाँ 25,000 रु. थीं। यह हानि तथा लाभ 2,500 रु. प्रतिवर्ष पूँजी पर लगाने के पश्चात् थे। इस सम्पूर्ण अवधि का आहरण 77,200 रु. था।

श्री मोहन का इस तिथि को स्थिति-विवरण तथा न्यूनता-खाता बनाइए।

[**Ans.** न्यूनता (deficiency) 30,200 रु., न्यूनता खाते का योग 1,45,700 रु.]

[संकेत : पूँजी पर ब्याज (2,500 × 6) = 15,000 रु.]

Q 3. A filed his petition in bankruptcy on 31st December, 2006. His books showed that he owed Rs. 50,000 to trade creditors; Rs. 30,000 to creditors holding lien on Stock-in-trade for Rs. 8,000, Rs. 10,000 mortgage on works and Rs. 1,000 for salaries, wages and rates. Bills of exchange for Rs. 10,000 had been discounted with his bankers and it was estimated that there was a liability of Rs. 3,000 in respect of them.

His assets were Consignment Rs. 20,000 estimated to realise Rs. 2,000, Good Book debts Rs. 18,000, Doubtful Debts Rs. 6,000 estimated to realise Rs. 3,000 and Bad debts Rs. 15,650. Works cost Rs. 1,00,000 (depreciated out of Profit and Loss to Rs. 75,000) estimated to realise Rs. 50,000. Furniture and Fittings Rs. 2,000, estimated to realise Rs. 1,000. Stock-in-trade Rs. 25,000, estimated to realise Rs. 8,000. Cash Rs. 1,350.

He commenced business on 1st January, 2002, with a capital of Rs. 90,000, after charging annually Rs. 5,000 at depreciation of Works and Rs. 5,500 for interest on capital, the Trading

Account shows profits of Rs. 6,500 in 2002 and Rs. 5,000 in 2003, and losses Rs. 6,000 in 2004, Rs. 7,000 in 2005 and Rs. 9,500 in 2006. He lost Rs. 14,500 in speculation while his drewings averaged Rs. 4,000 a year.

Draw up his Statement of Affairs and Deficiency Account.

अ ने दिवालिया घोषित होने के लिए 31 दिसम्बर, 2006 को प्रार्थना पत्र दिया। उसकी पुस्तकों ने बताया कि उसको 50,000 रु. व्यापारिक लेनदारों को देने हैं; 30,000 रु. ऐसे लेनदारो को देने हैं जिनका 8,000 रु. के स्टॉक पर अधिकार है। 10,000 रु. के अन्य लेनदारों के पास कार्यशाला को बन्धक रखा गया है, तथा 1,000 रु. वेतन, मजदूरी और करों के देने हैं। 10,000 रु. के प्राप्य बिलों को बैंक से भुनाया है तथा यह अनुमान किया जाता है कि इस सम्बन्ध में 3,000 रु. के दायित्व उत्पन्न होंगे।

उसकी सम्पत्तियाँ इस प्रकार थीं : प्रेषण पर माल 20,000 रु.; अनुमानित प्राप्य राशि 2,000 रु.; अच्छे देनदार 18,000 रु., संदिग्ध 6,000 रु. (अनुमानित प्राप्य राशि 3,000 रु.), डूबत ऋण 15,650 रु., कार्यशाला 1,00,000 रु. (लाभ-हानि खाते से मूल्य-ह्रास काटने के बाद उसका अपलिखित मूल्य 75,000 रु. था), अनुमानित प्राप्य राशि 50,000 रु.; फर्नीचर तथा फिटिंग्स 2,000 रु.—अनुमानित प्राप्य राशि 1,000 रु.; स्टॉक 25,000 रु.; अनुमानित प्राप्य राशि 8,000 रु.; करोड़ 1,350 रु.।

उसने 1 जनवरी, 2002 को 90,000 रु. की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया था। प्रतिवर्ष कार्यशाला पर 5,000 रु. ह्रास के रूप में अपलिखित करने के पश्चात् तथा 5,500 रु. पूँजी पर ब्याज लगाने के पश्चात् उसको 2002 में 6,500 रु. का तथा 2003 में 5,000 का लाभ हुआ। 2004 में 6,000 रु. की हानि, 2005 मे 7,000 रु. की हानि तथा 1982 में 9,500 रु. की हानि हुई। उसने सट्टे में 14,500 रु. हारे तथा उसके आहरण औसतन 4,000 रु. वार्षिक थे।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर 'अ' का स्थिति-विवरण तथा न्यूनता-खाता बनाइए।

[**Ans.** कमी (deficiency) 10,650 रु., न्यूनता खाते का योग 1,39,650 रु.]

[**संकेत :** सूची A = 53,000 रु.; कार्यशाला पर हानि (75,000—50,000) = 25,000 रु.]

Q 4. Shri Ram Prakash filed his petition of 31st December, 2006, and his Statement of Affairs showed the following figures

NOTES

Particulars	Dr.	Cr.	Estimated to realise or rank
	Rs.	Rs.	Rs.
Buildings	70,000	—	60,000
Machinery	3,00,000	—	2,40,000
Electric Machinery	2,20,000	—	2,20,000
Furniture	60,000	—	30,000
Stock-in-trade	13,00,000	—	9,00,000
Book Debts :			
Good	4,00,000	—	4,00,000
Doubtful	1,00,000	—	40,000
Bad	1,00,000	—	—
Investments	3,20,000	—	3,20,000
Mortgage on Electric Machinery	—	2,00,000	2,00,000
Loan partly-secured on Investments	—	8,00,000	8,00,000
Loan fully-secured by lien on Stock-in-trade	—	2,000	2,000
Loan unsecured	—	15,00,000	15,00,000
Liability on Bills discounted Rs. 1,40,000	—	—	70,000
Bills of Exchange	28,000	—	28,000
Preferential creditors	—	60,000	60,000
Cash with Bank	2,000	—	2,000
Capital Account :			
Introduced on 1.1.03 10,00,000			
Add : Profit 4,10,000			
Add : Interest 2,00,000			
16,10,000			
Less : Drawings 12,72,000		3,38,000	
	29,00,000	29,00,000	

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account of Shri Ram Prakash.

[Ans. Deficiency Rs. 3,92,000; Total of Deficiency A/c Rs. 20,05,000]

[संकेत :: List A Rs. 15,70,000]

Q 5. बम्बई के एक व्यापारी की 31 दिसम्बर, 2006 को सम्पत्ति तथा देयता निम्न प्रकार थी तथा उक्त तिथि को उसने शोधक्षमता आवेदन पत्र (Insolvency Petition) प्रस्तुत किया

	रु.
व्यापारिक लेनदार	15,500
फैक्टरी पर प्रथम बन्धक द्वारा सुरक्षित लेनदार	2,400
लेनदार जिन्हें फैक्टरी पर द्वितीय बन्धक प्राप्त है	9,500
देय विपत्र	3,000
क्लर्कों का तीन माह का अदत्त वेतन	400
देय किराया—2 माह का	200
पुस्तक ऋण : शोध्य	3,000
संदिग्ध तथा अशोध्य (प्राप्त होने वाली अनुमानित राशि 900 रु.)	2,400
भुनाए गए बिलों पर दायित्व (अनुमानित देयता 500 रु.)	1,750
स्टॉक (प्राप्त होने वाली अनुमानित राशि 9,000 रु.)	12,000
विनियोग (पुस्तक मूल्य प्राप्त होने की सम्भावना)	3,000

हस्तस्थ रोकड़	300
प्राप्य विपत्र	600
फैक्टरी (मूल्यांकित)	6,500
कल और यंत्र (प्राप्त होने वाली अनुमानित राशि 1,500 रु.)	3,800
फर्नीचर (प्राप्त होने वाली अनुमानित राशि 300 रु.)	600
जीवन बीमा पॉलिसी (प्राप्त होने वाली अनुमानित राशि 600 रु.)	690

NOTES

व्यापारी ने 5,500 रु. की पूँजी से सन् 2003 में व्यापार आरम्भ किया था तथा आवेदन पत्र देने के समय तक उसका लाभ 4,500 रु. था। इस अवधि में उसके आहरण प्रति वर्ष 2,000 रु. के थे।

स्थिति-विवरण तथा कमी खाता तैयार कीजिए। यदि समापन व्यय 4,000 रु. हो तो लाभांश की दर क्या होगी?

[**Ans.** कमी (deficiency) 5,800 रु. कमी खाता का योग 15,690 रु.; लाभांश की दर 0.60 रु. प्रति रुपया।]

[**संकेत :** लाभांश की दर : 18,700—4,000 = 14,700 रु. $\left(\frac{14,700}{24,500} \times 1\right)$ = 0.60 रु.]

Q 6. From the following figures prepare Statement of Affairs and Deficiency Account as at 31st December, 2006. Assume that the stock realise two-thirds of its value, the fixtures one-half, the shares par, and the doubtful debts one-third. On 1st January 2004, the debtor commenced business with a capital of Rs. 3,175. His profits for the first two years amounted to Rs. 2,027 and his drawings were Rs. 1,500 per year.

	Rs.		Rs.
Cash	115	Shares	250
Stock	510	Creditors Unsecured (included Rs. 950 for wife)	6,950
Debtors (Good)	3,490	Creditors secured	1,250
" (Doubtful)	900	Value of securities held by Creditors	1,750
" (Bad)	750	Preferential claims for Rates and Taxes	95
Fixtures	282		

अग्रलिखित समकों से 31 दिसम्बर, 2006 को एक अवस्था-विवरण तथा अपुर्णता-लेख तैयार कीजिए। मान लीजिए कि स्कन्ध अपनी कीमत का 2/3 मूल्य प्राप्त करता है, फिक्चर्स, 1/2 अंश सम-मूल्य तथा संदिग्ध ऋण 1/3 है। 1 जनवरी 2004 को अधमर्ण ने 3,175 रु. की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। प्रथम दो वर्षों में लाभ 2,027 रु. हुआ तथा आहरण 1,500 रु. प्रति वर्ष किया गया।

	रु.		रु.
रोकड़	115	अंश	250
व्यापार स्कन्ध	510	लेनदार (अरक्षित)	
देनदार (शोध्य)	3,490	(950 रु. पत्नी के मिलाकर)	6,950
" (संदिग्ध)	900	लेनदार (सुरक्षित)	1,250
" (अशोध्य)	750	लेनदार द्वारा धृत प्रतिभूतियाँ	1,750
फिक्चर्स	282	किराया एवं कर के हेतु अधिमान्य लेनदार	95

[**Ans.** कमी 950 रु., स्थिति-विवरण का योग 6,000 रु. तथा कमी खाता का योग 7,111 रु.]

[**संकेत :** पत्नी के ऋण को लेनदारों में सम्मिलित नहीं किया गया है। ऋणी ने 1 जनवरी 2004 को व्यापार प्रारम्भ किया। 2004 तथा 2005 वर्ष के लाभ तो प्रश्न में दिए गए है किन्तु 2006 वर्ष के परिणाम नहीं दिये गये है। तलपट बनाने पर 2006 वर्ष की हानि 950 रु. आती है जिसे कमी खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाएगा।]

9.16 सारांश

- भारतीय दिवालिया कानून के अन्तर्गत वह व्यक्ति दिवालिया कहा जाता है जो दिवालियापन का कोई कार्य करता है तथा जिसे न्यायालय द्वारा दिवालिया घोषित कर दिया जाता है।
- यदि कोई व्यक्ति 500 रू. या इससे अधिक की राशि के ऋण का भुगतान न कर सके, यदि वह व्यक्ति अपने लेनदारों का अहित करे, ऋण के भुगतान को विलम्बित करने के उद्देश्य से भारत से बाहर चला गया हो, यदि उसे न्यायालय की किसी डिक्री के अन्तर्गत कारावास भेजा गया हो इत्यादि दिवालियेपन के कार्य है।
- स्थिति विवरण ऋणी के विभिन्न दायित्वों तथा सम्पत्तियों की स्थिति प्रकट करता है तथा यह बतलाता है कि विभिन्न सम्पत्तियों को बेचकर प्राप्त होने वाली राशि लेनदारों की अपेक्षा कितनी कम पड़ने की सम्भावना है।
- व्यक्ति वितरण में जो राशि लेनदारों की अपेक्षा कम पड़ती उसे कमी खाते मे दर्शाया जाता है। जो न्यायालय मे प्रस्तुत किया जाता है।
- एकाकी व्यापार के दिवालिया होने की दशा मे उसकी व्यापारिक सम्पत्तियो जो व्यक्तिगत सम्पत्तियो मे तथा व्यापारिक दायित्वों को व्यक्तिगत दायित्वों में मिला दिया जाता है।

9.17 शब्दावली

दिवालिया, आरक्षित लेनदार, रक्षित लेनदार, पूर्वाधिकार लेनदार, स्थिति विवरण, कमी खाता

●●●

NOTES

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

अध्याय–10 साझेदारी-फर्म का विघटन, दिवालिया सहित (DISSOLUTION OF PARTNERSHIP FIRM WITH INSOLVENCY)

NOTES

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 फर्म के विघटन से आशय
10.3 साझेदारी का विघटन
10.4 फर्म का विघटन
10.5 न्यायालय द्वारा विघटन
10.6 हिसाब का निपटारा
10.7 व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ
10.8 लेखांकन क्रियाये
10.9 साझेदार का दिवालिया होना
10.10 गार्नर बनाम मरे निर्माण
10.11 भारतीय साझेदारी अधिनियम के प्रावधान
10.12 जब सभी साझेदार दिवालिया हो जाये
10.13 भागाश वितरण
10.13.1 आनुपातिक पूंजी विधि
10.13.2 अधिकतम हानि विधि
10.14 क्रियात्मक प्रश्न
10.15 साराश
10.16 शब्दावली

10.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेगे

- फर्म और साझेदारी के विघटन से आशय समझ सकेंगे।
- साझेदारी फर्म के विघटन का लेखाकन कर सकेंगे।
- गार्नर बनाम मरे निर्णय को बता सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

10.2 साझेदारी विघटन से आशय

साझेदारी अधिनियम की धारा 39 के अनुसार फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी समाप्त हो जाने को फर्म का विघटन या समापन कहते है। फर्म के व्यापार बन्द हो जाने पर फर्म का विघटन हो जाता है। साझेदारी

का विघटन तथा फर्म का विघटन दो अलग-अलग स्थितियाँ होती हैं। साझेदारी के विघटन से आशय साझेदारों के पारस्परिक सम्बन्धों में परिवर्तन से होता है। अतः साझेदारी के विघटन का यह अर्थ नहीं होता कि फर्म का विघटन हो जाए। फर्म के विघटन से आशय व्यापार के समाप्त होने से होता है। फर्म के विघटन में साझेदारी का विघटन आवश्यक रूप से होता है।

NOTES

10.3 साझेदारी का विघटन (Dissolution of Partnership)

साझेदारी का विघटन निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है:

(क) जिस अवधि के लिए साझेदारी की गई थी, उस अवधि के समाप्त होने पर;

(ख) जिस कार्य (Venture)को करने के लिए साझेदारी की गई थी, उस कार्य के पूरा हो जाने पर;

(ग) किसी साझेदार की मृत्यु हो जाने पर;

(घ) किसी साझेदार के दिवालिया हो जाने पर;

(ङ) किसी साझेदार द्वारा अवकाश ग्रहण करने पर।

किसी साझेदार की मृत्यु, दिवालिया या अवकाश ग्रहण की स्थिति में शेष साझेदार नयी साझेदारी के अन्तर्गत व्यवसाय चालू रख सकते हैं। जब साझेदारी व्यवसाय भी बन्द हो जाता है तो कहा जाता है कि फर्म का विघटन हो गया है।

10.4 फर्म का विघटन (Dissolution of Firm)

फर्म का विघटन निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है:

(क) जब फर्म के समस्त साझेदार परस्पर समझौते द्वारा फर्म समाप्त करने का निश्चय करें;

(ख) जब फर्म के समस्त या एक को छोड़कर अन्य समस्त साझेदार दिवालिया हो जाये,

(ग) जब फर्म का व्यवसाय अवैधानिक हो जाए;

(घ) ऐच्छिक साझेदारी की दशा में, जब फर्म का कोई साझेदार फर्म के विघटन करने का नोटिस दे,

(ङ) जब न्यायालय द्वारा फर्म के विघटन करने की आज्ञा दी जाए।

10.5 न्यायालय द्वारा विघटन

निम्नलिखित परिस्थितियों में न्यायालय किसी फर्म के विघटन की आज्ञा दे सकता है.-

(क) जब कोई साझेदार अस्वस्थ मस्तिष्क का हो जाए,

(ख) जब कोई साझेदार स्थायी रूप से अक्षम हो जाए,

(ग) जब कोई साझेदार व्यवसाय को प्रभावित करने वाले किसी दुराचरण (Mis-conduct) का दोषी हो

(घ) जब कोई साझेदार साझेदारी सलेख की निरन्तर अवहेलना करे,

(ङ) जब कोई साझेदार फर्म में अपना हित या अंश किसी तृतीय पक्ष को हस्तान्तरित कर दे;

(च) जब फर्म का व्यवसाय बिना हानि उठाए चलाना सम्भव न हो,

(छ) जब फर्म का विघटन करना उचित तथा न्याय-संगत प्रतीत हो।

10.6 हिसाब का निपटारा (Settlement of Accounts)

फर्म के विघटन पर हिसाब का निपटारा साझेदारी सलेख की शर्तों के अनुसार किया जाता है। यदि इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट समझौता न हो तो भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 48 (a) तथा (b) के निम्नलिखित प्रावधान लागू होंगे.-

(1) पूँजी की कमी (Deficiency) को सम्मिलित करते हुए समस्त हानियाँ, सर्वप्रथम फर्म के लाभों से चुकाई जायेंगे, तत्पश्चात् पूँजी में से और अन्त में, यदि आवश्यक हुआ, तो साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से अपने लाभालाभ विभाजन अनुपात में।

(2) फर्म की सम्पत्तियाँ साझेदारों द्वारा लाई गई राशि को सम्मिलित करते हुए, निम्नलिखित क्रम से उपयोग में लाई जायेंगी:-

(क) तृतीय पक्षों को देय ऋणों के भुगतान में;

(ख) साझेदारों द्वारा पूँजी के अतिरिक्त फर्म को दिए गए अग्रिमों या ऋणो (Advance or Loan) का आनुपातिक रूप से (Rateably)भुगतान करने के लिए;

(ग) साझेदारों की पूँजी चुकाने के लिए;

(घ) यदि उपर्युक्त वर्णित भुगतानों के बाद कोई राशि शेष बचे, तो उसे समस्त साझेदारों में लाभालाभ विभाजन अनुपात में बाँट दिया जाएगा।

10.7 व्यक्तिगत सम्पत्तियाँ

किसी साझेदार के व्यक्तिगत सम्पत्तियों का सर्वप्रथम उपयोग उसके व्यक्तिगत दायित्वों के भुगतान में किया जाएगा। इसके पश्चात् यदि कोई आधिक्य शेष बने तो उसका उपयोग फर्म के दायित्वों का भुगतान करने हेतु किया जा सकता है।

इसी प्रकार फर्म की सम्पत्तियों का सर्वप्रथम उपयोग फर्म के दायित्वों को चुकाने में किया जाएगा। यदि कोई आधिक्य शेष बचे तो उसे समस्त साझेदारों में उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात में बाँट दिया जाएगा जिसका उपयोग साझेदार अपने व्यक्तिगत ऋणों का भुगतान करने के लिए कर सकता है।

बोध प्रश्न

1 फर्म के विघटन से क्या आशय है?

....

....

....

2 न्यायालय द्वारा विघटन की दशायें बताइये।

....

....

....

3 साझेदारी के विघटन और फर्म के विघटन में अन्तर बताइये।

....

....

....

10.8 लेखांकन क्रियायें (Accounting Treatment)

फर्म के विघटन पर फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती है

(1) **वसूली खाता** (Realisation Account)

(2) **सम्पत्ति खाते**- फर्म के समस्त सम्पत्ति खातों को (रोकड़ या बैंक खाते को छोड़कर) उनके पुस्तक मूल्यों पर इस वसूली खाते में निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा हस्तांतरित करके बन्द कर दिया जाता है।

Realisation A/c ......Dr	वसूली खाता ....डे.
To Various Assets A/c	विभिन्न सम्पत्ति खाते से

NOTES

टिप्पणियाँ- (i) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाए जाने वाली संचित हानियों (Accumulated Losses)जैसे लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष, अपलिखित न किए गए विज्ञापन व्यय, आरम्भिक व्यय (Preliminary Expenses) पूर्वदत्त व्यय आदि को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाता, इन्हें साझेदारों के पूँजी खातों में लाभालाभ अनुपात में हस्तांतरित करके बन्द किया जाता है।

(ii) चिट्ठे में देनदार प्रायः अशोध्य ऋणों के लिए संचय घटाकर दिखाए जाते है। देनदारों को उनके सकल मूल्य (Gross Value) पर हस्तांतरित करना चाहिए अन्यथा देनदार तथा अशोध्य ऋण संचय खाते बन्द नहीं होंगे।

(iii) चूंकि हस्तस्थ तथा बैंकस्थ रोकड़ स्वयं तरल रूप में होते है उनका नगदीकरण नहीं करना होता अतः इन्हे वसूली खाते में नही भेजते। किन्तु यदि फर्म का विघटन व्यापार के विक्रय (Sale of Business) के कारण किया जा रहा है, तो जब तक कोई इसके विपरीत निर्देश न हो, रोकड़ तथा बैंक खाते का शेष भी वसूली खाते में ले जाते हैं।

(3) दायित्व खाते- समस्त तृतीय पक्षों के प्रति दायित्व सम्पत्तियों के विरूद्ध प्रावधान, जैसें अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान (Provision for Bad and Doubtful Debts); ह्रास के लिए प्रावधान (Provision for Depreciation); संयुक्त जीवन पॉलिसी संचिति (Joint Life Policy Reserve); विनियोग उच्चावचन कोष (Investment Fluctuation Fund) आदि के शेष भी पुस्तक मूल्य पर निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा वसूली खाते में हस्तांतरित करके इन खातो को भी बन्द कर दिया जाता हैः-

Various Liabilities Accounts ......Dr	दायित्व खाते ....डे.
Reserve and Provision A/c .....Dr.	संचय तथा प्रावधान ......डे
To Realisation A/c	वसूली खाते से

टिप्पणियाँ -(i) संचित लाभ या अवितरित लाभों का प्रतिनिधित्व करने वाले संचयों- जैसे लाभ हानि खाते का क्रेडिट शेष सामान्य संचय आदि, दायित्वों के अन्तर्गत वसूली खाते मे नहीं भेजे जाते, इन्हे साझेदारों के पूँजी खातो में लाभालाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करके बन्द किया जाता है।

(ii) वसूली खाते में केवल तृतीय पक्षों के प्रति देयताओं को ही हस्तांतरित किया जाता है। आन्तरिक देयताओं जैसे साझेदार के ऋण खाते में हस्तांतरित नहीं करते।

(4) सम्पत्तियों की वसूली-फर्म की विभिन्न सम्पत्तियों का उपयोग निम्नलिखित 3 प्रकार से किया जा सकता हैः-

(क) नकद बिक्री- सम्पत्तियों की नकद बिक्री से प्राप्त राशि की निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

Cash A/c ......Dr.	रोकड़ खाता ......डे.
To Realisation A/c	वसूली खाते से

उपर्युक्त प्रविष्टि विभिन्न सम्पत्तियों को बेचकर प्राप्त होने वाली राशि से की जाती है, इस बात पर कोई विचार नहीं किया जाता कि किसी सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य क्या था।

(ख) किसी साझेदार द्वारा लेना- यदि कोई सम्पत्ति फर्म के किसी साझेदार द्वारा ले ली जाए तो इस संबंध में निश्चित मूल्य (Value agreed upon) पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

Partner's Capital A/c ......Dr	साझेदार का पूँजी खाता ......डे.
To Realisation A/c	वसूली खाते से

(ग) किसी दायित्व के भुगतान में देना- यह हो सकता है कि किसी सम्पत्ति को फर्म का कोई लेनदार अपने ऋण के पूर्ण या आंशिक भुगतान में ले ले। इस स्थिति में प्रविष्टि इस प्रकार होगी। मान लीजिए फर्नीचर जिसका पुस्तक मूल्य 5,000 रु. था 8,000 रु. के एक लेनदार द्वारा 4,500 रु. के मूल्य पर ले लिया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि उक्त लेनदार को केवल 3,500 रु. ही रोकड़ भुगतान करना होगा जिसकी प्रविष्टि वसूली खाते के डेबिट पक्ष में कर दी जाएगी।

(5) दायित्वों का भुगतान- सर्वप्रथम तृतीय पक्ष को देय ऋणों का भुगतान किया जाता है। इस सम्बन्ध में भी 3 स्थितियाँ हो सकती हैं।

(क) नकद भुगतान- भुगतान की गई वास्तविक राशि में निम्नलिखित प्रविष्टि हो जाती है:

Realisation A/c ......Dr.	वसूली खाता ......डे.
To Cash A/c	रोकड़ खाते से

(ख) किसी साझेदार द्वारा दायित्व ले लेने पर- यदि फर्म के किसी लेनदार को भुगतान करने का उत्तरदायित्व कोई साझेदार ले ले तो निश्चित राशि से निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है:

Realisation A/c ......Dr.	वसूली खाता ......डे.
To Partner's Capital A/c	साझेदारों के पूँजी खाते से

(ग) जब लेनदार फर्म की कोई सम्पत्ति पूर्ण या आंशिक भुगतान में ले ले- इसका विवेचन पूर्व में 4(ग) के अन्तर्गत किया जा चुका है।

(6) विघटन के व्यय - फर्म के विघटन पर हुए व्ययों का व्यवहार निम्नानुसार किया जा सकता है:

(क) व्ययों का भार फर्म पर पड़ना हो- यदि विघटन के व्यय फर्म द्वारा वहन किए जाने है तो फर्म इनका भुगतान नकद करके निम्नानुसार प्रविष्टि करेगी।

Realisation A/c ......Dr.	वसूली खाता ......डे
To Cash A/c	साझेदार के पूँजी खाते से

(ख) व्ययों का भार किसी साझेदार पर पड़ना हो- यदि व्ययों का भुगतान फर्म द्वारा किया जाए, किन्तु उसका भार किसी साझेदार पर पड़ना हो तो निम्नलिखित प्रविष्टि होगी:

Partner's Capital A/c ......Dr.	साझेदार का पूँजी खाता ......डे
To Cash A/c	रोकड़ खाते से

यदि भुगतान भी साझेदार द्वारा किया गया है, तो फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

(7) नकदीकरण पर लाभ या हानि- उपर्युक्त वर्णित समस्त प्रविष्टियों को कर लेने के पश्चात् वसूली खाते का शेष निकालिए। इस खाते का डेबिट शेष वसूली पर हानि तथा क्रेडिट शेष वसूली पर लाभ होगा जिसे समस्त साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभालाभ अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाएगा। इस हेतु प्रविष्टियाँ निम्नानुसार होंगी:-

लाभ:-

Realisation A/c .....Dr	वसूली खाता डे
To Partner's Capital A/c	साझेदारों के पूँजी खाते से

हानि:-

Partner's Capital A/c .....Dr.	साझेदारों के पूँजी खाते डे
To Realisation A/c	वसूली खाते से

उपर्युक्त प्रविष्टि से वसूली खाता बन्द हो जाएगा।

(8) साझेदार का ऋण - तृतीय पक्षों को देय दायित्वों का भुगतान कर चुकने के बाद, अब फर्म के साझेदार द्वारा दिए गए ऋण का भुगतान निम्नानुसार प्रविष्टि करके किया जाएगा।

Partner's Loan A/c .....Dr.	साझेदार का ऋण खाता डे
To Cash A/c	रोकड़ खाता से

इस प्रविष्टि से ऋण खाता भी बंद हो जायगा।

NOTES

यदि ऋण के भुगतान में कोई लाभ या हानि इस रूप में हो कि भुगतान कम या अधिक राशि का करना पड़े तो इसे लाभ या हानि की वसूली खाते में ले जाते हैं। निम्नलिखित दो स्थितियों का अवलोकन करें:-

(क) अ को देय 5,000 रु. के पूर्ण भुगतान में 4,500 रु. दिए गए।

		Rs.	Rs.
A's Loan A/c	......Dr.	5,000	
To Cash A/c			4,500
To Realisation A/c			500

(ख) अ को देय 5,000 रु. के ऋण मय 200 रु. ब्याज के भुगतान किया गया

		Rs.	Rs.
A's Loan A/c	......Dr.	5,000	
To Realisation A/c	......Dr.	200	
To Cash A/c			5,200

(9) संचय या लाभ-हानि- जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, कि यदि फर्म के चिट्ठे मे कोई पुराना संचय या लाभ अथवा हानि हो, तो उसे आवश्यक प्रविष्ट करके साझेदारों के पूँजी खाते में उनके लाभालाभ विभाजन के अनुपात में हस्तांतरित कर देंगे:-

General Reserve A/c	......Dr.	समान्य संचय	......डे.
Profit & Loss A/c (Cr.)	......Dr.	लाभ-हानि खाता (क्रे.)	......डे.
To Partner's Capital A/c		साझेदारों के पूँजी खाते से	

अथवा

Partner's Capital A/c	......Dr	साझेदारों के पूँजी खाते	....डे
To Profit & Loss A/c (Dr.)		लाभ-हानि खाते से (डे)	

इन प्रविष्टियों से उपर्युक्त खाते भी बन्द हो जाएँगे।

(10) पूँजी खाते- उपर्युक्त समस्त व्यवहारों का लेखा हो चुकने पर साझेदारों के पूँजी खाते के शेष यह बतलाएँगे कि किसी साझेदार को फर्म से क्या लेना अथवा देना है।

(क) पूँजी खाते का क्रेडिट शेष- यदि किसी साझेदार के पूँजी खाते में क्रेडिट शेष है तो इसका आश्य यह है कि फर्म उसे भुगतान करेगी। इस हेतु यह प्रविष्टि होगी -

Partner's Capital A/c	......Dr.	साझेदार के पूँजी खाता	....डे.
To Cash A/c		रोकड़ खाते से	

(ख) डेबिट शेष होने पर - डेबिट शेष होने पर साझेदार फर्म की देनदार होगी। साझेदार से भुगतान प्राप्त होने पर निम्नलिखित प्रविष्ट होगी -

Cash A/c	......Dr.	रोकड़ खाता	....डे
To Partner's Capital A/c		साझेदार के पूँजी खाते से	

इन प्रविष्टियों से पूँजी खाते बन्द हो जायेंगे। साझेदारी के विघटन पर की गई लेखांकन क्रियाओं के सही होने का यह प्रमाण (Check) है कि रोकड़ खाता में अन्त में कोई शेष नहीं रहना चाहिए।

(1) फर्म की अमूर्त सम्पत्तियाँ (Fictitious Assets) जैसे ख्याति, पेटेन्टस आदि के सम्बन्ध में यदि प्रश्न में इनका वसूली मूल्य न दिया गया हो, तो यह मानना चाहिए कि इनका कोई मूल्य प्राप्त नहीं हुआ। विघटन के समय प्रायः ये सम्पत्तियाँ मूल्यहीन होती है। अन्य मूर्त सम्पत्तियां (Tangible Assets) का यदि वसूली मूल्य न दिया गया हो तो यह मानना चाहिए कि इनका पुस्तक मूल्य ही प्राप्त हुआ है।

(2) इसी प्रकार यदि दायित्व के सम्बन्ध में भुगतान की गई राशि का प्रश्न में कोई उल्लेख न हो तो यह मानना चाहिए कि इसका भुगतान पुस्तक मूल्य पर किया गया।

NOTES

Illustration. 1. Thapa and Sudarshan are partners sharing profit & losses as to 3/5 and 2/5. Their Balance Sheet on 31-3-07 was as below:

	Rs.		Rs.
Creditors (लेनदार)	528	Cash (रोकड़)	363
Reserve for Contingencies		Investments (विनियोग)	2,080
(संदिग्ध के लिए संचिति)	500	Debtors (ऋणी) 2,960	
Bank Loan (बैंक ऋण)	1,000	Stock (स्कन्ध)	1,875
Capital (पूँजी): Thapa (थापा)	6,000	Furniture (फर्नीचर)	2,750
Sudarshan (सुदर्शन)	2,000		
	10,028		10,028

They dissolved the firm on this date and the assets, with the exception of Cash and Investments were sold for Rs. 6,900. The Investments were taken over by Sudarshan at Rs. 2,200 and he agreed to pay the Bank Loan. The realisation expenses were Rs. 110 and the Creditors were paid Rs. 503 in full settlement

Give various Ledger accounts to show the dissolution of the firm, Also pass Journal entries.

थापा और सुदर्शन 3/5 और 2/5 के अनुपात में लाभ-हानि बाँटने वाले साझेदार हैं। 31-3-07 को उनका चिट्ठा निम्नांकित था:-

इस दिनांक को उन्होंने फर्म का विघटन किया और रोकड़ तथा विनियोगों के अतिरिक्त अन्य परिसम्पत्ति 6,900 रु. में बिके। 2,200 रु. में विनियोग सुदर्शन ने लिए और उसने बैंक ऋण भुगतान का वचन दिया। विक्रय व्यय 110 रु. थे तथा लेनदारों को पूरे भुगतान में 503 रु. दिए। समापन दर्शाने के लिए विभिन्न खाते बनाइए तथा रोजनामचा प्रविष्टियाँ भी दीजिए।

Solution टिप्पणियाँ-

(1) संदिग्ध के लिए संचय साझेदारों में लाभालाभ विभाजन अनुपात में बाँटा जाएगा।

(2) वसूली पर 650 रु. की हानि आती है, जो लाभालाभ विभाजन अनुपात में साझेदारों के पूँजी खातों में डेबिट की जाएगी।

(3) अन्त में दोनों ही साझेदारों के पूँजी खातों में क्रेडिट शेष आते है, अत: फर्म द्वारा उन्हें देय राशि का भुगतान कर दिया जाएगा।

JOURNAL ENTRIES

				Rs.	Rs.
Realisation A/c	Dr.	वसूली खाता	डे.	9,665	
To Investment A/c		विनियोग खाते से			2,080
To Debtors A/c		देनदारों के खाते से			2,960
To Stock A/c		स्टॉक खाते से			1,875
To Furniture A/c		फर्नीचर खाते से			2,750
(Assets transferred to Realisation A/c)		(सम्पत्तियाँ वसूली खाते में हस्तांतरित की गई)			
Creditros A/c	Dr	लेनदार खाता	डे	528	
Bank Loan A/c	Dr	बैंक ऋण खाता	डे	1,000	

NOTES

To Realisation A/c (Liabilities transferred to Realisation A/c)	वसूली खाते से (दायित्व वसूली खाते में हस्तांतरित किए गए)		1,558
Reserve for Contingencies Dr. To Thapa's Capital A/c To Sudarshan Capital A/c (Reserve transferred to Capital Account)	संदिग्ध के लिए संचय डे. थापा के पूँजी खाते से सुदर्शन के पूँजी खाते से (रिजर्व पूँजी खातों में हस्तांतरित किया गया)	500	 300 200
Cash A/c Dr. To Realisation A/c (Assets realised for Cash)	रोकड़ खाता डे. वसूली खाते से (सम्पत्तियों को बेचा गया)	6,900	 6,900
Sudarshan's Capital A/c Dr. To Realisation A/c (Investmetns taken over by sudarshan)	सुदर्शन का पूँजी खाता डे. वसूली खाते से (विनियोग सुदर्शन द्वारा ले लिए गए)	2,200	 2,200
Realisation A/c Dr. To Sudarshan's Capital A/c (Sudarshan agrees to pay Bank Loan)	वसूली खाता डे. सुदर्शन का पूँजी खाता से (बैंक ऋण का भुगतान सुदर्शन करेगा)	1000	 1000
Realisation A/c Dr. To Cash A/c (Realisation Expenses paid)	वसूली खाता डे. रोकड़ खाता से (वसूली व्यय चुकाए गए)	110	 110
Realisation A/c Dr To Cash A/c (Creditors paid)	वसूली खाता डे रोकड़ खाता से (लेनदारों को भुगतान किया गया)	505	 505
Thapa's Capital A/c Dr. Sudarshan's Captial A/c Dr. To Realisation A/c (Loss on Realisation transferred to Capital Accounts)	थापा पूँजी खाता डे. सुदर्शन पूँजी खाता डे. वसूली खाता से (वसूली पर हानि पूँजी खातों को हस्तांतरित की गई)	390 260	 650
Thapa's Capital A/c Dr Sudarshan Captial A/c Dr. To Cash A/c (Amount due to partners paid)	थापा पूँजी खाता डे सुदर्शन पूँजी खाता डे. रोकड़ खाता से (साझेदारों को देय राशि का भुगतान किया गया)	5,910 740	 6,650

Ledger Accounts: **Investment A/c**

	Rs		Rs
To Balance b/d	2,080	By Realisation A/c	2,080
	2,080		2,080

NOTES

Debetors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	2,960	By Realisation A/c	2,960
	2,960		2,960

Stock A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,875	By Realisation A/c	1,875
	1,875		1,875

Furniture A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	2,750	By Realisation A/c	2,750
	2,750		2,750

Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	528	By Balance b/d	528
	528		828

Reserve for Contingencies A/c

	Rs.		Rs.
To Capital Accounts:		By Balance b/d	500
Thapa	300		
Sudarshan	200		
	500		500

Bank Loan A/c

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	1,000	By Balance b/d	1,000
	1,000		1,000

Cash A/c

	Rs.		Rs.
To Investment A/c	2,080	By Creditors A/c	528
To Debtors A/c	2,960	By Bank Loan A/c	1,000
To Stock A/c	1,875	By Cash A/c	6,900
To Furniture A/c	2,750	By Sudershan Capital A/c	2,200
To Sudershan's Capital A/c	1,000	By Capital A/c	
To Cash A/c	110	Thapa	390
To Cash A/c	505	Sudershan	260
	11,278		11,278

Realisation A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	363	By Realisation A/c	110
To Realisation A/c	6,900	By Realisation A/c	503
		By Capital A/c	

Thapa	5,960		
Sudershan	740		
	7,263		7,263

NOTES

Capital A/c

	Thapa Rs.	Sudershan Rs		Thapa Rs.	Sudershan Rs.
To Realisation	-	2,200	By Balance b/d	6000	2000
To Realisation A/c	390	260	By Reserve for		
To Cash A/c	5910	740	Contingencies	300	200
			By Realisation A/c		1000
	6300	3,200		6,300	3,200

कुछ विशिष्ट समस्यायें (Certain Specific Problems) -(1) हस्तस्थ रोकड़ तथा बैंक रोकड़ (Cash in Hand and at Bank) - यदि की पुस्तको में रोकड़ तथा बैंक दोनों खाते हैं तो बैंक धन निकाल कर उसे निम्नानुसार प्रविष्टि द्वारा रोकड़ में सम्मिलित कर लेते है:-

Cash A/c Dr. To Bank A/c	रोकड़ खाता डे. बैंक खाता से

वैकल्पिक रूप में, रोकड़ बैंक में जमा कराके विघटन सम्बन्धी समस्त व्यवहार बैंक के माध्यम से किए जा सकते है।

किन्तु यदि बैंक खाते का क्रेडिट शेष अर्थात् बैंक अधिविकर्ष हो तो अन्य दायित्वों के साथ वसूली खाते में ले जाते हैं।

(2) साझेदारों के चालू खाते (Partner's Current Account) यदि फर्म की पुस्तको में साझेदारों के पूँजी खातो के अतिरिक्त उनके चालू खाते भी हो तो पहले विघटन के सम्बन्धित समस्त प्रविष्टियाँ चालू खातो में करके बाद में उनके शेष निम्नानुसार प्रविष्टि करके पूँजी खातो मे हस्तानरित कर देना चाहिए:-

Partner's Current A/c Dr To Partner's Capital A/c	साझेदारो के चालू खाते डे साझेदारो के पूँजी खाता से

उपर्युक्त प्रविष्टि चालू खातो के क्रेडिट शेष हस्तानरित करने की है। यदि किसी साझेदार के चालू खाता का डेबिट शेष हो, तो विपरीत प्रविष्टि की जाएगी।

(3) ख्याति (Goodwil) - यदि फर्म की पुस्तको मे ख्याति खाता है तो उसे अन्य सम्पत्तियों की भाँति वसूली खाते में ले जाते है। यदि पहले से ख्याति खाता नहीं है तो विघटन पर ख्याति का कोई लेखा करने का प्रश्न नहीं उठता।

(4) अलिखित सम्पत्तियाँ अथवा दायित्व (unrecorded Assets and Liablities) - प्राय ऐसा होता है कि कुछ सम्पत्तियाँ ऐसी हो जो पहले पूर्णत अपलिखित कर दी गई है (अर्थात् फर्म की पुस्तको मे उनका कोई खाता न हो) हो किन्तु जब विघटन के समय अन्य सम्पत्तियों को बेचा जाए तो ऐसी सम्पत्ति से भी कुछ राशि वसूल हो जाए अथवा कोई साझेदार उसे किसी निर्दिष्ट मूल्य पर लेने को सहमत हो जाए। इस स्थिति मे

(क) चूंकि सम्पत्ति का खाता फर्म की पुस्तको मे नहीं होता अत उसे वसूली खाते मे ले जाने का प्रश्न ही नहीं होता।

(ख) सम्पत्ति से प्राप्त होने वाली राशि फर्म का लाभ है जिसे निम्नानुसार प्रविष्टि करके वसूली खाते मे क्रेडिट कर देते है -

Cash A/c Dr	रोकड खाता डे
Partner's Capital A/c Dr To Realisation A/c	साझेदारो का पूँजी खाता डे वसूली खाता से

इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि फर्म के विघटन के समय ऐसी देयता का भुगतान करना पड़े जो पहले से फर्म की पुस्तकों में न हो। इस स्थिति में :-

(क) चूंकि दायित्व का लेखा पुस्तकों में नहीं है, अतः उसे वसूली खाते में क्रेडिट करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(ख) नकद भुगतान करने पर या उसके भुगतान करने का दायित्व किसी साझेदार द्वारा ले लिए जाने पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी:-

NOTES

Realisation A/c	Dr.	रोकड़ खाता	डे.
To Cash A/c	Dr.	रोकड़ खाता से	
To Partner's Capital A/c		साझेदार के पूँजी खाते से	

Illustration 2. सन, मून तथा अर्थ तीन साझेदार है, जो लाभ-हानि को क्रमशः 3:1:1 अनुपात मे बाँटते हैं। 31 दिसम्बर, 2007 को उन्होंने साझेदारी फर्म का विघटन करके पृथक-पृथक व्यापार करने का निश्चय किया। इस तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्न था:-

चिट्ठा

		रु.		रु.	रु.
विविध लेनदार		6,000	रोकड़		3,200
ऋण		1,500	देनदार	24,200	
पूँजी खाते			घटाया		
सन	27,500		अप्राप्त ऋणों के		
मून	10,000		लिए संचय	12,00	
अर्थ	7,000	44,500			23,000
			स्कन्ध		7,800
			फर्नीचर		1,000
			विविध सम्पत्तियाँ		17,000
		52,000			52,000

निम्न निश्चय किए:

(1) ख्याति पर ध्यान नही दिया जायगा।

(2) सन फर्नीचर को 800 रु. में तथा 20,000 रु. के पुस्तक मूल्य में देनदारों को 17200. रु. में लेगा तथा 6,000 रु. के लेनदारों के भुगतान सन करेगा।

(3) मून स्कन्ध को 7,000 रु. मे तथा कुछ विविध सम्पत्तियों को 7,200 रु. मे लेना है। (यह राशि पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम है)

(4) शेष विविध सम्पत्तियों को अर्थ उनके पुस्तक मूल्य के 90% मूल्य पर, जिसमें से 100 रु. छूट के घटा कर लेता है तथा फर्म के ऋणों के भुगतान का दायित्व भी अपने ऊपर ले लेता है। ऋण की राशि पर 30 रु. ब्याज का देना है जिसका पुस्तकों मे लेखा नही हुआ है।

(5) विघटन सम्बन्धी व्यय 270 रु. हुए। शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य के 50% पर एक ऋण संग्रह एजेन्सी को बेच दिया।

फर्म को पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

Solution टिप्पणियाँ:-

(1) मून द्वारा ली गई सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य $\left(\frac{7{,}200 \times 100}{90}\right) = 8{,}000$ रु.

(2) कुल विविध सम्पत्तियाँ 17,000 रु. की है जिनमे 8,000 रु. के मूल्य की सम्पत्तियाँ मून द्वारा ली गई शेष 9,000 रु. की सम्पत्तियाँ अर्थ द्वारा निम्नानुसार ली गई है।

NOTES

सम्पत्तियों का मूल्य 9,000 रु.

90% क्रय मूल्य $\left(\frac{9,000 \times 90}{100}\right)$ = 8,100 रु. घटाइए 100 रु. बट्टा = 8,000

(3) कुल देनदार 24,200 रु. के थे जिनमें से जिनमें से 20,000 रु. के देनदार मून ले लिये शेष 4,200 रु. के देनदार 50% मूल्य पर अर्थात 2,100 रु. में बेचे गए।

(4) वसूली पर हानि 6800 रु. की है जिसे 3 : 1 : 1 के अनुपात में बाँटा जाएगा।

(5) अन्त में सन के खाते में क्रेडिट शेष आता है अर्थात् फर्म उसे 11,420 रु. का भुगतान करेगी। मून तथा अर्थ के पूँजी खातों में डेबिट शेष है, वे क्रमशः 5,560 रु. 830 रु. फर्म को लाकर देंगे।

Realisation A/c

	Rs.			Rs.
To Debtors A/c	24,200	By Provision for Doubtful Debts		1,200
To Stock A/c	7,800	By Sundry Creditors A/c		6,000
To Furniture A/c	1,000	By Loan A/c		1,050
To Sundry Assets A/c		By Sun's Capital A/c		
(Creditors)	1,7000	Furniture	800	
To Earth's Capital A/c	6000	Debtors	17,200	18,000
(Loan & Interest)	1,530	By Moon's Capital A/c		
To Cash A/c	270	Stock	7,000	
		Sundry Assets	7,200	14,200
		By Earth's Capital A/c		
		(Sundry Assets)		8,000
		By Cash A/c		2,100
		(Remaining Debtors)		
		By Capital A/c (Loan)		
		Sun		4,080
		Moon		1,360
		Earth		1,360
	57,800			57,800

Capital Account

	Sun Rs.	Moon Rs.	Earth Rs.		Sun Rs.	Moon Rs.	Earth Rs.
To Realisation A/c	18,000	14,200	8,000	By Balance b/d	27,500	10,000	7,000
To Realisation A/c	4,080	1,360	1,360	By Realisation A/c	6,000	------	1,530
To Cash A/c	11,420	-------	-----	By Loan A/c	-------	5,560	830
	33,500	15,560	9,360		33,500	15,560	9,360

Cash A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	3,200	By Realisation A/c	270
To Realisation A/c	2,100	By Sun's Capital A/c	11,420
To Moon's Capital A/c	5,560		
To Earth's Captal A/c	830		
	11,690		11,690

Illustration 3. A,B and C were partners sharing profit and losses in the ratio 3:2:1. They agreed to dissolve their firm on 1st Jan. 2005. There B/S as on 31st Dec. 2004 was as under:-

	Rs.			Rs.	
Capital A/c			Machinery		40,500
A	40,000		Stock		7,550
B	20,000	60,000	Investments		20,830
			Joint Life Policy		14,000
Mrs. A's Loan		10,000	Debtors		9,300
Creditors		18,500	Less: Reserve	600	8,700
Life Policy Fund		14,000	C's Current A/c		11,500
Investment Fluctuation Fund	6,000		Cash at Bank		5,420
		1,08,500			1,08,500

The Life Policy is surrendered for Rs. 12,000. The investments are taken over by 'A' for Rs. 17,500. A agrees to discharge his wife's loan, B takes over all the stock for Rs. 7,000 and Debtors amounting to Rs. 5,000 at Rs. 4,000. Machinery is sold for Rs. 55,000. The remaining Debtors realise 50% of book value. The expenses of realisation amount to Rs. 600.

It is found that an investment not recorded in the book is worth Rs. 3,000. The same is taken over by one of the Creditors at this value. Prepare necessary Accounts.

A,B और C 3:2:1 के अनुपात में लाभालाभ बाँटते है। उन्होंने 1 जनवरी 2005 को साझेदारी के विघटन का निश्चय किया। 31 दिसम्बर 2004 को उनका चिट्ठा था:-

		रु			रु
पूँजी:			मशीनरी		40,500
A	40,000		स्टॉक		7,550
B	20,000	60,000	विनियोग		20,830
A की पत्नी का ऋण		10,000	संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी		14,000
लेनदार		18,500	देनदार	9,300	
जीवन बीमा फण्ड		14,000	- सचय	600	8,700
विनियोग उच्चावचन फण्ड		6,000			
			C का चालू खाता		11,500
			बैंक में रोकड़		5,420
		1,08,500			1,08,500

जीवन बीमा पॉलिसी 12,000 रु. के लिए समर्पण की गयी। A ने विनियोग 17,500 रु में लिए और अपनी पत्नी के ऋण भुगतान का दायित्व लिया। B ने स्टॉक को 7,000 में तथा 5,000 रु वाले देनदारों को 4,000 रु. में लिया। मशीन को 55,000 रु. में बेचा गया। शेष देनदारों से 50% राशि वसूल हुई। वसूली व्यय 6,000 रु हुए। विनियोग जो कि पुस्तकों में नहीं दिखाए गए है 3,000 रु के थे, इसे एक लेनदार ने इसी मूल्य पर ले लिया। आवश्यक खाते बनाइए।

Solution टिप्पणियाँ-

(1) जीवन बीमा फण्ड तथा विनियोग उच्चावचन फण्ड सम्पत्ति के विरुद्ध प्रावधान है अतः इन्हें वसूली खाता में ले जाएँगे।

(2) फर्म की पुस्तकों में C का चालू खाता खुला हुआ है। अतः फर्म के विघटन पर पूंजी खाते में किए जाने वाले समायोजन चालू खाते में किए जाएँगे तथा बाद में चालू खाते का शेष पूंजी खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा।

NOTES

(3) 3,000 रु. के अलिखित विनियोगों के रूप में फर्म को नई सम्पत्ति मिली जिन्हें फर्म के लेनदारों ने इसी मूल्य पर ले लिया। अतः 18,500 रु. के लेनदारों को केवल 15,500 रु. का ही भुगतान किया गया है।

इस सम्बन्ध में प्रविष्टियाँ निम्नानुसार की जानी चाहिए:-

(i) Investment A/c	Dr.	3,000	
To Realisation A/c			3,000
(ii) Realisation A/c	Dr.	18,500	
To Bank A/c			15,500
To Investment A/c			3,000

Realisation A/c

	Rs.			Rs.
To Machinery	40,500	By Reserve on Debtors		600
To Stock	7,550	By Mrs. A's Loan		10,000
To Investments	20,830	By Creditors		18,500
To Joint Life Policy	14,000	By Life Policy Fund		14,000
To Debtors	9,300	By Investment Fluctuation Fund		6,000
To A's Capital A/c		By Bank A/c		
(Wife Loan)	20,000	Life Policy	12,000	
To Bank A/c	600	Machinery	55,000	
(Expenses)		Debtors	2,150	69,150
To Bank A/c	15,000	By Investments A/c		3,000
To Investment A/c	3,000	By B's Capital A/c		
To Capital A/c		Stock	7,000	
A	14,735	Debtors	4,000	11,000
B	9,490	By A's Capital A/c		17,500
To C's Current A/c	4,745	(Investments)		
	1,49,750			1,49,750

C's Current A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	11,500	By Realisation A/c	4,745
		By C's Capital A/c	6,755
	11,500		11,500

Bank A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,420	By Realisation A/c	15,500
To Realisation A/c	69,150	By Realisation A/c	600
To C's Capital A/c	6,755	By A's Capital A/c	46,735
		By B's Capital A/c	18,490
	81,325		81,325

Partner's Capital Account

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs	Rs.	Rs.
To Realisation A/c	17,500	11,000	...	By Balance b/d	40,000	20,000	....
To C's Current A/c	....	....	6,755	By Realisation A/c	10,000	....	....
To Bank A/c	46,735	18,490	...	By Realisation A/c-	14,235	9,490	....
				By Bank A/c	....	....	6,755
	64,235	29,490	6,755		64,235	29,490	6,755

नोट:- कुछ पुस्तकों में जीवन बीमा पॉलिसी कोष तथा विनियोग उच्चावचन कोष को सामान्य कोष मानकर सीधे साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरित कर दिया गया है।

लेखक ऐसा करना उचित नही समझता। जीवन बीमा पॉलिसी तथा विनियोग फर्म की सम्पत्तियाँ है तथा इनके सम्बन्ध मे बनाए गए कोष सम्पत्ति के विरूद्ध संचय (Reserves against Assets) होते है, जिन्हें वसूली खाते में ले जाया जाना चाहिए।

10.9 साझेदार का दिवालिया होना (Insolvency of a Partner)

साझेदार के दिवालिया होने के परिणाम (Consequences of Insolvency of a Partner) - जब फर्म का कोई साझेदार दिवालिया हो जाता है तो उसके निम्नलिखित परिणाम होते है:-

(क) जिस तिथि से साझेदार दिवालिया घोषित किया जाता है, उस तिथि से वह फर्म का साझेदार नही रहता तथा जब तक इसके विपरीत कोई अनुबंध न हो, दिवाला आदेश की तिथि को फर्म का विघटन हो जाता है।

(ख) आदेश की तिथि के पश्चात् न तो दिवालिया साझेदार फर्म के किसी कार्य के लिए उत्तरदायी होता है और न ही फर्म दिवालिया साझेदार के किसी कार्य के लिए उत्तरदायी ठहराई जा सकती है।

साझेदार दिवालिया होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हानि (Loss arising out of Insolvency of a partner)- जब किसी फर्म का विघटन होता है तो अन्त में जिस साझेदार के पूँजी खाते में डेबिट शेष होता है उसे उतनी राशि फर्म को लाकर देनी होती है। अब यदि ऐसा साझेदार दिवालिया हो जाय तो इसका अर्थ यह होगा कि वह फर्म को देय सम्पूर्ण राशि नहीं चुका सकेगा, उसकी सम्पत्ति (Assets) मे अधिक भुगतान प्राप्त हो सकेगा। परिणामस्वरूप, जितनी राशि फर्म को नहीं मिल सकेगी, वह फर्म की हानि होगी अब प्रश्न यह उठता है कि दिवालिया होने के कारण हुई हानि को कौन पूरा करे? इस सम्बन्ध में निम्नानुसार दो स्थितियाँ हो सकती है:-

(i) जब फर्म में केवल दो साझेदार है जिसमें से एक साझेदार दिवालिया हो जाए- इस स्थिति मे फर्म की हुई हानि दूसरा साझेदार जो शोधक्षम (Solvent) है पूरा करता है।

उदाहरण - अ तथा ब एक फर्म मे साझेदार है। फर्म के विघटन के समय आवश्यक समायोजन करने के पश्चात् अ का पूँजी खाता 1,000 रु का डेबिट शेष दर्शाता है। अ का दिवाला निकल गया तथा उसकी सम्पत्ति से केवल 200 रु ही प्राप्त हो सके।

इस स्थिति मे फर्म (1,000-200)=800 रु की हानि होगी जो ब से वसूल करनी जाएगी। प्रविष्टि निम्नानुसार होगी:-

		Rs	Rs
Cash A/c	Dr.	200	
B's Capital A/c	Dr.	800	
To A's Capital A/c			1000

(ii) जब फर्म मे दो से अधिक साझेदार हों तथा एक साझेदार दिवालिया हो जाए- इस स्थिति मे दिवालिया साझेदार की हानि शेष समस्त शोधक्षम साझेदार मिलकर पूरा करेंगे। जैसे यदि अ, ब तथा स तीन साझेदार है तथा अ दिवालिया हो जाता है, तो ब तथा स दोनों अ की कमी को पूरा करेंगे।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि शोधक्षम साझेदार दिवालिया साझेदार की हानि को किस अनुपात में पूरा करें।

इस सम्बन्ध में स्थिति का अध्ययन दो शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है:-

(क) 'गार्नर बनाम मर्रे' के निर्णय से पूर्व के अन्तर्गत किया जा सकता है:-

(ख) निर्णय के बाद की स्थिति

'गार्नर बनाम मर्रे' निर्णय से पूर्व की स्थिति (Position before Garner V/s Murray Decision) गार्नर बनाम मर्रे इंग्लैण्ड का एक महत्वपूर्ण निर्णय है जिसका उल्लेख आगे किया जाएगा। इस निर्णय से पूर्व यह माना जाता था कि साझेदार के दिवालिया होने से उत्पन्न फर्म को होने वाली हानि एक सामान्य व्यापारिक हानि मानी जाती थी जिसे अन्य शोधक्षम साझेदारों को अपने लाभालाभ विभाजन अनुपात में वहन करना चाहिए

Illustration 4. अ, ब तथा स 5 : 3 : 2 के अनुपात में एक फर्म में साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 2007 को जब फर्म का समापन हुआ फर्म का चिट्ठा निम्नानुसार था: –

चिट्ठा

	रु		रु
लेनदार	5,000	रोकड़	2,000
पूँजी: अ	20,000	विविध सम्पत्तिया	51,000
ब	30,000	'स' का पूँजी खाता	2,000
	55,000		55,000

सम्पत्तियों से 48,700 रु. वसूल हुए; लेनदारों को 10% बट्टे पर भुगतान कर दिया गया। विघटन व्यय 200 रु. हुए।

'स' दिवालिया हो गया तथा उसकी सम्पत्ति से रुपयें में 50 पैसे की दर से लाभाँश मिल सका यह मानकर आवश्यक खाते बनाइए कि गार्नर बनाम मर्रे निर्णय लागू नहीं होता।

Solution. टिप्पणियाँ-(1) विघटन सम्बन्धी समायोजन करने के पश्चात् स का पूँजी खाता 2,400 रु का डेबिट शेष दर्शाता है; किन्तु उसकी सम्पत्ति से केवल $\left(\frac{2400 \times 50}{100}\right) = 1200$ रु. मिल सके। शेष 1,200 रु की हानि 'अ' तथा 'ब' शोधक्षम साझेदार अपने लाभालाभ विभाजन अनुपात क्रमशः $\left(\frac{1200 \times 5}{8}\right) = 750$ रुपए तथा $\left(\frac{1200 \times 3}{8}\right) = 450$ रु. फर्म को देकर पूरा करेंगे। इस हेतु प्रविष्टि निम्नानुसार होगी:-

		Rs.	Rs.
Cash A/c	Dr.	1,200	
A's Capital A/c	Dr.	750	
B's Capital A/c	Dr.	450	
To C's Capital A/c			2,400

Realisation Account

To Sundry Assets	51,000	By Creditors A/c		5,000
To Cash A/c (Creditors)	4,500	By Cash A/c		48,700
To Cash A/c (Expenses)	200	Capital Accounts		
		A	1,000	
		B	600	
		C	400	2,000
	55,700			55,700

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs	Rs.	Rs.
To Balance b/d	.....	....	2,000	By Balance b/d	20,000	30,000	....
To Realisation A/c	1,000	600	400	By Cash A/c	....	....	1200
To C's Capital A/c	750	450	....	By A's Capital A/c	.....	....	750
To Cash A/c	18,250	28,950	....	By B's Capital A/c	....	.....	450
	20,000	30,000	2,400		20,000	30,000	2,400

Cash Account

To Balance b/d	2,000	By Realisation A/c	2000
To Realisation A/c	48,700	By Realisation A/c	4,500
To C's Capital A/c	1,200	By A's Capital A/c	18,250
		By B's Capital A/c	28,950
	51,900		51,900

गार्नर बनाम मर्रे निर्णय (Garner Vs. Murray Decision) सन् 1903 में न्यायधीश जॉयस (Joyce) 'गार्नर बनाम मर्रे' के मामले में दिए गए निर्णय ने पूर्व-वर्णित स्थिति को बिल्कुल बदल दिया। इस सामान्य व्यापारिक हानि नहीं है वरन् यह एक असामान्य पूँजी सम्बन्धी हानि है जिसे शोधक्षम साझेदारों को अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करना चाहिए न कि लाभ-हानि विभाजन अनुपात में।

इस निर्णय में निम्नलिखित दो महत्वपूर्ण नियम प्रतिपादित किए गए है:-

(क) शोधक्षम साझेदारों को फर्म के विघटन पर हानि (Loss on Realisation) में अपने हिस्से के बराबर राशि नकद लानी चाहिए, तथा

(ख) साझेदार के दिवाले के कारण उत्पन्न हानि उपर्युक्त (क) के पश्चात् पूँजी के अनुपात में वहन करनी चाहिए।

सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि दिवाले की हानि को शोधक्षम साझेदारों द्वारा उस पूँजी के अनुपात में वहन करनी चाहिए जो विघटन के तुरन्त पूर्व (Capital just before dissolution) हो इसका यह भी अर्थ है कि यदि किसी शोधक्षम साझेदार के पूंजी खाते में डेबिट शेष हो तो वह इस हानि को पूरा करने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

पूँजी अनुपात (Capital Ratio) - दिवाले की हानि शोधक्षम साझेदार अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करते है। इस सम्बन्ध में दो स्थितियाँ हो सकती है -

(क) जब पूँजी खाते स्थायी हो

(ख) जब पूँजी खाते परिवर्तनशील हो।

(क) जब पूँजी खाते स्थायी हो (When Capital Accounts are Fixed) - जब फर्म में साझेदारो के पूँजी खाते स्थायी होते है तो विघटन सम्बन्धी समस्त समायोजन साझेदारों के चालू खातो (Current Account) में किए जाते हैं। इस स्थिति में पूँजी अनुपात का निर्धारण पूँजी खातो में आरम्भिक शेष (अर्थात् स्थायी पूँजी) के आधार पर किया जाता है।

महत्वपूर्ण टिप्पणी- इस स्थिति में छात्र लेखाकन क्रियाएँ निम्नानुसार क्रम में करें -

(1) सर्वप्रथम विघटन सम्बन्धी समायोजनों का लेखा वसूली खाता, रोकड़ खाता तथा साझेदार के चालू खातो में कर लें।

(2) वसूली पर होने वाली हानि (या लाभ) साझेदारों के चालू खातो में हस्तान्तरित कर दें।

(3) शोधक्षम साझेदारों से वसूली की हानि नकद प्राप्त कर उसका लेखा चालू खातों तथा रोकड़ खातों में कर दें।

(4) अब सर्वप्रथम साझेदार के चालू खाते का शेष उसके पूँजी खाते में ले जाएँ।

NOTES

(5) अब दिवालिया साझेदार के पूँजी खाते का डेबिट शेष यह बताएगा कि फर्म को उससे कितनी राशि प्राप्त करनी है। दिवालिया की सम्पत्ति से प्राप्त भुगतान का लेखा रोकड़ खाते तथा उसके पूँजी खाते में कर दें। जितनी राशि कम मिले वह दिवालिया साझेदार की हानि होगी।

(6) उक्त हानि को शोधक्षम साझेदार पूँजी के अनुपात में पूरा करेंगे। इस हेतु शोधक्षम साझेदारों के चालू खाते डेबिट तथा दिवालिया साझेदारों का पूँजी खाता क्रेडिट करें।

(7) शोधक्षम साझेदारों के चालू खातों के शेष उनके पूँजी खातों के शेष उनके पूँजी खातों में हस्तांतरित करें।

(8) अन्त में शोधक्षम साझेदारों के पूँजी खातों के शेष निकालकर यह ज्ञात करलें कि उन्हें कितनी राशि फर्म से प्राप्त करनी है। इस राशि के उनके पूँजी खाते डेबिट तथा रोकड़ खाता क्रेडिट करेंगे।

उपर्युक्त प्रविष्टियों से समस्त खाते बन्द हो जायेंगे।

Illustration 5. A, B and C were carrying on business in partnership sharing profits and losses in the ratio 3 : 2 : 1 respectively. They decided to dissolve the firm on 31st Dec. 2007

		Rs.		Rs.
Creditors		47,000	Land & Building	57,000
A's Loan Account		10,000	Stock	50,000
Capital A/c				
A	90,000		Debtors	50,000
B	10,000		Cash	3,000
C	10,000	1,10,000	Profit and Loss	1,500
A's Current Account		1,500	B's Current A/c	2,000
			C's Current A/c	5,000
		1,68,500		1,68,500

Land and Building were sold for Rs. 40,000 and Stock and Debtors realised Rs. 30,000 and Rs. 42,000 respectively. The Goodwill was sold for Rs. 600. Expenses of realisation amounted to Rs. 1,200. C is insolvent and a final dividend of 50 paise in a rupee is received from his estate in full settlement.

Prepare necessary accounts closing the books of the firm applying the ruling given in Garner Vs. Murray.

अ,ब एवं स एक फर्म में साझेदार है और क्रमश: 3:2:1 के अनुपात के लाभ-हानि बाँटते हैं। 31 दिसम्बर, 2007 को फर्म की स्थिति विवरण निम्न प्रकार था:

		रु.		रु.
लेनदार		47,000	भूमि तथा भवन	57,000
अ का ऋण खाता		10,000	स्कन्ध	50,000
पूँजी खाता			देनदार	50,000
अ	90,000		रोकड़	3,000
ब	10,000		लाभ-हानि लेखा	15,000
स	10,000	1,10,000	ब का चालू खाता	2,000
अ का चालू खाता		1,500	स का चालू खाता	5,000
		1,68,500		1,68,500

भूमि व भवन को 40,000 रु. में बेचा गया। स्कन्ध और देनदारों से क्रमश: 30,000 रु तथा 42,000 रु. वसूल हुआ। ख्याति को 600 रु. बेचा गया, वसूली व्यय 1,200 रु. हुए। स दिवालिया हो गया तथा उसकी जायदाद से प्रति रुपया 50 पैसे का अन्तिम लाभांश हिसाब चुकता करके प्राप्त हुआ

गार्नर बनाम मर्रे के नियम के लागू करते हुए फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

NOTES

Solution. टिप्पणियाँ-(1) साझेदारों के चल लेखों में वसूली पर हानि तथा संचिति हानि का लेखा करने के पश्चात् स के खाते में 12,850 रु. का डेबिट शेष आता है। इस शेष को 'स' के पूँजी खाते में हस्तांतरित कर दिया जाएगा।

(2) 'स' का पूँजी खाता अब 2,850 रु. का डेबिट शेष दर्शाता है अर्थात् फर्म को उससे 2,850 रु. प्राप्त करने है जिसके विरुद्ध उससे रुपये में 50 पैसे अर्थात् 1,425 ही प्राप्त होते हैं। इस प्रकार दिवालिया साझेदार की हानि 1,425 रु. है।

(3) चूँकि पूँजी खाते स्थायी है, अतः उक्त हानि को अ तथा ब शोधक्षम साझेदार अपनी पूँजी के अनुपात (9:1) में क्रमशः 1,283 रु. तथा 142 रु. से पूरा करेंगे।

(4) अ तथा ब वसूली की हानि नकद लाएँगे।

Realisation A/c

To Land & Building	57,000	By Creditors A/c	47,000	
To Stock A/c	50,000	By Cash A/c		
To Debtors A/c	50,000	Land & Building	40,000	
To Cash A/c (Creditors)	47,000	Stock 30,000		
To Cash A/c (Expenses)	1,200	Debtors	42,000	
		Goodwill	600	1,12,600
		By Current Accounts		
		A	22,800	
		B	15,200	
		C	7,600	45,600
	2,05,200			2,05,200

Capital Accounts

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To C's Current A/c	.....	....	12,850	By Balance b/d	90,000	10,000	10,000
To A's Current A/c	533	.....	.....	By Cash A/c	......	.....	1,425
To B's Current A/c	....	2,642	.....	By A's Current A/c	...	....	1,283
To Cash A/c	89,467	7,358	.....	By B's Current A/c	....	......	142
	90,000	10,000	12,850		90,000	10,000	12,850

Current Account

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To Balance b/d	.....	2,000	5,000	By Balance b/d	1,500	.....	.....
To Realisation A/c	22,800	15,200	7,600	By Cash A/c	22,800	15,200	.....
To P & L A/c	750	500	250	By C's Capital A/c	.....	....	12,850
To C's Capital A/c	1,283	142	.....	By A's Capital A/c	533	....	...
				By B's Capital A/c	...	2,642	...
	24,833	17,850	12,842		24,833	17,842	12,850

NOTES

A's Loan A/c

To Cash	10,000	By Balance b/d	10,000
	10,000		10,000

Cash A/c

To Balance b/d	3,000	By Realisation A/c	47,000
To Realisation A/c	1,12,600	By Realisation A/c	1,200
To A's Current A/c	22,800	By A's Loan A/c	10,000
To B's Current A/c	15,200	By A's Capital A/c	89,467
To C's Current A/c	1,425	By B's Capital A/c	7,358
	1,55,025		1,55,025

(ख) जब पूँजी खाते परिवर्तनशील हों (When Capital Accounts are Fluctuating) - जब फर्म में पूँजी खाते परिवर्तनशील होते है तो समस्त समायोजन पूँजी खातो में ही किए जाते हैं, अतः पूँजी स्थाई नहीं रह पाती, परिवर्तित होती रहती है। इस स्थिति में पूँजी अनुपात की गणना विघटन की तिथि पर समस्त सामान्य संचितियों (General Reserve) ; संचित लाभ या हानियों (accumulated profits or losses), आहरण (Drawings) तथा पूँजी एवं आहरणों पर ब्याज (Interest on Capital and Drawings), का समायोजन कर लेने (किन्तु विघटन पर हानि तथा सम्पत्तियों एव दायित्वों को लेने सम्बन्धी समायोजन करने से पूर्व) के पश्चात् की जानी चाहिये।

इस स्थिति में पूँजी खाते को दो भागों में बनाया जा सकता है। प्रथम भाग में उपर्युक्त वर्णित समायोजन करके पूँजी खाते के शेष निकाल लिए जाएँ तत्पश्चात् दूसरे भाग में विघटन सम्बन्धी अन्य समायोजन किए जाएँ। ऐसा करने में **पूँजी अनुपात** निकालने में सुविधा रहती है। उदाहरण क्रमांक 6 का अवलोकन करें।

Illustration 6. A,B, C are partners in a firm. They share profits and losses equally. Their Balance Sheet on 31st March 2007 is given as under:

The partnership is dissolved due to insolvency of B who is unable to contribute anything in the payment of his debt to the firm. Machinery realised Rs. 15,000 and Furniture Rs. 3,200. Only Rs. 12,000 were recovered from Debtors. Creditors were paid at a Discount of 5%

Prepare Realisation Account, Partners Capital Account and Bank Account. Give calculations to nearest rupee.

'अ' 'ब' तथा 'स' एक फर्म मे साझेदार है। वे लाभ-हानि बराबर बाँटते है। उनका 31 मार्च 2007 का स्थिति विवरण निम्न है:-

		रु		रु
Creditors (उत्तमर्ण)		32,000	Bank (अधिकोष)	4,000
Reserve Fund (संचित कोष)		9,000	Machinery (मशीनरी)	20,000
Capital (पूँजी)			Furniture (फर्नीचर)	8,000
A (अ)	8,000		Debtors (अधमर्ण)	20,000
C (स)	6,000	14,000	B's Capital ('ब' की पूँजी)	3,000
		55,000		55,000

'ब' के दिवालिया होने के कारण साझेदारी का विघटन हो गया जो फर्म के अपने ऋण के भुगतान के लिए कुछ भी देने मे समर्थ नहीं है। मशीनरी पर 15,000 रु., फर्नीचर पर 3,200 रु. तथा अधमर्ण से केवल 12,000 रु. वसूल हुए। उत्तमर्णों का भुगतान 5% कटौती पर किया गया। रोकीकरण खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं बैंक खाता बनाइये। आकलन निकटतम रुपये में करना है।

Solution टिप्पणियाँ -(1) यह प्रश्न **गार्नर बनाम मर्रे** के निर्णय के अनुसार करेंगे।

(2) चूँकि पूँजी खाते परिवर्तनशील है, अतः पूँजी अनुपात ज्ञात करने के लिए पूँजी ज्ञात करने के लिए पूँजी खाता दो भागों मे बनाया गया है। प्रथम भाग मे संचित कोष हस्तान्तरित करके खाते का शेष निकाल

लिया गया है। अ तथा स की पूँजी क्रमशः 11,000 रु. तथा 9,000 रु. आती है अतः उनका पूँजी अनुपात 11:9 हुआ।

(3) ब, जो दिवालिया साझेदार है की कमी 5,400 रु अ तथा स जो शोधक्षम साझेदार है उक्त 11:9 के अनुपात में पूरा करेंगे।

NOTES

Realisation Account

To Machinery A/c	20,000	By Creditors A/c		32,000
To Furniture A/c	8,000	By Bank A/c		
To Debtors A/c	20,000	Machinery	15,000	
To Bank A/c (Creditors)	30,400	Furniture	3,200	
		Debtors	12,000	30,200
		By Capital Account		
		A	5,400	
		B	5,400	
		C	5,400	16,200
	78,400			78,400

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs	Rs.	Rs.
To Balance b/d	.....	3,000	....	By Balance b/d	8,000	–	6,000
To Balance c/d	11,000	...	9,000	By Reserve A/c	3,000	3,000	3,000
	11,0000	3,000	9,000		11,000	3,000	9,000
To Realisation A/c	5,400	5,400	5,400	By Balance b/d	11,000	-	9,000
To A's Capital A/c	2,970	...	2,430	By Bank A/c	5,400	–	5,400
To Bank A/c	8,030		6,570	By A's Capital A/c	—	2,970	–
				By C's Capital A/c		2,430	-
	16,400	5,400	14,400		16,400	5,400	14,400

Bank A/c

To Balance b/d	4,000	By Realisation A/c	30,000
To Realisation A/c	30,200	By A's Capital A/c	8,030
To A's Capital A/c	5,400	By C's Capital A/c	6,570
To B's Capital A/c	5,400		
	45,000		45,000

10.11 भारतीय साझेदारी अधिनियम के प्रावधान
(Provision of Indian Partnership Act)

साझेदारी के विघटन के समय हिसाब-किताब के निपटारे के सम्बन्ध में साझेदारी अधिनियम के प्रावधानों का उल्लेख पूर्व पृष्ठों में किया जा चुका है। इन प्रावधानों के सूक्ष्म अध्ययन से निम्नलिखित तथ्य प्रकट होते है -

(1) भारतीय साझेदारी अधिनियम में यह प्रावधान कहीं भी नहीं है कि दिवालिया साझेदारों की हानि फर्म के शेष शोधक्षम साझेदार पूरा करेंगे। मूलचन्द बनाम भैरूमल' के मामले में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि " भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 48 में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कि दिवालिया साझेदार द्वारा भुगतान न करने की स्थिति में किसी शोधक्षम साझेदार को उस दिवालिया साझेदार के हिस्से का अंशदान देने के लिए दायी बनाता है।"

(2) भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 48 (a) में यह कहा गया है कि " हानियाँ, पूंजी की कमी (Deficiency) को सम्मिलित करते हुए पहले लाभों में से, तत्पश्चात् पूँजी में से तथा अन्त में, यदि आवश्यक हो तो साझेदार द्वारा व्यक्तिगत रूप से उस अनुपात में दी जायगी जिस अनुपात में वे लाभों में भाग लेने का अधिकार रखते हैं"

(3) इसका आशय यह हुआ कि भारतीय साझेदारी अधिनियम "पूँजी की कमी को सम्मिलित करते हुए अत: हानियों को पूरा करने का प्रावधान करता है न कि केवल साझेदार के दिवालिया होने से उत्पन्न हानि का" की गणना निम्नानुसार कर लेनी चाहिए:-

	रु.
रोकड़ को सम्मिलित करते हुए समस्त सम्पत्तियों का वसूली मूल्य (Realisable value of the assets)	....
(–) समस्त दायित्व (विघटन के अनुमानित व्ययों को सम्मिलित करते हुए) (All liabilities including expenses of dissolution)	
पूँजी की आदयगी के लिए उपलब्ध सम्पत्तियाँ (Assets available for repayment of Capital)	....
(–) समस्त साझेदारों की पूँजियाँ (Capital of all partners)	....
पूँजी की कमी (Deficiency of Capital)	....

(4) पूँजी की उपर्युक्त कमी को समस्त साझेदारों द्वारा अपने लाभालाभ विभाजन अनुपात में रोकड़ लाकर पूरा करना चाहिए। स्वाभाविक है कि दिवालिया साझेदार या तो कुछ भी अंशदान नही देगा या उसकी सम्पत्ति से आँशिक लाभाँश ही मिलेगा

(5) भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 48 (b) के अनुसार फर्म की सम्पत्तियाँ, उपर्युक्त (4) के अन्तर्गत पूँजी कमी में साझेदारों के अंशदान को सम्मिलित करते हुए निम्नानुसार क्रम में उपयोग में लायी जाएगी:-

(i) तृतीय पक्षों के ऋणो का भुगतान करने में;

(ii) साझेदार द्वारा पूँजी के अलावा फर्म को दिए गए अग्रिमो (advances) का समानुपातिक (rateably) भुगतान करने में,

(iii) प्रत्येक साझेदार को देय पूँजी का समानुपातिक (rateably) भुगतान करने में, तथा

(iv) यदि कोई राशि शेष बचे तो वह साझेदारों में उनके लाभालाभ अनुपात में वितरित की जाएगी

लेखांकन क्रियाएँ (Accounting Treatment) - भारतीय साझेदारी अधिनियम के उपर्युक्त वर्णित प्रावधानों के अनुसार साझेदारी फर्म के विघटन पर लेखांकन निम्नानुसार किया जाना चाहिए -

धारा 48 (a) :-(i) फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता खोलकर रोकड को छोड़कर अन्य समस्त सम्पत्तियों, तृतीय पक्षकारों के प्रति देयताओं तथा सम्पत्तियों के विरुद्ध प्रावधान पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते में हस्तान्तरित कीजिए। सामान्य संचय तथा अवितरित लाभ-हानि समस्त साझेदारों के पूँजी खाता में उनके लाभालाभ अनुपात में हस्तांतरित कर दें।

(ii) पूँजी की कमी की गणना कीजिए तथा इस कमी में साझेदारों द्वारा लाभालाभ अनुपात में अंशदान कराइए। रोकड़ खाता डेबिट तथा साझेदारों के पूंजी खाते क्रेडिट कीजिए।

धारा 48 (b):- इस स्थिति में रोकड़ खाते का शेष कुल उपलब्ध राशि बताएगा जिसका उपयोग निम्नानुसार क्रम में कीजिए -

(iv) तृतीय पक्षकारों के प्रति दायित्वों का भुगतान कीजिए। वसूली खाता डेबिट तथा रोकड खाता क्रेडिट करें। यदि किसी साझेदार द्वारा कोई दायित्व ले लिया जाए तो उसके पूँजी खाता क्रेडिट करें।

(v) साझेदार द्वारा फर्म को दिए गए ऋण का भुगतान करें। यदि ऐसा करते समय कोई लाभ या हानि (साझेदार द्वारा कम राशि स्वीकार करने पर सहमत हो जाना अथवा अदायगी के समय उपार्जित ब्याज होना) हो तो उसे वसूली खाते में भेज दें।

(vi) वसूली व्ययों का भुगतान करें- वसूली खाता डेबिट कर रोकड़ खाता क्रेडिट करें।

(vii) वसूली खाते का शेष समस्त साझेदारों के पूँजी खातों मे उनके लाभालाभ अनुपात में हस्तांतरित करके वसूली खाता बन्द कर दें।

(viii) शोधक्षम साझेदारों को उनकी पूँजी वापस कर दें। पूँजी खाते डेबिट करके रोकड़ खाता क्रेडिट करें। यदि उपलब्ध नकद रोकड़ पूरी पूँजी लौटाने को पर्याप्त न हो तो साझेदारों को समानुपातिक (rateably) पूँजी वापस करें।

(ix) यदि रोकड़ खाते में कोई राशि शेष हो तो उसे साझेदारों में उनके लाभालाभ अनुपात में बाँट दें।

(x) अन्त में शोधक्षम साझेदारों के पूँजी खाते के क्रेडिट शेष दिवालिया साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित कर दें। समस्त खाते स्वतः ही बन्द हो जायेंगे।

Illustration 7. अ,ब तथा स एक फर्म में 10:6:4 के अनुपात में साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 2007 को जब फर्म का विघटन हुआ, स्थिति निम्नानुसार थी:-

चिट्ठा

	रू		रु.
सामान्य संचय	5,000	फर्नीचर	2,000
लेनदार	12,500	मशीनरी	8,000
देय बिल	5,000	स्टॉक	20,000
पूँजी खाते- अ	5,000	देनदार	20,500
ब	10,000	रोकड़	2,000
स	15,000		
	52,500		52,500

रोकड़ को छोड़कर अन्य सम्पत्तियों से 32,500 रु. प्राप्त हुए। लेनदारों तथा देय बिल का पूर्ण भुगतान 16,500 रु. में किया गया। वसूल व्यय 500 रु. हुए। अ दिवालिया हो गया तथा उसकी सम्पत्ति से कोई राशि प्राप्त नहीं हुई।

भारतीय साझेदारी अधिनियम के अनुसार व्यवहार करते हुए फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए।

Solution टिप्पणियाँ --

			रु.
(1)	रोकड़ तथा सम्पत्तियों का वसूली मूल्य (2,000+32,500)=		34,500
	(–) दायित्व	16,500	
	व्यय	500	17,000
			17,500
	(–) पूँजी (सामान्य संचय सहित)		35,000
			17,500

इस कमी में ब तथा स अपने लाभालाभ अनुपात में रोकड़ अंशदान देंगे। ब $\left(\frac{17,500 \times 6}{20}\right) = 5,250$ रु. स $\left(\frac{17,500 \times 4}{20}\right)$ 3,500 रु.। अ से कोई राशि प्राप्त नहीं होगी।

(2) कुल उपलब्ध रोकड़ (2,000+32,500+5,250+3,500)=43,250 रु. में से प्रथम लेनदारों तथा समापन व्ययों का भुगतान कर तत्पश्चात् ब तथा स की पूँजी वापस करें। ऐसा करने पर 1,250 रु. शेष बचते हैं (देखिए रोकड़ खाते का प्रथम भाग) इस राशि को ब तथा स में लाभालाभ अनुपात में बाँट दें।

(3) अन्त में ब तथा स के पूँजी खाता में क्रमशः 750 रु. तथा 500 क्रेडिट शेष बचता है जो अ के पूँजी खाते में हस्तान्तरित करके अ का पूँजी खाता बन्द कर दिया जाएगा।

NOTES

Realisation Accounts

To Furniture A/c	2,000	By Creditors A/c		12,500
To Machinery A/c	8,000	By B/P A/c		5,000
To Stock A/c	20,000	By Cash A/c		32,500
To, Debtors A/c	20,500	By Capital A/c		
To Cash A/c	16,500	A	8,750	
To Cash A/c	500	B	5,250	
		C	3,500	17,500
	67,500			67,500

Cash A/c

To Balance b/d	2,000	By Realisation A/c	16,500
To Realisation A/c	32,500	By Realisation A/c	500
To Capital A/c		By Capital A/c	
B	5,250	B	10,000
C	3,500	C	15,000
		By Balance c/d	1,250
	43,250		43,250
To Balance b/d	1,250	By B $\left(\frac{1,250 \times 6}{10}\right)$	750
		C $\left(\frac{1,250 \times 4}{10}\right)$	500
	1,250		1,250

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Realisation A/c	8,750	5,250	3,500	By Balance b/d	5,000	10,000	15,000
To Cash A/c	....	10,000	15,000	By General Reserve	2,500	1,500	1,000
To Cash A/c	....	750	500	By Cash A/c	....	5,250	3,500
To A's Capital A/c	.....	750	500	By B's Capital A/c	750	.....	.....
				By C's Capital A/c	500	....	....
	8,750	16,750	19,500		8,750	16,750	19,500

10.12 जब सभी साझेदार दिवालिया हो जायें (When all Partners be Insolvent)

जब फर्म के समस्त दायित्वों का भुगतान नही हो पाता तो यह माना जाता है कि फर्म के समस्त साझेदार दिवालिया हो गए।

जब फर्म के समस्त साझेदार दिवालिया हो जाते है तो दिवाले की हानि लेनदारों को वहन करना पड़ती है। इस स्थिति में निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण है -

(1) वसूली खाता पूर्व वर्णित रीति से बनाया जाता है, किन्तु चूँकि लेनदारों को पूर्ण भुगतान नहीं किया जाता, अत: उन्हें वसूली खाते मे हस्तांतरित नही करते।

(2) कुछ उपलब्ध रोकड (साझेदारों द्वारा दिए गए अंशदान को सम्मिलित करते हुए) मे विभिन्न दायित्वो का भुगतान आनुपातिक आधार पर (rateably) कर दिया जाता है। जितना भुगतान नहीं हो पाता उसे लाभ-हानि खाते में क्रेडिट कर देते है।

(3) चूँकि तृतीय पक्ष के लेनदारों को पूर्व भुगतान नहीं मिलता, अतः साझेदार द्वारा दिए गए ऋण के भुगतान का प्रश्न नहीं उठता। इस ऋण खाते को सम्बन्धित साझेदार के पूँजी खाते में हस्तांतरित करके बन्द कर देते हैं।

(4) अन्त में साझेदारों के पूँजी खातों में शेष लाभ-हानि खाते हस्तांतरित कर दिए जाते है जिनका परिणाम यह होता है कि पूँजी खातों के साथ लाभ-हानि खाता भी स्वतः ही बन्द हो जाता है।

Illustration 8. अ, ब तथा स एक फर्म में 3:1:1 के अनुपात में लाभालाभ विभाजित करते हैं। 31 दिसम्बर, 2007 को जब फर्म का विघटन हुआ तो स्थिति निम्नानुसार थीः-

दायित्व	रु.	सम्पत्तियाँ	राशि
देय बिल (B/P)	30,000	रोकड़ (Cash)	1,500
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft	60,000	देनदार (Debtors)	43,500
लेनदार (Creditors)	67,500	स्टॉक (Stock)	60,000
अ की पूँजी (A's Capital)	22,500	भवन (Building)	45,000
स की पूँजी (C's Capital)	15,000	ख्याति (Goodwill)	15,000
ब का पूँजी खाता (B's Capital)	30,000		
	1,95,000		1,95,000

सम्पत्तियों को 1,19,625 रु. में बेच दिया गया। समापन व्यय 3,000 रु. हुए। यह मानकर कि समस्त साझेदार दिवालिया हो गए तथा उनसे कोई राशि नहीं मिल सकी, आवश्यक खाते बनाइए।

Solution. **टिप्पणियाँ** -(1) कुछ उपलब्ध रोकड़ (1,500+19,625–3,000)=1,18,125 रु. तथा

कुल दायित्व (30,000+60,000+67,500)=1,57,500 रु. के है। अतः 1 रु. वाले लेनदारों को $\left(\frac{1,18,125}{1,57,500}\right)$=.75 पैसे भुगतान मिलेगा। इस प्रकार बैंक ओवर ड्राफ्ट (60,000×0.75)=45,000 रु. मिलेंगे। देय बिल (30,000×0.75)=22,500 रु. मिलेंगे। तथा लेनदारों को (67,500×0.75)=50,625 रु. मिलेंगे इन खातों के शेष लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित कर दिए जाएँगे।

(2) पूँजी खातो के शेष भी लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित किए जाएँगे जिससे लाभ-हानि खाता स्वतः ही बन्द हो जाएगा।

Realisation Account

To Debtors A/c	43,500	By Cash A/c		1,19,625
To Stock A/c	60,000	By Capital A/c		
To Building A/c	45,000	A	28,125	
To Goodwill A/c	15,000	B	9,375	
To Cash A/c	3,000	C	9,375	46,875
	1,66,500			1,66,500

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs	Rs	Rs		Rs	Rs	Rs
To Balance b/d	–	30,000	—	By Balance b/d	22,500	—	15,000
To Realisation A/c	28,125	9,375	9,375	By Profit & Loss A/c	5,625	39,375	—
To P & L. A/c	—	–	5,625				
	28,125	39,375	15,000		28,125	39,375	15,000

NOTES

Bank A/c

To Cash A/c	45,000	By Balance b/d	60,000
To Profit & Loss A/c	15,000		
	60,000		60,000

Bills Payable A/c

To Cash A/c	22,500	By Balance b/d	30,000
To Profit & Loss A/c	7,500		
	30,000		30,000

Creditors A/c

To Cash A/c	50,625	By Balance b/d	67,500
To Profit & Loss A/c	16,875		
	67,500		67,500

Cash A/c

To Balance b/d	1,500	By Realisation A/c	3,000
To Realisation A/c	1,19,625	By Bank A/c	45,000
		By Creditors A/c	50,625
		By Bills Payable A/c	22,500
	1,21,125		1,21,125

Profit & Loss A/c

To A's Capital A/c	5,625	By Bank A/c	15,000
To B's Capital A/c	39,375	By B/P A/c	7,500
		By Creditors A/c	16,875
		By C's Capital A/c	5,625
	45,000		45,000

वैकल्पिक पद्धति (Alternative Method) - फर्म के सब साझेदार दिवालिया हो जाने की स्थिति में खाते तैयार करने की एक अन्य पद्धति निम्नानुसार है -

(1) वसूली खाता सामान्य रीति से ही बनाया जाता है। तृतीय पक्ष के प्रति समस्त दायित्व भी वसूली खाते में हस्तांतरित किए जाते हैं।

(2) समस्त उपलब्ध रोकड़ (आरम्भिक शेष + सम्पत्तियों की बिक्री से प्राप्त रोकड़ +साझेदारों की निजी सम्पत्तियों से प्राप्त रोकड़) से लेनदारों को भुगतान कर दिया जाता है। इस हेतु वसूली खाता डेबिट तथा रोकड़ खाता क्रेडिट करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि लेनदारों को कम भुगतान करने के कारण फर्म को होने वाला लाभ वसूली खाते में ही समायोजित हो जाता है।

(3) वसूली खाते का **शेष** समस्त साझेदारों के पूंजी खातों में लाभ-हानि विभाजन अनुपात में हस्तांतरित कर देते है।

(4) यदि किसी साझेदार के पूंजी खाते में डेबिट शेष आता हो, तो उसे अन्य साझेदारों के पूंजी खातों में **पूँजी अनुपात** में हस्तांतरित कर देते है।

(5) अन्य साझेदारों के पूँजी खातों में शेष एक-दूसरे के पूंजी खातों में हस्तांतरित करके बन्द कर दिए जाते है।

Illustration 9. उदाहरण क्रमांक 8 द्वितीय रीति से हल कीजिए।

NOTES

Solution टिप्पणियाँ-

(1) पूँजी खातों में वसूली खाते की हानि हस्तांतरित करने के बाद स्थिति निम्नानुसार है। A: Rs. 18,000 (Cr.); B: Rs. 31,500 (Dr.) तथा C: Rs. 13,500 (Cr.)

(2) सर्वप्रथम B के खाते में डेबिट शेष A तथा C के पूँजी अनुपात (225 : 150) में बाँटिए। A तथा C को क्रमशः 18,900 रु. तथा 12,600 रु. से डेबिट तथा B को इन राशियों के क्रेडिट कीजिए। B का पूँजी खाता बन्द हो गया।

(3) अब A के खाते में 900 रु. (Dr.) तथा C के खाते में 900 रु. (Cr.) शेष है। A के खाते का डेबिट शेष C के खाते में हस्तांतरित कर दीजिए। दोनों पूँजी खाते बन्द हो जाएंगे।

Realisation Account

To Debtors A/c	43,500	By B/P A/c		30,000
To Stock A/c	60,000	By Bank Overdraft		60,000
To Building A/c	45,000	By Creditors A/c		67,500
To Goodwill A/c	15,000	By Cash A/c		1,19,625
To Cash A/c	3,000	By Capital A/c		
To Cash A/c	1,18,125	A	4,500	
		B	1,500	
		C	1,500	7,500
	2,84,625			2,84,625

Capital Account

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	----	30,000	----	By Balance b/d	22,500	----	15,000
To Realisation A/c	4,500	1,500	1,500	By A's Capital A/c	----	18,900	----
To C's Capital A/c	18,900	----	12,600	By C's Capital A/c	----	12,600	----
To A's Capital A/c	----	----	900	By C's Capital A/c	900	----	----
	23,400	31,500	15,000		23,400	31,500	15,000

Cash A/c

To Balance b/d	1,500	By Realisation A/c	3,000
To Realisation A/c	1,19,625	By Realisation A/c	1,18,125
	1,21,125		1,21,125

बोध प्रश्न

5 वसूली खाता किसे कहते है?

6 गार्नर बनाम मर्रे निर्णय बताइये?

7. वसूली खाते का प्रारूप बताइये?

....

....

....

NOTES

10.13 भागश: वितरण (Piecemeal Distribution)

पिछले प्रश्नों में हमने यह मान लिया था कि समस्त सम्पत्तियों की वसूली एक साथ हो जाती है तथा समस्त देयताओं का भुगतान तुरन्त एक साथ कर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप विघटन की सम्पूर्ण लाभ या हानि भी एक साथ ज्ञात हो जाती है। जिसे साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित करके उन्हें देय (अथवा उनसे प्राप्य) राशि ज्ञात कर ली जाती है जिसका निपटारा होने पर फर्म के खाते बन्द हो जाते हैं।

व्यवहार में प्रायः ऐसा नहीं होता। वास्तविकता तो यह है कि सम्पत्तियाँ धीरे-धीरे वसूल की जाती रहती हैं अर्थात् उनकी वसूली एक साथ न होकर अलग-अलग तिथियों को पर्याप्त समयान्तर पर होती है। अतः ऐसी दशा में यदि पूर्व वर्णित विधि के अनुसार वसूली के लाभ या हानि ज्ञात करके साझेदारों के देय राशि ज्ञात की जाए तो बहुत अधिक समय लग जाएगा तथा साझेदारों को भुगतान प्राप्त होने में विलम्ब होगा।

ऐसी परिस्थिति में निम्नलिखित पग उठाए जाते हैः-

(1) सम्पत्तियों की वसूली से प्राप्त होने वाली राशि में से सर्वप्रथम तृतीय पक्षों की देयताओं तथा तत्पश्चात् साझेदारों के ऋणों का भुगतान कर दिया जाता है।

(2) इसके पश्चात् जैसे-जैसे फर्म की सम्पत्तियाँ वसूल होती जाती हैं उसे साझेदारों में उनके अधिकारों के अनुसार बाँटना प्रारम्भ कर देते हैं, इस बात की प्रतीक्षा नहीं करते कि पहले समस्त सम्पत्तियाँ वसूल हो जाए तथा वसूली की लाभ-हानि ज्ञात कर साझेदारों को अन्तिम रूप में देय राशि निकाली जाए।

(3) यहाँ यह समस्या उत्पन्न होती है कि उपलब्ध राशि को विभिन्न साझेदारों में किस अनुपात में वितरित किया जाए। विघटन के समय हिसाब का निपटारा करने का एक सामान्य नियम यह है कि साझेदारों की अन्त में शेष अदत्त राशि (Amount left unpaid) या वितरण पर होने वाला लाभ उनके लाभालाभ अनुपात में होना चाहिए। यदि साझेदारों के पूँजी खाते पहले से उनके लाभालाभ अनुपात में नहीं है तो उपलब्ध राशि को लाभालाभ विभाजन अनुपात में वितरित नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि ऐसा किया जाता है तो शेष अदत्त राशि लाभालाभ अनुपात में नहीं रहेगी।

उपलब्ध राशि का वितरण पूँजी के अनुपात में नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि ऐसा किया जाए तो अन्तिम रूप से शेष अदत्त राशि पूँजी अनुपात में बचेगी जबकि लाभालाभ विभाजन अनुपात में होनी चाहिए।

अतः इस स्थिति में प्रमुख समस्या किसी ऐसी पद्धति के अनुसरण करने की है कि जिसके द्वारा समय समय पर उपलब्ध राशि का साझेदारों में वितरण करने पर अन्त में शेष बची अदत्त राशि (Amount finally left unpaid) साझेदारों के लाभालाभ विभाजन अनुपात में हो।

इस हेतु निम्नलिखित में से किसी विधि को अपनाया जा सकता है -

(क) आनुपातिक पूँजी विधि

(ख) अधिकतम हानि विधि

10.13.1 आनुपातिक पूँजी विधि (Proportionate Capital Method)

इस विधि के अन्तर्गत उपलब्ध राशि का वितरण इस प्रकार किया जाता है कि विभिन्न साझेदारों की पूँजी पहले लाभ-हानि विभाजन अनुपात में कर ली जाती है तथा उसके बाद उपलब्ध राशि का वितरण लाभालाभ विभाजन अनुपात में किया जाता रहता है। इस हेतु निम्नानुसार प्रक्रिया अपनाई जाती है:-

(1) सर्वप्रथम साझेदारों के पूँजी में लाभ-हानि, सामान्य संचय तथा आहरण आदि का समायोजन करके प्रत्येक साझेदार की समायोजित पूँजी निकाल लीजिए।

(2) विभिन्न साझेदारों की पूँजी की तुलना करके यह देखा जाता है कि किस साझेदार की पूँजी आवश्यक लाभालाभ अनुपात से अधिक है। इसके लिए सबसे कम पूँजी वाला साझेदार आधार माना जाता है।

उदाहरण - मान लीजिए X तथा Y दो साझेदार 6:4 के अनुपात में लाभालाभ विभाजित करते है। फर्म के विघटन के समय उनकी पूँजी क्रमशः 40,000 तथा 20,000 रु. है। Y की पूँजी $\frac{4}{10}$ भाग के लिए 20,000 रु. है। इस आधार पर $\frac{6}{10}$ भाग के लिए X की पूँजी $\left(\frac{20,000 \times 10 \times 6}{4 \times 10}\right) = 30,000$ रु. होना चाहिए जबकि उसकी पूँजी है 40,000 रु. अतः X की पूँजी 10,000 रु अधिक है।

(3) सम्पत्तियों की वसूली से प्राप्त राशि मे से सर्वप्रथम उस साझेदार को भुगतान करना चाहिए जिसकी पूँजी लाभालाभ विभाजन अनुपात से अधिक है तथा ऐसा तब तक करते रहना चाहिए जब तक उसकी पूँजी लाभालाभ विभाजन अनुपात मे न आ जाए।

(4) जब एक बार समस्त साझेदारो की पूँजी लाभालाभ अनुपात मे आ जाए तो फिर आगे प्राप्त होने वाली राशि का वितरण साझेदारों में उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात में किया जाता रहता है।

उदाहरण - पूर्व उदाहरण में मान लीजिए फर्म की सम्पत्तियो की वसूली निम्नानुसार हुई 1 मार्च 8000 रु , 10 मई 4,000 रु. तथा 30 जून 2,000 रु.। साझेदारों में वितरण निम्नानुसार होगा:-

	X	Y
विघटन के समय पूँजी	40,000	20,000
1 मार्च को 8,000 रु. उपलब्ध है, X की पूँजी 10,000 रु. अधिक है, अतः 8,000 रु. पूरे X को दिए	- 8,000	------
	32,000	20,000
10 मई: अभी भी X की पूँजी 2,000 रु अधिक है। अतः 10 मई जब 4,000 रुपये प्राप्त होंगे तो सर्वप्रथम 2,000 रुपये पूरे X को दे दिया जायेंगे ऐसा करने मे X तथा Y की पूँजी लाभालाभ अनुपात मे हो जाएगी। इसके पश्चात् शेष 2,000 रु. X तथा Y मे लाभालाभ अनुपात मे बांटेगे		
प्रथम 2000 रु	( ) 2,000	--
	30,000	20,000
शेष 2,000 रु.	(-) 1,200	(-) 800
	28,800	19,200
30 जून - 2,000 रु X तथा Y मे लाभालाभ अनुपात मे	(-) 1,200	(-) 800
अन्तिम रूप मे अदत्त राशि (Amount finally left unpaid)	27,600	18,400

छात्र ध्यान दे- उपर्युक्त प्रकार से वितरण करने पर अन्तिम रूप मे अदत्त राशि X तथा Y के लाभालाभ अनुपात (6:4) मे है।

जब फर्म में दो से अधिक साझेदार हैं- यदि फर्म मे दो से अधिक साझेदार हो तो पूंजी आधिक्य की गणना करने तथा राशि के वितरण मे कुछ परिवर्तन करना पडता है। मान लीजिए, किसी फर्म मे अ, ब तथा स तीन साझेदार है तथा ब की पूंजी सबसे कम है, तो पहले ब को आधार मानकर अ तथा स का पूंजी आधिक्य ज्ञात किया जाएगा। इसके पश्चात् अ तथा स को पूंजी उनके परस्पर लाभालाभ अनुपात मे लेकर उनकी पूंजी का आधिक्य ज्ञात करना होगा। राशि का वितरण सर्वप्रथम अ को इतना किया जाएगा जिससे उसकी पूंजी स के लाभालाभ अनुपात मे आ जाए इसके पश्चात् उपलब्ध राशि का वितरण अ तथा स मे उनके परस्पर लाभालाभ अनुपात मे किया जाएगा। ऐसा करने का परिणाम यह होगा कि अ ब तथा स की पूंजी उनके लाभालाभ अनुपात मे आ जाएगी। इसके पश्चात् जो भी राशि उपलब्ध होगी, तीनो साझेदारो के उनके लाभालाभ अनुपात मे वितरित की जाती रहेगी।

आगामी उदाहरण की टिप्पणियों में इस प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया है।

टिप्पणी- छात्र अपने गणनाओं की शुद्धता का सत्यापन इस आधार पर कर सकते हैं कि अन्त में साझेदारों की अदत्त राशि या आधिक्य की राशि उनके लाभालाभ अनुपात में होनी चाहिए।

Illustration 10. वी, जे तथा जी का 31 मार्च का चिट्ठा दिया गया है, जब उन्होंने साझेदारी के विघटन का निश्चय किया। उनका लाभालाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है। चूँकि सम्पत्तियों की वसूली में विलम्ब होगा, अतः यह तय किया गया कि 1,000 रु का शेष सदैव बनाए रखते हुए, शेष राशि जैसे -जैसे मिलती जाएगी बांटी जाती रहेगी। 1,000 रु. का वितरण अन्तिम किश्त के साथ होगा।

Given below is the Balance sheet of V, J and G as on 31 March on which date they decided to dissolve the partnership. They shared profits and losses in the ratio 3:2:1 Since Realisation of assets was protracted, it was decided that amount will be distributed as and when received retaining at all times an amount of Rs. 1,000 which was to be distributed with the final instalment :-

Balance sheet

Capital :	V	30,000	Cash and Bank	500
	J	10,000	Other Assets	99,500
	G	30,000		
Sundry Liabilities		30,000		
		1,00,000		1,00,000

The asstes realized as under (सम्पत्तियों की वसूली)

Realisation No.	Value of Assets	Amount Realisation
1	10,000	30,000
2	40,000	20,000
3	40,000	27,500
4	9,500	10,000
	99,500	87,500

Prepare Statement showing distribution of Cash

रोकड़ का वितरण दर्शाने वाला विवरण बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ (1) **प्रथम वितरण** - बैंक में रोकड़ 500 रु. तथा सम्पत्तियों की वसूली 30,000 मिलाकर कुल उपलब्ध राशि 30,500 रु. में से समझौते के अनुसार 1,000 रु. रोक कर शेष 20,500 रु. सम्पूर्ण राशि लेनदारों को- शेष लेनदार 500 रु.

(2) **द्वितीय वितरण** - 20,000 रु में से 500 रु. लेनदारों को- शेष 19,500 रु का वितरण करने से पूर्व अधिक पूँजी की गणना निम्नानुसार की जाएगी।

आनुपातिक पूँजी

		वी	जे	जी
वर्तमान पूँजी (रु.)		30,000	10,000	30,000
लाभालाभ अनुपात		3	2	1
जे को आधार मानकर आनुपातिक पूँजी (1)		15,000	10,000	5,000
आधिक्य	(रु.)	15,000	----	25,000

वी तथा जी के मध्य आनुपातिक पूँजी (3:1)

वी को आधार मानकर (2)	(रु.)	30,000	—	10,000
जी का पूँजी आधिक्य (3)				20,000

गणनायें: (1) वी $\left(\frac{3}{6} \times \frac{6}{2} \times 10{,}000\right) = 15{,}000$ रु., जी $\left(\frac{1}{6} \times \frac{6}{2} \times 10{,}000\right) = 5{,}000$ रु.

NOTES

(2) वी $\frac{3}{4}$ के लिए 30,0000 रु.; जी $\left(\frac{1}{4} \times \frac{4}{3} \times 30{,}000\right) = 10{,}000$ रु

(3) $(30{,}000 - 10{,}000) = 20{,}000$ रु

(3) उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सर्वप्रथम जी को 20,000 लौटाए जाएँगे; ऐसा करने से वी तथा जी की पूँजी पारस्परिक लाभालाभ अनुपात (3:1) में हो जाएगी। अब जो आधिक्य होगा उसमें से सर्वप्रथम 20,000 रु. (कुल आधिक्य 15,000+25,000)=40,000 रु. - 20,000 रु. लौटाए = 20,000 रु. वी तथा जी में 3:1 के अनुपात में लौटा देंगे। ऐसा करने का प्रभाव यह होगा वी, जे तथा जी की पूँजी उनके लाभालाभ अनुपात में हो जायेगी। आगे जो भी राशि उपलब्ध होगी वह तीनों साझेदारों में 3:2:1 के अनुपात में बांटी जाती रहेगी।

अन्त में साझेदारों की हानि 3:2:1 के अनुपात में आती है।

	Sundry Liabilities Rs.	V Rs.	J Rs.	G Rs.
देय राशि	30,000	30,000	10,000	30,000
प्रथम वितरण				
(500+30,000-1,000) 29,500 रु	29,500	---	----	---
द्वितीय वितरण	500	30,000	10,000	30,000
500 रु. लेनदारों को 19,500 रु. जी को	500	----	---	19,500
तृतीय वितरण (27,500 रु.)	—	30,000	10,000	10,500
500 रु. जी को, 5,000 रु. जी को 15,000	—	-----	--	500
रु. वी को शेष 7,000 रु. 3:2:1 के अनुपात में		30,000	10,000	10,000
		----	--	5,000
		15,000	---	---
		15,000	10,000	5,000
		3,500	2,333	1,167
चतुर्थ वितरण (11,000 रु.)		11,500	7,667	3,833
3:2:1 के अनुपात में		5,500	3,667	1,833
हानि		6,000	4,000	2,000

10.13.2 अधिकतम हानि विधि (Maximum Loss Method)

इस विधि के अनुसार उपलब्ध राशि का वितरण निम्नानुसार किया जाता है -

1. हस्तगत रोकड़ तथा सम्पत्तियों की बिक्री से प्राप्त राशि का उपयोग सर्वप्रथम बाह्य देयताओं (अर्थात् तृतीय पक्षों के दायित्वों) को चुकाने के लिए किया जाता है।
2. उसके पश्चात् आन्तरिक देयताओं (साझेदारों का ऋण) का भुगतान किया जाता है।

3. साझेदारों की कुल पूँजी का निर्धारण सामान्य संचय, आहरण, संचित लाभ या हानि का समायोजन करके कर लिया जाता है।
4. इसके पश्चात् जब भी वितरण के लिए राशि उपलब्ध होती है उसे पूँजी के कुल योग में से घटाकर अधिकतम हानि या लाभ की गणना की जाती है। अधिकतम हानि की गणना यह मानकर की जाती है कि आगे सम्पत्तियों की बिक्री से कोई राशि प्राप्त नहीं होगी।
5. अधिकतम हानि या लाभ को साझेदारों में उनके लाभालाभ अनुपात में विभाजित कर दिया जाता है। इस पूँजी से घटाकर शेष बचने वाली राशि का भुगतान साझेदारों को कर दिया जाता है।
6. यह हो सकता है कि उपर्युक्त (5) के अनुसार निकाला गया किसी साझेदार का पूँजी शेष ऋणात्मक (Negative) हो इस डेबिट शेष को अन्य साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पूँजी अनुपात में वितरित कर दिया जाता है।
7. वैकल्पिक रूप में, यह भी किया जा सकता है कि ऋणात्मक शेष शोधक्षम (Solvent) साझेदारों में उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात में कर दिया जाए।
8. यदि कोई साझेदार दिवालिया हो गया हो तो उसके पूँजी खाते का डेबिट शेष अन्तिम किश्त के भुगतान के समय शोधक्षम साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पूँजी अनुपात में वितरित किया जाता है।
9. जब समस्त पूँजी शेष धनात्मक (Plus) हो जाते है, तो उसका भुगतान कर दिया जाता है।
10. प्रत्येक बार जब उपलब्ध राशि का वितरण करना होता है पूँजी शेषों का योग लगाकर पूर्व वर्णित रीति से अधिकतम हानि की गणना करके उपर्युक्त प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।

Illustration 11. अ, ब तथा स 3 : 4 : 5 के अनुपात में लाभ-हानि का विभाजन करके, 1 जुलाई 2007 को अपनी फर्म के विघटन का निश्चय करते है। चूँकि सम्पत्तियों की बिक्री में समय लगेगा, अतः साझेदारों ने यह निश्चय किया कि जैसे-जैसे राशि प्राप्त होती जाए उसका वितरण किया जाता रहे। आप प्राप्तियों के वितरण का विवरण बनाइए।

विघटन की तिथि को चिट्ठा निम्नानुसार था :-

	रु		रु
लेनदार	10,000	विविध सम्पत्तियां	36,000
ऋण खाता	2,000		
पूँजी खाता			
अ	12,000		
ब	8,000		
स	4,000		
	36,000		36,000

सम्पत्तियों से वसूली निम्नानुसार हुई : प्रथम किश्त 5,000 रु., द्वितीय 10,000 रु., तृतीय 5,100 रु., चतुर्थ 6,300 रु. तथा पंचम 5,700 रु.।

Solution रोकड़ के वितरण का विवरण (Statement Showing Distribution of Cash)

		लेनदार तथा पूंजी			
	ऋण	कुल	अ	ब	स
	रु	रु	रु	रु	रु
आरम्भिक शेष	2,0000	24,000	12,000	8,000	4,000
प्रथम किश्त 5,000 रु लेनदारों को भुगतान	5,000			–	--
द्वितीय किश्त 10,000 रु	7,000	24,000	12,000	8,000	4,000
7,000 रु लेनदारों को शेष राशि 3,000 रु	7,000	---	----	----	---

अधिकतम हानि (24,000–3,000)=	21,000	24,000	12,000	8,000	4,000
अधिकतम हानि का वितरण (3:4:5)		-21,000	-5,250	– 7000	– 8,750
स के पूँजी खाते मे डेबिट	–3,000	6,750		1,000	–4,750
शेष का अ तथा ब में वितरण (अनुपात 3:2)	–	– 2850		– 1,900	4,750
ब के पूँजी खाते में डेबिट शेष	3,000	3,900		(–)900	----
अ को हस्तांतरित	----	(-)900		900	----
अ को भुगतान	3,000	3,000		----	
शेष		3,000		----	
	(24,000-3,000)	(12,000-3,000)		(8,000-0)	(4,000-0)
तृतीय किश्त: 5,100 रु	= 21,000	9,000		8,000	4,000
अधिकतम हानि (21,000–5,100)	=15,900				
साझेदारो में वितरण (3:4:5)	15,900	–3975		–5,300	–6,625
स के पूँजी खाते में डेबिट शेष	5,100	5,025		2,700	-2,625
अ तथा ब में वितरण (3:2)		–1,575		–1,050	2,625
अ तथा ब को भुगतान		3,450		1,650	---
	(21,000-5,100)	(9,000-3,450)		(8,000-1,650)	(4,000-0)
शेष	=15,900	5,550		6,350	4,000
चतुर्थ किश्त: 6,300 रु.					
अधिकतम हानि (15,900–6,300)=9,600 रु					
हानि का वितरण (3:4:5)	9,600	–2,400		3,200	-4,000
अ तथा ब को भुगतान	6,300	3,150		3,150	----
	(15,900-6,300)	(5,550-3,150)		(6,350-3,150)	(4,000-0)
शेष	= 9,600	2,400		3,200	4,000
पंचम किश्त : 5,700 रु					
अधिकतम हानि (9,600–5,700) = 36,00 रु					
हानि का वितरण (3:4:5)	–3,900	–975		–1,300	–1,625
अ, ब तथा स को	5,700	1,425		1,900	2,375
भुगतान	5,700	1,425		1,900	2,375
अदत्त पूँजी की राशि	(9,600-5,700)	(2,400-1,425) =		(3,200-1,900) =	(4,000-2,375)
(हानि)	3,900	975		1,300	1,625
		3		4	5

हानि मे साझेदारों का अनुपात

हल किये हुए प्रश्न
(Solved Problemes)

Problem 1 'अ' और 'ब' ने 31 दिसम्बर 2007 को अपने व्यवसाय के समापन का निर्णय किया, जिस दिन उनका चिट्ठा निम्न था -

NOTES

		Rs.		Rs.
लेनदार (Creditors)		12,000	रोकड़ (Cash)	2,000
'अ' का ऋण खाता	(A's Loan A/c)	16,000	देनदार (Debtors)	10,000
पूँजी : अ (Capital	A) 40,000		स्टॉक (Stock)	40,000
ब	B) 20,000	60,000	प्लाण्ट (Plant)	28,000
			ख्याति (Goodwill)	8,000
		88,000		88,000

साझेदार अपनी पूँजी अनुपात में लाभ व हानि विभाजित करते है। विविध देनदारों से 8,400 रु वसूल हुए; स्टॉक से 36,000 रु.; प्लाण्ट व फिक्सचर्स से उनके पुस्तक मूल्य 20% कम और ख्याति से 12,000 रु. प्राप्त हुए। लेनदारों को 5% कटौती पर भुगतान किया गया और समापन की लागत 12,000 रु. हुई आवश्यक खाते बनाइए।

Solution टिप्पणियाँ - (1) वसूली पर हानि 7,800 रु :अ $\left(\frac{7,800 \times 2}{6}\right) = 5,200$ रु., ब $\left(\frac{7,800 \times 2}{6}\right) = 2,600$ रु.

वसूली खाता

	रु.		रु.	
देनदार	10,000	लेनदार		12,000
स्टॉक	40,000	रोकड़ खाता		
प्लाण्ट	28,000	देनदार	8,400	
ख्याति	8,000	स्टॉक36,000		
रोकड़ खाता (लेनदार)	11,400	प्लाण्ट	22,400	
रोकड़ खाता (व्यय)	1,200	ख्याति	12,000	78,800
		पूँजी खाते		
		अ	5,200	
		ब	2,600	7,800
	98,600			98,600

रोकड़ खाता

	रु		रु
शेष आ/ला	2,000	वसूली खाता	11,400
वसूली खाता	78,800	वसूली खाता	1,200
		अ का ऋण खाता	16,000
		अ का पूँजी खाता	34,800
		ब का पूँजी खाता	17,400
80,800			80,800

अ का ऋण खाता

	रु		रु
रोकड़ खाता	16,000	शेष आ/ला	16,000
	16,000		16,000

पूँजी खाते

	अ	ब		अ	ब
	रु.	रु.		रु.	रु.
वसूली खाता	5,200	2,600	शेष आ./ला.	40,000	20,000
रोकड़ खाता	34,800	17,400			
	40,000	20,000		40,000	20,000

Problem 2. सिन्हा, वैश्य एवं सिंह एक फर्म में साझेदार है। वे क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजन करते है। 30 जून, 2007 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार है।

दायित्व		**रु.**	**सम्पत्ति**		**रु.**
देय विपत्र		5,000	बैंक में जमा		9,000
विविध लेनदार		11,000	प्राप्य-विपत्र		6,000
वैश्य का ऋण		6,000	विविध देनदार	20,500	
सामान्य संचिति		9,600	घटाओः संदिग्ध ऋणार्थ		
			ऋणार्थ संचिति	500	20,000
लाभ-हानि लेखा		2,400	स्कन्ध		16,000
पूँजी लेखा			फर्नीचर		5,000
सिन्हा	24,000		भूमि व भवन		24,000
वैश्य	20,000				
सिंह	2,000	46,000			
		80,000			80,000

30 जून 2007 को सिंह दिवालिया हो गया और साथ का समापन कर दिया गया। सम्पत्तियों से निम्न लिखित राशियाँ प्राप्त हुई :-

विविध देनदार 13,100 रु.; फर्नीचर 1,300 रु., स्कन्ध 11,500 रु., भूमि व भवन 14,500 रु. तथा प्राप्य विपत्र 1,250 रु.। विविध लेनदारों का पूर्ण शोधन किया गया। देय-विपत्रों का शोधन 2% बट्टे पर किया गया। समापन पर 150 रु. व्यय हुआ। सिंह की व्यक्तिगत सम्पत्ति से उसकी पूँजी की हीनता के लिए 40 पैसे प्रति रुपया प्राप्त हुआ। साझेदारी संलेख में गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू करने का उल्लेख है। साझेदारी के पूँजी लेखे परिवर्तनशील हैं। फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक लेखे बनाइए।

Solution.टिप्पणियाँ- (1) गार्नर बनाम मर्रे निर्णय के अनुसार शोधक्षम साझेदार वसूली हानि नकद लाएँगे।

(2) सिंह को 900 रु. देने थे जिसमें से वह केवल $\left(\frac{900 \times 40}{100}\right)$ 360 रु. दे पाता है। शेष राशि 540 रु. उसकी पूँजी की कमी है, जिसे सिन्हा तथा वैश्य अपने पूँजी-अनुपात (30 : 24) में पूरा करेंगे।

वसूली खाता

		रु.		रु.
प्राप्य-विपत्र		6,000	संदिग्ध ऋणार्थ संचिति	500
देनदार	20,500		लेनदार	11,000
स्कन्ध		16,000	देयविपत्र	5,000
फर्नीचर		5,000	बैंक खाता (13,100+1,300 +	
भूमि व भवन		24,000	11,500+14,500+1,250) =	41,650

NOTES

बैंक खाता			पूँजी खाते		
लेनदार	11,000		सिन्हा	14,700	
देय विपत्र	4,900		वैश्य	9,800	
		15,900	सिन्हा	4,900	29,400
बैंक खाता व्यय		150			
		87,550			87,550

बैंक खाता

	रु.		रु.
शेष आ/ला.	9,000	वसूली खाता	15,900
वसूली खाता	41,650	वसूली खाता	150
सिंह का पूँजी खाता	360	वैश्य का ऋण खाता	6,000
सिन्हा का पूँजी खाता	14,700	सिन्हा का पूँजी खाता	29,700
वैश्य का पूँजी खाता	9,800	वैश्य का पूँजी खाता	23,760
	75,510		75,510

पूँजी खाते

	सिन्हा	वैश्य	सिंह		सिन्हा	वैश्य	सिंह
	रु.	रु.	रु.		रु.	रु.	रु.
वसूली खाता	14,700	9,800	4,900	शेष आ.ला.	24,000	20,000	2,000
सिंह का पूँजी खाता	300	240	----	सामान्य संचिति	4,800	3,700	1,600
बैंक खाता	29,760	23,760	----	लाभ हानि खाता	1,200	800	400
					30,000	24,000	4,000
				बैंक खाता	14,700	9,800	360
				सिन्हा का पूँजी खाता	......	.....	300
				वैश्य का पूँजी खाता	......	.....	240
	44,700	33,800	4,900		44,700	33,800	4,900

वैश्य का ऋण खाता

	रु.		रु.
बैंक खाता	6,000	शेष आ.ला.	6,000
	6,000		6,000

Problem 3. Mohan and Sohan were in partnership in the ratio of 3:1 and agreed to dissolve. The assets realised Rs. 75,000. The liabilities were as follows:

Sundry Creditors Rs. 45,000; Loan from Mohan Rs. 20,000;

Mohan's Capital Rs. 10,000, and Sohan's Capital Rs. 15,000.

Show by means of accounts how the cash realised should be distributed.

मोहन और सोहन 3:1 अनुपात में साझेदार थे और उन्होंने साझा भंग करने का निश्चय किया। सम्पत्ति के 75,000 रु वसूल हुए।

विविध लेनदार 45,000 रु. मोहन से ऋण 20,000 पूँजी लेखे - मोहन 10,000 रु. और सोहन 15,000 रु.

खाते बनाते हुए यह दिखाइये कि वसूल की हुई रोकड़ कैसे वितरण की गई।

Solution टिप्पणियाँ - (1) प्रश्न में सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य नहीं दिए गए है। फर्म के कुल दायित्व (45,000 + 20,000 + 10,000 + 15,000) = 90,000 रु. के है। चूँकि सम्पत्तियों तथा दायित्व बराबर होते है, अतः सम्पत्तियो का पुस्तक मूल्य 90,000 रु. होगा। रोकड़ का आरम्भिक शेष अलग से ज्ञात करना सम्भव नहीं है।

NOTES

Realisation Account

To Sundry Assets A/c	90,000	By Sundry Creditors	45,000
To Cash A/c	45,000	By Cash A/c	75,000
		By Capital A/c	
		Mohan	11,250
		Sohan	3,750
	1,35,000		1,35,000

Mohan's Loan A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	20,000	By Balance b/d	20,000
	20,000		20,000

Cash A/c

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c.	75,000	By Realisation A/c	45,000
To Mohan's Capital A/c	1,250	By Mohan's Loan A/c	20,000
		By Sohan Capital A/c	11,250
	76,250		76,250

Capital Account

	Mohan	Sohan		Mohan	Sohan
To Realisation A/c	11,250	3,750	By Balance b/d	10,000	15,000
To Cash A/c	....	11,250	By Cash A/c	1,250	....
	11,250	15,000		11,250	15,000

Problem 4. R, M and P entered into partnership on 1st October 2007 sharing profit and losses in the proportion of 4.3:2 respectively and with Capital of Rs 30,000, Rs. 20,000 and Rs, 10,000.

Their assets and liabilities on 1st October 2008 the date on which they decide to windup their affairs, were as follows.

Office Fixtures, Rs 1,000 Debtors Rs 28,000, Bills Receivable Rs 5,000 and Stock-in-trade Rs. 4,5000 Sundry Creditors were Rs. 30,000, Bills Payable Rs 4 000

M agreed to take over the Book Debts at a discount of 20% and pay off the Creditors

R agreed to take over the Stock-in-trade at a discount of 10% and pay off the Bills Payable

P took over the Bills Receviable at Rs 4,877 and Office Fixtures at a depreciation of 10%

5% Interest is to be credited to each partners on his Capital

Prepare Realisation Account and Capital Account of the partners and an account showing adjustment of profit or loss in the business

R, M तथा P, 1 अक्टूबर 2007 को एक साझेदारी में सम्मिलित हुये, वे 4 3 2 के अनुपात में लाभ-हानि बाटते थे -

उन्होंने 1 अक्टूबर, 2008 को साझेदारी के विघटन का निश्चय का, उस दिन उनकी सम्पत्ति एवं दायित्व निम्न थे :-

कार्यालय फिक्चर्स 1,000 रु. देनदार 28,000 रु., प्राप्त बिल 5,000 रु., व्यापार का स्टॉक 45,000 रु., कुल लेनदार 30,000 रु. देय बिल 4,000 रु.।

M ने देनदारों को 20% कटौति पर लिया तथा लेनदारों का भुगतान करने का दायित्व को लेना स्वीकार किया।

R ने 10% कटौति पर व्यापार के स्टॉक को लिया और देय बिलों के भुगतान के दायित्व को लेना स्वीकार किया।

P ने 4,877 रु. में प्राप्य बिल तथा 10% ह्रास पर कार्यालय फिक्चर्स को लेना स्वीकार किया:

प्रत्येक साझेदार को पूँजी पर 5% ब्याज मिलता है।

वसूली खाता तथा साझेदारो के पूँजी खाते एवं व्यापार के लाभ अथवा हानि के समायोजन को दिखाते हुए एक खाता बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ- (1) प्रश्न में लाभ-हानि खाता बनाने को कहा गया है। 1 अक्टूबर 2008 को फर्म की स्थिति निम्नानुसार है:-

दायित्व	रु.	सम्पत्तियां	रु.
Sundry Creditors	30,000	Fixture	1,000
Bills Payable	4,000	Debtors	28,000
Capital :		Bills Receivable	5,000
X	30,000	Stock	45,000
Y	20,000		
Z	10,000		
	79,000		79,000

सम्पत्ति पक्ष (94,000-79,000)=15,000 रु. से कम है इसे वर्ष की हानि मानकर लाभ-हानि खाते में आरम्भिक शेष के रुप में दिखाएँगे।

(2) साझेदारों को दिया जाने वाला ब्याज लाभ-हानि खाते में डेबिट करके पूँजी खाता में क्रेडिट किया जाएगा। लाभ-हानि खाते का शेष साझेदारों के पूँजी खातों में लाभालाभ विभाजन अनुपात में ले जाया जाएगा।

Realisation Account

	Rs.			Rs.
To Office Fixtures	1,000	By Sundry Creditors		30,000
To Debtors	28,000	By Bills Payable		4,000
To Bills Receivable	5,000	By R's Capital A/c		
To Stock-in-trade	45,000	(Stock)		40,500
To R's Capital A/c		By M's Capital A/c		
(Bills Payable)	4,000	(Debtors)		22,400
To M's Capital A/c		By P's Capital A/c		5,777
(Creditors)	30,000	(B/R and Office Fixtures)		
		By Capital Accounts		
		R Rs	4,588	
		M. Rs	3,441	
		P. Rs	2,294	10,323
	1,13,000			1,13,000

NOTES

R's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Profit & Loss A/c	8,000	By Balance b/d	30,000
To Realisation A/c	40,500	By Interest on Capital A/c	1,500
To Realisation A/c	4,588	By Realisation A/c	4,000
		By Cash A/c	17,588
	53,088		53,088

M's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Profit & Loss A/c	6,000	By Balance b/d	20,000
To Realisation A/c	22,400	By Interest on Capital A/c	1,000
To Realisation A/c	3,441	By Realisation A/c	30,000
To Cash A/c	19,159		
	51,000		51,000

P's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Profit & Loss A/c	4,000	By Balance b/d	10,000
To Realisation A/c	5,777	By Interest on Capital A/c	500
To Realisation A/c	2,294	By Cash A/c	1,571
	12,071		12,071

Profit & Loss Account

		Rs.		Rs.
To Balance b/d		15,000	By Partners Capital A/c	
To Interest on Capital A/c			R	8,000
	Rs.		M	6,000
R	1,500		P	4,000
M	1,000			
P	500	3,000		
		18,000		12,071

Cash Account

	Rs.		Rs.
To R's Capital A/c	17,588	By M's Capital A/c	19,159
To P's Capital A/c	1,571		
	19,159		19,159

Problem 5. एक फर्म में अ तथा द दो साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2007 को उन्होंने फर्म का विघटन किया तथा अग्रलिखित वसूली खाता तैयार किया।

Realisation Account

		Rs.		Rs.
To Sundry Assets			By Sundry Creditors	30,000
Furniture	5,000		By Reserve For Bad Debts	300
Debtors	3,000		By A's Capital A/c	4,500
Building	44,000		By Cash A/c	50,000

Bills Receivable	8,000	60,000	By Cash A/c (Investments)		200
To B's Capital A/c			By Capital A/c		
(Sundry Creditors)		1,000	A	2,500	
To Cash A/c (Sudry Creditors)		1,800	B	2,500	5,000
To Cash A/c (Expenses)		200			
		63,000			63,000

NOTES

उपर्युक्त वसूली खाते का अध्ययन करके यह बतलाइए कि आपको इस खाते से क्या सूचनायें मिलती हैं।

Solution. प्रश्न में दिए गए वसूली खाते मे यह ज्ञात होता है कि:-

(1) विघटन के समय फर्म की विभिन्न सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य 60,000 रु. था। इनका विवरण अग्रानुसार है- फर्नीचर 5,000 रु.; देनदार 3,000 रु.; भवन 44,000 रु., तथा प्राप्य बिल 8,000 रु.।

(2) इन सम्पत्तियों में से फर्नीचर अ 4,500 रु. के मूल्य पर ले लिया तथा शेष सम्पत्तियाँ 50,000 रु. मे बेची गईं।

(3) विघटन के समय फर्म की विनियोग अपलिखित सम्पत्ति (Unrecorded asset) के रूप में मिले जिन्हें 200 रु. में बेचा गया।

(4) फर्म के तृतीय पक्षों के प्रति दायित्व तथा सम्पत्तियों के विरूद्ध प्रावधान थे: विविध लेनदार 3,000 रु. अशोध्य ऋण संचय 300 रु.।

(5) लेनदारों में से 1,000 रु. के लेनदारो को भुगतान करने का दायित्व ब ने ले लिया। शेष 2,000 रु. के लेनदारों को 1,800 रु. (अर्थात् 20% बट्टे पर) पूर्ण भुगतान मे दिए गए।

(6) विघटन के व्यय 200 रु. चुकाये गए।

(7) विघटन पर 5,000 रु. की हानि हुई जिसे दोनों साझेदारो मे बराबर-बराबर बाँटा गया अर्थात् उनका लाभालाभ विभाजन अनुपात 1:1 रहा होगा।

Problem 6. X, Y तथा Z एक फर्म में साझेदार है जो 5:3:2 के अनुपात मे लाभ-हानि विभाजित करते हैं। 31 दिसम्बर 2007 को जब उन्होंने फर्म का विघटन करने का निश्चय किया, उनका चिट्ठा अग्रानुसार था

दायित्व	रु.	सम्पत्तियाँ	रु.
विविध लेनदार (Creditors)	1,460	बैंक (Bank)	218
देय बिल (Bills Payable)	2,540	विविध देनदार (Debtors)	2,550
Y का ऋण (Y's Loan)	2,000	स्टॉक (Stock)	1,912
पूँजी (Capital)		मशीनरी (Machinery)	1,500
X	2,500	विनियोग (Investments)	1,000
Y	1,500	फ्रीहोल्ड प्रॉपर्टी (Freehold Property)	4,000
Z	1,000		
चालू खाते (Current Accounts)			
X	120		
X	73		
X	87		
	11,280		11,280

X ने फ्रीहोल्ड प्रॉपर्टी 3,500 रु. मे तथा Y ने विनियोग 800 रु. मे ले लिये। अन्य सम्पत्तियों मे अग्रानुसार राशियाँ प्राप्त हुई: देनदार 3,020 रु. पुराने अशोध्य ऋण (Old Bad Debts) 300 रु., स्टॉक 1,560 रु. तथा मशीनरी से 1,182 रु.

भुनाए गए बिलों के सम्बन्ध मे सम्भाव्य दायित्व (Contingent liability in respect of bills discounted) 3,700 रु का था। 500 रु. के एक बिल का स्वीकर्ता (Acceptor) दिवालिया हो गया तथा उससे केवल रुपये पे 50 पैसे की दर से भुगतान मिला। भुनाए गए बिल जो अनादरित हो गए है, उनके सम्बन्ध में फर्म का दायित्व

(Liabilites on account of bill discounted dishonoured) 500 रु. था जिसे अभी तक पुस्तकों में रिकार्ड नहीं किया गया है।

फर्म की पुस्तकों में विघटन सम्बन्धी आवश्यक खाते बनाइये।

Solution. टिप्पणियाँ -(1) पुराने अशोध्य ऋण की वसूली नई सम्पत्ति के सृजन के रूप मे फर्म को लाभ है। जिसे वसूली खाते में क्रेडिट करेंगे।

NOTES

(2) 500 रु. के स्वीकर्ता से प्राप्त राशि $\left(\frac{500 \times 50}{100}\right) = 250$ रु. वसूली खाते में क्रेडिट किया जाएगा।

(3) भुनाए गये अनादृत बिल 500 रु. का भुगतान करना होगा जिसे वसूली खाते मे डेबिट किया जाएगा।

Realisation Account

		Rs.			Rs.
To Debtors A/c		2,650	By Sundry Creditors		1,460
To Stock A/c		1,912	By Bills Payable A/c		2,540
To Machinery A/c		1,500	By X's Current A/c		
To Investment A/c		1,000	(Property)		3,500
To Freehold Property A/c		4,000			
To Bank A/c (Dishonoured Bill)		5,00	By Y's Current A/c		
			(Investment)		800
To Bank A/c			By Bank A/c		
Sundry Creditors	1,460		Debtors	3,020	
B/P	2,540	4,000	Bad debts	300	
			Stock	1,560	
			Machinery	1,182	6,062
			By Bank A/c (Insolvent acceptor)		250
			By Current A/c		
			X	475	
			Y	285	
			Z	190	950
		15,562			15,562

Y's Loan A/c

To Bank A/c	2,000	By Balance b/d	2,000
	2,000		2,000

Current Accounts

	X	Y	Z		X	Y	Z
	Rs.	Rs	Rs.		Rs.	Rs	Rs.
To Realisation A/c	3,500	800	.	By Balance b/d	120	73	87
To Realisation A/c	475	285	190	By Capital A/c	3,855	1,012	103
	3,975	1,085	190		3,975	1,085	190

Capital Account

	X	Y	Z		X	Y	Z
	Rs	Rs	Rs		Rs.	Rs	Rs
To Current A/c	3,855	1,012	103	By Balance b/d	2,500	1,500	1,000
To Bank A/c		488	897	By Bank A/c	1,355	.....	.....
	3,855	1,500	1,000		3,855	1,500	1,000

NOTES

Bank A/c

To Balance b/d	218	By Realisation A/c	500
To Realisation A/c	6,062	By Realisation A/c	4,000
To Realisation A/c	250	By Y's Loan A/c	2,000
To X's Capital A/c	1,355	By Capital Accounts	
		Y	488
		Z	897
	7,885		7,885

Problem 7. On Ist January 2007 A,B and C commenced business in partnership sharing profits and losses in the proportion on 1/2, 1/3 and 1/6 redspectively. They paid into their Bank account as their Capital Rs. 40,000 being Rs. 20,000 by A, Rs. 15,000 by B and Rs. 5,000 by C. During the year each partner withdrew Rs. 2,000 and on 31st December, 2007, they dissolved their partnership, A taking up Stock at an agreed Valuation of Rs. 7,000, B taking up Furniture at Rs. 1,000 and C taking up Debtors at Rs. 5,000. After paying off their Creditors showing the distribution of cash at the bank and of the further cash brought in by any partner or partners as the case required.

अ, ब तथा स ने 1 जनवरी 2007 को क्रमशः 1/2, 1/3 तथा 1/6 अनुपात में लाभ-हानि विभाजन करते हुए साझेदारी व्यवसाय प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने बैंक में पूँजी के रूप में 40,000 रु. जमा किए जिसमें अ का 20,000 रु., ब का 15,000 रु.तथा स का 5,000 रु. अंश था। वर्ष में प्रत्येक साझेदार ने 2,000 रु आहरण किए। 31 दिसम्बर, 2007 को उन्होंने साझेदारी का विघटन कर दिया। अ ने स्टॉक 7,000 रु. ब ने फर्नीचर 10,000 रु. तथा स ने देनदार 5,000 रु मूल्य पर लेना तय किया। लेनदारों का भुगतान करने के बाद उनके पास 3,000 रु. बैंकस्थ रोकड़ थी।

आवश्यक खाते बनाकर बैंकस्थ रोकड़ तथा साझेदारों द्वारा लाई जाने वाली रोकड़ का विवरण बनाइए।

Solution. टिप्पणी-

		अ	ब	स
(1)	31-12-2007 **को पूँजी** - 1-1-2007 की पूँजी	20,000	15,000	5,000
	(-) आहरण	2,000	2,000	2,000
		18,000	13,000	3,000

(2) 31-12-07 को सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य प्रश्न में नहीं दिया गया है। इस तिथि को पूँजी के अतिरिक्त अन्य कोई दायित्व नहीं है। (लेनदारों का भुगतान किया जा चुका है।) अतः कुल सम्पत्तियों के बराबर अर्थात् 34,000 रु की होंगी। जिसमें 3,000 रु. की बैंक में रोकड़ सम्मिलित है। अतः स्टॉक, फर्नीचर तथा देनदारों का पुस्तक मूल्य (34,000-3000)=31,000 रु हुआ।

Realisation Account

	Rs.		Rs.
To Various Assets	31,000	By A's Capital A/c (Stock)	7,000
		By B's Capital A/c (Furniture)	1,000
		By B's Capital A/c (Debtors)	5,000
		By Capital A/c (Loss)	
		A	9,000
		B	6,000
		C	3,000
	31,000		31,000

Cash Account

Rs.		Rs.	
To Balance b/d	3,000	By A's Capital A/c	2,000
To C's Capital A/c	5,000	By B's Capital A/c	6,000
	8,000		8,000

Capital Account

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs	Rs.		Rs	Rs.	Rs.
To Drawing A/c	2,000	2,000	2,000	By Balance b/d	20,000	15,000	5,000
To Realisation A/c	7,000	1,000	5,000	By Cash A/c	....	...	5,000
To Realisation A/c	9,000	6,000	3,000				
To Cash	2,000	6,000	.....				
	20,000	15,000	10,000		20,000	15,000	10,000

Problem 8. अ, ब, स का 31 दिसम्बर 2007 को चिट्ठा निम्नलिखित है:-

	Rs		Rs.
Creditors	7,000	Cash	400
Loan on Mortgage	1,800	Debtors	9,000
Capital: A	5,000	Stock	3,000
B	4,000	Buildings	4,000
		Capital	1,400
	17,800		17,800

उक्त तिथि को फर्म के विघटन का निश्चय किया गया। वे 3 : 2 : 1 अनुपात में लाभालाभ का विभाजन करते है। भवन से 3,000 रु., स्टॉक से 2,400 रु. प्राप्त हुए। देनदार 1,450 रु. के बट्टे पर वसूल हुए। लेनदारों को भुगतान 250 रु. बट्टा काटकर दिया गया। ऋण का भुगतान उसके मूल्य पर कर दिया गया। वसूली व्यय 350 रु. हुए: स दिवालिया हो गया उसकी निजी सम्पत्ति से एक रुपये में केवल 50 पैसे की दर से भुगतान मिला।

वसूली खाता, रोकड़ खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते **गार्नर बनाम मर्रे के अनुसार बनाइए।**

Solution. टिप्पणी - (1) स के दिवालिया होने से उत्पन्न हानि 1,925 रु. है, जिसमें से (1,925 – 2) = 963 रु. स से प्राप्त हो सके शेष 962 रु. की हानि अ तथा ब अपने पूँजी अनुपात में (5 : 4) में क्रमशः 534 रु. तथा 428 रु. देकर पूरा करेंगे।

Realisation Account

Rs.			Rs.		
To Debtors A/c		9,000	By Creditors		7,000
To Stock A/c		3,000	By Loan A/c		1,800
To Building A/c		4,000	By Cash A/c		
To Cash A/c (Creditors)			Building	3,000	
(7,000 - 250)	6,750		Stock	2,400	
Loan	1,800	8,550	Debtors		
			(9,000 – 1,450)	7,550	12,950
To Cash A/c (Expenses)		350	By Capital A/c (Furniture)		
			A	1,575	
			B	1,050	
			C	525	3,150
		24,900			24,900

NOTES

Capital Account

	X	Y	Z		X	Y	Z
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	....	...	1,400	By Balance b/d	5,000	4,000	....
To Realisation A/c	1,575	1,050	525	By Cash A/c	1,575	1,050	.....
To C's Capital A/c	534	428	....	By A's Current A/c	......	......	963
To Cash A/c	4,466	3,572	......	B's Current A/c	.....	.....	534
				By Cash A/c	......	.....	428
	6,575	5,050	1,925		6,575	5,050	1,925

Cash A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	400	By Realisation A/c	8,550
To Realisation A/c	12,950	By Realisation A/c	350
To A's Capital A/c	1,575	By A's Capital A/c	4,466
To B's Capital A/c	1,050	By B's Capital A/c	3,572
To C's Capital A/c	963		
	16,938		16,938

Problem 9. अ, ब तथा स एक फर्म में क्रमशः 4:3:3 के अनुपात में साझेदार हैं। उन्होंने फर्म के समापन का निश्चय किया तथा ब को सम्पत्तियों की वसूली तथा प्राप्त राशि का वितरण करने हेतु नियुक्त किया। ब को पारिश्रमिक के रूप में में स्टॉक तथा देनदारों से वसूली 5% मिलेगा। वसूली के व्यय ब स्वयं वहन करेगा। विघटन की तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्नानुसार था:-

दायित्व	**रु.**	**सम्पत्तियाँ**		**रु**
लेनदार	59,000	बैंकस्थ रोकड़		1,500
पूँजी खाते:		देनदार	45,000	
अ	30,000	(-) सचय	2,500	43,000
ब	20,000	स्टॉक		60,000
		स का पूँजी खाता		4,500
	1,09,000			1,09,000

ब ने निम्नानुसार वसूली की।

	रु
देनदार	35,000
स्टॉक	45,000
ख्याति	2,000

लेनदारों को 57,500 रु. पूर्ण भुगतान में दिए तथा अदत्त लेनदारों को 500 रु. दिए। वसूली व्यय 600 रु. आए जो ब द्वारा वहन किए गए। स आवश्यक राशि खाता लाता है।

वसूली खाता, पूँजी खाता तथा बैंक का खाता बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ - (1) ब को स्टॉक तथा देनदारों की वसूली (45,000+35,000)=80,000 रु. पर 5% कमीशन = 4,000 रु. वसूली खाते को डेबिट तथा ब के पूँजी खाते क्रेडिट होगी।

(2) चूँकि वसूली व्यय ब वहन करेगा, अतः फर्म की पुस्तकों में इनका कोई लेखा नहीं होगा।

NOTES

Realisation A/c

To Debtors A/c		45,500	By Reserve on Debtors A/c		2,500
To Stock A/c		60,000	By Creditors A/c		59,000
To Bank A/c			By Bank A/c		82,000
Creditors	57,500		By Capital A/c		
Outstanding Crs.	500	58,000	A	9,600	
To B's Capital A/c			B	7,200	
(Commission)		4,000	C	7,200	24,000
		1,67,500			1,67,500

Capital Account

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	....	....	4,500	By Balance b/d	30,000	20,000	....
To Realisation A/c	9,600	7,200	7,200	By Realisation A/c	.....	4,000	....
To Bank A/c	20,400	16,800	....	By Bank A/c	....	....	11,700
	30,000	24,000	11,700		30,000	24,000	11,700

Bank A/c

	Rs.		Rs
To Balance b/d	1,500	By Realisation A/c	58,000
To Realisation A/c	82,000	By A's Capital A/c	20,400
To C's Capital A/c	11,700	By B's Capital A/c	16,800
	95,200		95,200

Problem 10. - हरि, नारायण व सोहन साझेदार थे, जो क्रमशः 2 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ व हानि बांटते है। साझेदारी का विघटन करने तथा सम्पत्तियों की वसूली होने के पश्चात् उनका स्थिति-विवरण निम्न था।

	रु		रु
पूंजी लेखे : हरी	17,000	रोकड़	6,500
नारायण	3,000	वसूली पर हानि	15,000
सोहन	1,500		
	21,500		21,500

प्रत्येक साझेदार को क्या मिलेगा बताइए, यह मानते हुए कि सोहन दिवालिया हो गया और उससे केवल 500 रु. प्राप्त हुए।

Solution. **टिप्पणी**- (भारतीय साझेदारी अधिनियम के अनुसार)

(1) सोहन की हानि हरि तथा नारायण 2 : 2 के अनुपात में पूरा करेंगे। यदि यह प्रश्न गार्नर बनाम मर्रे नियम के अनुसार हल किया जाए तो नारायण को हानि पूरा करने को नहीं कहा जाएगा क्योंकि उसके पूंजी खाते में डेबिट शेष है।

Capital Account

	H	N	S		H	N	S
	Rs	Rs	Rs		Rs	Rs	Rs
To Realisation A/c	6,000	6,000	3,000	By Balance b/d	17,000	3,000	1,500
To Sohan's Capital				By Cash A/c	..		500
A/c	500	500	..	By Hari's Capital A/c	....	..	500
To Cash A/c	10,500		..	By Narayan's Capital A/c.		....	500
				By Cash A/c	..	3,500	
	17,000	6,500	3,000		17,000	6,500	3,000

NOTES

Cash A/c

To Balance b/d	6,500	By Hari's Capital A/c	10,500
To Narayan's Capital A/c	3,500		
To Sohan's Capital A/c	500		
	10,500		10,500

Problem 11. X तथा Y जो 2/3 और 1/3 के अनुपात में लाभालाभ विभाजित करते है साझेदारी का विघटन करने पर सहमत हुए। उक्त तिथि को उनका चिट्ठा निम्नानुसार था:

X and Y sharing profits and losses in the proportion of 2/3 and 1/3 respectively agreed to dissolve their partnership on account of their inability to meet their debts. Their Balance Sheet on the date of dissolution was as under :-

	Rs.		Rs.
Capital X	11,000	Machinery	20,000
Y	5,200	Furniture	2,000
Bank overdraft	18,000	Stock	15,000
Creditors	21,000	Cash-in-hand	600
		Sundry Debtors	8,000
		Profit & Loss A/c	9,600
	55,200		55,200

The sale proceeds of partnership assets and realisation of Book Debts amounted to Rs. 30,000. The partners sold off their private property in order to pay the Creditors of the firm, the estate of X realising Rs. 4,000 and that of Y Rs. 2,000. Both the partners eventually became insolvent. You are required to close the books of the firm showing various ledger accounts.

साझेदारी की सम्पत्तियों की बिक्री तथा देनदारों से वसूली से 30,000 रु. प्राप्त हुए। साझेदारों ने फर्म के लेनदारों का भुगतान करने के लिए अपनी निजी सम्पत्तियों को भी बेच दिया। X की सम्पत्तियों से 4,000 रु. तथा Y की सम्पत्तियां से 2,000 रु. प्राप्त हुए। दोनों साझेदार दिवालिया हो गए। विभिन्न खाते बनाकर फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए।

Solution टिप्पणियाँ (1) रोकड़ का आरम्भिक शेष + सम्पत्तियों से प्राप्त राशि मिलाकर 36,600 रु. उपलब्ध हैं जबकि देयताएँ 39,000 रु. की है इन्हें आनुपातिक आधार पर भुगतान कर दिया जायेगा बैंक ओवरड्राफ्ट $\left(\frac{36,000}{39,000} \times 18,000\right) = 16,892$ रु. लेनदार $\left(\frac{36,000}{39,000} \times 21,000\right) = 19,708$ रु. इन खातों के शेष लाभ-हानि खाते में ले जाएँगे।

Realisation A/c

	Rs.			Rs.
To Machinery A/c	20,000	By Cash A/c (Sale)		30,000
To Furniture A/c	2,000	By Capital A/c		
To Stock A/c	15,000	X	10,000	
To Debtors A/c	8,000	Y	5,000	15,000
	45,000			45,000

Bank A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	16,892	By Balance b/d	18,000
To Profit & Loss A/c	1,108		
	18,000		18,000

Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	19,708	By Balance b/d	21,000
To Profit & Loss A/c	1,292		
	21,000		21,000

Cash A/c

To Balance b/d	600	By Bank A/c	16,892
To Realisation A/c	30,000	By Creditors A/c	19,708
To X's Capital A/c	4,000		
To Y's Capital A/c	2,000		
	36,000		36,000

Profit & Loss A/c

To Balance b/d	9,600	By Bank A/c	1,108
To Realisation A/c	30,000	By Creditors A/c	1,292
		By Capital A/c	
		X	5,000
		Y	2,000
	9,600		9,600

Capital A/c

	X	Y		X	Y
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Realisation A/c	10,000	5,000	By Balance b/d	11,000	5,200
To Profit & Loss A/c	5,000	2,200	By Cash A/c	4,000	2,00
	15,000	7,200		15,000	7,200

Problem 12. A, B तथा C जो बराबर अनुपात मे लाभालाभ विभाजित करते है 30 दिसम्बर 2007 को अपनी फर्म का विघटन करते हैं। उक्त तिथि को उनका चिट्ठा निम्नानुसार था

दायित्व	रु.	सम्पत्तियाँ	रु.
पूँजी खाते अ	10,000	विविध सम्पत्तियाँ	31,000
ब	2,500	बैंक	6,500
स	5,000		
सामान्य संचय		15,000	
लेनदार	5,000		
	37,500		37,500

बैंक से हुए समझौते के अनुसार 2,000 तुरन्त निकाले जा सकते है तथा शेष राशि दिसम्बर, 2007 के बाद। यह निश्चित किया गया कि 500 रु. अनुमानित विघटन व्ययों के रखने के पश्चात् जैसे-जैसे राशि उपलब्ध होती जाए साझेदारो मे वितरित की जाती रहे। सम्पत्तियों की वसूली अग्रानुसार हुई

	रु.
31 अक्टूबर (प्रथम)	7,500
15 नवम्बर (द्वितीय)	19,000
31 दिसम्बर (अन्तिम)	11,000

NOTES

NOTES

विघटन के वास्तविक व्यय 350 रु. हुए। साझेदारों में रोकड़ का वितरण कैसे किया जाएगा।

Solution टिप्पणियाँ -(1) सर्वप्रथम सामान्य संचय का वितरण करके पूँजी ज्ञात करें।

	A	B	C
पूँजी (रु.)	10,000	2,500	5,000
(+) सामान्य संचय	5,000	5,000	5,000
(रु.)	15,000	7,500	10,000

(2) पूँजी आधिक्य का विवरण (Statement of Surplus Capital)

	A	B	C
वर्तमान पूँजी (रु.)	15,000	7,500	10,000
लाभालाभ अनुपात	1	1	1
ब को आधार मानकर लाभालाभ अनुपात में पूँजी (रु.)	7,500	7,500	7,500
आधिक्य (Excess) रु	7,500	7,500	2,500
स को आधार मानकर अ तथा स के लाभालाभ अनुपात में पूँजी (रु.)	2,500		2,500
आधिक्य (Excess)	5,000		....

(3) विघटन के समय 2,000 रु. बैंक से निकाले जायेंगे जिसमें से 500 रु. विघटन व्ययों के लिए रखे जाएँगे। अत: 1,500 रु. रोकड़ उपलब्ध होगी जिसका भुगतान लेनदारों को कर दिया जाएगा।

(4) 31 अक्टूबर को 7,500 रु. उपलब्ध है जिसमें से 3,500 रु. लेनदारों को देकर उनका हिसाब चुकता कर दिया जाएगा। शेष राशि 4,000 रु. अ को दी जाएगी क्योंकि उसका पूँजी आधिक्य सबसे अधिक है। अ की शेष राशि 6,000 रु.।

(5) नवम्बर को उपलब्ध राशि 19,000 रु. में से सर्वप्रथम 1,000 रु. अ को दे दी जाएगी ताकि अ तथा स की पूँजी उनके लाभालाभ अनुपात (1:1) में हो जावे। इसके पश्चात् 5,000 रु. अ तथा स में (1:1) अनुपात में बांट दी जाएगी जिसका परिणाम यह होगा कि अ, ब तथा स तीनों की पूँजी उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात (1:1) में हो जाएँगी। शेष 13,000 रु. अ, ब तथा स. में 1 : 1 : 1 के अनुपात में बांटी जाएगी।

(6) आगे समस्त वितरण तीनों साझेदारों में उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात में किए जाते रहेंगे।

(7) 31 दिसम्बर को 11,000 रु. सम्पत्तियों से प्राप्त होंगे तथा विघटन व्ययों के लिए रखे गए 500 रु. में से चूँकि 350 रु. व्यय हुए, अत: 150 रु. शेष बचेगा। कुल उपलब्ध राशि 11,150 रु.।

साझेदारों को प्राप्त होने वाली कुल राशि उनकी पूँजी से अधिक है जो विघटन पर साझेदारों का लाभालाभ है। प्रत्येक साझेदार को 2,050 रु. का लाभ होता है जो उनके लाभालाभ अनुपात (1:1) में है।

साझेदारों में रोकड़ का वितरण

(Distribution of Cash amongst Partners)

	लेनदार रु.	अ रु.	ब रु.	स रु.
समायोजित पूँजी	5,000	15,000	7,500	10,000
(1) बैंक शेष से भुगतान	1,500	..		
	3,500	15,000	7,500	10,000
(2) 31 अक्टूबर को उपलब्ध 7,500 रु. में से				

लेनदारों को	3,500		
शेष अ को	4,000	......	......
......	11,000	7,500	10,000
(3) 15 नवम्बर को उपलब्ध 19,000 रु	1,000	.....	....
में से प्रथम 1000 रु.	10,000	7,500	10,000
अगले 5,000 रु.	2,500	.....	2,500
	7,500	7,500	7,500
शेष 13,000 रु.	4,334	4,333	4,333
(4) 1 दिसम्बर को बैंक से निकाली गई राशि 4,500 रु	1,500	1,500	1,500
(5) 31 दिसम्बर को उपलब्ध राशि 11,000 रु. + 150 रु.			
= 11,150 रु.	3,716	3,717	3,717
साझेदारों को वितरित कुल राशि			
अ: 4,000+1,000+4,334+1,500+3,716	17,050		
ब 4,333+1,500+3,717		9,550	
स 4,500+3,333+1,500+3,717			12,050
साझेदारों को लाभ (प्राप्त राशि - पूँजी)	2,050	2,050	2,050

अभ्यास के लिए प्रश्न
(ASSIGNMENT MATERIAL)

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theortical Questions) -

1. साझेदारी के विघटन मे क्या आशय है? साझेदारी के विघटन तथा फर्म के विघटन में क्या अन्तर है।?
2. साझेदारी फर्म के विघटन पर हिसाब के निपटारे के सम्बन्ध मे भारतीय साझेदारी अधिनियम के प्रावधान क्या है?
3. विघटन पर फर्म की पुस्तकों में की जाने वाली लेखांकन-क्रियाओं को समझाइए।
4. वसूली खाता किसे कहते है? यह क्यों तथा कैसे बनाया जाता है?
5. फर्म के विघटन पर दिवालिया साझेदार की हानि पूरा करने के सम्बन्ध में भारतीय साझेदारी अधिनियम के प्रावधान क्या है? 'गार्नर बनाम मरें' नियम से ये किस प्रकार भिन्न है?
6. संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए - (क) 'गार्नर बनाम मरें', (ख) भागशः वितरण एवं उनकी विधियां, (ग) सभी साझेदारों के दिवालिया हो जाने पर विघटन सम्बन्धी व्यवहारों का लेखांकन।

संख्यात्मक प्रश्न
(NUMERICAL QUESTIONS)

Q.1. एक फर्म का चिट्ठा 31 दिसम्बर को निम्नानुसार है -

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
A's Capital	5,000	Freehold Property	8,000
B's Capital	4,000	Investments	2,000
C's Capital	3,000	Book Debts	1,000
Trade Creditors	2,000	Cash	3,000
	14,000		14,000

साझेदारों के लाभ बराबर-बराबर बांटे जाते है। साझेदारी का विघटन 31 दिसम्बर को कर दिया गया। लेनदारों को भुगतान 5% बट्टे पर किया गया। अ के फ्रीहोल्ड प्रोपर्टी 9,000 रु में ब ने विनियोग 500 रु में तथा पुस्तकीय ऋणों को 600 रु में C ने ले लिया। साझेदारी खाते बनाइए।

(Ans. वसूली का विभाजन क्रमशः 267 रु तथा 267 तथा 266 रु., लेनदारों को भुगतान 1,900 रु.)

NOTES

Q.2 अ और ब जो 2:1 के अनुपात में लाभ-हानि बांटते हैं, अपनी फर्म का विघटन करने का निर्णय लेते है। विघटन की तिथि को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था:

		रु.		रु.
कुल लेनदार Creditors		14,500	बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	640
पूँजी (Capital):			स्टॉक (Stock)	4,740
(A) अ	4,000		मशीन (Machinery)	13,580
(B) ब	3,000	7,000	देनदार (Debtors)	5,540
		21,500		21,400

विघटन व्यय 440 रु. है। बैंक में रोकड़ के अतिरिक्त अन्य सम्पत्तियों से 19,500 रु. वसूल हुए। लेनदारों को पूरा भुगतान कर दिया गया था।

फर्म की पुस्तको को बन्द करने के लिए प्रविष्टियाँ कीजिए तथा आवश्यक खाते भी बनाइए।

(Ans. वसूली पर हानि 1,800 रु.; अन्तिम भुगतान अ तथा ब को क्रमशः 2,800 रु. तथा 2,400 रु.)

(**संकेत:** वसूली की हानि का विभाजन अ. 1200 रु. ब 600 रु.)

Q.3 रवि व शशि ने, जो समान साझेदार हैं, 31 दिसम्बर 2007 को साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया, जबकि उनका चिट्ठा निम्न था:

	रु			रु.	
लेनदार		2,000	बैंक शेष		782
रवि का ऋण	1,000		देनदार	2,724	
उसका ब्याज	50	1,050	घटाये डूबंत ऋण आयोजन	250	2,474
पूंजी : रवि		4,000	स्कन्ध		5,211
शशि		3,000	कल		1,583
		10,050			10,050

लेनदारों से 1,580 रुपये में समझौता हुआ। कल 1,300 रुपये में बेची गई। स्कन्ध का एक भाग 1,000 रुपये में रवि द्वारा लिया गया तथा शेष 4,000 रु. में बेचा गया देनदारों से 2,500 रुपये वसूल हुये।

फर्म की पुस्तकें बन्द करो।

(Ans. वसूली पर हानि 318 रु.; अन्तिम भुगतान रवि तथा शशि प्रत्येक 2,821 रु., प्राप्त करेगा।)

Q. 4. निम्नलिखित चिट्ठा अ तथा ब का है जो लाभ-हानि बराबर-बराबर बांटते हैं:

	Rs		Rs.
Capital : A	10,000	Machinery	9,000
B	7,000	Plant	10,000
Creditors	3,000	Debtors	2,500
A's Loan	4,000	Bank	5,500
	24,000		24,000

(Ans. वसूली पर हानि 3,500 रु., अन्तिम भुगतान अ तथा ब को क्रमशः 8,250 रु., तथा 5,250 रु. बैंक खाते का योग 20,700 रु.)

Q. 5 सुख तथा दुःख एक फर्म में साझेदार है तथा 2 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते है। 31 दिसम्बर, 2007 को जब उन्होंने फर्म के विघटन का निश्चय किया। उनका चिट्ठा निम्नानुसार था:

दायित्व	रु.	सम्पत्तियाँ	रु.
लेनदार (Creditors)	15,000	मशीनरी (Machinery)	25,000
संचय (Reserve)	10,000	फर्नीचर (Furniture)	4,500
पूंजी (Capital)		स्टॉक (Stock)	10,000
सुख	22,000	देनदार (Debtors)	20,000

दुःख	22,000	बैंक (Bank)	10,000
	69,000		69,000

वसूली (Realisation) के परिणाम निम्नानुसार हुए:-

(क) सुख ने मशीनरी तथा फर्नीचर पुस्तक मूल्य से 10% कम पर ले लिए।

(ख) दुःख ने स्टॉक तथा ख्याति 17,500 रु. में ली।

(ग) देनदारों से 18,500 रु. वसूल हुए।

(घ) लेनदारों को 5% बट्टा काटकर भुगतान कर दिया गया।

निकटतम रुपयों तक गणना करते हुए, वसूली खाता, बैंक खाता तथा पूँजी खाते बनाइए।

(Ans. वसूली से लाभ 3,850 रु.; अन्तिम भुगतान सुखः 5,134 रु.; दुख 9,116 रु.; रोकड़ खाते का योग 28,500 रु.)

Q. 6 अ, ब तथा स 7:2:1 के अनुपात मे एक फर्म मे साझेदार है। 31 दिसम्बर 2007 को उनका चिट्ठा निम्नानुसार था:-

दायित्व	**रु.**	**सम्पत्तियां**	**रु.**
लेनदार (Creditors)	2,142	भवन (Buildings)	4,000
प्लाण्ट पर ह्रास के लिए रिजर्व		प्लाण्ट (Plant)	6,000
(Reserve for Depreciation on Plant)	4,000	स्टॉक (Stock)	2,492
पूँजी खाते: (Capital)			
अ (A)	2,582	एक्स कं. मे अंश -60	480
ब (B)	1,720	वाई कम्पनी मे अश- 100	2,000
स (C)	16,124	देनदार (Debtors)	1,748
		पैटेण्ट (Patent's)	7,606
		हस्तस्थ रोकड़ (Cash in hand)	242
		ख्याति (Goodwill)	2,000
	26,568		26,568

31 दिसम्बर 2007 को फर्म का समापन निम्नलिखित शर्तों पर करने का निश्चय किया गया.

(क) भवन अ 6,300 रु. मे लेगा।

(ख) ब, जो व्यापार चलाएगा, ख्याति स्टॉक तथा देनदारों को पुस्तक मूल्य पर, पेटेण्ट 6,300 रु. मे तथा प्लाण्ट 1,500 रु. मे लेगा। वह लेनदारों का भुगतान भी करेगा।

(ग) स एक्स कम्पनी के अश 5 रु. प्रति अश की दर से लेगा।

(घ) वाई कम्पनी के अश लाभालाभ विभाजन अनुपात मे बाट लिए जायेंगे।

उपर्युक्त व्यवहारो का लेखा करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

(Ans. वसूली पर लाभ 514 रु. अ तथा ब क्रमश 4,758.20 रु. तथा ब 10,675.20 रु. लाएंगे तथा स को 15,674.40 रु. भुगतान किया जाएगा। रोकड़ खाते का योग 15,675.40 रु.।)

Q. 7. अ, ब तथा स एक फर्म मे बराबर के साझेदार है। 31 दिसम्बर 2007 को उनका चिट्ठा निम्नानुसार था

दायित्व	रु.	सम्पत्तियां	रु.
लेनदार (Creditors)	13,000	रोकड़ (Cash)	1,500
ब का ऋण (B's Loan)	2,500	देनदार (Debtors)	12,500

NOTES

देय बिल (Bills Payable)	500	स्टॉक (Stock)	29,000
रिजर्व (Reserve)	3,000	मशीनरी (Machinery)	6,000
पूँजी खाते (Capital A/cs)			
अ (A)	20,000	चालू खाता (Current A/cs)	
ब (B)	10,000	स (C)	3,000
स (C)	10,000	ख्याति खाता (Goodwill)	10,000
चालू खाते (Current Account)			
अ (A)	1,500		
ब (B)	1,500		
	62,000		62,000

उन्होने निम्नलिखित शर्तों के अनुसार साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया:

(1) लेनदारों का भुगतान अ करेगा

(2) ब स्टॉक 25,000 रु. में लेगा।

(3) स ख्याति 15,000 रु. में लेगा

(4) देय बिलों का भुगतान 10 रु. बट्टे पर कर दिया जाएगा।

(5) अन्य सम्पत्तियों को नीलाम करके 15,000 रु.

(6) ब के ऋण का भुगतान कर दिया गया। प्राप्त हुए। समापन व्यय 120 रु. हुए।

वसूली खाता, रोकड़ खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए।

(**Ans.** वसूली की हानि 2,610 रु. अ,ब तथा स प्रत्येक को डेबिट 870 रु., अ को भुगतान 34,630 रु. ब तथा स से प्राप्त क्रमशः 13,370 रु. 7,870 रु., रोकड़ खाते का योग 37,740 रु.)

10.15 सारांश

- साझेदारी अधिनियम की धारा ३९ के अनुसार फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी समाप्त हो जाने को फर्म का विघटन या समापन कहते है।
- फर्म के विघटन पर हिसाब का निपटारा साझेदारी संलेख की शर्तों के अनुसार किया जाता है जैसे पूँजी की कमी को और समस्त हानियों को पूँजी तथा फर्म के लाभों से पूरा किया जाता है।
- किसी साझेदार के व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्रयोग उसके व्यक्तिगत दायित्वों को पूरा करने के बाद यदि कोई आधिक्य शेष बचता है तो उसका उपयोग फर्म के दायित्वों का भुगतान करने हेतु किया जाता है।
- फर्म के विघटन पर फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिये वसूली खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा बैंक खाता बनाया जाता है।
- सन 1903 में न्यायाधीश जोयस ने गार्नर बनाम मरे के मामले में निर्णय दिया कि सामान्य व्यापारिक हानि न होकर यह असामान्य पूंजी हानि है जिसे शोधक्षम साझेदारों को अपनी पूंजी अनुपात में वहन करना चाहिये। समस्त सम्पत्तियों की वसूली एक साथ न होकर धीरे-धीरे वसूल की जाती है। जैसे-जैसे सम्पत्तियों से वसूली होती जाती है तो सर्वप्रथम तृतीय पक्षों को देयता और उसके बाद साझेदारों के ऋण फिर साझेदार को उनके अधिकार अनुसार बाँट दिया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

10.16 शब्दावली

साझेदारी विघटन, फर्म का विघटन, दिवालिया, वसूली खाता, भागांश, वितरण।

●●●

अध्याय–11 फर्म का एकीकरण
(AMALGAMATION OF FIRMS)

NOTES

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 फर्म के एकीकरण से आशय

11.2 लेखांकन क्रियाऐं

11.1 पुरानी पुस्तकों का बन्द करना

11.2 नई फर्म की पुस्तके खोलना

11.3 साझेदारी व्यवसाय की बिक्री

11.3.1 एकांकी व्यापार को विक्रय

11.3.2 साझेदारी फर्म को विक्रय

11.3.3 कम्पनी को विक्रय

11.4 फर्म का कम्पनी में परिवर्तन

11.4.1 क्रय प्रतिफल की गणना

11.5 क्रियात्मक प्रश्न

11.6 सारांश

11.7 शब्दावली

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप इस योग्य हो सकें

- फर्म के एकीकरण के सम्बन्ध मे खाते बना सकेंगे।
- साझेदारी व्यवसाय की बिक्री के लिये आवश्यक खाते तैयार कर सकेंगे।
- क्रय प्रतिफल की गणना कर सकेंगे।

11.1 फर्म के एकीकरण से आशय

स्वतन्त्र रूप से एक जैसा व्यापार कर रही साझेदारी फर्में परस्पर प्रतियोगिता समाप्त करने अथवा बड़े पैमाने पर व्यापार की मितव्ययिताएं प्राप्त करने के उद्देश्य से आपस मे मिलकर एक हो जाने का निश्चय कर सकती है। **एक या अधिक फर्मो का मिलकर एक हो जाना एकीकरण कहलाता है।** इस स्थिति मे, मिलने वाली फर्मों का समापन हो जाता है, तथा एक नई फर्म बना ली जाती है।

11.2 लेखांकन क्रियाऐं (Accounting Treatment)

फर्मों के एकीकरण के सम्बन्ध मे आवश्यक लेखांकन क्रियाओं को दो भागों मे बांटा जा सकता है–

(1) पुरानी पुस्तके बन्द करना तथा

(2) नई फर्म की पुस्तके खोलना।

11.2.1 पुरानी फर्मों की पुस्तकें बन्द करना (To Close the Books of the Old Firms)

पुरानी फर्मों से हमारा आशय उन फर्मों से है जो मिलकर एक हो रही हैं। एकीकरण के अवसर पर ऐसी प्रत्येक फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु, प्रत्येक फर्म की पुस्तकों में निम्नानुसार क्रियायें की जाती हैं—

NOTES

(क) **फर्म की विभिन्न सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन** (Revaluation) कीजिए। इस हेतु प्रत्येक फर्म की पुस्तकों में पुनर्मूल्यांकन खाता खोलिए। अन्त में पुनर्मूल्यांकन खाते का शेष उस फर्म के साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभ-हानि विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करके पुनर्मूल्यांकन खाता बन्द कर दीजिए।

(ख) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन करके फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता खोलिए। इस हेतु ख्याति खाता डेबिट करके साझेदारों के पूँजी खाते उनके लाभ-हानि विभाजन अनुपात में क्रेडिट कीजिए। यदि फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता पहले से खुला हो, तो उसका पुनर्मूल्यांकन (क) में वर्णित रीति से कर लिया जायेगा।

(ग) पुरानी फर्म की पुस्तकों में यदि कोई सामान्य संचिति या अवितरित लाभ आदि हो, तो उसे साझेदारों के पूँजी खातों में लाभ-विभाजन अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जायेगा।

(घ) यदि नई फर्म पुरानी फर्म की किसी सम्पत्ति को नहीं लेती तो:

(i) या तो उस सम्पत्तियों को बेच दिया जायेगा। इस स्थिति में रोकड़ खाता डेबिट तथा सम्बन्धित सम्पत्ति का खाता क्रेडिट होगा।

(ii) उस सम्पत्ति को कोई साझेदार ले ले। इस स्थिति में सम्बन्धित साझेदार का पूँजी खाता डेबिट तथा सम्पत्ति खाता क्रेडिट होगा।

(iii) उस सम्पत्ति को विभिन्न साझेदारों में उनकी पूँजी के अनुपात में (जब तक इसके विपरीत निर्देश न हों) बाँटा जायेगा। कुछ लेखाकारों के अनुसार ऐसी सम्पत्तियों को लाभ-हानि विभाजन अनुपात में बाँटा जाना चाहिए।

(ङ) इसी प्रकार से यदि किसी दायित्व को नई फर्म नहीं लेती तो:

(i) या तो उस दायित्व का भुगतान कर दिया जाएगा। इस हेतु सम्बन्धित दायित्व खाता डेबिट तथा रोकड़ खाता क्रेडिट किया जाएगा।

अथवा

(ii) यदि उस दायित्व के भुगतान करने का भार कोई साझेदार अपने ऊपर ले लेता है तो दायित्व खाता डेबिट करके सम्बन्धित साझेदार का पूँजी खाता क्रेडिट कर दिया जाएगा।

(iii) या उस दायित्व को साझेदारों के पूँजी खाते में उनकी पूँजी के अनुपात से (कुछ लेखाकारों के अनुसार लाभ-हानि विभाजन अनुपात में) हस्तान्तरित कर दिया जाएगा।

(च) पुरानी फर्म की पुस्तकों में नई फर्म का खाता खोलकर:

(i) नई फर्म द्वारा ली गई समस्त सम्पत्तियां को नई फर्म को हस्तान्तरित किया जाएगा। इस हेतु उक्त सम्पत्तियों के कुल योग से नई फर्म का खाता डेबिट तथा प्रत्येक सम्पत्ति का खाता अलग-अलग क्रेडिट कर दिया जाएगा। **इस प्रविष्टि का परिणाम यह होगा कि पुरानी फर्म की पुस्तकों में समस्त खाते बन्द हो जायेंगे;**

(ii) इसी प्रकार नई फर्म द्वारा लिये गये प्रत्येक दायित्व का खाता अलग-अलग डेबिट करके उनकी कुल राशि से नई फर्म का खाता क्रेडिट कर दिया जाएगा। **इस प्रविष्टि का परिणाम यह होगा कि पुरानी फर्म की पुस्तकों में समस्त दायित्व खाते बन्द हो जायेंगे।**

(छ) उपर्युक्त समायोजन करने के पश्चात् साझेदारों के पूँजी खाते डेबिट करके नई फर्म खाता क्रेडिट कर दिया जाएगा। **इस प्रविष्टि का परिणाम यह होगा कि पुरानी फर्म की पुस्तकों में साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म के खाते बन्द हो जायेंगे।**

टिप्पणी– छात्र विशेष रूप से ध्यान दें कि (च) में वर्णित प्रविष्टि करने से पूर्व विभिन्न साझेदारों के पूँजी खातों के शेषों का योग तथा नई फर्म के खाते का शेष बराबर होने चाहिए। यदि ऐसा न हो तो इसका आशय यह होगा कि लेखांकन कार्य में कहीं कोई त्रुटि रह गई है।

उपर्युक्त वर्णित (च) तथा (छ) के अन्तर्गत तीन प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित दो प्रविष्टियाँ भी की जा सकती है–

NOTES

नई फर्म .... डे विभिन्न दायित्व खाते ....डे विभिन्न सम्पत्ति खातों से	New Firm's A/c .....Dr. various Liabilities Accounts .....Dr. To Various Assets Accounts
साझेदारों के पूँजी खाते ... डे नई फर्म के खाते से	Partner's Capital Accounts ....Dr. To New Firm's A/c

Illustration 1. राम तथा मोहन एवं श्याम तथा कृष्ण नामक दो फर्मों के चिट्ठे 31 दिसम्बर 2007 को निम्नानुसार थे–

		राम तथा मोहन	श्याम तथा कृष्ण		राम तथा मोहन	श्याम तथा कृष्ण
		रु.	रु.		रु.	रु.
विविध लेनदार		8,000	3,000	रोकड़	5,000	3,000
देय बिल		8,000	17,000	ख्याति	-------	2,000
संचय		10,000		भवन	15,000	20,000
पूँजी	राम	20,000		फर्नीचर	5,000	5,000
	मोहन	14,000		देनदार	15,000	22,000
	श्याम		20,000	विनियोग	20,000	8,000
	कृष्ण		20,000			
		60,000	60,000		60,000	60,000

राम तथा मोहन 3 : 2 एवं श्याम तथा कृष्ण 1 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते है। इन दोनों फर्मों ने एकीकरण करके एक नई फर्म **भगवान एण्ड सन्स** बनाने का निश्चय किया। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित शर्ते तय की गई–

(1) राम तथा मोहन की ख्याति 9,000 रु. तथा श्याम तथा कृष्ण की ख्याति 5,000 रु. की मानी जायेगी।

(2) श्याम तथा कृष्ण का फर्नीचर नई फर्म नहीं लेगी।

(3) राम तथा मोहन के भवन 18,000 रु. तथा देनदार 11,000 रु. के मूल्यांकित किये जायेंगे।

(4) श्याम तथा कृष्ण के भवन के मूल्य में 10% वृद्धि तथा देनदारों में 5% कमी की जायेगी।

(5) श्याम तथा कृष्ण के लेनदारों का भुगतान श्याम स्वयं करेगा।

(6) राम तथा मोहन के विनियोग नई फर्म लेगी। इन विनियोगों को पुरानी फर्म ने 25,000 रु. में बेचा।

उपर्युक्त समायोजनों को करने तथा पुरानी फर्मों की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए तथा राम तथा मोहन की पुस्तकों में समस्त खाते बनाकर यह बताइए कि इन प्रविष्टियों से विभिन्न खाते किस प्रकार बन्द होते है।

Solution. टिप्पणियाँ– (1) राम तथा मोहन की पुस्तकों में ख्याति खाता खोला जाएगा, जबकि श्याम तथा कृष्ण की पुस्तकों में इसका पुनर्मूल्यांकन कर लिया जाएगा।

(2) श्याम तथा कृष्ण के भवन के मूल्य में वृद्धि $\left(\frac{20,000 \times 10}{100}\right) = 2,000$ रु. तथा देनदारों कमी $\left(\frac{22,000 \times 5}{100}\right) = 1,100$ रु.

NOTES

(3) राम तथा मोहन के विनियोग 25,000 रु. में बिके इनके विक्रय पर होने वाला लाभ पुनर्मूल्यांकन खाते को क्रेडिट होगा।

(4) संचय साझेदारों के पूँजी खातों में लाभ-हानि विभाजन अनुपात में क्रेडिट राम $\left(\frac{10,000 \times 3}{5}\right) = 6,000$ रु. मोहन $\left(\frac{10,000 \times 2}{5}\right) = 4,000$ रु.

(5) श्याम तथा कृष्ण का फर्नीचर जो नई फर्म ने नहीं लिया, साझेदारों में पूँजी अनुपात के में बांटा जाएगा: श्याम $\left(\frac{5,000 \times 1}{2}\right) = 2,500$ कृष्ण $\left(\frac{5,000 \times 1}{2}\right) = 2,500$ रु.।

In the Books of Ram & Mohan

		Rs.	Rs.
Goodwill A/c ......Dr.	ख्याति खाता डे	9,000	
To Ram's Capital A/c	राम के पूँजी खाते से		5,400
To Mohan's Capital A/c	मोहन के पूँजी खाते से		3,600
(Goodwill raised)	(ख्याति खाता खोला गया)		
General Reserve A/c ....Dr.	सामान्य संचय खाता डे	10,000	
To Ram's Capital A/c	राम के पूँजी खाते से		6,000
To Mohan's Capital A/c	मोहन के पूँजी खाते से		4,000
(Reserve transferred)	(संचय हस्तान्तरित किया गया)		
Building A/c ...Dr.	भवन खाता ...... डे.	3,000	
To Revaluation A/c	पुनर्मूल्यांकन खाता से		3,000
(Value of Building increased)	(भवन के मूल्य में वृद्धि)		
Revaluation A/c ....Dr	पुनर्मूल्यांकन खाता डे	1,000	
To Debtors A/c	देनदारों के खाते से		1,000
(Debtors reduced)	(देनदारों में कमी)		
Cash A/c .....Dr.	रोकड़ खाता डे	25,000	
To Investment A/c	विनियोग खाता से		20,000
To Revaluation A/c	पुनर्मूल्यांकन खाता से		5,000
(Investments sold, profit credited to Revaluation A/c)	(विनियोग बेचे गए, बेचने पर हुआ लाभ पुनर्मूल्यांकन खाते को हस्तांतरित)		
Revaluation A/c .... Dr	रोकड़ खाता डे	7,000	
To Ram's Capital A/c	राम के पूँजी खाते से		4,200
To Mohan's Capital A/c	मोहन के पूँजी खाते से		2,800
(Balance of Revaluation A/c transferred to Capital A/c)	(पुनर्मूल्यांकन खाते का शेष पूँजी खातों में हस्तान्तरित)		
Bhagwan & Sons A/c ..Dr	भगवान एण्ड सन्स डे	76,000	
To Cash A/c	रोकड़ खाता से		30,000
To Building A/c	भवन खाता से		18,000
To Furniture A/c	फर्नीचर खाता से		5,000
To Debtors A/c	देनदारों के खाता से		14,000
To Goodwill A/c	ख्याति खाता से		9,000

NOTES

(Assets transferred to New Firms)	(सम्पत्तियाँ नई फर्म को हस्तान्तरित)		
Bills Payable A/c ....Dr.	देय बिल खाता ....डे.	8,000	
Sundry Creditors A/c ....Dr.	विविध लेनदार खाता ......डे.	8,000	
To Bhagwan & Sons	भगवान एण्ड सन्स		16,000
(Liabilities transferred to New Firm)	(दायित्व नई फर्म को हस्तांतरित)		
Ram's Capital A/c ......Dr.	राम के पूँजी खाता ......डे.	35,600	
Mohan's Capital A/c ....Dr.	मोहन का पूँजी खाता .....डे.	24,400	
To Bhagwan & Sons	भगवान एण्ड सन्स में		60,000
(Capital Accounts transferred to New Firm)	(पूँजी खाते नई फर्म को हस्तान्तरित)		

Cash A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,000	By Bhagwan & Sons	30,000
To investment A/c	20,000		
To Revaluation A/c	5,000		
	30,000		30,000

Building A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	15,000	By Bhagwan & Sons	18,000
To Revaluation A/c	3,000		
	18,000		18,000

Furniture A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,000	By Bhagwan & Sons	5,000
	5,000		5,000

Debtors A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	15,000	By Revaluation A/c	1,000
		By Bhagwan & Sons	14,000
	15,000		15,000

Investments A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	20,000	By Cash A/c	20,000
	20,000		20,000

Sundry Creditors A/c

	Rs.		Rs.
To Bhagwan & Sons	8,000	By Balance b/d	8,000
	8,000		8,000

NOTES

Bills Payable A/c

	Rs.		Rs.
To Bhagwan & Sons	8,000	By Balance b/d	8,000
	8,000		8,000

Capital Accounts

	Ram Rs.	Mohan Rs.		Ram Rs.	Mohan Rs.
To Bhagwan & Sons	35,600	24,400	By Balance b/d	20,000	14,000
			By Goodwill A/c	5,400	3,600
			By General Reserve A/c	6,000	4,000
			By Revaluation A/c	4,200	2,800
	35,600	24,400		35,600	24,400

General Reserve A/c

	Rs.		Rs.
To Ram's Capital A/c	6,000	By Balance b/d	10,000
To Mohan's Capital A/c	4,000		
	10,000		10,000

Goodwill A/c

	Rs.		Rs.
To Ram's Capital A/c	5,400	By Bhagwan & Sons	9,000
To Mohan's Capital A/c	3,600		
	9,000		9,000

Revaluation A/c

	Rs.		Rs.
To Debtors A/c	1,000	By Building A/c	3,000
To Ram's Capital A/c	4,200	By Cash A/c	5,000
To Mohan's Capital A/c	2,800		
	8,000		8,000

Bhagwan & Sons

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	30,000	By Bills Payable A/c	8,000
To Building A/c	18,000	By Sundry Creditors A/c	8,000
To Furniture A/c	5,000	By Ram's Capital A/c	35,600
To Debtors A/c	14,000	By Mohan's Capital A/c	24,400
To Goodwill A/c	9,000		
	76,000		76,000

In the Books of Shyam and Krishna

			Rs	Rs
Revaluation A/c Dr	पुनर्मूल्यांकन खाता	डे	1,1000	
To Debtors A/c	देनदारों के खाते से			5,400
(Debtors written off by 5%)	(देनदारों में 5 % की कमी की गई)			

NOTES

Goodwill A/c ......Dr.	ख्याति खाता ....डे	3,000	
Building A/c ....Dr	भवन खाता	2,000	
To Revaluation A/c	पुनर्मूल्यांकन खाता से		5,000
(Increase in the value of above assets)	(उपर्युक्त सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि		
Revaluation A/c ......Dr.	पुनर्मूल्यांकन खाता ....डे	3,900	
To Shyam's Capital A/c	श्याम के पूँजी खाता से		1,950
To Krishan's Capital Ac/	कृष्ण के पूँजी खाता से		1,950
(Profit on Revaluation transferred to Partner's Capital Accounts)	(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित)		
Creditors A/c ......Dr.	लेनदारों का खाता ......डे	3,000	
To Shyam's Capital A/c	श्याम के पूँजी खाता से		3,000
(Creditors taken over by Shyam)	(लेनदारों के भुगतान का दायित्व श्याम ने लिया)		
Shyam's Capital A/c ....Dr	श्याम के पूँजी खाता से ......डे.	2,500	
Krishan's Capital A/c ....Dr.	कृष्ण के पूँजी खाता से ....डे.	2,500	
To Furniture A/c	फर्नीचर खाता से		5,000
(Furniture not taken over by the New Firm transferred to Partners' Capital A/c)	नई फर्म द्वारा नहीं लिया गया फर्नीचर साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरित)		
Bhagwan & Sons .. .Dr.	भगवान एण्ड सन्स ..डे	58,900	
To Cash A/c	रोकड़ खाता से		3,000
To Goodwill A/c ....Dr.	ख्याति खाता से ....डे		5,000
To Building A/c .....Dr	भवन खाता से		22,000
To Debtors A/c	देनदार खाता से		20,000
To Investments A/c	विनियोग खाता से		8,000
(Assets taken over by the New Firm transferred)	(नई फर्म को सम्पत्तियाँ हस्तांतरित)		
Bills Payable A/c ...Dr	देय बिल खाता डे	17,000	
To Bhagwan & Sons	भगवान एण्ड सन्स से		17,000
(Bill Payable A/c transferred to New Firm)	(देय बिल खाता नई फर्म को हस्तांतरित		
Shyam's Capital A/c ...Dr	श्याम का पूँजी खाता डे.	22,450	
Krishna's Capital A c Dr.	कृष्ण का पूँजी खाता डे	19,450	
To Bhagwan & Sons	भगवान एण्ड सन्स से		41,900
(Capital Accounts transferred to New Firm)	(पूँजी खाते नई फर्म को हस्तांतरित)		

टिप्पणी- यद्यपि प्रश्न में पूँजी खाते बनाने को नहीं कहा गया है, तथापि अन्तिम प्रविष्टि को करने हेतु पूँजी खाते निम्नानुसार बनाने होंगे-

NOTES

Capital Accounts

	Shyam	Krishna		Shyam	Krishna
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Furniture	2,500	2,500	By Balance b/d	20,000	20,000
To Bhagwan & Sons	22,450	19,450	By Revalution A/c	1,950	1,950
			By Creditors A/c	3000	
	24,950	21,950		24,950	21,950

नई फर्म की पुस्तकें खोलना (To Open the Books of the New Firm)

नई फर्म पुरानी फर्म की जिन सम्पत्तियों एवं दायित्वों को लेती है उनके लिए निम्नानुसार प्रविष्टि की जाती है–

Various Assets A/c ....Dr.	विभिन्न सम्पत्तियों के खाते ....डे.
To Various Liabilities A/cs	विभिन्न दायित्वों के खातों से
To Partner's Capital Accounts	साझेदारों के पूँजी खातों से

उपर्युक्त प्रविष्टि प्रत्येक पुरानी फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के लिए अलग-अलग की जाती है तथा प्रत्येक सम्पत्ति एवं दायित्व के खाते अलग-अलग नाम से डेबिट/क्रेडिट किए जाते है।

इसके अतिरिक्त यदि नई फर्म की पुस्तकों में अन्य कोई समायोजन होना हो (जैसे ख्याति अपलिखित करना अथवा साझेदारों के पूँजी खातों का समायोजन करना), तो ऐसे समायोजन पिछले अध्यायों में वर्णित रीति से कर लिए जाते हैं।

Illustration 2. उदाहरण क्रमांक 1 में भगवान एण्ड सन्स की पुस्तकों मे खाते खोलने के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए। भगवान एण्ड सन्स ने यह भी निश्चय किया कि–

(i) ख्याति खाता अपलिखित कर दिया जाए,

(ii) नई फर्म में राम, मोहन, श्याम तथा कृष्ण का लाभ-हानि विभाजन अनुपात बराबर-बराबर रहे, तथा

(iii) साझेदारों के पूँजी खाते नकद रोकड़ द्वारा उनके लाभ-हानि विभाजन अनुपात में समायोजित किए जाएँ।

उपर्युक्त समायोजनों के पश्चात् नई फर्म का आरम्भिक चिट्ठा भी बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ–

(1) दोनों फर्मों की कुल ख्याति (9,000 + 5,000) = 14,000 रु. नए लाभ अनुपात में अपलिखित की जाएगी, प्रत्येक साझेदार का खाता 3,500 रु. में डेबिट होगा।

(2) उपर्युक्त समायोजन के बाद पूँजी खातो की स्थिति निम्नानुसार होगा–

	राम	मोहन	श्याम	कृष्ण	कुल
	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.
पुरानी फर्म से प्राप्त शेष	35,600	24,400	22,450	19,450	1,01,900
(–) ख्याति अपलिखित की	3,500	3,500	3,500	3,500	14,000
विभिन्न साझेदारों की पूँजी	32,100	20,900	18,950	15,950	87,900
नए अनुपात में पूँजी	21,975	21,975	21,975	21,975	
वापस ले जाई जाएगी	10,125				

पूँजी लाई जाएगी		1,075	3,025	6,025

In the Books of Bhagwan & Sons

NOTES

			Rs.	Rs.
Cash A/c ......Dr.	रोकड़ खाता	.....डे.	30,000	
Building A/c ....Dr.	भवन खाता	.....डे.	18,000	
Furniture A/c ......Dr.	फर्नीचर खाता	....डे.	5,000	
Debtors A/c ......Dr.	देनदार खाता	....डे	14,000	
Goodwill A/c ......Dr.	ख्याति खाता	....डे.	9,000	
To Bills Payable A/c	देय बिल खाता से			8,000
To Sundry Creditors A/c	विविध लेनदार खाता से			8,000
To Ram's Capital A/c	राम के पूँजी खाता से			35,600
To Mohan's Capital A/c	मोहन के पूँजी खाता से			24,400
(Various assets and liabilities of (Ram & Mohan taken over)	(राम तथा मोहन की विभिन्न सम्पत्तियाँ तथा दायित्व नई फर्म द्वारा लिए गए)			

1 फर्म की कुल पूँजी 87,900 रु. है, विभिन्न साझेदारो की पूँजी उनके लाभालाभ विभाजन में करने का अर्थ होगा कि प्रत्येक साझेदार की पूँजी $\left(\frac{87,900 \times 10}{4}\right) = 21,975$ रु होना चाहिए। राम की पूंजी इससे अधिक है, अतः यह आधिक्य फर्म से निकाल लेगा जबकि साझेदारो की पूँजी कम है जिसकी पूर्ति वे फर्म मे रोकड़ लाकर करेंगे। परस्पर इस समायोजन का फर्म की कुल रोकड़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि मोहन, श्याम तथा कृष्ण जितनी रोकड लाऐंगे, उतनी राशि ही राम वापस ले जाएगा।

			Rs.	Rs.
Cash A/c ....Dr.	रोकड खाता	डे.	3,000	
Goodwill A/c .....Dr.	ख्याति खाता	डे	5,000	
Building A/c ......Dr.	भवन खाता	डे.	22,000	
Debtors A/c ....Dr	देनदार खाता	....डे	20,000	
Investment A/c .....Dr.	ख्याति खाता	डे	8,000	
To Bills Payable A/c	देय बिल खाता से			17,000
Shyam's Capital A/c	श्याम का पूँजी खाता			22,450
Krishna's Capital A/c	कृष्ण का पूँजी खाता			19,450
(Various assets and liabilities of Shyam & Krishna taken over)	(श्याम तथा कृष्ण की विभिन्न सम्पत्तियाँ तथा दायित्व नई फर्म द्वारा लिए गये)			
Ram's Capital A/c ...Dr	राम का पूँजी खाता	डे	3,500	
Mohan's Capital A/c Dr.	मोहन का पूँजी खाता	डे	3,500	
Shyam's Capital A/c .Dr.	श्याम का पूँजी खाता	डे	3,500	
Krishna's Capital A/c Dr	कृष्ण का पूँजी खाता	डे	3,500	
To Goodwill A/c	ख्याति खाता से			14,000
(Goodwill written off)	(ख्याति अपलेखित की गई)			
Ram's Capital A/c Dr.	राम का पूँजी खाता	डे	10,125	

NOTES

To Cash A/c	रोकड़ खाता से		10,125
(Excess Capital withdrawn by Ram	(राम द्वारा अधिक पूँजी निकाली गई)		
Cash A/c ......Dr.	रोकड़ खाता ...डे.	10,125	
To Mohan's Capital A/c	देय बिल खाता से		1,075
Shyam's Capital A/c	श्याम का पूँजी खाता		3,025
Krishna's Capital A/c	कृष्ण का पूँजी खाता		6,025
(Additional Capital brought into the Firm)	(फर्म में अतिरिक्त पूँजी लाई गई)		

Balance Sheet of Bhagwan & Sons

As on 1st January, 2008

	Rs.		Rs.
Bills Payable	25,000	Cash	33,000
Creditors	8,000	Building	40,000
Capital Accounts		Furniture	5,000
Ram	21,975	Debtors	34,900
Mohan	21,975	Investment	8,000
Shyam	21,975		
Krishna	21,975		
	1,20,900		1,20,900

Illustration 3. Mr. A and Mr. B who carry on separate business of a similar nature, agree to terms of partnership on the basis of amalgamation. The following is a statement of their respective positions : -

Mr. A

	Rs		Rs
Sundry Creditors	1,180	Stock	4,200
Mr. A's loan at 4%	2,000	Books Debts	8,050
A's Capital	9,820	Trade Fixtures	150
		Cash at Bank	580
		Cash in Bank	20
	13,000		13,000

Mr. B

Rs.		Rs.	
Creditors	800	Stock-in Trade	1,800
Union Bank's Overdraft	1,500	Book Debts	6,400
Mortgage on Leasehold	1,000	Trade Fixtures	200
B's Capital	7,280	Life Policy	180
	Leasehold Premises	2,000	
	10,580		10,580

It is agreed that each partner shall bring into the partnership Rs. 10,000 in cash or its equivalent, business being carried on in B's premises, of which it is agreed that lease shall be treated in account as worth Rs. 3,500. The Trade Fixtures of Mr. A are sold out and produce Rs. 70, the loss

being borne by the partnership, and it is agreed that all private assets and liabilities are to disappear from the partnership books. After necessary adjustments, prepare the partnership Balance Sheet.

'अ' तथा 'ब' एक ही प्रकार का अलग-अलग व्यापार करते हैं। उसमें दोनों व्यापारों के एकीकरण करने का तय हुआ।

NOTES

अ तथा ब का चिट्ठा

	अ	ब		अ	ब
	रु.	रु.		रु.	रु.
लेनदार	1,180	800	स्टॉक	4,200	1,800
यूनियन बैंक का ओवर ड्राफ्ट	....	1,500	देनदार	8,050	6,400
लीजहोल्ड रहन	....	1,000	फिक्चर्स	150	200
श्रीमती अ का ऋण 4 प्रतिशत पर	2,000	....	जीवन बीमा प्रीमियम	......	180
पूँजी	9,820	7,280	लीजहोल्ड प्रीमियम	......	2,000
			बैंक	580	....
			रोकड़	20	....
	13,000	10,580		13,000	10,580

प्रत्येक साझेदार 10,000 रु. पूँजी के रूप में लाने को सहमत हुआ। व्यवसाय ब के भवन में चलाया जायेगा जिसके बारे में यह तय हुआ कि लीज 3,500 रु. मूल्य की मानी जाएगी। अ के फिक्चर्स 70 रु. में बिके। इस हानि को साझेदारी फर्म ने सहन किया तथा यह तय हुआ कि निजी सम्पत्तियाँ और निजी दायित्व साझेदारी की पुस्तकों से समाप्त कर दिये जायेंगे। उचित समायोजनाओं के बाद चिट्ठा बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ– यद्यपि प्रश्न में केवल चिट्ठा बनाने को कहा गया है, तथापि ऐसा करने से पूर्व निम्नानुसार गणनाएँ करनी होंगी–

(1) ब की पूँजी 7,280 रु. है– ब के भवन जिसका पुस्तक मूल्य 2,000 रु. था का मूल्यांकन 3,500 रु. किया गया, 1,500 रु. की वृद्धि ब के पूँजी मे क्रेडिट की जायेगी।

(2) अ के फिक्चर की बिक्री पर हानि (150 – 70) = 80 रु. का समायोजन नई फर्म की पुस्तकों मे होना है. अतः इस हानि को अ तथा ब दोनों को डेबिट किया जायेगा।

(3) पूँजी खातों की स्थिति निम्नानुसार होगी:

	A	B		A	B
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Life Policy	___	180	By Balance b/d	9,820	7,280
To Loss on Sale of			By Revaluation A/c		
Fixtures	40	40	(premises)	___	1,500
To Balance c/d	11,780	10,060	By Bank Overdraft	___	1,500
			By Mr. A's Loan's	2,000	___
	11,820	10,280		11,820	10,280

(4) उपर्युक्त पूँजी खातों से स्पष्ट है कि अ की पूँजी 11,780 रु. है जबकि नई फर्म मे उसकी पूँजी 10,000 रु. होनी चाहिए। 11,780 रु. का आधिक्य होते हुए भी वह केवल 600 रु. ही रोकड़ ले जा सकेगा क्योंकि उपलब्ध बैंक तथा हस्तस्थ रोकड़ (500 + 20) = 600 रु. ही है। **अतः शेष** 11,820 रु. उसके चल खाते मे क्रेडिट कर दी जाएगी।

(5) ब की पूँजी 10,060 रु. है, 60 रु. का आधिक्य वह रोकडी नही ले जा सकता क्योंकि रोकड़ उपलब्ध नहीं है. इसे उसके चल खाते मे क्रेडिट कर दिया जाएगा।

(6) फर्म को कोई रोकड़ प्राप्त नही होती। फिक्चर्स को बेचने से प्राप्त 70 रु. ही फर्म की रोकड़ होगी।

NOTES

Balance Sheet
As on ....

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	1,980	Stock	6,000
Mortgage on Leasehold	1,000	Book Debts	14,450
Capital Accounts :		Trade Fixtures	200
A	10,000	Leasehold Premises	3,500
B	10,000	Cash at Bank	70
Current Accounts :			
A	1,180		
B	60		
	24,220		24,220

11.3 साझेदारी व्यवसाय की बिक्री (Sale of Partnership Business)

किन्हीं परिस्थितियोंवश साझेदारी संस्था अपना व्यवसाय किसी को बेच सकती है। इस सम्बन्ध में तीन परिस्थितियाँ हो सकती हैं:-

(1) एकाकी व्यापारी को विक्रय, (2) साझेदारी फर्म को विक्रय, तथा (3) कम्पनी को विक्रय।

11.3.1 एकाकी व्यापारी को विक्रय (Sale to a Sole Trader)

जब किसी फर्म में कई साझेदार होते हैं तो यह हो सकता है कि एक को छोड़कर अन्य समस्त साझेदार फर्म से अलग हो जायें। ऐसी स्थिति में बचा हुआ साझेदार उस फर्म के व्यवसाय को एकाकी व्यापारी के रूप में चलाता है।

लेखांकन क्रियायें (Accounting Procedure) – उपर्युक्त दशा में पुरानी फर्म समाप्त हो जाती है जिसके लिए समस्त लेखांकन क्रियायें साझेदारी के विघटन की भाँति ही वसूली खाता, पूँजी खाते, रोकड़ खाता आदि खाते बनाकर की जाती है।

Illustration 4. पीयूष तथा प्रबल एक फर्म साझेदार है। 31 दिसम्बर, 2007 को जब उन्होंने फर्म का विघटन किया, उनका चिट्ठा निम्नानुसार था–

	रु.		रु.
देय बिल	1,000	भवन	60,000
लेनदार	1,400	प्लाण्ट	18,000
पूँजी पीयूष	48,000	फर्नीचर	1,200
प्रबल	48,000	विनियोग	2,760
	देनदार	3,000	
	स्टॉक	6,960	
	बैंक	6,480	
	98,400		98,400

पीयूष ने फर्म को क्रय करने का निश्चय किया जिसके लिए निम्नलिखित शर्ते तय की गई–

(क) भवन, स्टॉक पुस्तक मूल्य पर तथा प्लाण्ट व फर्नीचर क्रमश: 17,000 रु. तथा 1,000 रु. में लिए जायेंगे। पीयूष ख्याति के 12,000 रु. देगा।

(ख) फर्म के देनदारों तथा विनियोगों की वसूली क्रमश: 2,000 रु. तथा 2,800 रु. पर की गई।

(ग) देय बिल तथा लेनदारों को 2,160 रु. पूर्ण भुगतान में दिए गए।

(घ) समापन व्यय 480 रु. चुकाए गए।

फर्म की पुस्तकों में समस्त आवश्यक खाते बनाइए।

Solution टिप्पणियाँ– (1) वसूली पर लाभ साझेदारों को बराबर-बराबर बांटा गया।

Realistion A/c

		Rs.			Rs.
To Building		60,000	By Bills Payable		1,000
To Plant		18,000	By Creditors		1,400
To Furniture		1,200	By Piyush's Capital A/c		
To Investments		2,760	Building	60,000	
To Debtors		3,000	Stock	6,960	
To Stock		6,960	Plant	17,000	
To Bank A/c			Furniture	1,000	
(B/P and Creditors)	2,160		Goodwill	12,000	
To Bank A/c (Expenses)	480				96,960
To Capital Accounts			By Bank A/c		
Piyush	4,800		Debtors	2,000	
Prabal	4,800		Investments	2,800	
		9,600			4,800
		1,04,160			1,04,160

Capital Accounts

	Piyush Rs.	Prabal Rs.		Piyush Rs.	Prabal Rs.
To Realisation A/c	96,960	—	By Balance b/d	48,000	48,000
To Bank A/c	—	52,800	By Realisation A/c	4,800	4,800
			By Bank A/c	44,160	—
	96,960	52,800		96,960	52,800

Bank A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	6,480	By Realisation A/c	2,160
To Realisation A/c	4,800	By Realisation A/c	480
To Piyush's Capital A/c	44,160	By Prabal's Capital A/c	52,800
	55,440		55,440

11.3.2 साझेदारी फर्म को विक्रय (Sale to a Partnership Firm)

एक फर्म का विक्रय दूसरी साझेदारी फर्म को किया जा सकता है। जिस फर्म को बेचा जाता है उसका विघटन हो जाता है। क्रय प्रतिफल क्रेता तथा विक्रेता फर्मों द्वारा परस्पर समझौते द्वारा तय कर लिया जाता है, जिसका भुगतान क्रेता फर्म विक्रेता फर्म को कर देती है।

लेखांकन क्रियाये (Accounting Procedure)– बेची जाने वाली फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए फर्म की पुस्तकों में प्रायः वसूली खाता (Realisation A/c), क्रेता फर्म का खाता (purchasing Firm's A/c) रोकड़ खाता (Cash A/c) तथा विक्रेता फर्म के साझेदारों के पूँजी खाते (Capital Accounts of Partners) खोले जाते है। इन खातों में प्रविष्टियाँ करने की विधि आगे फर्म का कम्पनी को विक्रय के अन्तर्गत विस्तार से समझाई गई है। दोनों में अन्तर केवल यह है कि फर्म द्वारा क्रय की स्थिति में क्रेता फर्म का खाता खोला जाता है, जबकि

कम्पनी द्वारा क्रय की स्थिति में क्रेता कम्पनी का खाता खुलता है। इसके अतिरिक्त कम्पनी द्वारा क्रय की दशा में क्रय-प्रतिफल का भुगतान रोकड़ के अतिरिक्त कम्पनी के अंशों या ऋण-पत्रों में भी किया जा सकता है, साझेदारी फर्म द्वारा क्रय की दशा में ऐसा नहीं होता है।

NOTES

11.3.3 फर्म की कम्पनी को विक्रय (Sale of a Firm to a Company)

जब किसी साझेदारी फर्म को किसी कम्पनी को बेचा जाता है तो फर्म की पुस्तकें बंद करने के लिए वैसी ही प्रविष्टियाँ की जाती है, जैसी कि फर्म के विघटन के समय होती है। फर्म की पुस्तकों में निम्नानुसार लेखा किया जाता है–

(1) वसूली खाता (Realisation A/c) खोलकर समस्त सम्पत्तियों एवं देयताए इस खाते में हस्तान्तरित कर दी जाती है

(2) यदि कोई सम्पत्ति कम्पनी नही लेती तो उसे बेच दिया जाता है। इस हेतु रोकड़ खाता डेबिट तथा वसूली खाता क्रेडिट किया जाता है।

(3) यदि कोई दायित्व कम्पनी नहीं लेती तो उसका भी भुगतान वसूली खाता डेबिट तथा रोकड़ खाता क्रेडिट करके कर दिया जाता है।

(4) जब कम्पनी फर्म को क्रय करती है तो फर्म का क्या मूल्य दिया जायेगा वह परस्पर समझौते द्वारा तय कर लिया जाता है। इसे क्रय-प्रतिफल (Purchase Consideration) कहते है। फर्म की पुस्तकों में प्रविष्टि निम्नानुसार की जाती है:

Purchasing Company	.......Dr.	क्रेता कम्पनी का खाता	......डे
To Realisation A/c		वसूली खाता से	

(5) इसके पश्चात् वसूली खाते का शेष निकालकर वसूली पर लाभ या हानि ज्ञात कर ली जाती है, जिसे साझेदारों के पूँजी खातों में उसके लाभालाभ विभाजन अनुपात में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

(6) क्रय-प्रतिफल का भुगतान प्रायः नकद रोकड़/या कम्पनी के अंशों या ऋण-पत्रों के रूप में किया जाता है। कम्पनी से प्राप्त अंशों तथा ऋण-पत्रों को साझेदारों में, अन्य किसी समझौते के अभाव में, **पूँजी अनुपात**, में कर दिया जाता है। यहाँ पूँजी अनुपात से **हमारा आशय साझेदारों को अन्तिम देय राशि (final claim) अर्थात् पूँजी खातों में संचित लाभ-हानि, वसूली पर लाभ-हानि के सम्बंध में समायोजन करने के बाद बचने वाले शेष**) से होता है। यहाँ यह ध्यान रहे कि अंशों या ऋण-पत्रों को टुकड़ों (Fraction) में नहीं बाटा जाता उन्हें पूर्ण संख्या में ही वितरित किया जाता है। इसके बाद जो राशि अदत्त रहे उसे रोकड़ में चुका दिया जाता है।

11.4 फर्म का कम्पनी में परिवर्तन (Conversion of firm in Company)

Illustration 5. Set out below is the Balance Sheet, as on 31th December 2007, of Messrs. A and B who shared profits in proportion to capitals

मैसर्स A और B जो पूँजी अनुपात में लाभ विभाजन करते है का 31 दिसम्बर, 2007 को निम्न चिट्ठा है–

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Sundry Creditors		55,000	Cash at Bank	4,500
Reserve Fund		7,000	Sundry Debtors	40,000
Capitals -	Rs.		Stock	37,000
A	75,000		Machinery and Plant	85,000
B	50,000	1,25,000	Investments	
		1,87,000		1,87,000

A Limited Co. with a Nominal Capital of Rs. 2,00,000 in Equity Shares of Rs. 100 each, was formed to acquire and carry on the business. The Company took over the whole concern with the exception of Cash and Investments and agreed to pay the Book values of the assets taken over at 10% less. The goodwill of the firm was valued at Rs. 5,000, which the company agreed to pay. The purchase price was paid half in cash and half in fully-paid shares of the Company.

The Firm realised their own Investments as also the Shares they received from the New Company at 5% less than their face value.

Give Journal Entries in the books of partnership to give effect to the above and show also (a) Realisation Account: (b) Cash Account: (c) Partner's Capital Accounts.

फर्म की व्यवसाय चलाने के लिये एक लिमिटेड कम्पनी की स्थापना की गई जिसकी अधिकृत पूँजी 2,00,000 रु. है जो 100 रु. के साधारण अंशों में बंटी हुई है। कम्पनी ने रोकड़ तथा विनियोगों के अतिरिक्त सभी व्यवसाय को ले लिया, और सम्पत्तियों के लिये पुस्तक मूल्य से 10% कम देने के लिये सहमत हो गई। फर्म की ख्याति 5,000 रु. आँकी गई जो कि कम्पनी देने के लिये तैयार हो गई। क्रय मूल्य आधा रोकड़ी तथा आधा कम्पनी के पूर्णदत्त अंशों में भुगतान किया गया।

फर्म ने अपने विनियोग तथा नई कम्पनी से प्राप्त अंशों को उनके अंकित मूल्य से 5% कम पर बेच दिया।

उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये फर्म की पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा वसूली खाता, रोकड़ और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

Solution : **Journal Entries**

		L.F.	Rs.	Rs.
Realisation Account	Dr		1,62,000	
To Debtors				40,000
To Stock				37,000
To Machinery and Plant				85,000
(Being the transfer Assets taken over by the Company to Realisation Account)				
Sundry Creditors	Dr		55,000	
To Realisation Account				55,000
(Being the transfer of Sundry Cr to Realisation A/c)				
Purchasing Company	Dr		95,800	
To Realisation Account				95,800
(Being the agreed value at which the business is taken over by the Company)				
Bank	Dr		47,900	
Shares in Limited Company	Dr.		47,900	
To Purchasing Company				
(Being the satisfaction to purchase price)				95,800
Bank	Dr.		64,980	
To Investment Account				19,475
To Shares in Limited Company				45,505
(Being the amount realised on the sale of Shares and other Investment)				
Realisation Account	Dr.		3,420	
To Investment Account				1,025
To Shares in Limited Company				2,395

NOTES

(Being the loss on Realisation of Investments and Shares transferred)			
Reserve Fund	Dr.	7,000	
To A's Capital Account			4,2000
To B's Capital A/c			2,800
(Being the transfer of Reserve Fund to Capital Account in profit sharing proportions)			
A's Capital Account	Dr	8,772	
B's Capital A/c	Dr.	5,848	
To Realisation Account			14,620
(Transfer of loss Realisation to Capital Accounts)			
A's Capital Account	Dr.	70,428	
B's Capital A/c	Dr.	46,952	
To Bank			1,17,380
(Distribution of available cash balance amongst the partners against balance of their Capitals)			

Ledger Account

Realisation Account

	Rs.	Rs.		Rs.
To Debtors	40,000		By Sundry Creditors	55,000
To Stock	37,000		Purchasing Co. (P.C.)	95,800
To Machinery & Plant	85,000	1,62,000	A's Capital Account– (3/5th share of loss)	8,772
To Investment Account– (Loss on Realisation)		1,025	B's Capital Account– (2/5th share of loss)	5,848
To Share in Limited Co.– (Loss on Realisation)		2,395		
		1,65,420		1,65,420

Bank Account

	Rs.		Rs.
To Balance b.d	1,500	By A's Capital Account	70,428
" Purchasing Co.	47,900	By B's " "	46,952
" Investments	19,475		
" Share in Limited Co	45,505		
	1,17,380		1,17,380

A's Capital Account

	Rs		Rs
To Realisation Account– 3/5th share of loss	8,772	By Balance b.d	75,000
" Bank	70,428	" Reserve Fund-Transfer	4,200
	79,200		79,200

B's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation Account–		By Balance b/d	50,000
2/5th shares of loss	5,848	" Reserve Fund–Transfer	2,800
" Bank	46,952		
	52,800		52,800

Illustration 6.

The following is the summarised Balance Sheet, on 31sth December 2007, of A, B, C and D who shared profits and losses in the ratio 4 : 3 : 2 : 1.

A, B, C तथा D का 31 दिसम्बर 2007 को निम्न संक्षिप्त चिट्ठा है जो कि 4 : 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ-विभाजन करते है।

Liabilities (दायित्व)	Rs.	Assets (सम्पत्तियाँ)	Rs.
Capital (पूँजी) : A	30,000	Goodwill (ख्याति)	10,000
B	20,000	Other Fixed Assets (अन्य	
C	3,000	स्थायी सम्पत्ति)	40,000
Trade Creditors (लेनदार)	10,000	Current Assets (चल सम्पत्ति)	12,000
		Capital of D (पूँजी : D)	1,000
	63,000		63,000

D has no separate assets or liabilities. The partners decide to wind up the business. The partners accept the offer of a limited Company to buy the Goodwill and other Fixed Assets, the purchase consideration being the allotment of 2,250 fully-paid Equity Shares of Rs. 10 each (to be taken at the market value of Rs. 13) and cash Rs. 10,000. The Current Assets produce their book value and costs amount to Rs. 450. C has ample separate assets.

You are required to give ledger entries in the firm's books

Partners have agreed to divide shares in their profit sharing ratio.

D की अलग से और सम्पत्ति एवं दायित्व नहीं है। साझेदारों ने व्यापार के समापन का निश्चय किया। साझेदार ने एक सीमित दायित्व कम्पनी द्वारा ख्याति एवं स्थायी सम्पत्ति को खरीदने के प्रस्ताव को स्वीकार किया। क्रय मूल्य 10 रु. वाले 2,250 पूर्णदत्त साधारण अंशों में (जिनका प्रस्ताव मूल्य 13 रु. प्रति अंश था) तथा 10,000 रु. रोकड़ में निश्चित हुआ। चालू सम्पत्ति से पुस्तक मूल्य प्राप्त हुआ तथा समापन व्यय 450 रु. C के पास पर्याप्त अलग सम्पत्ति है।

फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिये आवश्यक लेजर प्रविष्टियाँ कीजिए।

साझेदारों ने अंशों को लाभ विभाजन अनुपात में बाँटने का निर्णय किया।

Solution : **Realisation Account**

	Rs.			Rs.
To Goodwill	10,000	By Limited Company		
To other Fixed Assets	40,000	(Purchase Price)		39,250
To Cash (Expenses)	450	" Loss : A	4,480	
		B	3,360	
		C	2,240	
		D	1,120	11,200
	50,450			50,450

NOTES

Cash Account

	Rs.		Rs.
To Current Assets	12,000	By Creditors	10,000
" Limited Company	10,000	" Realisation Account (Exp.)	450
" C's Capital	5,860	" A's Capital Account	11,320
		" B's Capital Account	6,090
	27,860		27,860

Limited Company Account

	Rs.		Rs.
Realisation Account	39,250	By Cash	10,000
		,, Shares	29,250
	39,250		39,250

Capital Account

	A	B	C	D		A	B	C	D
	Rs.	Rs	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d				1,000	By Balance b/d	30,000	20,000	3,000	
,, Realisation Account	4,480	3,360	2,240	1,120	,, A's Capital (30/53)	—	—	—	1,200
,, D's Capital	1,200	800	120	—	,, B's ,, (20/53)	—	—	—	800
,, Ltd. Company (Shares)	13,000	9,750	6,500	—	,, C's ,, (3/53)	—	—	—	120
,, Cash	11,320	6,090	—	—	,, Cash	—	-	5,860	—
	30,000	20,000	8,860	2,120		30,000	20,000	8,860	2,120

Illustration 7.

A, B, C are partners entitled respectively to one half, one-third and one-sixth of the profits. Summary of their balance sheet was as follows–

A, B, C तथा D साझेदार है जो लाभ $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ तथा $\frac{1}{6}$ हिस्सा लेने के अधिकारी हैं। उनके चिट्ठे का संक्षिप्त स्वरूप निम्न था :–

	Rs		Rs.
Sundry Creditors	1,500	Goodwill	5,000
Capital Account		Sundry Assets	6,000
A	7,000	Cash	5,500
B	5,000		
C	3,000		
	16,500		16,500

The following steps were taken consequtively but all as on the date of Balance sheet referred to above

(a) C retired and his interest in the firm valued at Rs. 4,000 was purchased by A & B from their private resources in the porportions in which they share profits

(b) D was admitted to the partnership and became entitled to one-sixth share of profits on the terms that for goodwill a further Rs. 3,000 should be credited to A & B proportionately and that D should bring in capital equal to one-quarter of the combined capital A & B after adjustments.

(c) The firm was converted into a limited-company, the company taking over the whole of the assets except cash but not the liabilities for a consideration of Rs. 17,000 payable in fully paid shares. After payment of the creditors the cash balance and the shares were distributed among the vendor partners. Write up and close the capital accounts of A, B, C and D.

(निम्नलिखित कदम एक के बाद एक उठाये गये किन्तु सभी कदम उपरोक्त चिट्ठे की तिथि को ही लिए गये :-

(i) C ने अवकाश ग्रहण किया और फर्म में उसका हित 4,000 रु. मूल्यांकित करके A और B द्वारा अपने निजी स्त्रोतों से उस अनुपात में खरीदा गया जिस अनुपात में वे लाभों का विभाजन करते थे।

(ii) D को साझेदारी मे प्रवेश किया और वह लाभो के $\frac{1}{6}$ भाग का इस शर्त पर अधिकारी हुआ कि ख्याति के लिए 3,000 रु. की रकम A और B की आनुपातिक रूप में क्रेडिट की जाये तथा इन समायोजनों के बाद A और B की संयुक्त पूँजी के एक चौथाई के बराबर रकम D पूँजी के रूप में लावे।

(iii) फर्म को तब एक सीमित कम्पनी में परिवर्तित किया गया। कम्पनी ने दायित्वो एवं रोकड़ को छोड़कर समस्त सम्पत्तियों को 17,000 रु. के प्रतिफल के बदले में खरीद लिया, इस प्रतिफल का भुगतान पूर्णदत्त अंशो में किया गया। लेनदारों को चुकाने के बाद रोकड़ी रूपया तथा अंश साझियों में आनुपातिक रूप से बॉट दिया गया।

A, B, C. D के पूँजी खाते तैयार कीजिए व बन्द कीजिए।

A's Capital a/c

	Rs.		Rs.
To Shares	8,054[1]	By Balance b/d	7,000
To Cash	4,146[1]	,, Cash purchase of C's share	2,400
		,, Goodwill further raised on D's admission	1,800
		,, Realisation a/c (share of profit)	1,000
	12,200		12,200

B's Capital a/c

	Rs.		Rs.
To Shares	5,590[1]	By Balance b/d	5,000
To Cash	2,877[1]	,, Cash purchase of C's share	1,600
		,, Goodwill further raised on D's admission	1,200
		Realisation a/c (share of profit)	667
	8,467		8,467

C's Capital a/c

	Rs		Rs
To Cash	4,000	By Balance b/d	3,000
		By Goodwill	1,000
	4,000		4,000

D's Capital a/c

	Rs.		Rs.
To Shares	3,356	By Cash	4,750[1]
To Cash	1,727	By Realisation a/c Shares profit	333
	5,083		5,083

NOTES

Cash a/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,500	By C's Capital	4,000
To A's Capital	2,400	By Creditors	1,500
To B's Capital	1,600	By Balance c/d	8,750
To D's Capital	4,750		
	14,250		14,250
To Balance b/d	8,750	By A's Capital	4,146
		By B's Capital	2,877
		By D's Capital	1,727
	8,750		8,750

Realisation a/c

	Rs.		Rs.
To S. Assets	6,000	By Company's a/c	17,000
To Goodwill	9,000		
To A's Capital a/c	1,000		
To B's Capital a/c	667		
To D's Capital a/c	333		
	17,000		17,000

Notes-1. अन्य सूचना के अभाव में कम्पनी से प्राप्त अंशों तथा शेष रोकड़ का बंटवारा साझेदारों के पूँजी खातों का जो शेष है, उस अनुपात में होगा अर्थात् 12,200 : 8, 467 : 5, 083 के अनुपात में।

2. समायोजन के पश्चात् A की पूँजी 11,200 रु. तथा B की पूंजी 7,800 रु. हुई, दोनों का योग 19,000 रु. हुआ, इसका 1/4 अर्थात् 4,750 रु. D की पूँजी हुई।

बोध प्रश्न

1. साझेदारी फर्म के एकीकरण से क्या आशय है?

....

....

....

2. पुरानी फर्मों की पुस्तकें बन्द करने से सम्बन्धित क्रियाओं की रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिये।

....

....

....

3. क्रय प्रतिफल से क्या आशय है? क्रय प्रतिफल की गणना आप कैसे करेंगे?

....

....

....

4. साझेदारी फर्म के विक्रय से क्या आशय है?

....

11.4.1 क्रय-प्रतिफल की गणना (Calculation of Purchase Consideration)

यदि प्रश्न में क्रय-प्रतिफल न दिया हो तो इसकी गणना निम्नानुसार की जाती है—

क्रय-प्रतिफल = कम्पनी द्वारा ली गई विभिन्न सम्पत्तियों का वह मूल्य जिस पर उन्हें कम्पनी ने लिया है — कम्पनी द्वारा लिए गए विभिन्न दायित्व उस मूल्य पर जिस पर उन्हें कम्पनी ने लिया है।

फर्म की समस्त सम्पत्तियाँ (रोकड़ सहित) क्रय की जा रही हों तो रोकड़ खाते को भी वसूली खाते में ले जाते है किन्तु यदि प्रश्न मे इस बात का उल्लेख है कि रोकड़ नहीं ली गई तो रोकड़ खाता वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं होगा।

इसी प्रकार यदि कोई सम्पत्ति मूल्यहीन हो तो उसे भी साझेदारों के पूंजी खातो मे लाभालाभ विभाजन अनुपात में हस्तातरित कर देते है।

Illustration 8. अ, ब तथा स एक फर्म में साझेदार है तथा 2 : 4 : 6 के अनुपात में लाभालाभ विभाजित करते है। 31 दिसम्बर, 2007 को जब उन्होंने फर्म को एक लिमिटेड कम्पनी को बेचने का निश्चय किया, उनका चिट्ठा निम्नानुसार था—

चिट्ठा

दायित्व	रु.	सम्पत्तियाँ	रु.
पूँजी खाते		भवन	30,000
अ	15,000	मशीनरी	45,000
ब	30,000	मोटर कार	7,500
स	45,000	स्टॉक	22,500
अ का ऋण (8% वार्षिक ब्याज पर)	30,000	देनदार	30,000
लेनदार	22,500	रोकड़	13,500
देय बिल	7,500	विनियोग	1,500
	1,50,000		1,50,000

कम्पनी निम्नलिखित शर्तों पर फर्म का व्यापार लेगी

(क) कम्पनी रोकड़ तथा विनियोग के अतिरिक्त समस्त सम्पत्तियाँ लेगी। भवन 40,500 रु. मे तथा स्टॉक 21,000 रु. में तथा अन्य सम्पत्तियाँ पुस्तक मूल्य पर ली जाएंगी। ख्याति का मूल्यांकन 45,000 रु. किया गया है।

(ख) अ के ऋण का भुगतान फर्म की रोकड़ तथा विनियोगों को नाम मूल्य पर देकर तथा शेष राशि के लिए उन ऋण-पत्रों को देकर किया जायेगा जो फर्म को कम्पनी से क्रय-प्रतिफल के आंशिक भुगतान के रूप मे प्राप्त होंगे।

(ग) क्रय-प्रतिफल का शेष भाग कम्पनी के समता अंशों के रूप मे प्राप्त होगा जिन्हें साझेदारों में उपयुक्त रीति से बाट दिया जाएगा।

फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक खाते खोलिए।

Solution. टिप्पणियाँ-

(1) **क्रय प्रतिफल की गणना-**

कम्पनी द्वारा ली गई सम्पत्तियाँ	रु.
भवन	40,500
स्टॉक	21,000
मशीनरी	45,000

NOTES

मोटर कार			7,500
देनदार			30,000
ख्याति			45,000
			1,89,000
(—) कम्पनी द्वारा लिए गए दायित्व			
लेनदार			22,500
देय बिल		7,500	
			30,000
		क्रय-प्रतिफल	1,59,000

(2) क्रय-प्रतिफल का भुगतान

ऋण-पत्र जो उस राशि के बराबर होंगे जो अ के ऋण के भुगतान के लिए आवश्यक है		रु	
अ का ऋण		30,000	
भुगतान : रोकड़	13,500		
विनियोग	1,500	15,000	
			15,000
ऋण-पत्र द्वारा			
शेष राशि के समता अंश			1,44,000
			1,59,000

(3) क्रय-प्रतिफल के रूप में प्राप्त अंश साझेदारों में उनके अन्तिम दावों (Final Claims) के अनुपात में बांट दिया जायेगा।

Realisation A/c

		Rs.		Rs.
To Building		30,000	By Creditors	22,500
To Machinery		45,000	By Bills Payable	7,500
To Motor Car		7,500	By Purchasing Company	
To Stock		22,500	(Purchase consideration)	1,59,000
To Debtors		30,000		
To Capital A/c				
A	9,000			
B	18,000			
C	27,000			
		54,000		
		1,89,000		1,89,000

Purchasing Company's A/c

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	1,59,000	By Debentures A/c	15,000
		By Shares in Co. A/c	1,44,000
	1,59,000		1,59,000

NOTES

Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Shares in				By Balance b/d	15,000	30,000	45,000
....Co.Ltd.	24,000	48,000	72,000	By Realisation A/c	9,000	18,000	27,000
	24,000	48,000	72,000		24,000	48,000	72,000

A's Loan A/c

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	13,5000	By Balance b/d	30,000
To Investment A/c	1,500		
To Debentures A/c	15,000		
	30,000		30,000

Debentures A/c

	Rs.		Rs.
To Purchasing Company	15,000	By A's Loan A/c	15,000
	15,000		15,000

Shares in......................Co. Ltd A/c

	Rs.			Rs.
To Purchasing Company	1,44,000	By Capital Accounts .		
		A	24,000	
		B	48,000	
		C	72,000	1,44,000
	1,44,000			1,44,000

हल किये हुये प्रश्न
(Solved Problems)

Problem 1. A and B carried on business in partnership A retired. B having agreed to pay him his capital, together with Rs. 1,200 for his share of Goodwill on 1st January, 2007

B and C agreed to amalgamate their business as from 1st January, 2007 on the following terms:

(a) To trade as A, B, C & Co and to share profit in proportion to their individual earnings for the three years ended 31st December, 2006

(b) To raise a Goodwill a/c at two year's purchase of the average of earning of the preceding three years of B and C and for A Rs 1,200

(c) The new firm is to take over assets and liabilities at book values

(d) The Capital of the new firm is to be made equal to that of the two old businesses on 31st December 2006 plus the amount to be added for Goodwill and to be Provided in the proportion in which profits were to be shared

The average profit for the three years to December 31 2006 were B Rs. 1,500 C Rs. 900

Summarised Balance Sheet at 31st December 2006 were as follows A & B Sundry Assets Rs 6,300 Liabilities Rs 2,500, A's Capital Rs 2,000, B's Capital Rs 1,800, C's Sundry Assets Rs. 2,100 Liabilities Rs 1,500 C's Capital Rs 600

Journalise the entries in the books of new firm and give the initial Balance Sheet

NOTES

A तथा B साझेदारी में व्यापार करते है। 1 जनवरी, 2007 को A अवकाश ग्रहण करता है, B उसकी पूँजी तथा 1,200 रु. उसके हिस्से की ख्याति के 1 जनवरी, 2007 को देना स्वीकार करता है।

निम्न शर्तों पर 1 जनवरी, 2007 से B तथा C अपने व्यापार का एकीकरण करने का निश्चय करते है:

(क) फर्म का नाम A, B, C & Co. होगा तथा 31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त होने वाले तीन वर्षों के उसके व्यक्तिगत लाभ के आधार पर लाभ-विभाजन का अनुपात होगा।

(ख) B तथा C के गत् तीन वर्षों के औसत लाभों के दूने तथा A के हिस्से के 1,200 रु से ख्याति खाता खोला जायेगा।

(ग) नयी फर्म समस्त सम्पत्ति एवं दायित्व पुस्तक मूल्यों पर लेगी।

(घ) नयी फर्म की पूँजी, पुरानी दोनों फर्मों की 31 दिसम्बर, 2006 को पूँजी तथा ख्याति की राशि के योग के बराबर होगी और साझेदारों तथा लाभ-विभाजन के अनुपात में लायी जायेगी।

31 दिसम्बर, 2006 तक तीन वर्षों में औसत लाभ निम्न थे: B के 1,500 रु C के 900 रु.।

31 दिसम्बर, 2006 को संक्षिप्त चिट्ठे निम्न थे: A तथा B की विविध सम्पत्तियाँ, 6,300 रु दायित्व 2,500रु. A की पूँजी 2,00 रु B की पूँजी 1,800 रु. C की विविध सम्पत्तियाँ 2,100 रु दायित्व 1,500 रु., C की पूँजी 600 रु.।

नयी फर्म की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए तथा प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइए।

Solution. टिप्पणियाँ– (1) लाभालाभ विभाजन अनुपात: 1,500 : 900 or 5 : 3

(2) ख्याति	A	B	C
	रु. 1,200	(1,500 × 2) = 3,00	(900×2) = 1,800

A अवकाश ग्रहण कर रहा है। अतः नये व्यापार को A तथा B दोनों की कुल ख्याति (1,200+3,00) = 4,200 रु प्राप्त होगी।

(3) A को देय राशि : पूँजी 2,000 रु + ख्याति 1,200 रु। यह राशि उसे ऋण खाते में हस्तांतरित कर दी जायेगी। जिसका भुगतान नई फर्म नकद कर देगी।

(4) नई फर्म की पूँजी– 31-12-06 को पूँजी : A B	(रु.)	3,800
C		600
		4,400
(+) ख्याति		6,000
		10,400

B तथा C का भाग (लाभालाभ विभाजन अनुपात में)

B: $\left(\frac{10,400 \times 5}{8}\right) = 6,500$ रु C: $\left(\frac{10,400 \times 3}{8}\right) = 3,900$ रु।

(5) पूँजी की स्थिति–

		ब	स
सम्पत्तियाँ	(रु.)	6,300	2,100
ख्याति		4,200	1,500
		10,500	3,600
(–) दायित्व		5,700	1,500
वर्तमान पूँजी		4,800	2,100
आवश्यक पूँजी		6,500	3,900
अतिरिक्त रोकड़ जो साझेदार लायेंगे		1,700	1,800

NOTES

Journal

		Rs.	Rs.
Sundry Assets ......Dr.	विविध सम्पत्ति खाते ... .डे.	6,300	
Cash A/c ....Dr.	रोकड़ खाता . .डे.	1,700	
Goodwill A/c ....Dr.	ख्याति खाता .....डे.	4,200	
To Liabilities A/c	दायित्व खाता से		2,500
To A's Loan A/c	अ का ऋण खाता से		3,200
To B's Capital A/c	ब का पूँजी खाता से		6,500
(B's assets and liabilities taken over)	(ब की सम्पत्तियाँ तथा दायित्व लिए गए)		
Sundry Assets ......Dr.	विविध सम्पत्तियाँ खाते .....डे.	2,100	
Cash A/c .. ...Dr	रोकड़ खाता .. .डे.	1,500	
Goodwill A/c .....Dr.	ख्याति खाता .....डे.	1,800	
To Liabilities A/c	दायित्व खाता से		1,500
To C's Loan A/c	'स' का पूँजी खाता से		3,900
(C's assets and liabilities taken over)	('स' की सम्पत्तियाँ तथा दायित्व लिए गए)		
A's Loan A/c ......Dr.	'अ' का ऋण खाता ....डे.	3,200	
To Cash A/c	रोकड़ खाता से		3,200
(Loan Paid off)	(ऋण का भुगतान किया गया)		

Balance Sheet

As on 1st January, 2007

	Rs.		Rs.
Liabilities	4,000	Goodwill	6,000
Capital Accounts		Sundry Assets	8,400
B	6,500		
C	3,900		
	14,400		14,400

Problem 2. X, Y, तथा Z एक फर्म में बराबर के साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2007 को उनका चिट्ठा निम्नानुसार था—

(X, Y and Z are equal partners in a firm. Their Balance Sheet as on 31st December, 2007 stood as follows)-

दायित्व (Liabilities)	रु	सम्पत्तियाँ (Assets)	रु
लेनदार (Creditors)	10,000	भूमि (Land)	5,000
बैंक ऋण (Bank Loan)	50,000	प्लाण्ट (Plant)	20,000
पूँजी (Capitals)		भवन (Building)	7,000
X	5,000	स्टॉक (Stock)	30,000
Y	10,000	देनदार (Debtors)	10,000
		Z की पूँजी (Capital)	3,000
	75,000		75,000

उक्त तिथि को निम्नलिखित शर्तों पर फर्म का परिवर्तन कम्पनी में करने का निश्चय किया गया—

(On that date, it is decided to convert the partnership into a limited company on the following terms) —

(क) भूमि का मूल्यांकन 15,000 रु. किया जाए। (Land to be valued at Rs. 15,000)

(ख) प्लाण्ट का मूल्य 25,000 रु. लगाया जाए। (Plant to be valued at Rs. 25,000)

(ग) भवन पर 2,000 रु. ह्रास काटा जाये। (Building to be depreciated by Rs. 2,000)

(घ) अप्रचलित स्टॉक के लिए पुस्तक मूल्य पर 10% प्रावधान किया जाए। (A provision of 10% of book value to be made for obsolete Stock)

(ङ) लेनदारों को भुगतान करने पर 6% बट्टा प्राप्त होगा। (A discount of 6% would be earned on Creditors when paid out)

(च) देनदारों पर 10% अशोध्य ऋण प्रावधान करना है। (A reserve for Doubtful debts to be made at 10% on Debtors)

नई कम्पनी 10 रु. वाले 12,000 पूर्णदत्त समता अंश आवंटित करेगी। इस अंश पूँजी का मूल्य 15,000 रु. माना जाएगा, शेष क्रय प्रतिफल का भुगतान 100 रु. के मूल्य वाले 8% ऋण-पत्रों को निर्गमित करके किया जायेगा।

(The new Company will issue 12,000 Equity Shares of Rs. 10 each credited as fully paid-up, such Share Capital being valued at Rs. 15,000 and the balance payable is to be discharged by issue of 8% Debenture Certificates of Rs. 100 each.)

X, Y, Z की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते खोलिए तथा नई कम्पनी का आरम्भिक चिट्ठा बनाइए। आप यह मान लीजिए कि (क) समस्त साझेदार शोधक्षम है, तथा (ख) रोकड़ तथा अंश साझेदारों में बराबर वितरित होंगे।

(Show the necessary ledger accounts to close the books of X, Y, Z and show the opening Balance Sheet of the new company, You may assume that (a) all partners are solvent and (b) Shares and cash are divided equally among the partners.)

Solution.

Journal Entries

		Rs.	Rs
Realisation A/c ...Dr.	वसूली खाता दे	1,35,000	
To Building A/c	भवन खाता से		30,000
To Motor Car A/c	मोटर खाता से		7,500
To Machinery A/c	मशीनरी खाता से		45,000
To Stock A/c	स्टॉक खाता से		22,500
To Debtors A/c	देनदार खाता से		30,000
(Assets taken over transferred to Realisation A/c)	(ली गई सम्पत्तियाँ वसूली खाते में हस्तांतरित)		
Creditors A/c ...Dr.	देनदार दे	22,500	
Bills Payable A/c Dr.	देय बिल दे	7,500	
To Realisation A/c	वसूली खाता से		30,000
(Liabilities taken over transferred to Realisation A/c)	(दायित्व वसूली खाते में हस्तान्तरण)		

Purchasing Co. ......Dr.	क्रेता कम्पनी ......डे.	1,59,000	
To Realisation A/c	वसूली खाता से		1,59,000
(Purchase consideration due)	(क्रय प्रतिफल देय)		
Debentures in Co. ......Dr.	कम्पनी के ऋण-पत्र ....डे.	15,000	
Shares in Co. ......Dr.	कम्पनी के अंश ......डे.	1,44,000	
To Purchasing Co.	क्रेता कम्पनी से		1,59,000
(Satisfaction of purchase consideration)	(क्रय प्रतिफल का भुगतान प्राप्त)		
A's Loan A/c ......Dr.	अ का ऋण खाता ....डे.	30,000	
To Cash A/c	रोकड़ खाता से		13,500
To Investments A/c	विनियोग खाता से		1,500
To Debentures in Co. Ltd.	ऋण-पत्र से		15,000
(A's loan discharged)	(अ के ऋण का भुगतान किया गया)		
Realisation A/c ......Dr.	वसूली खाता ......डे.	54,000	
To A's Capital A/c	अ का पूँजी खाता		9,000
To B's Capital A/c	ब का पूँजी खाता		18,000
To C's Capital A/c	स का पूँजी खाता		27,000
(Profit on Realisation transferred) to Capital Accounts)	(वसूली पर लाभ पूँजी खातों में हस्तांतरित)		
A's Capital A/c .....Dr	अ का पूँजी खाता ...डे.	24,000	
B's Capital A/c ..Dr.	ब का पूँजी खाता डे.	48,000	
C's Capital A/c ... Dr	स का पूँजी खाता ....डे.	72,000	
To Shares in Co. A/c	कम्पनी के अंश खाता से		1,44,000
(Shares distributed to partners in the ratio of their final claim)	(अंशों का साझेदारों को उनके अन्तिम दावे के अनुपात में वितरण)		

अभ्यास के लिए प्रश्न

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoritical Questions)

1. साझेदारी फर्मों के एकीकरण से क्या आशय है। पुरानी फर्मों की पुस्तकें बन्द करने तथा नई फर्म की पुस्तकें खोलने सम्बन्धी क्रियाएं रोजनामचा प्रविष्टियां देते हुए स्पष्ट कीजिए।
2. साझेदारी फर्म के विक्रय से क्या आशय है? जब फर्म किसी एकाकी व्यापारी को बेचा जाता है तो विक्रेता फर्म की पुस्तकों में क्या प्रविष्टियाँ की जाती है?
3. एक साझेदारी फर्म के कम्पनी को विक्रय कर दी जानेवाली प्रविष्टियाँ समझाइए।
4. क्रय-प्रतिफल से क्या आशय है? इसका निर्धारण तथा भुगतान कैसे किया जाता है?

संख्यात्मक प्रश्न (Numerical Questions)

Q. 1. E और S एक व्यवसाय में बराबर के साझेदार है और M भी उसी प्रकार का व्यवसाय करता है। प्रतिस्पर्द्धा को दूर करने के लिए उन्होंने M की फर्म की सम्पत्तियाँ एवं दायित्वों को लेकर दोनों फर्मों का एकीकरण करने का निश्चय किया। उन्होंने M को 31 दिसम्बर, से साझेदारी में सम्मिलित कर लिया। उक्त तिथि को प्रत्येक व्यवसाय के चिट्ठे निम्नलिखित थे :—

NOTES

Liabilities	E & S रु.	M रु.	Assets	E & S रु.	M रु.
लेनदार	3,700	7,500	रोकड़ बैंक में	2,500	1,350
देय बिल	——	2,650	देनदार	8,600	5,500
पूँजी : E	6,000		स्टॉक	3,100	1,300
S	4,500		M की पूँजी की कमी		2,000
	14,200	10,150		14,200	10,150

नयी फर्म नाम E, S एवं M रखा गया। साझेदारों में यह निश्चित हुआ कि E एवं S की फर्म के देनदारों तथा स्टॉक के मूल्यों में 10 प्रतिशत की कमी कर दी जाये। इसके अतिरिक्त M के लेख में ख्याति के सम्बन्ध में इतनी रकम जमा कर दी जाये कि उसकी पूँजी नये व्यवसाय में E और S की संयुक्त पूँजी के एक-तिहाई के बराबर हो जाये। इन व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करके, E, S और M का चिट्ठा बनाइए।

[**Ans.** Total of Balance Sheet Rs. 26,290 ; Capital E Rs. 5,415 ; S Rs. 3,915 and M Rs. 3, 110]

संकेत: पुनर्मूल्यांकन करने के पश्चात् E, S की संयुक्त पूँजी 9,330 रु. आती है, M की पूँजी इसके 1/3 अर्थात् 3,110 रुपए होनी चाहिए जबकि उसकी पूँजी खाते में 1,300 रुपए का डेबिट शेष है, अतः उसे (3,110 + 1,300) = 4,410 रु. से ख्याति के लिए क्रेडिट करना होगा।

Q.2. रवि व शशि अलग-अलग व्यापार करते है। उन्होंने रवि व शशि के नाम से अपने व्यवसाय का निम्न शर्तों पर एकीकरण करने का निश्चय किया—

(क) प्रत्येक साझी की स्थायी पूँजी 10,000 रु. होगी।

(ख) रवि का स्टॉक 3,200 रु. में व शशि का 2,700 रु. में लिया जाये।

(ग) ऋणियों पर डूबत ऋण आयोजन के लिए 6% तक की वृद्धि की जावे।

(घ) शशि का फर्नीचर न लिया जावे जबकि रवि का फर्नीचर 450 रु. में लिया जाये।

(ङ) एकीकरण से पूर्व रवि अपने पुत्र के ऋण का भुगतान करे।

(च) सम्पत्ति की किसी भी कमी को संस्था के बैंक खाते में जमा करे व उसकी कोई भी वृद्धि को निकाल ले।

31 दिसम्बर, 2007 को वार्षिक चिट्ठे निम्न थे–

रवि : फर्नीचर 350 रु. कलें 5,000 रु. स्टॉक 3,400 रु. देनदार 2,750 रु. (डूबत ऋण आयोजन 120 रु.)

रोकड़ बैंक मे 1025 रु. लेनदार 1,200 रु. पुत्र से लिया हुआ ऋण 600 रु.

शशि : फर्नीचर 200 रु., कलें 5,500 रु., स्टॉक 2,800 रु., देनदार 3,025 रु. (डूबत ऋण आयोजन 125 रु.), रोकड़ बैंक में 800 रु. लेनदार 2,100 रु.।

मिश्रण के पूर्व, प्रत्येक व्यापारी की पुस्तकों का समायोजन करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए तथा नई संस्था का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइए। [Ans. नई फर्म के चिट्ठे का योग 23,300]

Q. 3. Two firms AB and CD agreed to amalgamate their business. Their position on 31st December 2007 was as under –

A B तथा C D दो फर्मों ने एकीकरण करने का निश्चय किया। 31 दिसम्बर, 2007 को उनकी स्थिति निम्नानुसार थी—

Balance Sheet

As on 31st December, 2007

	AB Rs.	CD Rs.		AB Rs.	CD Rs.
Creditors	1,04,000	52,000	Cash	1,56,000	65,000
Capital Accounts			Debtors	1,30,000	1,04,000
A	1,82,000		Stock	42,000	26,000

B	1,30,000		Building	78,000	
C		91,000	Furniture	10,000	13,000
D		65,000			
	4,16,000	2,08,000		4,16,000	2,08,000

NOTES

[नई फर्म ABCD देनदार तथा लेनदार नहीं लेगी। भवन AB ने रखा, नई फर्म उसका 400 रु. मासिक किराया देगी। नई फर्म को चलाने के लिए 1,30,000 रु. रोकड़ की आवश्यकता होगी, जो साझेदार अपने नये लाभालाभ अनुपात (A- 3/10, B -3/10, C- 2/10, D- 2/10) में देंगे। A B तथा C D की पुस्तकें लिखिए तथा A B C D का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइए।

[Ans. Total of Balance Sheet Rs. 2,21,000, Capitals A Rs. 97,500 ; B Rs. 45,500; C Rs. 52,000; D Rs. 26,000]

[संकेत: यह मान लिया गया है कि पुरानी फर्मों ने अपने-अपने लेनदारों का भुगतान नकद कर दिया है एवं देनदारों तथा भवन को लाभ-हानि विभाजन अनुपात में साझेदारों ने ले लिया है। A B से 52,000 रुपए तथा C D से 13,0000 रु. रोकड़ नई फर्म को मिलती है। इस प्रकार नई फर्म को कुल 65,000 रु. रोकड़ प्राप्त होती है जबकि आवश्यकता 1,30,000 रु. की है। अतः 65,000 रु. की कमी A B C D साझेदार अपने नये लाभालाभ अनुपात में रोकड़ देकर पूरी करेंगे।

Q. 4. शर्मा तथा वर्मा जो दो अलग-अलग एकाकी व्यापारी के रूप में कार्य करते हैं। 1 जनवरी, 2007 को एकीकरण करने का निश्चय करते हैं जबकि उनके चिट्ठे निम्न प्रकार थे—

	शर्मा	वर्मा		शर्मा	वर्मा
	रु.	रु.		रु.	रु.
लेनदार	8,000	7,000	मशीनरी	5,000	3,000
बैंक अधिविकर्ष	3,000	2,500	देनदार	15,000	9,500
पूँजी	14,000	6,000	स्टॉक	4,000	2,500
			रोकड़	1,000	500
	25,000	15,500		25,000	15,500

निम्नलिखित समायोजन ~~करते हुए साझेदारी का~~ आरम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिए। ~~शर्मा की मशीनरी पर~~ 10% तथा वर्मा की मशीनरी पर $12\frac{1}{2}\%$ ह्रास लगाना है। प्रत्येक के स्टॉक का मूल्यांकन 5% कम करना है: शर्मा के देनदारों पर 5% तथा वर्मा के देनदारों पर 6% संचिति करना है। देनदार अपनी प्राप्त राशियों में से 5% छोड़ने को राजी है। शर्मा तथा वर्मा की ख्याति क्रमशः 6,000 रु. तथा 2,000 रु. मूल्यांकन की गई।

[Ans. : Total of Balance Sheet Rs. 45,980, Capital Sharma Rs. 18,950, Verma Rs. 7,280]

Q. 5. पी. आर. तथा एल. 2 : 1 : 2 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं। उन्होंने अपनी फर्म को प्राइवेट कम्पनी में परिवर्तित करने का निश्चय किया। उक्त तिथि को उनका स्थिति विवरण निम्नानुसार था—

Balance Sheet

		Rs.		Rs.
Partner's Accounts :			Goodwill	8,000
P	2,500		Motor Car	5,000
L	8,500		Commission Receivable	1,000
		11,000	Stock	4,000
Loan from L		5,000	Debtors	8,000
Bank Overdraft		3,000	Cash	1,000
Creditors		6,000	R's Capital A/c	3,000
Bills of Exchange		5,000		
		30,000		30,000

रोकड़ तथा प्राप्य कमीशन को जो अप्राप्य है, छोड़कर अन्य समस्त सम्पत्तियों को रु. में लिया जिसका भुगतान कम्पनी के 10 रु. वाले 2,000 पूर्णदत्त अंशों में किए पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

[**Ans.** वसूली पर लाभ 9,000 रु. एल. को रोकड़ भुगतान 3,700 रु तथा पी. प्राप्त क्रमशः 2,300 रु. तथा 5,400 रु. रोकड़ खाते का योग 8,700 रु.]

NOTES

[**संकेत:** अप्राप्य कमीशन साझेदारों के पूँजी खातों में डेबिट, अंशों का विभाजन ल क्रमशः 8,000 रु., 4,000 रु. तथा 8,000 रु.]

11.6 सारांश

- जब एक या अधिक फर्मों का मिलकर एक हो जाना या नई फर्म बनाना एकीकरण
- फर्मों के एकीकरण के सम्बन्ध में आवश्यक लेखांकन दो रूपों में किया जाता है पहल करना और दूसरा नई फर्म की पुस्तकों को खोलना।
- किन्ही परिस्थितियोंवंश साझेदारी संस्था अपना व्यवसाय किसी को बेच देती है। इस सम्बन्ध हो सकती है पहली एकाकी व्यापार का विक्रय दूसरी साझेदारी फर्म का विक्रय औ विक्रय।

11.7 शब्दावली

एकीकरण, एकांकी व्यापार, साझेदारी कम्पनी।

●●●

अपनी प्रगति की जाँच करें
Test your Progress

सुझाव पत्र (विद्यार्थियों के लिये)

नाम –
नामांकन नं. –
फोन नं.–
ई–मेल आईडी –

कार्यक्रम का नाम –
कोर्स का नाम –
सत्र –

प्रिय छात्र–छात्राओं,

विश्वविद्यालय के द्वारा दूरस्थ शिक्षण संस्था में पंजीकृत छात्र–छात्राओं को दी जाने वाली पाठ्यसामग्री को हमेशा बेहतर बनाने का प्रयास रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपके विचार एवं सुझाव आंमत्रित है, कृपया आपको प्रदान की जाने वाली पाठ्य–सामग्री के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव 500 शब्दों में लिखकर प्रेषित करें, ताकि उक्त विचार एवं सुझाव का अमल करते हुये हम अपने पाठ्य सामग्री को और अधिक सरल, सहज एवं रोचक बनाया जा सकें।

सुझाव –

....

....

....

....

....

....

....

....

....

छात्र का नाम एवं हस्ताक्षर

सुझाव पत्र (विषय विशेषज्ञ/पाठ्यक्रम समन्वयक/कार्यक्रम समन्वयक के लिये)

नाम – पद –

विभाग/विषय – पता –

फोन नं.– सत्र –

ई–मेल आईडी –

प्रिय विषय विशेषज्ञ/पाठ्यक्रम समन्वयक/कार्यक्रम समन्वयक,

विश्वविद्यालय के द्वारा दूरस्थ शिक्षण संस्था में पंजीकृत छात्र–छात्राओं को दी जाने वाली पाठ्यसामग्री को हमेशा बेहतर बनाने का प्रयास रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपके विचार एवं सुझाव प्रार्थनीय है, कृपया आप इस पाठ्य–सामग्री के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव 500 शब्दों में लिखकर प्रेषित करें, ताकि उक्त विचार एवं सुझाव का अमल करते हुये हम अपने पाठ्य सामग्री को और अधिक सरल, सहज एवं रोचक बनाया जा सकें।

सुझाव –

....

....

....

....

....

....

....

....

....

धन्यवाद,

नाम एवं हस्ताक्षर